# एलियन साक्षात्कार

जब तक एलियन बेस पर वापस आई, तब तक मैं उसके साथ कई घंटे बिता चुका था। जैसा कि मैंने बताया, मिस्टर कैविट ने मुझसे कहा कि एलियन को रोको, क्योंकि वह अकेली ऐसी थी जिससे वह बात नहीं कर सकती थी, क्योंकि [redacted] कभी किसी से बात करने का अनुभव नहीं था।

दिए गए डॉक्यूमेंट्स के आधार पर

मटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय

एडिटेड बाय: लॉरेंस आर. स्पेंसर,

द ओज फैक्टर्स के लेखक

एलियन साक्षात्कार

यह सामग्री मैटील्डा ओ'डोनेल मैकएलरॉय द्वारा उपलब्ध कराए गए व्यक्तिगत नोट्स और साक्षात्कार प्रतिलेखों पर आधारित है।

संपादन एवं अतिरिक्त फुटनोट: लॉरेंस आर. स्पेंसर

( "द ओज़ फैक्टर्स" के लेखक)

1

एलियन साक्षात्कार
कॉपीराइट (सी) 2008 लॉरेंस आर. स्पेंसर द्वारा।
सर्वाधिकार सुरक्षित।
कवर और पुस्तक का डिज़ाइन लॉरेंस आर. स्पेंसर द्वारा किया गया है।
अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका में छपी
प्रथम संस्करण मुद्रण: 2008
ISBN: 978-0-6152-0460-4
2

स्वीकृतियाँ
मिशेल और ब्रेंडा के उत्साहपूर्ण और दूरदर्शी संपादकीय सहयोग के लिए मैं तहे दिल से उनका आभार व्यक्त करता हूँ। विकिपीडिया डॉट ओआरजी के मालिकों, कर्मचारियों और अथक योगदानकर्ताओं एवं संपादकों के सभी मेहनती और निस्वार्थ कार्यों के लिए भी बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन पर इस पुस्तक की सामग्री काफी हद तक निर्भर करती है। मटिल्डा ओ'डोनेल मैकलॉय के प्रतिलेखों और टिप्पणियों के पाठ में उद्धृत कई फुटनोटों के लिए विकिपीडिया डॉट ओआरजी ने प्रभावी दस्तावेजी सहायता प्रदान की है।
अस्वीकरण
पुस्तक "एलियन इंटरव्यू" के संपादक के अनुसार, व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो, पुस्तक की विषयवस्तु एक काल्पनिक रचना है। संपादक विषयवस्तु की सत्यता का दावा नहीं करते और वास्तव में यह सिद्ध नहीं कर सकते कि कथित लेखक का वास्तव में कभी अस्तित्व था। यद्यपि वर्णित कुछ तिथियां, स्थान, व्यक्ति और घटनाएं तथ्यात्मक या तथ्यों पर आधारित हो सकती हैं, लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि उतनी ही संख्या में ये लेखक की कल्पना मात्र न हों।
संपादक को प्राप्त सभी जानकारी, टिप्पणियाँ और प्रतिलेख पुस्तक में प्रस्तुत किए गए पूर्ण, मूल रूप में ही मौजूद हैं। संपादक के पास अब लेखिका, अर्थात् श्रीमती मैकलॉय से प्राप्त कोई भी मूल दस्तावेज या उसकी प्रतियाँ नहीं हैं।
पुस्तक में दी गई कुछ सामग्री पृथ्वी के दर्शनों से मिलती-जुलती हो सकती है, क्योंकि ये दर्शन इतने विविध हैं कि इनकी सूची बनाना संभव नहीं है, और इनमें इतनी मूलभूत समानताएँ हैं कि इन्हें आसानी से अलग करना मुश्किल है। यद्यपि पुस्तक ब्रह्मांड की उत्पत्ति, भौतिक ब्रह्मांड के समय पथ, अमर और/या अलौकिक प्राणियों, "एलियंस" या "देवताओं" की असाधारण गतिविधियों पर चर्चा करती है, लेकिन संपादक का किसी भी प्रकार से लेखक के दृष्टिकोण, किसी भी राजनीतिक सिद्धांत, आर्थिक निहित स्वार्थ, वैज्ञानिक परिकल्पना, धार्मिक प्रथा या दर्शन, चाहे वह पृथ्वी का हो या अलौकिक, का प्रतिनिधित्व, समर्थन, प्रचार या अनुमोदन करने का कोई इरादा नहीं है।

पुस्तक में निहित टिप्पणियाँ और प्रतिलेख पूरी तरह से लेखिका, स्वर्गीय मटिल्डा ओ'डोनेल मैकएलरॉय द्वारा प्रदान किए गए विवरणों और दस्तावेजों पर आधारित हैं, जब तक कि पुस्तक के परिशिष्ट में फुटनोट्स द्वारा विशेष रूप से अन्यथा उल्लेख न किया गया हो।

इस पुस्तक में दी गई सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा लगाए गए किसी भी अनुमान, निष्कर्ष या मत के लिए संपादक जिम्मेदार नहीं है; यह पूरी तरह से और केवल पाठक की जिम्मेदारी है।

जो बात आपके लिए सच है, वह आपके लिए ही सच है।

लॉरेंस आर. स्पेंसर -- संपादक

विषयसूची

एलियन इंटरव्यू शीर्षक पृष्ठ.....2 विषय-सूची .....4 प्रस्तावना .....5
भूमिका.....6
समर्पण .....7 इस पुस्तक में प्रयुक्त संपादकीय दिशानिर्देश .....8
परिभाषाएँ.....9
परिचय: यूएफओ और अलौकिक प्राणियों का रहस्य.....10 इस पुस्तक में सामग्री के स्रोत के बारे में.....13 मटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय: जीवनी संबंधी जानकारी .....16 श्रीमती मैकलरॉय का पत्र .....19
प्रतिलेख:
अध्याय एक - एलियन के साथ मेरा पहला साक्षात्कार.....27 अध्याय दो - मेरा दूसरा साक्षात्कार.....36 अध्याय तीन - मेरा तीसरा साक्षात्कार.....38 अध्याय चार - भाषा की बाधा.....42 अध्याय पाँच - पठन पाठ.....45 अध्याय छह - मेरी शिक्षा की शुरुआत.....48 अध्याय सात - प्राचीन इतिहास का एक पाठ.....55 अध्याय आठ - हाल के इतिहास का एक पाठ.....66 अध्याय नौ - घटनाओं की समयरेखा.....80 अध्याय दस - जीव विज्ञान का एक पाठ.....106 अध्याय ग्यारह - विज्ञान का एक पाठ.....121 अध्याय बारह - अमरता का एक पाठ.....129 अध्याय तेरह - भविष्य का एक पाठ.....133 अध्याय चौदह - एयरल साक्षात्कार प्रतिलेखों की

समीक्षा करता है.....139 अध्याय पंद्रह - मेरी पूछताछ
.....144 अध्याय सोलह - एयरल प्रस्थान करता
है.....148
श्रीमती मैकलरॉय की टिप्पणी
(पोस्टस्क्रिप्ट).....150 परिशिष्ट: संपादक की
फुटनोट.....156 - 303

प्रस्तावना:
हम मूर्खों की तरह पूछते हैं, जो अपनी आत्मा को नहीं जानते:
देवताओं द्वारा छोड़े गए गुप्त निशान कहाँ हैं?
-- ऋग्वेद -- पुस्तक I, श्लोक 164, पंक्तियाँ 5 क और 5 ख
5

प्रस्तावना

किसी को मिटा देने या उसकी छवि मिटा देने से बढ़कर और कौन सी क्रूरता हो सकती है?

आध्यात्मिक जागरूकता, पहचान को नकारना,

क्षमता और स्मृति जो स्वयं का सार है?

-- लॉरेंस आर. स्पेंसर --

2008

समर्पण

यह पुस्तक सभी अमर आध्यात्मिक प्राणियों को समर्पित है, चाहे वे स्वयं को ऐसा मानते हों या नहीं। यह विशेष रूप से उन महान आत्माओं के ज्ञान, साहस और सत्यनिष्ठा को समर्पित है, जिन्होंने अतीत, वर्तमान और भविष्य में विभिन्न अवतारों में सत्य की लौ को प्रज्वलित किया और ब्रह्मांड के सबसे अंधकारमय कोनों तक पहुंचाया।

यह समर्पण न केवल इन प्राणियों द्वारा विकसित दार्शनिक शिक्षाओं और प्रौद्योगिकियों के प्रति है, बल्कि अज्ञानता, खुले विरोध और निम्न प्राणियों द्वारा किए गए आक्रामक दमन तथा अंतर-आकाशगंगा और ग्रहीय राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक संस्थानों के स्वार्थी हितों के बावजूद अपने दर्शन को लागू करने के लिए प्रदर्शित और प्रलेखित साहस के प्रति भी है। संख्या में अपेक्षाकृत कम होते हुए भी, ऐसे प्राणियों का गहन ज्ञान और वीरतापूर्ण समर्पण, तथा उनके साथ इस खोज में लगे रहने वाले लोगों का समर्पण, आध्यात्मिक दासता के विरुद्ध एकमात्र प्रभावी निवारक रहा है। इस ब्रह्मांड में सभी अमर आध्यात्मिक प्राणियों के लिए स्वतंत्रता, संवाद, रचनात्मकता, विश्वास और सत्य उनकी विरासत है। उनके द्वारा स्थापित उत्तम उदाहरण ही हमारा आश्रय और सहारा हैं। उनकी शिक्षाओं का व्यक्तिगत और लगनपूर्वक पालन करना ही भौतिक ब्रह्मांड की अराजकता और विस्मृति के दुष्चक्र से हमारा बचाव है।

-- लॉरेंस आर. स्पेंसर --

इस पुस्तक में प्रयुक्त संपादकीय दिशा-निर्देश

श्रीमती मैकलॉय से प्राप्त सामग्री में मैंने केवल उतना ही संपादन किया है जितना कि उनके द्वारा भेजी गई सामग्री को तार्किक क्रम में रखने के लिए आवश्यक था। जहाँ तक संभव हो, मैंने उनके मूल लिखित नोट्स को शब्दशः उद्धृत या प्रतिलेखित किया है।

कुछ मामलों में मैंने संपादकीय स्वतंत्रता का प्रयोग करते हुए अन्य जानकारी या पूरक टिप्पणी जोड़ी है, जो मुझे लगता है कि आधिकारिक प्रतिलेखों में दी गई जानकारी या उनके विचारों या टिप्पणियों को उपयोगी परिभाषाएँ या स्पष्टीकरण प्रदान करेगी। ये पुस्तक के अंत में परिशिष्ट में क्रमांकित "(पाद टिप्पणी)" के रूप में दिखाई देते हैं। सभी पाद टिप्पणी संदर्भ, जहाँ तक संभव हो, निःशुल्क इंटरनेट विश्वकोश वेबसाइट से शब्दशः प्रतिलिपि किए गए हैं। www.wikipedia.org। यदि Wikipedia.org के माध्यम से जानकारी उपलब्ध नहीं थी, तो मैंने विषय से संबंधित सबसे उपयुक्त वेबसाइट संदर्भ खोजने के लिए लोकप्रिय इंटरनेट खोज इंजन www.google.com का उपयोग किया।

श्रीमती मैकएलरॉय ने अधिकांश दस्तावेजों में तिथियों का उल्लेख नहीं किया।

ये दस्तावेज़ हैं, इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि सामग्री का क्रम घटनाओं के वास्तविक क्रम या साक्षात्कारों के क्रम से मेल खाता है, सिवाय इसके कि आधिकारिक प्रतिलेखों में ही इसका उल्लेख किया गया है।

चूंकि साक्षात्कार की तारीख को 60 साल बीत चुके हैं, और श्रीमती मैकलॉय की मृत्यु से पहले की उम्र को ध्यान में रखते हुए, मैंने यह तर्क दिया कि उन्हें सटीक नामों, तारीखों और समयों की सटीक स्मृति नहीं रही होगी, सिवाय इसके कि 8 जुलाई से 12 अगस्त, 1947 तक के प्रतिलेखों में दर्ज जानकारी के अनुसार ही उन्हें याद होगा।

इस पुस्तक में दी गई सामग्री को तीन अलग-अलग प्रकारों में व्यवस्थित किया गया है। निम्नलिखित चिह्नों का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया जाएगा कि ये इस पुस्तक में कहाँ-कहाँ दिखाई देते हैं:

1) (मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय के निजी नोट्स) (फ़ॉन्ट: टाइम्स रोमन, 12 पॉइंट)

2) (साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख) (कूरियर न्यूज़, 12 पॉइंट)

3) 1 (पाद टिप्पणी)

(फ़ॉन्ट: एरियल, 10 पॉइंट, बोल्ड)

-- संपादक

8

परिभाषाएं

निहित स्वार्थ:

एक ऐसी अस्तित्व या गैर-अस्तित्व योजना या एजेंडा जिसे इस तरह से "ढक दिया गया" हो कि वह वास्तव में जो है उससे कुछ और लगे।

कोई भी व्यक्ति, समूह या संस्था जो अपने स्वयं के उद्देश्यों (योजनाओं या एजेंडा) की पूर्ति के लिए संचार को रोकती या नियंत्रित करती है।

-- संदर्भ: पृष्ठ 37, द ओज़ फैक्टर्स, लॉरेंस आर. स्पेंसर द्वारा लिखित।

रहस्य:

एक पहेली या समस्या जिसमें विरोधाभास या स्पष्ट विसंगति शामिल हो

गहन, अकथनीय या रहस्यमय गुण या चरित्र

संदर्भ: www.merriam-webster.com

परिचय:

यूएफओ और अलौकिक प्राणियों का रहस्य

यदि आपने यूएफओ घटनाक्रम का थोड़ा भी अध्ययन किया है, तो आप 30 अक्टूबर, 1938 को ऑर्सन वेल्स के कुख्यात रेडियो प्रसारण "वॉर ऑफ द वर्ल्ड्स, एंड द इन्वेजन फ्रॉम मार्स" 1 (फुटनोट) से पहले से ही परिचित होंगे। पृथ्वी पर "एलियंस" के आक्रमण के इस काल्पनिक रेडियो नाट्य रूपांतरण ने 1947 में रोसवेल, न्यू मैक्सिको के पास यूएफओ दुर्घटना से बहुत पहले ही वैश्विक यूएफओ और अलौकिक उन्माद को जन्म दिया था। पिछले 60 वर्षों में, कथित रोसवेल दुर्घटना के बाद से, हजारों यूएफओ देखे जाने की रिपोर्ट दर्ज की गई हैं। कथित अलौकिक घटना के "सबूतों" से वैश्विक स्तर पर उन्माद फैल गया है। साथ ही, अमेरिकी सरकार द्वारा इस घटना को लगातार नकारने से आरोपों, प्रतिआरोपों, लीपापोती की साजिशों, सनकी अटकलों, "वैज्ञानिक जांचों" आदि का एक अंतहीन सिलसिला शुरू हो गया है, और इसी तरह के कई कथित "निकट मुठभेड़" के मामले भी सामने आए हैं। श्रीमती मैकएलरॉय से दस्तावेजों का पैकेज प्राप्त करते ही मेरा पहला विचार था: "यह तो बस मैजेस्टिक-12 दस्तावेजों का एक और सेट है"।

(फुटनोट) मैं एक "रहस्यमय पैकेज" का जिक्र कर रहा हूं, जो कथित तौर पर 1984 में डाक द्वारा प्राप्त हुआ था, तथाकथित "मैजेस्टिक-12" समिति के अंतिम जीवित सदस्य की मृत्यु के तुरंत बाद, जिसका गठन राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन द्वारा 1947 में रोसवेल घटना के तुरंत बाद किया गया था।

"मैजेस्टिक-12" दस्तावेज़ों और श्रीमती मैकलॉय से मुझे मिले पैकेज में कई समानताएँ हैं। पहले मामले में, एक अज्ञात प्रेषक द्वारा बिना किसी पते के एक लिफाफा भेजा गया था। उसमें एक अविकसित फिल्म का रोल था। बस इतना ही। फिल्म के रोल पर उन दस्तावेज़ों की तस्वीरें थीं जिन्हें प्राप्तकर्ता और उसके सहयोगियों ने प्रामाणिक मान लिया था। इन सहयोगियों का स्वार्थ, यानी उनकी आजीविका, यूएफओ घटनाक्रम के विषय में "प्रमुख विशेषज्ञ" के रूप में खुद को सार्वजनिक ध्यान और विश्वसनीयता दिलाने पर बहुत अधिक निर्भर करती है। तब से वे दस्तावेज़ों की प्रामाणिकता का "सबूत" खोजने के लिए अथक

प्रयास कर रहे हैं। बेशक, सरकारी एजेंसियां दस्तावेज़ों में लगाए गए सभी आरोपों और सामान्य रूप से अलौकिक प्राणियों से संबंधित किसी भी बात से इनकार करती हैं।

इसके अलावा, यह विषय स्पष्ट रूप से झूठी रिपोर्टों, अविश्वसनीय स्रोतों, सुनी-सुनाई बातों, मनगढ़ंत झूठ, गलतफहमियों, अधूरी जानकारी, अनुपयुक्त जानकारी और अन्य असंख्य जटिलताओं से इतना भर गया है कि यह विज्ञान के रूप में हास्यास्पद या दुर्गम हो गया है। यह जानबूझकर किया गया हो सकता है, या फिर मानवता की व्यापक अराजकता और बर्बरता का प्रतिबिंब मात्र हो सकता है।

सरकारी इनकार और लीपापोती की बात करें तो, 11 सितंबर, 2001 की घटनाओं ने मुझे यह स्पष्ट कर दिया है कि अमेरिकी सरकार ने वियतनाम युद्ध, वाटरगेट कांड और इसी तरह के कई विश्वासघातों के बावजूद, अमेरिकी जनता और दुनिया के मन में अमेरिकी सरकार, सेना और खुफिया समुदाय की "ईमानदारी" के प्रति जो थोड़ा-बहुत विश्वास था, उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया है, क्योंकि उसने लगभग हर बात पर अपने ही लोगों से खुलेआम झूठ बोला है।

प्रागैतिहासिक और लिखित मानव इतिहास के लगभग सभी हिस्सों में व्याप्त "यूएफओ देखे जाने" की विशाल संख्या, "एलियन अपहरण" की अनगिनत रिपोर्टों और अलौकिक प्राणियों के साथ "निकट मुठभेड़ों" के बावजूद, मुझे इन सभी आंकड़ों में केवल एक अंतर्निहित, एकीकृत, निर्विवाद, स्वयंसिद्ध सामान्य कारक मिला:

यह मानते हुए कि व्यक्तियों की व्यक्तिपरक वास्तविकता या विश्वास स्वीकार्य साक्ष्य हैं, यूएफओ और/या अलौकिक जीवन रूपों के अस्तित्व का कोई सर्वमान्य "प्रमाण" नहीं है, चाहे वह सरकारी स्वीकारोक्ति, भौतिक साक्ष्य, परिस्थितिजन्य या व्यक्तिपरक डेटा पर आधारित हो।

इस बात पर असहमति, सरकारी स्वीकृति या भौतिक साक्ष्यों की कमी से मैं कई निष्कर्ष निकाल सकता हूँ कि ऐसी चीजें वास्तविक हैं, और यदि इनकी पुष्टि हो जाती है, तो इस रहस्य का एक व्यावहारिक समाधान निकल सकता है:

कटौती:

पृथ्वी पर और उसके आसपास अलौकिक गतिविधियों के व्यक्तिपरक, परिस्थितिजन्य और वस्तुनिष्ठ "सबूतों" के विशाल संग्रह के बावजूद, अलौकिक प्राणियों का अस्तित्व, इरादे और गतिविधियां छिपी और रहस्यमय बनी हुई हैं।

कटौती:

व्यक्तिपरक आंकड़ों, सरकारी स्वीकृति, भौतिक और परिस्थितिजन्य साक्ष्यों पर आधारित अलौकिक जीवन के सर्वमान्य प्रमाण परस्पर विरोधी निहित स्वार्थों के अधीन हैं, जिसने ऐसे प्रमाण को अप्राप्य बना दिया है।

इन सभी निष्कर्षों से स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है:

यदि अलौकिक जीवन रूपों का अस्तित्व है, तो मानव जाति और अलौकिक प्राणियों के बीच कोई सुसंगत, स्पष्ट, खुला और संवादात्मक संचार क्यों नहीं है?

सौभाग्यवश, व्यक्तिपरक वास्तविकता को प्रमाण या सबूत की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए, मैंने श्रीमती मैकलॉय से प्राप्त अपने व्यक्तिगत अनुभव को उन लोगों तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह पुस्तक लिखने का निर्णय लिया, जो इसमें रुचि रखते हों।

व्यक्तिगत तौर पर, मैं श्रीमती मैकलॉय से प्राप्त किसी भी चीज़ को प्रामाणिक नहीं मानता, सिवाय उस लिफाफे और उसके अंदर के कागज के। मैं इनमें से किसी भी बात की पुष्टि नहीं कर सकता। वास्तव में, मैं यह भी सत्यापित नहीं कर सकता कि श्रीमती मैकलॉय नाम की कोई व्यक्ति कभी अस्तित्व में थी या नहीं, सिवाय उस आवाज़ के जो मैंने 1998 में फोन पर सुनी थी। वह आवाज़ किसी की भी हो सकती थी। व्यक्तिगत रूप से, यूएफओ अनुसंधान में मेरी कोई निजी रुचि नहीं है। हाँ, मैंने अमर आध्यात्मिक प्राणियों के बारे में कुछ किताबें लिखी हैं - क्योंकि मुझे इस विषय में रुचि है। लेकिन उन किताबों की इतनी प्रतियाँ नहीं बिकीं कि उन्हें लिखने में लगे समय का खर्च भी निकल सके। यह मेरा शौक है। मैं एक छोटे व्यवसाय सलाहकार के रूप में अपना जीवन यापन करता हूँ।

मेरा उद्देश्य अलौकिक अस्तित्व, यूएफओ, सरकारी एजेंडा या आध्यात्मिक क्षमताओं के रहस्यों को समझने या जानने में असमर्थता को उचित ठहराना, उसकी व्याख्या करना या उसका समाधान करना नहीं है। न ही मेरा उद्देश्य किसी को यह शिक्षित करना, राजी करना या बढ़ावा देना है कि इनमें से कोई भी घटना अस्तित्व में है। इसके अलावा, इस विषय पर मेरी राय क्या है या क्या नहीं, यह अप्रासंगिक है।

इसके अलावा, मैंने श्रीमती मैकलॉय से प्राप्त लिफाफे सहित सभी मूल दस्तावेज़ जला दिए हैं। मैं अपना शेष जीवन यूएफओ शोधकर्ताओं, सरकारी एजेंटों, किराना स्टोर के टैब्लॉइड पत्रकारों, यूएफओ समर्थकों और खंडनकर्ताओं, या किसी और के द्वारा पीछा किए जाने में नहीं बिताना चाहता। श्रीमती मैकलॉय द्वारा 1947 में वास्तव में किसी एलियन का साक्षात्कार लेने के दावे को प्रमाणित करने के लिए कोई भी "सबूत" या प्रयास दूसरों को ही करने होंगे। रिप्ले कहते हैं, "मानो या न मानो"। 3 (पाद टिप्पणी)

मैं कहता हूं, "जो बात तुम्हारे लिए सच है, वह तुम्हारे लिए ही सच है"।

लॉरेंस आर. स्पेंसर, संपादक

इस पुस्तक में प्रयुक्त सामग्री के स्रोत के बारे में

इस पुस्तक की सामग्री मुख्य रूप से स्वर्गीय मटिल्डा ओ'डोनेल मैकएलरॉय से प्राप्त पत्रों, साक्षात्कार प्रतिलेखों और व्यक्तिगत नोट्स से ली गई है। उनके पत्र में उन्होंने दावा किया है कि यह सामग्री एक अलौकिक प्राणी के साथ उनके संवाद की स्मृति पर आधारित है, जिसने उनसे टेलीपैथिक रूप से "बातचीत" की थी। जुलाई और अगस्त 1947 के दौरान उन्होंने एक अलौकिक प्राणी का साक्षात्कार लिया, जिसे उन्होंने "एयरल" के रूप में पहचाना और दावा किया कि वह एक अधिकारी, पायलट और इंजीनियर था और अभी भी है, जिसे 8 जुलाई, 1947 को रोसवेल, न्यू मैक्सिको के पास दुर्घटनाग्रस्त हुए एक उड़न तश्तरी से निकाला गया था।

जाहिर है, जो कोई भी "उड़न तश्तरी" या "एलियन मुठभेड़" की घटनाओं में सबसे प्रसिद्ध, या कुख्यात, घटना के बारे में कुछ भी पढ़ता है, उसे 1) रिपोर्ट की प्रामाणिकता और 2) सूचना के स्रोत की विश्वसनीयता के बारे में अत्यधिक संदेह होना ही चाहिए, खासकर तब जब यह कथित घटना के साठ साल बाद पहली बार सामने आती है!

मुझे श्रीमती मैकलॉय से उपर्युक्त पत्र 14 सितंबर, 2007 को दस्तावेजों के एक पैकेज के साथ प्राप्त हुआ। पैकेज में तीन प्रकार के दस्तावेज थे:

1) साधारण, लाइनदार, 8 1/2" X 11" आकार के स्कूल नोटबुक के कागज पर कर्सिव में हस्तलिखित नोट्स, जो मेरे अनुमान से श्रीमती मैकलॉय द्वारा व्यक्तिगत रूप से लिखे गए थे।

2) सादे, सफेद 20 पाउंड बॉन्ड पेपर पर मैन्युअल टाइपराइटर से टाइप किए गए नोट्स, जिन्हें मेरा मानना है कि उन्होंने स्वयं तैयार किया था। कम से कम दोनों नोट्स एक ही लिखावट में लिखे गए प्रतीत होते हैं, और/या एक ही टाइपराइटर पर लगातार टाइप किए गए हैं। मुझे प्राप्त नोट्स की लिखावट भी आयरलैंड के नावन से प्राप्त मनीला लिफाफे के पते और वापसी पते की लिखावट से मिलती-जुलती प्रतीत होती है, जिस पर 3 सितंबर, 2007 की डाक मुहर लगी थी। चूंकि मैं फोरेंसिक विशेषज्ञ या लिखावट विश्लेषक नहीं हूं, इसलिए इस मामले में मेरी राय पेशेवर रूप से योग्य निर्णय नहीं है।

3) अजनबी के साथ उसके साक्षात्कार की टाइप की हुई प्रतिलेखों के कई पृष्ठ। ये स्पष्ट रूप से किसी अन्य टाइपराइटर पर टाइप किए गए थे। ये पृष्ठ अलग प्रकार के कागज पर टाइप किए गए थे और इनमें पुराने होने और बार-बार इस्तेमाल होने के स्पष्ट संकेत थे।

इन टिप्पणियों को किसी विशेष क्रम में या तिथि के अनुसार संकलित नहीं किया गया था, सिवाय उन मामलों के जहां उनके द्वारा लिखे गए किसी वाक्य या प्रस्तावना या स्पष्टीकरण के अनुच्छेद द्वारा या पृष्ठों के संदर्भ से अनुमान लगाकर ऐसा संकेत दिया गया हो।
वोल्टेयर 4 (फुटनोट) के हवाले से कहा गया है: "इतिहास झूठ की एक मिसिसिपी नदी है"।
श्रीमती मैकलॉय द्वारा उपलब्ध कराए गए साक्षात्कार के प्रतिलेखों में उस अजनबी द्वारा की गई टिप्पणियों के अनुसार, इतिहास का मूल पाठ यह है कि बहुत से देवता मनुष्य बन गए हैं, लेकिन बहुत कम मनुष्य, यदि कोई हो तो, फिर से देवता बन पाए हैं।
उस परग्रही प्राणी - "एयरल" - के अनुसार, यदि उसके द्वारा कथित रूप से कही गई किसी भी बात पर भरोसा किया जा सकता है, और यदि इस कथित संदेश का "अनुवाद" या व्याख्या सटीक है, तो इस ब्रह्मांड का इतिहास "झूठ की नदी" है, जिसमें सर्वशक्तिमान, ईश्वर-समान, अमर आध्यात्मिक प्राणियों की शक्ति और स्वतंत्रता समाप्त हो गई और पदार्थ और नश्वरता के सागर में विलीन हो गई।
इसके अलावा, एलियन द्वारा दिए गए बेहद सीधे और गैर-कूटनीतिक बयानों के अनुसार - जो उसकी "निजी राय" को व्यक्त करते प्रतीत होते हैं - यदि कोई "नरक" नामक स्थान की तलाश में ब्रह्मांड के सुदूर क्षेत्रों की यात्रा कर रहा हो, तो यह पृथ्वी और उसके निवासियों की वर्तमान स्थिति का सटीक वर्णन होगा।
श्रीमती मैकलॉय से मुझे प्राप्त "साक्षात्कार प्रतिलेखों" के "अविश्वसनीय" स्रोत को और अधिक जटिल, पेचीदा और विस्तृत बनाने वाला तथ्य यह है कि वे निम्नलिखित हैं:
1) यह लगभग पूरी तरह से एलियन और श्रीमती मैकएलरॉय के बीच "टेलीपैथिक संचार" पर आधारित है।
2) इनमें से कई साक्षात्कारों में "अमर आध्यात्मिक प्राणियों" की "अलौकिक" गतिविधियों पर चर्चा की गई है।
बेशक, अधिकांश "वैज्ञानिक विशेषज्ञ" किसी भी प्रकार की आध्यात्मिक घटनाओं को स्वीकार करने या समझने के लिए अनिच्छुक हैं।
पैरानॉर्मल शब्द की शब्दकोश परिभाषा इस प्रकार है:
विशेषण:

1. वैज्ञानिक विधियों द्वारा इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती
2. अलौकिक, या जो सामान्य संवेदी चैनलों से बाहर प्रतीत होता हो।
परिभाषा के अनुसार, जो लोग "अलौकिक" शब्द का प्रयोग करते हैं वे 1) आध्यात्मिक घटनाओं की व्याख्या करने में सक्षम नहीं होते हैं और 2) आध्यात्मिक घटनाएं उनकी सामान्य इंद्रिय-संवेदी सीमाओं से बाहर होती हैं।

संक्षेप में कहें तो, वैज्ञानिक आध्यात्मिक गतिविधियों को समझने और/या समझाने में असमर्थता और/या अनिच्छा से ग्रस्त हैं। इसलिए, इस पुस्तक में आध्यात्मिक गतिविधियों या आध्यात्मिक ब्रह्मांडों की चर्चा केवल उन्हीं लोगों द्वारा समझी जा सकती है जो ऐसी चीजों को समझ सकते हैं और समझना चाहते हैं।

कई साक्षात्कारों में एलियन द्वारा बताए गए समयकाल के अनुसार, ऐसे कई ठोस और अब तक अज्ञात कारण हैं जो इस संभावना की ओर इशारा करते हैं कि पृथ्वी के वैज्ञानिकों ने ब्रह्मांड, पृथ्वी, जीवन रूपों और घटनाओं की उत्पत्ति और प्राचीनता के बारे में कई असाधारण गलतियाँ की हैं। बेशक, ये गलतियाँ सटीक हो भी सकती हैं और नहीं भी, क्योंकि समय और उसका उप-प्रवचन, इतिहास, काफी हद तक व्यक्तिपरक होते हैं।

हालाँकि, यह देखा जा सकता है कि, अंतरतारकीय या
"ब्रह्मांडीय समय" के संदर्भ में, पृथ्वी के निवासियों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य अंतरिक्ष यात्रा करने वाली सभ्यता के कालक्रम में "हाल की घटनाओं" के रूप में मानी जाने वाली घटनाओं की तुलना में अपेक्षाकृत सूक्ष्म समयावधि तक सीमित है, और ब्रह्मांड की संपूर्ण समयावधि की तो बात ही छोड़ दें।

वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, पृथ्वी का भूवैज्ञानिक इतिहास लगभग 4 अरब वर्ष पुराना है। पुरातत्व की पाठ्यपुस्तकों में मानव जाति की प्राचीनता का अनुमान अधिक से अधिक कुछ मिलियन वर्ष ही लगाया गया है। यहाँ तक कि संपूर्ण जीव-जंतुओं का अस्तित्व भी इस ग्रह पर केवल कुछ सौ मिलियन वर्षों से ही माना जाता है। और कुल मिलाकर, इस ग्रह पर प्रत्येक प्राणी की व्यक्तिगत स्मृति केवल एक जीवनकाल तक ही सीमित है।

इस पुस्तक में उद्धृत अन्य सभी तिथियां, घटनाएं या घटनाओं की व्याख्याएं पृथ्वी के स्रोतों से ली गई हैं, जो विशुद्ध रूप से व्यक्तिपरक अवलोकन, अनुमान या मानव की कल्पनाएं हैं, जिनमें लेखक की भी शामिल हैं, और इसलिए पृथ्वीवासियों की अदूरदर्शी सोच, आत्मकेंद्रितता और उन विभिन्न ब्रह्मांडों के बारे में सामान्य अज्ञानता को ध्यान में रखते हुए, जिनमें हम निवास करते हैं, पाठक को तदनुसार उन पर विश्वास करना चाहिए या उन्हें अनदेखा करना चाहिए।

यह पुस्तक एक एलियन अंतरिक्ष यान अधिकारी, पायलट और इंजीनियर तथा सेना वायु सेना की एक सर्जिकल नर्स के बीच हुए साक्षात्कारों की एक श्रृंखला से प्राप्त जानकारी का एक अनौपचारिक प्रस्तुतीकरण है, जो घटना के साठ वर्ष बाद मुझे प्रदान की गई थी।

मटिल्डा ओ'डोनेल मैकलॉय

जीवनी संबंधी जानकारी

चूंकि मैं श्रीमती मैकलॉय से व्यक्तिगत रूप से कभी नहीं मिली हूँ, और उनसे केवल एक बार लगभग 20 मिनट के लिए फोन पर बात की है, इसलिए मैं उन्हें सूचना के विश्वसनीय स्रोत के रूप में व्यक्तिगत रूप से प्रमाणित नहीं कर सकती। वास्तव में, मैं इस बात का कोई पुख्ता प्रमाण नहीं दे सकती कि ऐसी कोई व्यक्ति वास्तव में मौजूद थी, सिवाय इसके कि मैंने उनसे फोन पर बात की थी और मुझे डाक द्वारा आयरलैंड के एक पते से हस्तलिखित सामग्री प्राप्त हुई थी।

जब मैंने 1998 में उनसे फोन पर बात की, तब मैं फ्लोरिडा में रह रहा था। हमारी संक्षिप्त फोन बातचीत के समय, श्रीमती मैकलॉय ग्लासगो, मोंटाना में स्कॉटी प्राइड ड्राइव पर रहती थीं। मुझे यह इसलिए पता है क्योंकि 1999 में प्रकाशित होने के बाद मैंने अपनी पुस्तक, द ओज़ फैक्टर्स, की एक प्रति उन्हें उपहार के रूप में भेजी थी। मुझे पूरा विश्वास है कि उन्हें पुस्तक मिल गई थी, क्योंकि आयरलैंड से मुझे मिले पत्र में उन्होंने पुस्तक का नाम लेकर उल्लेख किया है और कहा है कि उन्होंने इसे पढ़ा है।

मैंने अपनी रुचि के लिए इंटरनेट पर ग्लासगो, मोंटाना के बारे में थोड़ी खोजबीन की। ग्लासगो की स्थापना 1887 में एक रेलवे शहर के रूप में हुई थी, जो 1930 के दशक में तब लोकप्रिय हुआ जब राष्ट्रपति एफडीआर ने वहां फोर्ट पेक बांध के निर्माण का अनुरोध किया, जो ग्लासगो क्षेत्र के लिए रोजगार का एक बड़ा स्रोत बन गया। 1960 के दशक में ग्लासगो वायु सेना अड्डे (एसएसी) के कारण जनसंख्या बढ़कर 12,000 हो गई, जिसका उपयोग वियतनाम युद्ध और शीत युद्ध के शुरुआती दौर में किया गया था। इस अड्डे को 1969 में निष्क्रिय कर दिया गया था।

जब मैंने श्रीमती मैकलॉय से फोन पर बात की, तो उन्होंने बताया कि अमेरिकी वायु सेना द्वारा उनकी सेवा पूरी होने के बाद उन्हें वहाँ स्थानांतरित कर दिया गया था, और वहीं उनकी मुलाकात उनके पति से हुई, जो एक इंजीनियर थे। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने उनका पूरा नाम बताया। हालांकि, उन्होंने फोर्ट पेक बांध के निर्माण में काम किया था, जिससे विशाल फोर्ट पेक झील बनी। हालांकि बांध 1940 में बनकर तैयार हो गया था, लेकिन वे एक कुशल

मछुआरे और प्रकृति प्रेमी थे, इसलिए वे वहीं बस गए। मुझे लगा कि उस जगह की आयरिश विरासत का इससे कुछ संबंध था, लेकिन मैंने इस बारे में उनसे और बात नहीं की। मुझे बांध पर काम करने वाले किसी "मैकलॉय" का कोई रिकॉर्ड नहीं मिला है, लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, उस समय के कार्मिक रिकॉर्ड लगभग न के बराबर हैं।

मैंने अपनी पुस्तक 'द ओज़ फैक्टर्स' के शोध के दौरान उनसे संपर्क किया क्योंकि मुझे एक बहुत ही घुमावदार जांच के माध्यम से यह विश्वास दिलाया गया था कि यह महिला

उस पर एरिया 51, या रोसवेल दुर्घटना स्थल, या इसी तरह की किसी जगह पर एलियन से संपर्क में शामिल होने का संदेह था।
कई तरह के परिस्थितिजन्य अनुमानों और आकस्मिक संदर्भों के माध्यम से, मुझे वास्तव में फोन बुक में उसका नंबर मिल गया और मैंने उसे इस उम्मीद में फोन किया कि शायद वास्तव में ऐसा कोई व्यक्ति मौजूद हो।
कहने की ज़रूरत नहीं, जब मैंने उसे फ़ोन किया तो उसने मेरे सवालों का जवाब पूरी तरह से नहीं दिया। हालाँकि, मुझे लगता है कि वह मेरी किताब के लिए जानकारी जुटाने की मेरी सच्ची और मासूमियत भरी कोशिश से प्रभावित हुई और समझ गई कि मेरा कोई गलत इरादा या आर्थिक लाभ का मकसद नहीं था, न ही मैं किसी भी तरह से उसका फायदा उठाना चाहता था। फिर भी, उस समय उसने मुझे कोई उपयोगी जानकारी नहीं दी, सिवाय इसके कि वह सेना में थी और 1947 में न्यू मैक्सिको में तैनात थी।
वह किसी भी घटना के बारे में कुछ भी बात नहीं कर सकती थी, क्योंकि चुप रहना ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा था। हालाँकि इससे मेरी जिज्ञासा और भी बढ़ गई, लेकिन उसे और आगे बढ़ाने की कोशिश व्यर्थ थी, इसलिए मैंने हार मान ली और उसके बारे में भूल गया, जब तक कि पिछले सितंबर में मुझे आयरलैंड से वह पैकेज नहीं मिला।
मैंने पैकेज पर लिखे पते पर आयरलैंड में उनसे संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उनकी ओर से कोई जवाब नहीं मिला, और न ही मुझे आयरलैंड के मीथ काउंटी में कोई ऐसा व्यक्ति मिला जो उन दोनों को जानता हो, सिवाय उस मकान मालकिन के जिससे उन्होंने अपनी मृत्यु से कुछ सप्ताह पहले एक कमरा किराए पर लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी मृत्यु एक साथ हुई थी, हालांकि मेरे पास इसका कोई ठोस सबूत नहीं है।
हालांकि, उसने मुझे जो लिफाफा भेजा था, उस पर आयरलैंड के मीथ काउंटी के नावन स्थित डाकघर की वही तारीख अंकित थी। चूंकि (गूगल मैप्स के अनुसार) लिफाफे पर दिए गए पते पर एक वास्तविक निवास है, इसलिए मैंने उस पते पर पत्र लिखा और घर के मालिक ने बताया कि श्रीमती मैकलॉय और उनके पति, जिनका नाम "पॉल" था, दोनों का हाल ही में निधन हो गया है। उन्होंने बताया कि श्रीमती मैकलॉय और उनके पति की अस्थियों को एथबॉय रोड स्थित सेंट फिनियन कब्रिस्तान में दफनाया गया है।

इसके बाद, मुझे उनके मायके के नाम ओ'डोनेल से संबंधित कोई रिकॉर्ड नहीं मिला, और न ही मुझे उनके जन्म, चिकित्सा शिक्षा, सैन्य रिकॉर्ड, विवाह या मृत्यु की पुष्टि करने वाला कोई व्यक्तिगत मित्र, परिवार का सदस्य या दस्तावेज़ मिला, सिवाय आयरलैंड में उनकी मकान मालकिन (जो रिश्तेदार नहीं हैं) के, जिनसे उनकी मृत्यु से ठीक पहले मुलाकात हुई थी। मुझे संदेह है कि यह झूठी पहचान उन्हें सेना द्वारा तब दी गई थी जब उन्होंने रोसवेल छोड़ा था, जैसा कि उनके नोट्स में उल्लेख किया गया है।

दोनों ही मामलों में, ऐसा लगता है कि उसकी पहचान और उससे संबंधित सभी सबूत सार्वजनिक रिकॉर्ड से मिटा दिए गए हैं। मुझे पता है कि कुछ सरकारी

एजेंसियां सबूतों को छुपाने या रिकॉर्ड (और लोगों) को गायब करने में माहिर होती हैं। ऐसा लगता है कि रॉसवेल घटना की अत्यधिक संवेदनशीलता और कथित "छिपाने" के अन्य मामलों के अनुरूप, उनके मामले में भी यही किया गया है।

चूंकि मेरे पास श्रीमती मैकलॉय द्वारा मुझे भेजे गए इन "साक्षात्कारों" के किसी भी नोट के तथ्यात्मक होने की पुष्टि या प्रमाण देने के लिए पहले से उल्लिखित जानकारी के अलावा और कोई जानकारी नहीं है, इसलिए पाठक सावधान रहें और तदनुसार ध्यान दें!

श्रीमती मैकलॉय का पत्र ___

12 अगस्त, 2007

प्रिय लॉरेंस,

मैं यह पत्र आपको अपने पुराने अंडरवुड टाइपराइटर पर लिख रहा हूँ, जिसे मैंने सेना से छुट्टी मिलने के बाद खरीदा था। किसी तरह यह इस पत्र के विषय और इस लिफाफे में संलग्न दस्तावेजों के साथ एक उपयुक्त विरोधाभास प्रतीत होता है।

आपसे मेरी आखिरी बातचीत करीब आठ साल पहले हुई थी। उस संक्षिप्त टेलीफोन इंटरव्यू में आपने मुझसे अपनी किताब "द ओज़ फैक्टर्स" के शोध में मदद करने को कहा था, क्योंकि आपको शक था कि शायद मुझे कुछ ऐसा पता हो जिससे पृथ्वी के इतिहास पर अलौकिक प्राणियों के प्रभाव की संभावना की आपकी जांच में मदद मिल सके। बातचीत के दौरान मैंने आपको बताया था कि मेरे पास इस बारे में कोई जानकारी नहीं है जो मैं आपके साथ साझा कर सकूं।

तब से मैंने आपकी किताब पढ़ी है और मुझे यह बहुत रोचक और प्रभावशाली लगी। स्पष्ट है कि आपने इस विषय पर गहन शोध किया है और आप मेरे अनुभवों को समझ सकते हैं। फोन पर हुई बातचीत में आपने जिस पुराने दार्शनिक के कथन का जिक्र किया था, "महान शक्ति के साथ महान जिम्मेदारी आती है", उस पर मैं बहुत सोच रहा हूँ। हालाँकि मुझे नहीं लगता कि शक्ति का मेरे जीवन से या आपको संलग्न दस्तावेज़ भेजने के मेरे कारणों से कोई सीधा संबंध है, फिर भी आपने मुझे अपनी जिम्मेदारी के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया है।

मैंने कई कारणों से अपने रुख पर पुनर्विचार किया है, जिनमें से एक यह अहसास भी है कि आप सही थे। कम से कम स्वयं के प्रति तो मेरी जिम्मेदारी है ही। मैं आपको अपने निजी कष्टों के बारे में बता भी नहीं सकता।

5 (फुटनोट) नैतिक अनिश्चितता और आध्यात्मिक दुविधा का जो मैंने 1947 से झेला है। मैं अनंत काल तक "शायद मुझे ऐसा करना चाहिए था, या शायद मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था" का खेल नहीं खेलना चाहता!

मैंने अब तक समाज से जो ज्ञान छुपाए रखा है, उसे उजागर होने से रोकने के लिए कई लोगों की जान ले ली गई है। पृथ्वी पर केवल मुट्ठी भर लोगों ने ही वह सब देखा और सुना है जिसे मैंने साठ वर्षों तक गुप्त रखने का बोझ उठाया है। इतने वर्षों तक मुझे लगा कि हमारी सरकार में "सत्ताधारी" लोगों ने मुझ पर बहुत भरोसा किया है, हालांकि मुझे अक्सर यह भी महसूस हुआ है कि यह शक्ति पूरी तरह से गलत दिशा में निर्देशित है, जिसका उद्देश्य मानवता को इस निश्चित ज्ञान से "बचाना" है कि न केवल बुद्धिमान अलौकिक जीवन रूप मौजूद हैं, बल्कि वे पृथ्वी पर हर किसी के जीवन पर प्रतिदिन आक्रामक रूप से निगरानी रखते हैं और उसमें घुसपैठ करते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि अब समय आ गया है कि मैं अपना गुप्त ज्ञान किसी ऐसे व्यक्ति को सौंप दूं जो इसे समझ सके। मुझे नहीं लगता कि अपने ज्ञान को गुमनामी में ले जाना मेरे लिए उचित होगा, जहाँ तक किसी की पहुँच न हो और जिसे पहचाना न जा सके। मुझे लगता है कि इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है उन "निहित स्वार्थों" की रक्षा करना जिनके लिए यह जानकारी "राष्ट्रीय सुरक्षा" का मामला मानी जाती है, चाहे इसका जो भी अर्थ हो, और इसलिए इसे "अति गोपनीय" बनाए रखने का औचित्य सिद्ध होता है। 6 (पाद टिप्पणी)

साथ ही, अब मेरी उम्र 83 वर्ष हो गई है। मैंने इस शरीर को, जो मेरे लिए अब किसी काम का नहीं रहा, दर्द रहित तरीके से स्वयं को इच्छामृत्यु देने का निर्णय लिया है।

7 (फुटनोट) मेरे पास जीने के लिए कुछ ही महीने बचे हैं, और मुझे डरने या खोने के लिए कुछ भी नहीं है।

इसलिए, मैं मोंटाना से दूर चली गई हूँ, जहाँ मेरे पति और मैंने अपने जीवन का अधिकांश समय बिताया, और अपने शेष दिन आयरलैंड के काउंटी मीथ में मेरे पति के परिवार की जन्मभूमि में एक घर के किराए के एक सुंदर ऊपरी कमरे में बिताने के लिए आ गई हूँ।

8

(पाद लेख)

मैं नोथ 9 में "द ग्रेट माउंट" से कुछ ही दूरी पर मरूंगा।

(फुटनोट) और डाउथ, "अंधकार का परी टीला"। ये पवित्र "पत्थर के ढेर" या विशाल पत्थर की संरचनाएं हैं जिनका निर्माण लगभग 3700 ईसा पूर्व में किया गया था और जिन पर नक्काशी की गई है।
अस्पष्ट चित्रलिपि - लगभग उसी समय जब पृथ्वी भर में पिरामिड और अन्य रहस्यमय पत्थर के स्मारक बनाए जा रहे थे।
मैं "द हिल ऑफ तारा" से भी ज्यादा दूर नहीं हूँ, 10 (फुटनोट) जो कभी आयरलैंड में सत्ता का प्राचीन केंद्र था, जहाँ प्रागैतिहासिक काल में 142 राजाओं ने शासन किया था।

ऐतिहासिक काल में, प्राचीन आयरिश धर्म और पौराणिक कथाओं में यह "देवताओं" का पवित्र निवास स्थान था और "दूसरी दुनिया" का प्रवेश द्वार था।
संत पैट्रिक तारा में मूर्तिपूजकों के प्राचीन धर्म पर विजय प्राप्त करने आए थे। उन्होंने भले ही इस क्षेत्र में धार्मिक प्रथाओं को दबा दिया हो, लेकिन इन सभ्यताओं को पृथ्वी पर लाने वाले "देवताओं" पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, जैसा कि संलग्न दस्तावेजों को पढ़ने पर आपको पता चलेगा। इसलिए, यह इस अपवित्र संसार से मेरे प्रस्थान और इस जीवन के बोझ से अंतिम मुक्ति के लिए एक उपयुक्त स्थान है।
अतीत के स्पष्ट अवलोकन ने मुझे एक उच्च उद्देश्य दिखाया है: इस ग्रह, सभी जीवित प्राणियों और हमारी आकाशगंगा में मौजूद सभी जीव रूपों के अस्तित्व में सहायता करना!
हमारी सरकार की मौजूदा नीति लोगों को ऐसी बातों की जानकारी से "बचाने" की रही है। वास्तव में, अज्ञानता और गोपनीयता से मिलने वाली एकमात्र सुरक्षा सत्ता में बैठे लोगों के निजी एजेंडे को छुपाना है, जिसका उद्देश्य दूसरों को गुलाम बनाना है। और ऐसा करके, अंधविश्वास और मूर्खता के माध्यम से हर कथित दुश्मन और सहयोगी को निहत्था करना है।
इसलिए, मैंने अपने निजी नोट्स और विचारों की मूल और एकमात्र उपलब्ध प्रतियां संलग्न की हैं, जो उस मामले से संबंधित हैं जिसे मैंने अपने परिवार सहित सभी से छिपाकर रखा है। मैंने उन टाइप किए गए प्रतिलेखों की प्रतियां भी संलग्न की हैं जो स्टेनोग्राफर ने मेरे सभी साक्षात्कारों को समाप्त होने के बाद लिखे थे। मेरे पास मेरे साक्षात्कार रिपोर्टों की टेप रिकॉर्डिंग की कोई प्रति नहीं है। अब तक किसी को नहीं पता था कि मैं आधिकारिक साक्षात्कार प्रतिलेखों की प्रतियां गुप्त रूप से रखने में सक्षम था।
अब मैं इन दस्तावेजों को आपके विवेक पर छोड़ रहा हूँ कि आप इन्हें दुनिया के साथ किसी भी रूप या तरीके से साझा करें जो आपको उचित लगे। मेरी आपसे बस यही गुजारिश है कि आप ऐसा करते समय, यदि संभव हो, तो अपने जीवन या सुरक्षा को खतरे में न डालें। यदि आप मेरे अनुभवों के इन नोट्स को किसी काल्पनिक रचना, जैसे कि उपन्यास, में शामिल करते हैं, तो किसी भी ऐसी संस्था द्वारा इसकी तथ्यात्मक प्रकृति को आसानी से खारिज या अमान्य किया जा सकता है जिसके लिए "राष्ट्रीय" मान्यता प्राप्त है।
"सुरक्षा" का उपयोग जांच और न्याय से व्यक्तिगत बचाव के रूप में किया जाता है।

ऐसा करके आप उनके वास्तविक स्रोत के बारे में किसी भी जानकारी से इनकार कर सकते हैं और दावा कर सकते हैं कि यह आपकी कल्पना की उपज है। जिसने भी कहा था कि "सत्य कल्पना से भी विचित्र होता है", वह बिलकुल सही था। अधिकांश लोगों के लिए यह सब "अविश्वसनीय" होगा। दुर्भाग्य से, मान्यताएं वास्तविकता का विश्वसनीय मापदंड नहीं हैं।
साथ ही, मुझे पूरा यकीन है कि अगर आप इन नोट्स को किसी ऐसे व्यक्ति को दिखाएँ जो स्वतंत्रता के बजाय शारीरिक, आर्थिक या आध्यात्मिक गुलामी को प्राथमिकता देता है, तो उनमें निहित विषयवस्तु उसे बेहद आपत्तिजनक लगेगी। अगर आप इन दस्तावेजों को किसी अखबार में या शाम के टीवी समाचार में तथ्यात्मक रिपोर्टिंग के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास करें, तो उन्हें एक सनकी का काम बताकर सिरे से खारिज कर दिया जाएगा। इन दस्तावेजों की प्रकृति ही इन्हें आपत्तिजनक बनाती है।
अविश्वसनीय, और इसलिए निंदनीय। इसके विपरीत, इस जानकारी का प्रकाशन संभावित रूप से
कुछ राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक निहित स्वार्थों के लिए यह विनाशकारी साबित होगा। इन दस्तावेजों में ऐसी जानकारी है जो एलियन मुठभेड़ों और अलौकिक अनुभवों में आपकी रुचि और जांच से काफी संबंधित है। आपकी किताब "द ओज़ फैक्टर्स" में दिए गए उदाहरण का इस्तेमाल करते हुए, मैं ईमानदारी से कह सकता हूं कि "एलियन" प्रभावों के बारे में दूसरों द्वारा दी गई कुछ तथ्यात्मक रिपोर्टें पृथ्वी के चारों ओर मंडरा रहे प्रलयकारी तूफान के केंद्र में एक हल्की हवा के समान हैं। इस ब्रह्मांड में सचमुच जादूगर, दुष्ट चुड़ैलें और उड़ने वाले बंदर मौजूद हैं!
यह जानकारी, जिस पर इतने लंबे समय से इतने लोगों द्वारा संदेह और/या अटकलें लगाई जा रही हैं, को मुख्यधारा मीडिया, शिक्षा जगत और सैन्य-औद्योगिक परिसर 11 (फुटनोट) द्वारा लगातार नकारा गया है, जिसके बारे में राष्ट्रपति आइजनहावर ने हमें अपने विदाई भाषण में चेतावनी दी थी।
जैसा कि आप जानते हैं, जुलाई 1947 में, रोसवेल आर्मी एयर फील्ड (आरएएएफ) 12 (फुटनोट) ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की जिसमें कहा गया था कि फील्ड के 509 वें बम समूह

के कर्मियों ने रोसवेल, न्यू मैक्सिको के पास एक खेत से दुर्घटनाग्रस्त "उड़ती हुई डिस्क" बरामद की थी, जिससे मीडिया में काफी दिलचस्पी पैदा हुई थी।

13 (पाद टिप्पणी)

उसी दिन बाद में, आठवीं वायु सेना 14 (फुटनोट) के कमांडिंग जनरल ने बताया कि मेजर जेसी मार्सेल, जो मलबे की मूल पुनर्प्राप्ति में शामिल थे, ने केवल मौसम से क्षतिग्रस्त एक विमान के फटे-पुराने अवशेष ही बरामद किए थे।

गुब्बारा। इस घटना के वास्तविक तथ्यों को तब से अमेरिकी सरकार द्वारा दबा दिया गया है। आपको शायद यह पता न हो कि मैं अमेरिकी महिला सेना वायु सेना (डब्ल्यूएसी) में भर्ती थी।
15
(फुटनोट) मेडिकल कोर जो उस समय अमेरिकी सेना का हिस्सा था। घटना के समय मुझे 509 वें बॉम्ब ग्रुप में फ्लाइट नर्स 16 के रूप में तैनात किया गया था। (फुटनोट)
जब बेस पर विमान दुर्घटना की खबर मिली, तो मुझे काउंटर इंटेलिजेंस ऑफिसर श्री कैविट के साथ चलने के लिए कहा गया।
17
(फुटनोट) दुर्घटनास्थल पर अपने वाहन के चालक के रूप में उपस्थित होना, और यदि आवश्यक हो तो किसी भी जीवित व्यक्ति को आवश्यक आपातकालीन चिकित्सा सहायता प्रदान करना।
18
(फुटनोट) इसलिए, मैंने संक्षेप में एक एलियन अंतरिक्ष यान के मलबे के साथ-साथ उस यान में सवार कई एलियन कर्मियों के अवशेषों को देखा जो पहले ही मर चुके थे।
जब हम वहाँ पहुँचे तो मुझे पता चला कि यान में सवार एक कर्मी दुर्घटना में बच गया था, होश में था और उसे कोई चोट नहीं आई थी। होश में आया वह एलियन दिखने में बाकी लोगों जैसा ही था, लेकिन हूबहू वैसा नहीं था।
19
(पाद लेख)
वहाँ मौजूद अन्य कर्मियों में से कोई भी उस जीवित व्यक्ति से संवाद नहीं कर सका, क्योंकि वह प्राणी न तो मौखिक रूप से और न ही किसी पहचानने योग्य संकेत से संवाद कर रहा था। हालाँकि, जब मैंने "रोगी" की चोटों की जाँच की, तो मैंने तुरंत यह महसूस किया और समझा कि वह अलौकिक प्राणी "मानसिक छवियों" या "दूरसंवेदी विचारों" के माध्यम से मुझसे संवाद करने का प्रयास कर रहा था।
20
(फुटनोट) जो सीधे उस प्राणी के मन से प्रक्षेपित होता है।

मैंने तुरंत इस घटना की सूचना श्री कैविट को दी। चूंकि वहां मौजूद किसी अन्य व्यक्ति को ये विचार नहीं आ रहे थे, और वह परग्रही प्राणी मुझसे संवाद करने में सक्षम और इच्छुक प्रतीत हो रहा था, इसलिए एक वरिष्ठ अधिकारी से संक्षिप्त परामर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि मैं जीवित बचे उस परग्रही प्राणी के साथ वापस अड्डे पर जाऊँगा।

इसका एक कारण यह भी था कि मैं एक नर्स थी, और मैं उस अजनबी की शारीरिक जरूरतों का ध्यान रख सकती थी, साथ ही एक गैर-धमकी भरे संचारक के रूप में भी काम कर सकती थी।

साथी। आखिरकार, मैं उस स्थान पर अकेली महिला थी और अकेली ऐसी थी जिसके पास हथियार नहीं थे। इसके बाद मुझे स्थायी रूप से उस अजनबी की "साथी" के रूप में हर समय सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया।

21

(पाद लेख)

23

मेरा कर्तव्य था कि मैं उस विदेशी व्यक्ति से संवाद करूं और उसका साक्षात्कार लूं, और अपनी सारी खोजों की विस्तृत रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को सौंपूं। इसके बाद, मुझे सैन्य और गैर-सैन्य कर्मियों द्वारा प्रश्नों की विशिष्ट सूचियां दी गईं, जिनका मुझे उस विदेशी व्यक्ति के लिए अनुवाद करना था और उनके द्वारा दिए गए उत्तरों को रिकॉर्ड करना था।
मैंने चिकित्सा परीक्षण और अन्य कई जांचों के दौरान भी उस विदेशी व्यक्ति के साथ हर समय मौजूद रहा, जो विभिन्न सरकारी एजेंसियों के कर्मचारियों द्वारा उस विदेशी व्यक्ति पर की गई थीं।
इस बेहद असामान्य कार्य के लिए मुझे सीनियर मास्टर सार्जेंट के पद पर पदोन्नत किया गया, जिससे मेरी सुरक्षा रेटिंग में सुधार हुआ और मेरा वेतनमान 54.00 डॉलर प्रति माह से बढ़कर 138.00 डॉलर प्रति माह हो गया। मैंने 7 जुलाई से अगस्त 1947 तक ये कर्तव्य निभाए, जिसके बाद उस विदेशी की मृत्यु हो गई या उसने शरीर त्याग दिया, जैसा कि आप मेरे नोट्स में पढ़ेंगे।
हालांकि मुझे कभी भी उस अजनबी के साथ पूरी तरह से अकेला नहीं छोड़ा गया, क्योंकि समय-समय पर सैन्यकर्मी, खुफिया एजेंसी के लोग और कई अन्य अधिकारी मौजूद रहते थे, फिर भी मुझे लगभग छह सप्ताह तक उस अजनबी से निर्बाध रूप से संपर्क और संवाद करने का अवसर मिला।
आगे मैं उस एलियन यान के पायलट के साथ हुई "बातचीत" की अपनी व्यक्तिगत यादों का संक्षिप्त विवरण और सारांश प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे मैं "एयरल" के नाम से जानता था।
मुझे लगता है कि इस समय पृथ्वी के नागरिकों के सर्वोत्तम हित में, यह मेरा कर्तव्य है कि मैं उन छह हफ्तों के दौरान "एयरल" के साथ हुई अपनी बातचीत से जो कुछ भी सीखा है, उसे प्रकट करूं, उसकी "मृत्यु" या प्रस्थान की साठवीं वर्षगांठ पर।
हालांकि मैंने सेना वायु सेना में नर्स के रूप में सेवा की है, मैं पायलट या तकनीशियन नहीं हूं। इसके अलावा, उस समय मेरा अंतरिक्ष यान या दुर्घटनास्थल से बरामद अन्य सामग्रियों से कोई सीधा संपर्क नहीं था, और न ही
इसके बाद। उस हद तक यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मेरी समझ के बारे में

"एयरल" के साथ मेरा संवाद विचारों और मानसिक छवियों के अर्थ की व्याख्या करने की मेरी अपनी व्यक्तिपरक क्षमता पर आधारित है, जिन्हें मैं समझने में सक्षम था।

हमारा संवाद पारंपरिक अर्थों में "बोलचाल की भाषा" पर आधारित नहीं था। दरअसल, उस परग्रही के "शरीर" में बोलने के लिए कोई "मुँह" नहीं था। हमारा संवाद टेलीपैथी के माध्यम से होता था। शुरुआत में, मैं एयरल को स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाता था। मैं छवियों, भावनाओं और अनुभूतियों को समझ तो सकता था, लेकिन उन्हें शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए कठिन था। जब एयरल ने अंग्रेजी भाषा सीख ली, तो वह उन प्रतीकों और शब्दों के अर्थों का उपयोग करके अपने विचारों को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम हो गई जिन्हें मैं समझ सकता था। अंग्रेजी भाषा सीखना मेरे लिए एक तरह का उपकार था। यह उसके लाभ से अधिक मेरे स्वयं के लाभ के लिए था।
हमारे साक्षात्कार सत्रों के अंत तक, और तब से लगातार, मैं अधिक सहज महसूस करने लगा हूँ।
टेलीपैथिक संचार। मैं एयरल के विचारों को इस तरह समझने में अधिक कुशल हो गया हूँ जैसे वे मेरे अपने विचार हों। किसी तरह, उसके विचार मेरे विचार बन जाते हैं। उसकी भावनाएँ मेरी भावनाएँ बन जाती हैं। हालाँकि, यह उसकी कुछ सीमाओं से बंधा हुआ है।
वह अपनी निजी दुनिया को मेरे साथ साझा करने के लिए तत्पर और इच्छुक है। वह इस बात को लेकर चयनशील है कि मुझे उससे किस प्रकार का संचार प्राप्त करने की अनुमति है।
इसी तरह, उसका अनुभव, प्रशिक्षण, शिक्षा,
रिश्ते और उद्देश्य पूरी तरह से उसके अपने हैं।
यह "डोमेन" का प्रतीक है।
डोमेन एक ऐसी जाति या सभ्यता है, जिसमें एयरल (जिस एलियन का मैंने साक्षात्कार लिया) डोमेन अभियान बल में एक अधिकारी, पायलट और इंजीनियर के रूप में कार्यरत है। यह प्रतीक ज्ञात ब्रह्मांड की उत्पत्ति और असीमित सीमा का प्रतिनिधित्व करता है, जो डोमेन के नियंत्रण में एक विशाल सभ्यता में एकजुट और एकीकृत है।
एयरल वर्तमान में क्षुद्रग्रह बेल्ट में स्थित एक अड्डे पर तैनात है, जिसे वह पृथ्वी के सौर मंडल में स्थित "अंतरिक्ष स्टेशन" कहती है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, एयरल स्वयं है। दूसरे नंबर पर, वह डोमेन एक्सपेडिशनरी फोर्स में एक अधिकारी, पायलट और इंजीनियर के रूप

में स्वेच्छा से सेवा करती है। इस पद पर रहते हुए उसके कुछ कर्तव्य और जिम्मेदारियां हैं, लेकिन उसे अपनी इच्छा अनुसार आने-जाने की छूट भी प्राप्त है।
कृपया इस सामग्री को स्वीकार करें और इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएं। मैं दोहराता हूं कि यह मेरी रचना नहीं है।
इस सामग्री को अपने पास रखकर आपके जीवन को खतरे में डालने का मेरा कोई इरादा नहीं है, और न ही मुझे वास्तव में आपसे किसी भी बात पर विश्वास करने की उम्मीद है।

मैं भी इसका समर्थन नहीं करता। हालांकि, मुझे लगता है कि आप इस बात को समझ सकते हैं कि ऐसे ज्ञान का उन लोगों के लिए क्या महत्व हो सकता है जो इसकी वास्तविकता का सामना करने के लिए तैयार और सक्षम हैं।

मानवजाति को उन सवालों के जवाब जानने की ज़रूरत है जो इन दस्तावेजों में मौजूद हैं। हम कौन हैं? हम कहाँ से आए हैं? पृथ्वी पर हमारा उद्देश्य क्या है? क्या ब्रह्मांड में मानवजाति अकेली है? यदि कहीं और बुद्धिमान जीवन है तो उन्होंने हमसे संपर्क क्यों नहीं किया?

यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि लोग हमारे आध्यात्मिक और शारीरिक अस्तित्व के लिए विनाशकारी परिणामों को समझें यदि हम पृथ्वी पर पराक्रमी हस्तक्षेप के दीर्घकालिक और व्यापक प्रभावों को समाप्त करने के लिए प्रभावी कार्रवाई करने में विफल रहते हैं।

शायद इन दस्तावेजों में दी गई जानकारी मानव जाति के बेहतर भविष्य की दिशा में पहला कदम साबित हो। मुझे आशा है कि आप इस जानकारी को फैलाने में मुझसे कहीं अधिक सूझबूझ, रचनात्मकता और साहस का परिचय देंगे।

ईश्वर आपको आशीर्वाद दें और आपकी रक्षा करें।

श्रीमती मटिल्डा ओ'डोनेल मैकलॉय

सीनियर मास्टर सार्जेंट

महिला सेना वायु सेना चिकित्सा कोर, सेवानिवृत्त 100 ट्रॉयटाउन हाइट्स

नवान, मीथ

काउंटी मीथ, आयरलैंड

अध्याय एक

एलियन के साथ मेरा पहला साक्षात्कार

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"जब तक उस एलियन को बेस पर वापस लाया गया, तब तक मैं उसके साथ कई घंटे बिता चुका था। जैसा कि मैंने बताया, मिस्टर कैविट ने मुझे उस एलियन के साथ रहने के लिए कहा था, क्योंकि हम सब में से मैं ही एकमात्र व्यक्ति था जो उसकी बात समझ सकता था। मैं उस प्राणी के साथ 'संवाद' करने की अपनी क्षमता को समझ नहीं पा रहा था। इससे पहले मैंने कभी किसी के साथ टेलीपैथिक संचार का अनुभव नहीं किया था।"

मैंने जिस गैर-मौखिक संचार का अनुभव किया, वह कुछ वैसा ही था जैसे कोई बच्चा या कुत्ता आपको कुछ समझाने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन यह उससे कहीं अधिक प्रत्यक्ष और प्रभावशाली था! भले ही कोई शब्द नहीं बोले गए या कोई संकेत नहीं दिए गए, फिर भी विचारों का भाव मेरे लिए स्पष्ट था। बाद में मुझे एहसास हुआ कि हालांकि मुझे विचार प्राप्त हुआ, लेकिन मैंने उसका सटीक अर्थ नहीं समझा।

मुझे लगता है कि वह परग्रही प्राणी तकनीकी मामलों पर चर्चा करने को तैयार नहीं थी, क्योंकि एक अधिकारी और पायलट के रूप में उसकी भूमिका ऐसी थी कि उसे अपनी इकाई या संगठन द्वारा निर्धारित सुरक्षा और गोपनीयता बनाए रखने का कर्तव्य निभाना पड़ता था। बेशक, कर्तव्य के दौरान "शत्रु" द्वारा पकड़े गए किसी भी सैनिक का यह दायित्व होता है कि वह महत्वपूर्ण जानकारी गुप्त रखे, चाहे पूछताछ हो या यातना।

लेकिन इसके बावजूद, मुझे हमेशा ऐसा लगा कि वह अलौकिक प्राणी मुझसे कुछ भी छिपाने की कोशिश नहीं कर रहा था। मुझे कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ। उसकी बातें मुझे हमेशा सच्ची और ईमानदार लगीं। लेकिन, शायद आप कभी निश्चित रूप से नहीं जान सकते। मुझे निश्चित रूप से लगता है कि मेरा उस अलौकिक प्राणी के साथ एक अनूठा "संबंध" था। यह एक तरह का "विश्वास" या सहानुभूति थी, जैसी किसी मरीज़ या बच्चे के साथ होती है। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वह अलौकिक प्राणी समझ सकता था कि मुझे वास्तव में "उसमें" दिलचस्पी थी और मेरा कोई बुरा इरादा नहीं था, और अगर मैं उसे नुकसान होने से रोक सकता, तो मैं उसे कोई नुकसान नहीं होने देता। यह बात सच भी थी।

मैं उस परदेसी को "वह" कहकर संबोधित करता हूँ। वास्तव में, वह प्राणी शारीरिक या मनोवैज्ञानिक रूप से किसी भी प्रकार से यौन नहीं था। "उसका" व्यक्तित्व और व्यवहार काफी सशक्त और स्त्रीत्वपूर्ण था। हालांकि, शारीरिक संरचना के लिहाज से वह "अलैंगिक" था और उसमें कोई आंतरिक या बाह्य प्रजनन अंग नहीं थे। उसका शरीर किसी "गुड़िया" या "रोबोट" के शरीर जैसा था। उसमें कोई आंतरिक "अंग" नहीं थे, क्योंकि शरीर जैविक कोशिकाओं से निर्मित नहीं था। उसमें एक प्रकार का "परिक्रमा" तंत्र या विद्युत प्रणाली अवश्य थी।

मेरे शरीर में तंत्रिका तंत्र फैला हुआ था, लेकिन मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि यह कैसे काम करता है।

कद और बनावट में शरीर काफी छोटा और पतला था। लगभग 40 इंच लंबा। सिर, पतले हाथों, पैरों और धड़ की तुलना में अनुपातहीन रूप से बड़ा था। दोनों हाथों और पैरों में तीन-तीन उंगलियां थीं, जो कुछ हद तक पकड़ने में सक्षम थीं। 22 (फुटनोट) सिर में कोई कार्यशील नाक, मुंह या कान नहीं थे। मुझे समझ में आया कि अंतरिक्ष अधिकारी को इनकी आवश्यकता नहीं होती क्योंकि अंतरिक्ष में ध्वनि संचारित करने के लिए कोई वातावरण नहीं होता। इसलिए, ध्वनि संबंधी संवेदी अंग शरीर में अंतर्निहित नहीं होते। न ही शरीर को भोजन ग्रहण करने की आवश्यकता होती है, इसलिए मुंह का अभाव है।

आँखें काफ़ी बड़ी थीं। मैं आँखों की दृष्टि क्षमता का सटीक स्तर तो निर्धारित नहीं कर पाया, लेकिन मैंने देखा कि उनकी दृष्टि अत्यंत तीव्र रही होगी। मुझे लगता है कि आँखों के लेंस, जो बहुत गहरे और अपारदर्शी थे, प्रकाश के दृश्य स्पेक्ट्रम से परे तरंगों या कणों का भी पता लगाने में सक्षम रहे होंगे। 23 (फुटनोट) मुझे संदेह है कि इसमें विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम की पूरी श्रृंखला, 24 (फुटनोट) या उससे भी अधिक शामिल हो सकती है, लेकिन मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता।

जब उस प्राणी ने मेरी ओर देखा, तो उसकी निगाहें मानो मेरे आर-पार भेद गईं, जैसे कि उसके पास "एक्स-रे दृष्टि" हो। 25 (फुटनोट) पहले तो मुझे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि उसका कोई यौन इरादा नहीं था। वास्तव में, मुझे नहीं लगता कि उसने कभी यह सोचा भी होगा कि मैं पुरुष हूँ या स्त्री।

उस प्राणी के साथ कुछ समय बिताने के बाद यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई कि उसके शरीर को ऑक्सीजन, भोजन, पानी या किसी अन्य बाहरी पोषण या ऊर्जा स्रोत की आवश्यकता नहीं थी। जैसा कि मुझे बाद में पता चला, वह प्राणी अपनी "ऊर्जा" स्वयं उत्पन्न करती थी, जिससे उसका शरीर चलता और काम करता था। शुरू में यह थोड़ा अजीब लगा, लेकिन धीरे-धीरे मुझे इसकी आदत हो गई। वास्तव में, उसका शरीर बहुत ही सरल है। हमारे शरीरों की तुलना में उसमें कुछ खास नहीं है।

एयरल ने मुझे समझाया कि यह रोबोट की तरह यांत्रिक नहीं है, न ही जैविक है। इसे वह स्वयं एक आध्यात्मिक प्राणी के रूप में संचालित करती है। तकनीकी रूप से, चिकित्सा दृष्टिकोण से, मैं कहूंगा कि एयरल के शरीर को "जीवित" भी नहीं कहा जा सकता। उसका "गुड़िया" शरीर एक जैविक जीवन रूप नहीं है, जिसमें कोशिकाएं आदि हों।
इसकी त्वचा चिकनी थी, या कहें कि इसका आवरण भूरे रंग का था। शरीर तापमान, वायुमंडलीय स्थितियों और दबाव में होने वाले परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक सहनशील था। इसके अंग काफी नाजुक थे, मांसपेशियों के अभाव में। अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण नहीं होता, 27 (फुटनोट) इसलिए बहुत कम मांसपेशियों की ताकत की आवश्यकता होती है। शरीर का उपयोग लगभग पूरी तरह से अंतरिक्ष यान पर या कम या शून्य गुरुत्वाकर्षण वाले वातावरण में किया जाता था। चूंकि पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण अधिक है, इसलिए शरीर चलने-फिरने में सक्षम नहीं था क्योंकि पैर वास्तव में इसके लिए उपयुक्त नहीं थे। हालांकि, पैर और हाथ काफी लचीले और फुर्तीले थे।
एलियन के साथ मेरे पहले साक्षात्कार से ठीक पहले, रात भर में पूरा इलाका चहल-पहल से भर गया था। वहाँ एक दर्जन लोग रोशनी लगाने में लगे हुए थे।
28

और कैमरा उपकरण। "साक्षात्कार कक्ष" में एक मोशन पिक्चर कैमरा, माइक्रोफोन और टेप रिकॉर्डर भी स्थापित थे। (मुझे समझ नहीं आता कि माइक्रोफोन की क्या आवश्यकता थी, क्योंकि उस अजनबी से मौखिक संचार संभव नहीं था।) वहाँ एक स्टेनोग्राफर 28 (फुटनोट) भी था और कई लोग टाइपराइटर पर व्यस्तता से टाइप कर रहे थे।

मुझे बताया गया कि एक विशेषज्ञ विदेशी भाषा दुभाषिया और एक "कोड तोड़ने वाली" टीम को रात में ही अड्डे पर भेजा गया था ताकि एलियन से संवाद करने में मेरी मदद की जा सके। एलियन की जांच के लिए कई चिकित्सा कर्मी भी मौजूद थे - विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ। साथ ही, प्रश्न तैयार करने और उत्तरों की व्याख्या करने में मदद के लिए मनोविज्ञान के एक प्रोफेसर भी थे। चूंकि मैं सिर्फ एक नर्स थी, इसलिए मुझे "योग्य" दुभाषिया नहीं माना गया, जबकि मैं वहां मौजूद एकमात्र व्यक्ति थी जो एलियन के विचारों को समझ सकती थी!

हमारे बीच कई बार बातचीत हुई। हर "साक्षात्कार" के परिणामस्वरूप हमारे बीच आपसी समझ में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, जैसा कि मैं अपने नोट्स में आगे चर्चा करूंगा। यह बेस पर तैनात खुफिया अधिकारी द्वारा मुझे दिए गए प्रश्नों की सूची के उत्तरों वाली पहली प्रतिलिपि है, जिसे मैंने साक्षात्कार के तुरंत बाद स्टेनोग्राफर को बताया था।

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बम समूह

विषय: एलियन का साक्षात्कार, 9 जुलाई, 1947

प्रश्न - क्या आपको चोट लगी है?

उत्तर -

नहीं

प्रश्न - "आपको किस प्रकार की चिकित्सा सहायता की आवश्यकता है?"

उत्तर -

कोई नहीं

प्रश्न - "क्या आपको भोजन, पानी या अन्य पोषण की आवश्यकता है?"

उत्तर -
नहीं
29

प्रश्न - "क्या आपकी कोई विशेष पर्यावरणीय आवश्यकताएं हैं, जैसे कि वायु तापमान, वायुमंडलीय रासायनिक संरचना, वायु दाब या अपशिष्ट निपटान?"

उत्तर -

नहीं। मैं एक जैविक प्राणी नहीं हूँ।

प्रश्न - "क्या आपके शरीर या अंतरिक्ष यान में कोई ऐसे कीटाणु या संदूषण मौजूद हैं जो मनुष्यों या पृथ्वी पर मौजूद अन्य जीव-जंतुओं के लिए हानिकारक हो सकते हैं?"

उत्तर -

अंतरिक्ष में कोई कीटाणु नहीं होते।

प्रश्न - "क्या आपकी सरकार को पता है कि आप यहां हैं?"

उत्तर -

अभी नहीं

प्रश्न - "क्या तुम्हारे जैसे दूसरे लोग तुम्हें ढूंढने आएंगे?"

उत्तर -

हाँ

प्रश्न - "आपके लोगों की हथियार क्षमता क्या है?"

उत्तर -

अत्यंत विनाशकारी।

मुझे उनके पास मौजूद हथियारों या शस्त्रों की सटीक प्रकृति समझ में नहीं आई, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उनके जवाब में कोई दुर्भावना थी, बल्कि यह केवल एक तथ्य का बयान था।

प्रश्न - "आपका अंतरिक्ष यान दुर्घटनाग्रस्त क्यों हुआ?"

उत्तर -

30

वायुमंडल से निकले विद्युत प्रवाह के कारण हम नियंत्रण खो बैठे।
प्रश्न - "आपका अंतरिक्ष यान इस क्षेत्र में क्यों था?"
उत्तर -
जलते बादलों की जांच / विकिरण / विस्फोट 29 (पाद टिप्पणी)
प्रश्न - "आपका अंतरिक्ष यान कैसे उड़ता है?"
उत्तर -
यह "मन" द्वारा नियंत्रित होता है। यह "विचारों के आदेशों" का पालन करता है।
विचार का वर्णन करने के लिए मुझे अंग्रेजी भाषा में केवल "मन" या "विचार आदेश" शब्द ही सूझते हैं। उनके शरीर, और मुझे लगता है, अंतरिक्ष यान भी, किसी प्रकार के विद्युत "तंत्रिका तंत्र" के माध्यम से उनसे सीधे जुड़े हुए हैं, जिसे वे अपने विचारों से नियंत्रित करते हैं।
प्रश्न - "आपके लोग आपस में कैसे संवाद करते हैं?"
उत्तर -
मन/विचार के माध्यम से।
इस समय, "मन" और "विचार" शब्द मिलकर ही अंग्रेजी भाषा के सबसे उपयुक्त शब्द हैं जो इस विचार का वर्णन कर सकते हैं। हालांकि, मुझे यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ गई कि वे सीधे मन से संवाद कर रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे वह मुझसे संवाद कर रही है।
प्रश्न - "क्या आपके पास संचार के लिए कोई लिखित भाषा या प्रतीक हैं?"
उत्तर -
हाँ
प्रश्न - "आप किस ग्रह से हैं?"
उत्तर -
31

डोमेन की दुनिया का घर/जन्मस्थान
चूंकि मैं खगोलशास्त्री नहीं हूं, इसलिए मेरे पास कोई तरीका नहीं है
तारों, आकाशगंगाओं, तारामंडलों और अंतरिक्ष में दिशाओं के संदर्भ में सोचते हुए, मुझे ऐसा लगा जैसे वह आकाशगंगाओं के एक विशाल समूह के केंद्र में स्थित किसी ग्रह को अपना "घर" या "जन्मस्थान" मानती हो। उसके जन्मस्थान के बारे में उसकी धारणा, कल्पनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए "क्षेत्र" शब्द सबसे उपयुक्त है। इसे "क्षेत्र" या "दायरा" भी कहा जा सकता है। हालांकि, मुझे यकीन है कि यह सिर्फ एक ग्रह, सौर मंडल या तारों का समूह नहीं था, बल्कि आकाशगंगाओं का एक विशाल समूह था!
प्रश्न - "क्या आपकी सरकार हमारे नेताओं से मिलने के लिए प्रतिनिधि भेजेगी?"
उत्तर -
नहीं
प्रश्न - "पृथ्वी के संबंध में आपकी क्या मंशाएं हैं?"

उत्तर -
डोमेन की संपत्ति को संरक्षित/सुरक्षित रखें
प्रश्न - "आपने पृथ्वी की सरकारों और सैन्य प्रतिष्ठानों के बारे में क्या सीखा है?"
उत्तर -
गरीब/छोटा। ग्रह को नष्ट करो।
प्रश्न - "आपके लोगों ने पृथ्वी के लोगों को आपके अस्तित्व के बारे में क्यों नहीं बताया?"
उत्तर -
देखें/निरीक्षण करें। संपर्क न करें।
मुझे ऐसा लगा कि पृथ्वी पर रहने वाले लोगों से संपर्क करना मना है, लेकिन मुझे ऐसा कोई शब्द या विचार नहीं सूझा जो मेरे इस अहसास को पूरी तरह से व्यक्त कर सके। वे बस हमें देख रहे हैं।

प्रश्न - "क्या आपके लोग पहले कभी पृथ्वी पर आ चुके हैं?"
उत्तर -
आवधिक/पुनरावर्ती अवलोकन।
प्रश्न - "आप पृथ्वी के बारे में कब से जानते हैं?"
उत्तर -
मनुष्यों से बहुत पहले।
मुझे यकीन नहीं है कि "प्रागैतिहासिक" शब्द अधिक सटीक होगा, लेकिन यह निश्चित रूप से मानव जाति के विकास से पहले का बहुत लंबा समय था।
प्रश्न - "पृथ्वी पर सभ्यता के इतिहास के बारे में आप क्या जानते हैं?"
उत्तर -
थोड़ी सी रुचि/ध्यान। थोड़ा सा समय।
इस सवाल का जवाब मुझे बहुत अस्पष्ट लगा। हालांकि, मुझे ऐसा लगा कि पृथ्वी के इतिहास में उसकी रुचि बहुत अधिक नहीं है या उसने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया है। या शायद... मुझे ठीक से पता नहीं। मुझे इस सवाल का कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिला।
प्रश्न - "क्या आप हमें अपनी दुनिया के बारे में बता सकते हैं?"
उत्तर -
सभ्यता/संस्कृति/इतिहास का स्थान। विशाल ग्रह। धन/संसाधन सदा मौजूद। व्यवस्था। शक्ति। ज्ञान/बुद्धि। दो तारे। तीन चंद्रमा।
प्रश्न - "आपकी सभ्यता के विकास की स्थिति क्या है?"
उत्तर -
प्राचीन। खरबों वर्ष। सदा। सबसे श्रेष्ठ। योजना। समय-सारणी। प्रगति। जीत। उच्च लक्ष्य/विचार।

मैं "ट्रिलियन" संख्या का प्रयोग कर रहा हूँ (फुटनोट) क्योंकि मुझे यकीन है कि इसका अर्थ कई अरबों से भी बड़ी संख्या था। उसने जिस समय अवधि में संवाद किया, वह मेरी समझ से परे है। वास्तव में, पृथ्वी के वर्षों के संदर्भ में यह "अनंत" के विचार के अधिक निकट है।

प्रश्न - "क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?"

उत्तर -

हमें लगता है। यह सच है। इसे जारी रखें। हमेशा।

मुझे पूरा यकीन है कि वह परग्रही प्राणी "ईश्वर" या "पूजा" की अवधारणा को हमारी तरह नहीं समझता होगा। मेरा मानना है कि उसकी सभ्यता के सभी लोग

नास्तिक। मेरा मानना है कि वे खुद को बहुत ऊँचा समझते हैं और वास्तव में बहुत अभिमानी हैं!

प्रश्न - "आपके यहाँ किस प्रकार का समाज है?"

उत्तर -

व्यवस्था। शक्ति। भविष्य सर्वोपरि। नियंत्रण। विकास।

ये वे सबसे सटीक शब्द हैं जिनका उपयोग मैं उसके अपने समाज के बारे में उसके विचार का वर्णन करने के लिए कर सकता हूँ।

सभ्यता। इस प्रश्न का उत्तर देते समय उनकी "भावना" अत्यंत तीव्र, ज्वलंत और प्रभावशाली हो गई! उनके विचार ऐसी भावना से भरे हुए थे जिससे मुझे उल्लास और आनंद का अनुभव हुआ। लेकिन साथ ही, इससे मैं बहुत घबरा भी गया।

प्रश्न - "क्या ब्रह्मांड में आपके अलावा अन्य बुद्धिमान जीवन रूप भी मौजूद हैं?"

उत्तर -

हर जगह। हम सबसे महान/सर्वोच्च हैं।

उसके छोटे कद को देखते हुए, मुझे यकीन है कि उसका मतलब "सबसे लंबा" या "सबसे बड़ा" नहीं था। एक बार फिर, उसके अभिमानपूर्ण "स्वभाव" की झलक मुझे उससे मिली अनुभूति में स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"यह पहले साक्षात्कार का निष्कर्ष था। जब प्रश्नों की पहली सूची के उत्तर टाइप करके उन लोगों को दिए गए जो उनका इंतजार कर रहे थे, तो वे बहुत उत्साहित थे कि मैं उस अजनबी से कुछ भी बुलवाने में सफल रहा!"
हालांकि, मेरे जवाब पढ़ने के बाद वे निराश हुए क्योंकि मैं और स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाया। अब पहले सवालों के जवाबों के आधार पर उनके पास कई नए सवाल थे।
एक अधिकारी ने मुझे आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा करने को कहा। मैं बगल के कार्यालय में कई घंटों तक प्रतीक्षा करता रहा। मुझे उस विदेशी व्यक्ति के साथ अपना "साक्षात्कार" जारी रखने की अनुमति नहीं दी गई। हालांकि, मेरे साथ हमेशा अच्छा व्यवहार किया गया और मुझे जब चाहे खाने, सोने और शौचालय जाने की अनुमति दी गई।
अंततः, मुझे उस अजनबी से पूछने के लिए प्रश्नों की एक नई सूची तैयार की गई। मुझे पता चला कि इस समय तक कई अन्य एजेंट, सरकारी और सैन्य अधिकारी अड्डे पर पहुँच चुके थे। उन्होंने मुझे बताया कि अगले साक्षात्कार के दौरान मेरे साथ कमरे में कई अन्य लोग भी मौजूद रहेंगे ताकि वे मुझे साक्षात्कार के दौरान अधिक जानकारी पूछने के लिए प्रेरित कर सकें। हालाँकि, जब मैंने कमरे में मौजूद इन लोगों के साथ साक्षात्कार करने का प्रयास किया, तो मुझे उस अजनबी से कोई विचार, भावना या कोई अन्य प्रत्यक्ष संचार प्राप्त नहीं हुआ। कुछ भी नहीं। अजनबी बस बिना हिले-डुले कुर्सी पर बैठा रहा।
हम सब इंटरव्यू रूम से बाहर निकल गए। इस पर खुफिया एजेंट बहुत उत्तेजित हो गया। उसने मुझ पर झूठ बोलने या पहले सवालों के मनगढ़ंत जवाब देने का आरोप लगाया। मैंने जोर देकर कहा कि मेरे जवाब ईमानदार थे, और मैंने उन्हें यथासंभव सटीक बनाया था!
उसी दिन बाद में, यह तय किया गया कि कई अन्य लोग उस एलियन से सवाल पूछने की कोशिश करेंगे। हालांकि, विभिन्न "विशेषज्ञों" द्वारा कई प्रयासों के बावजूद, कोई भी उस एलियन से किसी भी तरह का संचार प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सका।
अगले कुछ दिनों में पूर्वी भारत से एक मानसिक अनुसंधान वैज्ञानिक को एलियन का साक्षात्कार लेने के लिए अड्डे पर बुलाया गया। उनका नाम गर्ट्रूड था। मुझे उनका अंतिम नाम याद नहीं है। 31 (फुटनोट) एक अन्य अवसर पर कृष्णमूर्ति 32 (फुटनोट) नामक एक भारतीय तांत्रिक एलियन से संवाद करने की कोशिश करने के लिए अड्डे पर आए। दोनों में से

कोई भी एलियन से कुछ भी संवाद करवाने में सफल नहीं हुआ। मैं व्यक्तिगत रूप से इन दोनों लोगों से भी टेलीपैथिक रूप से संवाद नहीं कर पाया, हालाँकि मुझे लगता था कि श्री कृष्णमूर्ति एक बहुत ही दयालु और बुद्धिमान सज्जन थे।

अंत में, यह निर्णय लिया गया कि मुझे उस अजनबी के साथ अकेले छोड़ दिया जाए ताकि यह देखा जा सके कि क्या मुझे कोई जवाब मिल सकता है।"

अध्याय दो

मेरा दूसरा साक्षात्कार

"अगले साक्षात्कार में मुझे कहा गया कि मैं उस अजनबी से केवल एक ही प्रश्न पूछूं।"

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बम समूह

विषय: एलियन का साक्षात्कार, 10. 7. 1947

प्रश्न - "आपने संवाद करना क्यों बंद कर दिया है?"

उत्तर -

रुको मत। अन्य। छिपा हुआ / ढका हुआ। गुप्त भय।

वह परग्रही उनसे संवाद नहीं कर सकती क्योंकि वे उससे डरते हैं, या उस पर भरोसा नहीं करते। और, मुझे यह स्पष्ट है कि वह परग्रही इस बात से भलीभांति अवगत है कि कुछ लोगों के मन में उसके प्रति गुप्त इरादे हैं और वे अपने असली विचार छुपा रहे हैं। मुझे यह भी उतना ही स्पष्ट है कि उस परग्रही को हमसे या किसी और चीज़ से ज़रा भी डर नहीं है!

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"मैंने परग्रही लोगों के विचारों का अर्थ व्यक्त करने के लिए चुने गए शब्दों पर बहुत सावधानीपूर्वक विचार किया, इससे पहले कि मैं स्टेनोग्राफर और दूसरे कमरे में बेसब्री से इंतजार कर रहे लोगों को रिपोर्ट करूं।"

व्यक्तिगत रूप से, मुझे उस एलियन के बारे में कभी कोई डर या आशंका नहीं थी। मैं उसके बारे में और उससे सब कुछ जानने के लिए बहुत उत्सुक और उत्साहित थी। हालाँकि, उस एलियन की तरह, मुझे उन एजेंटों या "अधिकारियों" पर ज़्यादा भरोसा या विश्वास नहीं था जो...

मेरे साक्षात्कारों पर उनका पूरा नियंत्रण था। मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उनके इरादे उसके प्रति क्या होंगे। हालांकि, मुझे पूरा यकीन है कि सैन्य अधिकारी एक विदेशी अंतरिक्ष यान और पायलट को अपने हाथ में लेने को लेकर बहुत घबराए हुए थे!
उस समय मेरी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि मैं उस अजनबी के विचारों और भावनाओं को और अधिक स्पष्ट रूप से कैसे समझूँ। मुझे लगता है कि मैं एक टेलीपैथिक "रिसीवर" के रूप में तो काफी अच्छा कर रहा था, लेकिन एक टेलीपैथिक "सेंडर" के रूप में उतना अच्छा नहीं। मैं उस अजनबी से संवाद करने का एक बेहतर तरीका ढूंढना चाहता था, जिससे सरकारी अधिकारियों की बढ़ती संख्या उसे सीधे तौर पर समझ सके, बिना मेरी व्याख्या पर निर्भर हुए। मुझे दुभाषिया के रूप में काम करने के लिए खुद को बहुत योग्य नहीं लगता था, फिर भी मैं ही एकमात्र व्यक्ति था जिससे वह अजनबी संवाद करती थी, इसलिए यह ज़िम्मेदारी मुझ पर ही थी।
मुझे यह भी भलीभांति एहसास हो रहा था कि यह शायद पृथ्वी के इतिहास की सबसे बड़ी "खबर" थी, और मुझे इसमें किसी भी तरह की भूमिका निभाने पर गर्व होना चाहिए। बेशक, उस समय तक प्रेस में पूरी घटना को आधिकारिक तौर पर नकार दिया गया था और सेना तथा सत्ताधारियों द्वारा बड़े पैमाने पर इसे दबाने का प्रयास किया गया था।33 (फुटनोट) पहले ही शुरू हो चुका था।
हालांकि, मुझे इस बात का दबाव महसूस होने लगा था कि मैं पृथ्वी पर पहला व्यक्ति था, जहाँ तक मुझे पता था, जिसने किसी अलौकिक जीवन रूप से संवाद स्थापित किया था! मुझे लगता है कि मैं समझता हूँ कि कोलंबस 34 (फुटनोट) ने कैसा महसूस किया होगा जब उसने एक छोटे से ग्रह पर एक महाद्वीप के आकार की "नई दुनिया" की खोज की थी। लेकिन, मैं तो एक बिल्कुल नए, अनछुए ब्रह्मांड की खोज करने वाला था! 35 (फुटनोट)

अपने वरिष्ठ अधिकारियों से अगले निर्देशों की प्रतीक्षा करते हुए, मैं कई भारी हथियारों से लैस मिलिट्री पुलिस (एमपी) की सुरक्षा में अपने क्वार्टर में गया। काले सूट और टाई पहने कई अन्य लोग भी मेरे साथ थे। जब मैं सुबह उठा तो वे अभी भी वहीं थे। नाश्ता मेरे क्वार्टर में ही लाया

गया, जिसके बाद वे मुझे वापस बेस पर स्थित उस कार्यालय में ले गए जहाँ साक्षात्कार हुआ था।

अध्याय तीन

मेरा तीसरा साक्षात्कार

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"तीसरा साक्षात्कार, और उसके बाद उस अजनबी के साथ मेरे जितने भी साक्षात्कार हुए, जैसा कि मैंने ऊपर बताया, दर्जनों अन्य लोगों द्वारा देखे और रिकॉर्ड किए गए थे। हालांकि वे शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं थे, एक विशेष कमरा बनाया गया था जिसमें एक तरफा कांच की खिड़की थी जिसके माध्यम से बगल के कमरे से साक्षात्कार को अजनबी को परेशान किए बिना देखा जा सकता था।"

उस एलियन को नए बने कमरे में ले जाया गया था और उसे फूलों वाले कपड़े से ढकी एक साधारण, आरामदायक कुर्सी पर बैठाया गया था। मुझे यकीन है कि किसी को पास के फर्नीचर स्टोर से कुर्सी खरीदने के लिए शहर भेजा गया होगा। एलियन का शरीर लगभग एक दुबले-पतले 5 साल के बच्चे जितना था, इसलिए कुर्सी के सामने वह बौनी लग रही थी। क्योंकि उसका शरीर जैविक नहीं था, इसलिए उसे भोजन, हवा या गर्मी की आवश्यकता नहीं थी, और जाहिर तौर पर वह सोती भी नहीं थी। उसकी पलकें या भौहें नहीं थीं, इसलिए उसकी आँखें बंद नहीं होती थीं। मुझे नहीं लगता कि जब तक वह कुर्सी पर सीधी बैठी रहती, तब तक कोई बता सकता था कि वह सो रही है या जाग रही है। जब तक वह अपने शरीर को हिलाती या हाथ से इशारा नहीं करती, तब तक यह बताना मुश्किल था कि वह जीवित है या नहीं, जब तक कि आप उसके विचारों को न समझ सकें।

अंततः मुझे पता चला कि उस एलियन की पहचान उसके शरीर से नहीं, बल्कि उसके "व्यक्तित्व" से होती थी। उसके साथी एलियन उसे "एयरल" कहकर बुलाते थे। अंग्रेज़ी वर्णमाला में इस नाम का वर्णन करने के लिए यही सबसे उपयुक्त शब्द है। मुझे लगा कि वह स्त्रीलिंग को प्राथमिकता देती थी। मुझे लगता है कि हम दोनों में एक स्वाभाविक, स्त्री-सुलभ सहानुभूति और जीवन तथा एक-दूसरे के प्रति स्नेहपूर्ण दृष्टिकोण था। मुझे यकीन है कि वह पुरुष अधिकारियों और एजेंटों के झगड़ालू, आक्रामक और दबंग रवैये से असहज महसूस करती थी, जिनमें से प्रत्येक ब्रह्मांड के रहस्यों को खोजने की बजाय अपनी व्यक्तिगत अहमियत और शक्ति को लेकर अधिक चिंतित था!

जब मैं कमरे में दाखिल हुआ, तो वह मुझे देखकर बहुत खुश हुई। मुझे उससे एक सच्ची पहचान, राहत और एक गर्मजोशी का एहसास हुआ। यह एक कुत्ते या बच्चे से मिलने वाले उत्सुक उत्साह और बिना शर्त, निस्वार्थ स्नेह जैसा था, लेकिन साथ ही शांत और संयमित भाव भी था। मुझे कहना होगा कि मैं इस बात से हैरान था कि मुझे उस अजनबी के लिए भी वैसा ही स्नेह महसूस हुआ, खासकर तब जब हमने इतना समय साथ बिताया था।

हमारे बीच बहुत कम समय था। मुझे खुशी थी कि बेस पर आने वाले सरकारी और सैन्य अधिकारियों की भीड़ से मिल रहे ध्यान के बावजूद मैं उनके साथ अपने साक्षात्कार जारी रख सका।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि जिन लोगों ने मेरे लिए प्रश्नों की अगली श्रृंखला लिखी थी, वे मुझसे संपर्क किए बिना स्वयं ही परग्रही प्राणी से संवाद करना सीखना चाहते थे।

यहां नए प्रश्नों की सूची के उत्तर दिए गए हैं:

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बम समूह

विषय: एलियन का साक्षात्कार, 11. 7. 1947

प्रश्न - क्या आप पृथ्वी की कोई भाषा पढ़ या लिख सकते हैं?

उत्तर -

नहीं।

प्रश्न - क्या आपको संख्याओं या गणित की समझ है?

उत्तर -

जी हां। मैं अधिकारी/पायलट/इंजीनियर हूं।

प्रश्न - क्या आप ऐसे चिह्न या चित्र लिख या बना सकते हैं जिन्हें हम अपनी भाषा में अनुवाद कर सकें?

उत्तर -

ढुलमुल

प्रश्न - क्या आप अपने विचारों को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने में हमारी मदद करने के लिए किसी अन्य संकेत या संचार माध्यम का उपयोग कर सकते हैं?

उत्तर -

नहीं।"

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)
मुझे पूरा यकीन था कि यह सच नहीं है। लेकिन, मैं यह अच्छी तरह समझ गया था कि एयरल लिखकर, चित्र बनाकर या सांकेतिक भाषा में बात करने को तैयार नहीं थी। मुझे लगा कि वह आदेशों का पालन कर रही थी, ठीक वैसे ही जैसे बंदी बनाए गए किसी भी सैनिक को आदेश दिया जाता है कि वह दुश्मन के लिए उपयोगी कोई भी जानकारी न दे, चाहे उसे यातना ही क्यों न दी जाए। वह केवल गोपनीय न होने वाली या व्यक्तिगत जानकारी, जैसे कि "नाम, पद और क्रमांक" ही बताने को तैयार थी।
(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)
परम गुप्त
अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख
रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 11. 7. 1947, दूसरा सत्र।
"प्रश्न - क्या आप हमें तारों के मानचित्र पर दिखा सकते हैं कि आपके गृह ग्रह का तारा कौन सा है?"
36
(पाद लेख)
उत्तर -
नहीं।
इसका कारण यह नहीं था कि उसे पृथ्वी से अपने गृह ग्रह की दिशाएँ नहीं पता थीं। वह स्थान बताना नहीं चाहती थी। इसका एक कारण यह भी था कि उसके गृह ग्रह का तारामंडल पृथ्वी पर किसी भी तारा मानचित्र पर मौजूद नहीं है। वह बहुत दूर है।
प्रश्न - आपके लोगों को आपको यहां ढूंढने में कितना समय लगेगा?
उत्तर -
अज्ञात।
प्रश्न - आपके लोगों को आपको बचाने के लिए यहां आने में कितना समय लगेगा?
उत्तर -

मिनट या घंटे।

40

प्रश्न - हम उन्हें कैसे समझा सकते हैं कि हमारा इरादा आपको नुकसान पहुंचाने का नहीं है?
उत्तर -
इरादे स्पष्ट हैं। अपने मन/छवियों/भावनाओं में देखें।
प्रश्न - यदि आप एक जैविक इकाई नहीं हैं, तो आप स्वयं को स्त्री क्यों कहते हैं?
उत्तर -
मैं एक सृष्टिकर्ता हूँ। माँ हूँ। स्रोत हूँ।
(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)
"इन सवालों को पूरा करने में मुझे कुछ ही मिनट लगे। तभी मुझे एहसास हुआ कि अगर वह एलियन सहयोग करने को तैयार नहीं था, या सैन्य, खुफिया एजेंसियों या वैज्ञानिकों द्वारा उपयोगी समझी जाने वाली कोई भी जानकारी प्रकट नहीं करता, तो हम गंभीर मुसीबत में पड़ सकते हैं।"
मुझे पूरा यकीन था कि वह परग्रही उन लोगों के वास्तविक इरादों से भलीभांति परिचित थी जिन्होंने ये प्रश्न लिखे थे, क्योंकि वह उनके मन की बात उतनी ही आसानी से पढ़ सकती थी जितनी आसानी से वह मेरे विचारों को पढ़ सकती थी और मुझसे टेलीपैथिक रूप से संवाद कर सकती थी। इन्हीं इरादों के कारण वह किसी भी परिस्थिति में, किसी भी तरह से उनमें से किसी के साथ सहयोग करने को तैयार नहीं थी और न ही कर सकती थी। मुझे यह भी पूरा यकीन है कि चूंकि वह कोई जैविक जीव नहीं थी, इसलिए किसी भी प्रकार की यातना या दबाव से उसका मन नहीं बदला जा सकता था!

चौथा अध्याय

भाषा की बाधा

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"जब मैंने खुफिया एजेंटों को 'कोई जवाब नहीं' मिलने के कारणों के बारे में बताया, तो काफी नाराजगी और हंगामा मच गया। कुछ खुफिया अधिकारियों, सैन्य अधिकारियों, मनोवैज्ञानिक और भाषा दुभाषियों के बीच बहुत तीखी बहस हुई। यह कई घंटों तक चली। अंत में यह तय किया गया कि मुझे उस विदेशी महिला का साक्षात्कार जारी रखने की अनुमति दी जाए, बशर्ते मैं उससे निम्नलिखित प्रश्न का संतोषजनक उत्तर प्राप्त कर सकूँ:"

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 11. 7. 1947, तीसरा सत्र।

प्रश्न - "आपको हमसे किस प्रकार की गारंटी या प्रमाण चाहिए जिससे आप हमारे प्रश्नों का उत्तर देने में सुरक्षित महसूस करें?"

उत्तर -

केवल वही बोलती है। केवल वही सुनती है। केवल वही सवाल करती है। कोई और नहीं। सीखना/जानना/समझना जरूरी है।

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"जब मैं साक्षात्कार कक्ष से लौटकर इस प्रश्न पर एलियन की प्रतिक्रिया की रिपोर्ट देने गया, तो वहां मौजूद खुफिया एजेंटों और सैन्य कर्मियों ने मेरा निराशाजनक और संदेहपूर्ण स्वागत किया। वे समझ नहीं पा रहे थे कि एलियन का इससे क्या मतलब था।"

मैंने स्वीकार किया कि मैं भी उसकी बात पूरी तरह समझ नहीं पा रहा था, लेकिन मैं उसकी व्याकुलता को समझने की पूरी कोशिश कर रहा था। मैंने अधिकारियों से कहा कि शायद संचार में समस्या इसलिए आ रही है क्योंकि मैं उस अजनबी की व्याकुलता को संतोषजनक ढंग से नहीं समझ पा रहा था। उस समय मैं इतना निराश था कि लगभग हार मानने को तैयार था!

और अब तो पहले से भी ज्यादा बहसें होने लगीं! मुझे पूरा यकीन था कि मुझे मेरे पद से हटा दिया जाएगा, भले ही वह अजनबी किसी और से बात करने से इनकार कर रही थी, या फिर कोई और ऐसा व्यक्ति नहीं मिला था जो उससे बात कर सके।

सौभाग्यवश, जॉन न्यूबल नामक एक बहुत ही चतुर व्यक्ति, जो नौसेना से जापानी भाषा विशेषज्ञ थे,

37

(फुटनोट) के पास समस्या का स्पष्टीकरण और समाधान था। उन्होंने समझाया कि, पहली बात तो यह कि समस्या का संबंध परग्रही व्यक्ति की संवाद करने की अक्षमता से बहुत कम था। इसका संबंध उससे कहीं अधिक था कि वह मेरे अलावा किसी और से संवाद करने को तैयार नहीं थी। दूसरी बात, किसी भी स्पष्ट और व्यापक संवाद के लिए दोनों पक्षों को एक सामान्य भाषा को समझना और उसके माध्यम से संवाद करना आवश्यक था।

भाषा में शब्द और प्रतीक बहुत सटीक अवधारणाओं और अर्थों को व्यक्त करते हैं। उन्होंने कहा कि जापानी भाषा में बहुत सारे समध्वनिक शब्द 38 (फुटनोट) हैं, जिससे रोजमर्रा के संवाद में काफी भ्रम पैदा होता है। वे इस समस्या को हल करने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे शब्दों के सटीक अर्थ लिखने के लिए मानक चीनी अक्षरों 39 (फुटनोट) का उपयोग करते हैं। इससे उनकी समस्या हल हो जाती है।

स्पष्ट शब्दावली के अभाव में, मनुष्यों और कुत्तों के बीच या दो छोटे बच्चों के बीच मूलभूत समझ से परे संचार संभव नहीं था। स्पष्ट रूप से परिभाषित शब्दों की एक सामान्य शब्दावली का अभाव, जिसका सभी पक्ष धाराप्रवाह उपयोग कर सकें, सभी लोगों, समूहों या राष्ट्रों के बीच संचार में एक सीमित कारक था।

इसलिए, उन्होंने सुझाव दिया कि केवल दो ही विकल्प थे। या तो मुझे उस अजनबी की भाषा सीखनी होगी, या उस अजनबी को अंग्रेज़ी सीखनी होगी। वास्तव में केवल एक ही विकल्प संभव था: कि मैं एयरल को अंग्रेज़ी सीखने के लिए मनाऊं, और भाषा विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में उसे अंग्रेज़ी सिखाऊं। इस तरीके को आज़माने में किसी को कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि कोई अन्य सुझाव नहीं था।

भाषा विशेषज्ञों ने सुझाव दिया कि मैं साक्षात्कार कक्ष में अपने साथ बच्चों की कुछ किताबें, पढ़ने की बुनियादी मार्गदर्शिका और व्याकरण की पाठ्यपुस्तक ले जाऊं। योजना यह थी कि मैं उस विदेशी महिला के बगल में बैठूंगी और उसे किताबों से पढ़कर सुनाऊंगी, साथ ही पढ़ते समय उंगली से पाठ की ओर इशारा करूंगी ताकि वह समझ सके।

सिद्धांत यह था कि एलियन को अंततः पढ़ना सिखाया जा सकता है, ठीक उसी तरह जैसे एक बच्चे को लिखित शब्दों के साथ शब्द और ध्वनि के संबंध के माध्यम से पढ़ना सिखाया जाता है।

बुनियादी व्याकरण की शिक्षा। मुझे लगता है कि उन्होंने यह भी मान लिया था कि अगर वह परग्रही इतनी बुद्धिमान है कि मुझसे टेलीपैथिक रूप से संवाद कर सकती है और आकाशगंगा में अंतरिक्ष यान उड़ा सकती है, तो वह शायद 5 साल के बच्चे की तरह या उससे भी जल्दी कोई भाषा सीख सकती है!

मैं साक्षात्कार कक्ष में लौटा और एयरल को यह सुझाव दिया। उन्होंने भाषा सीखने पर कोई आपत्ति नहीं जताई, हालांकि उन्होंने सवालों के जवाब देने का कोई वादा नहीं किया। किसी और के पास इससे बेहतर सुझाव नहीं था, इसलिए हमने आगे बढ़ने का फैसला किया।

अध्याय पाँच

पठन पाठ

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

मैंने पढ़ने की शुरुआत एक स्कूली किताब के पहले पन्नों से की, जिसका इस्तेमाल 1800 के दशक में अमेरिका के सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले अग्रणी बच्चों को पढ़ाने के लिए किया जाता था। इसका नाम है "मैकगफीज़ एक्लेक्टिक रीडर, प्राइमर से लेकर छठी कक्षा तक"। 40 (फुटनोट)

चूंकि मैं एक नर्स हूं, शिक्षिका नहीं, इसलिए मुझे किताबें देने वाले भाषा विशेषज्ञ ने मुझे एक विस्तृत जानकारी भी दी - एक पूरा दिन का कोर्स - कि इन किताबों का इस्तेमाल करके विदेशी को कैसे पढ़ाया जाए। उन्होंने बताया कि उन्होंने ये खास किताबें इसलिए चुनीं क्योंकि इनके मूल 1836 संस्करण का इस्तेमाल लगभग तीन-चौथाई सदी तक अमेरिका के लगभग चार-पांचवें स्कूली बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए किया गया था। किसी और किताब का अमेरिकी बच्चों पर इतने लंबे समय तक इतना प्रभाव कभी नहीं रहा।

मैकगफी का शैक्षिक पाठ्यक्रम "द प्राइमर" से शुरू होता है, जिसमें वर्णमाला के अक्षरों को क्रम से याद करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इसके बाद बच्चों को धीरे-धीरे भाषा के मूलभूत तत्वों का उपयोग करके शब्द बनाना और उनका उच्चारण करना सिखाया जाता है, जिसमें ध्वन्यात्मक विधि 41 (फुटनोट) का प्रयोग किया जाता है, जिसमें बच्चों को ध्वनियों को अक्षरों से जोड़ना सिखाया जाता है। प्रत्येक पाठ की शुरुआत पठन अभ्यास में प्रयुक्त शब्दों के अध्ययन और प्रत्येक शब्द के सही उच्चारण को दर्शाने वाले चिह्नों से होती है।

मैंने पाया कि "फर्स्ट एंड सेकंड रीडर्स" की कहानियों में बच्चों के परिवार के सदस्यों, शिक्षकों, दोस्तों और जानवरों के साथ संबंधों को दर्शाया गया है। "थर्ड, फोर्थ, फिफ्थ एंड सिक्स्थ रीडर्स" ने इन विचारों को और विस्तार दिया है। मुझे याद है ऐसी ही एक कहानी थी "विधवा और व्यापारी"। यह एक तरह की नैतिक कहानी है जिसमें एक व्यापारी एक जरूरतमंद विधवा से दोस्ती करता है। बाद में, जब विधवा अपनी ईमानदारी साबित करती है, तो व्यापारी उसे एक अच्छा उपहार देता है। हालांकि, ये किताबें यह नहीं सिखातीं कि दान केवल अमीर

लोगों से ही अपेक्षित है। हम सभी जानते हैं कि उदारता एक ऐसा गुण है जिसका अभ्यास हर किसी को करना चाहिए।

सभी कहानियाँ बहुत ही प्रेरणादायक थीं और उन्होंने ईमानदारी, दान, मितव्ययिता, मेहनत, साहस, देशभक्ति, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और माता-पिता के प्रति आदर जैसे गुणों को बहुत अच्छे से समझाया। व्यक्तिगत रूप से, मैं इस पुस्तक की अनुशंसा सभी को करूँगा!

मैंने यह भी पाया कि पुस्तक में प्रयुक्त शब्दावली हमारे आधुनिक युग में आम तौर पर लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले अपेक्षाकृत सीमित शब्दों की तुलना में बहुत उन्नत थी।

मुझे लगता है कि 200 साल पहले जब हमारे संस्थापकों ने स्वतंत्रता की घोषणा लिखी थी, तब से लेकर अब तक हम अपनी भाषा का बहुत कुछ खो चुके हैं!

निर्देशानुसार, मैं साक्षात्कार कक्ष में एयरल के बगल में बैठ गया और उसे मैकगफी रीडर्स श्रृंखला की एक-एक किताब पढ़कर सुनाने लगा। हर किताब में कहानियों और पढ़ाए जा रहे विषयों के उत्कृष्ट और सरल चित्र थे, हालांकि आज के मानकों के हिसाब से वे काफी पुराने हो चुके हैं। फिर भी, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, एयरल हर अक्षर, ध्वनि, शब्दांश और अर्थ को समझती और आत्मसात करती हुई प्रतीत हुई। हमने यह प्रक्रिया लगातार तीन दिनों तक प्रतिदिन 14 घंटे तक बिना किसी रुकावट के जारी रखी, सिवाय मेरे कुछ भोजन और आराम के विरामों के।

एयरल किसी भी चीज़ के लिए आराम नहीं करती थी। वह सोती भी नहीं थी। इसके बजाय, वह साक्षात्कार कक्ष में आरामदायक कुर्सी पर बैठी रहती और पहले से पढ़े हुए पाठों को दोहराती रहती। जब मैं हर सुबह वहीं से शुरू करने के लिए लौटता जहाँ हमने छोड़ा था, तब तक वह पिछले पाठों को याद कर चुकी होती और अगले पन्नों पर काफी आगे बढ़ चुकी होती। यह सिलसिला तब तक तेज़ होता रहा जब तक कि मेरे लिए उसे पढ़कर सुनाना व्यर्थ नहीं रह गया।

हालांकि एयरल बोल नहीं सकती थी, फिर भी वह अंग्रेजी में मुझसे "सोच-विचार" कर सकती थी। इन पाठों के अंत तक, एयरल स्वयं पढ़ने और अध्ययन करने में सक्षम हो गई थी। मैंने उसे नए शब्दों का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का उपयोग करना सिखाया। इसके बाद एयरल लगातार शब्दकोश का उपयोग करती रही। तब से मेरा काम उसके लिए एक संदेशवाहक की तरह था, उसके लिए नियमित रूप से संदर्भ पुस्तकें मंगवाना।

इसके बाद, श्री न्यूबल एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का एक सेट लेकर आए। 42 (फुटनोट) एयरल को यह विशेष रूप से पसंद आया क्योंकि इसमें बहुत सारे चित्र थे। इसके बाद, उन्होंने कई और चित्र-पुस्तकों और संदर्भ पुस्तकों की मांग की जिनमें चित्र और रेखाचित्र हों, क्योंकि अध्ययन की जाने वाली वस्तु का चित्र देखने से अर्थ समझना बहुत आसान हो जाता था।

अगले छह दिनों में, देश भर के पुस्तकालयों से किताबें लाई गईं, मेरा अनुमान है, क्योंकि कुछ ही दिनों में उसने सैकड़ों किताबें पढ़ डालीं! उसने हर उस विषय का अध्ययन किया जिसकी मैं कल्पना कर सकता था, और कई अन्य तकनीकी चीजें भी पढ़ीं जिनके बारे में मैं कभी कुछ जानना नहीं चाहता था, जैसे खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, इंजीनियरिंग, गणित, विभिन्न तकनीकी नियमावली, इत्यादि।

बाद में उन्होंने कथा साहित्य, उपन्यास, कविताएँ और साहित्य की क्लासिक पुस्तकें पढ़ना शुरू किया। एयरल ने मानविकी विषयों, विशेषकर इतिहास पर भी बहुत सी पुस्तकें पढ़ने की इच्छा जताई। मुझे लगता है कि उन्होंने मानव इतिहास और पुरातत्व पर कम से कम 50 पुस्तकें पढ़ी होंगी। बेशक, मैंने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें पवित्र बाइबिल की एक प्रति भी मिले, जिसे उन्होंने बिना किसी टिप्पणी या प्रश्न के शुरू से अंत तक पढ़ा।

हालांकि मैं प्रतिदिन 12 से 14 घंटे एयरल के साथ रहता था, लेकिन अगले सप्ताह का अधिकांश समय हमारे बीच बहुत कम बातचीत के साथ बीता, सिवाय कभी-कभार उसके द्वारा पूछे गए कुछ सवालों के। ये सवाल आमतौर पर उसे संदर्भ समझने या उन किताबों में कुछ स्पष्ट करने के लिए होते थे जो वह पढ़ रही थी। अजीब बात यह है कि एयरल ने मुझे बताया कि उसकी पसंदीदा किताबें "एलिस एडवेंचर्स इन वंडरलैंड" हैं।

43
(फुटनोट), "डॉन क्विक्सोट डे ला मांचा" 44 (फुटनोट) और "एक हजार और एक रातें"
45
(फुटनोट)। उन्होंने कहा कि इन कहानियों के लेखकों ने दिखाया है कि महान कौशल या शक्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण महान भावना और कल्पनाशीलता का होना है।
मैं उसके कई सवालों के जवाब नहीं दे सका, इसलिए मैंने बाहर वाले कमरे में बैठे लोगों से जवाब मांगे। इनमें से अधिकतर सवाल तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों से संबंधित थे। उसके कुछ सवाल मानविकी से भी जुड़े थे। उसकी जटिल समझ की गहराई और सवालों की सूक्ष्मता से पता चलता है कि उसकी बुद्धि बहुत तीव्र थी।
व्यक्तिगत तौर पर, मुझे लगता है कि जब हमने शुरुआत की थी तब वह पृथ्वी की संस्कृति और इतिहास के बारे में जितना स्वीकार करने को तैयार थी, उससे कहीं अधिक जानती थी। मुझे जल्द ही पता चल जाएगा कि वह कितना अधिक जानती थी।
47

अध्याय छह

मेरी शिक्षा शुरू होती है

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

दुर्घटनास्थल से एयरल को "बचाने" के 15 वें दिन तक, मैं उससे अंग्रेज़ी में धाराप्रवाह और सहजता से संवाद करने में सक्षम हो गया था। इस समय तक उसने इतना अधिक लिखित सामग्री ग्रहण कर लिया था कि उसकी शैक्षणिक शिक्षा मुझसे कहीं अधिक थी। हालाँकि मैंने 1940 में लॉस एंजिल्स में हाई स्कूल से स्नातक किया और चार साल तक प्रीमेडिकल और नर्सिंग प्रशिक्षण के लिए कॉलेज में पढ़ाई की, लेकिन मेरे स्वयं के पठन का दायरा काफी सीमित था।

मैंने उन विषयों में से अधिकांश का अध्ययन नहीं किया था जिनसे एयरल अब परिचित हो चुकी थी, खासकर उसकी तीव्र समझ, गहन अध्ययन की आदतों और लगभग फोटोग्राफिक मेमोरी को देखते हुए! वह पढ़ी हुई किताबों के लंबे-लंबे अंश याद रख सकती थी। उसे क्लासिक साहित्य की अपनी पसंदीदा कहानियों के अंश विशेष रूप से पसंद थे, जैसे कि हकल बेरी फिन के साहसिक कार्य।

46

(फुटनोट), गुलिवर की यात्राओं की कहानियाँ

47

(पाद टिप्पणी) और पीटर पैन

48

(फुटनोट) और स्लीपी हॉलो की किंवदंती

49

(पाद लेख)।

इस समय तक एयरल शिक्षक बन चुकी थी और मैं छात्र। मैं वह सब सीखने वाला था जो पृथ्वी के मनुष्य नहीं जानते और न ही जानने का कोई तरीका है!

हमारे साक्षात्कार कक्ष के एकतरफा शीशे से हमें देख रहे वैज्ञानिकों और एजेंटों की भीड़, जिन्हें एयरल और मैं अब "गैलरी" कहते थे, उनसे सवाल पूछने के लिए और भी अधीर होती

जा रही थी। लेकिन एयरल ने मुझसे अलग किसी को भी उनसे सवाल पूछने की अनुमति देने से साफ इनकार कर दिया, चाहे वह मेरे माध्यम से दुभाषिया के रूप में हो या लिखित रूप में। सोलहवें दिन की दोपहर को, जब एयरल पढ़ रही थी, हम दोनों एक-दूसरे के बगल में बैठे थे। उसने अपनी पढ़ी जा रही किताब का आखिरी पन्ना बंद किया और उसे एक तरफ रख दिया। मैं उसे पढ़ने के लिए रखी किताबों के बड़े ढेर में से अगली किताब देने ही वाला था कि तभी वह मुड़ी और मुझसे बोली, या यूँ कह रही थी, "अब मैं बोलने के लिए तैयार हूँ।" पहले तो मैं उसकी इस बात से थोड़ा हैरान हुआ। मैंने उसे जारी रखने का इशारा किया और उसने मुझे मेरा पहला पाठ पढ़ाना शुरू किया।

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)
परम गुप्त
अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख
रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 24 जुलाई, 1947, पहला सत्र।
मैंने पूछा, "एयरल, तुम क्या कहना चाहोगी?"
"मैं इस अंतरिक्ष क्षेत्र में डोमेन अभियान बल का हिस्सा रहा हूँ, कई हज़ार वर्षों से। हालाँकि, 5965 ईसा पूर्व के बाद से पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों के साथ मेरा व्यक्तिगत रूप से कोई घनिष्ठ संपर्क नहीं रहा है। डोमेन के भीतर स्थित ग्रहों के निवासियों के साथ संवाद करना मेरा प्राथमिक कार्य नहीं है। मैं एक अधिकारी, पायलट और इंजीनियर हूँ, और मुझे कई कर्तव्यों का पालन करना है। फिर भी, डोमेन के भीतर मैं 347 अन्य भाषाओं में धाराप्रवाह हूँ, लेकिन मुझे आपकी अंग्रेज़ी भाषा का कोई ज्ञान नहीं है।"
पृथ्वी पर बोली जाने वाली आखिरी भाषा जिससे मैं परिचित था, वह वैदिक भजनों की संस्कृत भाषा थी।
50
(फुटनोट) उस समय मैं एक मिशन का सदस्य था जिसे भेजा गया था
हिमालय पर्वतमाला में स्थित डोमेन बेस के लापता होने की जांच करें। अधिकारियों, पायलटों, संचार और प्रशासनिक कर्मियों की एक पूरी बटालियन लापता हो गई और बेस नष्ट हो गया। कई मिलियन वर्ष पूर्व, मुझे इस क्षेत्र के लिए जांच, डेटा मूल्यांकन और कार्यक्रम विकास अधिकारी के रूप में प्रशिक्षित किया गया था और मैंने इस पद पर कार्य किया था। उस तकनीक में अनुभव होने के कारण, मुझे खोज दल के हिस्से के रूप में पृथ्वी पर भेजा गया था। मेरे कर्तव्यों में से एक उस समय आस-पास के क्षेत्र में रहने वाली मानव आबादी से पूछताछ करना था। 51 (पाद टिप्पणी) उस क्षेत्र के कई लोगों ने उस क्षेत्र में "विमान" या अंतरिक्ष यान देखे जाने की सूचना दी थी।
52 (पाद टिप्पणी)

साक्ष्य, गवाही, अवलोकन और कुछ साक्ष्यों की अनुपस्थिति के तार्किक विस्तार के आधार पर, मैंने अपनी टीम को इस खोज तक पहुँचाया कि अभी भी "पुराने साम्राज्य" के जहाज और अच्छी तरह से छिपे हुए "पुराने साम्राज्य" के ठिकाने मौजूद थे।
इस सौर मंडल में ऐसी संरचनाएं मौजूद थीं जिनके बारे में हमें बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी।

आप और मैं आपकी भाषा में संवाद नहीं कर पाए क्योंकि मैं व्यक्तिगत रूप से आपकी भाषा से परिचित नहीं था। हालांकि, अब जब मैंने आपके द्वारा प्रदान की गई पुस्तकों और सामग्री को स्कैन कर लिया है, तो यह डेटा इस क्षेत्र में स्थित हमारे अंतरिक्ष स्टेशन को भेज दिया गया है और हमारे संचार अधिकारी द्वारा हमारे कंप्यूटरों के माध्यम से संसाधित किया गया है। इसका मेरी अपनी भाषा में अनुवाद किया गया है और मुझे ऐसे संदर्भ में वापस भेजा गया है जिसे मैं समझ सकता हूँ। मुझे हमारे कंप्यूटरों में संग्रहीत फाइलों से अंग्रेजी भाषा और पृथ्वी सभ्यता से संबंधित डोमेन रिकॉर्ड के बारे में अतिरिक्त जानकारी भी प्राप्त हुई है।

53

(पाद लेख)

अब मैं आपको कुछ ऐसी जानकारी देने के लिए तैयार हूँ जो मुझे लगता है कि आपके लिए बहुत उपयोगी होगी। मैं आपको सच बताऊंगा। हालाँकि सत्य अन्य सभी सत्यों के सापेक्ष होता है, मैं अपनी ईमानदारी और अपने समुदाय के प्रति निष्ठा की सीमाओं के भीतर रहते हुए, और जिस संगठन की मैं सेवा करता हूँ और जिसकी रक्षा करने की मैंने शपथ ली है, उसके प्रति अपने दायित्वों का उल्लंघन किए बिना, यथासंभव ईमानदारी और सटीकता से, अपने दृष्टिकोण से सत्य आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

"ठीक है," मैंने सोचा। "क्या अब आप दर्शकों के सवालों का जवाब देंगे?"

नहीं। मैं प्रश्नों का उत्तर नहीं दूंगा। मैं आपको वह जानकारी प्रदान करूंगा जो मुझे लगता है कि मानवता का निर्माण करने वाले अमर आध्यात्मिक प्राणियों के कल्याण के लिए लाभकारी होगी, और जो पृथ्वी के असंख्य जीवन रूपों और पर्यावरण के अस्तित्व को बढ़ावा देगी, क्योंकि पृथ्वी के संरक्षण को सुनिश्चित करना मेरे मिशन का एक हिस्सा है।

व्यक्तिगत रूप से, मेरा दृढ़ विश्वास है कि सभी चेतन प्राणी अमर आध्यात्मिक प्राणी हैं। इसमें मनुष्य भी शामिल हैं। सटीकता और सरलता के लिए मैं एक काल्पनिक शब्द का प्रयोग करूँगा: "है-होना"। क्योंकि एक अमर प्राणी का मूल स्वभाव यह है कि वे कालातीत "है" की अवस्था में रहते हैं, और उनके अस्तित्व का एकमात्र कारण यह है कि वे "होना" चुनते हैं।

समाज में उनकी स्थिति चाहे कितनी भी नीची क्यों न हो, प्रत्येक व्यक्ति उस सम्मान और व्यवहार का हकदार है जो मैं स्वयं दूसरों से प्राप्त करना चाहता हूँ। पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति एक आंतरिक अस्तित्व (IS-BE) बना रहता है, चाहे उसे इस तथ्य का एहसास हो या न हो।

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)
मैं इस बातचीत को कभी नहीं भूलूंगा। उसका लहजा बहुत ही सीधा-सादा और भावहीन था। फिर भी, पहली बार मुझे एयरल में एक गर्मजोशी भरी और वास्तविक "व्यक्तित्व" का आभास हुआ। "अमर आध्यात्मिक प्राणियों" के उसके संदर्भ ने मुझे अंधेरे कमरे में प्रकाश की एक चमक की तरह झकझोर दिया। मैंने पहले कभी नहीं सोचा था कि एक मनुष्य भी अमर प्राणी हो सकता है।
मुझे लगता था कि प्रतिष्ठा या शक्ति केवल पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के लिए ही आरक्षित है। और, क्योंकि मैं एक धर्मनिष्ठ कैथोलिक हूँ और प्रभु यीशु और पवित्र पिता के वचन का पालन करता हूँ, मैंने कभी किसी स्त्री को अमर आध्यात्मिक प्राणी नहीं माना - यहाँ तक कि पवित्र माता मरियम को भी नहीं। फिर भी, जब एरल ने यह विचार किया, तो मुझे पहली बार स्पष्ट रूप से एहसास हुआ कि वह स्वयं एक अमर आध्यात्मिक प्राणी है, और हम सब भी हैं!
एयरल ने कहा कि उसे महसूस हो रहा था कि मैं इस विचार को लेकर उलझन में हूँ। उसने कहा कि वह मुझे यह साबित करके दिखाएगी कि मैं भी एक अमर आध्यात्मिक प्राणी हूँ। उसने कहा, "अपने शरीर से ऊपर उठो!" तुरंत ही, मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने शरीर से "बाहर" हूँ, और छत से अपने शरीर के सिर के शीर्ष को देख रहा हूँ!
54
(फुटनोट) मैं अपने आस-पास का कमरा भी देख पा रहा था, जिसमें मेरे बगल वाली कुर्सी पर एयरल का शरीर भी शामिल था। कुछ क्षण बाद, मुझे यह सरल, लेकिन चौंकाने वाली सच्चाई समझ में आई कि "मैं" एक शरीर नहीं हूँ।
उस पल एक काला पर्दा हट गया और मेरे जीवन में पहली बार, और बहुत लंबे समय बाद, मुझे एहसास हुआ कि मैं "मेरी आत्मा" नहीं हूँ, बल्कि "मैं" ही "मैं" हूँ - एक आध्यात्मिक प्राणी। यह एक अवर्णनीय अनुभूति थी, लेकिन इसने मुझे ऐसी खुशी और राहत से भर दिया जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। जहाँ तक "अमर" शब्द का सवाल है, मैं उसका अर्थ नहीं समझ पा रही हूँ, क्योंकि मुझे हमेशा यही सिखाया गया है कि मैं अमर नहीं हूँ - शायद एक आत्मा हूँ - लेकिन निश्चित रूप से अमर नहीं हूँ!

कुछ क्षण बाद—मुझे ठीक से याद नहीं कि कितना समय—एयरल ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे यह विचार बेहतर ढंग से समझ में आया। अचानक, मैं फिर से अपने शरीर में आ गया और ज़ोर से बोला, "हाँ! मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं!"

मैं उस अनुभव से इतनी हैरान थी कि मुझे अपनी कुर्सी से उठकर कुछ मिनटों के लिए कमरे में इधर-उधर घूमना पड़ा। मैंने पानी पीने और वॉशरूम जाने का बहाना बनाया, और मैं गई भी। वॉशरूम में मैंने शीशे में खुद को देखा। मैंने टॉयलेट का इस्तेमाल किया, अपना मेकअप ठीक किया और अपनी यूनिफॉर्म को ठीक किया। 10-15 मिनट बाद मैं फिर से सामान्य महसूस करने लगी और इंटरव्यू रूम में लौट आई।

उसके बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अब एयरल के लिए सिर्फ एक दुभाषिया नहीं हूँ। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसकी "आत्मीय" हूँ। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सुरक्षित हूँ, घर पर हूँ, किसी भरोसेमंद दोस्त या परिवार के सदस्य के साथ, जितना करीबी मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया। एयरल ने "व्यक्तिगत अमरता" की अवधारणा को लेकर मेरी उलझन को भांप लिया और समझ लिया। उसने मुझे यही समझाकर अपना पहला "पाठ" शुरू किया।

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख जारी है)
एयरल ने मुझे पृथ्वी पर आने और 509 वें बॉम्बर स्क्वाड्रन के क्षेत्र में होने के अपने कारण बताए। उसे उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने न्यू मैक्सिको में परीक्षण किए गए परमाणु हथियारों के विस्फोटों की जांच करने के लिए भेजा था। उसके वरिष्ठों ने उसे जानकारी इकट्ठा करने का आदेश दिया था।
वायुमंडल से प्राप्त जानकारी जिसका उपयोग विकिरण की मात्रा और पर्यावरण को होने वाले संभावित नुकसान का निर्धारण करने के लिए किया जा सकता है। अपने मिशन के दौरान, अंतरिक्ष यान बिजली की चपेट में आ गया (फुटनोट), जिससे वह नियंत्रण खो बैठा और दुर्घटनाग्रस्त हो गया।
अंतरिक्ष यान का संचालन आईएस-बीई द्वारा किया जाता है, जो "गुड़िया जैसे शरीर" का उपयोग ठीक उसी तरह करते हैं जैसे कोई अभिनेता मुखौटा और पोशाक पहनता है। यह भौतिक जगत में कार्य करने के लिए एक यांत्रिक उपकरण की तरह है। वह, साथ ही अधिकारी वर्ग के अन्य सभी आईएस-बीई और उनके वरिष्ठ अधिकारी, अंतरिक्ष में ड्यूटी पर रहते हुए इन "गुड़िया जैसे शरीरों" में निवास करते हैं। जब वे ड्यूटी पर नहीं होते हैं, तो वे शरीर को "छोड़" देते हैं और शरीर का उपयोग किए बिना कार्य करते हैं, सोचते हैं, संवाद करते हैं, यात्रा करते हैं और अस्तित्व में रहते हैं।
इन संरचनाओं का निर्माण कृत्रिम पदार्थों से किया जाता है, जिनमें एक अत्यंत संवेदनशील विद्युत तंत्रिका तंत्र शामिल है। प्रत्येक आईएस-बीई स्वयं को इस तंत्र के अनुरूप ढाल लेता है या एक इलेक्ट्रॉनिक तरंगदैर्ध्य 56 (पाद टिप्पणी) से "तालमेल बिठा लेता है", जो प्रत्येक आईएस-बीई द्वारा उत्सर्जित तरंगदैर्ध्य या आवृत्ति से विशिष्ट रूप से मेल खाता है। प्रत्येक आईएस-बीई एक अद्वितीय तरंग उत्पन्न करने में सक्षम है।
एक आवृत्ति जो उनकी पहचान करती है, ठीक रेडियो सिग्नल आवृत्ति की तरह। यह आंशिक रूप से इस प्रकार कार्य करता है:
उंगलियों के निशान की तरह पहचान। गुड़िया का शरीर आईएस-बीई के लिए रेडियो रिसीवर की तरह काम करता है। कोई भी दो आवृत्तियाँ या गुड़िया के शरीर बिल्कुल एक जैसे नहीं होते।

प्रत्येक आईएस-बीई चालक दल के सदस्य का शरीर भी अंतरिक्ष यान में निर्मित "तंत्रिका तंत्र" से जुड़ा होता है। अंतरिक्ष यान की संरचना भी गुड़िया के शरीर के समान ही होती है। इसे प्रत्येक आईएस-बीई चालक दल के सदस्य की आवृत्ति के अनुसार विशेष रूप से समायोजित किया जाता है। इसलिए, अंतरिक्ष यान को आईएस-बीई द्वारा उत्सर्जित "विचारों" या ऊर्जा के माध्यम से संचालित किया जा सकता है। यह वास्तव में एक बहुत ही सरल, प्रत्यक्ष नियंत्रण प्रणाली है। इसलिए, अंतरिक्ष यान में कोई जटिल नियंत्रण या नेविगेशन उपकरण नहीं होते हैं। ये आईएस-बीई के विस्तार के रूप में कार्य करते हैं।

जब बिजली अंतरिक्ष यान से टकराई तो इससे शॉर्ट सर्किट हो गया और परिणामस्वरूप वे क्षण भर के लिए जहाज के नियंत्रण से "अलग" हो गए, जिसके कारण दुर्घटना हुई।
एयरल एक अंतरिक्ष अभियान दल में अधिकारी, पायलट और इंजीनियर थे और अभी भी हैं, जो एक अंतरिक्ष ओपेरा 57 का हिस्सा है।
(फुटनोट) एक सभ्यता जो स्वयं को "द डोमेन" कहती है। यह सभ्यता अंतरिक्ष के एक विशाल क्षेत्र में फैली आकाशगंगाओं, तारों, ग्रहों, चंद्रमाओं और क्षुद्रग्रहों पर नियंत्रण रखती है, जो लगभग संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड के एक चौथाई हिस्से के बराबर है! उसके संगठन का निरंतर मिशन "द डोमेन के क्षेत्र और संसाधनों की सुरक्षा, नियंत्रण और विस्तार करना" है।
एयरल ने बताया कि उनकी गतिविधियाँ कई मायनों में उन यूरोपीय खोजकर्ताओं से मिलती-जुलती थीं जिन्होंने पवित्र पिता, पोप और स्पेन, पुर्तगाल और बाद में हॉलैंड, इंग्लैंड, फ्रांस आदि के राजाओं के लिए नई दुनिया की "खोज" और "दावा" किया था। यूरोप ने मूल निवासियों से "अधिग्रहित" संपत्ति से लाभ उठाया। हालाँकि, मूल निवासियों से कभी परामर्श नहीं किया गया और न ही उनकी अनुमति ली गई कि वे यूरोपीय राष्ट्रों और उनके द्वारा भेजे गए सैनिकों और पुजारियों के "अधिकार क्षेत्र" का हिस्सा बनें, जिन्होंने अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए क्षेत्र और धन प्राप्त किया था।
एयरल ने बताया कि उन्होंने एक इतिहास की किताब में पढ़ा था कि स्पेन के राजा को अपने सैनिकों द्वारा मूल निवासियों के साथ किए गए क्रूर व्यवहार पर खेद था। उन्हें अपने पूजे जाने वाले देवताओं से प्रतिशोध का डर था, जैसा कि बाइबिल के विभिन्न ग्रंथों में वर्णित है। उन्होंने पोप से "द रिक्वायरमेंट" 58 (फुटनोट) नामक एक बयान तैयार करने का अनुरोध किया, जिसे नए मिले प्रत्येक मूल निवासी को पढ़कर सुनाया जाना था।
राजा को उम्मीद थी कि यह बयान, चाहे मूल निवासियों द्वारा स्वीकार किया जाए या अस्वीकार किया जाए, इन लोगों के नरसंहार और दासता के लिए राजा को सभी ज़िम्मेदारी से मुक्त कर देगा। उसने इस बयान का इस्तेमाल उनकी ज़मीनों को ज़ब्त करने के औचित्य के रूप में किया और
पोप ने अपनी संपत्ति अपने सैनिकों और पोप के पुजारियों को सौंप दी। जाहिर तौर पर, पोप को व्यक्तिगत रूप से इस मामले में कोई अपराधबोध या जिम्मेदारी का एहसास नहीं था।

एयरल का मानना था कि ऐसे कृत्य कायरतापूर्ण थे और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि स्पेन का क्षेत्र

यह इतनी जल्दी ही समाप्त हो गया। कुछ ही वर्षों बाद राजा की मृत्यु हो गई और उसका साम्राज्य अन्य राष्ट्रों में समाहित हो गया।
एयरल ने कहा कि इस तरह का व्यवहार द डोमेन में नहीं होता। उनके नेता द डोमेन के कार्यों की पूरी ज़िम्मेदारी लेते हैं और इस तरह से खुद को बदनाम नहीं करेंगे। न ही वे किसी देवता से डरते हैं और न ही उन्हें अपने कार्यों का कोई पछतावा है। यह विचार मेरे पहले के सुझाव को पुष्ट करता है कि एयरल और उनके लोग संभवतः नास्तिक हैं।
द डोमेन द्वारा पृथ्वी पर कब्ज़ा करने की स्थिति में, द डोमेन के शासकों ने पृथ्वी के "मूल निवासियों" के सामने इस इरादे को अभी तक ज़ाहिर न करने का फैसला किया है। अब वे ऐसा तब करेंगे जब यह उनके हित में हो भी सकता है और नहीं भी। फिलहाल, द डोमेन अभियान दल की उपस्थिति को मानव जाति के सामने प्रकट करना रणनीतिक रूप से आवश्यक नहीं है। वास्तव में, अब तक इसे बहुत ही आक्रामक तरीके से छिपाकर रखा गया है, जिसके कारण आगे बताए जाएंगे।
पृथ्वी के निकट स्थित क्षुद्रग्रह पेटी अंतरिक्ष के इस हिस्से में द डोमेन के लिए एक बहुत छोटा, लेकिन महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में, हमारे सौर मंडल में मौजूद कुछ वस्तुएँ कम गुरुत्वाकर्षण वाले "अंतरिक्ष स्टेशनों" के रूप में उपयोग के लिए बहुत मूल्यवान हैं। वे मुख्य रूप से कम गुरुत्वाकर्षण में रुचि रखते हैं।
इस सौर मंडल में उपग्रह मुख्य रूप से चंद्रमा के उस हिस्से से बने होते हैं जो पृथ्वी से दूर की ओर होता है।
59
(फुटनोट) और क्षुद्रग्रह बेल्ट, जो अरबों साल पहले नष्ट हुआ एक ग्रह था, और कुछ हद तक मंगल और शुक्र। डोमेन बलों को रखने के लिए जिप्सम 60 (फुटनोट) से संश्लेषित डूम संरचनाएं या विद्युत चुम्बकीय बल स्क्रीन 61 (फुटनोट) से ढके भूमिगत ठिकाने आसानी से बनाए जा सकते हैं।
एक बार जब कोई अंतरिक्ष क्षेत्र 'द डोमेन' के अधिकार में आ जाता है और उसके नियंत्रण वाले क्षेत्र का हिस्सा बन जाता है, तो उसे 'द डोमेन' की "संपत्ति" माना जाता है। पृथ्वी ग्रह के निकट स्थित अंतरिक्ष स्टेशन का महत्व केवल इसलिए है क्योंकि यह आकाशगंगा के केंद्र

और उससे आगे की ओर 'द डोमेन' के विस्तार मार्ग पर स्थित है। बेशक, 'द डोमेन' में सभी लोग इस बात से अवगत हैं - सिवाय पृथ्वी के लोगों के।

अध्याय सात

प्राचीन इतिहास का एक पाठ

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"एर्ल के साथ मेरी शिक्षा पूरी रात से लेकर अगली सुबह भोर तक जारी रही। मुझे कहना होगा कि एर्ल से मिल रहे 'सबक' से मैं मंत्रमुग्ध, संशयग्रस्त, स्तब्ध, चिंतित, निराश और असंतुष्ट था। उसने मुझे जो कुछ भी बताया, उसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी - अपने सबसे बुरे सपनों और दुःस्वप्नों में भी नहीं!"

अगली दोपहर, जब मैं सो चुकी थी, नहा चुकी थी और खाना खा चुकी थी, तो गैलरी के सदस्यों ने मुझे पिछली शाम के मेरे साक्षात्कार सत्र के बारे में जानकारी दी। उन्होंने वही बातें रिकॉर्ड की थीं जो एयरल ने मुझे बताई थीं। हमेशा की तरह, इस सत्र में एक स्टेनोग्राफर मौजूद थी, जिसे मैं हर साक्षात्कार के बाद जानकारी देती थी, और साथ ही 6 या 7 पुरुष भी थे जिन्होंने मेरे बयानों के बारे में स्पष्टीकरण मांगा। हमेशा की तरह, मुझ पर लगातार दबाव डाला जा रहा था कि मैं एयरल पर अपना प्रभाव इस्तेमाल करके उसे गैलरी के सदस्यों द्वारा पूछे गए विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मनाऊं। मैंने सभी को आश्वस्त करने की पूरी कोशिश की कि मैं ऐसा करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगी।

फिर भी, उसके बाद हर दिन केवल तीन ही चीजें घटित हुईं:

1) एयरल ने दृढ़तापूर्वक उन सभी सवालों का जवाब देने से इनकार कर दिया जो उसे लगा कि गैलरी द्वारा मुझसे पूछे गए थे या सुझाए गए थे।

2) एयरल ने अपनी पसंद के विषय में मुझे "निर्देश" देना जारी रखा।

3) एरल के साथ मेरे साक्षात्कार या उनके निर्देशों के बाद, हर शाम वह मुझे उन विषयों की एक नई सूची देती थीं जिनके बारे में उन्हें और अधिक जानकारी चाहिए होती थी। हर शाम मैं यह सूची गैलरी में प्रस्तुत करता था। अगले दिन एरल को पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों आदि का एक बड़ा ढेर मिलता था। जब मैं सो रहा होता था, तब वह रात भर इन सभी का अध्ययन करती थीं। उनके साथ बिताए शेष समय के दौरान यह क्रम प्रतिदिन दोहराया जाता था।

एयरल के साथ मेरे अगले साक्षात्कार, या कहें कि पाठ का विषय, पृथ्वी, हमारे सौर मंडल और आस-पास के अंतरिक्ष के संक्षिप्त इतिहास से संबंधित था, जिसे "द डोमेन" के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया था।

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)
परम गुप्त
अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख
रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 25 जुलाई 1947, पहला सत्र।
"इतिहास विषय को समझने से पहले, आपको समय विषय को समझना होगा। समय अंतरिक्ष में वस्तुओं की गति का एक मनमाना माप मात्र है।"
अंतरिक्ष रैखिक नहीं होता। अंतरिक्ष का निर्धारण किसी वस्तु को देखने के दौरान मौजूद वस्तु (IS-BE) के दृष्टिकोण से होता है। मौजूद वस्तु (IS-BE) और देखी जा रही वस्तु के बीच की दूरी को "अंतरिक्ष" कहते हैं।
अंतरिक्ष में मौजूद वस्तुएं, या ऊर्जा के पिंड, जरूरी नहीं कि एक सीधी रेखा में ही गति करें। इस ब्रह्मांड में, वस्तुएं अनियमित रूप से, घुमावदार या चक्रीय पैटर्न में, या पूर्व निर्धारित नियमों के अनुसार गति करती हैं।
इतिहास केवल घटनाओं का एक रेखीय अभिलेख नहीं है, जैसा कि पृथ्वी के इतिहास की पुस्तकों के कई लेखक दर्शाते हैं, क्योंकि यह कोई ऐसी डोरी नहीं है जिसे मापक यंत्र की तरह खींचा और चिह्नित किया जा सके। इतिहास अंतरिक्ष में वस्तुओं की गति का एक व्यक्तिपरक अवलोकन है, जिसे जीवित बचे व्यक्ति के दृष्टिकोण से दर्ज किया जाता है, न कि मरने वालों के दृष्टिकोण से। घटनाएँ परस्पर क्रियात्मक और समवर्ती रूप से घटित होती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे जैविक शरीर में हृदय रक्त पंप करता है, फेफड़े कोशिकाओं को ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जो सूर्य से ऊर्जा और पौधों से रसायनों का उपयोग करके प्रजनन करती हैं, और साथ ही यकृत रक्त से विषाक्त पदार्थों को छानकर मूत्राशय और आंतों के माध्यम से उन्हें शरीर से बाहर निकाल देता है।
ये सभी अंतःक्रियाएं समवर्ती हैं और
समवर्ती। यद्यपि समय क्रमिक रूप से चलता है, घटनाएँ स्वतंत्र, रैखिक प्रवाह में घटित नहीं होतीं। अतीत के इतिहास या वास्तविकता को देखने और समझने के लिए, सभी घटनाओं को

एक अंतःक्रियात्मक समग्रता के भाग के रूप में देखना आवश्यक है। समय को एक कंपन के रूप में भी अनुभव किया जा सकता है जो संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड में एकसमान है।

एयरल ने समझाया कि 'आईएस-बीई' ब्रह्मांड की शुरुआत से भी पहले से मौजूद हैं। इन्हें "अमर" इसलिए कहा जाता है क्योंकि "आत्मा" न तो जन्म लेती है और न ही मर सकती है, बल्कि "है - होगा" की व्यक्तिगत धारणा में विद्यमान रहती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि हर आत्मा एक जैसी नहीं होती। प्रत्येक आत्मा अपनी पहचान, शक्ति, जागरूकता और क्षमता में पूरी तरह से अद्वितीय होती है।

एयरल जैसी आईएस-बीई और पृथ्वी पर शरीर धारण करने वाली अधिकांश आईएस-बीई के बीच अंतर यह है कि एयरल अपनी "गुड़िया" में इच्छा अनुसार प्रवेश कर सकती है और उससे बाहर निकल सकती है। वह पदार्थ के माध्यम से चुनिंदा गहराईयों तक अनुभव कर सकती है। एयरल और डोमेन के अन्य अधिकारी संवाद कर सकते हैं।

टेलीपैथिक रूप से। चूंकि एक IS-BE भौतिक ब्रह्मांडीय इकाई नहीं है, इसलिए इसका अंतरिक्ष या समय में कोई स्थान नहीं है। एक IS-BE शाब्दिक रूप से "अमूर्त" है। वे पल भर में अंतरिक्ष की विशाल दूरियों को तय कर सकते हैं।

वे शारीरिक संवेदी तंत्रों का उपयोग किए बिना, जैविक शरीर की तुलना में कहीं अधिक तीव्रता से संवेदनाओं का अनुभव कर सकते हैं। एक IS-BE अपनी अनुभूति से दर्द को पूरी तरह से अलग कर सकता है। एयरल अपनी "पहचान" को भी, अरबों वर्षों पहले के धुंधले समय तक, याद रख सकती है!

वह कहती हैं कि ब्रह्मांड के इस निकटवर्ती क्षेत्र में मौजूद सूर्यों का समूह पिछले 200 ट्रिलियन वर्षों से जल रहा है। भौतिक ब्रह्मांड की आयु लगभग अनंत है, लेकिन संभवतः कम से कम चार क्वाड्रिलियन वर्ष है।

62

(फुटनोट) इसकी शुरुआती शुरुआत से लेकर अब तक के वर्ष।

समय का मापन एक कठिन कारक है क्योंकि यह भौतिक जगत के व्यक्तियों की व्यक्तिपरक स्मृति पर निर्भर करता है और इसकी शुरुआत से लेकर अब तक भौतिक ब्रह्मांड में घटनाओं का कोई एकसमान रिकॉर्ड नहीं रहा है। पृथ्वी की तरह ही, यहाँ भी समय मापने की अनेक प्रणालियाँ हैं, जिन्हें विभिन्न संस्कृतियों द्वारा परिभाषित किया गया है। ये प्रणालियाँ गति चक्रों और उत्पत्ति बिंदुओं का उपयोग करके आयु और अवधि का निर्धारण करती हैं।

63

(पाद लेख)

भौतिक ब्रह्मांड स्वयं से बना है

कई अन्य व्यक्तिगत ब्रह्मांडों का अभिसरण और समामेलन

64

(फुटनोट), जिनमें से प्रत्येक को एक आईएस-बीई या आईएस-बीई के समूह द्वारा बनाया गया था। इन मायावी ब्रह्मांडों के टकराव से वे आपस में मिल गए और ठोस होकर एक पारस्परिक रूप से निर्मित ब्रह्मांड बन गए। क्योंकि यह माना जाता है कि ऊर्जा और रूप बनाए जा सकते हैं, लेकिन

57

नष्ट नहीं हुआ,

65

(फुटनोट) यह रचनात्मक प्रक्रिया लगभग अनंत भौतिक आयामों वाले एक निरंतर विस्तारित ब्रह्मांड का निर्माण करती रही है।

भौतिक ब्रह्मांड के निर्माण से पहले एक विशाल कालखंड था, जिसके दौरान ब्रह्मांड ठोस नहीं थे, बल्कि पूर्णतः मायावी थे। आप कह सकते हैं कि ब्रह्मांड जादुई भ्रमों का ब्रह्मांड था, जो जादूगर की इच्छा से प्रकट और लुप्त होते थे। हर मामले में, "जादूगर" एक या एक से अधिक 'आईएस-बीई' थे। पृथ्वी पर कई 'आईएस-बीई' अभी भी उस कालखंड की धुंधली छवियों को याद कर सकते हैं। जादू, टोना और सम्मोहन की कहानियाँ, परियों की कहानियाँ और पौराणिक कथाएँ ऐसी ही बातों का उल्लेख करती हैं।

66

(पाद लेख)

हालांकि बहुत ही सरल शब्दों में।

प्रत्येक अस्तित्व (IS-BE) भौतिक ब्रह्मांड में तब प्रवेश करता है जब वह अपना स्वयं का, "मूल" ब्रह्मांड खो देता है। अर्थात्, जब किसी अस्तित्व (IS-BE) का "मूल" ब्रह्मांड भौतिक ब्रह्मांड में समाहित हो जाता है, या जब अस्तित्व (IS-BE) अन्य अस्तित्व (IS-BE) के साथ मिलकर भौतिक ब्रह्मांड का निर्माण या उस पर विजय प्राप्त करता है।

पृथ्वी पर, यह निर्धारित करना मुश्किल है कि कोई IS-BE भौतिक ब्रह्मांड में कब आया, इसके दो कारण हैं: 1) पृथ्वी पर मौजूद IS-BE की स्मृति मिट चुकी है, और 2) IS-BE का भौतिक ब्रह्मांड में आगमन या आक्रमण अलग-अलग समय पर हुआ है, कुछ 60 ट्रिलियन वर्ष पहले, और कुछ केवल 3 ट्रिलियन वर्ष पहले। कुछ मिलियन वर्षों के अंतराल में, एक क्षेत्र या ग्रह पर IS-BE के एक अन्य समूह का कब्जा हो जाता है।

कभी-कभी वे अन्य आईएस-बीई को गुलाम बनाकर पकड़ लेते हैं।

67 (फुटनोट) उन्हें तुच्छ या शारीरिक श्रम करने के लिए शरीर धारण करने के लिए मजबूर किया जाएगा - विशेष रूप से पृथ्वी जैसे भारी गुरुत्वाकर्षण वाले ग्रहों पर खनिज अयस्कों का खनन करना।

एयरल कहती हैं कि वह 625 मिलियन वर्षों से भी अधिक समय से डोमेन एक्सपेडिशनरी फोर्स की सदस्य रही हैं, जब वह एक जैविक सर्वेक्षण मिशन के लिए पायलट बनीं, जिसमें पृथ्वी पर कभी-कभार आने-जाने का भी अवसर शामिल था। उन्हें वहां का अपना पूरा करियर और उससे भी बहुत पहले का समय याद है।

उसने मुझे बताया कि भूगर्भ वैज्ञानिकों के पास पदार्थ की आयु मापने की कोई सटीक प्रणाली नहीं है। वे मानते हैं कि कुछ प्रकार की सामग्री, जैसे कि कार्बनिक पदार्थ, जल्दी खराब हो जाती हैं, इसलिए वे मानते हैं कि कुछ प्रकार की सामग्री, जैसे कि कार्बनिक पदार्थ, जल्दी खराब हो जाती हैं।

कार्बन आधारित पदार्थ के बारे में यह धारणा है कि पदार्थ का क्षय होता है। पत्थर की आयु का निर्धारण लकड़ी या हड्डी की आयु के मापन के आधार पर करना सटीक नहीं है। यह एक मूलभूत त्रुटि है। वास्तव में, पदार्थ का क्षय नहीं होता। इसे नष्ट नहीं किया जा सकता। पदार्थ का रूप परिवर्तित हो सकता है, लेकिन यह कभी भी पूरी तरह से नष्ट नहीं होता।
लगभग 80 ट्रिलियन वर्ष पूर्व अंतरिक्ष यात्रा तकनीक विकसित करने के बाद से, इस क्षेत्र में स्थित आकाशगंगाओं का समय-समय पर सर्वेक्षण किया जाता रहा है। पृथ्वी की संरचना में होने वाले परिवर्तनों की समीक्षा से पता चलता है कि पर्वत श्रृंखलाएँ उठती-गिरती हैं, महाद्वीप अपना स्थान बदलते हैं, ग्रह के ध्रुव खिसकते हैं, बर्फ की चोटियाँ आती-जाती हैं, महासागर प्रकट होते-होते हैं, नदियाँ, घाटियाँ और दर्रे बदलते रहते हैं। इन सभी मामलों में, पदार्थ एक ही रहता है। यह हमेशा एक ही रेत होती है। प्रत्येक रूप और पदार्थ एक ही मूल पदार्थ से बना है, जो कभी नष्ट नहीं होता।
(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)
("मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि खरबों वर्षों के बाद कोई सभ्यता तकनीकी और मानसिक रूप से कितनी उन्नत हो गई होगी! ज़रा सोचिए कि हमारा अपना देश मात्र 150 वर्षों में कितना उन्नत हो गया है। कुछ ही पीढ़ियों पहले परिवहन पैदल, घोड़े पर या नाव से होता था, पढ़ाई मोमबत्ती की रोशनी में की जाती थी, खाना पकाने और गर्म करने के लिए चूल्हे का इस्तेमाल होता था, और घर के अंदर पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी!")
(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)
"एयरल ने मुझे डोमेन के एक आईएस-बीई अधिकारी की क्षमताओं के बारे में बताया, और उसने मुझे उनमें से एक का प्रदर्शन तब दिखाया जब उसने क्षुद्रग्रह बेल्ट में तैनात डोमेन के एक संचार अधिकारी से टेलीपैथिक रूप से संपर्क किया। 68
(पाद लेख)
क्षुद्रग्रह पेटी मंगल और बृहस्पति के बीच स्थित एक ग्रह के हजारों टूटे हुए टुकड़ों से बनी है। यह हमारी आकाशगंगा के केंद्र की ओर यात्रा करने वाले अंतरिक्ष यानों के लिए कम गुरुत्वाकर्षण वाला एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु है।

उसने इस अधिकारी से अनुरोध किया कि वह पृथ्वी के इतिहास से संबंधित जानकारी को डोमेन की "फाइलों" में संग्रहित करके देखे। उसने संचार अधिकारी से यह जानकारी एयरल को भेजने के लिए कहा। संचार अधिकारी ने तुरंत अनुरोध का पालन किया। इसके आधार पर

डोमेन की फाइलों में संग्रहित जानकारी के आधार पर, एयरल मुझे पृथ्वी के इतिहास का संक्षिप्त अवलोकन या "इतिहास का पाठ" दे सका। एयरल ने मुझे बताया कि डोमेन ने पृथ्वी के इतिहास के बारे में क्या देखा था:
उसने मुझे बताया कि डोमेन अभियान बल ने आकाशगंगा में बहुत हाल ही में प्रवेश किया था - लगभग 10,000 वर्ष पहले। उनका पहला कार्य "पुराने साम्राज्य" (यह आधिकारिक नाम नहीं है, बल्कि डोमेन बलों द्वारा जीती गई सभ्यता को दिया गया उपनाम है) के मूल ग्रहों पर विजय प्राप्त करना था, जो इस आकाशगंगा और अंतरिक्ष के अन्य आस-पास के क्षेत्रों के लिए केंद्रीय सरकार का केंद्र था। ये ग्रह बिग डिपर तारामंडल के पूंछ में स्थित तारामंडलों में स्थित हैं। 69 (पाद टिप्पणी) उसने यह नहीं बताया कि वास्तव में कौन से तारे हैं।
लगभग 1500 साल बाद डोमेन की शुरुआत हुई।
इस आकाशगंगा के केंद्र और उससे आगे की ओर जाने वाले आक्रमण के मार्ग पर अपनी सेनाओं के लिए सैन्य अड्डे स्थापित किए गए थे। लगभग 8,200 वर्ष पूर्व, डोमेन बलों ने आधुनिक पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सीमा के निकट हिमालय पर्वत में पृथ्वी पर एक अड्डा स्थापित किया था। यह डोमेन अभियान बल की एक बटालियन का अड्डा था, जिसमें लगभग 3,000 सदस्य शामिल थे।
वे किसी वस्तु के शीर्ष के नीचे या अंदर एक आधार स्थापित करते हैं।
पहाड़। पहाड़ की चोटी को खोखला करके उसमें इतना बड़ा क्षेत्र बनाया गया कि उसमें उस बल के जहाज और कर्मी रह सकें। फिर पहाड़ की चोटी का एक इलेक्ट्रॉनिक भ्रम पैदा किया गया ताकि "फोर्स स्क्रीन" के सामने पहाड़ के अंदर से एक झूठी छवि प्रक्षेपित करके अड्डे को छिपाया जा सके। इस प्रकार जहाज फोर्स स्क्रीन के माध्यम से अंदर-बाहर आ-जा सकते थे, फिर भी मनुष्य उन्हें देख नहीं पाते थे।
वहाँ बसने के कुछ ही समय बाद, "पुराने साम्राज्य" की सैन्य टुकड़ियों के एक बचे हुए दल ने अड्डे पर अचानक हमला कर दिया। डोमेन को इस बात की जानकारी नहीं थी कि मंगल ग्रह पर "पुराने साम्राज्य" द्वारा संचालित एक गुप्त, भूमिगत अड्डा बहुत लंबे समय से मौजूद था। मंगल ग्रह पर स्थित अड्डे से हुए सैन्य हमले में डोमेन का अड्डा पूरी तरह नष्ट हो गया और डोमेन अभियान बल के आईएस-बीई सैनिकों को पकड़ लिया गया।

आप कल्पना कर सकते हैं कि द डोमेन अपने इतने बड़े अधिकारियों और चालक दल के सदस्यों को खोने से बहुत परेशान था, इसलिए उन्होंने

उनकी तलाश के लिए अन्य दल पृथ्वी पर भेजे गए। उन दलों पर भी हमला हुआ। डोमेन फोर्सेस द्वारा पकड़े गए आईएस-बीई के साथ भी वही व्यवहार किया गया जो पृथ्वी पर भेजे गए अन्य सभी आईएस-बीई के साथ किया गया था। उन्हें स्मृतिभ्रंश दिया गया, उनकी यादों को झूठी तस्वीरों और सम्मोहनकारी आदेशों से बदल दिया गया और उन्हें जैविक शरीरों में निवास करने के लिए पृथ्वी पर भेज दिया गया। वे आज भी मानव आबादी का हिस्सा हैं।
अपने दल के लापता होने की गहन और विस्तृत जांच के बाद, द डोमेन ने पता लगाया कि "ओल्ड एंपायर" लाखों वर्षों से आकाशगंगा के इस हिस्से में एक विशाल और बेहद गुप्त सैन्य अड्डा चला रहा है। ठीक-ठीक समय का तो कोई अनुमान नहीं लगा सकता। अंततः, "ओल्ड एंपायर" और द डोमेन के अंतरिक्ष यान सौर मंडल के अंतरिक्ष में एक-दूसरे से भिड़ गए। एयरल के अनुसार, लगभग 1235 ईस्वी तक "पुराने साम्राज्य" की सेनाओं और द डोमेन के बीच लगातार युद्ध चलता रहा, जब अंततः द डोमेन की सेनाओं ने इस क्षेत्र में "पुराने साम्राज्य" की सेना के अंतिम अंतरिक्ष यान को नष्ट कर दिया। उस दौरान द डोमेन अभियान बल ने भी इस क्षेत्र में अपने कई जहाज खो दिए।
लगभग 1000 वर्ष बाद, 1914 ईस्वी की वसंत ऋतु में "पुराने साम्राज्य" के अड्डे की खोज संयोगवश हुई। यह खोज तब हुई जब ऑस्ट्रिया के आर्चड्यूक, 70 (फुटनोट) के शव को डोमेन अभियान बल के एक अधिकारी ने "अपने कब्जे में ले लिया"। यह अधिकारी, जो क्षुद्रग्रह बेल्ट में तैनात था, टोही जानकारी जुटाने के लिए एक नियमित मिशन पर पृथ्वी पर भेजा गया था।
इस "कब्ज़े" का उद्देश्य शरीर को "भेष" के रूप में इस्तेमाल करके मानव समाज में घुसपैठ करना और पृथ्वी पर घटित घटनाओं के बारे में जानकारी जुटाना था। अधिकारी, जो एक आईएस-बीई था और आर्चड्यूक के शरीर में निवास करने वाले प्राणी से कहीं अधिक शक्तिशाली था, ने उस प्राणी को शरीर से बाहर धकेल दिया और शरीर पर नियंत्रण कर लिया।
हालांकि, इस अधिकारी को इस बात का अंदाजा नहीं था कि देश में आपस में लड़ रहे गुटों में हैब्सबर्ग परिवार के प्रति कितनी नफरत थी, इसलिए जब बोस्नियाई छात्र ने आर्चड्यूक की

हत्या की तो वह अचंभित रह गया। हत्यारे की गोली लगने से वह अधिकारी, जिसे आईएस-बीई भी कहा जाता है, अचानक शरीर से बाहर गिर गया। भ्रमित होकर, आईएस-बीई

अनजाने में "स्मृतिलोप बल की स्क्रीन" में से एक में घुस गया और पकड़ा गया।
अंततः डोमेन ने पता लगाया कि अंतरिक्ष के एक विस्तृत क्षेत्र की निगरानी एक "इलेक्ट्रॉनिक बल क्षेत्र" द्वारा की जाती है।
(फुटनोट) जो पृथ्वी सहित आकाशगंगा के इस छोर पर स्थित सभी आईएस-बीई को नियंत्रित करता है। इलेक्ट्रॉनिक फोर्स स्क्रीन को आईएस-बीई का पता लगाने और उन्हें क्षेत्र छोड़ने से रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
यदि कोई आईएस-बीई सुरक्षा घेरे को भेदने का प्रयास करता है, तो यह उसे एक प्रकार के "इलेक्ट्रॉनिक जाल" में "पकड़" लेता है। परिणामस्वरूप, पकड़े गए आईएस-बीई को एक अत्यंत कठोर "मस्तिष्क-प्रबंधन" प्रक्रिया से गुज़ारा जाता है, जिससे उसकी स्मृति मिट जाती है। इस प्रक्रिया में एक ज़बरदस्त विद्युत झटका दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे पृथ्वी पर मनोचिकित्सक किसी "रोगी" की स्मृति और व्यक्तित्व को मिटाने और उसे अधिक "सहयोगी" बनाने के लिए "विद्युत झटका चिकित्सा" का उपयोग करते हैं। 72 (पाद टिप्पणी)
पृथ्वी पर इस "चिकित्सा" में केवल कुछ सौ वोल्ट बिजली का उपयोग होता है। हालांकि, "पुराने साम्राज्य" द्वारा आईएस-बीई के विरुद्ध चलाए गए अभियान में प्रयुक्त विद्युत वोल्टेज 73 (फुटनोट) अरबों वोल्ट के परिमाण का है! यह जबरदस्त झटका आईएस-बीई की सारी स्मृति को पूरी तरह मिटा देता है। स्मृति का मिटना केवल एक जीवन या एक शरीर के लिए नहीं है। यह लगभग अनंत अतीत के सभी संचित अनुभवों के साथ-साथ आईएस-बीई की पहचान को भी मिटा देता है!
इस आघात का उद्देश्य इस प्रकार से उत्पन्न व्यक्ति को यह भूलने से रोकना है कि वे कौन हैं, कहाँ से आए हैं, उनके पास क्या ज्ञान या कौशल है, अतीत की उनकी स्मृति क्या है, और एक आध्यात्मिक सत्ता के रूप में कार्य करने की उनकी क्षमता क्या है। उन्हें इस कदर आघात पहुँचाया जाता है कि वे एक बुद्धिहीन, रोबोटिक निरर्थक इकाई बन जाते हैं।
सदमे के बाद सम्मोहन के बाद के सुझावों की एक श्रृंखला
74 (फुटनोट) का उपयोग प्रत्येक आईएस-बीई में झूठी यादें और समय की झूठी धारणा स्थापित करने के लिए किया जाता है। इसमें शरीर की मृत्यु के बाद आधार पर "वापस लौटने"

का आदेश शामिल है, ताकि उसी प्रकार का आघात और सम्मोहन बार-बार - हमेशा के लिए किया जा सके। सम्मोहन का आदेश "रोगी" को याद रखना भूल जाने के लिए भी कहता है। इस अधिकारी के अनुभव से डोमेन ने यह सीखा कि "पुराना साम्राज्य" पृथ्वी का उपयोग कर रहा है

यह ग्रह बहुत लंबे समय तक एक "कैदखाना" रहा है - ठीक कितने समय तक, यह अज्ञात है - शायद लाखों वर्षों तक।

तो, जब आईएस-बीई का शरीर मर जाता है, तो वे शरीर से विमुख हो जाते हैं। उन्हें "फोर्स स्क्रीन" द्वारा पहचान लिया जाता है, उन्हें पकड़ लिया जाता है और सम्मोहन के आदेश से "प्रकाश में लौटने" के लिए कहा जाता है। "स्वर्ग" और "परलोक" की अवधारणा सम्मोहन के सुझाव का हिस्सा है - उस छल का एक हिस्सा जो इस पूरे तंत्र को काम करने योग्य बनाता है। पिछले जीवन की स्मृति को मिटाने के लिए IS-BE को सदमे और सम्मोहन की अवस्था में डाल दिया जाता है, और फिर सम्मोहन के माध्यम से ही उन्हें तुरंत पृथ्वी पर वापस "रिपोर्ट" करने का आदेश दिया जाता है, मानो वे किसी गुप्त मिशन पर हों, ताकि वे एक नए शरीर में प्रवेश कर सकें। प्रत्येक IS-BE को बताया जाता है कि पृथ्वी पर उनके होने का एक विशेष उद्देश्य है। लेकिन, ज़ाहिर है, जेल में रहने का कोई उद्देश्य नहीं होता—कम से कम कैदी के लिए तो नहीं।

पृथ्वी पर भेजे जाने वाले किसी भी अवांछित आईएस-बीई को "अछूत" के रूप में वर्गीकृत किया गया था।

75

(पाद टिप्पणी) "पुराने साम्राज्य" द्वारा। इसमें वे सभी लोग शामिल थे जिन्हें "पुराने साम्राज्य" ने ऐसे अपराधी माना था जो सुधरने या वश में करने के लिए बहुत ही दुष्ट थे, साथ ही अन्य अपराधी जैसे कि यौन विकृत लोग, या ऐसे व्यक्ति जो कोई भी उत्पादक कार्य करने के इच्छुक नहीं थे।

आईएस-बीई के "अछूत" वर्गीकरण में कई प्रकार के "राजनीतिक कैदी" भी शामिल हैं 76 (पाद टिप्पणी)। इसमें वे आईएस-बीई भी शामिल हैं जिन्हें गैर-अनुपालन करने वाले "स्वतंत्र विचारक" या "क्रांतिकारी" माना जाता है जो "पुराने साम्राज्य" के विभिन्न ग्रहों की सरकारों के लिए परेशानी खड़ी करते हैं। बेशक, "पुराने साम्राज्य" के खिलाफ पहले से सैन्य रिकॉर्ड रखने वाले किसी भी व्यक्ति को भी पृथ्वी पर भेज दिया जाता है।

"अछूतों" की सूची में कलाकार, चित्रकार, गायक, संगीतकार, लेखक, अभिनेता और हर तरह के कलाकार शामिल हैं। इसी कारण पृथ्वी पर प्रति व्यक्ति कलाकारों की संख्या "पुराने साम्राज्य" के किसी भी अन्य ग्रह से अधिक है।

"अछूतों" में बुद्धिजीवी, आविष्कारक और लगभग हर क्षेत्र के प्रतिभाशाली लोग भी शामिल हैं। चूंकि "पुराने साम्राज्य" के लिए मूल्यवान समझी जाने वाली हर चीज पिछले कुछ खरब वर्षों में आविष्कार या निर्मित हो चुकी है, इसलिए उन्हें ऐसे लोगों की अब कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें कुशल प्रबंधक भी शामिल हैं, जिनकी आज्ञाकारी, रोबोट जैसे नागरिकों के समाज में कोई आवश्यकता नहीं है।

जो कोई भी "पुराने साम्राज्य" की वर्ग व्यवस्था में करदाता श्रमिक के रूप में बिना सोचे-समझे आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक दासता के आगे झुकने को तैयार या सक्षम नहीं है, वह "अछूत" है और उसे स्मृति मिटाने और पृथ्वी पर स्थायी कारावास की सजा दी जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि एक 'आईएस-बी' बच नहीं पाता क्योंकि उसे याद नहीं रहता कि वह कौन है, कहाँ से आया है और कहाँ है। उसे सम्मोहन द्वारा यह सोचने पर मजबूर कर दिया जाता है कि वह वास्तव में जहाँ है, उससे अलग कोई और है, कोई और है, कोई और समय है और कोई और जगह है।

ऑस्ट्रिया के आर्कड्यूक के शरीर में रहते हुए जिस डोमेन अधिकारी की "हत्या" की गई थी, उसे भी "पुराने साम्राज्य" की सेना ने पकड़ लिया था। चूंकि यह अधिकारी अन्य अधिकारियों की तुलना में एक उच्च क्षमता वाला आईएस-बीई था, इसलिए उसे मंगल ग्रह की सतह के नीचे स्थित एक गुप्त "पुराने साम्राज्य" के अड्डे पर ले जाया गया। उसे एक विशेष इलेक्ट्रॉनिक जेल कोठरी में बंद कर दिया गया और वहीं रखा गया।

सौभाग्य से, यह डोमेन अधिकारी 27 वर्षों की कैद के बाद भूमिगत अड्डे से भाग निकलने में सफल रहा। "पुराने साम्राज्य" के अड्डे से भागते ही वह तुरंत क्षुद्रग्रह बेल्ट में स्थित अपने अड्डे पर लौट आया। उसके कमांडिंग ऑफिसर ने आदेश दिया कि एक युद्धपोत को इस अधिकारी द्वारा दिए गए अड्डे के निर्देशांकों पर भेजा जाए और उस अड्डे को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाए। यह "पुराना साम्राज्य" अड्डा मंगल ग्रह पर भूमध्य रेखा से कुछ सौ मील उत्तर में सिडोनिया क्षेत्र में स्थित था।

78

(पाद लेख)

हालांकि "पुराने साम्राज्य" का सैन्य अड्डा नष्ट हो गया था, दुर्भाग्य से, आईएस-बीई बल की विशाल मशीनरी का अधिकांश भाग, इलेक्ट्रोशॉक/स्मृतिलोप/सम्मोहन मशीनरी अन्य अज्ञात स्थानों पर आज भी काम कर रही है। इस "मन नियंत्रण जेल" का मुख्य अड्डा या नियंत्रण केंद्र...

79

(फुटनोट) ऑपरेशन कभी नहीं पाया गया। इसलिए, इस आधार, या आधारों का प्रभाव अभी भी प्रभावी है।

डोमेन ने पाया है कि "पुराने साम्राज्य" की अंतरिक्ष सेनाओं के नष्ट होने के बाद से, इस आकाशगंगा के सभी हिस्सों और आस-पास की अन्य आकाशगंगाओं से अन्य ग्रह प्रणालियों को अपने "अछूत" आईएस-बीई को पृथ्वी पर लाने से रोकने के लिए कोई सक्रिय शक्ति नहीं बची है। इसलिए, पृथ्वी अंतरिक्ष के इस पूरे क्षेत्र के लिए एक सार्वभौमिक डंपिंग ग्राउंड बन गई है।

यह आंशिक रूप से पृथ्वी पर आईएस-बीई आबादी के बीच नस्लों, संस्कृतियों, भाषाओं, नैतिक मूल्यों, धार्मिक और राजनीतिक प्रभावों के बेहद असामान्य मिश्रण की व्याख्या करता है। पृथ्वी पर विषम समाजों की संख्या और विविधता एक सामान्य ग्रह पर अत्यंत असामान्य है। अधिकांश "सूर्य प्रकार 12, श्रेणी 7" ग्रहों पर केवल एक ही प्रकार का मानव शरीर या नस्ल पाई जाती है, यदि कोई हो तो।

इसके अलावा, पृथ्वी की अधिकांश प्राचीन सभ्यताएँ और पृथ्वी पर घटित होने वाली कई घटनाएँ "पुराने साम्राज्य" के गुप्त, सम्मोहक संचालन से अत्यधिक प्रभावित रही हैं। अब तक, कोई भी यह पता नहीं लगा पाया है कि यह संचालन कहाँ और कैसे संचालित होता है, या किसके द्वारा, क्योंकि यह सुरक्षा के लिए बनाए गए जालों और सुरक्षा प्रणालियों से बुरी तरह सुरक्षित है।

इसके अलावा, आकाशगंगा के इस छोर पर स्थित आईएस-बीई बल स्क्रीन बनाने वाली विशाल और प्राचीन इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी के नेटवर्क को खोजने, पता लगाने और नष्ट करने के लिए कोई अभियान नहीं चलाया गया है। जब तक यह कार्य पूरा नहीं हो जाता, हम "पुराने साम्राज्य" के कारागार ग्रह पर विद्युत आघात, सम्मोहन और दूरस्थ विचार नियंत्रण 80 (फुटनोट) को रोक या बाधित नहीं कर सकते।

"डोमेन अभियान बल के सभी चालक दल के सदस्य इस सौर मंडल के अंतरिक्ष में संचालन के दौरान हर समय इस घटना से अवगत रहते हैं ताकि "पुराने साम्राज्य" के जाल में फंसने और पकड़े जाने से बचा जा सके।"

अध्याय आठ

हाल के इतिहास से एक सबक

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"इस साक्षात्कार ने मुझे इतिहास का एक ऐसा पाठ पढ़ाया जो मुझे पृथ्वी पर लिखी किसी भी पाठ्यपुस्तक में कभी नहीं मिलेगा! घटनाओं के बारे में उस क्षेत्र का दृष्टिकोण हमसे बहुत अलग है।"

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 26 जुलाई 1947, पहला सत्र।

डोमेन अभियान बल ने एक अवलोकन किया है

सन् 1150 ईस्वी के बाद से पश्चिमी दुनिया के विज्ञान और संस्कृति में पुनरुत्थान हुआ, जब इस सौर मंडल में "पुराने साम्राज्य" के अंतरिक्ष बेड़े के बचे हुए अवशेष नष्ट हो गए थे। रिमोट कंट्रोल का प्रभाव

81

(फुटनोट) उस समय के बाद सम्मोहन क्रिया में थोड़ी कमी आई, लेकिन यह अभी भी काफी हद तक प्रचलित है।

ऐसा प्रतीत होता है कि "पुराने साम्राज्य" की दूरस्थ मन नियंत्रण प्रणाली 82 (फुटनोट) को थोड़ा नुकसान पहुँचा, जिसके परिणामस्वरूप इस तंत्र की शक्ति में थोड़ी कमी आई। फलस्वरूप, आईएस-बीई द्वारा पृथ्वी पर आने से पहले ज्ञात कुछ तकनीकों की यादें फिर से ताजा होने लगीं। इसके बाद ज्ञान का दमन शुरू हुआ जिसे "अंधकार युग" कहा जाता है।

83

(फुटनोट) यूरोप में उस समय के बाद से इसकी संख्या घटने लगी।

तब से भौतिकी के मूलभूत नियमों का ज्ञान

84 (पाद टिप्पणी) और बिजली

85

(फुटनोट) ने पृथ्वी की संस्कृति में लगभग रातोंरात क्रांति ला दी है। आईएस-बीई के कई प्रतिभाशाली लोगों द्वारा प्रौद्योगिकी को याद रखने की क्षमता

पृथ्वी की जनसंख्या आंशिक रूप से बहाल हो गई थी, जब इसे 1150 ईस्वी से पहले की तरह सक्रिय रूप से दबाया नहीं जा रहा था। सर आइजैक न्यूटन।

86

(फुटनोट) इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। मात्र कुछ दशकों में उन्होंने अकेले ही कई चीजों को नया रूप दिया।

66

प्रमुख और मूलभूत वैज्ञानिक और गणितीय विषय।
जिन पुरुषों को ये विज्ञान याद थे, वे पृथ्वी पर भेजे जाने से पहले ही इन्हें जानते थे। सामान्यतः, कोई भी व्यक्ति एक जीवनकाल में, या यहाँ तक कि कुछ सौ जीवनकालों में भी, विज्ञान और गणित के बारे में इतना कुछ न तो देख सकता है और न ही खोज सकता है। इन विषयों ने इतना समय लिया है।
सभ्यताओं को बनने में अरबों-खरबों साल लग जाते हैं!
पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई को ब्रह्मांड भर में मौजूद सभी तकनीकों के छोटे-छोटे अंश ही याद आने शुरू हुए हैं। सैद्धांतिक रूप से, यदि पृथ्वी के विरुद्ध उपयोग किए जा रहे स्मृतिलोप तंत्र को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाए, तो आईएस-बीई अपनी सारी स्मृति पुनः प्राप्त कर लेंगे!
दुर्भाग्यवश, मानविकी के क्षेत्र में ऐसी प्रगति देखने को नहीं मिली है, क्योंकि पृथ्वी के आईएस-बीई एक-दूसरे के प्रति बेहद बुरा व्यवहार करते रहते हैं। हालांकि, यह व्यवहार जन्म-मृत्यु के बीच प्रत्येक आईएस-बीई को दिए गए "सम्मोहनकारी आदेशों" से काफी हद तक प्रभावित होता है।
87
(पाद लेख)
और, पृथ्वी पर "कैदियों" का यह अत्यंत असामान्य संयोजन - अपराधी, विकृत मानसिकता वाले लोग, कलाकार, क्रांतिकारी और प्रतिभाशाली - एक बेहद अशांत और उथल-पुथल भरे वातावरण का कारण है। इस बंदी ग्रह का उद्देश्य आईएस-बीई को पृथ्वी पर हमेशा के लिए कैद रखना है। अज्ञानता, अंधविश्वास और आईएस-बीई के बीच युद्ध को बढ़ावा देना, बंदी आबादी को पंगु बनाए रखने और इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा स्क्रीन की "दीवार" के पीछे फंसाए रखने में सहायक होता है।
आईएस-बीई को आकाशगंगा के सभी हिस्सों, आस-पास की आकाशगंगाओं और "पुराने साम्राज्य" के सभी ग्रहों जैसे सीरियस, एल्डिबारोन, प्लीएड्स, ओरियन, ड्रेकोनिस और अनगिनत अन्य ग्रहों से पृथ्वी पर लाया गया है। पृथ्वी पर अज्ञात जातियों, सभ्यताओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और ग्रहीय वातावरणों से संबंधित आईएस-बीई मौजूद हैं। प्रत्येक

आईएस-बीई आबादी की अपनी भाषाएँ, विश्वास प्रणालियाँ, नैतिक मूल्य, धार्मिक मान्यताएँ, प्रशिक्षण और अज्ञात एवं अनकहे इतिहास हैं।
ये आईएस-बीई पृथ्वी के उन पूर्व निवासियों के साथ मिश्रित हैं जो 400,000 वर्ष से भी अधिक समय पहले एक अन्य तारामंडल से आए थे और जिन्होंने अटलांटा की सभ्यता की स्थापना की थी।
88
(पाद टिप्पणी) और लेमुरिया
89
(फुटनोट)। वे सभ्यताएँ ग्रह के "ध्रुवीय परिवर्तन" के कारण उत्पन्न ज्वारीय लहरों के नीचे लुप्त हो गईं।
90
(फुटनोट) कई हज़ार साल पहले
67

वर्तमान "कैदी" आबादी का आगमन शुरू हो गया। जाहिरा तौर पर, उन तारामंडलों से आए आईएस-बीई ही पृथ्वी की मूल, प्राच्य जातियों के स्रोत थे, जिनकी उत्पत्ति ऑस्ट्रेलिया से हुई थी।

दूसरी ओर, "पुराने साम्राज्य" की जेल प्रणाली द्वारा पृथ्वी पर स्थापित सभ्यताएँ स्वयं "पुराने साम्राज्य" की सभ्यता से बहुत अलग थीं, जो कि एक इलेक्ट्रॉनिक अंतरिक्ष ओपेरा है, जो परमाणु हथियारों से संचालित पूर्व सभ्यताओं का एक समूह है, जिन पर परमाणु हथियारों से विजय प्राप्त की गई थी और दूसरी आकाशगंगा से आए आईएस-बीई द्वारा उपनिवेश स्थापित किया गया था।

पूर्व "पुराने साम्राज्य" को नियंत्रित करने वाली नौकरशाही एक प्राचीन स्पेस ओपेरा समाज से थी, जिसका संचालन एक सर्वाधिकारवादी शासक द्वारा किया जाता था।

91

(फुटनोट) ग्रहीय संघ

सरकारें, एक क्रूर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पदानुक्रम द्वारा नियंत्रित होती हैं,

92

(फुटनोट) जिसका मुखिया एक शाही सम्राट हो।

93

(पाद लेख)

इस प्रकार की सरकार उन ग्रहों पर नियमित रूप से उभरती है जहाँ नागरिक व्यक्तिगत अधिकारों का त्याग कर देते हैं।

स्वायत्त और स्व-नियमन की ज़िम्मेदारी। वे अक्सर विक्षिप्त आईएस-बीई के हाथों अपनी स्वतंत्रता खो देते हैं, जो इस अत्यधिक भय से ग्रस्त होते हैं कि हर दूसरा आईएस-बीई उनका दुश्मन है जिसे नियंत्रित या नष्ट किया जाना चाहिए। उनके सबसे करीबी दोस्त और सहयोगी, जिनसे वे प्यार करने और उनका सम्मान करने का दावा करते हैं, सचमुच उनके द्वारा "प्यार में ही मर" जाते हैं।

ऐसे अस्तित्व के कारण, डोमेन ने यह सीख लिया है कि स्वतंत्रता को निरंतर सतर्कता और रक्षात्मक बल का प्रयोग करने की क्षमता के माध्यम से ही प्राप्त और बनाए रखा जा सकता

है। परिणामस्वरूप, डोमेन ने "पुराने साम्राज्य" के शासक ग्रह पर विजय प्राप्त कर ली है। डोमेन की सभ्यता, यद्यपि अपेक्षाकृत युवा और आकार में छोटी है, पहले से ही अधिक शक्तिशाली, बेहतर संगठित और समतावादी एकजुटता की भावना से ग्रस्त है, जो "पुराने साम्राज्य" के इतिहास में पहले कभी नहीं देखी गई।

पृथ्वी पर हाल ही में नष्ट हुआ जर्मन अधिनायकवादी राज्य "पुराने साम्राज्य" के समान था, लेकिन उतना क्रूर नहीं था, और लगभग दस हजार गुना कम शक्तिशाली था। पृथ्वी पर मौजूद कई आईएस-बीई यहाँ इसलिए हैं क्योंकि वे अधिनायकवादी सरकार का हिंसक विरोध करते हैं।

95

(फुटनोट) या इसलिए कि वे इतने मनोविक्षिप्त रूप से क्रूर थे कि उन्हें "पुराने साम्राज्य" की सरकार द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सका।

68

परिणामस्वरूप, पृथ्वी की जनसंख्या है
इनमें ऐसे प्राणियों का प्रतिशत बहुत अधिक है। पृथ्वी पर रहने वाले आईएस-बीई के परस्पर विरोधी सांस्कृतिक और नैतिक आचार संहिताएं अत्यंत असामान्य हैं।
मध्य "पुराने साम्राज्य" के ग्रहों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक तोपों का इस्तेमाल किया गया था।
96
(फुटनोट) "पुराने साम्राज्य" की सरकार के केंद्र में स्थित ग्रहों के नागरिक एक घिनौने, पतित, गुलाम समाज के लोग हैं, जो बुद्धिहीन, करदाता मजदूर हैं और नरभक्षण का अभ्यास करते हैं। हिंसक कार रेस ट्रैक और खूनी, रोमन सर्कस जैसे मनोरंजन ही उनके एकमात्र मनोरंजन हैं।
"पुराने साम्राज्य" के ग्रहों को पराजित करने के लिए परमाणु हथियारों का उपयोग करने के लिए हमारे पास चाहे जो भी उचित कारण रहे हों, डोमेन इस बात का ध्यान रखता है कि क्रूर, रेडियोधर्मी बल के हथियारों का उपयोग करके उन ग्रहों के संसाधनों को नष्ट न किया जाए।
वर्तमान अमेरिकी सभ्यता उस सभ्यता की कुछ विशेषताओं की नकल करने लगी है,
विशेषकर हवाई जहाज, ऑटोमोबाइल, जहाज, ट्रेन और टेलीफोन के डिजाइन में। इसी प्रकार, पृथ्वी के शहरों में इमारतों को "आधुनिक" या "भविष्यवादी" माना जाता है यदि उनका डिजाइन "पुराने साम्राज्य" की वास्तुकला से मिलता जुलता हो।
पुराने साम्राज्य की सरकार, इससे पहले
डोमेन द्वारा प्रतिस्थापित, उन प्राणियों से बना था जिनकी बुद्धि बेहद कायर थी, ठीक वैसे ही जैसे आपके हालिया विश्व युद्ध के दौरान एक्सिस शक्तियां 97 (फुटनोट) थीं। उन प्राणियों ने ठीक वैसा ही व्यवहार प्रदर्शित किया जैसा उस आकाशगंगा सरकार ने किया जिसने उन्हें शाश्वत निर्वासन में भेज दिया था।
पृथ्वी पर कैद। वे इस चिरस्थायी कहावत की भयावह याद दिलाते थे कि एक व्यक्ति अक्सर दूसरों से मिले व्यवहार को ही प्रकट करता है। दयालुता दयालुता को जन्म देती है। क्रूरता क्रूरता को जन्म देती है। बल का प्रयोग करने में सक्षम और इच्छुक होना चाहिए, साथ ही संयम भी बरतना चाहिए।

निर्दोषों को नुकसान से बचाने के लिए बुद्धिमत्ता आवश्यक है। हालांकि, क्रूरता को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए असाधारण समझ, आत्म-अनुशासन और साहस की आवश्यकता होती है, साथ ही क्रूरता को प्रेरित करने वाली दुर्भावना से अभिभूत हुए बिना ऐसा करना भी जरूरी है।

केवल एक क्रूर, स्वार्थी सरकार ही किसी समस्या के "अंतिम समाधान" के रूप में हत्या और स्थायी रूप से मृत्यु को मानने के लिए "तर्क" या "विज्ञान" का सहारा लेगी।

हर कलाकार, प्रतिभावान व्यक्ति, कुशल प्रबंधक और आविष्कारक की स्मृति को मिटा दो और उन्हें राजनीतिक विरोधियों, हत्यारों, चोरों, विकृत मानसिकता वाले लोगों और पूरी आकाशगंगा के विकलांग प्राणियों के साथ एक ग्रहीय जेल में डाल दो!

जब "पुराने साम्राज्य" से निष्कासित आईएस-बीई पृथ्वी पर पहुँचे, तो उन्हें स्मृतिभ्रंश दे दिया गया और सम्मोहन के द्वारा यह सोचने पर मजबूर कर दिया गया कि उनके साथ कुछ और ही घटित हुआ है। अगला कदम था आईएस-बीई को पृथ्वी पर मौजूद जैविक शरीरों में स्थापित करना। ये शरीर "नकली सभ्यताओं" की मानव आबादी बन गए, जिन्हें आईएस-बीई के दिमाग में इस तरह से बनाया और स्थापित किया गया था कि वे "पुराने साम्राज्य" से बिल्कुल भिन्न दिखें।

भारत, मिस्र, बेबीलोन, ग्रीस, रोम और मध्यकालीन यूरोप के सभी आईएस-बीई को इन समाजों के सांस्कृतिक तत्वों को उन मानक पैटर्नों के आधार पर तैयार करने और बनाने के लिए निर्देशित किया गया था, जो ब्रह्मांड भर में खरबों वर्षों से अस्तित्व में रहे "सूर्य प्रकार 12, वर्ग 7" ग्रहों पर कई पहले की, समान सभ्यताओं के आईएस-बीई द्वारा विकसित किए गए थे। प्राचीन काल में, पृथ्वी पर कैद किए गए आईएस-बीई भारत में रहते थे। वे धीरे-धीरे मेसोपोटामिया, मिस्र, मेसोअमेरिका, अचिया, ग्रीस, रोम, मध्यकालीन यूरोप और नई दुनिया में फैल गए। उन्हें सम्मोहन के माध्यम से एक दिए गए पैटर्न का पालन करने का "आदेश" दिया गया था।

"पुराने साम्राज्य" के जेल संचालकों द्वारा सभ्यता का यह दुरुपयोग पृथ्वी पर कैद किए गए कैदियों से वास्तविक समय और स्थान को छिपाने का एक प्रभावी तरीका है। प्रत्येक कैदी की भाषा, वेशभूषा और संस्कृति को अलग-अलग रखा जाता है।

सभ्यताएं विस्मृति को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से बनाई गई हैं क्योंकि वे पृथ्वी पर रहने वाले आईएस-बीई को उन मूल "पुराने साम्राज्य" ग्रहों की याद नहीं दिलाती हैं जहां से उन्हें निर्वासित किया गया था।

बहुत पुराने समय में, इस प्रकार की सभ्यताएँ बार-बार खुद को दोहराती रहीं क्योंकि इन्हें बनाने वाले लोग कुछ खास पैटर्न और शैलियों से परिचित हो गए और उन्हीं का अनुसरण करते रहे। संस्कृति, वास्तुकला, भाषा, रीति-रिवाज, गणित, नैतिक मूल्य आदि से परिपूर्ण एक

पूरी सभ्यता का आविष्कार करना बहुत मेहनत का काम है। किसी परिचित और सफल पैटर्न पर आधारित प्रतिकृति बनाना कहीं अधिक आसान है।

"सूर्य प्रकार 12, वर्ग 7" ग्रह उस ग्रह को कहा जाता है जिस पर कार्बन-ऑक्सीजन आधारित जीवन रूप पाए जाते हैं। ग्रह का वर्ग उसके आकार और संरचना के आधार पर निर्धारित किया जाता है।

तारे की विकिरण तीव्रता, तारे से ग्रह की कक्षा की दूरी, और ग्रह का आकार, घनत्व, गुरुत्वाकर्षण और रासायनिक संरचना जैसे कारकों का अध्ययन किया जाता है। इसी प्रकार, वनस्पतियों और जीवों को भी तारे के प्रकार और ग्रह के वर्ग के अनुसार वर्गीकृत और पहचाना जाता है।

औसतन, भौतिक ब्रह्मांड में सांस लेने योग्य वातावरण वाले ग्रहों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है। अधिकांश ग्रहों में सांस लेने योग्य वातावरण नहीं होता है।

वह वातावरण जिस पर जीवन रूप "भोजन" करते हैं, जैसे कि पृथ्वी पर, जहां वातावरण की रासायनिक संरचना पौधों और अन्य जीवों को पोषण प्रदान करती है, जो बदले में अन्य जीवन रूपों का समर्थन करते हैं।

जब डोमेन फोर्स वैदिक भजन लेकर आई

98

(फुटनोट) 8,200 साल पहले हिमालय क्षेत्र में, कुछ मानव

पहले से ही समाज मौजूद थे। आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया।

99

(पाद टिप्पणी), वैदिक भजनों को लाते हुए

100 (पाद टिप्पणी) क्षेत्र के लिए।

उन्होंने वेदों का अध्ययन किया, उन्हें याद किया और 7,000 वर्षों तक मौखिक रूप से उनका प्रसार किया, उसके बाद उन्हें लिखित रूप में दर्ज किया गया। उस दौरान डोमेन अभियान बल के एक अधिकारी ने...

पृथ्वी पर विष्णु के रूप में अवतरित हुए।

101

(फुटनोट)। ऋग्वेद में उनका कई बार वर्णन मिलता है। हिंदू आज भी उन्हें देवता मानते हैं। विष्णु ने "पुराने साम्राज्य" की सेनाओं के विरुद्ध धार्मिक युद्धों में भाग लिया था। वे एक अत्यंत

सक्षम और आक्रामक आईएस-बीई होने के साथ-साथ एक अत्यंत कुशल अधिकारी भी हैं, जिन्हें बाद में इस क्षेत्र में अन्य कर्तव्यों के लिए स्थानांतरित कर दिया गया है।
यह पूरा प्रकरण "पुराने साम्राज्य" के प्रशासकों द्वारा स्थापित मिस्र के देवमंडल के विरुद्ध एक हमले और विद्रोह के रूप में रचा गया था। इस संघर्ष का उद्देश्य मानव जाति को उस झूठी सभ्यता के तत्वों से मुक्त करना था जो कई "देवताओं" और उन पुजारियों द्वारा अनिवार्य अंधविश्वासी अनुष्ठानिक पूजा पर केंद्रित थी जो उनका "प्रबंधन" करते थे। यह सब मानसिक व्यवस्था का हिस्सा है।
पृथ्वी पर आईएस-बीई के खिलाफ अपने आपराधिक कृत्यों को छिपाने के लिए "पुराने साम्राज्य" द्वारा की गई हेराफेरी।

पुरोहित वर्ग, या जेल के पहरेदार, इस विचार को सुदृढ़ करने में मदद करने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे कि एक व्यक्ति केवल एक
व्यक्ति का कोई जैविक शरीर नहीं होता, वह कोई अमर आध्यात्मिक प्राणी नहीं होता। व्यक्ति की कोई पहचान नहीं होती। उसका कोई पूर्व जन्म नहीं होता।
102
(फुटनोट) व्यक्ति के पास कोई शक्ति नहीं है। केवल देवताओं के पास शक्ति है। और, देवता उन पुजारियों की देन हैं जो मनुष्यों और उनके द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं के बीच मध्यस्थता करते हैं। मनुष्य पुजारियों के आदेशों के गुलाम हैं, जो आज्ञा न मानने पर शाश्वत आध्यात्मिक दंड की धमकी देते हैं।
एक ऐसे बंदी ग्रह पर और क्या उम्मीद की जा सकती है जहाँ सभी कैदियों को स्मृतिभ्रंश है, और स्वयं पुजारी भी कैदी हैं? "पुराने साम्राज्य" के गुप्त मन-नियंत्रण अभियान के कारण, जो अभी भी जारी है, पृथ्वी पर डोमेन फोर्स का हस्तक्षेप पूरी तरह सफल नहीं रहा है।
"पुराने साम्राज्य" की सेनाओं और डोमेन के बीच धार्मिक विजय के माध्यम से एक युद्ध छिड़ा। 1500 ईसा पूर्व और लगभग 1200 ईसा पूर्व के बीच, डोमेन की सेनाओं ने पृथ्वी पर कई प्रभावशाली प्राणियों को एक व्यक्ति, अमर आध्यात्मिक सत्ता की अवधारणा सिखाने का प्रयास किया।
ऐसी ही एक घटना का परिणाम अत्यंत दुखद रहा।
अवधारणा की गलतफहमी, गलत व्याख्या और गलत प्रयोग। इस विचार को विकृत करके यह अर्थ निकाला गया कि केवल एक ही 'है-हो' है, जबकि सच्चाई यह है कि हर कोई 'है-हो' है! स्पष्ट रूप से, यह घोर नासमझी और अपनी शक्ति की जिम्मेदारी लेने की घोर अनिच्छा थी।
"पुराने साम्राज्य" के पुजारियों ने व्यक्तिगत अमरता की अवधारणा को इस विचार में परिवर्तित कर दिया कि केवल एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर है, और कोई अन्य व्यक्ति ईश्वर नहीं है, और न ही किसी को ईश्वर होने की अनुमति है। स्पष्टतः, यह "पुराने साम्राज्य" के विस्मृति अभियान का परिणाम है।

जो लोग अपने जीवन की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते, उन्हें यह बदली हुई धारणा सिखाना आसान है। गुलाम ऐसे ही प्राणी होते हैं। जब तक कोई व्यक्ति सृष्टि, अस्तित्व और अपने विचारों और कार्यों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी दूसरों पर डालता है, तब तक वह गुलाम ही रहता है।

परिणामस्वरूप, एक एकेश्वरवादी "ईश्वर" की अवधारणा उत्पन्न हुई और कई स्वघोषित धर्मगुरुओं द्वारा इसका प्रचार किया गया।

यहूदी दास नेता मूसा जैसे नबी (103)
(फुटनोट) जो फ़राओ अमेनहोटेप तृतीय के परिवार में पले-बढ़े।
104
(फुटनोट) और उसका बेटा, अखेनातेन
105
(पाद टिप्पणी) और उनकी पत्नी नेफ़र्टिटी,
106
(फुटनोट) साथ ही उनके पुत्र तुतनखामेन भी।
107
(पाद लेख )
पृथ्वी पर कुछ प्राणियों को यह सत्य सिखाने का प्रयास कि वे स्वयं ही अस्तित्व-प्राप्ति हैं, "पुराने साम्राज्य" के रहस्यवादी पंथ "सांप के भाई" द्वारा निर्मित काल्पनिक, लाक्षणिक, मानवरूपी देवताओं के समूह को उखाड़ फेंकने की योजना का हिस्सा था।
108
(फुटनोट) मिस्र में अमून के पुजारियों के रूप में जाने जाते थे।
109
(फुटनोट) वे "पुराने साम्राज्य" के भीतर स्थित एक बहुत ही प्राचीन, गुप्त समाज थे।
फ़राओ अखेनातेन कोई बहुत बुद्धिमान शासक नहीं था और आत्म-प्रशंसा की अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से अत्यधिक प्रभावित था। उसने आध्यात्मिक सत्ता की अवधारणा को बदल दिया और इस अवधारणा को सूर्य देवता एटेन में समाहित कर दिया। उसका दुखद अंत शीघ्र ही हुआ। उसकी हत्या माया और पारेनेफर ने की, जो अमून या "अमेन" के दो पुजारी थे (ईसाई आज भी इसी नाम से पुकारते हैं), और जो "पुराने साम्राज्य" की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते थे।
"एक ईश्वर" का विचार इब्रानी नेता मूसा द्वारा आगे बढ़ाया गया था।
110

(फुटनोट) जब वह मिस्र में थे। उन्होंने अपने गोद लिए हुए लोगों, यहूदी दासों के साथ मिस्र छोड़ दिया। रेगिस्तान पार करते समय, माउंट सिनाई के पास "पुराने साम्राज्य" के एक दूत ने मूसा को रोक लिया। सम्मोहनकारी आदेशों और तकनीकी एवं सौंदर्य संबंधी चालों का प्रयोग करके मूसा को यह विश्वास दिलाया गया कि वह दूत ही एकमात्र ईश्वर है। ये चालें "पुराने साम्राज्य" द्वारा यहूदियों को फंसाने के लिए आम तौर पर इस्तेमाल की जाती थीं। इसके बाद, यहूदी दासों ने, जिन्होंने मूसा की बात पर पूरी तरह भरोसा किया, एक ही ईश्वर की पूजा करना शुरू कर दिया जिसे वे "याहवे" कहते हैं।

111

(पाद लेख)।

याहवे नाम का अर्थ है "अनाम", क्योंकि मूसा के साथ "काम करने वाले" आईएस-बीई किसी वास्तविक नाम या ऐसी किसी भी चीज़ का उपयोग नहीं कर सकते थे जिससे उनकी पहचान उजागर हो सके या स्मृतिलोप/कैद के ऑपरेशन का राज़ खुल सके। गुप्त स्मृतिलोप/सम्मोहन/कैद प्रणाली की अंतिम इच्छा यही है कि वे पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई के सामने खुलेआम प्रकट न हों। उन्हें लगता है कि इससे कैदियों की याददाश्त वापस आ जाएगी!

यही कारण है कि भौतिक के सभी निशान
अंतरिक्ष सभ्यताओं के संचालकों के बीच मुठभेड़ और

मानव को बहुत सावधानी से छिपाया जाता है, भेस बदला जाता है, ढका जाता है, नकारा जाता है या गुमराह किया जाता है।
इस "पुराने साम्राज्य" के एक गुप्तचर ने रेगिस्तानी पहाड़ की चोटी पर मूसा से संपर्क किया और उन्हें "दस सम्मोहनकारी आदेश" दिए। ये आदेश अत्यंत बलपूर्वक लिखे गए हैं और सम्मोहनकारी आदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति को पूर्णतः सम्मोहनकारी आदेश प्राप्त करने वाले के अधीन कर देते हैं। ये सम्मोहनकारी आदेश आज भी प्रभावी हैं और हजारों वर्षों बाद भी लाखों सम्मोहनकारी आदेश प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के विचारों को प्रभावित करते हैं! संयोगवश, बाद में हमें पता चला कि तथाकथित "याहवे" ने ही तोराह के पाठ को लिखा, प्रोग्राम किया और एन्कोड किया था, जिसे जब शाब्दिक रूप से पढ़ा जाता है, या उसके डिकोड किए गए रूप में,
112
(फुटनोट) प्रारूप, इसे पढ़ने वालों को कहीं अधिक गलत जानकारी प्रदान करेगा।
अंततः, वैदिक भजन लगभग सभी पूर्वी धर्मों का स्रोत बन गए और बुद्ध के विचारों का दार्शनिक स्रोत भी बने।
113
(फुटनोट), लाओज़ी
114
(पाद टिप्पणी), ज़ोरोस्टर
115
(फुटनोट) और अन्य दार्शनिक। इन दर्शनों के सभ्यकारी प्रभावों ने अंततः "पुराने साम्राज्य" के धर्मों की क्रूर मूर्तिपूजा को प्रतिस्थापित कर दिया और दया और करुणा की सच्ची उत्पत्ति का स्रोत बने।
आपने मुझसे पहले पूछा था कि डोमेन और अन्य अंतरिक्ष सभ्यताएँ पृथ्वी पर क्यों नहीं उतरतीं या अपनी उपस्थिति क्यों नहीं प्रकट करतीं। पृथ्वी पर उतरना? क्या आपको लगता है कि हम पागल हैं या पागल बनना चाहते हैं? वायुमंडल से नीचे उतरकर पृथ्वी पर उतरने के

लिए एक बहुत ही साहसी IS-BE की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह एक जेल ग्रह है, जहाँ बहुत ही
अनियंत्रित, मनोविक्षिप्त आबादी। और, कोई भी आईएस-बीई पूरी तरह से फँसने के जोखिम से सुरक्षित नहीं है, जैसा कि डोमेन अभियान बल के सदस्यों के साथ हुआ था जिन्हें 8,200 साल पहले हिमालय में पकड़ लिया गया था।
पृथ्वी पर मौजूद IS-BE क्या करेंगे, यह कोई नहीं जानता। फिलहाल, हम डोमेन के संसाधनों का इस्तेमाल करके इस क्षेत्र के चारों ओर के पूरे अंतरिक्ष पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने की योजना नहीं बना रहे हैं। डोमेन के समय-सारणी के अनुसार, यह कार्य निकट भविष्य में, लगभग 5,000 पृथ्वी वर्षों में होगा। फिलहाल, हम अन्य ग्रहों या आकाशगंगाओं से आने वाले परिवहन को IS-BE को विस्मृति बल स्क्रीन क्षेत्र में गिराने से नहीं रोक रहे हैं। अंततः, यह स्थिति बदलेगी।

इसके अलावा, पृथ्वी स्वभाव से ही एक अत्यंत अस्थिर ग्रह है। यह किसी भी स्थायी सभ्यता के लिए बस्ती बसाने या स्थायी निवास के लिए उपयुक्त नहीं है। यही कारण है कि इसे एक बंदीगृह के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। कई सरल और ठोस कारणों से कोई भी अन्य ग्रह यहाँ रहने के बारे में गंभीरता से विचार नहीं करेगा:

1) पृथ्वी के महाद्वीपीय भूभाग सतह के नीचे पिघले हुए लावा के समुद्र पर तैर रहे हैं, जिसके कारण भूभाग लगातार फटते, टूटते और बहते रहते हैं। 116

(पाद लेख)

2) ग्रह के कोर की तरल प्रकृति के कारण, यह ग्रह काफी हद तक ज्वालामुखीय है और भूकंप और ज्वालामुखी विस्फोटों के अधीन है।

3) ग्रह के चुंबकीय ध्रुव लगभग हर 20,000 वर्षों में एक बार पूरी तरह से बदल जाते हैं। 117 (फुटनोट) इससे ज्वारीय लहरों और जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप कम या ज्यादा तबाही होती है।

4) पृथ्वी आकाशगंगा के केंद्र से और किसी भी अन्य महत्वपूर्ण आकाशगंगा सभ्यता से बहुत दूर है। इस अलगाव के कारण यह किसी भी अन्य उपयोग के लिए अनुपयुक्त है, सिवाय आकाशगंगाओं के बीच यात्रा के दौरान एक पड़ाव या प्रस्थान बिंदु के रूप में। चंद्रमा और क्षुद्रग्रह इस उद्देश्य के लिए कहीं अधिक उपयुक्त हैं क्योंकि उनमें कोई भी महत्वपूर्ण गुरुत्वाकर्षण।

5) पृथ्वी एक भारी गुरुत्वाकर्षण वाला ग्रह है, जिसकी मिट्टी भारी धात्विक है और वायुमंडल सघन है। इस कारण नौवहन के लिहाज से यह बेहद जोखिम भरा है। इस बात का प्रमाण यह है कि मैं एक हवाई दुर्घटना के परिणामस्वरूप, अपने विमान की उन्नत तकनीक और पायलट के रूप में अपने व्यापक अनुभव के बावजूद, आज इस कमरे में हूँ।

6) अकेले मिल्की वे आकाशगंगा में लगभग साठ अरब पृथ्वी जैसे (सूर्य प्रकार 12, वर्ग 7) ग्रह हैं, इसके अलावा द डोमेन के विशाल विस्तार और भविष्य में हम जिन क्षेत्रों पर दावा करेंगे, उनका तो जिक्र ही नहीं।

पृथ्वी का आवधिक सर्वेक्षण करने से अधिक कुछ करने के लिए अपने संसाधनों का विस्तार करना कठिन है। विशेषकर तब जब यहाँ संसाधन निवेश करने से कोई तत्काल लाभ न हो।

7) पृथ्वी पर अधिकांश प्राणी इस बात से अनभिज्ञ हैं कि वे आत्मा हैं, या किसी भी प्रकार की आत्माएं मौजूद हैं। कई अन्य

प्राणी इस बात से अवगत हैं, लेकिन लगभग हर किसी को स्वयं को एक 'है-हो' के रूप में समझने की बहुत सीमित समझ होती है।

इसका एक कारण यह है कि आईएस-बीई (इस्लामी-समर्थक संगठन) शुरुआत से ही आपस में युद्ध करते आ रहे हैं। इन युद्धों का उद्देश्य हमेशा से एक आईएस-बीई या आईएस-बीई समूह द्वारा दूसरे पर प्रभुत्व स्थापित करना रहा है। चूंकि किसी आईएस-बीई को "मारना" संभव नहीं है, इसलिए उद्देश्य आईएस-बीई को पकड़ना और निष्क्रिय करना रहा है। यह लगभग अनगिनत तरीकों से किया गया है। किसी आईएस-बीई को पकड़ने और निष्क्रिय करने का सबसे बुनियादी तरीका विभिन्न प्रकार के "जाल" का उपयोग करना है।

कई आक्रमणकारी समाजों द्वारा आईएस-बीई जाल बनाए और बिछाए गए हैं, जैसे कि वह समाज जिसने लगभग चौंसठ खरब वर्ष पहले "पुराने साम्राज्य" की स्थापना की थी। ये जाल अक्सर आक्रमण किए जा रहे आईएस-बीई के "क्षेत्र" में लगाए जाते हैं। आमतौर पर, आईएस-बीई का ध्यान आकर्षित करने के लिए "सौंदर्य" की इलेक्ट्रॉनिक तरंग का उपयोग करके जाल बिछाया जाता है। जब आईएस-बीई सौंदर्य तरंग के स्रोत, जैसे कि किसी सुंदर इमारत या सुंदर संगीत की ओर बढ़ता है, तो आईएस-बीई द्वारा उत्सर्जित ऊर्जा से जाल सक्रिय हो जाता है।

सबसे आम ट्रैप तंत्रों में से एक है, जब आईबीएस (IS-BE) ट्रैप पर हमला करने या उससे लड़ने की कोशिश करता है, तो यह उसकी अपनी विचार ऊर्जा का उपयोग करता है। ट्रैप आईबीएस की अपनी विचार ऊर्जा से सक्रिय और ऊर्जावान होता है। आईबीएस जितना अधिक ट्रैप से लड़ता है, उतना ही यह आईबीएस को अपनी ओर खींचता है और उसे ट्रैप में "फंसा" रखता है।

इस भौतिक ब्रह्मांड के संपूर्ण इतिहास में, अंतरिक्ष के विशाल क्षेत्रों पर आईएस-बीई समाजों द्वारा कब्ज़ा कर लिया गया है और उन्हें उपनिवेशित किया गया है, जो इसी तरह से अंतरिक्ष के नए क्षेत्रों पर आक्रमण करते हैं और उन पर अधिकार जमाते हैं। अतीत में, इन आक्रमणों में हमेशा कुछ सामान्य तत्व रहे हैं:

1) हथियारों की अत्यधिक बल प्रयोग, आमतौर पर परमाणु या इलेक्ट्रॉनिक हथियारों के साथ।

2) आक्रमण किए गए क्षेत्र में आईएस-बीई लोगों पर इलेक्ट्रोशॉक, ड्रग्स, सम्मोहन, स्मृति को मिटाने और झूठी स्मृति या झूठी जानकारी डालने के माध्यम से मन पर नियंत्रण करना, जिसका उद्देश्य स्थानीय आईएस-बीई आबादी को अधीन करना और गुलाम बनाना है।
76

3) आक्रमणकारी आईएस-बीई द्वारा प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा।
4) स्थानीय आबादी की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गुलामी।
ये गतिविधियाँ आज भी जारी हैं। पृथ्वी पर मौजूद सभी आईएस-बीई अतीत में इनमें से किसी न किसी गतिविधि में शामिल रहे हैं, चाहे आक्रमणकारी के रूप में या आक्रमण का शिकार हुई आबादी के हिस्से के रूप में। इस ब्रह्मांड में कोई भी "संत" नहीं है। बहुत कम ही ऐसे हैं जो आईएस-बीई के बीच युद्ध से बच पाए हैं या जिन्हें इससे छूट मिली है।
पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई इस गतिविधि के शिकार हैं। आईएस-बीई को दी जाने वाली अंतर-जन्म स्मृतिलोप की प्रक्रिया, "पुराने साम्राज्य" की आईएस-बीई जाल प्रणाली का एक हिस्सा है, जो उन्हें भागने से रोकती है।
यह अभियान "पुराने साम्राज्य" की एक अवैध, बागी गुप्त पुलिस 118 (फुटनोट) द्वारा संचालित किया जाता है, जो अपनी गतिविधियों को छिपाने के लिए झूठे उकसावे वाले अभियानों का उपयोग करती है 119
(फुटनोट) अपनी ही सरकार, द डोमेन और अपनी गतिविधियों के पीड़ितों द्वारा पकड़े जाने से बचने के लिए। ये सरकारी मनोचिकित्सकों द्वारा विकसित मन-नियंत्रण विधियाँ हैं। 120
(फुटनोट)
पृथ्वी एक "बस्ती" है
121
(फुटनोट) ग्रह। यह एक अंतर-आकाशगंगा "नरसंहार" का परिणाम है।
122
(फुटनोट) आईएस-बीई को पृथ्वी पर इसलिए दंडित किया गया है क्योंकि:
1) वे इतने दुष्टतापूर्वक पागल या विकृत हैं कि वे किसी भी सभ्यता के हिस्से के रूप में कार्य करने में असमर्थ हैं, चाहे वह सभ्यता कितनी भी पतित या भ्रष्ट क्यों न हो।
2) या फिर, वे "पुराने साम्राज्य" में सावधानीपूर्वक निर्मित और क्रूरतापूर्वक लागू की गई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जाति व्यवस्था के लिए एक क्रांतिकारी खतरा हैं। जैविक शरीर विशेष रूप से "पुराने साम्राज्य" की जाति व्यवस्था में सबसे निचले स्तर की इकाई के रूप में डिज़ाइन और नामित किए गए हैं। जब एक IS-BE को पृथ्वी पर भेजा जाता है, और

फिर उसे धोखे या दबाव से किसी अन्य तरीके से काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो
जैविक शरीर में, वे वास्तव में एक जेल के अंदर एक और जेल में हैं।
3) "पुराने साम्राज्य" को ऐसे "अछूतों" से स्थायी और अपरिवर्तनीय रूप से मुक्त करने के प्रयास में, शाश्वत

प्रत्येक आईएस-बी की पहचान, स्मृति और क्षमताओं को जबरन मिटा दिया जाता है। यह "अंतिम समाधान" है।

123

(फुटनोट) की योजना और क्रियान्वयन "पुराने साम्राज्य" द्वारा नियंत्रित मनोरोगी अपराधियों द्वारा किया गया था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी द्वारा "अछूतों" के सामूहिक नरसंहार और बनाए गए कारागार शिविरों का हाल ही में खुलासा हुआ है। इसी प्रकार, पृथ्वी के आईएस-बीई भी आध्यात्मिक विनाश और दुर्बल, जैविक शरीरों के भीतर शाश्वत गुलामी के शिकार हैं, जो "पुराने साम्राज्य" में व्याप्त उसी प्रकार की कायरतापूर्ण घृणा से प्रेरित हैं।

पृथ्वी के दयालु और रचनात्मक कैदियों को "पुराने साम्राज्य" के जेल संचालकों द्वारा नियंत्रित कसाइयों और पागलों द्वारा लगातार प्रताड़ित किया जाता है। पृथ्वी की तथाकथित "सभ्यताएँ", बेकार पिरामिडों के युग से लेकर परमाणु प्रलय के युग तक, प्राकृतिक संसाधनों की भारी बर्बादी, बुद्धि का विकृत उपयोग और इस ग्रह पर मौजूद प्रत्येक व्यक्ति की आध्यात्मिक आत्मा का खुला दमन रही हैं।

यदि द डोमेन "नरक" की खोज में ब्रह्मांड के हर कोने में जहाज़ भेजता, तो उनकी खोज पृथ्वी पर ही समाप्त हो सकती थी। किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक चेतना, पहचान, क्षमता और स्मृति को मिटा देने से बढ़कर और कौन सी क्रूरता हो सकती है, जो उसके अस्तित्व का सार है? डोमेन अभी तक अभियान बल बटालियन के 3,000 आईएस-बीई को भी बचाने में असमर्थ रहा है। वे पृथ्वी पर जैविक शरीरों में निवास करने के लिए विवश हैं। हम पिछले 8,000 वर्षों से उनमें से अधिकांश को पहचानने और उनका पता लगाने में सक्षम रहे हैं। हालांकि, उनसे संवाद करने के हमारे प्रयास आमतौर पर व्यर्थ होते हैं, क्योंकि वे अपनी वास्तविक पहचान को याद रखने में असमर्थ हैं।

डोमेन सेना के लापता सदस्यों में से अधिकांश ने पश्चिमी सभ्यता की सामान्य प्रगति का अनुसरण किया है, जो भारत से शुरू होकर मध्य पूर्व, फिर चाल्डिया और बेबीलोन, मिस्र, अचैया, ग्रीस, रोम होते हुए यूरोप, पश्चिमी गोलार्ध और फिर पूरी दुनिया में फैली है।

खोई हुई बटालियन के सदस्य और पृथ्वी पर मौजूद कई अन्य आईएस-बीई, डोमेन के मूल्यवान नागरिक हो सकते हैं, सिवाय उन लोगों के जो क्रूर अपराधी या विकृत मानसिकता वाले हैं। दुर्भाग्य से, आईएस-बीई को पृथ्वी से मुक्त कराने का कोई कारगर तरीका अभी तक नहीं खोजा जा सका है।

इसलिए, सामान्य तर्क के साथ-साथ डोमेन की आधिकारिक नीति के अनुसार, पृथ्वी की आईएस-बीई आबादी के साथ संपर्क से बचना अधिक सुरक्षित और समझदारी भरा है, जब तक कि "पुराने साम्राज्य" के बल-सुरक्षा तंत्र और स्मृतिलोप तंत्र का पता लगाने और उसे नष्ट करने तथा आईएस-बीई की स्मृति को बहाल करने के लिए एक चिकित्सा विकसित करने के लिए उचित संसाधन आवंटित नहीं किए जा सकते।

अध्याय नौ

घटनाओं का समयक्रम

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"इस साक्षात्कार के लिए मैंने लिखित नोट्स लिए क्योंकि एयरल ने मुझे कई तारीखें और नाम बताए थे जिन्हें बिना लिखे याद रखना मेरे लिए नामुमकिन था। मैं आमतौर पर नोट्स नहीं लेती, लेकिन इस पाठ के दौरान मुझे लगा कि एयरल द्वारा दी गई जानकारी को ठीक उसी तरह समझना ज़रूरी है। हालांकि, मुझे पता चला कि नोट्स लेने से एयरल से बातचीत पर ध्यान केंद्रित करना मेरे लिए बहुत मुश्किल हो गया। मैं कभी-कभी अपने लेखन में इतनी मग्न हो जाती थी कि मैं उनकी बात को समझ ही नहीं पाती थी, इसलिए मुझे उनसे कई बार अपनी बात दोहराने के लिए कहना पड़ता था।"

एयरल क्षुद्रग्रह बेल्ट अंतरिक्ष स्टेशन पर तैनात संचार अधिकारी के साथ लगातार संपर्क में रहीं, जहाँ से उन्हें अधिकांश जानकारी प्राप्त हुई। चूंकि एयरल द डोमेन की एक अधिकारी/पायलट/इंजीनियर थीं, न कि इतिहासकार, इसलिए उन्हें यह जानकारी द डोमेन अभियान बल के अन्य अधिकारियों द्वारा संचालित टोही अभियानों के अभिलेखों से प्राप्त करनी पड़ी।

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 27 जुलाई 1947, पहला सत्र।

पृथ्वी का वास्तविक इतिहास अत्यंत विचित्र है। यह इतना बेतुका है कि पृथ्वी पर जो भी व्यक्ति इसकी पड़ताल करने का प्रयास करता है, उसके लिए यह अविश्वसनीय है। इसमें असंख्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ गायब हैं। इसमें बेतुके अवशेषों और पौराणिक कथाओं का एक विशाल समूह मनमाने ढंग से शामिल किया गया है। पृथ्वी की अस्थिर प्रकृति स्वयं चक्रीय रूप से भौतिक साक्ष्यों को ढकती, डुबोती, मिलाती और टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

स्मृतिलोप और सम्मोहन के बाद के सुझावों, झूठे दिखावों और गुप्त हेरफेर के साथ मिलकर ये कारक पृथ्वी की सभ्यताओं की वास्तविक उत्पत्ति और इतिहास का पुनर्निर्माण लगभग असंभव बना देते हैं।

जांचकर्ता, चाहे वह कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, अनिश्चित मान्यताओं, अव्यवहारिक परिकल्पनाओं और निरंतर रहस्य के दलदल में फंसने के लिए अभिशप्त है।
चूंकि डोमेन इन कष्टों से ग्रस्त नहीं है, और स्मृति, दीर्घायु और बाहरी दृष्टिकोण का लाभ प्राप्त है, इसलिए मैं पृथ्वी के इतिहास के बारे में आपके अधूरे ज्ञान में कुछ स्पष्टीकरण जोड़ूंगा।
ये कुछ ऐसी तिथियां और घटनाएं हैं जिनका उल्लेख पृथ्वी के इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में नहीं मिलता। ये तिथियां महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनसे पृथ्वी पर "पुराने साम्राज्य" और "डोमिनियम" के प्रभावों के बारे में कुछ जानकारी मिलती है।
यद्यपि मैंने पिछले कुछ सौ वर्षों में पृथ्वी की सामान्य पृष्ठभूमि पर हमारे मिशन नियंत्रण कर्मियों द्वारा दी गई कई ब्रीफिंग में भाग लिया है, फिर भी मैं मुख्य रूप से "पुराने साम्राज्य" के ग्रह मुख्यालय पर हमारे आक्रमण के बाद प्राप्त अभिलेखों से एकत्रित आंकड़ों पर निर्भर रहूंगा। तब से डोमेन अभियान बल पृथ्वी पर घटित घटनाओं की सामान्य प्रगति पर नज़र रख रहा है।
जैसा कि मैंने पहले बताया, कुछ मामलों में डोमेन ने अपनी दीर्घकालिक विस्तार योजनाओं की सफलता सुनिश्चित करने के लिए पृथ्वी पर कुछ मामलों में हस्तक्षेप करना चुना है।
हालाँकि डोमेन को पृथ्वी या इस ग्रह पर रहने वाले आईएस-बीई की आबादी में कोई दिलचस्पी नहीं है, फिर भी पृथ्वी के संसाधनों को नष्ट या दूषित होने से बचाना हमारे हित में है।
इसी उद्देश्य से, डोमेन के कुछ अधिकारियों को समय-समय पर जानकारी जुटाने के लिए पृथ्वी पर जासूसी मिशनों पर भेजा गया है।
हालांकि, निम्नलिखित तिथियां और घटनाएं डोमेन की डेटा फाइलों में संचित जानकारी से अनुमानित की गई हैं - कम से कम वे फाइलें जो अंतरिक्ष स्टेशन के माध्यम से मेरे लिए सुलभ हैं।
संचार केंद्र।
208,000 ईसा पूर्व --
"पुराने साम्राज्य" की स्थापना, जिसके

मुख्यालय इस आकाशगंगा के उरसा मेजर (बिग डिपर) तारामंडल 124 (फुटनोट) में स्थित "पूंछ वाले तारों" में से एक के पास स्थित था। "पुराने साम्राज्य" की आक्रमणकारी सेना ने कुछ समय पहले परमाणु हथियारों से इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। इसके बाद

रेडियोधर्मिता 125 (फुटनोट) कम हो गई और सफाई एवं पुनर्स्थापन कार्य पूरा हो गया, तब इस आकाशगंगा में दूसरी आकाशगंगा से प्राणियों का आप्रवास हुआ। उन प्राणियों ने एक समाज की स्थापना की जो लगभग 10,000 वर्ष पूर्व तक चलता रहा, जब तक कि उसका स्थान द डोमेन ने नहीं ले लिया।

हाल ही में पृथ्वी की सभ्यता उस सभ्यता के कुछ पहलुओं से मिलती-जुलती दिखने लगी है, क्योंकि अब वह सभ्यता उसके प्रत्यक्ष नियंत्रण से बाहर हो गई है। विशेष रूप से, परिवहन के उपकरण जैसे विमान, ट्रेन, जहाज, अग्निशमन इंजन और ऑटोमोबाइल, साथ ही जिन्हें आप "आधुनिक" या "भविष्यवादी" मानते हैं, उनका स्वरूप और तकनीक।

ऐसी वास्तुकला, जो "पुराने साम्राज्य" के प्रमुख शहरों में इमारतों के डिजाइन की नकल करती है।

75,000 ईसा पूर्व से पहले --

डोमेन अभिलेखों में अटलांटा के महाद्वीपीय भूभाग पर स्थित सभ्यताओं के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है।

126

(पाद टिप्पणी) और लेमूर

127

(फुटनोट), सिवाय इसके कि वे पृथ्वी पर लगभग एक ही समय में सह-अस्तित्व में थे। जाहिरा तौर पर, दोनों सभ्यताओं की स्थापना इलेक्ट्रॉनिक, स्पेस ओपेरा संस्कृतियों के अवशेषों द्वारा की गई थी, जो राजनीतिक या

धार्मिक उत्पीड़न।

डोमेन को पता है कि "पुराने साम्राज्य" के एक पुराने फरमान के अनुसार ग्रहों पर अनाधिकृत उपनिवेशीकरण निषिद्ध है। इसलिए, यह संभव है कि उनका विनाश पुलिस या सैन्य बलों द्वारा किया गया हो, जिन्होंने उपनिवेशवादियों को अपराधी समझकर उनका पीछा किया और उन्हें नष्ट कर दिया। हालांकि यह एक संभावित अनुमान प्रतीत होता है, लेकिन दो संपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक सभ्यताओं के पूर्ण विनाश और गायब होने की व्याख्या करने वाला कोई निर्णायक प्रमाण मौजूद नहीं है।

एक अन्य संभावना यह है कि सुमात्रा में टोबा झील क्षेत्र और क्राकाटोआ पर्वत के आसपास एक विशाल समुद्री ज्वालामुखी विस्फोट हुआ हो।

129

जावा में (फुटनोट) ज्वालामुखी विस्फोट के कारण लेमूर प्रजाति का विनाश हुआ।

ज्वालामुखी विस्फोट से आई बाढ़ ने सबसे ऊंचे पहाड़ों सहित सभी भूभागों को डुबो दिया।

इस विनाश से बचे लोग...

लेमुरियन सभ्यता, चीनी सभ्यता के सबसे प्राचीन पूर्वज हैं। ऑस्ट्रेलिया और उत्तर में स्थित समुद्री क्षेत्र लेमुरियन सभ्यता का केंद्र थे और यहीं से पूर्वी नस्लों का उद्गम हुआ। दोनों सभ्यताओं में इलेक्ट्रॉनिक्स, उड़ान और अंतरिक्ष विज्ञान से जुड़ी अन्य प्रौद्योगिकियां मौजूद थीं।

82

ऐसा प्रतीत होता है कि ज्वालामुखी विस्फोट से पिघली हुई चट्टान का इतना बड़ा द्रव्यमान निकला कि पृथ्वी की पपड़ी के नीचे उत्पन्न निर्वात के कारण भूभाग के बड़े-बड़े हिस्से महासागरों में डूब गए।

दोनों सभ्यताओं द्वारा आबाद महाद्वीपीय क्षेत्र ज्वालामुखीय पदार्थों से ढक गए और फिर जलमग्न हो गए, जिससे उनके अस्तित्व के बहुत कम प्रमाण बचे हैं, सिवाय वैश्विक बाढ़ की उन किंवदंतियों के जो पृथ्वी की हर संस्कृति में प्रचलित हैं, और उन बचे हुए लोगों के जो प्राच्य जातियों और संस्कृतियों के वंशज हैं।

उस तरह का विशाल ज्वालामुखी विस्फोट

130

(फुटनोट) ये ज्वालामुखी विस्फोट समताप मंडल को जहरीली गैसों से भर देते हैं, जो पूरे ग्रह पर फैल जाती हैं। इन ज्वालामुखी विस्फोटों से निकलने वाला अपशिष्ट वायुमंडलीय प्रदूषण के कारण "40 दिन और 40 रात" तक चलने वाली बारिश का कारण बन सकता है, साथ ही सूर्य से आने वाली विकिरण को अंतरिक्ष में वापस परावर्तित कर सकता है, जिससे वैश्विक शीतलन हो सकता है।

131

(फुटनोट) निश्चित रूप से ऐसी घटना हिमयुग, जीवन रूपों के विलुप्त होने और हजारों वर्षों तक चलने वाले कई अन्य अपेक्षाकृत दीर्घकालिक परिवर्तनों का कारण बनेगी।

पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से घटित होने वाली असंख्य वैश्विक प्रलयकारी घटनाओं के कारण, यह आईएस-बीई के निवास के लिए उपयुक्त ग्रह नहीं है। इसके अलावा, आईएस-बीई द्वारा समय-समय पर वैश्विक प्रलयकारी घटनाएं घटित हुई हैं, जैसे कि वह घटना जिसने डायनासोरों का विनाश किया था।

132

(फुटनोट) 70 मिलियन वर्ष से भी अधिक समय पहले। यह विनाश अंतर-आकाशगंगा युद्ध के कारण हुआ था, जिसके दौरान पृथ्वी और कई अन्य पड़ोसी चंद्रमाओं और ग्रहों पर परमाणु हथियारों से बमबारी की गई थी। परमाणु विस्फोट ज्वालामुखी विस्फोटों के समान ही

वायुमंडलीय परासरण उत्पन्न करते हैं। 133 (फुटनोट) तब से आकाशगंगा के इस क्षेत्र के अधिकांश ग्रह निर्जन रेगिस्तान बन गए हैं।

पृथ्वी अनेक अन्य कारणों से भी अनुपयुक्त है: अत्यधिक गुरुत्वाकर्षण और सघन वायुमंडल, बाढ़, भूकंप, ज्वालामुखी, ध्रुवीय बदलाव, महाद्वीपीय बहाव, उल्कापिंडों का प्रभाव, वायुमंडलीय और जलवायु परिवर्तन, आदि। ऐसे वातावरण में कोई भी उन्नत सभ्यता किस प्रकार की स्थायी सभ्यता विकसित करने का प्रस्ताव रख सकती है?

इसके अलावा, पृथ्वी आकाशगंगा के एक "किनारे के तारे" का एक छोटा ग्रह है। इस वजह से पृथ्वी भौगोलिक रूप से आकाशगंगा के केंद्र की ओर स्थित अधिक सघन ग्रहीय सभ्यताओं से बहुत अलग-थलग है। इन स्पष्ट तथ्यों के कारण पृथ्वी केवल चिड़ियाघर या वनस्पति उद्यान के रूप में या वर्तमान में कारागार के रूप में ही उपयोग के लिए उपयुक्त है - इससे अधिक किसी और उपयोग के लिए नहीं।

30,000 ईसा पूर्व से पहले --

पृथ्वी को उन आईएस-बीई सदस्यों के लिए एक डंपिंग ग्राउंड और जेल के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा, जिन्हें "अछूत" माना जाता था, यानी अपराधी या गैर-परंपरावादी। आईएस-बीई सदस्यों को पकड़ा जाता था, इलेक्ट्रॉनिक जाल में फंसाया जाता था और "पुराने साम्राज्य" के विभिन्न हिस्सों से पृथ्वी पर लाया जाता था। मंगल ग्रह और पृथ्वी पर रुवेंज़ोरी पर्वतमाला में भूमिगत "स्मृतिलोप केंद्र" स्थापित किए गए थे।

134

(फुटनोट) अफ्रीका में, पाइरेनीज़ पर्वत 135 (फुटनोट) पुर्तगाल में, और मंगोलिया के स्टेपीज़ में।

136

(पाद लेख)

ये इलेक्ट्रॉनिक निगरानी केंद्र ऐसे सुरक्षा घेरे बनाते हैं जो मृत्यु के समय शरीर से बाहर निकलने वाले IS-BE का पता लगाने और उन्हें पकड़ने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। पृथ्वी की आबादी को स्थायी स्मृतिभ्रंश की स्थिति में रखने के लिए IS-BE को अत्यधिक इलेक्ट्रॉनिक बल का उपयोग करके मस्तिष्क-विधानसंगठित किया जाता है। लंबी दूरी के इलेक्ट्रॉनिक विचार नियंत्रण तंत्रों के उपयोग के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण के लिए अतिरिक्त व्यवस्थाएँ स्थापित की गई हैं। ये केंद्र अभी भी कार्यरत हैं और इन पर हमला करना या इन्हें नष्ट करना बेहद मुश्किल है, यहाँ तक कि डोमेन के लिए भी, जो बाद में ही इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण सैन्य बल तैनात करेगा।

पृथ्वी पर स्थित IS-BE कारागार प्रणाली के हिस्से के रूप में पिरामिड सभ्यताओं का जानबूझकर निर्माण किया गया था। पिरामिड को "ज्ञान" का प्रतीक माना जाता है। हालांकि,

पृथ्वी ग्रह पर स्थित "पुराने साम्राज्य" का "ज्ञान" द्रव्यमान, अर्थ और रहस्य से युक्त एक जटिल विस्मृति "जाल" के हिस्से के रूप में कार्य करने के लिए बनाया गया है। ये एक अमर आध्यात्मिक सत्ता के गुणों के विपरीत हैं, जिसका कोई द्रव्यमान या अर्थ नहीं होता। एक IS-BE केवल इसलिए "अस्तित्व" में है क्योंकि वह सोचता है कि वह "अस्तित्व" में है।
द्रव्यमान भौतिक ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें तारे, ग्रह, गैसें, तरल पदार्थ, ऊर्जा कण और चाय के कप जैसी वस्तुएँ शामिल हैं। पिरामिड बहुत ही ठोस वस्तुएँ थीं, जैसा कि "पुराने साम्राज्य" द्वारा निर्मित सभी संरचनाएँ थीं। भारी, विशाल, सघन, ठोस वस्तुएँ।

शाश्वतता का भ्रम पैदा करना। लिनन में लिपटे, राल में भीगे हुए मृत शरीर, नक्काशीदार सुनहरे ताबूतों में रखे और सांसारिक वस्तुओं के साथ रहस्यमय प्रतीकों के बीच दफनाए जाने से शाश्वत जीवन का भ्रम पैदा होता है। हालांकि, घने, भारी भौतिक ब्रह्मांड के प्रतीक 'अस्तित्व' के बिल्कुल विपरीत हैं। 'अस्तित्व' का कोई द्रव्यमान या समय नहीं होता। वस्तुएं हमेशा के लिए नहीं टिकतीं। 'अस्तित्व' शाश्वत है।

अर्थ: झूठे अर्थ सत्य के ज्ञान को रोकते हैं। पृथ्वी की पिरामिड संस्कृतियाँ एक मनगढ़ंत भ्रम हैं। वे "झूठी सभ्यताओं" से अधिक कुछ नहीं हैं।

"पुराने साम्राज्य" के रहस्यवादी पंथ, जिसे सर्प के भाई कहा जाता है, द्वारा रची गई यह कहानी, पृथ्वी की कैदखाने जैसी व्यवस्था में अंतरंग लोगों के बीच विस्मृति की प्रक्रिया को और मजबूत करने के लिए एक झूठे समाज का भ्रम पैदा करने हेतु झूठे अर्थों का आविष्कार की गई थी।

रहस्य झूठ और अधूरी सच्चाइयों से बनता है। झूठ इसलिए कायम रहता है क्योंकि वह सटीक तिथियों, स्थानों और घटनाओं से बने तथ्यों को बदल देता है। जब सच्चाई सामने आ जाती है, तो झूठ का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। यदि सटीक सच्चाई प्रकट हो जाए, तो वह रहस्य नहीं रह जाता।

पृथ्वी की सभी पिरामिड सभ्यताएँ झूठ की परत दर परत से सावधानीपूर्वक निर्मित थीं, जिन्हें कुछ सच्चाइयों के साथ कुशलतापूर्वक संयोजित किया गया था। "पुराने साम्राज्य" के पुजारी पंथ ने परिष्कृत गणित और अंतरिक्ष ओपेरा तकनीक को नाटकीय रूपकों के साथ जोड़ा था। प्रतीकात्मकता। ये सभी सत्य की पूर्णतः मनगढ़ंत कहानियाँ हैं, जिन्हें सौंदर्य और रहस्य के आकर्षण से पुष्ट किया गया है।

जटिल अनुष्ठान, खगोलीय संरेखण, गुप्त रस्में, विशाल स्मारक, अद्भुत वास्तुकला, कलात्मक रूप से उकेरे गए चित्रलिपि और मानव-पशु "देवताओं" की रचना पृथ्वी पर आईएस-बीई कैदियों के लिए एक अनसुलझा रहस्य पैदा करने के लिए की गई थी। यह रहस्य इस सच्चाई से ध्यान भटकाता है कि आईएस-बीई को पकड़ लिया गया है, उनकी स्मृति छीन ली गई है और उन्हें उनके घर से बहुत दूर एक ग्रह पर कैद कर दिया गया है।

सच्चाई यह है कि पृथ्वी पर मौजूद प्रत्येक प्राणी किसी अन्य ग्रह मंडल से आया है। पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति यहाँ का मूल निवासी नहीं है। मनुष्य का विकास पृथ्वी पर नहीं हुआ है।

अतीत में, मिस्र का समाज जेल प्रशासकों या पुजारियों द्वारा चलाया जाता था, जो बदले में फिरौन को अपने नियंत्रण में रखते थे, राजकोष पर नियंत्रण रखते थे और कैदियों को शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से गुलाम बनाकर रखते थे। आधुनिक समय में, पुजारी बदल गए हैं, लेकिन उनका कार्य वही है। हालांकि, अब पुजारी भी कैदी बन गए हैं।
रहस्य ही कारागार की दीवारों को सुदृढ़ करता है। "पुराने साम्राज्य" को डर था कि पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई अपनी स्मृति पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, "पुराने साम्राज्य" के पुरोहितों का एक प्रमुख कार्य पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई को यह याद रखने से रोकना है कि वे वास्तव में कौन हैं, वे पृथ्वी पर कैसे आए और वे कहाँ से आए हैं।
"पुराने साम्राज्य" के कारागार प्रणाली के संचालक और उनके वरिष्ठ अधिकारी नहीं चाहते कि आईएस-बीई को याद रहे कि किसने उनकी हत्या की, उन्हें बंदी बनाया, उनकी सारी संपत्ति चुरा ली, उन्हें पृथ्वी पर भेजा, उनकी स्मृतिलोप कर दी और उन्हें शाश्वत कारावास की सजा दी!
सोचिए क्या होगा अगर जेल में बंद सभी कैदियों को अचानक याद आ जाए कि उन्हें आज़ाद होने का अधिकार है! क्या होगा अगर उन्हें अचानक एहसास हो जाए कि उन्हें झूठे आरोप में कैद किया गया है और वे एकजुट होकर पहरेदारों के खिलाफ विद्रोह कर दें?
वे कैदियों के गृह ग्रहों की सभ्यता से मिलती-जुलती कोई भी चीज़ प्रकट करने से डरते हैं। एक शरीर, कपड़े का एक टुकड़ा, एक प्रतीक, एक अंतरिक्ष यान, एक उन्नत इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, या गृह ग्रह की सभ्यता का कोई भी अवशेष किसी प्राणी को "याद दिला सकता है" और उसकी स्मृति को पुनर्जीवित कर सकता है।
फंसाने और फंसाने की परिष्कृत प्रौद्योगिकियां
"पुराने साम्राज्य" में लाखों वर्षों में विकसित हुई दासता की प्रथाओं को पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई पर इस इरादे से लागू किया गया है कि जेल के लिए एक झूठा आवरण तैयार किया जा सके। ये आवरण पृथ्वी पर एक साथ, पूरी तरह से स्थापित किए गए थे। इनका प्रत्येक भाग जेल प्रणाली का एक पूर्णतः एकीकृत हिस्सा है।
इसमें अस्पष्ट और भ्रामक बातों से भरा धर्म शामिल है। प्रत्येक पिरामिड सभ्यता इसका उपयोग आबादी को बल, भय और अज्ञानता के द्वारा गुलाम बनाए रखने के लिए एक नियंत्रण

तंत्र के रूप में करती है। अप्रासंगिक जानकारी, ज्यामितीय डिजाइन, गणितीय गणना, खगोलीय संरेखण आदि का यह समझ से परे उलझा हुआ जाल है।

यह एक झूठी आध्यात्मिकता का हिस्सा है जो अमर आत्माओं के बजाय ठोस वस्तुओं पर आधारित है, ताकि पृथ्वी पर मौजूद अमर आत्माओं को भ्रमित और विचलित किया जा सके। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती थी, तो उसके शरीर को उसकी सांसारिक संपत्ति के साथ दफनाया जाता था, जिसमें उसके पूर्व शरीर को लिनेन में लपेटकर रखा जाता था, ताकि मृत्यु के बाद उसकी "आत्मा" या "का" का अस्तित्व बना रहे। एक सजीव (IS-BE) में आत्मा "नहीं होती"। एक सजीव (IS-BE) स्वयं एक आत्मा है।

एक आईएस-बीई के गृह ग्रह पर उनकी सामग्री

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हुई या उसने शरीर त्याग दिया, तो उसकी संपत्ति न तो खोई, न चोरी हुई और न ही भूली गई। एक मृत आत्मा (IS-BE) वापस आकर अपनी संपत्ति पर दावा कर सकती है। हालांकि, यदि मृत आत्मा (IS-BE) स्मृतिभ्रंश से ग्रसित है, तो उसे याद नहीं रहेगा कि उसके पास कोई संपत्ति थी। इसलिए, सरकारें, बीमा कंपनियां, बैंकर, परिवार के सदस्य और अन्य लालची लोग मृतक से प्रतिशोध के भय के बिना उसकी संपत्ति को पूरी तरह से हड़प सकते हैं। 137 (पाद टिप्पणी)

इन झूठे अर्थों का एकमात्र कारण यह धारणा पैदा करना है कि 'अस्तित्व' कोई आत्मा नहीं, बल्कि एक भौतिक वस्तु है! यह झूठ है। यह 'अस्तित्व' के लिए एक जाल है।

अनगिनत लोगों ने मिस्र और अन्य "प्राचीन साम्राज्य" सभ्यताओं की पहेली को सुलझाने में घंटों बिताए हैं। ये पहेलियाँ ऐसे टुकड़ों से बनी हैं जो आपस में मेल नहीं खाते। प्रश्न का उत्तर स्वयं ही स्पष्ट है। मिस्र और अन्य पिरामिड संस्कृतियों का रहस्य क्या है? रहस्य!

लगभग 15,000 ईसा पूर्व --

"पुराने साम्राज्य" की सेनाओं ने वर्तमान बोलीविया में टिटिकाका झील (टिन पत्थरों की झील) के पास टियाहुआनाको में एंडीज पर्वतमाला में एक हाइड्रोलिक खनन कार्य के निर्माण की देखरेख की।

138

(फुटनोट) जिसमें लगभग 14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित कलाससाया के नाम से जाने जाने वाले नक्काशीदार पत्थर की इमारतों के विशाल परिसर और इसके "सूर्य द्वार" का निर्माण शामिल है।

11,600 ईसा पूर्व --
पृथ्वी का ध्रुवीय अक्ष 139 (फुटनोट) एक समुद्री क्षेत्र की ओर खिसक गया। अंतिम हिमयुग अचानक समाप्त हो गया क्योंकि ध्रुवीय बर्फ की चोटियाँ पिघल गईं और समुद्र का स्तर इतना बढ़ गया कि पृथ्वी के भूभाग के बड़े हिस्से डूब गए। अटलांटिस और लेमुरिया के अंतिम अवशेष बचे थे।
87

पानी से ढका हुआ। ध्रुवों के खिसकने के कारण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और आर्कटिक क्षेत्रों में जानवरों की बड़े पैमाने पर विलुप्तियाँ हुईं।

10,450 ईसा पूर्व --

पुराने साम्राज्य के शासक थोथ ने गीज़ा के विशाल पिरामिड के निर्माण की योजना बनाई थी। पिरामिड के चार वायु द्वार गीज़ा से इस वर्ष देखे जाने पर पुराने साम्राज्य के प्रमुख तारों की ओर सटीक रूप से इंगित करते हैं। गीज़ा के पिरामिडों की ज़मीनी स्थिति, गीज़ा से आकाश में दिखाई देने वाले ओरियन तारामंडल की स्थिति से बिल्कुल मेल खाती है, जो नील नदी के सापेक्ष है, जिसे आकाश में आकाशगंगा का सांसारिक प्रतिनिधित्व माना जाता है।

140 (पाद टिप्पणी)

10,400 ईसा पूर्व --

पृथ्वी के इतिहासकार हेरोडोटस के अनुसार, अटलांटिस की नष्ट हो चुकी सभ्यता के अभिलेख, जिनमें इलेक्ट्रॉनिक तकनीक और उस सभ्यता की अन्य तकनीकें शामिल थीं, स्फिंक्स के पंजों के नीचे एक तिजोरी में दफन थे। यूनानी इतिहासकार ने लिखा कि उन्हें यह बात उनके कुछ मित्रों ने बताई थी, जो मिस्र के हेलियोपोलिस शहर में सुमेरियन देवता अनु के पुजारी थे। हालांकि, यह अत्यंत असंभव है कि किसी इलेक्ट्रॉनिक सभ्यता के किसी भी अवशेष को "पुराने साम्राज्य" की जेल प्रणाली के प्रशासकों द्वारा पृथ्वी पर अक्षुण्ण रहने दिया गया हो। 141 (पाद टिप्पणी)।

8,212 ईसा पूर्व --

वेद या वैदिक भजन धार्मिक भजनों का एक संग्रह है जो पृथ्वी के समाजों में प्रचलित हुआ। ये भजन मौखिक परंपरा के रूप में, याद किए जाने के द्वारा, पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते रहे। "भोर के बालक का भजन" में "भौतिक ब्रह्मांड का चक्र" नामक एक अवधारणा शामिल है: किसी स्थान में ऊर्जा और पदार्थ का सृजन, विकास, संरक्षण, क्षय और मृत्यु या विनाश। ये चक्र समय का निर्माण करते हैं। भजनों का यही संग्रह "विकास के सिद्धांत" का वर्णन करता है। यहाँ एक

यह ज्ञान का एक विशाल भंडार है जिसमें आध्यात्मिक सत्य का एक बड़ा हिस्सा समाहित है। दुर्भाग्य से, यह

मनुष्यों द्वारा गलत तरीके से मूल्यांकन किया गया और पुजारियों द्वारा झूठ और तथ्यों के उलटफेर से बदल दिया गया, जो एक जाल है ताकि कोई भी उस ज्ञान का उपयोग करके जेल ग्रह से बचने का रास्ता न खोज सके।

88

8050 ईसा पूर्व --
इस आकाशगंगा में स्थित "पुराने साम्राज्य" के गृह ग्रह की सरकार का विनाश हो गया। यह आकाशगंगा में एक राजनीतिक इकाई के रूप में "पुराने साम्राज्य" का अंत था। हालांकि, "पुराने साम्राज्य" के विशाल आकार को पूरी तरह से जीतने में द डोमेन को कई हज़ार साल लगेंगे। "पुराने साम्राज्य" की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रणालियों की जड़ता कुछ समय तक बनी रहेगी।
हालांकि, पृथ्वी के सौर मंडल में "पुराने साम्राज्य" के अंतरिक्ष बेड़े के अवशेष अंततः 1230 ईस्वी में नष्ट हो गए। पृथ्वी पर कारागार चलाने वाले "पुराने साम्राज्य" के गुर्गों के अलावा, "पुराने साम्राज्य" के कुछ अन्य प्राणी भी पृथ्वी पर आए थे। डोमेन बलों द्वारा पराजय के बाद पृथ्वी "पुराने साम्राज्य" के नियंत्रण से मुक्त हो गई थी, इसलिए सैन्य विद्रोहियों, अंतरिक्ष लुटेरों, खनिकों, व्यापारियों और उद्यमियों को नियंत्रित करने के लिए कोई पुलिस बल नहीं था, जो व्यक्तिगत लाभ के लिए ग्रह के संसाधनों का दोहन करने और कई अन्य कुटिल कारणों से पृथ्वी पर आए थे।
उदाहरण के लिए, यहूदी लोगों के अनुसार, पृथ्वी के इतिहास में "नेफिलिम" का वर्णन मिलता है।
142 (पाद टिप्पणी)
उत्पत्ति ग्रंथ के अध्याय 6 में "नेफिलिम" की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है:
"जब मनुष्य पृथ्वी पर बढ़ने लगे और उनके पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं, तब परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि मनुष्यों की पुत्रियाँ सुंदर हैं; और उन्होंने अपनी पसंद की किसी भी स्त्री से विवाह कर लिया।" उन दिनों और उसके बाद भी, जब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों से संबंध स्थापित किए और उनसे संतान उत्पन्न की, तब नफिलिम पृथ्वी पर थे। वे प्राचीन काल के बलवान पुरुष और प्रसिद्ध पुरुष थे।
प्राचीन यहूदी लोग, जिन्होंने ओल्ड टेस्टामेंट नामक इतिहास की पुस्तक लिखी, गुलाम, चरवाहे और संग्राहक थे। कोई भी आधुनिक तकनीक, यहाँ तक कि एक साधारण टॉर्च भी, उनके लिए आश्चर्यजनक और चमत्कारिक प्रतीत होती थी। वे किसी भी अस्पष्ट घटना या तकनीक को किसी "ईश्वर" के कार्य से जोड़ते थे। दुर्भाग्य से, यह व्यवहार उन सभी IS-BEs में

सार्वभौमिक है जिन्हें स्मृतिलोप दिया गया है और जो अपने स्वयं के इतिहास को याद नहीं कर सकते।

अनुभव, प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी, व्यक्तित्व या पहचान।
स्पष्टतः, यदि ये पुरुष थे और उन्होंने पृथ्वी की महिलाओं के साथ संबंध बनाए, तो वे "ईश्वर के पुत्र" नहीं थे। वे ऐसे आईएस-बीई थे जिन्होंने "पुराने साम्राज्य" की राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाने के लिए या मात्र शारीरिक सुख भोगने के लिए जैविक शरीर धारण किए थे। उन्होंने पुलिस और कर अधिकारियों की पहुँच से दूर पृथ्वी पर अपनी छोटी-छोटी बस्तियाँ स्थापित कर ली थीं।
संयोगवश, "पुराने साम्राज्य" में एक IS-BE द्वारा किए जाने वाले सबसे गंभीर अपराधों में से एक आयकर नियमों का उल्लंघन था। "पुराने साम्राज्य" में आयकर का उपयोग गुलामी के तंत्र और दंड के रूप में किया जाता था। कर रिपोर्ट में मामूली सी भी गलती एक IS-BE को दोषी बना देती थी।
"अछूत", जिसके बाद पृथ्वी पर कारावास की सजा।
6750 ईसा पूर्व --
पृथ्वी पर "पुराने साम्राज्य" द्वारा अन्य पिरामिड सभ्यताओं की स्थापना की गई थी। ये सभ्यताएँ बेबीलोन, मिस्र, चीन और मेसोअमेरिका में स्थापित की गई थीं। मेसोपोटामिया क्षेत्र ने इन कृत्रिम सभ्यताओं के लिए सेवा सुविधाएँ, संचार केंद्र, अंतरिक्ष बंदरगाह और पत्थर की खदानें उपलब्ध कराईं।
पाह उस शासक का नाम था जो "पुराने साम्राज्य" के प्रशासकों की श्रृंखला में पहला था और जिसने पृथ्वी की आबादी के सामने खुद को "दिव्य" शासक के रूप में प्रस्तुत किया था।
पाह के महत्व को तब समझा जा सकता है जब यह पता चलता है कि "मिस्र" शब्द ग्रीक भाषा के "हेट-का-पाह" या "पाह की आत्मा का घर" वाक्यांश का बिगड़ा हुआ रूप है। पाह को "विकासकर्ता" उपनाम से जाना जाता था। वह एक निर्माण अभियंता थे। उनके प्रधान पुरोहित को 'कारीगरों का महान नेता' की उपाधि दी गई थी।
मिस्र में प्तह पुनर्जन्म के देवता भी थे। उन्होंने "मुख खोलने की रस्म" की शुरुआत की, जिसे पुरोहित अंत्येष्टि के दौरान शवों से "आत्माओं को मुक्त करने" के लिए करते थे। हालांकि, जब "आत्माएं" मुक्त होती थीं, तो उन्हें पकड़ लिया जाता था, उनकी स्मृति मिटा दी जाती थी और वे फिर से पृथ्वी पर लौट आती थीं।

पृथ्वी पर प्तह का अनुसरण करने वाले तथाकथित "दिव्य" शासकों को "एनटीआर" कहा जाता था, जिसका अर्थ है "संरक्षक या पहरेदार"।

मिस्रवासियों का प्रतीक सर्प या ड्रैगन था, जो "पुराने साम्राज्य" के एक गुप्त पुरोहित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था जिसे "सर्प के भाई" कहा जाता था।
"पुराने साम्राज्य" के इंजीनियरों ने पत्थर के ब्लॉकों को तेजी से तराशने और खोदने के लिए अत्यधिक केंद्रित प्रकाश तरंगों के काटने वाले औजारों का इस्तेमाल किया। 143 (पाद टिप्पणी) उन्होंने सैकड़ों या हजारों टन वजनी पत्थर के ब्लॉकों को उठाने और परिवहन करने के लिए बल क्षेत्रों और अंतरिक्ष यानों का भी इस्तेमाल किया।
इन संरचनाओं में से कुछ की जमीन पर स्थिति का इस आकाशगंगा क्षेत्र में विभिन्न तारों के सापेक्ष भू-भौगोलिक या खगोलीय महत्व पाया जाएगा।
अधिकांश ग्रहों पर भवन निर्माण मानकों की तुलना में ये इमारतें भद्दी और अव्यवहारिक हैं। डोमेन के एक इंजीनियर के रूप में, मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूँ कि डोमेन के किसी ग्रह पर इस तरह की अस्थायी संरचनाएँ निरीक्षण में कभी पास नहीं होंगी। पिरामिड सभ्यताओं में इस्तेमाल किए गए पत्थर के ब्लॉक, जैसे कि वे ब्लॉक, मध्य पूर्व की पत्थर की खदानों में आंशिक रूप से खोदे हुए देखे जा सकते हैं।
144
(पाद टिप्पणी) और अन्यत्र।
अधिकांश संरचनाएँ जल्दबाजी में बनाई गई "प्रॉप्स" थीं, ठीक वैसे ही जैसे किसी फिल्म के सेट पर पश्चिमी शहरों के नकली मुखौटे होते हैं। वे देखने में वास्तविक और उपयोगी प्रतीत होती हैं, लेकिन वास्तव में उनका कोई मूल्य नहीं है। उनका कोई उपयोगी उद्देश्य नहीं है। पिरामिड और "पुराने साम्राज्य" द्वारा निर्मित अन्य सभी पत्थर के स्मारकों को "रहस्यमयी स्मारक" कहा जा सकता है। आखिर कोई इतने सारे संसाधनों को बर्बाद करके इतनी सारी बेकार इमारतें क्यों बनाएगा? केवल एक रहस्यमय भ्रम पैदा करने के लिए।
असल बात यह है कि वे सभी "दिव्य शासक" आईएस-बीई थे जो "पुराने साम्राज्य" के अंग के रूप में कार्य करते थे। वे निश्चित रूप से "दिव्य" नहीं थे, हालांकि वे आईएस-बीई थे।
6248 ईसा पूर्व --

डोमेन स्पेस कमांड और इस सौर मंडल में बचे हुए "पुराने साम्राज्य" के अंतरिक्ष बेड़े के बीच सक्रिय युद्ध की शुरुआत हुई, जो लगभग 7,500 वर्षों तक चला। इसकी शुरुआत तब हुई जब एक सैन्य प्रतिष्ठान को नष्ट कर दिया गया।
डोमेन एक्सपेडिशनरी फोर्स के 3,000 अधिकारियों और दल के सदस्यों की एक बटालियन द्वारा हिमालय पर्वत में स्थापित यह प्रतिष्ठान किलेबंद नहीं था।

क्योंकि डोमेन को इस बात की जानकारी नहीं थी कि "पुराना साम्राज्य" पृथ्वी को एक बंदीगृह के रूप में रखता था।
डोमेन प्रतिष्ठान पर पृथ्वी के सौर मंडल में सक्रिय "पुराने साम्राज्य" की अंतरिक्ष सेनाओं ने हमला कर उसे नष्ट कर दिया। डोमेन बटालियन के आईएस-बीई सैनिकों को पकड़ लिया गया, मंगल ग्रह पर ले जाया गया, उनकी स्मृतिभ्रंश कर दी गई और फिर उन्हें मानव शरीर में प्रवेश करने के लिए पृथ्वी पर वापस भेज दिया गया। वे अभी भी पृथ्वी पर मौजूद हैं।
5965 ईसा पूर्व --
इस सौर मंडल में डोमेन बलों के गायब होने की जांच से मंगल ग्रह और अन्य जगहों पर "पुराने साम्राज्य" के ठिकानों का पता चला। डोमेन ने शुक्र ग्रह पर कब्जा कर लिया।
145
(फुटनोट) "पुराने साम्राज्य" की अंतरिक्ष सेनाओं के विरुद्ध रक्षात्मक स्थिति के रूप में।
डोमेन अभियान बल शुक्र ग्रह पर जीवन रूपों की निगरानी भी करता है, जिसका वातावरण सल्फ्यूरिक एसिड के बादलों से बना है, जो बहुत घना, गर्म और भारी है। पृथ्वी पर कुछ ही जीवन रूप ऐसे हैं जो शुक्र जैसे वायुमंडलीय वातावरण को सहन कर सकते हैं। 146 (फुटनोट)
डोमेन ने पृथ्वी के सौर मंडल में गुप्त प्रतिष्ठान या अंतरिक्ष स्टेशन भी स्थापित किए थे। इस सौर मंडल में एक टूटा हुआ ग्रह है - क्षुद्रग्रह पेटी। 147 (फुटनोट) यह अंतरिक्ष यानों के उड़ान भरने और उतरने के लिए एक बहुत ही उपयोगी कम गुरुत्वाकर्षण वाला मंच प्रदान करता है। इसका उपयोग मिल्की वे और उससे सटी आकाशगंगाओं के बीच "आकाशगंगा छलांग" के रूप में किया जाता है। आकाशगंगा के इस छोर पर कोई भी ऐसा ग्रह नहीं है जो आने वाले परिवहन यान और अन्य जहाजों के लिए एक अच्छा आकाशगंगा प्रवेश बिंदु बन सके। लेकिन यह टूटा हुआ ग्रह एक आदर्श अंतरिक्ष स्टेशन बनाता है। "पुराने साम्राज्य" के विरुद्ध हमारे युद्ध के परिणामस्वरूप, सौर मंडल का यह क्षेत्र अब डोमेन की एक मूल्यवान संपत्ति है।
3450 - 3100 ईसा पूर्व --

पृथ्वी के मामलों में "पुराने साम्राज्य" के प्रतिनिधियों या "दिव्य देवताओं" के हस्तक्षेप को इस समय डोमेन बलों द्वारा बाधित कर दिया गया था। उन्हें मानव शासकों से प्रतिस्थापित होने के लिए मजबूर होना पड़ा। ऊपरी और निचले मिस्र को एकजुट करने वाले मानव फ़राओ के पहले राजवंश का प्रारंभ एक ऐसे फ़राओ के शासनकाल से हुआ, जिसका नाम संयोगवश "मेन" था। उन्होंने मिस्र में मेन-नेफ़र नामक राजधानी शहर की स्थापना की, जिसका अर्थ है "पुरुषों की सुंदरता"।

दस मानव फराओओं का पहला उत्तराधिकार और उसके बाद 350 वर्षों की अराजकता का दौर।
"पुराने साम्राज्य" के प्रशासनिक पद।
3200 ईसा पूर्व --
जैसा कि मैंने पहले बताया, इस दौरान पृथ्वी पर द डोमेन और "पुराने साम्राज्य" की सेनाओं का हमला चल रहा था। बेशक, पृथ्वी पर मौजूद पुरातत्वविदों या इतिहासकारों को यह बात समझ में नहीं आती, क्योंकि मिस्र का काल अंतरिक्ष-कथाओं पर आधारित एक युग है। पृथ्वी के इतिहासकारों को भूलने की बीमारी है, इसलिए वे इसे केवल एक धार्मिक काल मानते हैं। इसके अलावा, क्योंकि इस अवधि के दौरान पृथ्वी पर स्थापित प्रौद्योगिकी और सभ्यताएँ "पूर्व-“पैकेज्ड” होने के कारण, वे पृथ्वी पर “विकसित” नहीं हुए। बेशक, पृथ्वी पर कहीं भी इसका कोई सबूत नहीं है।
यह एक ऐसा विकासवादी परिवर्तन था जिसके परिणामस्वरूप मिस्र या किसी भी पिरामिड सभ्यता में परिष्कृत गणित, भाषा, लेखन, धर्म, वास्तुकला और सांस्कृतिक परंपराओं का विकास हुआ। ये संस्कृतियाँ, जिनमें नस्लीय शारीरिक बनावट, केशविन्यास, चेहरे की सजावट, अनुष्ठान, नैतिक संहिताएँ आदि सभी विवरण शामिल थे, पूर्ण एकीकृत पैकेज के रूप में "प्रकट" हुईं।
भौतिक साक्ष्य बताते हैं कि डोमेन या "पुराने साम्राज्य" बलों या किसी भी अन्य अलौकिक गतिविधि के हस्तक्षेप के सभी सबूतों को सावधानीपूर्वक "मिटा दिया गया" है, ताकि कोई संदेह पैदा न हो। "पुराने साम्राज्य" बल नहीं चाहते कि पृथ्वी के आईएस-बीई को यह संदेह हो कि उन्हें पकड़कर पृथ्वी पर लाया गया है और उनका मस्तिष्क परिवर्तन किया गया है। इसलिए, पृथ्वी के इतिहासकार यह मानते रहते हैं कि मिस्र के पुजारियों के पास "रे गन" या "पुराने साम्राज्य" की अन्य तकनीक नहीं थी। और वे यह भी मानते हैं कि पृथ्वी पर कुछ भी नहीं हो रहा था, सिवाय कुछ पुजारियों के इधर-उधर घूमते हुए 'आमीन' कहने के, जो ईसाई आज भी कहते हैं।
3,172 ईसा पूर्व --

एंडीज पर्वतमाला में स्थित प्रमुख खनन स्थलों और 'देवताओं' के खगोलीय भवनों, जैसे कि तियाहुआनाको, को जोड़ने वाले खगोलीय ग्रिड की रूपरेखा।

148

(फुटनोट) कुज़्को, क्विटो, ओलान्टायटाम्बो के शहर,

149

(फुटनोट) माचुपिच्चू

150

(पाद टिप्पणी) और पचकामाक
151
(फुटनोट) दुर्लभ धातुओं के खनन के लिए, जिनमें कांसा बनाने में उपयोग होने वाला टिन भी शामिल है। धातुएँ, ज़ाहिर है, "देवताओं" की संपत्ति थीं।
उस समय "पुराने साम्राज्य" और "डोमेन" के बीच युद्ध के कारण पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के उद्यमशील खनन कार्य किए गए। इन खनिकों ने अपनी कुछ मूर्तियाँ भी बनाईं। उन्हें खनन हेलमेट पहने देखा जा सकता है। कलाससाया मंदिर के धँसे हुए प्रांगण में स्थित पोंस स्टेला की मूर्ति एक पत्थर के कारीगर का कच्चा चित्रण है, जो इलेक्ट्रॉनिक, प्रकाश-तरंग उत्सर्जित करने वाले पत्थर काटने वाले यंत्र और कमरबंद में रखे नक्काशी के औजारों का उपयोग कर रहा है।
152
(पाद लेख)
"पुराने साम्राज्य" ने आकाशगंगा के विभिन्न ग्रहों पर बहुत लंबे समय से खनन कार्य जारी रखा है। पृथ्वी के खनिज संसाधन अब द डोमेन की संपत्ति हैं।
2450 ईसा पूर्व --
काहिरा के पास स्थित "महान" पिरामिड 153 (फुटनोट) और पिरामिडों का परिसर पूरा हो गया था। तथाकथित पिरामिड ग्रंथों में "पुराने साम्राज्य" के प्रशासकों द्वारा निर्मित एक शिलालेख देखा जा सकता है। 154 (फुटनोट) इन ग्रंथों में कहा गया है कि पिरामिड का निर्माण प्टाह के पुत्र थोथ के निर्देशन में किया गया था। बेशक, इस कक्ष में कभी किसी राजा को दफनाया नहीं गया था, क्योंकि पिरामिडों का उपयोग कभी भी दफन कक्ष के रूप में करने का इरादा नहीं था।
अंतरिक्ष से देखने पर, महान पिरामिड पृथ्वी के सभी भूभागों के ठीक केंद्र में स्थित था (पाद टिप्पणी)। स्पष्टतः, इस प्रकार के सटीक मापन के लिए हवाई परिप्रेक्ष्य और अंतरिक्ष से पृथ्वी के भूभागों का दृश्य आवश्यक है। अन्यथा पृथ्वी के महाद्वीपों के भू-माप केंद्र की विशुद्ध गणितीय गणनाएँ संभव नहीं थीं।

पिरामिड के अंदर शाफ्ट का निर्माण ओरियन, कैनस मेजोरा और विशेष रूप से सीरियस तारामंडल में तारों की स्थिति के अनुरूप किया गया था। ये शाफ्ट बिग डिपर के अनुरूप भी हैं, जहाँ "पुराने साम्राज्य" का मूल ग्रह स्थित था। इसके अलावा, ऐनिटाक, अल्फा ड्रेकोनिस और बीटा उरसा माइनर भी इसी श्रेणी में आते हैं। 156 (फुटनोट) ये तारे "पुराने साम्राज्य" के प्रमुख प्रणालियों में से एक हैं, जहाँ से आईएस-बीई को पृथ्वी पर लाया गया और अवांछित माल के रूप में फेंक दिया गया।

गीज़ा पठार के सभी पिरामिडों की संरचना इस प्रकार की गई थी कि वे पृथ्वी पर सौर मंडल और "पुराने साम्राज्य" के भीतर कुछ नक्षत्रों की "दर्पण छवि" बना सकें।

2,181 ईसा पूर्व --

मिन, मिस्र के उर्वरता देवता बन गए। इस्बे, जिन्हें पैन के नाम से भी जाना जाता है, एक यूनानी देवता थे। मिन या पैन, एक इस्बे थे जो किसी तरह "पुराने साम्राज्य" की विस्मृति प्रणाली से बच निकलने में कामयाब रहे।

157

(पाद लेख)

2160 - 2040 ईसा पूर्व --

डोमेन फोर्सेस और "पुराने साम्राज्य" की सेनाओं के बीच बढ़ते युद्ध का एक परिणाम यह हुआ कि इस समय "दिव्य शासकों" का नियंत्रण टूट गया। अंततः वे मिस्र छोड़कर, एक तरह से, पराजित होकर "स्वर्ग" लौट गए। मनुष्यों ने फराओ के रूप में शासन संभाला। पहले मानव फराओ ने मिस्र की राजधानी को मेम्फिस से हेराक्लियोपोलिस स्थानांतरित किया।

158

(पाद लेख)

1500 ईसा पूर्व --

यह वह तिथि है जो मिस्र के महायाजकों, हेलियोपोलिस के प्सेनोफिस और साइज़ के सोनचिस ने यूनानी ऋषि सोलोन को अटलांटिस के विनाश के लिए दी थी। 159 (पाद टिप्पणी) अनु के पुजारियों ने दर्ज किया कि लगभग इसी समय भूमध्यसागरीय क्षेत्र पर "अटलांटियन" लोगों ने आक्रमण किया था। बेशक, ये लोग अटलांटिक महासागर में स्थित प्राचीन महाद्वीप अटलांटा से नहीं थे, जो 70,000 वर्ष से भी अधिक समय पहले अस्तित्व में था।

ये क्रेते द्वीप पर स्थित मिनोअन सभ्यता के शरणार्थी थे जो माउंट थेरा के ज्वालामुखी विस्फोट और सुनामी लहरों से बचकर भाग रहे थे, जिसने उनकी सभ्यता को नष्ट कर दिया था।

प्लेटो के अटलांटिस संबंधी संदर्भ यूनानी दार्शनिक सोलोन के लेखन से लिए गए थे, जिन्हें यह जानकारी मिस्र के पुजारी ने दी थी, जिन्होंने अटलांटिस को "केपचू" कहा था, जो कि क्रीट के

लोगों का मिस्री नाम भी है। मिनोअन ज्वालामुखी आपदा से बचे कुछ लोगों ने मिस्र से मदद मांगी, क्योंकि उस समय भूमध्यसागरीय क्षेत्र में उच्च संस्कृति वाली एकमात्र सभ्यता मिस्र ही थी।

160

(पाद लेख)

95

1351 ईसा पूर्व - 1337 ईसा पूर्व --
डोमेन अभियान बल ने मिस्र के रहस्यवादी पंथ, जिसे अमून के पुजारी या "पुराने साम्राज्य" के सर्प भाइयों के नाम से भी जाना जाता था, के विरुद्ध धार्मिक विजय का युद्ध सक्रिय रूप से छेड़ा। इसी दौरान फ़राओ अखेनातेन ने अमून के पुरोहित वर्ग को समाप्त कर दिया और मिस्र की राजधानी को थेब्स से हटाकर मिस्र के भौगोलिक केंद्र में स्थित अमरना में स्थानांतरित कर दिया।
161
(फुटनोट)। हालाँकि, "पुराने साम्राज्य" के धार्मिक नियंत्रण को उखाड़ फेंकने की यह साजिश जल्द ही नाकाम हो गई।
1193 ईसा पूर्व --
निकट पूर्व और अचिया में, यूनानियों और ट्रोजनों ने वर्चस्व के लिए लड़ाई लड़ी, जिसका अंत ट्रोजन युद्ध के समापन के रूप में ट्रॉय के विनाश में हुआ।
162
(फुटनोट) इसी दौरान, पृथ्वी के चारों ओर स्थित "अंतरिक्ष स्टेशनों" पर नियंत्रण के लिए सौर मंडल के अंतरिक्ष में दो शक्तियों के बीच युद्ध चल रहा था। 300 वर्षों की वह अवधि "पुराने साम्राज्य" की बची हुई सेनाओं द्वारा डोमेन बलों के विरुद्ध एक अत्यंत हिंसक प्रतिरोध का समय था। हालाँकि, यह प्रतिरोध अधिक समय तक नहीं चला, क्योंकि डोमेन का प्रतिरोध करना व्यर्थ है।
850 ईसा पूर्व --
होमर, एक नेत्रहीन यूनानी कवि,
163
(फुटनोट) ने वैदिक ग्रंथों, सुमेरियन ग्रंथों, बेबीलोनियन और मिस्र की पौराणिक कथाओं के पुराने स्रोतों से उधार लेकर और संशोधित करके 'देवताओं' की कहानियाँ लिखीं। उनकी कविताएँ, साथ ही प्राचीन दुनिया के कई अन्य "मिथक", पृथ्वी पर उन IS-BE के कारनामों का बहुत सटीक वर्णन हैं जो "पुराने साम्राज्य के विस्मृति अभियान" से बचकर जैविक शरीर के बिना कार्य करने में सक्षम थे।

700 ईसा पूर्व --

वैदिक भजनों का सर्वप्रथम अनुवाद ग्रीक भाषा में किया गया था। यह पश्चिमी सभ्यता में एक सांस्कृतिक क्रांति की शुरुआत थी जिसने असभ्य और क्रूर जनजातीय संस्कृतियों को अधिक तर्कसंगत आचरण पर आधारित लोकतांत्रिक गणराज्यों में परिवर्तित कर दिया।

638 - 559 ईसा पूर्व --

ग्रीस के एक बुद्धिमान व्यक्ति सोलोन ने अटलांटिस के अस्तित्व की जानकारी दी। यह जानकारी उन्हें एक अन्य स्रोत से प्राप्त हुई थी।

"पुराने साम्राज्य" के उच्च पुरोहित, हेलियोपोलिस के प्सेनोफिस और साइज के सोनचिस, जिनके साथ उन्होंने मिस्र में अध्ययन किया था।

164

(पाद लेख)

630 ईसा पूर्व --

जोरास्टर

165

(फुटनोट) ने अहूरा मज़्दा नामक एक आईएस-बीई के इर्द-गिर्द फारस में धार्मिक प्रथाओं का निर्माण किया।

166

(फुटनोट) यह "एकेश्वरवादी" देवताओं की बढ़ती संख्या में से एक और देवता था जिसे "पुराने साम्राज्य" के देवताओं की एक पूरी श्रृंखला को विस्थापित करने के लिए द डोमेन के संचालकों द्वारा स्थापित किया गया था।

604 ईसा पूर्व --

लाओत्ज़ी, जिन्होंने "द वे" नामक एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी (पाद टिप्पणी), एक महान बुद्धिमान व्यक्ति थे, जिन्होंने "पुराने साम्राज्य" की स्मृतिलोप/सम्मोहन प्रणाली के प्रभावों को पार कर पृथ्वी से पलायन किया था। ऐसा करने के लिए उन्हें एक व्यक्ति के स्वरूप की गहरी समझ रही होगी।

प्रचलित कथा के अनुसार, मनुष्य के रूप में उनका अंतिम जीवन चीन के एक छोटे से गाँव में बीता। उन्होंने अपने जीवन के सार पर चिंतन किया। गौतम सिद्धार्थ की तरह, उन्होंने अपने विचारों और पिछले जन्मों का सामना किया। ऐसा करने से, उन्होंने अपनी कुछ स्मृति, क्षमता और अमरता को पुनः प्राप्त कर लिया।

वृद्धावस्था में उन्होंने शरीर त्यागने के लिए गाँव छोड़कर जंगल जाने का निश्चय किया। गाँव के द्वारपाल ने उन्हें रोक लिया और जाने से पहले उनसे अपने व्यक्तिगत दर्शन को लिख लेने का अनुरोध किया। यहाँ उन्होंने अपने आत्म-दर्शन को पुनः प्राप्त करने के अपने तरीके के बारे में एक छोटा सा सुझाव दिया है:

जो देखेगा उसे यह दिखाई नहीं देगा;
जो सुनेगा उसे यह बात समझ नहीं आएगी;
जो टटोलता रहेगा, उसे वह नहीं मिलेगा।
निराकार, शून्यता, गति का स्थिर स्रोत। आत्मा का अनंत सार ही जीवन का स्रोत है।
आत्मा ही स्वयं है।
दीवारें कमरे का निर्माण और उसे सहारा प्रदान करती हैं।
लेकिन उनके बीच की दूरी सबसे महत्वपूर्ण है।
मिट्टी से बना एक बर्तन।
फिर भी उसमें निर्मित स्थान अत्यंत उपयोगी होता है।
क्रिया किसी वस्तु पर किसी बल के न होने के कारण उत्पन्न होती है।

जिस प्रकार आत्मा का शून्यत्व ही समस्त रूप का स्रोत है।
शरीर होने के कारण ही मनुष्य को बड़े कष्ट सहने पड़ते हैं। शरीर के बिना मनुष्य को कौन-कौन से कष्ट सहने पड़ सकते हैं? जब मनुष्य अपने शरीर की चिंता अपनी आत्मा से अधिक करता है,
व्यक्ति शरीर में लीन हो जाता है और आत्मा का मार्ग खो देता है।
स्वयं, आत्मा, भ्रम उत्पन्न करती है।
मनुष्य का भ्रम यह है कि वास्तविकता माया नहीं है। जो व्यक्ति माया का सृजन करता है और उसे वास्तविकता से अधिक वास्तविक बना देता है, वही आत्मा के मार्ग पर चलता है और स्वर्ग का मार्ग पाता है।
593 ईसा पूर्व --
यहूदी धर्मग्रंथ में लिखी गई उत्पत्ति की कहानी में "देवदूतों" या "ईश्वर के पुत्रों" का पृथ्वी की महिलाओं के साथ यौन संबंध बनाने और उनसे संतान उत्पन्न करने का वर्णन है। ये संभवतः "पुराने साम्राज्य" से भागे हुए लोग थे। ये अंतरिक्ष लुटेरे या आकाशगंगा के बाहर के किसी ग्रह से आए व्यापारी भी हो सकते हैं जो खनिज संसाधन चुराने या मादक पदार्थों की तस्करी करने आए थे।
इस क्षेत्र ने देखा है कि पड़ोसी ग्रहों और आकाशगंगाओं से पृथ्वी पर कई आगंतुक आते हैं, लेकिन वे शायद ही कभी यहाँ रुकते और रहते हैं। अगर उन्हें मजबूर न किया जाए तो किस प्रकार के प्राणी किसी बंदी ग्रह पर रहना चाहेंगे?
इसी पुस्तक में इजेकील नामक एक व्यक्ति की कहानी भी वर्णित है, जिसने चाल्डिया में चेबार नदी के पास एक अंतरिक्ष यान या विमान को उतरते देखा था। उसने उस यान का वर्णन तकनीकी रूप से काफी पुरातन भाषा में किया है, लेकिन फिर भी यह "पुराने साम्राज्य" के तश्तरी या जासूसी यान का काफी सटीक वर्णन है। यह हिमालय की तलहटी में रहने वाले लोगों द्वारा "विमानों" को देखे जाने की घटना के समान है।
उनकी उत्पत्ति की कहानी में यह भी उल्लेख है कि "यहोवा" ने पृथ्वी पर जैविक शरीरों को 120 वर्षों तक जीवित रहने के लिए बनाया था। अधिकांश "सूर्य प्रकार 12, वर्ग 7" ग्रहों पर जैविक शरीर आमतौर पर औसतन लगभग 150 वर्षों तक जीवित रहने के लिए निर्मित होते

हैं। पृथ्वी पर मानव शरीर केवल लगभग आधे समय तक ही जीवित रहते हैं। हमें संदेह है कि इसका कारण यह है कि जेल प्रशासकों ने पृथ्वी पर मानव शरीरों की जैविक सामग्री को इस तरह से बदल दिया है कि वे अधिक बार मरें ताकि

इनमें निवास करने वाले आईएस-बीई स्मृतिलोप तंत्र के माध्यम से अधिक बार पुनर्चक्रित होंगे। 168 (पाद टिप्पणी)
यह ध्यान देने योग्य है कि "पुराने नियम" का अधिकांश भाग बेबीलोन में गुलाम बनाए गए यहूदियों की कैद के दौरान लिखा गया था, जिस पर "पुराने साम्राज्य" के पुजारियों का कड़ा नियंत्रण था। यह पुस्तक समय की गलत धारणा और सृष्टि की उत्पत्ति की गलत अवधारणा प्रस्तुत करती है।
सर्प "पुराने साम्राज्य" का प्रतीक है। यह उनकी सृष्टि कथा की शुरुआत में प्रकट होता है, जिसे यूनानी "उत्पत्ति" कहते हैं, और पहले मनुष्यों के आध्यात्मिक विनाश का कारण बनता है। आदम और हव्वा द्वारा प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है।
ओल्ड टेस्टामेंट, जो स्पष्ट रूप से "पुराने साम्राज्य" की शक्तियों से प्रभावित है, पृथ्वी पर जैविक शरीरों में आईएस-बीई को प्रेरित किए जाने का विस्तृत वर्णन देता है। यह पुस्तक "पुराने साम्राज्य" के कई पहलुओं का भी वर्णन करती है।
मस्तिष्क-प्रलोभन की गतिविधियों में झूठी यादें, झूठ, अंधविश्वास, "भूल जाने" के आदेश और हर तरह की चालें और जाल शामिल हैं, जिनका उद्देश्य मनुष्यों को पृथ्वी पर रोके रखना है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह इस जागरूकता को नष्ट कर देता है कि मनुष्य अमर आध्यात्मिक प्राणी हैं।
580 ईसा पूर्व --
डेल्फ़ी का ओरेकल मंदिर कई ओरेकल मंदिरों के जाल में से एक था। प्रत्येक मंदिर एक संचार केंद्र था। "पुराने साम्राज्य" के पुजारियों ने प्रत्येक मंदिर के लिए एक स्थानीय "देवता" नियुक्त किया था। इस जाल के प्रत्येक मंदिर राजधानी थेब्स से ठीक 5 डिग्री अक्षांश के अंतराल पर स्थित थे।
भूमध्यसागरीय क्षेत्र उत्तर में बाल्टिक सागर तक फैला हुआ है।
अन्य बातों के अलावा, ये मंदिर एक ग्रिड के रूप में कार्य करते थे, जिनमें इलेक्ट्रॉनिक बीकन लगे होते थे, जिन्हें बाद में "ओम्फालस स्टोन" कहा गया।
169

(फुटनोट) ऑरेकल स्थलों की ग्रिड व्यवस्था पृथ्वी से कई मील ऊपर से ही देखी जा सकती है। पुरोहित वर्ग के बिखरने पर इलेक्ट्रॉनिक संचार बीकनों का मूल नेटवर्क निष्क्रिय हो गया था और उसके स्थान पर नक्काशीदार पत्थरों का उपयोग किया गया था।
"पुराने साम्राज्य" के पुरोहितों का प्रतीक अजगर, ड्रैगन या सर्प है। इसे "पृथ्वी-ड्रैगन" कहा जाता था।

डेल्फी, जिसे मूर्तिकला और फूलदानों पर चित्रित करते समय हमेशा एक सर्प के रूप में दर्शाया जाता है।
ग्रीक पौराणिक कथाओं में, डेल्फी के मंदिर में स्थित ओम्फालस पत्थर का संरक्षक एक भविष्यवक्ता था जिसका नाम पायथन था, यानी सर्प।
170
(फुटनोट) वह एक आईएस-बीई थी, जिसे अपोलो नामक एक "देवता" ने जीत लिया था। उसने उसे ओम्फालोस पत्थर के नीचे दफना दिया। यह एक "देवता" द्वारा दूसरे की कब्र पर अपना मंदिर स्थापित करने का मामला है। यह उस डोमेन फोर्स के लिए एक सटीक व्यंजना है जिसने पृथ्वी पर "पुराने साम्राज्य" के मंदिर नेटवर्क का पता लगाकर उसे निष्क्रिय कर दिया था। यह पृथ्वी के सौर मंडल में "पुराने साम्राज्य" फोर्स के लिए घातक प्रहारों में से एक था।
559 ईसा पूर्व --
डोमेन बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर, जो 5965 ईसा पूर्व में लापता हो गए थे, को डोमेन अभियान बल द्वारा पृथ्वी पर भेजे गए एक खोज दल ने खोज निकाला और ढूंढ निकाला। इस दौरान उन्होंने फारस के साइरस द्वितीय का अवतार लिया था।
171
(पाद लेख)
साइप्रस द्वितीय द्वारा एक अनूठी संगठनात्मक प्रणाली का उपयोग किया गया था।
172 (फुटनोट) और उस बटालियन के सदस्य जिन्होंने भारत से पृथ्वी पर उनके मानव जीवन के विकास के दौरान उनका अनुसरण किया। आंशिक रूप से, इसने उन्हें उस तिथि तक पृथ्वी के इतिहास में सबसे बड़ा साम्राज्य बनाने में सक्षम बनाया।
डोमेन सर्च पार्टी, जिसने उसे खोजा, ने हजारों वर्षों तक पृथ्वी का चक्कर लगाकर खोई हुई बटालियन की खोज की। इस पार्टी में डोमेन के 900 अधिकारी शामिल थे, जिन्हें 300-300 की टीमों में बांटा गया था। एक टीम ने ज़मीन पर, दूसरी ने महासागरों में और तीसरी ने पृथ्वी के चारों ओर के अंतरिक्ष में खोज की। विभिन्न मानव इतिहासों में कई रिपोर्टें दर्ज हैं।
उन सभ्यताओं के बारे में, जिनकी गतिविधियों को मनुष्य नहीं समझ पाते थे, बेशक।

डोमेन सर्च पार्टी ने बटालियन के लापता सदस्यों में से प्रत्येक के इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर या तरंगदैर्ध्य का पता लगाने के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक पहचान उपकरण विकसित किए। इनमें से कुछ का उपयोग अंतरिक्ष में, कुछ का भूमि पर किया गया, और पानी के नीचे आईएस-बीई का पता लगाने के लिए विशेष उपकरण बनाए गए।
इन इलेक्ट्रॉनिक पहचान उपकरणों में से एक को "जीवन वृक्ष" कहा जाता है।
173
(फुटनोट) यह उपकरण सचमुच एक है
100

यह उपकरण जीवन की उपस्थिति का पता लगाने के लिए बनाया गया था, जिसे आईएस-बीई कहा जाता है। यह एक विशाल इलेक्ट्रॉनिक स्क्रीन जनरेटर था जिसे विस्तृत क्षेत्रों में प्रकाश फैलाने के लिए डिज़ाइन किया गया था। पृथ्वी पर प्राचीन मनुष्यों के लिए यह एक प्रकार के वृक्ष के समान था, क्योंकि इसमें इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र जनरेटर और रिसीवरों का एक आपस में जुड़ा हुआ जाल होता है। इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र आईएस-बीई की उपस्थिति का पता लगाता है, चाहे आईएस-बीई किसी शरीर में हो या शरीर के बाहर हो।
डोमेन सर्च पार्टी के प्रत्येक सदस्य के पास इस खोज उपकरण का एक पोर्टेबल संस्करण था। सुमेरिया में मिले पत्थर के उत्कीर्ण चित्रों में पंखों वाले प्राणियों को चीड़ के शंकु के आकार के उपकरणों का उपयोग करके मनुष्यों के शरीर को स्कैन करते हुए दिखाया गया है। उन्हें स्कैनर के लिए पावर यूनिट ले जाते हुए भी दिखाया गया है, जिसे शैलीबद्ध टोकरियों या पानी की बाल्टियों के रूप में दर्शाया गया है, और जिसे चील के सिर वाले पंखों वाले प्राणी ले जा रहे हैं।
174
(पाद लेख)
अहुरा मज़्दा के नेतृत्व वाली डोमेन सर्च पार्टी की हवाई इकाई के सदस्यों को मानवीय व्याख्याओं में अक्सर "पंखों वाले देवता" कहा जाता था। फ़ारसी भाषा में
उस सभ्यता में बहुत सारी पत्थर की नक्काशी है जिनमें पंखों वाले अंतरिक्ष यान को दर्शाया गया है, जिसे वे "फरावहार" कहते थे। 175 (पाद टिप्पणी)
डोमेन सर्च पार्टी की एक्वेटिक यूनिट के सदस्यों को स्थानीय लोग "ओएनेस" कहकर पुकारते थे।
176
(फुटनोट) ओएनेस नामक लोगों की पत्थर की नक्काशी में उन्हें चांदी के गोताखोरी सूट पहने हुए दिखाया गया है। वे समुद्र में रहते थे और मानव आबादी को मछली जैसे दिखने वाले पुरुष प्रतीत होते थे। इस लापता बटालियन के कुछ सदस्य डॉल्फ़िन या व्हेल के शरीर में निवास करते हुए महासागरों में पाए गए।
177 (पाद टिप्पणी)

भूमि पर, डोमेन सर्च पार्टी के सदस्यों को सुमेरियनों द्वारा "अनुनाकी" 178 (फुटनोट) के रूप में संदर्भित किया गया था, और
बाइबल में इन्हें "नेफिलिम" कहा गया है। बेशक, इनके असली मिशन और गतिविधियों का खुलासा कभी भी मानव जाति के सामने नहीं हुआ। इनकी गतिविधियों को जानबूझकर छिपाकर रखा गया था। इसलिए, अन्नुनाकी और डोमेन सर्च पार्टी के अन्य सदस्यों के बारे में मानव कहानियाँ और किंवदंतियाँ समझ में नहीं आईं और इन्हें गलत तरीके से समझा गया। गलत व्याख्या की गई।
पूर्ण और सटीक आंकड़ों के अभाव में, किसी भी घटना का अवलोकन करने वाला व्यक्ति आंकड़ों को समझने के प्रयास में स्पष्टीकरणों का अनुमान लगाएगा या परिकल्पना करेगा।

इसलिए, भले ही पौराणिक कथाएँ और इतिहास वास्तविक घटनाओं पर आधारित हों, वे भी तथ्यों से भरपूर होते हैं।
आंकड़ों के गलत समझे और गलत तरीके से व्याख्या किए गए मूल्यांकन, और झूठी मान्यताओं, सिद्धांतों और परिकल्पनाओं से सजे हुए।
डोमेन एक्सपेडिशनरी फोर्स की अंतरिक्ष इकाई को "पंखों वाली डिस्क" में उड़ते हुए दिखाया गया है।
179
(फुटनोट) यह आईएस-बीई की आध्यात्मिक शक्ति के साथ-साथ डोमेन सर्च पार्टी द्वारा उपयोग किए जाने वाले अंतरिक्ष यान का संकेत है।
खोई हुई बटालियन के कमांडर, साइरस द्वितीय, एक आईएस-बीई थे जिन्हें यहूदियों और मुसलमानों दोनों द्वारा पृथ्वी पर मसीहा माना जाता था। 50 वर्षों से भी कम समय में उन्होंने एक अत्यंत नैतिक और मानवतावादी संगठन की स्थापना की।
वह दर्शन जो संपूर्ण पश्चिमी सभ्यता में व्याप्त था। 180
(पाद लेख)
उनकी क्षेत्रीय विजय, जनसंगठन और विशाल निर्माण परियोजनाएं अभूतपूर्व थीं, न तो उनसे पहले और न ही उनके बाद। इतने कम समय में इतनी व्यापक उपलब्धियां केवल एक नेता और प्रशिक्षित अधिकारियों, पायलटों, इंजीनियरों और दल के सदस्यों की एक टीम द्वारा ही हासिल की जा सकती थीं, जो हजारों वर्षों से एक साथ प्रशिक्षित और कार्यरत थे।
हालांकि हमने लापता बटालियन में कई आईएस-बीई सैनिकों के ठिकाने का पता लगा लिया है, लेकिन डोमेन अभी तक उनकी स्मृति को बहाल करने और उन्हें सक्रिय ड्यूटी पर वापस लाने में असमर्थ रहा है।
बेशक, हम जैविक शरीरों में निवास करने वाले आईएस-बीई को डोमेन के अंतरिक्ष स्टेशनों तक नहीं ले जा सकते, क्योंकि हमारे अंतरिक्ष यान में ऑक्सीजन नहीं है। साथ ही, हम वहां जैविक प्राणियों के लिए जीवन रक्षक सुविधाएं भी नहीं रखते हैं। हमारी एकमात्र आशा खोई हुई बटालियन के आईएस-बीई का पता लगाना और उनकी चेतना, स्मृति और पहचान को पुनर्जीवित करना है। एक दिन वे हमसे दोबारा जुड़ने में सक्षम होंगे।

200 ईसा पूर्व --
"पुराने साम्राज्य" की पिरामिड सभ्यता का अंतिम अवशेष "तेओतिहुआकान" में स्थित है।
181
(फुटनोट)। एज़्टेक नाम का अर्थ है "देवताओं का स्थान" या "जहाँ मनुष्य देवताओं में परिवर्तित होते थे"। खगोलीय की तरह
102

मिस्र के गीज़ा पिरामिडों की संरचना को देखें तो, पूरा परिसर सौर मंडल का एक सटीक स्केल-मॉडल है जो आंतरिक ग्रहों, क्षुद्रग्रह बेल्ट, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो की कक्षीय दूरियों को सटीक रूप से दर्शाता है। चूंकि यूरेनस ग्रह की खोज आधुनिक पृथ्वी दूरबीनों से 1787 में ही हुई थी और प्लूटो की खोज 1930 तक नहीं हुई थी, इसलिए यह स्पष्ट है कि निर्माताओं के पास "अन्य स्रोतों" से भी जानकारी थी।

पृथ्वी पर फैली पिरामिड सभ्यताओं का एक सामान्य तत्व है सांप, अजगर या सर्प की छवि का निरंतर उपयोग। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन सभ्यताओं को स्थापित करने वाले प्राणी यह भ्रम पैदा करना चाहते हैं कि "देवता" सरीसृप हैं। यह विस्मृति को बनाए रखने के लिए रचे गए भ्रम का भी एक हिस्सा है। पृथ्वी पर झूठी सभ्यताएँ स्थापित करने वाले प्राणी आपकी ही तरह IS-BE हैं। "पुराने साम्राज्य" में IS-BE द्वारा आबाद कई जैविक शरीर पृथ्वी पर मौजूद शरीरों से दिखने में बहुत मिलते-जुलते हैं। "देवता" सरीसृप नहीं हैं, हालाँकि वे अक्सर सांपों की तरह व्यवहार करते हैं।

1034 - 1124 ईस्वी --

संपूर्ण अरब जगत एक ही व्यक्ति के अधीन था: हसन इब्न-अल-सब्बा 182 (पाद टिप्पणी), जिसे पर्वत का बूढ़ा कहा जाता था। उसने हशशिन की स्थापना की, जो मोहम्मदवाद के एक भाग का संचालन करते थे और आतंक और भय के बल पर भारत, एशिया माइनर और भूमध्य सागर बेसिन के अधिकांश भाग को नियंत्रित करते थे। वे एक पुरोहित वर्ग बन गए, जिसने मन को वश में करने और जबरन वसूली करने की एक अत्यंत प्रभावी तकनीक का इस्तेमाल किया, जिससे "हत्यारों" ने कई सौ वर्षों तक सभ्य दुनिया पर अपना नियंत्रण बनाए रखा।

उनका तरीका सीधा-सादा था। युवकों का अपहरण किया जाता और उन्हें हशीश पिलाकर बेहोश कर दिया जाता। उन्हें एक ऐसे बगीचे में ले जाया जाता, जो खूबसूरत काली आंखों वाली हूरों से भरा होता था और एक हरम में ले जाया जाता था, जो दूध और शहद की नदियों से सजा होता था। युवकों को बताया जाता कि वे स्वर्ग में हैं। उनसे वादा किया जाता कि अगर वे आदेशित व्यक्ति के हत्यारे के रूप में खुद को बलिदान कर दें, तो वे वापस लौटकर वहां

हमेशा के लिए रह सकते हैं। फिर उन्हें दोबारा बेहोश कर दिया जाता और हत्या के मिशन को अंजाम देने के लिए दुनिया में धकेल दिया जाता।

इसी बीच, पर्वत के बूढ़े व्यक्ति ने खलीफा या उस धनी शासक के पास एक दूत भेजा, जिससे वे भुगतान की मांग कर रहे थे, और ऊंटों पर लादे सोने, मसालों आदि की मांग की।

अगर भुगतान समय पर नहीं मिलता, तो हत्यारे को उसे मारने के लिए भेजा जाता। अपराधी पक्ष। अज्ञात हमलावर के खिलाफ वस्तुतः कोई बचाव नहीं था, जो अपने मिशन को अंजाम देने, मारे जाने और "स्वर्ग" लौटने के अलावा और कुछ नहीं चाहता था।
यह एक बहुत ही सरल उदाहरण है कि कैसे कुशलतापूर्वक और बलपूर्वक इस्तेमाल किए जाने पर मस्तिष्क-वशीकरण और मन-नियंत्रण अभियान कितना प्रभावी हो सकता है। यह एक छोटे पैमाने का प्रदर्शन है कि कैसे स्मृतिलोप के माध्यम से "पुराने साम्राज्य" द्वारा पृथ्वी की संपूर्ण आईएस-बीई आबादी के खिलाफ मन-नियंत्रण अभियान चलाया जाता है।
1119 ईस्वी --
नाइट्स टेम्प्लर
183
(फुटनोट) की स्थापना प्रथम धर्मयुद्ध के बाद एक ईसाई सैन्य इकाई के रूप में की गई थी, लेकिन यह जल्दी ही पृथ्वी पर "पुराने साम्राज्य" के अवशेषों के लिए काम करने वाले ऑपरेटरों के एजेंडे को संचालित करने के लिए धन इकट्ठा करने हेतु अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग प्रणाली के आधार में परिवर्तित हो गई।
1135 - 1230 ईस्वी --
डोमेन अभियान बल ने इसे पूरा किया
पृथ्वी के चारों ओर सौर मंडल में कार्यरत "पुराने साम्राज्य" के अंतरिक्ष बेड़े के बचे हुए अवशेषों का विनाश। दुर्भाग्य से, उनका लंबे समय से स्थापित विचार नियंत्रण तंत्र काफी हद तक बरकरार है।
1307 ईस्वी --
फ्रांस के राजा फिलिप चतुर्थ, जो इस संगठन के भारी ऋणी थे, ने नाइट्स टेम्प्लर को भंग कर दिया था।
184
(फुटनोट) उसने पोप क्लेमेंट पंचम पर दबाव डाला कि वह संगठन के सदस्यों की निंदा करे, उन्हें गिरफ्तार करवाए, उनसे झूठे बयान दिलवाने के लिए उन्हें यातनाएं दे और फिर उनकी सारी संपत्ति जब्त करके अपना कर्ज मिटाने के प्रयास में उन्हें आग में जला दे।

टेम्पलर्स में से अधिकांश स्विट्जरलैंड भाग गए, जहाँ उन्होंने एक अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग प्रणाली की स्थापना की।

185 (पाद टिप्पणी) जो गुप्त रूप से पृथ्वी की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करता है।

"ओल्ड एंपायर" के कार्यकर्ता अंतरराष्ट्रीय बैंकरों पर एक अदृश्य प्रभाव के रूप में कार्य करते हैं।

186

(फुटनोट) ये बैंक गुप्त रूप से एक गैर-लड़ाकू उकसाने वाले के रूप में संचालित होते हैं, जो पृथ्वी के राष्ट्रों के बीच हथियारों और युद्ध को गुप्त रूप से बढ़ावा देने और वित्तपोषण करने का काम करते हैं। युद्ध एक आंतरिक तंत्र है।

कैदियों की संख्या पर नियंत्रण।

187

(पाद लेख)

इन अंतरराष्ट्रीय बैंकों द्वारा वित्तपोषित युद्धों के निरर्थक नरसंहार और जनसंहार का उद्देश्य पृथ्वी के आईएस-बीई को खुले संचार से रोकना, उन गतिविधियों में एक साथ सहयोग करने से रोकना है जो आईएस-बीई को समृद्ध होने, ज्ञान प्राप्त करने और अपनी कैद से बचने में सक्षम बना सकती हैं।"

105

अध्याय दस

जीव विज्ञान का एक पाठ

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"मेरी ब्रीफिंग को बैकअप के तौर पर और स्टेनोग्राफिक नोट्स में स्पष्टीकरण जोड़ने के लिए टेप रिकॉर्ड किया गया था। मैंने अपने इंटरव्यू के तुरंत बाद ब्रीफिंग की ताकि कही गई हर बात मेरे दिमाग में ताज़ा रहे।"

जब मैंने गैलरी के स्टेनोग्राफर को ये कहानियां सुनाईं, तो मैं अभी भी थोड़ा हैरान था। 'द डोमेन' के नज़रिए से पृथ्वी के इतिहास को देखना बेहद अजीब था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मेरी बेचैनी दिशाहीनता के कारण थी या फिर से दिशा समझने के कारण। दोनों ही स्थिति में, मैं अस्थिर और भ्रमित महसूस कर रहा था। फिर भी, साथ ही साथ इसमें सच्चाई की झलक भी थी। मैं एक ही समय में उत्साहित और अविश्वास से भरा हुआ था!

जब स्टेनोग्राफर मेरे द्वारा दिए गए "इतिहास के पाठ" को रिकॉर्ड कर रही थी, तो उसने कई बार मुझे तिरछी नज़रों से देखा। मुझे यकीन है कि उसे लगा होगा कि मैं पागल हो रहा हूँ! शायद वह सही थी। लेकिन अगर एयरल के सुझाव के अनुसार, "पुराने साम्राज्य" द्वारा सम्मोहित सुझावों और झूठी यादों से मेरा दिमाग भर गया होता, तो शायद पागल हो जाना ही बेहतर होता!

उस समय मेरे पास इन बातों पर अपने निजी विचारों पर चिंतन करने का ज़्यादा समय नहीं था। मेरा कर्तव्य था कि मैं एयरल से जितनी भी जानकारी प्राप्त कर सकूँ, उसे एयरल के काम समाप्त होते ही स्टेनोग्राफर को सौंप दूँ। मेरा काम जानकारी का विश्लेषण करना नहीं था, बल्कि उसे यथासंभव सटीक रूप से रिपोर्ट करना था। विश्लेषण का काम गैलरी में बैठे लोगों या उन सभी लोगों पर छोड़ दिया गया था जिन्हें प्रतिलेखों की प्रतियाँ मिल रही थीं।

मैंने गैलरी कक्ष में मौजूद एजेंट को एयरल द्वारा अनुरोधित पुस्तकों और सामग्रियों की एक सूची भी सौंप दी ताकि उन्हें इकट्ठा करके एयरल तक पहुँचाया जा सके। हर रात मेरे जाने के बाद, एयरल बाकी रात उन सामग्रियों को पढ़ने या "समीक्षा करने" में बिताती थी जो उसे दी गई थीं। गैलरी के प्रत्येक सदस्य को अध्ययन के लिए स्टेनोग्राफिक डिक्टेशन की एक प्रतिलिपि दी जाती थी, जिसमें वे अपनी रुचि की जानकारी खोजते थे। सुबह नाश्ते के बाद मैं

साक्षात्कार कक्ष में वापस आ जाता था ताकि एयरल के साथ अपने साक्षात्कार या "पाठ" जारी रख सकूँ।

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)
परम गुप्त
अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख
रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 28 जुलाई 1947, पहला सत्र।
मैंने जिन पाठ्यपुस्तकों को पढ़ा है, उनमें इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति और पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के बारे में जो चर्चा की गई है, वह बहुत गलत है। चूंकि आप चिकित्सा कर्मी के रूप में अपनी सरकार की सेवा करते हैं, इसलिए आपके कर्तव्यों के लिए यह आवश्यक है कि आप... जैविक प्रक्रियाओं को समझें। इसलिए, मुझे पूरा विश्वास है कि आज मैं आपके साथ जो सामग्री साझा करूंगा, उसका महत्व आपको समझ आएगा।
मुझे जीवन रूपों के कार्य से संबंधित विषयों पर दी गई पुस्तकों के पाठ में ऐसी जानकारी है जो झूठी यादों, गलत अवलोकन, अनुपलब्ध आंकड़ों, अप्रमाणित सिद्धांतों और अंधविश्वास पर आधारित है।
उदाहरण के लिए, कुछ सौ साल पहले आपका
चिकित्सकों ने रक्तस्राव का अभ्यास किया
188
(फुटनोट) शरीर से कथित अशुद्धियों को दूर करने के एक साधन के रूप में, विभिन्न प्रकार के शारीरिक और मानसिक कष्टों से राहत दिलाने या उन्हें ठीक करने के प्रयास में इसका प्रयोग किया जाता था। हालांकि इसमें कुछ सुधार हुआ है, फिर भी चिकित्सा विज्ञान के नाम पर कई बर्बर प्रथाएं अभी भी प्रचलित हैं।
जैविक इंजीनियरिंग से संबंधित गलत सिद्धांतों के अनुप्रयोग के अलावा, पृथ्वी वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली कई प्राथमिक त्रुटियां, प्रत्येक जीवन रूप को चेतन करने वाली ऊर्जा और बुद्धि के स्रोत के रूप में आई एस - बी ई की प्रकृति और सापेक्ष महत्व के बारे में अज्ञानता का परिणाम हैं।
हालांकि पृथ्वी के मामलों में हस्तक्षेप करना द डोमेन की प्राथमिकता नहीं है, फिर भी द डोमेन कम्युनिकेशंस ऑफिस ने मुझे आपको कुछ जानकारी प्रदान करने के लिए अधिकृत

किया है ताकि आपको इन चीजों की अधिक सटीक और संपूर्ण समझ मिल सके और इस प्रकार आप पृथ्वी पर जिन अनूठी समस्याओं का सामना करते हैं, उनके अधिक प्रभावी समाधान खोज सकें।

जैविक संस्थाओं की उत्पत्ति के बारे में सही जानकारी आपके दिमाग से, साथ ही साथ मेरे दिमाग से भी मिटा दी गई है।

आपके मार्गदर्शकों के विचारों को। आपकी स्मृति को पुनः प्राप्त करने में सहायता के लिए, मैं आपके साथ जैविक संस्थाओं की उत्पत्ति से संबंधित कुछ तथ्यात्मक सामग्री साझा करूँगा। मैंने एयरल से पूछा कि क्या वह विकासवाद के विषय की बात कर रही है। एयरल ने कहा, "नहीं, बिल्कुल नहीं।"
आपको प्राचीन वैदिक ग्रंथों में "विकास" का उल्लेख मिलेगा।
189
(फुटनोट) वैदिक ग्रंथ लोक कथाओं या सामान्य ज्ञान और अंधविश्वासों की तरह हैं, जो इस क्षेत्र की सभी प्रणालियों से एकत्रित किए गए हैं। इन्हें छंदों में संकलित किया गया है, जैसे कि तुकबंदी की एक पुस्तक। सत्य के प्रत्येक कथन के लिए, छंदों में उतने ही अर्ध-सत्य, सत्य के उलटफेर और मनगढ़ंत कल्पनाएँ मिश्रित हैं।
योग्यता या विशिष्टता।
विकासवाद का सिद्धांत मानता है कि हर जीव को जीवंत बनाने वाली प्रेरक ऊर्जा का कोई स्रोत नहीं है। यह मानता है कि कोई निर्जीव वस्तु या रासायनिक मिश्रण अचानक "जीवित" हो सकता है या आकस्मिक या स्वतः ही सजीव हो सकता है। या, शायद किसी रासायनिक द्रव्य में विद्युत प्रवाह होने से जादुई रूप से एक स्व-सजीव प्राणी उत्पन्न हो जाए।
इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यह सच है, क्योंकि यह सच नहीं है। डॉ. फ्रेंकस्टीन ने सचमुच किसी मृत व्यक्ति को हिंसक राक्षस के रूप में पुनर्जीवित नहीं किया था, सिवाय उस काल्पनिक कहानी को लिखने वाले 'आईएस-बीई' की कल्पना में। 190 (पाद टिप्पणी)
किसी भी पश्चिमी वैज्ञानिक ने कभी इस बात पर विचार नहीं किया कि यह जीवन शक्ति कौन, क्या, कहाँ, कब और कैसे उत्पन्न होती है। निर्जीव वस्तुओं या कोशिकीय ऊतकों को सजीव करने के लिए आवश्यक जीवन शक्ति के स्रोत के रूप में आत्मा की पूर्ण अज्ञानता, अस्वीकृति या अनभिज्ञता ही पश्चिमी चिकित्सा की विफलताओं का एकमात्र कारण है।
इसके अलावा, विकास आकस्मिक नहीं होता। इसके लिए बहुत सारी तकनीक की आवश्यकता होती है, जिसे आईएस-बीई के सावधानीपूर्वक पर्यवेक्षण में संचालित किया जाना चाहिए। इसके सरल उदाहरण खेतों में पाले जाने वाले पशुओं के रूपांतरण या कुत्तों के प्रजनन में देखे जा सकते हैं। हालांकि, यह धारणा कि मानव जीव पहले के वानर जैसे रूपों से

स्वाभाविक रूप से विकसित हुए हैं, गलत है। इस बात को साबित करने के लिए कोई भौतिक प्रमाण कभी नहीं मिलेगा कि आधुनिक मानवाकार शरीर इस ग्रह पर विकसित हुए हैं।

कारण सीधा-सादा है: यह धारणा कि मानव शरीर समय के धुंधले काल में रासायनिक अंतःक्रियाओं के आदिम द्रव से स्वतः विकसित हुए, मानव जाति की वास्तविक उत्पत्ति को भुलाने के लिए स्मृतिलोप के ऑपरेशन द्वारा मन में बिठाया गया एक सम्मोहक झूठ मात्र है। वास्तव में, मानव जैसे शरीर खरबों वर्षों से ब्रह्मांड में विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं।
इस तथ्य ने स्थिति को और भी जटिल बना दिया कि वैदिक भजन 8,200 वर्ष पूर्व डोमेन अभियान दल द्वारा पृथ्वी पर लाए गए थे। हिमालय पर्वतमाला में रहते हुए, उन्होंने कुछ स्थानीय लोगों को ये श्लोक सिखाए, जिन्होंने उन्हें याद कर लिया। हालांकि, मैं यह बताना चाहूंगा कि डोमेन प्रतिष्ठान के दल के लिए यह कोई अधिकृत गतिविधि नहीं थी, हालांकि मुझे यकीन है कि उस समय उन्हें यह एक साधारण मनोरंजन जैसा लगा होगा।
ये श्लोक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्रसारित किए गए थे।
हजारों वर्षों तक यह परंपरा पीढ़ियों से पीढ़ियों तक पर्वतीय तलहटी में चली आ रही थी और अंततः पूरे भारत में फैल गई। इस क्षेत्र में कोई भी वैदिक भजनों की किसी भी सामग्री को तथ्यात्मक सामग्री के रूप में स्वीकार नहीं करता है, ठीक उसी तरह जैसे आप "ग्रिम की परियों की कहानियों" का उपयोग नहीं करेंगे।
191
(फुटनोट) बच्चों के पालन-पोषण के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में। हालाँकि, एक ऐसे ग्रह पर जहाँ सभी आईएस-बीई की स्मृति मिटा दी गई है, यह समझा जा सकता है कि इन कहानियों और कल्पनाओं को गंभीरता से क्यों लिया जा सकता है।
दुर्भाग्यवश, वैदिक श्लोकों को जानने वाले मनुष्यों ने उन्हें यह कहकर दूसरों तक पहुँचाया कि वे "देवताओं" से आए हैं। अंततः, श्लोकों की सामग्री को शब्दशः "सत्य" के रूप में अपना लिया गया। वेदों की व्यंजनात्मक और लाक्षणिक सामग्री को हठधर्मी तथ्य के रूप में स्वीकार किया गया और उसका पालन किया जाने लगा। श्लोकों के दर्शन को नजरअंदाज कर दिया गया और वे श्लोक पृथ्वी पर लगभग हर धार्मिक प्रथा, विशेष रूप से हिंदू धर्म का आधार बन गए।
192
(पाद लेख)

डोमेन के एक अधिकारी, पायलट और इंजीनियर के रूप में, मुझे हमेशा एक बहुत ही व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यदि मैं दार्शनिक सिद्धांतों या बयानबाजी को अपने संचालन नियमावली के रूप में उपयोग करता, तो मैं प्रभावी नहीं हो पाता और अपने मिशनों को पूरा नहीं कर पाता। इसलिए, इतिहास पर हमारी चर्चा उन वास्तविक घटनाओं पर आधारित है जो किसी भी आईएस-बीई के पृथ्वी पर आने से बहुत पहले और "पुराने साम्राज्य" के आने से बहुत पहले घटी थीं।

सत्ता में। मैं व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर इस इतिहास के कुछ अंश से संबंधित जानकारी साझा कर सकता हूँ:
कई अरब वर्ष पूर्व, मैं इस आकाशगंगा से बहुत दूर स्थित एक आकाशगंगा में एक बहुत बड़ी जैविक प्रयोगशाला का सदस्य था। इसका नाम "आर्केडिया रीजनरेशन कंपनी" था। 193 (फुटनोट) मैं एक जीव विज्ञान इंजीनियर था और तकनीशियनों की एक बड़ी टीम के साथ काम करता था। हमारा काम निर्जन ग्रहों पर नए जीवन रूपों का निर्माण और आपूर्ति करना था। उस समय क्षेत्र में लाखों तारामंडल थे जिनमें लाखों रहने योग्य ग्रह मौजूद थे।
उस समय कई अन्य जैविक प्रयोगशाला कंपनियाँ भी थीं। इनमें से प्रत्येक कंपनी, जिस ग्रह पर जीव-जंतु रहते थे, उसकी "श्रेणी" के अनुसार विभिन्न प्रकार के जीव-जंतुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता रखती थी। लंबे समय के दौरान इन प्रयोगशालाओं ने आकाशगंगाओं में फैली प्रजातियों की एक विशाल सूची विकसित की। अधिकांश मूलभूत आनुवंशिक सामग्री सभी जीव-जंतुओं में समान होती है।
194
(फुटनोट) इसलिए, उनके अधिकांश कार्य का संबंध बुनियादी आनुवंशिक पैटर्न में परिवर्तन करके जीवन रूपों की ऐसी विविधताओं का उत्पादन करने से था जो विभिन्न ग्रहीय वर्गों के लिए उपयुक्त निवासी हों।
"आर्केडिया रीजनरेशन कंपनी" वन क्षेत्रों के लिए स्तनधारियों और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के लिए पक्षियों के विकास में विशेषज्ञता रखती थी। हमारे विपणन दल ने विभिन्न ग्रहीय सरकारों और ब्रह्मांड भर के स्वतंत्र खरीदारों के साथ अनुबंध किए। तकनीशियनों ने ऐसे जीव बनाए जो जलवायु, वायुमंडलीय और स्थलीय घनत्व तथा रासायनिक संरचना में होने वाले बदलावों के अनुकूल थे। इसके अलावा, हमें अन्य कंपनियों द्वारा विकसित उन जैविक जीवों के साथ अपने नमूनों को एकीकृत करने के लिए भुगतान भी किया गया जो पहले से ही किसी ग्रह पर रह रहे थे।
इसके लिए हमारे कर्मचारी जीवन रूपों का निर्माण करने वाली अन्य कंपनियों के संपर्क में थे। उद्योग व्यापार मेलों, प्रकाशनों और संबंधित परियोजनाओं के समन्वय करने वाले एक

संगठन के माध्यम से उपलब्ध कराई गई विभिन्न प्रकार की अन्य जानकारियों का भी उपयोग किया गया।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, हमारे शोध के लिए ग्रहों का सर्वेक्षण करने हेतु बहुत अधिक अंतरतारकीय यात्रा की आवश्यकता थी। इसी दौरान मैंने पायलट के रूप में अपने कौशल सीखे। एकत्रित डेटा को विशाल कंप्यूटर डेटाबेस में संग्रहित किया गया और जैविक इंजीनियरों द्वारा उसका मूल्यांकन किया गया। 195 (पाद टिप्पणी)

कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जो कृत्रिम "मस्तिष्क" या जटिल गणना मशीन के रूप में कार्य करता है। यह सूचना संग्रहित करने, गणना करने, समस्याओं को हल करने और यांत्रिक कार्य करने में सक्षम है। ब्रह्मांड के अधिकांश आकाशगंगा प्रणालियों में, किसी पूरे ग्रह या ग्रह प्रणाली के नियमित प्रशासन, यांत्रिक सेवाओं और रखरखाव गतिविधियों को चलाने के लिए आमतौर पर बहुत बड़े कंप्यूटरों का उपयोग किया जाता है।
सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर, नए जीवों के डिजाइन और कलात्मक चित्र तैयार किए गए। कुछ डिजाइन उच्चतम बोली लगाने वाले को बेच दिए गए। अन्य जीव-जंतुओं का निर्माण हमारे ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया।
डिजाइन और तकनीकी विशिष्टताओं को विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए कई सेलुलर, रासायनिक और यांत्रिक इंजीनियरों के माध्यम से असेंबली लाइन में आगे बढ़ाया गया। उनका काम सभी घटकों को एकीकृत करके एक व्यावहारिक, कार्यात्मक और सौंदर्यपूर्ण अंतिम उत्पाद तैयार करना था।
इसके बाद इन जीवों के प्रोटोटाइप तैयार किए गए और कृत्रिम रूप से निर्मित वातावरण में उनका परीक्षण किया गया।
खामियों को दूर किया गया, संशोधन किए गए और अंततः नए जीवन रूप को अंतिम परीक्षण के लिए वास्तविक ग्रहीय वातावरण में पेश किए जाने से पहले एक जीवन शक्ति या आध्यात्मिक ऊर्जा से "संपन्न" या "जीवंत" किया गया।
एक नए जीव के आगमन के बाद, हमने इन जीवों की ग्रह के पर्यावरण और अन्य स्वदेशी जीव-जंतुओं के साथ परस्पर क्रिया का अवलोकन किया। असंगत जीवों के बीच परस्पर क्रिया से उत्पन्न संघर्षों को हमने और अन्य कंपनियों ने बातचीत के माध्यम से सुलझाया। इन वार्ताओं के परिणामस्वरूप आमतौर पर ऐसे समझौते हुए जिनमें हमारे या उनके जीवों या दोनों में और संशोधन की आवश्यकता पड़ी। यह उस विज्ञान या कला का हिस्सा है जिसे आप "यूजेनिक्स" कहते हैं।

(पाद लेख)

कुछ मामलों में ग्रह के वातावरण में बदलाव किए गए, लेकिन ऐसा अक्सर नहीं होता था, क्योंकि ग्रह का निर्माण किसी एक जीव में बदलाव करने की तुलना में कहीं अधिक जटिल है।

संयोगवश, मेरे एक मित्र और इंजीनियर, जिनके साथ मैंने अर्काडिया रीजनरेशन कंपनी में काम किया था (कंपनी छोड़ने के काफी समय बाद), ने मुझे बताया कि हाल ही में उनके द्वारा अनुबंधित परियोजनाओं में से एक पृथ्वी पर जीवन रूपों को पहुंचाना था ताकि आकाशगंगा के इस क्षेत्र में हुए युद्ध के बाद, जिसने अंतरिक्ष के इस क्षेत्र के ग्रहों पर अधिकांश जीवन को नष्ट कर दिया था, पृथ्वी को पुनर्जीवित किया जा सके। यह लगभग सत्तर मिलियन वर्ष पूर्व की बात है।

ग्रह को एक अलग रूप में बदलने के लिए आवश्यक कौशल

अरबों विविध प्रजातियों को सहारा देने वाले पारिस्थितिक रूप से परस्पर क्रियाशील वातावरण का निर्माण एक विशाल परियोजना थी। इस परियोजना में सहायता के लिए आकाशगंगा की लगभग हर जैव प्रौद्योगिकी कंपनी के विशेषज्ञ सलाहकारों को बुलाया गया था।

पृथ्वी पर आज आप जो कुछ भी देखते हैं, वह जीवन रूपों की विशाल विविधता है जो यहाँ मौजूद है। आपके वैज्ञानिक मानते हैं कि भ्रामक "विकासवाद का सिद्धांत" यहाँ के सभी जीवन रूपों के अस्तित्व की व्याख्या है। सच्चाई यह है कि इस ग्रह और ब्रह्मांड के किसी भी अन्य ग्रह पर मौजूद सभी जीवन रूपों का निर्माण हमारी जैसी कंपनियों द्वारा किया गया है। इस ग्रह की ज़मीन और महासागरों में पाई जाने वाली लाखों पूर्णतः भिन्न और असंबंधित जीवन प्रजातियों को आप और कैसे समझा सकते हैं? प्रत्येक जीवित प्राणी को परिभाषित करने वाले आध्यात्मिक ऊर्जा के स्रोत को आप और कैसे समझा सकते हैं? इसे "ईश्वर" का कार्य कहना बहुत व्यापक है। प्रत्येक अस्तित्व के अनेक नाम और रूप होते हैं, अनेक समयों और स्थानों में। प्रत्येक अस्तित्व स्वयं एक ईश्वर है। जब वे किसी भौतिक वस्तु में निवास करते हैं, तो वे जीवन के स्रोत होते हैं।

उदाहरण के लिए, लाखों प्रजातियाँ हैं।

197

(पाद टिप्पणी) कीटों की। इनमें से लगभग 350,000 भृंगों की प्रजातियाँ हैं। 198

(फुटनोट) पृथ्वी पर किसी भी समय लगभग 10 करोड़ जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ मौजूद हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, पृथ्वी पर जीवित जीव-जंतुओं की तुलना में विलुप्त जीव-जंतुओं

की संख्या कई गुना अधिक है। इनमें से कुछ को पृथ्वी के जीवाश्म या भूवैज्ञानिक अभिलेखों में पुनः खोजा जाएगा।

पृथ्वी पर जीवन रूपों के विकास का वर्तमान सिद्धांत जैविक विविधता की घटना को ध्यान में नहीं रखता है। प्राकृतिक चयन द्वारा विकास विज्ञान कथा है। जैसा कि पृथ्वी पर आधारित पाठ्यपुस्तकों में बताया गया है, एक प्रजाति आकस्मिक रूप से या यादृच्छिक रूप से विकसित होकर दूसरी प्रजाति नहीं बन जाती।

आईएस-बीई द्वारा आनुवंशिक सामग्री में हेरफेर किए बिना।
199 (पाद टिप्पणी)
आईएस-बीई हस्तक्षेप का एक सरल उदाहरण किसी प्रजाति का चयनात्मक प्रजनन है।
200
(फुटनोट) पृथ्वी पर। पिछले कुछ सौ वर्षों में कई सौ कुत्तों की नस्लें और
कुछ ही वर्षों में कबूतरों की सैकड़ों किस्में और कोई मछली की दर्जनों प्रजातियाँ "विकसित" हो चुकी हैं, जिनकी शुरुआत केवल एक मूल नस्ल से हुई थी। आईएस-बीई के सक्रिय हस्तक्षेप के बिना, जैविक जीवों में परिवर्तन शायद ही कभी होता है।
'बतख जैसी चोंच वाले प्लैटिपस' जैसे जानवर के विकास के लिए बहुत ही कुशल इंजीनियरिंग की आवश्यकता पड़ी, जिसमें बीवर के शरीर को बतख की चोंच के साथ मिलाकर एक ऐसा स्तनधारी जीव बनाया गया जो अंडे देता है। निस्संदेह, किसी धनी ग्राहक ने उपहार या मनोरंजन के लिए इसका "विशेष ऑर्डर" दिया होगा। मुझे पूरा यकीन है कि किसी जैव प्रौद्योगिकी कंपनी की प्रयोगशाला ने इसे स्व-प्रजननशील जीव बनाने के लिए वर्षों तक इस पर काम किया होगा!
यह धारणा कि किसी भी जीव का निर्माण किसी प्राचीन कीचड़ से उत्पन्न आकस्मिक रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप हो सकता है, सरासर बेतुकी है! वास्तव में, पृथ्वी पर कुछ जीव, जैसे कि प्रोटियोबैक्टीरिया, 201 (पाद टिप्पणी), एक ही संघ के रूपांतरण हैं।
202 (फुटनोट) मुख्य रूप से "स्टार टाइप 3, क्लास सी" ग्रहों के लिए डिज़ाइन किया गया है। दूसरे शब्दों में, यह डोमेन पदनाम एक ऐसे ग्रह के लिए है जिसका वातावरण अवायवीय है और जो एक बड़े, अत्यंत गर्म नीले तारे के सबसे निकट स्थित है।
203
(फुटनोट) जैसे कि इस आकाशगंगा में ओरियन बेल्ट तारामंडल में पाए जाने वाले।
जीवन रूपों का निर्माण करना अत्यंत जटिल और तकनीकी कार्य है, जिसे इस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त आईएस-बीई ही कर पाते हैं। आनुवंशिक विसंगतियाँ पृथ्वी के उन जीवविज्ञानियों के लिए बेहद पेचीदा हैं जिनकी स्मृति मिटा दी गई है। दुर्भाग्यवश, "पुराने

साम्राज्य" द्वारा डाली गई झूठी स्मृतियाँ पृथ्वी के वैज्ञानिकों को स्पष्ट विसंगतियों को देखने से रोकती हैं।

जीव-जंतुओं के सामने सबसे बड़ी तकनीकी चुनौती स्व-पुनर्जनन, या लैंगिक प्रजनन का आविष्कार था। इसका आविष्कार उन जीवों के स्थान पर लगातार नए जीव उत्पन्न करने की समस्या के समाधान के रूप में किया गया था जो अन्य जीवों द्वारा नष्ट या खा लिए जाते थे। ग्रहीय सरकारें लगातार नए जानवर खरीदना नहीं चाहती थीं।

यह विचार अरबों साल पहले जैव प्रौद्योगिकी उद्योग के भीतर परस्पर विरोधी निहित स्वार्थों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए आयोजित एक सम्मेलन के परिणामस्वरूप सामने आया था। कुख्यात "युहमी-क्रम परिषद" जीव उत्पादन के समन्वय के लिए जिम्मेदार थी। 204 (पाद लेख)

परिषद के कुछ सदस्यों को रणनीतिक रूप से रिश्वत देकर या उनकी हत्या करके एक समझौता किया गया, जिसके परिणामस्वरूप एक जैविक घटना का जन्म हुआ जिसे अब हम "खाद्य श्रृंखला" कहते हैं।

यह विचार कि किसी जीव को ऊर्जा स्रोत के रूप में किसी अन्य जीव के शरीर का सेवन करने की आवश्यकता होगी, जैविक अभियांत्रिकी क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक द्वारा एक समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया था। वे कीड़े और फूल वाले पौधे बनाने में विशेषज्ञ थे।

इन दोनों के बीच संबंध स्पष्ट है। लगभग हर फूल वाले पौधे को प्रजनन के लिए किसी कीट के साथ सहजीवी संबंध की आवश्यकता होती है। कारण स्पष्ट है: कीट और फूल दोनों एक ही कंपनी द्वारा बनाए गए थे। दुर्भाग्य से, इसी कंपनी का एक विभाग परजीवी और जीवाणु भी बनाता था।

कंपनी के नाम का अंग्रेज़ी अनुवाद मोटे तौर पर "कीड़े और फूल" होगा। वे इस बात को सही ठहराना चाहते थे कि उनके द्वारा निर्मित परजीवी जीवों का एकमात्र वैध उद्देश्य जैविक पदार्थों के अपघटन में सहायता करना था। उस समय ऐसे जीवों का बाज़ार बहुत सीमित था। अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए उन्होंने एक बड़ी जनसंपर्क कंपनी और प्रभावशाली राजनीतिक पैरवीकारों के एक समूह को काम पर रखा ताकि इस विचार का प्रचार किया जा सके कि जीव-जंतुओं को एक-दूसरे से ही भोजन प्राप्त करना चाहिए। उन्होंने प्रचार के लिए एक "वैज्ञानिक सिद्धांत" गढ़ा। सिद्धांत यह था कि सभी जीवों को ऊर्जा के स्रोत के रूप में "भोजन" की आवश्यकता होती है। इससे पहले, बनाए जा रहे किसी भी जीव-जंतु को किसी बाहरी ऊर्जा की आवश्यकता नहीं थी। जानवर भोजन के लिए दूसरे जानवरों को नहीं खाते थे, बल्कि केवल सूर्य की रोशनी, खनिज या वनस्पति पदार्थ ही ग्रहण करते थे।

बेशक, "बग्स एंड ब्लॉसम्स" ने मांसाहारी जानवरों को डिजाइन और निर्माण करने का व्यवसाय शुरू किया। देखते ही देखते, इतने सारे जानवरों को भोजन के रूप में खाया जाने लगा कि उनकी भरपाई करना बहुत मुश्किल हो गया।

कुछ उच्च पदों पर रणनीतिक रूप से रिश्वत देकर "बग्स एंड ब्लॉसम्स" ने एक 'समाधान' प्रस्तावित किया कि अन्य कंपनियां जीवन रूपों की पुनरुत्पादन के आधार के रूप में 'यौन प्रजनन' का उपयोग करना शुरू कर दें। "बग्स एंड ब्लॉसम्स" ही वह पहली कंपनी थी जिसने यौन प्रजनन के लिए खाका तैयार किया था।

जैसा कि अपेक्षित था, जैविक इंजीनियरिंग प्रक्रिया के लिए पेटेंट लाइसेंस

205

(फुटनोट) स्वयं-पुनर्जीवित होने वाले जानवरों के लिए उत्तेजना-प्रतिक्रिया मैथुन, कोशिकीय विभाजन और पूर्व-निर्धारित विकास पैटर्न को स्थापित करने के लिए आवश्यक चीजें भी "बग्स एंड ब्लॉसम्स" के स्वामित्व में थीं।

अगले कुछ मिलियन वर्षों में ऐसे कानून पारित किए गए जिनमें अन्य जैविक प्रौद्योगिकी कंपनियों के लिए इन कार्यक्रमों को खरीदना अनिवार्य कर दिया गया। इन्हें सभी मौजूदा जीव-जंतुओं की कोशिकीय संरचना में अंकित करना आवश्यक था। अन्य जैव प्रौद्योगिकी कंपनियों के लिए इस तरह के अटपटे और अव्यावहारिक विचार को साकार करना एक बहुत ही महंगा काम बन गया।

इससे पूरे उद्योग में भ्रष्टाचार और पतन हुआ। अंततः, 'भोजन और यौन संबंध' का विचार इसने जैव प्रौद्योगिकी उद्योग को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया, जिसमें "बग्स एंड ब्लॉसम्स" भी शामिल है। कृत्रिम जीवन रूपों का बाज़ार गायब हो जाने के कारण पूरा उद्योग ही समाप्त हो गया। परिणामस्वरूप, जब कोई प्रजाति विलुप्त हो जाती है, तो उसे प्रतिस्थापित करने का कोई तरीका नहीं होता क्योंकि नए जीवन रूपों को बनाने की तकनीक खो चुकी होती है। स्पष्ट रूप से, यह तकनीक पृथ्वी पर कभी ज्ञात नहीं थी, और शायद कभी ज्ञात नहीं होगी। यहां से दूर कुछ ग्रहों पर अभी भी कंप्यूटर फाइलें मौजूद हैं जिनमें जैविक प्रक्रियाओं का रिकॉर्ड दर्ज है।

इंजीनियरिंग। संभवतः प्रयोगशालाएँ और कंप्यूटर अभी भी कहीं मौजूद हैं। हालाँकि, उनका उपयोग करने वाला कोई नहीं है। इसलिए, आप समझ सकते हैं कि पृथ्वी पर बचे हुए जीवों की घटती संख्या की रक्षा करना द डोमेन के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

'यौन प्रजनन' तकनीक के पीछे मूल अवधारणा "चक्रीय उद्दीपन-प्रतिक्रिया जनरेटर" नामक रासायनिक/इलेक्ट्रॉनिक अंतःक्रिया का आविष्कार था। 206 (पाद टिप्पणी) यह एक प्रोग्राम किया गया आनुवंशिक तंत्र है जो प्रजनन के लिए एक सहज, आवर्ती आवेग उत्पन्न करता है। इसी तकनीक को बाद में जैविक मांसल शरीरों, जिनमें होमो सेपियन्स भी शामिल हैं, पर लागू किया गया।

प्रजनन प्रक्रिया में प्रयुक्त एक अन्य महत्वपूर्ण तंत्र, विशेष रूप से होमो सेपियन्स जैसे शरीरों में, "रासायनिक-विद्युत ट्रिगर" तंत्र का प्रत्यारोपण है।

207

(फुटनोट) शरीर में। वह "ट्रिगर" जो आईएस-बीई को मानव शरीर, या किसी भी प्रकार के "मांस शरीर" में निवास करने के लिए आकर्षित करता है, वह कृत्रिम रूप से मुद्रित इलेक्ट्रॉनिक तरंग का उपयोग है जो आईएस-बीई को आकर्षित करने के लिए "सौंदर्य संबंधी दर्द" का उपयोग करती है।

ब्रह्मांड में मौजूद हर जाल, यहाँ तक कि उन जालों में भी जिनका इस्तेमाल मुक्त रहने वाले IS-BE को पकड़ने के लिए किया जाता है, एक सौंदर्यपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक तरंग से "आकर्षित" किया जाता है। इस सौंदर्यपूर्ण तरंगदैर्ध्य से उत्पन्न संवेदनाएँ किसी भी अन्य संवेदना की तुलना में IS-BE को अधिक आकर्षित करती हैं। जब दर्द और सौंदर्य की इलेक्ट्रॉनिक तरंगें आपस में मिल जाती हैं, तो IS-BE शरीर में "फंस" जाता है।

मवेशियों और अन्य स्तनधारियों जैसे निम्न स्तर के जीवन रूपों में उपयोग किया जाने वाला "प्रजनन उत्प्रेरक" गंध ग्रंथियों से उत्सर्जित रसायनों द्वारा सक्रिय होता है, जो टेस्टोस्टेरोन या एस्ट्रोजन द्वारा उत्तेजित प्रजनन रासायनिक-विद्युत आवेगों के साथ संयुक्त होता है।

208

(पाद लेख)

ये पोषण स्तरों के साथ परस्पर क्रिया करते हैं, जिसके कारण भोजन के अभाव में जीव अधिक प्रजनन करते हैं। भुखमरी प्रजनन गतिविधि को बढ़ावा देती है ताकि वर्तमान जीव के जीवित न रह पाने की स्थिति में भविष्य में नए जन्म लेकर अस्तित्व को बनाए रखा जा सके। ये मूलभूत सिद्धांत सभी जीवों पर लागू होते हैं।

यौन सौंदर्य-दर्द की इलेक्ट्रॉनिक तरंग का दुर्बल करने वाला प्रभाव और लत

209

(फुटनोट) यही कारण है कि डोमेन के शासक वर्ग के लोग शारीरिक शरीर धारण नहीं करते। यही वजह है कि डोमेन बलों के अधिकारी केवल गुड़िया शरीरों का उपयोग करते हैं। जहाँ

तक मुझे पता है, यह तरंग ब्रह्मांड के इतिहास में अब तक निर्मित सबसे प्रभावी जालसाजी यंत्र साबित हुई है।

डोमेन और "पुराने साम्राज्य" की सभ्यताएँ, ग्रहों और प्रतिष्ठानों पर रहने वाले मानव-मानवों (आईएस-बीई) की भर्ती और उन्हें बनाए रखने के लिए इस उपकरण पर निर्भर करती हैं। ये आईएस-बीई "श्रमिक वर्ग" के प्राणी हैं जो ग्रहों पर सभी दासतापूर्ण, शारीरिक और अवांछनीय कार्य करते हैं।

जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, "पुराने साम्राज्य" और डोमेन में सभी आईएस-बीई के लिए एक बहुत ही सुव्यवस्थित और निश्चित पदानुक्रम या "वर्ग प्रणाली" है, जो इस प्रकार है:
सबसे उच्च श्रेणी के लोग "स्वतंत्र" आईएस-बीई हैं। इसका अर्थ यह है कि वे किसी भी प्रकार के शरीर के उपयोग के लिए प्रतिबंधित नहीं हैं और अपनी इच्छा से आ-जा सकते हैं, बशर्ते कि वे सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक संरचना को नष्ट या उसमें हस्तक्षेप न करें।
इस वर्ग के नीचे "सीमित" आईएस-बीई के कई स्तर हैं जो समय-समय पर किसी संस्था का उपयोग कर भी सकते हैं और नहीं भी।
प्रत्येक आईएस-बीई पर उनकी शक्ति, क्षमता और गतिशीलता की सीमा के संबंध में प्रतिबंध लगाए जाते हैं।
इनके नीचे "गुड़िया शरीर" श्रेणियां हैं, जिनमें मैं शामिल हूं। अंतरिक्ष यान के लगभग सभी अंतरिक्ष अधिकारियों और चालक दल के सदस्यों को अंतर-आकाशगंगा अंतरिक्ष में यात्रा करनी होती है। इसलिए, उनमें से प्रत्येक को हल्के, टिकाऊ पदार्थों से निर्मित शरीर प्रदान किए जाते हैं। विभिन्न प्रकार के शरीर विशेष कार्यों को सुगम बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। कुछ शरीरों में सहायक उपकरण होते हैं, जैसे कि विनिमेय उपकरण या यंत्र।
रखरखाव, खनन, रासायनिक प्रबंधन, नौवहन आदि जैसी गतिविधियाँ। इस प्रकार की शारीरिक बनावट के कई स्तर होते हैं जो पदचिह्न के रूप में भी कार्य करते हैं।
इनके नीचे सैनिक वर्ग आता है। सैनिकों को अनेक प्रकार के हथियारों और विशेष आयुधों से लैस किया जाता है, जिन्हें किसी भी प्रकार के शत्रु का पता लगाने, उससे लड़ने और उसे पराजित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कुछ सैनिकों को यांत्रिक शरीर दिए जाते हैं। अधिकांश सैनिक केवल रिमोट कंट्रोल रोबोट होते हैं, जिनका कोई वर्ग निर्धारण नहीं होता।
निम्न वर्ग के प्राणी केवल "मांस के शरीर" तक ही सीमित हैं। ज़ाहिर है, स्पष्ट कारणों से इनका अंतरिक्ष में यात्रा करना संभव नहीं है। मूलतः, मांस के शरीर गुरुत्वाकर्षण, अत्यधिक तापमान, विकिरण, वायुमंडलीय रसायनों और अंतरिक्ष के निर्वात के दबाव को सहन करने के लिए बहुत ही नाजुक होते हैं। इसके अलावा, मांस के शरीरों को भोजन, शौच, नींद, वायुमंडलीय तत्वों और वायु दाब जैसी कई व्यावहारिक असुविधाओं का सामना करना पड़ता है, जिनकी आवश्यकता गुड़िया के शरीरों को नहीं होती।

वायुमंडलीय रसायनों के एक विशिष्ट संयोजन के बिना अधिकांश मांसल शरीर कुछ ही मिनटों में दम घुटकर मर जाएंगे।

दो-तीन दिनों के बाद, शरीर के अंदर और बाहर मौजूद जीवाणुओं के कारण तीव्र दुर्गंध उत्पन्न होने लगती है। अंतरिक्ष यान में किसी भी प्रकार की दुर्गंध स्वीकार्य नहीं होती।
शरीर बहुत सीमित तापमान सीमा को ही सहन कर सकता है, जबकि अंतरिक्ष में तापमान का अंतर बहुत अधिक होता है।
तापमान सेकंडों में सैकड़ों डिग्री तक बदल सकता है। बेशक, सैन्य सेवा के लिए मांस के शरीर बिल्कुल बेकार होते हैं। हाथ में पकड़े कैमरे से एक ही गोली,
इलेक्ट्रॉनिक ब्लास्ट गन पल भर में मांस के शरीर को जहरीले वाष्प के बादल में बदल देती है।
आईएस-बीई जो मांसल शरीरों में निवास करते हैं, उन्होंने अपनी जन्मजात क्षमता और शक्ति का अधिकांश भाग खो दिया है। हालांकि सैद्धांतिक रूप से इन क्षमताओं को पुनः प्राप्त करना या पुनर्स्थापित करना संभव है, लेकिन डोमेन द्वारा कोई व्यावहारिक साधन खोजा या अधिकृत नहीं किया गया है।
भले ही द डोमेन के अंतरिक्ष यान एक दिन में खरबों "प्रकाश वर्ष" की दूरी तय कर लेते हैं, 210 (फुटनोट), आकाशगंगाओं के बीच की दूरी तय करने में लगने वाला समय काफी अधिक है, और एक मिशन के आदेशों को पूरा करने में लगने वाले समय की तो बात ही छोड़िए, जिसमें हजारों साल लग सकते हैं। जैविक शरीर बहुत कम समय तक ही जीवित रहते हैं - अधिकतम 60 से 150 वर्ष तक - जबकि गुड़िया के शरीरों का लगभग अनिश्चित काल तक पुन: उपयोग और मरम्मत की जा सकती है।
इस ब्रह्मांड में जैविक शरीरों का पहला विकास लगभग चौहत्तर खरब वर्ष पूर्व शुरू हुआ। विभिन्न प्रकार के शरीरों का निर्माण करना और उनमें निवास करना आईएस-बीई के लिए तेजी से एक चलन बन गया, जिसके कई कुटिल कारण थे: विशेष रूप से मनोरंजन के लिए। शरीर के माध्यम से विभिन्न शारीरिक संवेदनाओं का अप्रत्यक्ष रूप से अनुभव करना।
तब से लेकर अब तक, आईएस-बीई और शरीरों के बीच संबंधों में लगातार "अवनति" होती रही है। जैसे-जैसे आईएस-बीई इन शरीरों के साथ खेलते रहे, कुछ ऐसी तरकीबें अपनाई गईं जिनसे आईएस-बीई शरीर के अंदर फंस जाते थे और फिर बाहर नहीं निकल पाते थे।
यह मुख्य रूप से ऐसे शरीर बनाकर किया गया था जो देखने में मजबूत लगते थे, लेकिन वास्तव में बहुत नाजुक थे। एक आईएस-बीई ने ऊर्जा उत्पन्न करने की अपनी प्राकृतिक

शक्ति का उपयोग करते हुए, गलती से किसी शरीर के संपर्क में आने पर उसे घायल कर दिया। आईएस-बीई

इस नाज़ुक शरीर को चोट पहुँचाने के लिए वे पश्चाताप से भर गए। अगली बार जब उनका सामना किसी शरीर से हुआ, तो वे उसके प्रति "सावधान" रहने लगे। ऐसा करते हुए, आईएस-बीई अपनी शक्ति को कम कर लेते थे या बिल्कुल भी इस्तेमाल नहीं करते थे ताकि शरीर को चोट न पहुँचे। इस तरह की छल-कपट की एक लंबी और कपटपूर्ण कहानी, साथ ही इसी तरह की अन्य दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारण अंततः बड़ी संख्या में आईएस-बीई स्थायी रूप से शरीरों में फँस गए।

निःसंदेह, यह कुछ आईएस-बीई के लिए एक लाभदायक व्यवसाय बन गया, जिन्होंने इस स्थिति का लाभ उठाकर दूसरों को गुलाम बना लिया। परिणामस्वरूप, अरबों वर्षों तक गुलामी की प्रथा चलती रही और आज भी जारी है।

अंततः, व्यक्तिगत परिचालन स्वतंत्रता और ऊर्जा सृजन की क्षमता बनाए रखने की आईएस-बीई की घटती क्षमता के परिणामस्वरूप एक विशाल और सावधानीपूर्वक संरक्षित पदानुक्रम या वर्ग प्रणाली का उदय हुआ। प्रत्येक वर्ग के प्रतीक के रूप में शरीरों का उपयोग "पुराने साम्राज्य" के साथ-साथ डोमेन में भी किया जाता है।

इस ब्रह्मांड की आकाशगंगाओं में मौजूद अधिकांश आईएस-बीई किसी न किसी प्रकार के मांसल शरीर में निवास करते हैं। इन शरीरों की संरचना, स्वरूप, कार्यप्रणाली और निवास स्थान उस ग्रह के गुरुत्वाकर्षण, वातावरण और जलवायु परिस्थितियों के अनुसार भिन्न होते हैं, जिस पर वे निवास करते हैं। शरीर के प्रकार काफी हद तक उस तारे के प्रकार और आकार, तारे से दूरी, भौगोलिक स्थिति और अन्य कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं, जिसके चारों ओर ग्रह परिक्रमा करता है।

ग्रह के वायुमंडलीय घटक।

औसतन, ये तारे और ग्रह वर्गीकरण के उन स्तरों में आते हैं जो पूरे ब्रह्मांड में काफी मानक हैं। उदाहरण के लिए, पृथ्वी है

इसे मोटे तौर पर "सूर्य प्रकार 12, श्रेणी 7 ग्रह" के रूप में पहचाना गया है। यानी एक भारी गुरुत्वाकर्षण वाला, नाइट्रोजन/ऑक्सीजन वायुमंडल वाला ग्रह, 211 (पाद टिप्पणी) जिसमें जैविक जीवन रूप मौजूद हैं।

एक पीले, मध्यम आकार के, कम ऊँचाई वाले पेड़ के निकट

विकिरण सूर्य या "टाइप 12 तारा"। उचित
अंग्रेजी भाषा में खगोलीय शब्दावली की अत्यधिक सीमाओं के कारण पदनामों का सटीक अनुवाद करना कठिन है।
जीवन रूपों की उतनी ही विविधता है जितनी समुद्र तट पर रेत के कण होते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि "बग्स" जैसी लाखों कंपनियों द्वारा कितने अलग-अलग जीव और शरीर के प्रकार बनाए गए होंगे।

चौहत्तर खरब वर्षों के दौरान असंख्य ग्रहीय प्रणालियों के लिए "और फूल खिलते हैं!"
(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

जब एयरल ने मुझे यह "कहानी" सुनाना खत्म किया, तो काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा, मैं अपने दिमाग में इन सब बातों को समझने की कोशिश कर रहा था। क्या एयरल रात भर विज्ञान कथा और काल्पनिक कहानियां पढ़ रही थी? वह मुझे इतनी अविश्वसनीय बात क्यों सुनाएगी? अगर मेरे सामने 40 इंच लंबा, भूरे रंग की "त्वचा" वाला और हर हाथ-पैर में तीन उंगलियां वाला एक एलियन न बैठा होता, तो मैं इस कहानी के एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करता!

पीछे मुड़कर देखें तो, एयरल द्वारा मुझे यह जानकारी दिए जाने के बाद से बीते 60 वर्षों में, पृथ्वी के चिकित्सकों ने एयरल द्वारा बताई गई कुछ जैविक इंजीनियरिंग तकनीकों को यहीं पृथ्वी पर विकसित करना शुरू कर दिया है। जैसे कि हार्ट बाईपास सर्जरी, क्लोनिंग, टेस्ट ट्यूब बेबी, अंग प्रत्यारोपण, प्लास्टिक सर्जरी, जीन, गुणसूत्र इत्यादि।

एक बात तो पक्की है: तब से मैंने किसी कीड़े या फूल को कभी भी पहले की तरह नहीं देखा, उत्पत्ति की कहानी में मेरे धार्मिक विश्वास की तो बात ही छोड़ दीजिए।

अध्याय ग्यारह

विज्ञान का एक पाठ

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"इस साक्षात्कार की प्रतिलिपि शब्दशः है। इसमें मैं कुछ और नहीं जोड़ सकता। इसमें सब कुछ स्पष्ट है।"

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 29 जुलाई 1947, पहला सत्र।

"आज एयरल ने मुझे कुछ बहुत ही तकनीकी बातें बताईं। मैंने कुछ नोट्स बना लिए ताकि मुझे याद रहे और मैं उसकी कही हुई बातों को यथासंभव सटीक रूप से दोहरा सकूँ। उसने वैज्ञानिक ज्ञान के बारे में एक उपमा से शुरुआत की:

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर जोहान्स गुटेनबर्ग जैसे लोग होते तो पृथ्वी पर कितनी प्रगति हो सकती थी?

212

(फुटनोट), सर आइजैक न्यूटन, बेंजामिन फ्रैंकलिन, जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर,

213

(फुटनोट) निकोला टेस्ला, जोनास साल्क,

214

(फुटनोट) और रिचर्ड ट्रेविथिक,215 (फुटनोट) और हजारों ऐसे ही प्रतिभाशाली और आविष्कारक आज जीवित हैं?

ज़रा सोचिए, अगर ऐसे लोग कभी न मरते तो तकनीकी क्षेत्र में कितनी उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती थीं? अगर उन्हें स्मृतिभ्रंश न दिया जाता और उन्हें अपना सारा ज्ञान भुलाने के लिए मजबूर न किया जाता तो क्या होता? अगर वे हमेशा सीखते और काम करते रहते तो क्या होता?

यदि इन जैसे अमर आध्यात्मिक प्राणी मौजूद होते तो प्रौद्योगिकी और सभ्यता का कौन सा स्तर प्राप्त किया जा सकता था?

क्या उन्हें अरबों या खरबों वर्षों तक एक ही स्थान और एक ही समय पर सृजन जारी रखने की अनुमति दी जानी चाहिए?
संक्षेप में, द डोमेन एक ऐसी सभ्यता है जो अपेक्षाकृत खरबों वर्षों से अस्तित्व में है।
निरंतर प्रगति। लगभग हर कल्पनीय और कल्पना से परे अध्ययन के क्षेत्र में ज्ञान का संचय, परिष्करण और सुधार किया गया है।
मूलतः, अस्तित्व-भ्रम या कल्पनाओं की परस्पर क्रिया ने भौतिक ब्रह्मांड की संरचना का निर्माण किया – सूक्ष्म जगत और बृहत् जगत। ब्रह्मांड का प्रत्येक कण अस्तित्व-भ्रम द्वारा परिकल्पित और अस्तित्व में लाया गया है। सब कुछ एक विचार से उत्पन्न हुआ है – एक ऐसा विचार जिसका कोई भार, आकार या अंतरिक्ष में कोई स्थान नहीं है।
अंतरिक्ष में धूल का हर कण, चाहे वह सबसे छोटे उप-परमाणु कण के आकार का हो, सूर्य के आकार का हो या कई आकाशगंगाओं के आकार के विशाल बादल के आकार का, एक विचार की शून्यता से उत्पन्न हुआ है। यहां तक कि सबसे छोटी, व्यक्तिगत कोशिकाएं भी एक सूक्ष्मजीव इकाई को अत्यंत छोटे स्थानों को महसूस करने और उनमें से गुजरने में सक्षम बनाने के लिए बनाई और समन्वित की गई थीं। ये भी एक 'अस्तित्व में मौजूद' (IS-BE) द्वारा सोचे गए विचार से उत्पन्न हुई हैं।
आप और पृथ्वी पर मौजूद प्रत्येक अस्तित्व ने इस ब्रह्मांड की रचना में भाग लिया है। भले ही अब आप मांस से बने एक नाजुक शरीर में सिमटे हुए हैं; आप अपने ग्रह के एक तारे के चारों ओर केवल 65 चक्कर ही लगाते हैं; आपको एक जबरदस्त विद्युत आघात पहुँचाया गया है। आपकी स्मृति मिटाने के लिए उपचार; आपको हर जन्म में सब कुछ नए सिरे से सीखना होगा; इन सभी परिस्थितियों के बावजूद, आप वही हैं जो आप हैं और हमेशा वही रहेंगे। और, अपने भीतर गहराई से, आप अब भी जानते हैं कि आप कौन हैं और आप क्या जानते हैं। आप अब भी अपने मूल स्वरूप में हैं।
भला इस विलक्षण प्रतिभा को भला कैसे समझा जा सकता है? एक ऐसा बच्चा जो तीन साल की उम्र में बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के पियानो पर संगीत बजाता है? यह असंभव है, अगर उन्होंने हजारों जन्मों में पियानो के सामने बैठकर जो कुछ सीखा है, उसे याद न रखा हो,

चाहे वो समय कितना भी पुराना हो या दूर के ग्रहों पर। शायद उन्हें खुद भी न पता हो कि उन्हें यह कैसे आता है। बस उन्हें आता है।

मानवजाति ने पिछले 100 वर्षों में उससे कहीं अधिक प्रौद्योगिकी का विकास किया है जितना कि पिछले 2,000 वर्षों में किया गया था। क्यों?

इसका उत्तर सरल है: मानव जाति के मन और उसके कार्यों पर "पुराने साम्राज्य" का प्रभाव इस क्षेत्र के आने से कम हो गया है।

एक पुनर्जागरण

216

पृथ्वी पर आविष्कारों की शुरुआत 1250 ईस्वी में सौर मंडल में "पुराने साम्राज्य" के अंतरिक्ष बेड़े के विनाश के साथ हुई। अगले 500 वर्षों के दौरान, पृथ्वी में स्वायत्तता और स्वतंत्रता पुनः प्राप्त करने की क्षमता हो सकती है, लेकिन केवल उसी हद तक जब मानव जाति पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई की केंद्रित प्रतिभा का उपयोग करके स्मृतिलोप की समस्या का समाधान कर सके।

हालांकि, एक चेतावनी यह है कि इस ग्रह पर निर्वासित आईएस-बीई की आविष्कारशील क्षमता पृथ्वी की आबादी के आपराधिक तत्वों द्वारा बुरी तरह प्रभावित हुई है। विशेष रूप से, राजनेता, युद्ध भड़काने वाले और गैर-जिम्मेदार भौतिक विज्ञानी जो परमाणु बम, रसायन, रोग और सामाजिक अराजकता जैसे असीमित हथियार बनाते हैं। इनमें पृथ्वी पर सभी जीवन रूपों को हमेशा के लिए नष्ट करने की क्षमता है।

पिछले दो वर्षों में पृथ्वी पर जिन अपेक्षाकृत छोटे विस्फोटों का परीक्षण और उपयोग किया गया है, उनमें भी पर्याप्त मात्रा में इस्तेमाल किए जाने पर संपूर्ण जीवन को नष्ट करने की क्षमता है। बड़े हथियार एक ही विस्फोट में वैश्विक वायुमंडल की सारी ऑक्सीजन को खत्म कर सकते हैं!

217

(पाद लेख)

इसलिए, पृथ्वी को प्रौद्योगिकी से नष्ट होने से बचाने के लिए जिन मूलभूत समस्याओं का समाधान करना आवश्यक है, वे सामाजिक और मानवीय समस्याएं हैं। पृथ्वी के महानतम वैज्ञानिक, गणितीय या यांत्रिक प्रतिभा के बावजूद, इन समस्याओं पर कभी ध्यान नहीं दे पाए हैं।

इसलिए, पृथ्वी या मानवता के भविष्य को बचाने के लिए वैज्ञानिकों की ओर मत देखिए। कोई भी तथाकथित "विज्ञान" जो पूरी तरह से प्रतिमान पर आधारित है, वह व्यर्थ है।

218

(फुटनोट) यह मानना कि अस्तित्व केवल ऊर्जा और अंतरिक्ष में गतिमान वस्तुओं से बना है, विज्ञान नहीं है। ऐसे लोग एक व्यक्ति द्वारा उत्पन्न सृजनात्मक चिंगारी और उन सभी सृजनात्मक शक्तियों के सामूहिक कार्य की पूर्णतः अनदेखी करते हैं जो निरंतर भौतिक ब्रह्मांड और समस्त ब्रह्मांडों का निर्माण करते हैं। प्रत्येक विज्ञान उस सापेक्षिक प्रभावहीन या विनाशकारी बना रहेगा जिस हद तक वह सापेक्षिक प्रभाव को अनदेखा करता है या उसका अवमूल्यन करता है।

उस आध्यात्मिक चिंगारी का महत्व जो समस्त सृष्टि और जीवन को प्रज्वलित करती है।

123

दुर्भाग्यवश, इस अज्ञानता को "पुराने साम्राज्य" द्वारा मनुष्यों में बहुत सावधानीपूर्वक और जबरदस्ती से बैठाया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस ग्रह पर रहने वाले प्राणी अंतरिक्ष, ऊर्जा, पदार्थ और समय, या किसी अन्य घटक को बनाने की अपनी जन्मजात क्षमता को पुनः प्राप्त न कर सकें।
जब तक अमर, शक्तिशाली, आध्यात्मिक "स्वयं" की जागरूकता को नजरअंदाज किया जाता रहेगा, मानवता अपने ही, आत्म-विनाश के दिन तक कैद रहेगी।
विनाश और विस्मृति।
जिस प्रकार आप अगरबत्ती जलाने वाले तांत्रिक के मंत्रों पर भरोसा नहीं कर सकते, उसी प्रकार भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों पर भरोसा करके सृष्टि की मूलभूत शक्तियों को समझना असंभव है। इन दोनों का परिणाम जाल में फंसना और विस्मृति है। वैज्ञानिक अवलोकन करने का दिखावा करते हैं, लेकिन वे केवल यह मान लेते हैं कि वे देख रहे हैं और इसे तथ्य कह देते हैं। अंधे व्यक्ति की तरह, एक वैज्ञानिक तब तक देखना नहीं सीख सकता जब तक उसे यह अहसास न हो जाए कि वह अंधा है। पृथ्वी विज्ञान के "तथ्यों" में सृष्टि का स्रोत शामिल नहीं है। उनमें केवल सृष्टि का परिणाम या उप-उत्पाद शामिल हैं। विज्ञान के "तथ्यों" में अस्तित्व के लगभग अनंत अतीत के अनुभवों की कोई स्मृति शामिल नहीं है।
सृष्टि और अस्तित्व का सार सूक्ष्मदर्शी या दूरबीन के लेंस से या भौतिक ब्रह्मांड के किसी अन्य माप से नहीं पाया जा सकता। न ही किसी फूल की सुगंध को, न ही किसी बिछड़े प्रेमी के दर्द को, मीटर और कैलिपर से समझा जा सकता है।
ईश्वर की सृजनात्मक शक्ति और क्षमता के बारे में आप जो कुछ भी जान सकते हैं, वह सब आपके भीतर ही पाया जा सकता है - एक अमर आध्यात्मिक प्राणी के रूप में।
एक अंधा व्यक्ति दूसरों को प्रकाश के स्पेक्ट्रम में मौजूद लगभग अनंत विविधताओं को देखना कैसे सिखा सकता है? यह सोचना कि कोई व्यक्ति 'है-हो' की प्रकृति को समझे बिना ब्रह्मांड को समझ सकता है, उतना ही बेतुका है जितना यह मानना कि एक कलाकार अपनी ही कैनवास पर रंग का एक छोटा सा धब्बा है। या, यह सोचना कि बैले शू का फीता कोरियोग्राफर की दृष्टि है, या नर्तकी की सुंदरता है, या उद्घाटन समारोह की रोमांचक अनुभूति है।

आध्यात्मिक अध्ययन को धार्मिक माध्यमों से विचार नियंत्रण अभियान द्वारा बाधित किया गया है।

वे अंधविश्वासों को मनुष्यों के मन में बिठा देते हैं। इसके विपरीत, आत्मा और मन का अध्ययन

विज्ञान ने इसे प्रतिबंधित कर दिया है, क्योंकि विज्ञान भौतिक ब्रह्मांड में मापनीय न होने वाली किसी भी चीज़ को नकार देता है। विज्ञान पदार्थ का धर्म है। यह पदार्थ की पूजा करता है। विज्ञान का सिद्धांत यह है कि सृष्टि ही सब कुछ है और सृष्टिकर्ता कुछ भी नहीं। धर्म कहता है कि सृष्टिकर्ता ही सब कुछ है और सृष्टि कुछ भी नहीं। ये दो चरम विचार एक जेल की कोठरी की सलाखों के समान हैं। ये सभी घटनाओं को एक अंतःक्रियात्मक समग्र इकाई के रूप में देखने से रोकते हैं।

सृष्टि के स्रोत, 'अस्तित्व' को जाने बिना सृष्टि का अध्ययन व्यर्थ है। जब आप विज्ञान द्वारा परिकल्पित ब्रह्मांड के किनारे तक पहुँचते हैं, तो आप अंधकारमय, उदासीन अंतरिक्ष और निर्जीव, निरंतर बल की खाई में गिर जाते हैं। पृथ्वी पर, आपको यह विश्वास दिलाया गया है कि मन और आत्मा के सागर भयानक, डरावने राक्षसों से भरे हुए हैं जो आपको जीवित ही खा जाएँगे यदि आप उस सीमा रेखा को पार करने का साहस करते हैं।
अंधविश्वास।
पुराने साम्राज्य की जेल प्रणाली का निहित स्वार्थ आपको अपनी आत्मा को देखने से रोकना है। उन्हें डर है कि आप अपनी स्मृति में उन गुलाम मालिकों को देख लेंगे जिन्होंने आपको कैद कर रखा है। यह जेल आपके मन में बनी परछाइयों से बनी है। ये परछाइयाँ झूठ, दर्द, हानि और भय से बनी हैं।
सभ्यता के सच्चे प्रतिभाशाली वे लोग हैं जो अन्य लोगों को उनकी स्मृति पुनः प्राप्त करने और आत्म-बोध एवं आत्मनिर्णय को पुनः प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। यह समस्या व्यवहार पर नैतिक नियमन लागू करने या रहस्य, आस्था, मादक पदार्थों, हथियारों या किसी अन्य दास समाज के सिद्धांतों के माध्यम से प्राणियों को नियंत्रित करने से हल नहीं होती। और निश्चित रूप से बिजली के झटके और सम्मोहन के आदेशों के प्रयोग से तो बिल्कुल नहीं!
पृथ्वी और इस पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी का अस्तित्व सदियों से अर्जित कौशलों की स्मृति को पुनः प्राप्त करने की क्षमता पर निर्भर करता है; अपने भीतर के सार को पुनः प्राप्त करने पर। ऐसी कला, विज्ञान या प्रौद्योगिकी की कल्पना "पुराने साम्राज्य" में कभी नहीं की गई थी।

अन्यथा, वे उस "समाधान" का सहारा नहीं लेते जिसने आपको पृथ्वी पर इस वर्तमान स्थिति तक पहुँचाया है।
न ही डोमेन द्वारा ऐसी कोई तकनीक विकसित की गई है। हाल तक, स्मृतिभ्रंश से ग्रस्त आईएस-बीई के पुनर्वास की आवश्यकता नहीं पड़ी थी। इसलिए,

इस समस्या को हल करने पर आज तक किसी ने काम नहीं किया है। दुर्भाग्यवश, अभी तक द डोमेन के पास इसका कोई समाधान नहीं है।
डोमेन एक्सपेडिशनरी फोर्स के कुछ अधिकारियों ने अपने अवकाश के समय में पृथ्वी को प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने का दायित्व स्वयं पर लिया है। ये अधिकारी अपने "शरीर" को अंतरिक्ष स्टेशन पर छोड़ देते हैं और एक आईएस-बीई के रूप में पृथ्वी पर किसी जैविक शरीर में प्रवेश करते हैं या उस पर नियंत्रण कर लेते हैं। कुछ मामलों में, एक अधिकारी ड्यूटी पर रहते हुए भी एक साथ कई अन्य शरीरों में निवास और नियंत्रण कर सकता है।
यह एक बेहद खतरनाक और साहसिक कार्य है। ऐसे मिशन को पूरा करने और सफलतापूर्वक बेस पर लौटने के लिए एक बेहद सक्षम आईएस-बीई की आवश्यकता होती है। एक अधिकारी जिसने हाल ही में अपने आधिकारिक कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए यह कार्य किया, पृथ्वी पर इलेक्ट्रॉनिक्स के आविष्कारक निकोला टेस्ला के नाम से जाना जाता है।
219 (फुटनोट)
हालांकि यह मेरे मिशन आदेशों का हिस्सा नहीं है, मेरा इरादा पृथ्वी पर वैज्ञानिक और मानवीय प्रगति को आगे बढ़ाने के आपके प्रयासों में आपकी सहायता करना है। मेरा इरादा अन्य आईएस-बीई को स्वयं की सहायता करने में मदद करना है। पृथ्वी पर स्मृतिलोप की समस्या को हल करने के लिए आपको कहीं अधिक उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ-साथ सामाजिक स्थिरता की भी आवश्यकता होगी ताकि अनुसंधान के लिए पर्याप्त समय मिल सके।
शरीर से आईएस-बीई को मुक्त करने और आईएस-बीई के मन को स्मृतिभ्रंश से मुक्त करने के लिए तकनीकों का विकास करना।
हालाँकि डोमेन की इसमें दीर्घकालिक रुचि है
पृथ्वी को एक उपयोगी ग्रह बनाए रखने के लिए, इसके पास कोई साधन नहीं है।
पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के अलावा अन्य मानव आबादी में हमारी विशेष रुचि है। हम विनाश को रोकने के साथ-साथ वैश्विक जीवमंडल, जलमंडल और वायुमंडल के बुनियादी ढांचे को बनाए रखने वाली प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने में रुचि रखते हैं।

इस उद्देश्य से, आप बहुत सावधानीपूर्वक और गहन जांच करने पर पाएंगे कि मेरे अंतरिक्ष यान में कई ऐसी तकनीकें हैं जो पृथ्वी पर अभी तक मौजूद नहीं हैं। यदि आप इस यान के कुछ हिस्सों को अध्ययन के लिए विभिन्न वैज्ञानिकों को वितरित करते हैं, तो वे इसकी रिवर्स इंजीनियरिंग कर सकेंगे।

220

(फुटनोट) कुछ प्रौद्योगिकी इस हद तक कि पृथ्वी पर इन घटकों को दोहराने के लिए आवश्यक कच्चा माल उपलब्ध है।

126

कुछ विशेषताएं अस्पष्ट होंगी। अन्य विशेषताओं की प्रतिकृति नहीं बनाई जा सकती क्योंकि पृथ्वी के पास उन्हें दोहराने के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं।
यह बात विशेष रूप से शिल्प के निर्माण में प्रयुक्त धातुओं के बारे में सच है। ये धातुएँ न केवल पृथ्वी पर मौजूद नहीं हैं, बल्कि इन धातुओं के उत्पादन के लिए आवश्यक शोधन प्रक्रिया को विकसित होने में अरबों वर्ष लगे।
यह नेविगेशन सिस्टम के लिए भी सच है जिसके लिए एक आईएस-बीई की आवश्यकता होती है जिसकी अपनी व्यक्तिगत तरंगदैर्ध्य रही हो।
विशेष रूप से यान के "न्यूरल नेटवर्क" के अनुरूप। 221 (फुटनोट) यान के पायलट के पास ऐसे यान को संचालित करने के लिए ऊर्जा, इच्छाशक्ति, अनुशासन, प्रशिक्षण और बुद्धिमत्ता का बहुत उच्च कोटि का कौशल होना चाहिए। पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई इस विशेषज्ञता के लिए अक्षम हैं क्योंकि इसके लिए विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए बनाए गए कृत्रिम शरीर का उपयोग आवश्यक है।
पृथ्वी के कुछ चुनिंदा वैज्ञानिक, जिनमें से कुछ ब्रह्मांड के इतिहास के सबसे प्रतिभाशाली दिमागों में से हैं, जब वे यान के घटकों की जांच करेंगे तो उन्हें इस तकनीक की याद आ जाएगी। ठीक वैसे ही जैसे पृथ्वी पर कुछ वैज्ञानिक और भौतिक विज्ञानी बिजली जनरेटर, आंतरिक दहन और भाप से चलने वाले इंजन, प्रशीतन, विमान, एंटीबायोटिक्स और आपके युग के अन्य उपकरणों को फिर से बनाने का तरीका "याद" कर पाए हैं।
सभ्यता के साथ-साथ, वे मेरे शिल्प में अन्य महत्वपूर्ण तकनीकों को भी पुनः खोज लेंगे। निम्नलिखित विशिष्ट प्रणालियाँ मेरी कला में समाहित हैं जिनमें उपयोगी घटक शामिल हैं:
1) शिल्प की दीवारों के भीतर सूक्ष्म तारों या रेशों 222 (फुटनोट) का एक वर्गीकरण है जो संचार, सूचना भंडारण, कंप्यूटर फ़ंक्शन और स्वचालित नेविगेशन जैसी चीजों को नियंत्रित करता है।
2) प्रकाश, उप-प्रकाश और अति-प्रकाश स्पेक्ट्रम का पता लगाने और देखने के लिए एक ही वायरिंग का उपयोग किया जाता है।
223
(पाद लेख)

3) शिल्प के आंतरिक भाग के कपड़े

224

(फुटनोट) इस समय पृथ्वी पर मौजूद किसी भी अन्य चीज़ से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं और इनके सैकड़ों या हजारों अनुप्रयोग हैं।

4) आपको ऊर्जा के एक रूप के रूप में प्रकाश कणों या तरंगों को बनाने, बढ़ाने और प्रवाहित करने के तंत्र भी मिलेंगे।

225

(पाद लेख)

127

डोमेन फोर्सेज के एक अधिकारी, पायलट और इंजीनियर के रूप में, मुझे इस विमान के विस्तृत संचालन या निर्माण के बारे में, मेरे द्वारा अभी बताई गई जानकारी के अलावा, किसी भी तरह से चर्चा करने या बताने की अनुमति नहीं है। हालाँकि, मैं
मुझे पूरा विश्वास है कि पृथ्वी पर कई सक्षम इंजीनियर मौजूद हैं जो इन संसाधनों का उपयोग करके उपयोगी तकनीक विकसित करेंगे।
मैं ये जानकारी आपको इस उम्मीद में दे रहा हूं कि इससे डोमेन के व्यापक हित की पूर्ति होगी।"

अध्याय बारह

अमरता का एक पाठ

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

मुझे लगता है कि निम्नलिखित प्रतिलेख काफी हद तक स्वतः स्पष्ट है।

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 30 जुलाई 1947, पहला सत्र।

अमर आध्यात्मिक सत्ताएँ, जिन्हें मैं सुविधा के लिए "अस्तित्व-सत्ता" कहता हूँ, भ्रमों का स्रोत और निर्माता हैं। इनमें से प्रत्येक, व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से, अपनी मूल, बंधनरहित अवस्था में, एक शाश्वत, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ सत्ता है।

आईएस-बीई किसी स्थान की कल्पना करके स्थान का निर्माण करते हैं। उनके और कल्पित स्थान के बीच की दूरी को ही हम स्थान कहते हैं। एक आईएस-बीई अन्य आईएस-बीई द्वारा निर्मित स्थान और वस्तुओं को अनुभव कर सकता है।

आईएस-बीई भौतिक ब्रह्मांडीय सत्ताएँ नहीं हैं। वे ऊर्जा और भ्रम का स्रोत हैं। आईएस-बीई अंतरिक्ष या समय में स्थित नहीं हैं, लेकिन अंतरिक्ष का निर्माण कर सकते हैं, अंतरिक्ष में कणों को स्थापित कर सकते हैं, ऊर्जा उत्पन्न कर सकते हैं, कणों को विभिन्न रूपों में ढाल सकते हैं, रूपों की गति का कारण बन सकते हैं और रूपों को सजीव कर सकते हैं। आईएस-बीई द्वारा सजीव किए गए किसी भी रूप को जीवन कहा जाता है।

एक 'आईएस-बी' यह तय कर सकता है कि वह अंतरिक्ष या समय में स्थित है, और वह स्वयं एक वस्तु है, या किसी अन्य प्रकार का भ्रम है जो उसने स्वयं या किसी अन्य 'आईएस-बी' द्वारा बनाया है।

भ्रम पैदा करने का नुकसान यह है कि भ्रम को लगातार पैदा करना पड़ता है। अगर ऐसा नहीं किया गया तो...

निरंतर सृजन होता है, फिर लुप्त हो जाता है। निरंतर सृजन

किसी भ्रम को बनाए रखने के लिए उसके हर विवरण पर लगातार ध्यान देना आवश्यक होता है।

आईएस-बीई की एक सामान्य विशेषता ऊब से बचने की इच्छा प्रतीत होती है। अन्य आईएस-बीई के साथ अंतःक्रिया के बिना, और अन्य आईएस-बीई द्वारा उत्पन्न अप्रत्याशित गति, नाटक, और अनपेक्षित इरादों और भ्रमों से रहित एक आत्मा आसानी से ऊब जाती है। अगर आप अपनी इच्छा से कुछ भी कल्पना कर सकें, सब कुछ महसूस कर सकें और कुछ भी घटित करवा सकें तो क्या होगा? अगर आप कुछ और कर ही न सकें तो क्या होगा? अगर आपको हर खेल का नतीजा और हर सवाल का जवाब हमेशा पता हो तो क्या होगा? क्या आप ऊब जाएंगे?

आईएस-बीई का संपूर्ण अतीत कालखंड अथाह है, भौतिक ब्रह्मांड के समय के संदर्भ में लगभग अनंत है। आईएस-बीई के लिए कोई मापने योग्य "शुरुआत" या "अंत" नहीं है। वे बस एक शाश्वत वर्तमान में विद्यमान हैं।

आईएस-बीई की एक और सामान्य विशेषता यह है कि दूसरों द्वारा अपने ही भ्रमों की प्रशंसा पाना उन्हें बहुत अच्छा लगता है। यदि वांछित प्रशंसा नहीं मिलती, तो आईएस-बीई प्रशंसा पाने के प्रयास में भ्रम का निर्माण करता रहता है। एक तरह से कहें तो, संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड अप्रशंसित भ्रमों से बना है।

इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति व्यक्तिगत, मायावी स्थानों के निर्माण से हुई। ये स्थान 'अस्तित्व-अस्तित्व' के "घर" थे। कभी-कभी एक ब्रह्मांड दो या दो से अधिक 'अस्तित्व-अस्तित्व' द्वारा भ्रमों की सहयोगात्मक रचना होता है। 'अस्तित्व-अस्तित्व' की बहुलता और उनके द्वारा निर्मित ब्रह्मांड कभी-कभी आपस में टकराते हैं, मिश्रित हो जाते हैं या इस हद तक विलीन हो जाते हैं कि कई 'अस्तित्व-अस्तित्व' एक ब्रह्मांड के सह-निर्माण में भागीदार बन जाते हैं।

अहंकारी लोग खेल खेलने के लिए अपनी क्षमता को कम कर लेते हैं। अहंकारी लोग सोचते हैं कि कोई भी खेल न होने से बेहतर है कि कोई खेल हो। वे खेल खेलने के लिए दर्द, पीड़ा, मूर्खता, अभाव और हर तरह की अनावश्यक और अवांछनीय परिस्थितियों को सहन करेंगे। यह दिखावा करना कि व्यक्ति सब कुछ नहीं जानता, सब कुछ नहीं देखता और सब कुछ का कारण नहीं है, खेल खेलने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ बनाने का एक तरीका है: अज्ञात,

स्वतंत्रताएँ, बाधाएँ और/या विरोधी और लक्ष्य। अंततः, खेल खेलना समस्या का समाधान करता है।

ऊब।

130

इस प्रकार, इस ब्रह्मांड के सभी अंतरिक्ष, आकाशगंगाएँ, सूर्य, ग्रह और भौतिक घटनाएँ, जिनमें जीवन रूप, स्थान और घटनाएँ शामिल हैं, जो कि IS-BEs द्वारा बनाई गई हैं और इन चीजों के अस्तित्व के आपसी समझौते द्वारा कायम रखी गई हैं।
जितने ब्रह्मांडों की कल्पना, निर्माण और अनुभूति की जा सकती है, उतने ही ब्रह्मांड मौजूद हैं, जिनमें से प्रत्येक का अस्तित्व है।
अपने ही निरंतरता के भीतर समवर्ती रूप से। 226 (पाद टिप्पणी) प्रत्येक ब्रह्मांड अपने स्वयं के, अद्वितीय नियमों के समूह का उपयोग करके निर्मित होता है, जैसा कि इसे बनाने वाले एक या अधिक 'अस्तित्व-सत्ता' द्वारा कल्पना, परिवर्तित, संरक्षित या नष्ट किया जाता है। भौतिक ब्रह्मांड के संदर्भ में परिभाषित समय, ऊर्जा, वस्तुएं और स्थान अन्य ब्रह्मांडों में मौजूद हो भी सकते हैं और नहीं भी। डोमेन ऐसे ब्रह्मांड में, साथ ही भौतिक ब्रह्मांड में भी विद्यमान है।
भौतिक ब्रह्मांड के नियमों में से एक यह है कि ऊर्जा का सृजन किया जा सकता है, लेकिन उसे नष्ट नहीं किया जा सकता। इसलिए, ब्रह्मांड तब तक फैलता रहेगा जब तक उसमें नई ऊर्जा जुड़ती रहेगी। यह लगभग अनंत है। यह एक ऐसी ऑटोमोबाइल असेंबली लाइन की तरह है जो कभी रुकती नहीं और जिसमें बनी कोई भी कार कभी नष्ट नहीं होती।
प्रत्येक 'अस्तित्व' मूलतः अच्छा होता है। इसलिए, एक 'अस्तित्व' दूसरे 'अस्तित्वों' के साथ ऐसा कुछ भी करना पसंद नहीं करता जिसे वह स्वयं अनुभव नहीं करना चाहता। एक 'अस्तित्व' के लिए अच्छाई या बुराई, सही या गलत, बदसूरत या सुंदर का कोई अंतर्निहित मानक नहीं होता। ये सभी विचार प्रत्येक व्यक्ति के अपने-अपने मत पर आधारित होते हैं।
मनुष्य के पास किसी सत्ता को परिभाषित करने के लिए सबसे उपयुक्त अवधारणा ईश्वर की है: सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अनंत। तो, ईश्वर, ईश्वर कैसे नहीं रह जाता? वे अनजान होने का दिखावा करते हैं। अगर आपको हमेशा पता हो कि दूसरा व्यक्ति कहाँ छिपा है, तो आप "लुका-छिपी" का खेल कैसे खेल सकते हैं?
आप यह दिखावा करते हैं कि आपको पता नहीं है कि दूसरे खिलाड़ी कहाँ छिपे हैं, ताकि आप उन्हें "ढूंढने" जा सकें। खेल इसी तरह बनते हैं। आप यह भूल गए हैं कि आप केवल "दिखावा" कर रहे हैं। ऐसा करने से, खिलाड़ी अपने ही बनाए जाल में फंसकर गुलाम बन जाते हैं।

कोई व्यक्ति पिंजरा कैसे बनाता है, खुद को उस पिंजरे में बंद कैसे करता है, चाबी फेंक कैसे देता है, और यह कैसे भूल जाता है कि कोई चाबी या पिंजरा है, और यह कैसे भूल जाता है कि कोई "अंदर" या "बाहर" है, और यहाँ तक कि वह अपने अस्तित्व को भी कैसे भूल जाता है? भ्रम कैसे पैदा किया जाए?

कि कोई भ्रम नहीं है: संपूर्ण ब्रह्मांड वास्तविक है, और कोई अन्य ब्रह्मांड न तो अस्तित्व में है और न ही बनाया जा सकता है।

पृथ्वी पर जो प्रचार-प्रसार किया जाता है और जिस पर सहमति बनी है, वह यह है कि देवता जिम्मेदार हैं, मनुष्य जिम्मेदार नहीं हैं। आपको सिखाया जाता है कि केवल एक ईश्वर ही ब्रह्मांडों का सृजन कर सकता है। इसलिए, प्रत्येक कर्म की जिम्मेदारी किसी अन्य सत्ता या ईश्वर को सौंपी जाती है। स्वयं को कभी नहीं।

कोई भी मनुष्य इस तथ्य की व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं लेता कि वह स्वयं - व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से - ईश्वर है। यही तथ्य प्रत्येक 'है-हो' के लिए फँसने का स्रोत है।

अध्याय तेरह

भविष्य के लिए एक सबक

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

"मुझे लगता है कि यह प्रतिलेख स्वयं ही सब कुछ बयां करता है। मैंने एयरल के सटीक संदेश को यथासंभव ईमानदारी से संप्रेषित किया है। एयरल ने इस साक्षात्कार में जो कहा, उसके संभावित सैन्य निहितार्थों को लेकर मेरे वरिष्ठ अधिकारी बहुत चिंतित हो गए थे।"

(साक्षात्कार का आधिकारिक प्रतिलेख)

परम गुप्त

अमेरिकी सेना वायु सेना का आधिकारिक प्रतिलेख

रोसवेल आर्मी एयर फील्ड, 509 वां बॉम्ब ग्रुप। विषय: एलियन साक्षात्कार, 31 जुलाई 1947, पहला सत्र।

"यह मेरा व्यक्तिगत विश्वास है कि सत्य को राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक स्वार्थ की वेदी पर बलिदान नहीं किया जाना चाहिए।"

227

(फुटनोट) डोमेन के एक अधिकारी, पायलट और इंजीनियर के रूप में डोमेन और इसकी संपत्तियों की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। हालांकि, हम उन ताकतों से अपना बचाव नहीं कर सकते जिनके बारे में हमें जानकारी नहीं है।

पृथ्वी का बाकी सभ्यता से अलग-थलग होने के कारण मैं इस समय आपसे कई विषयों पर चर्चा नहीं कर सकता। सुरक्षा और प्रोटोकॉल के चलते मैं डोमेन की योजनाओं और गतिविधियों के बारे में केवल सामान्य और व्यापक जानकारी ही प्रकट कर सकता हूँ। हालाँकि, मैं आपको कुछ ऐसी जानकारी दे सकता हूँ जो आपके लिए उपयोगी हो सकती है। अब मुझे "अंतरिक्ष स्टेशन" पर अपने निर्धारित कर्तव्यों पर लौटना होगा। डोमेन फोर्सेज के अधिकारी, पायलट और इंजीनियर के रूप में अपने कर्तव्यों की आवश्यकताओं और सीमाओं को ध्यान में रखते हुए, मैंने नैतिक रूप से जितनी सहायता कर सकता था, उतनी सहायता प्रदान कर दी है। इसलिए, मैं अगले 24 घंटों के भीतर एक आईएस-बीई के रूप में पृथ्वी से प्रस्थान करूंगा।

(संपादक का नोट: निम्नलिखित कुछ पैराग्राफ एयरल के साथ अपने साक्षात्कार के संबंध में मटिल्डा द्वारा स्टेनोग्राफर को की गई व्यक्तिगत टिप्पणियां प्रतीत होती हैं।)
इसका मतलब यह है कि एयरल अपनी "गुड़िया" हमारे पास छोड़ जाएगी, क्योंकि उसकी बनाई हुई गुड़िया बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई है और उसकी मरम्मत संभव नहीं है। हम आराम से उसके शरीर की जांच-पड़ताल और अध्ययन कर सकते हैं। अब उसे इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, और न ही इससे उसका कोई व्यक्तिगत लगाव है, क्योंकि उसके पास इस्तेमाल के लिए दूसरी गुड़िया आसानी से उपलब्ध हैं।
एयरल का मानना है कि शरीर में ऐसी कोई तकनीक नहीं है जो पृथ्वी के वैज्ञानिकों के लिए उपयोगी हो। शरीर की तकनीक सरल है, फिर भी इसके किसी भी पहलू का विश्लेषण या रिवर्स इंजीनियरिंग करने की हमारी वर्तमान क्षमता से कहीं अधिक जटिल है। शरीर न तो जैविक है और न ही यांत्रिक, बल्कि यह उन सामग्रियों और प्राचीन तकनीकों का एक अनूठा संयोजन है जो पृथ्वी जैसे किसी भी ग्रह पर नहीं पाई जाती हैं।
जैसा कि एयरल ने पहले उल्लेख किया था, एक बहुत ही कठोर और
इस क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वर्गों का एक विशिष्ट पदानुक्रम मौजूद है जो कई सहस्राब्दियों से अपरिवर्तित और अक्षुण्ण रहा है। किसी भी अन्य सैन्य प्रतीक चिन्ह की तरह, आईएस-बीई अधिकारी को सौंपी गई शारीरिक संरचना और कार्य उसके पद, वर्ग, सेवाकाल, प्रशिक्षण स्तर, कमान स्तर, सेवा रिकॉर्ड और प्राप्त प्रशस्तियों के अनुसार विशिष्ट रूप से भिन्न होते हैं।
एयरल द्वारा इस्तेमाल किया गया शव विशेष रूप से उसके रैंक और श्रेणी के अधिकारी, पायलट और इंजीनियर के लिए डिज़ाइन किया गया था। दुर्घटना में नष्ट हुए उसके साथियों के शव उसी रैंक या श्रेणी के नहीं थे, बल्कि कनिष्ठ रैंक के थे। इसलिए, उन शवों की बनावट, विशेषताएं, संरचना और कार्यक्षमता विशेषीकृत थीं और उनके कर्तव्यों की आवश्यकताओं तक ही सीमित थीं।
दुर्घटना में जिन कनिष्ठ अधिकारियों के शरीर क्षतिग्रस्त हो गए थे, वे अपने शरीर छोड़कर अंतरिक्ष स्टेशन पर अपने कर्तव्यों पर लौट आए हैं। उनके शरीर को हुई क्षति का मुख्य

कारण यह था कि वे निचले रैंक के अधिकारी थे। उनके शरीर आंशिक रूप से जैविक थे और इसलिए उनकी तुलना में कहीं कम टिकाऊ और लचीले थे।

(संपादक का नोट: इस बिंदु पर, प्रतिलेख एयरल द्वारा दिए गए बयानों से पुनः शुरू होता प्रतीत होता है।)

हालांकि डोमेन "पुराने साम्राज्य" के सक्रिय अभियानों के किसी भी अवशेष को नष्ट करने में संकोच नहीं करेगा, चाहे वे कहीं भी पाए जाएं, लेकिन इस आकाशगंगा में यह हमारा प्राथमिक मिशन नहीं है। मुझे विश्वास है कि "पुराने साम्राज्य" के मन-नियंत्रण तंत्र को अंततः निष्क्रिय और नष्ट किया जा सकता है। हालांकि, यह अनुमान लगाना संभव नहीं है कि इसमें कितना समय लगेगा, क्योंकि इस समय हम इस अभियान की सीमा को नहीं समझते हैं। हम जानते हैं कि "पुराने साम्राज्य" की शक्ति का दायरा इतना विशाल है कि कम से कम आकाशगंगा के इस हिस्से को तो वह पूरी तरह से कवर कर सकता है। अनुभव से हम यह भी जानते हैं कि प्रत्येक बल उत्पन्न करने वाले उपकरण और जाल बिछाने वाले यंत्र का पता लगाना, उसे खोजना और नष्ट करना बहुत कठिन है। साथ ही, डोमेन अभियान बल का वर्तमान मिशन इस प्रयास में संसाधन लगाना नहीं है।

इन उपकरणों के अंततः नष्ट हो जाने से आपकी स्मृति को पुनर्स्थापित करना संभव हो सकता है, क्योंकि प्रत्येक जीवनकाल के बाद इसे मिटाया नहीं जाता है। सौभाग्य से, एक IS-BE की स्मृति को स्थायी रूप से मिटाया नहीं जा सकता है।

इस क्षेत्र में कई अन्य सक्रिय अंतरिक्ष सभ्यताएँ हैं जो विभिन्न प्रकार के कुटिल अभियान चलाती हैं, जिनमें से एक पृथ्वी पर अवांछित आईएस-बीई को छोड़ना भी है। इनमें से कोई भी यान डोमेन फोर्सेस के प्रति शत्रुतापूर्ण या हिंसक विरोध में नहीं है। वे इससे बेहतर जानते हैं। हमें चुनौती दें!

अधिकांशतः, द डोमेन पृथ्वी और उसके निवासियों की अनदेखी करता है, सिवाय इसके कि वह यह सुनिश्चित करे कि ग्रह के संसाधन स्थायी रूप से नष्ट न हो जाएँ। आकाशगंगा का यह क्षेत्र द डोमेन द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया है और अब द डोमेन के अधिकार में है, जिसका वह अपनी इच्छानुसार उपयोग या निपटान कर सकता है। पृथ्वी का चंद्रमा और क्षुद्रग्रह बेल्ट द डोमेन बलों के लिए स्थायी परिचालन केंद्र बन गए हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस सौर मंडल में डोमेन की गतिविधियों में मनुष्यों या अन्य किसी द्वारा भी हस्तक्षेप करने का कोई भी प्रयास - भले ही यह संभव हो, जो निश्चित रूप से नहीं है - तुरंत समाप्त कर दिया जाएगा। यह कोई

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था, यह एक गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि होमो सेपियन्स खुले स्थान में काम नहीं कर सकते।

निःसंदेह, हम डोमेन विस्तार योजना के अगले चरणों को जारी रखेंगे, जो अरबों वर्षों से निर्धारित समय पर चल रही है। अगले 5,000 वर्षों में डोमेन बलों की आवाजाही और गतिविधि में वृद्धि होगी, क्योंकि हम इस आकाशगंगा के केंद्र की ओर और उससे आगे बढ़ते हुए ब्रह्मांड में अपनी सभ्यता का प्रसार करेंगे।

यदि मानवता को जीवित रहना है, तो उसे पृथ्वी पर अपने अस्तित्व की कठिन परिस्थितियों का प्रभावी समाधान खोजने के लिए सहयोग करना होगा। मानवता को अपने मानवीय स्वरूप से ऊपर उठकर यह जानना होगा कि वे कहाँ हैं, वे 'आईएस-बीई' हैं, और 'आईएस-बीई' के रूप में वे वास्तव में कौन हैं, ताकि वे केवल जैविक शरीर होने की धारणा से ऊपर उठ सकें। एक बार ये अहसास हो जाने पर, शायद वर्तमान कैद से मुक्ति पाना संभव हो सके। अन्यथा, पृथ्वी पर 'आईएस-बीई' का कोई भविष्य नहीं होगा।

हालांकि द डोमेन और "पुराने साम्राज्य" के बीच कोई सक्रिय लड़ाई या युद्ध नहीं चल रहा है, फिर भी "पुराने साम्राज्य" द्वारा अपने विचार नियंत्रण अभियान के माध्यम से पृथ्वी के खिलाफ की जा रही गुप्त कार्रवाइयां मौजूद हैं।

जब इन गतिविधियों के अस्तित्व का पता चलता है, तो इनके प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। मानव जाति के विरुद्ध इन कार्रवाइयों के सबसे स्पष्ट उदाहरण अचानक और अस्पष्ट व्यवहार की घटनाओं के रूप में देखे जा सकते हैं। इसका एक हालिया उदाहरण पर्ल हार्बर पर जापानी हमले से ठीक पहले अमेरिकी सेना में देखने को मिला।



(पाद लेख)

हमले से ठीक तीन दिन पहले, किसी अधिकारी ने पर्ल हार्बर में मौजूद सभी जहाजों को बंदरगाह में आकर निरीक्षण के लिए सुरक्षित करने का आदेश दिया। जहाजों को अपने सभी गोला-बारूद भंडारों से निकालकर नीचे सुरक्षित रखने का आदेश दिया गया था। हमले से ठीक पहले वाली दोपहर को सभी एडमिरल और जनरल पार्टियों में शामिल थे, जबकि पर्ल हार्बर के ठीक सामने दो जापानी विमानवाहक पोत खड़े पाए गए थे।

सबसे स्वाभाविक कार्रवाई यह होती कि पर्ल हार्बर से टेलीफोन पर संपर्क करके उन्हें लड़ाई शुरू होने के खतरे के बारे में चेतावनी दी जाती और गोला-बारूद को वापस रखने और जहाजों को बंदरगाह से निकलकर खुले समुद्र में जाने का आदेश दिया जाता।

जापानी हमले शुरू होने से लगभग छह घंटे पहले, अमेरिकी नौसेना के एक जहाज ने बंदरगाह के ठीक बाहर एक छोटी जापानी पनडुब्बी को डुबो दिया। घटना की सूचना पर्ल हार्बर को टेलीफोन से देने के बजाय, एक चेतावनी संदेश को अति गोपनीय कोड में लिखा गया, जिसे कोड करने में लगभग दो घंटे लगे और फिर उसे डिकोड करने में भी दो घंटे लगे। पर्ल हार्बर को यह चेतावनी रविवार को सुबह 10:00 बजे (पर्ल हार्बर समयानुसार) तक नहीं पहुंची - यानी जापानी हमले में अमेरिकी बेड़े के नष्ट होने के दो घंटे बाद।

ऐसी चीजें कैसे हो जाती हैं?

यदि इन स्पष्ट रूप से विनाशकारी गलतियों के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों को खड़ा करके उनके कार्यों और इरादों का स्पष्टीकरण मांगा जाए, तो आपको पता चलेगा कि वे अपने काम के प्रति काफी ईमानदार थे। आमतौर पर, वे लोगों के लिए अपनी पूरी कोशिश करते हैं और राष्ट्र। हालाँकि, अचानक, कुछ से

एक पूरी तरह से अज्ञात और पता न चलने वाला स्रोत इन विचित्र, अस्पष्ट परिस्थितियों में प्रवेश करता है जो 'अस्तित्व में हो ही नहीं सकतीं'।

"पुराने साम्राज्य" का विचार नियंत्रण अभियान संकीर्ण सोच वाले बूढ़े "बंदरों" के एक छोटे समूह द्वारा चलाया जा रहा है। वे ऐसे कपटपूर्ण खेल खेल रहे हैं जिनका कोई उद्देश्य या लक्ष्य नहीं है, सिवाय उन आईएस-बीई को नियंत्रित करने और नष्ट करने के जो अन्यथा, यदि उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए, तो स्वयं को पूरी तरह से संभाल सकते हैं।

इस प्रकार की कृत्रिम रूप से निर्मित घटनाओं को मस्तिष्क-नियंत्रण जेल प्रणाली के संचालकों द्वारा मानव जाति पर थोपा जा रहा है। जेल गार्ड हमेशा दमनकारी या अधिनायकवादी नीतियों को बढ़ावा देंगे और उनका समर्थन करेंगे।

पृथ्वी पर आईएस-बीई की गतिविधियाँ। कैदियों को आपस में ही क्यों न लड़ने दिया जाए? पागलों को पृथ्वी की सरकारें चलाने की शक्ति क्यों न दी जाए? पृथ्वी की आपराधिक सरकारों को चलाने वाले लोग "पुराने साम्राज्य" के गुप्त विचार नियंत्रकों द्वारा दिए गए आदेशों का हूबहू अनुसरण करते हैं।

मानव जाति लंबे समय तक इस रहस्य से जूझती रहेगी—जब तक कि वह मानव जाति बनी रहेगी। तब तक, पृथ्वी पर रहने वाले ये प्राणी बार-बार एक ही तरह के जीवन जीते रहेंगे। वही

प्राणी जो भारत, चीन, मेसोपोटामिया, ग्रीस और रोम की सभ्यताओं के उत्थान और पतन के समय जीवित थे, आज अमेरिका, फ्रांस, रूस, अफ्रीका और दुनिया भर के अन्य देशों में भी शरीर धारण कर रहे हैं।

प्रत्येक जन्म के बीच एक 'है-हो' को फिर से वापस भेजा जाता है, ताकि वह नए सिरे से शुरुआत कर सके, मानो नया जीवन ही उसका एकमात्र जीवन रहा हो। वह पीड़ा, दुख और रहस्य के बीच नए सिरे से शुरुआत करता है।

कुछ आईएस-बीई को अन्य की तुलना में हाल ही में पृथ्वी पर लाया गया है। कुछ आईएस-बीई पृथ्वी पर केवल कुछ सौ वर्षों से ही हैं, इसलिए उन्हें पृथ्वी की पूर्व सभ्यताओं का कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं है। उन्हें पृथ्वी पर रहने का कोई अनुभव नहीं है, इसलिए यदि उनकी स्मृति बहाल भी हो जाए तो भी वे यहाँ के अपने पूर्व जीवन को याद नहीं कर सकते। हालाँकि, वे अन्य ग्रहों पर और अन्य समयों में बिताए गए जीवन को याद कर सकते हैं।

कुछ अन्य लोग लेमुरिया के आरंभिक दिनों से ही यहाँ मौजूद हैं। बहरहाल, पृथ्वी के आईएस-बीई यहाँ हमेशा के लिए रहेंगे, जब तक कि वे स्मृतिलोप के चक्र को तोड़कर, अपने बंधकों द्वारा बिछाए गए इलेक्ट्रॉनिक जालों पर विजय प्राप्त करके स्वयं को मुक्त नहीं कर लेते। क्योंकि डोमेन के तीन हजार आईएस-बीई पृथ्वी पर भी कैद हैं, इसलिए वे इस समस्या को हल करने में रुचि रखते हैं। इस समस्या का सामना पहले कभी नहीं किया गया है और न ही इसे प्रभावी ढंग से हल किया गया है।

ब्रह्मांड में, जहाँ तक उन्हें पता है। वे पृथ्वी से उन आईएस-बीई को मुक्त कराने के अपने प्रयास जारी रखेंगे, जहाँ और जब यह संभव होगा, लेकिन इसके लिए अभूतपूर्व तकनीक विकसित करने और ऐसा करने के लिए आवश्यक लगन की आवश्यकता होगी।

(संपादक का नोट: निम्नलिखित कथन मटिल्डा की टिप्पणी है।)

मुझे लगता है कि एयरल की यह दिली इच्छा है, एक 'अस्तित्व' के रूप में दूसरे 'अस्तित्व' के प्रति, कि हमारी अनंतता का शेष समय यथासंभव सुखद हो।"

अध्याय चौदह

एयरल ने साक्षात्कार प्रतिलेखों की समीक्षा की

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

एयरल के साथ हुए पिछले साक्षात्कार का ब्यौरा स्टेनोग्राफर को सुनाने के तुरंत बाद, मुझे बेस के कमांडिंग ऑफिसर के कार्यालय में बुलाया गया। चार भारी हथियारों से लैस सैन्य पुलिसकर्मी मेरे साथ थे। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मुझे एक बहुत बड़े, अस्थायी कार्यालय में बैठने के लिए कहा गया, जिसे एक कॉन्फ्रेंस टेबल और कुर्सियों से सजाया गया था। कार्यालय में कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे जिन्हें मैंने अलग-अलग समय पर "गैलरी" में देखा था। मैंने उनमें से कुछ को पहचान लिया क्योंकि वे प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

मुझे इन पुरुषों से मिलवाया गया, जिनमें निम्नलिखित शामिल थे:

सेना वायु सेना सचिव सिमिंगटन, 229 (पाद टिप्पणी) जनरल नाथन ट्विनिंग, 230

(फुटनोट) जनरल जिमी डूलिटल,

231

(पाद टिप्पणी) जनरल वैंडेनबर्ग, 232

(फुटनोट) और जनरल नॉरस्टेड। 233 (फुटनोट)

मुझे आश्चर्य हुआ कि चार्ल्स लिंडबर्ग 234 (फुटनोट) भी कार्यालय में मौजूद थे। सचिव सिमिंगटन ने मुझे बताया कि श्री लिंडबर्ग अमेरिकी वायु सेना के चीफ ऑफ स्टाफ के सलाहकार के रूप में वहां आए थे। कमरे में कई अन्य लोग भी मौजूद थे जिनका परिचय नहीं कराया गया। मेरा मानना है कि ये लोग अधिकारियों के निजी सहायक या किसी खुफिया एजेंसी के एजेंट थे।

महासचिवों के साथ-साथ श्री लिंडबर्ग और जनरल डूलिटिल जैसे विश्व प्रसिद्ध लोगों से मिले इस अचानक ध्यान ने मुझे यह एहसास दिलाया कि एयरल के लिए "दुभाषिया" के रूप में मेरी भूमिका दूसरों की नज़र में कितनी महत्वपूर्ण थी। इससे पहले तक मुझे इस बात का एहसास बहुत कम था, बस सतही तौर पर। शायद इसका कारण यह था कि मैं उस असाधारण परिस्थिति के विवरणों में इतना मग्न था। अचानक, मुझे अपनी भूमिका की विशालता समझ में

आने लगी। मुझे लगता है कि उस बैठक में इन लोगों की उपस्थिति का एक उद्देश्य मुझे इस तथ्य से अवगत कराना भी था!
सचिव ने मुझे घबराने से मना किया। उन्होंने कहा कि मैं किसी मुसीबत में नहीं हूँ। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मुझे लगता है कि वह अजनबी उनके द्वारा तैयार किए गए सवालों की सूची का जवाब देने को तैयार होगा। उन्होंने समझाया कि वे एयरल, उड़न तश्तरी, द डोमेन और कई अन्य विषयों के बारे में और अधिक जानकारी हासिल करने के लिए बहुत उत्सुक थे, जिनका खुलासा एयरल ने साक्षात्कार के दौरान किया था। ज़ाहिर है, उनकी मुख्य रुचि सैन्य सुरक्षा और उड़न तश्तरी के निर्माण से संबंधित सवालों में थी।

मैंने उनसे कहा कि मुझे पूरा यकीन है कि एयरल ने सवालों के जवाब देने के बारे में अपना विचार नहीं बदला है, क्योंकि ऐसा कुछ भी नहीं बदला है जिससे उसे गैलरी में मौजूद पुरुषों के इरादों पर भरोसा करने की ज़रूरत पड़े। मैंने दोहराया कि एयरल ने वह सब कुछ बता दिया है जिस पर वह बात करने के लिए तैयार और स्वतंत्र थी।

इसके बावजूद, उन्होंने ज़ोर दिया कि मैं एयरल से दोबारा पूछूँ कि क्या वह सवालों के जवाब देंगी। और, अगर जवाब फिर भी "नहीं" होता, तो मुझे उनसे पूछना था कि क्या वह मेरे साक्षात्कार के "अनुवादों" की लिखित प्रतियाँ पढ़ने को तैयार होंगी। वे जानना चाहते थे कि क्या एयरल यह सत्यापित करेंगी कि हमारे साक्षात्कारों के बारे में मेरी समझ और अनुवाद सही थे।

चूंकि एयरल बहुत धाराप्रवाह अंग्रेजी पढ़ सकती थी, इसलिए सचिव ने पूछा कि क्या उन्हें एयरल द्वारा लिखित प्रतियों को पढ़ते समय स्वयं अवलोकन करने और उनकी लिखित पुष्टि करने की अनुमति दी जा सकती है। वे चाहते थे कि एयरल प्रति की एक कॉपी पर लिखे कि "अनुवाद" सही हैं या नहीं, और प्रतियों में जो कुछ भी गलत है उसे नोट कर लें। ज़ाहिर है, मेरे पास आदेश मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था और मैंने सचिव के अनुरोध के अनुसार ही किया।

मुझे प्रतिलेखों की एक प्रति दी गई, जिसमें हस्ताक्षर पृष्ठ भी था, जिसे मुझे एयरल को दिखाना था। एयरल द्वारा समीक्षा पूरी करने के बाद, मुझे यह भी निर्देश दिया गया कि मैं एयरल से कवर पेज पर हस्ताक्षर करने का अनुरोध करूं, जिससे यह प्रमाणित हो कि प्रतिलेखों में सभी अनुवाद, उनके द्वारा किए गए संशोधनों के अनुसार, सही हैं।

लगभग एक घंटे बाद, निर्देशानुसार, मैं साक्षात्कार कक्ष में दाखिल हुआ, मेरे पास प्रतिलेखों और हस्ताक्षर पृष्ठ की प्रतियां थीं, जिन्हें मुझे एयरल को सौंपना था, जबकि गैलरी के सदस्य, जिनमें जनरल (और श्री लिंडबर्ग भी, मेरा अनुमान है) और अन्य लोग शामिल थे, गैलरी कक्ष के शीशे से देख रहे थे।

मैं अपनी हमेशा वाली सीट पर जाकर बैठ गया, जो एयरल से चार-पाँच फीट की दूरी पर थी। मैंने एयरल को प्रतिलिपियों वाला लिफाफा दिया और सचिव से मुझे जो निर्देश टेलीपैथिक

रूप से मिले थे, उन्हें बता दिए। एयरल ने मेरी ओर देखा और लिफाफे को देखा, लेकिन उसे स्वीकार नहीं किया।

एयरल ने कहा: "यदि आपने इन्हें पढ़ लिया है और आपके आकलन के अनुसार ये सही हैं, तो मुझे इनकी समीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। अनुवाद सही हैं। आप अपने कमांडर को बता सकते हैं कि आपने हमारे संवाद का रिकॉर्ड ईमानदारी से पहुंचा दिया है।"

मैंने एयरल को आश्वस्त किया कि मैंने उन्हें पढ़ लिया है, और वे हर उस बात की सटीक रिकॉर्डिंग हैं जो मैंने ट्रांसक्रिप्शन टाइपिस्ट को बताई थी।

"तो क्या आप कवर पेज पर हस्ताक्षर करेंगे?", मैंने पूछा।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा," एयरल ने कहा।

मैंने कहा, "क्या मैं पूछ सकती हूँ कि क्यों नहीं?" मुझे थोड़ा आश्चर्य हो रहा था कि वह इतनी सरल बात करने को तैयार क्यों नहीं थी।
"यदि आपका कमांडर अपने ही कर्मचारियों पर ईमानदारी और सटीकता से रिपोर्ट देने का भरोसा नहीं करता, तो मेरे हस्ताक्षर से उसे क्या भरोसा मिलेगा? यदि वह अपने वफादार कर्मचारियों पर भरोसा नहीं करता, तो वह डोमेन के एक अधिकारी द्वारा बनाए गए स्याही के निशान पर क्यों भरोसा करेगा?"
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मैं एयरल की बात का खंडन नहीं कर सकती थी, और न ही उसे दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर कर सकती थी। मैं एक मिनट तक अपनी कुर्सी पर बैठी सोचती रही कि आगे क्या करूँ। मैंने एयरल को धन्यवाद दिया और कहा कि मुझे आगे के निर्देशों के लिए अपने वरिष्ठों से बात करनी होगी। मैंने दस्तावेज़ों वाला लिफाफा अपनी वर्दी की जैकेट की अंदरूनी जेब में रखा और कुर्सी से उठने लगी।
उसी क्षण गैलरी कक्ष का दरवाजा ज़ोर से खुला! पांच भारी हथियारों से लैस सैन्य पुलिसकर्मी कमरे में घुस आए! उनके पीछे-पीछे एक सफेद प्रयोगशाला कोट पहने एक व्यक्ति आया। वह एक छोटी सी गाड़ी को धकेल रहा था जिस पर एक डिब्बे के आकार की मशीन रखी थी, जिसके सामने कई डायल बने हुए थे।
इससे पहले कि मैं कुछ प्रतिक्रिया कर पाती, दो सांसदों ने ऐरल को पकड़ लिया और उसे उसी आरामदायक कुर्सी पर कसकर बिठा दिया जिस पर वह हमारे साक्षात्कार के पहले दिन से बैठी थी। बाकी दो सांसदों ने मेरे कंधे पकड़कर मुझे वापस कुर्सी पर धकेल दिया और वहीं रोके रखा। तीसरा सांसद ऐरल के ठीक सामने खड़ा था और राइफल सीधे उसकी ओर ताने खड़ा था, जो उसके सिर से छह इंच से भी कम दूरी पर थी।
लैब कोट पहने उस आदमी ने जल्दी से कार्ट को एयरल की कुर्सी के पीछे धकेल दिया। उसने कुशलता से एयरल के सिर पर एक गोलाकार पट्टी बांधी और कार्ट पर रखी मशीन की ओर मुड़ गया। अचानक, उसने "क्लियर!" चिल्लाया।
एयरल को पकड़े हुए सैनिकों ने उसे छोड़ दिया। उसी क्षण मैंने एयरल के शरीर को अकड़ते और कांपते हुए देखा। यह लगभग 15 या 20 सेकंड तक चला। मशीन ऑपरेटर ने मशीन का एक घुंडी घुमाया और एयरल का शरीर वापस कुर्सी पर गिर गया। कुछ सेकंड बाद उसने

फिर से घुंडी घुमाई और एयरल का शरीर पहले की तरह अकड़ गया। उसने यही प्रक्रिया कई बार दोहराई।

मैं अपनी कुर्सी पर बैठी थी, और सांसद मुझे लगातार पकड़े हुए थे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। मैं भयभीत थी और जो कुछ हो रहा था उसे देखकर स्तब्ध थी! मुझे विश्वास नहीं हो रहा था!

कुछ मिनट बाद सफेद लैब कोट पहने कई अन्य लोग कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने एरल की संक्षिप्त जांच की, जो अब कुर्सी पर बेजान सी पड़ी थी। वे आपस में कुछ बुदबुदाए। उनमें से एक ने गैलरी की खिड़की की ओर इशारा किया। दो सहायक तुरंत एक स्ट्रेचर कमरे में लाए। इन लोगों ने एरल के बेजान शरीर को स्ट्रेचर पर उठाया, उसकी छाती और बाहों को कसकर बांधा और स्ट्रेचर को कमरे से बाहर ले गए।

मुझे तुरंत सांसदों द्वारा साक्षात्कार कक्ष से बाहर ले जाया गया और सीधे मेरे कमरे में ले जाया गया, जहां मुझे मेरे कमरे में बंद कर दिया गया और सांसद दरवाजे के बाहर पहरा देते रहे। लगभग आधे घंटे बाद मेरे कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई। जब मैंने दरवाजा खोला तो जनरल ट्विनिंग सफेद लैब कोट पहने मशीन ऑपरेटर के साथ अंदर आए। जनरल ने उस व्यक्ति का मुझसे परिचय डॉ. विलकॉक्स के रूप में कराया। 235 (फुटनोट)। उन्होंने मुझे और डॉक्टर को अपने साथ चलने के लिए कहा। हम कमरे से बाहर निकले, हमारे पीछे मिलिट्री पुलिस (एमपी) भी आ रही थी। परिसर में कई मोड़ों और घुमावों के बाद हम एक छोटे से कमरे में पहुँचे जहाँ एयरल को स्ट्रेचर पर लाया गया था।

जनरल ने मुझे बताया कि एयरल और द डोमेन को संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए एक बहुत बड़ा सैन्य खतरा माना जाता था। एयरल को "निष्क्रिय" कर दिया गया था ताकि वह साक्षात्कार में कही गई बात के अनुसार अपने अड्डे से निकलकर वापस न लौट सके। एयरल को अड्डे पर अपने समय के दौरान जो कुछ भी उसने देखा था, उसकी रिपोर्ट करने की अनुमति देना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा होता। इसलिए, इसे रोकने के लिए निर्णायक कार्रवाई आवश्यक समझी गई थी।

जनरल ने मुझसे पूछा कि क्या मैं समझता हूँ कि यह क्यों आवश्यक था। मैंने कहा कि मैं समझता हूँ, हालाँकि मैं इस बात से बिल्कुल भी सहमत नहीं था कि यह ज़रा भी आवश्यक था और मैं साक्षात्कार कक्ष में एयरल और मुझ पर हुए "अचानक हमले" से बिल्कुल भी सहमत नहीं था! फिर भी, मैंने जनरल से इस बारे में कुछ नहीं कहा क्योंकि मुझे बहुत डर था कि अगर मैंने विरोध किया तो मेरे और एयरल के साथ क्या हो सकता है।

डॉ. विलकॉक्स ने मुझे स्ट्रेचर के पास जाकर एयरल के बगल में खड़े होने के लिए कहा। एयरल बिस्तर पर एकदम स्थिर और बिना हिले-डुले लेटी हुई थी। मैं यह नहीं बता सकती थी कि वह जीवित है या मृत। सफेद लैब कोट पहने कई अन्य पुरुष, जो मुझे लगता है कि डॉक्टर ही थे, बिस्तर के दूसरी तरफ खड़े थे। उन्होंने एयरल के सिर, बांहों और छाती पर दो निगरानी उपकरण लगा रखे थे। इनमें से एक उपकरण को मैंने सर्जिकल नर्स के रूप में अपने प्रशिक्षण से पहचाना था - यह एक ईईजी मशीन 236 (फुटनोट) थी, जिसका उपयोग मस्तिष्क में विद्युत गतिविधि का पता लगाने के लिए किया जाता है। दूसरा उपकरण एक

सामान्य अस्पताल के कमरे में इस्तेमाल होने वाला वाइटल साइंस मॉनिटर था, जिसके बारे में मुझे पता था कि यह बेकार होगा क्योंकि एयरल का कोई जैविक शरीर नहीं था।
डॉ. विलकॉक्स ने मुझे समझाया कि उन्होंने एयरल को कई बार "हल्के" बिजली के झटके दिए थे ताकि उसे इतनी देर तक काबू में रखा जा सके जिससे सैन्य अधिकारियों को स्थिति का मूल्यांकन करने और एयरल के साथ क्या करना है यह तय करने का समय मिल सके।
उन्होंने मुझसे एयरल से टेलीपैथिक रूप से संवाद करने का प्रयास करने को कहा।
मैंने कई मिनट तक कोशिश की लेकिन एयरल से कोई संपर्क नहीं हो पाया। मुझे यह भी पता नहीं चल पाया कि एयरल शरीर में मौजूद भी है या नहीं!
मैंने डॉक्टर से कहा, "मुझे लगता है कि तुमने ही उसकी हत्या की होगी।"

डॉ. विलकॉक्स ने मुझे बताया कि वे एयरल पर नजर रखेंगे और मुझे बाद में एयरल से दोबारा संपर्क स्थापित करने की कोशिश करने के लिए वापस आने को कहा जाएगा।

अध्याय पंद्रह
मेरी पूछताछ

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)
अगली सुबह मुझे चार सांसदों की सुरक्षा में मेरे कमरे से साक्षात्कार कक्ष तक ले जाया गया। एयरल की आरामदायक कुर्सी कमरे से हटा दी गई थी और उसकी जगह एक छोटी मेज और कई कार्यालयी कुर्सियाँ रख दी गई थीं। मुझे बैठने और साक्षात्कार के लिए प्रतीक्षा करने को कहा गया। कुछ मिनट बाद डॉ. विलकॉक्स एक अन्य व्यक्ति के साथ कार्यालय में आए, जिन्होंने सादा व्यावसायिक सूट पहना हुआ था। उस व्यक्ति ने अपना परिचय जॉन रीड के रूप में दिया। 237 (पाद टिप्पणी)
डॉ. विलकॉक्स ने मुझे समझाया कि श्री रीड को शिकागो से मेरे वरिष्ठ अधिकारियों के अनुरोध पर लाई डिटेक्टर परीक्षण करने के लिए बुलाया गया था।
238
(फुटनोट) मुझ पर परीक्षण! इस कथन पर मेरा आश्चर्य इतना स्पष्ट था कि डॉ. विलकॉक्स ने देखा कि मैं स्पष्ट रूप से स्तब्ध और अपमानित महसूस कर रहा था, क्योंकि मुझ पर यह आरोप लगाया गया था कि मैंने कभी किसी बात पर झूठ बोला था!
फिर भी, श्री रीड ने मेरी कुर्सी के बगल वाली मेज पर अपना पॉलीग्राफ उपकरण लगाना शुरू कर दिया, जबकि डॉ. विलकॉक्स शांत स्वर में समझाते रहे कि यह परीक्षण मेरी सुरक्षा के लिए किया जा रहा है। चूंकि एलियन के साथ सभी साक्षात्कार टेलीपैथिक रूप से किए गए थे, और एयरल ने टाइप किए गए प्रतिलेखों को पढ़ने और उनकी सटीकता की पुष्टि करने से इनकार कर दिया था, इसलिए प्रतिलेखों में निहित कथनों की सत्यता और सटीकता पूरी तरह से मेरे व्यक्तिगत कथन पर निर्भर करती थी। मुझे कई परीक्षणों और मनोवैज्ञानिक जांचों से गुजारने के अलावा प्रतिलेखों की सटीकता का परीक्षण करने का कोई अन्य विश्वसनीय तरीका नहीं था, ताकि "विशेषज्ञों" (अर्थात स्वयं डॉ. विलकॉक्स) की राय में यह निर्धारित किया जा सके कि प्रतिलेखों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए या नहीं। उनके स्वर से स्पष्ट था, "या फिर इसे एक साधारण महिला की मनगढ़ंत बकवास मानकर खारिज कर दिया जाए!"

श्री रीड ने मेरी छाती पर एक रबर की नली और मेरी बांह पर एक साधारण रक्तचाप मापने वाला कफ बांध दिया। फिर उन्होंने मेरी उंगलियों और हाथों की सतहों पर इलेक्ट्रोड लगाए। उन्होंने समझाया कि वे साक्षात्कार के दौरान पूरी तरह निष्पक्ष रहेंगे क्योंकि उन्हें वैज्ञानिक पूछताछ का गहन प्रशिक्षण प्राप्त है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य उनकी पूछताछ को मानवीय त्रुटियों से मुक्त रखना था।

श्री रीड ने मुझे समझाया कि वे और डॉ. विलकॉक्स मुझसे जो प्रश्न पूछने वाले थे, उनके उत्तर में वास्तविक शारीरिक परिवर्तनों को एक छोटे पैनल यूनिट के माध्यम से प्रसारित किया जाएगा। फिर इन रीडिंग को गतिशील ग्राफ पेपर पर अंकित किया जाएगा, जिसे उन्होंने डेस्क पर मशीन के बगल में रखा था। पेपर पर बने समानांतर ग्राफों का श्री रीड द्वारा डॉ. विलकॉक्स की "विशेषज्ञ" सहायता से सहसंबंध स्थापित किया जाएगा और उनकी व्याख्या की जाएगी ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि मैं झूठ बोल रहा था या नहीं।
शुरुआत में श्री रीड और डॉ. विलकॉक्स दोनों ने मुझसे कई सीधे-सादे सवाल पूछे, जो बाद में एयरल के साथ मेरे साक्षात्कारों के बारे में अधिक तीखे पूछताछ में बदल गए।
मुझे प्रश्नों के बारे में जो याद है, वह यह है:
"आपका क्या नाम है?"
मैंने उत्तर दिया, "मटिल्डा ओ'डोनेल।"
"आपकी जन्म तिथि क्या है?"
मैंने कहा, "12 जून, 1924।"
"तुम्हारी उम्र क्या है?"
तेईस।
"आपका जन्म कहां हुआ था?"
मैंने कहा, "लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया।"
(और इतने पर और आगे।)
क्या आप टेलीपैथी के माध्यम से संवाद कर सकते हैं?
"नहीं। एयरल के अलावा मैं किसी और के साथ ऐसा कभी नहीं कर पाया।" मैंने कहा।
"क्या आपने स्टेनोग्राफर को दिए गए किसी भी बयान में कोई हेरफेर किया था?"
"नहीं," मैंने उत्तर दिया।
"क्या आपने जानबूझकर या अनजाने में उस संचार की कल्पना की है या उसे गढ़ा है जिसका दावा आपने एलियन के साथ किया था?"
"नहीं, बिलकुल नहीं," मैंने कहा।
क्या आप जानबूझकर किसी को धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं?

"नहीं।"

"क्या आप इस परीक्षा में बाधा डालने का प्रयास कर रहे हैं?"
"नहीं।"
"आपकी आंखें किस रंग की हैं?"
"नीला"।
"क्या आप कैथोलिक हैं?"
"हाँ।"
"क्या आप कैथोलिक चर्च के कन्फेशनल में अपने पैरिश पादरी को वही कहानियां सुनाएंगे जो आपने यहां बेस पर स्टेनोग्राफर को सुनाई थीं?"
"हाँ।"
क्या आप हमसे कुछ छिपाने की कोशिश कर रहे हैं?
"कुछ भी नहीं।"
"क्या आप उस एलियन द्वारा आपको बताई गई हर बात पर विश्वास करते हैं?"
"हाँ।"
क्या आप खुद को आसानी से मूर्ख बनने वाला व्यक्ति मानते हैं?
"नहीं।"
इसी तरह एक घंटे से अधिक समय तक पूछताछ चलती रही। अंत में, मुझे पॉलीग्राफ मशीन से अलग किया गया और मुझे अपने कमरे में लौटने की अनुमति दी गई, हालांकि मैं अभी भी सैन्य पुलिसकर्मियों की निगरानी में था।
दोपहर बाद मैं फिर से साक्षात्कार कक्ष में लौटा। इस बार डेस्क की जगह अस्पताल का स्ट्रेचर रखा हुआ था। डॉ. विलकॉक्स के साथ इस बार एक नर्स भी थी। उन्होंने मुझे स्ट्रेचर पर लेटने को कहा। उन्होंने बताया कि उन्हें मुझसे वही प्रश्न पूछने के लिए कहा गया है जो मैंने लाई डिटेक्टर टेस्ट के दौरान पूछे थे।
लेकिन इस बार, मैं "सत्य सीरम" 239 (फुटनोट) जिसे सोडियम पेंटोथल के नाम से जाना जाता है, के प्रभाव में प्रश्नों का उत्तर दूंगी। एक प्रशिक्षित सर्जिकल नर्स होने के नाते, मैं इस बार्बिट्यूरेट दवा से परिचित थी क्योंकि इसका उपयोग कभी-कभी एनेस्थेटिक के रूप में किया जाता था।

डॉ. विलकॉक्स ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे इस तरह के परीक्षण से कोई आपत्ति है। मैंने उनसे कहा कि मुझे कुछ भी छिपाना नहीं है। मुझे इस साक्षात्कार के बारे में कुछ भी याद नहीं है। मुझे लगा कि जब मैंने सवालों के जवाब दे दिए, तो मुझे मेरे कमरे तक वापस ले जाया गया।

इस बार सांसदों की सहायता से ही मैं वहाँ पहुँच पाया, क्योंकि दवा के असर से मैं इतना लड़खड़ा रहा था और बेहोश सा था कि खुद से चल-फिर नहीं सकता था। फिर भी, उस रात मुझे बहुत अच्छी नींद आई।

जाहिर तौर पर इन दोनों पूछताछों से कोई संदिग्ध नतीजा नहीं निकला क्योंकि इसके बाद मुझसे कोई और सवाल नहीं पूछा गया। शुक्र है, बेस पर बाकी समय मुझे अकेला छोड़ दिया गया।

अध्याय सोलह

एयरल प्रस्थान करती है

(मैटिल्डा ओ'डोनेल मैकलरॉय का निजी नोट)

डॉ. विलकॉक्स द्वारा एयरल को "अक्षम" घोषित किए जाने के बाद, मैं अगले तीन सप्ताह तक बेस पर ही रहा, ज्यादातर अपने कमरे में ही सीमित रहा। दिन में एक बार मुझे उस कमरे में ले जाया जाता था जहाँ एयरल बिस्तर पर लेटी रहती थी और डॉ. विलकॉक्स और अन्य लोगों (मेरा अनुमान है) द्वारा उस पर लगातार निगरानी रखी जाती थी। हर बार जब मैं उस कमरे में जाता, तो मुझसे एयरल से फिर से संपर्क करने की कोशिश करने के लिए कहा जाता था। हर बार कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती थी। इससे मुझे बहुत दुख हुआ। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मुझे यह यकीन और चिंता बढ़ती गई कि एयरल "मर चुकी" है, अगर यह शब्द इसके लिए सही है।

मैं हर दिन एयरल के साथ हुए अपने साक्षात्कारों की प्रतियाँ दोबारा पढ़ता हूँ, ताकि मुझे कोई सुराग मिल जाए जिससे मुझे कुछ याद आ जाए या एयरल से दोबारा संपर्क स्थापित करने में किसी तरह मदद मिले। मेरे पास अभी भी वह लिफाफा है जिसमें एयरल से हस्ताक्षर करवाने के बाद प्रतियों की प्रतियां थीं। आज तक मुझे समझ नहीं आया कि किसी ने मुझसे उन्हें लौटाने के लिए क्यों नहीं कहा। शायद वे सारी उत्तेजना में प्रतियों की प्रति के बारे में भूल गए। मैंने उन्हें लौटाने की पेशकश नहीं की। जब तक मैं अड्डे पर रहा, मैंने उन्हें अपने बिस्तर के गद्दे के नीचे छिपाकर रखा और तब से उन्हें अपने पास ही रखा है। आप इन प्रतियों को देखने वाले पहले व्यक्ति होंगे।

चूंकि एयरल का शरीर जैविक नहीं था, इसलिए डॉक्टर यह पता नहीं लगा सकते थे कि शरीर जीवित है या मृत, जब तक कि वह हिलता-डुलता न हो। बेशक, मैं जानता था कि अगर एयरल एक सजीव प्राणी के रूप में सचेत रूप से शरीर को गति नहीं दे रहा होता, तो शरीर हिलता-डुलता नहीं। मैंने यह बात डॉ. विलकॉक्स को समझाई। मैंने उन्हें यह बात कई बार समझाई। हर बार उन्होंने मुझे एक उपहासपूर्ण मुस्कान दी, मेरी बांह थपथपाई और दोबारा कोशिश करने के लिए धन्यवाद दिया।

तीसरे सप्ताह के अंत में डॉ. विलकॉक्स ने मुझे बताया कि मेरी सेवाओं की अब आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि सेना ने एयरल को एक बड़े, अधिक सुरक्षित सैन्य चिकित्सा केंद्र में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया था जो स्थिति से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित था। उन्होंने यह नहीं बताया कि वह केंद्र कहाँ स्थित था।

मैंने एयरल की गुड़िया का शरीर आखिरी बार तभी देखा था।

अगले दिन मुझे जनरल ट्विनिंग द्वारा हस्ताक्षरित लिखित आदेश प्राप्त हुए। आदेशों में कहा गया था कि मैंने अमेरिकी सेना में अपनी सेवा पूरी कर ली है और मुझे आधिकारिक तौर पर आगे की ड्यूटी से मुक्त कर दिया गया है। मुझे सम्मानजनक डिस्चार्ज और अच्छी सैन्य पेंशन मिलेगी। साथ ही, सेना द्वारा मेरा स्थानांतरण किया जाएगा और मुझे उचित दस्तावेजों के साथ एक नई पहचान दी जाएगी।

आदेशों के साथ मुझे एक दस्तावेज़ भी मिला जिसे मुझे पढ़ने और हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया था। यह गोपनीयता की शपथ थी। दस्तावेज़ की भाषा कानूनी पेचीदगियों से भरी थी, लेकिन उसमें स्पष्ट रूप से लिखा था कि सैन्य सेवा के दौरान मैंने जो कुछ भी देखा, सुना या अनुभव किया है, उसके बारे में मैं कभी भी किसी से कुछ भी चर्चा नहीं करूँगा - ऐसा न करने पर मुझे मृत्युदंड दिया जाएगा और यह संयुक्त राज्य अमेरिका के विरुद्ध राजद्रोह का अपराध माना जाएगा!

पता चला कि मुझे संघीय सरकार के गवाह संरक्षण कार्यक्रम 240 (फुटनोट) में रखा गया था, लेकिन फर्क सिर्फ इतना था कि सरकार द्वारा ही मुझे सरकार से सुरक्षा प्रदान की जा रही थी। दूसरे शब्दों में, जब तक मैं चुप रहता, मैं जीवित रह सकता था! अगली सुबह मुझे एक छोटे सैन्य परिवहन विमान में बिठाकर स्थानांतरण स्थल पर ले जाया गया। थोड़े-थोड़े समय के लिए कई स्थानों पर ले जाए जाने के बाद, अंततः मैं फोर्ट पेक के पास ग्लासगो, मोंटाना में पहुँच गया।

जिस रात मुझे परिवहन विमान में सवार होना था, उससे एक रात पहले, जब मैं बिस्तर पर लेटी हुई इस पूरे मामले पर विचार कर रही थी और सोच रही थी कि एयरल और मेरे साथ क्या हुआ, तभी अचानक मुझे एयरल की "आवाज" सुनाई दी। मैं बिस्तर पर एकदम सीधी होकर बैठ गई और नाइट स्टैंड पर रखी लाइट जला दी! मैंने कुछ सेकंड के लिए कमरे में चारों ओर घबराकर देखा। फिर मुझे एहसास हुआ कि यह एयरल थी, यानी 'आईएस-बी'। ज़ाहिर है, उसका शरीर मेरे साथ कमरे में नहीं था, और न ही उसकी ज़रूरत थी।

उसने कहा, "हैलो!"। उसके विचारों का लहजा सरल और दोस्ताना था। यह स्पष्ट रूप से एयरल ही थी। मुझे इसमें ज़रा भी संदेह नहीं था!

मैंने सोचा, "एयरल? क्या तुम अभी भी यहीं हो?" उसने जवाब दिया कि वह "यहाँ" तो है, लेकिन पृथ्वी पर किसी शरीर में नहीं। जब डॉक्टर और सांसदों ने साक्षात्कार कक्ष में हम पर हमला किया, तब वह डोमेन बेस पर अपने पद पर लौट आई थी। उसे यह जानकर खुशी हुई कि मैं ठीक हूँ और मुझे बिना किसी नुकसान के रिहा कर दिया जाएगा।

मुझे आश्चर्य हुआ कि वह उनसे कैसे बच निकली। मुझे डर था कि कहीं उन्होंने एयरल को शॉक मशीन से चोट न पहुँचा दी हो। एयरल ने बताया कि शॉक लगने से पहले ही वह शरीर से बाहर निकल गई और बिजली के झटके से बच गई। वह मुझे बताना चाहती थी कि वह सुरक्षित है और मुझे उसके बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। सच कहूँ तो, मुझे बहुत राहत मिली!

मैंने एयरल से पूछा कि क्या मैं उससे कभी दोबारा मिल पाऊँगी। एयरल ने मुझे आश्वस्त किया कि हम दोनों ही 'आईएस-बीई' हैं। हम भौतिक शरीर नहीं हैं। अब जब उसने मुझे अंतरिक्ष और समय में खोज लिया है, तो हम हमेशा संपर्क में रहेंगे। एयरल ने मुझे शुभकामनाएं दीं और इस तरह मेरा उससे संवाद फिलहाल समाप्त हो गया।

श्रीमती मैकलॉय की ओर से पश्चात टिप्पणी

संपादक का नोट: निम्नलिखित संदेश मूल पत्र, प्रतिलिपियों और श्रीमती मैकलॉय से मुझे प्राप्त अन्य स्पष्टीकरणों के साथ एक अलग लिफाफे में संलग्न था, जिस पर "इसे सबसे अंत में पढ़ें" लिखा था। संदेश में यह लिखा था:

"इस लिफाफे में मौजूद अन्य दस्तावेज 1947 में जो कुछ हुआ था, उसकी कहानी का अंत हैं। हालांकि, सरकार द्वारा मुझे मेरे अंतिम पुनर्वास स्थल पर बसाए जाने के कई महीनों बाद भी, मैंने एयरल के साथ नियमित रूप से अपना संपर्क बनाए रखा।"

रोसवेल दुर्घटना को लगभग पूरे 40 वर्ष हो चुके हैं। तब से मुझे यह बात स्पष्ट हो गई है कि मैं एयरल के साथ टेलीपैथिक रूप से संवाद करने में सक्षम हूँ, और इसका एक ही कारण है: मैं लॉस्ट बटालियन के 3,000 सदस्यों में से एक हूँ। इस समय, डोमेन अन्नुनाकी मिशन और उनके द्वारा "ट्री ऑफ लाइफ" डिटेक्शन डिवाइस के उपयोग के परिणामस्वरूप, लॉस्ट बटालियन के सभी सदस्यों का पता पृथ्वी पर लगा लिया गया है।

एयरल के साथ संवाद के माध्यम से, मुझे पिछले 8,000 वर्षों में पृथ्वी पर बिताए अपने जीवन की कुछ यादें वापस मिल गई हैं। घटनाओं के लंबे क्रम की तुलना में इनमें से अधिकांश यादें उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं, लेकिन एक सजीव-अस्तित्व के रूप में अपनी जागरूकता और क्षमता को पुनः प्राप्त करने के लिए यह एक आवश्यक कदम साबित हुआ है।

मुझे डोमेन अभियान बल में बिताए अपने जीवन के कुछ धुंधले पल भी याद हैं। मैं वहाँ भी नर्स थी। सदियों से, मैं बार-बार नर्स ही रही हूँ। मैं नर्स का काम इसलिए करती हूँ क्योंकि यह मेरे लिए जाना-पहचाना है। और, मुझे लोगों की मदद करने में आनंद आता है, साथ ही डोमेन में रहने वाले उन जैविक प्राणियों की भी, जिनके शरीर स्तनधारियों से ज़्यादा कीड़ों जैसे दिखते हैं, खासकर उनके हाथ। यहाँ तक कि गुड़िया के शरीरों को भी कभी-कभी मरम्मत की ज़रूरत पड़ती है।

जैसे-जैसे मुझे अपने अतीत की और यादें आती हैं, मुझे एहसास होता है कि मेरा शेष जीवन भविष्य में है। अनंत काल केवल अतीत में नहीं है। अनंत काल भविष्य में है।

इस बिंदु पर मैं अभी भी पूरी तरह से डोमेन में वापस नहीं लौट पा रहा हूँ। मुझे अन्य सभी आईएस-बीई की तरह पृथ्वी नामक इस जीवित नरक में शाश्वत कारावास की सजा मिली है, जब तक कि हम "पुराने साम्राज्य" के बल स्क्रीन को निष्क्रिय नहीं कर देते।
क्योंकि अब मैं अपने जैविक शरीर को ज्यादा समय तक नहीं रख पाऊंगा, इसलिए मुझे इस बात का गहरा एहसास है कि बहुत जल्द ही मुझे "पुराने साम्राज्य" की स्मृतिलोप प्रक्रिया के माध्यम से पुनर्चक्रित किया जाएगा, और एक और शिशु शरीर में वापस डाल दिया जाएगा ताकि मैं सब कुछ नए सिरे से शुरू कर सकूं - बिना इस बात की कोई स्मृति के कि पहले क्या हुआ था।
जैसा कि आप जानते हैं, डोमेन अभियान बल के सदस्य हजारों वर्षों से इस समस्या को हल करने के लिए काम कर रहे हैं। एयरल का कहना है कि भले ही डोमेन ने लॉस्ट बटालियन के सभी अधिकारियों और दल का पता लगा लिया है, लेकिन उन्हें मुक्त कराने की सफलता पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई पर निर्भर करती है। डोमेन केंद्रीय कमान इस समय किसी भी कर्मी या संसाधन को "बचाव अभियान" चलाने के लिए अधिकृत नहीं कर सकती, क्योंकि यह डोमेन का प्राथमिक मिशन नहीं है।
इस आकाशगंगा में अभियान दल।
इसलिए, अगर पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई को इस कैदखाने से भागना है, तो यह एक तरह से "अंदरूनी साजिश" ही होगी। कैदियों को खुद ही बाहर निकलने का रास्ता ढूंढना होगा। पिछले 10,000 वर्षों में पृथ्वी पर आईएस-बीई की स्मृति और क्षमता को पुनः प्राप्त करने के कई तरीके विकसित किए गए हैं, लेकिन अभी तक कोई भी तरीका लगातार प्रभावी साबित नहीं हुआ है।
एयरल ने उल्लेख किया कि सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार लगभग 2500 वर्ष पूर्व गौतम सिद्धार्थ द्वारा किया गया था। हालांकि, बुद्ध द्वारा दी गई मूल शिक्षाएं और तकनीकें तब से लेकर अब तक सहस्राब्दियों में परिवर्तित हो गई हैं या लुप्त हो गई हैं। उनके दर्शन की व्यावहारिक तकनीकों को पुरोहितों द्वारा नियंत्रण या दासता के स्वार्थपूर्ण साधन के रूप में विकृत करके यांत्रिक धार्मिक अनुष्ठानों में बदल दिया गया।

हालांकि, हाल ही में एक और महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। डोमेन एक्सपेडिशनरी फोर्स स्पेस स्टेशन के कमांडिंग ऑफिसर का एक परिचित एक आईएस-बीई है, जो कभी "पुराने साम्राज्य" के अंतरिक्ष बेड़े में एक महत्वपूर्ण इंजीनियर और अधिकारी था। वह लगभग 10,000 साल पहले खुद एक "अछूत" बन गया था और दमनकारी शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए उसे पृथ्वी पर भेज दिया गया था।

"पुराने साम्राज्य" के शासनकाल में। इस इंजीनियर को हजारों साल पहले उन्नत वैज्ञानिक तात्कालिकता सिद्धांत में प्रशिक्षित किया गया था। इस व्यक्ति ने अपनी विशेषज्ञता का उपयोग डोमेन को खोए हुए लोगों के सदस्यों को बचाने की प्रतीतहीन समस्या को हल करने में मदद करने के लिए किया है।
बटालियन, साथ ही पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई।
उन्होंने और उनकी सहायक पत्नी ने आईएस-बीई (IS-BE) व्यक्तियों में स्मृति की कार्यप्रणाली का सावधानीपूर्वक अवलोकन और प्रयोगात्मक विश्लेषण किया, जिससे उन्हें यह अहसास हुआ कि आईएस-बीई व्यक्ति स्मृतिलोप से उबर सकते हैं और अपनी खोई हुई क्षमताओं को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने मिलकर प्रभावी विधियाँ खोजीं और विकसित कीं जिनका उपयोग उन्होंने अपनी स्मृति को पुनर्स्थापित करने के लिए किया। अंततः उन्होंने अपनी विधियों को संहिताबद्ध किया ताकि अन्य लोग "पुराने साम्राज्य" के विचार नियंत्रण संचालकों द्वारा पता लगाए बिना, सुरक्षित रूप से स्वयं और दूसरों पर उनका प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित हो सकें।
उनके शोध से यह भी पता चला कि आईएस-बीई एक ही समय में एक से अधिक शरीरों पर कब्जा कर सकते हैं और उन्हें संचालित कर सकते हैं - एक ऐसा तथ्य जिसे पहले केवल द डोमेन के अधिकारियों तक ही सीमित माना जाता था।
इसका एक उदाहरण यह है कि इंजीनियर, पृथ्वी पर अपने पिछले जन्म में, सुलेमान थे। शानदार 241 (फुटनोट)। उनकी सहायक एक हरम की लड़की थी जो गुलामी से उठकर उनकी पत्नी बनी और उनके साथ ओटोमन साम्राज्य पर शासन किया। 242 (फुटनोट) साथ ही, उन्होंने एक और शरीर धारण किया और महारानी एलिजाबेथ के रूप में अपने साम्राज्य पर शासन किया। 243 (फुटनोट) इंग्लैंड की रानी के रूप में, उन्होंने कभी शादी नहीं की, क्योंकि उनकी शादी पहले से ही ओटोमन साम्राज्य के सुल्तान से हो चुकी थी!
बाद के जीवन में उन्होंने सेसिल रोड्स के रूप में अवतार लिया। 244 (फुटनोट)। रोड्स के रूप में अपने जीवनकाल में, वह फिर से एक राजकुमारी थीं, इस बार पोलैंड से। 245 (फुटनोट) इस प्रकार, उन्होंने रोड्स के जीवन के अंत में असफल रूप से

उनका पीछा किया। हालाँकि, अपने अगले जन्म में वे फिर से मिले, शादी की, परिवार बसाया और फिर से, अपने पूरे जीवन में सफलतापूर्वक एक साथ काम किया।

इस घटना के कई अन्य उल्लेखनीय उदाहरण देखे गए। उदाहरण के लिए, इस्पात शोधन की प्रक्रिया का आविष्कार उसी आईएस-बीई ने किया था जो एक साथ दो शरीरों में निवास करता था। एक का नाम केली 246 (फुटनोट) था जो केंटकी में रहता था, और दूसरा एक आदमी था जिसका नाम

बेसेमर 247 (पाद टिप्पणी) जो इंग्लैंड में रहते थे। उन दोनों ने एक ही समय में एक ही प्रक्रिया की कल्पना की।
एक और उदाहरण अलेक्जेंडर ग्राहम बेल 248 (फुटनोट) का है, जो टेलीफोन के आविष्कारक थे, जिसका आविष्कार उसी समय कई अन्य लोगों द्वारा किया गया था, जिनमें एलिसा ग्रे भी शामिल थे। 249 (फुटनोट) टेलीफोन की कल्पना की गई थी।
एक ही समय में दुनिया भर के कई स्थानों पर एक साथ। यह एक ऐसा एकल आईएस-बीई था।
उनमें इतनी जबरदस्त ऊर्जा और क्षमता थी कि वे जटिल शोध कार्य करते हुए कई अलग-अलग स्थानों पर कई निकायों का संचालन करने में सक्षम थे!
इन खुलासों की बदौलत, द डोमेन लॉस्ट बटालियन के कुछ आईएस-बीई सदस्यों को सीमित, अंशकालिक आधार पर सक्रिय सेवा में वापस लाने में सक्षम रहा है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर जैविक शरीर धारण करने वाली दो युवतियाँ अब एक ही समय में, क्षुद्रग्रह अंतरिक्ष स्टेशन पर द डोमेन अभियान बल के सक्रिय सदस्यों के रूप में एक ऑपरेटर के तौर पर काम कर रही हैं।
संचार स्विचबोर्ड। ये ऑपरेटर डोमेन अभियान बल और डोमेन कमांड मुख्यालय के बीच संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं।
हाल ही में, मैं स्वयं पृथ्वी पर रहते हुए डोमेन एक्सपेडिशनरी फोर्स के लिए अपने कुछ कर्तव्यों को पुनः आरंभ करने में सक्षम हुआ हूँ। हालाँकि, यह आसान काम नहीं है, और इसे केवल तभी किया जा सकता है जब मेरा शरीर सो रहा हो।
यह जानकर मुझे बहुत खुशी हो रही है कि शायद हमें हमेशा के लिए पृथ्वी पर नहीं रहना पड़ेगा! न केवल लॉस्ट बटालियन के लिए, बल्कि पृथ्वी पर मौजूद कई अन्य आईएस-बीई के लिए भी बचने की उम्मीद है।
हालांकि, इस लिफाफे में दी गई जानकारी से सभी आईएस-बीई को पृथ्वी की वास्तविक स्थिति के बारे में अधिक जागरूक होने में मदद मिल सकती है। इसीलिए मैंने ये पत्र और प्रतिलिपियाँ आपको भेजी हैं। मैं चाहता हूँ कि आप इन दस्तावेजों को प्रकाशित करवाएँ। मैं

चाहता हूँ कि पृथ्वी पर रहने वाले आईएस-बीई को यह जानने का मौका मिले कि वास्तव में पृथ्वी पर क्या घट रहा है।

मुझे यकीन है कि ज्यादातर लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे। यह बहुत ही अविश्वसनीय लगता है। कोई भी "समझदार" व्यक्ति इस पर एक शब्द भी विश्वास नहीं करेगा। हालांकि, यह केवल उस व्यक्ति को "अविश्वसनीय" लगता है जिसकी स्मृति मिटा दी गई है।

और इलेक्ट्रॉनिक रूप से नियंत्रित एक काल्पनिक जेल ग्रह के भीतर झूठी जानकारी से इसे प्रतिस्थापित कर दिया गया है। हमें अपनी स्थिति की स्पष्ट अविश्वसनीयता को वास्तविकता का सामना करने से नहीं रोकना चाहिए।

स्पष्ट रूप से कहें तो, "कारणों" का वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं है। कोई कारण नहीं हैं। चीजें जैसी हैं वैसी ही हैं। अगर हम अपनी स्थिति के तथ्यों का सामना नहीं करेंगे, तो हम हमेशा के लिए "पुराने साम्राज्य" के अधीन ही रहेंगे! "पुराने साम्राज्य" का अब सबसे बड़ा हथियार यही बचा है कि हम इस बात से अनजान हैं कि वे पृथ्वी पर मौजूद सभी IS-BE के साथ क्या कर रहे हैं। अविश्वास और गोपनीयता ही उनके सबसे प्रभावी हथियार हैं!

जिन सरकारी एजेंसियों ने संलग्न प्रतिलेखों को "अत्यंत गोपनीय" के रूप में वर्गीकृत किया है, वे आईएस-बीई द्वारा संचालित हैं, जो "पुराने साम्राज्य" के जेल संचालकों द्वारा दिए गए सम्मोहक आदेशों के माध्यम से गुप्त रूप से नियंत्रित किए जाने वाले निराकार स्वचालित यंत्रों से अधिक कुछ नहीं हैं। वे ही हैं...

अदृश्य मालिकों के अनजाने गुलाम - और गुलाम बनने की उनकी इच्छा के कारण वे और भी अधिक गुलाम बन गए।

पृथ्वी पर मौजूद अधिकांश आईएस-बीई अच्छे, ईमानदार और सक्षम प्राणी हैं: कलाकार, प्रबंधक, प्रतिभाशाली, स्वतंत्र विचारक और क्रांतिकारी जिन्होंने वास्तव में किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है। वे किसी के लिए कोई खतरा नहीं हैं, सिवाय उन अपराधियों के जिन्होंने उन्हें कैद किया है।

उन्हें "पुराने साम्राज्य" के स्मृतिलोप और सम्मोहन ऑपरेशन के बारे में पता लगाना होगा। उन्हें अपने पिछले जन्मों को याद करना होगा। यह तभी संभव होगा जब हम संवाद करें, समन्वय स्थापित करें और मुकाबला करें। हमें दूसरों को बताना होगा और उन्हें आपस में खुलकर इस पर चर्चा करनी होगी। गोपनीयता और दमन के खिलाफ संचार ही एकमात्र प्रभावी हथियार है।

इसीलिए मैं आपसे यह कहानी बताने का अनुरोध कर रहा हूँ। कृपया इन लिखित अंशों को अधिक से अधिक लोगों के साथ साझा करें। यदि पृथ्वीवासियों को यहाँ की वास्तविक स्थिति का पता चल जाए, तो शायद उन्हें याद आ जाए कि वे कौन हैं और कहाँ से आए हैं।

फिलहाल, हम शब्दों के माध्यम से अपनी मुक्ति और उद्धार की शुरुआत कर सकते हैं। हम फिर से स्वतंत्र हो सकते हैं। हम फिर से स्वयं बन सकते हैं। शायद मैं तुमसे अनंत भविष्य में कहीं, शरीर के साथ या बिना शरीर के, व्यक्तिगत रूप से मिलूँ।

हम सभी के लिए शुभकामनाए,
मटिल्डा ओ'डोनेल मैकलॉय
-- श्रीमती मैकलरॉय के दस्तावेज़ों का अंत --

परिशिष्ट: संपादक की टिप्पणियाँ

156

अमर आध्यात्मिक प्राणियों के लिए साहित्य

द्वारा लिखित

लॉरेंस आर. स्पेंसर

ओज़ के कारक: "विज़ार्ड ऑफ़ ओज़" जीवन के रहस्यों के लिए एक उपमा के रूप में

( www.ozfactors.com )

पैन - वनों का देवता

( www.godofthewoods.com )

द बिग ब्लीप: एक अलग ब्रह्मांड का रहस्य

( www.thebigbleep.com )

एलियन साक्षात्कार

( www.alieninterview.org )

1

"..."वॉर ऑफ़ द वर्ल्ड्स, और द इन्वेज़न फ्रॉम मार्स"..."

"हैलोवीन से एक दिन पहले, 30 अक्टूबर, 1938 को, लाखों अमेरिकी एक लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम सुनते थे जिसमें ऑर्सन वेल्स द्वारा निर्देशित और अक्सर अभिनीत नाटक दिखाए जाते थे। उस शाम का प्रदर्शन विज्ञान कथा उपन्यास 'द वॉर ऑफ द वर्ल्ड्स' का रूपांतरण था, जो मंगल ग्रह से पृथ्वी पर आक्रमण की कहानी थी। लेकिन पुस्तक को रेडियो नाटक के रूप में रूपांतरित करते समय, वेल्स ने एक महत्वपूर्ण बदलाव किया: उनके निर्देशन में नाटक को इस तरह लिखा और प्रस्तुत किया गया कि यह मंगल ग्रह से आक्रमण के बारे में एक समाचार प्रसारण जैसा लगे, एक ऐसी तकनीक जिसका उद्देश्य संभवतः नाटकीय प्रभाव को बढ़ाना था।"

जैसे-जैसे नाटक आगे बढ़ा, नृत्य संगीत कई बार फर्जी समाचारों से बाधित हुआ, जिनमें बताया गया कि न्यू जर्सी के ग्रोवर्स मिल के पास एक खेत पर एक "विशाल जलती हुई वस्तु" गिरी है। दर्शक उत्सुकता से अपनी सीटों पर बैठे रहे, तभी समाचार उद्घोषकों, अधिकारियों और अन्य भूमिकाओं में अभिनय कर रहे अभिनेताओं ने मंगल ग्रह से आए आक्रमणकारी दल के उतरने और संयुक्त राज्य अमेरिका के विनाश का वर्णन किया। प्रसारण में यह भी कई बार बताया गया कि यह सब एक रेडियो नाटक है, लेकिन यदि दर्शकों ने शुरुआत में दिए गए संक्षिप्त स्पष्टीकरण को नहीं सुना, तो अगला स्पष्टीकरण कार्यक्रम के 40 मिनट बाद तक नहीं आया।

प्रसारण के दौरान एक समय स्टूडियो में मौजूद एक अभिनेता, जो फील्ड में एक समाचार प्रस्तुतकर्ता की भूमिका निभा रहा था, ने अंतरिक्ष यान से एक एलियन के निकलने का वर्णन किया। उसने उपयुक्त नाटकीय लहजे में कहा, "हे भगवान, कोई चीज़ परछाई से रेंगती हुई बाहर आ रही है, जैसे कोई भूरा साँप हो।" "अब एक और, और एक और। ये मुझे टेंटेकल्स जैसे लग रहे हैं। वहाँ, मैं उस चीज़ का शरीर देख सकता हूँ। यह भालू जितना बड़ा है और गीले चमड़े की तरह चमक रहा है। लेकिन वह चेहरा... वह... उसका वर्णन करना असंभव है। मैं खुद को उसे देखते रहने के लिए मजबूर नहीं कर पा रहा हूँ। आँखें काली हैं और साँप की

तरह चमक रही हैं। मुँह V-आकार का है और उसके बिना किनारों वाले होंठ काँपते और धड़कते हुए लग रहे हैं... वह चीज़ ऊपर उठ रही है। भीड़ पीछे हट जाती है। उन्होंने बहुत कुछ देख लिया है। यह सबसे असाधारण अनुभव है। मुझे शब्द नहीं मिल रहे। बोलते-बोलते मैं इस माइक्रोफ़ोन को अपने साथ खींच रहा हूँ। मुझे वर्णन रोकना होगा जब तक मैं कोई नई जगह नहीं ले लेता। ज़रा रुकिए, मैं एक मिनट में वापस आता हूँ।"

समाचार प्रसारण के इस अनुकरण को सुनते हुए श्रोताओं ने यह निष्कर्ष निकाला कि वे मंगल ग्रह से होने वाले आक्रमण की वास्तविक खबर सुन रहे हैं। लोग सड़कों पर जमा हो गए, तहखानों में छिप गए, बंदूकें भर लीं, यहाँ तक कि मंगल ग्रह की जहरीली गैस से बचाव के लिए अपने सिर गीले तौलिये से लपेट लिए, ताकि वे परियों से अपना बचाव कर सकें। वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि वे एक रेडियो नाटक में दिखाई देने वाली भयभीत जनता की भूमिका निभा रहे थे।

इस अफरा-तफरी की खबर (जो विश्वसनीय समाचार रिपोर्टों के माध्यम से प्रसारित की गई थी) ने तुरंत एक राष्ट्रीय विवाद को जन्म दिया। प्रसारण पर सरकारी नियमन की मांग उठी, लेकिन उस पर कोई अमल नहीं हुआ, ताकि ऐसी घटना दोबारा न हो।

न्यूयॉर्क ट्रिब्यून में एक दूरदर्शी लेख में, डोरोथी थॉम्पसन ने भविष्यवाणी की थी कि प्रसारण से यह पता चलता है कि राजनेता जनसंचार की शक्ति का उपयोग नाटकीय भ्रम पैदा करने और जनता को गुमराह करने के लिए कैसे कर सकते हैं।

संदर्भ: http://www.transparencynow.com/welles.htm

2

"...मजेस्टिक-12 दस्तावेज़।"

"मैजेस्टिक 12" या "एमजे-12"। (नोट: एमजे-12 दस्तावेजों से संबंधित निम्नलिखित सभी जानकारी और/या दावे निम्नलिखित वेबसाइट के लेखकों के हैं:
http://www.majesticdocuments.com)
"ऑपरेशन मैजेस्टिक-12 की स्थापना 24 सितंबर, 1947 को रक्षा सचिव जेम्स फॉरेस्टल और संयुक्त अनुसंधान एवं विकास बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. वैनेवर बुश की सिफारिश पर एक विशेष गोपनीय राष्ट्रपति आदेश द्वारा की गई थी। इस समूह का लक्ष्य बरामद की गई विदेशी प्रौद्योगिकी से हर संभव लाभ उठाना था।"
आज के आधुनिक अति गोपनीय कोडवर्ड विशेष पहुंच कार्यक्रमों से बहुत पहले, मेजर जनरल लेस्ली आर. ग्रोव्स (जिन्होंने परमाणु बम बनाने के लिए मैनहट्टन परियोजना का नेतृत्व किया था) ने दुर्घटनाग्रस्त एलियन तकनीक के विवरण की केवल एक प्रति वाशिंगटन, डी.सी. में अपने तिजोरी में रखी थी, जो अति गोपनीय "केवल जादुई आंखों के लिए" श्रेणी से भी ऊपर थी।
वान्नेवर बुश, अल्बर्ट आइंस्टीन और रॉबर्ट जैसे महत्वाकांक्षी, कुलीन वैज्ञानिक ओपेनहाइमर और होयट वैंडेनबर्ग, रोस्को हिलेंकोएटर, लेस्ली ग्रोव्स और जॉर्ज मार्शल जैसे पेशेवर सैन्य अधिकारियों के साथ-साथ अन्य चुनिंदा विशेषज्ञों ने एलियन एजेंडा, प्रौद्योगिकी और उनके निहितार्थों को समझने के लिए अथक और गुप्त रूप से काम किया।
आइंस्टीन और ओपेनहाइमर को अपनी राय देने के लिए बुलाया गया, जिन्होंने "आकाशीय पिंडों के निवासियों के साथ संबंध" शीर्षक से छह पृष्ठों का एक शोधपत्र तैयार किया। उन्होंने हमारी आधुनिक परमाणु रणनीतियों और उपग्रहों के बारे में दूरदर्शी अंतर्दृष्टि प्रदान की, और राष्ट्रपति के साथ एक समझौते पर पहुंचने की तीव्र इच्छा व्यक्त की ताकि वैज्ञानिक परग्रही प्रौद्योगिकी का अध्ययन आगे बढ़ा सकें।
4 से 6 जुलाई, 1947 के बीच न्यू मैक्सिको राज्य में गिरी हुई हवाई वस्तुओं की असाधारण बरामदगी ने सेना वायु सेना की अंतरग्रहीय घटना इकाई, वैज्ञानिक और तकनीकी शाखा, प्रतिखुफिया निदेशालय के चीफ ऑफ स्टाफ को एक गहन जांच शुरू करने के लिए प्रेरित किया। इस विशेष इकाई का गठन 1942 में लॉस एंजिल्स क्षेत्र में फरवरी 1942 के अंत में हुई

दो विमान दुर्घटनाओं के जवाब में किया गया था। सारांश रिपोर्ट का मसौदा इस प्रकार शुरू होता है: "3 जुलाई, 1947 को 2332 एमएसटी पर, पूर्वी टेक्सास और व्हाइट सैंड्स प्रोविंग ग्राउंड, न्यू मैक्सिको में स्थित रडार स्टेशनों ने दो अज्ञात विमानों का पता लगाया, जब तक कि वे दोनों रडार से गायब नहीं हो गए। दो दुर्घटनास्थल डब्ल्यूएसपीजी के निकट स्थित हैं। साइट एलजेड-1 कोरोना के पास एक खेत में स्थित थी, जो रोसवेल शहर से लगभग 75 मील उत्तर-पश्चिम में है। साइट एलजेड-2 सोकोरो शहर से लगभग 20 मील दक्षिण-पूर्व में, अक्षांश 33-40-31 और देशांतर 106-28-29 पर स्थित थी।"

यूएफओ दुर्घटना से प्राप्त अवशेषों को बरामद करने का पहला ज्ञात मामला 1941 में केप गिरार्डो, मिसौरी में हुआ था। इस दुर्घटना ने प्रारंभिक रिवर्स-इंजीनियरिंग कार्य को गति दी, लेकिन इसने मैनहट्टन प्रोजेक्ट के उपयोगों के अलावा संभावित तकनीकी लाभों का फायदा उठाने के लिए एक एकीकृत खुफिया प्रयास को जन्म नहीं दिया।

न्यू मैक्सिको के सोकोरो से 20 मील दक्षिण-पूर्व में 1947 में हुए विमान दुर्घटना के प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त मलबे को ULAT-1 (अज्ञात लेंस के आकार की वायुगतिकी तकनीक) कहा गया, और इसकी अभूतपूर्व तन्यता और अपरूपण शक्ति ने धातु विज्ञानियों को आश्चर्यचकित कर दिया। इस संलयन परमाणु (जिसे उस समय न्यूट्रॉनिक कहा जाता था) इंजन में भारी जल और ड्यूटेरियम का उपयोग किया गया था, जिसमें कुंडलियों, चुम्बकों और इलेक्ट्रोडों की एक विचित्र रूप से व्यवस्थित श्रृंखला थी - ये विवरण आज के "शीत संलयन" अध्ययनों से मिलते जुलते हैं।

हैरी ट्रूमैन ने 24 सितंबर, 1947 के तकनीकी ब्रीफिंग दस्तावेजों को आगे के अध्ययन के लिए सुरक्षित रखा, और सीआईए से पहले एक गुप्त संगठन बनाने और उसे वित्त पोषित करने की चुनौतियों पर विचार किया।

यह तब की बात है जब (हालांकि सेंट्रल इंटेलिजेंस ग्रुप या सीआईजी का अस्तित्व था) और गैर-युद्ध अभियानों के वित्तपोषण की कोई कानूनी प्रक्रिया नहीं थी।

अप्रैल 1954 में, अमेरिकी खुफिया समुदाय और सशस्त्र बलों के वरिष्ठ अधिकारियों का एक समूह इतिहास की सबसे गुप्त और सनसनीखेज ब्रीफिंग में से एक के लिए इकट्ठा हुआ। विषय था अज्ञात उड़ने वाली वस्तुएं (यूएफओ) - केवल देखे जाने की घटनाओं पर चर्चा नहीं, बल्कि दुर्घटनाग्रस्त यूएफओ को कैसे बरामद किया जाए, उनके पुर्जों को कहाँ भेजा जाए और उनमें फंसे लोगों से कैसे निपटा जाए। उदाहरण के लिए, "स्पेशल ऑपरेशंस मैनुअल (एसओएम 1-01) एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल एंटिटीज टेक्नोलॉजी रिकवरी एंड डिस्पोजल" में, मैजेस्टिक-12 की "रेड टीमों" ने यूएफओ दुर्घटना के बाद शवों को बरामद करने के परिदृश्यों का खाका तैयार किया, जिसमें प्रेस पर प्रतिबंध, शवों की पैकेजिंग और जीवित एलियनों के परिवहन, अलगाव और हिरासत पर विशेष ध्यान दिया गया था।

Majestic Documents.com प्रसिद्ध रोसवेल घटना की कोई पुरानी कहानी नहीं है — इसमें 500 से अधिक पृष्ठों (और संख्या लगातार बढ़ रही है) के नए दस्तावेज़ शामिल हैं, जिनमें से कई रोसवेल दुर्घटना से कई साल पहले के हैं। अन्य वेबसाइटों के विपरीत, यह वेबसाइट प्रामाणिकता की पुष्टि करने के केंद्रीय विषय पर केंद्रित है, साथ ही 1941 से लेकर आज तक अमेरिकी सरकार द्वारा अलौकिक उपकरणों और एलियन जीवन रूपों की पुनर्प्राप्ति और विश्लेषण पर किए गए रोमांचक कार्यों की कहानी भी बयां करती है।

संदर्भ: http://www.majesticdocuments.com/

3

"जैसा कि रिप्ले ने कहा था..."

रॉबर्ट लेरॉय रिप्ले (25 दिसंबर, 1893 - 27 मई, 1949) एक कार्टूनिस्ट, उद्यमी और शौकिया मानवविज्ञानी थे, जिन्होंने विश्व प्रसिद्ध 'रिप्लेज़ बिलीव इट ऑर नॉट!' नामक अखबार पैनल श्रृंखला बनाई, जिसमें दुनिया भर के विचित्र लेकिन सत्य तथ्यों को दर्शाया गया था। रिप्ले के कार्टूनों और लेखों में खेल की उपलब्धियों से लेकर असामान्य और विदेशी स्थलों के बारे में कम ज्ञात तथ्यों तक के विषय शामिल थे, लेकिन इस अवधारणा की लोकप्रियता का कारण

शायद यह था कि रिप्ले ने पाठकों द्वारा भेजी गई वस्तुओं को भी शामिल किया, जिन्होंने विभिन्न प्रकार के छोटे अमेरिकी कस्बों से संबंधित रोचक तथ्यों की तस्वीरें भेजीं, जिनमें असामान्य आकार की सब्जियों से लेकर विचित्र निशान वाले पालतू जानवर शामिल थे, जिन्हें तस्वीरों के माध्यम से प्रलेखित किया गया और फिर रिप्ले की कलम द्वारा आकर्षक ढंग से चित्रित किया गया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

4

"...वोल्टेयर..."

फ्रांस्वा-मैरी अरौएट (21 नवंबर 1694 – 30 मई 1778), जो वोल्टेयर के उपनाम से अधिक प्रसिद्ध हैं, एक फ्रांसीसी प्रबुद्ध लेखक, निबंधकार, ईश्वरवादी और दार्शनिक थे, जो अपनी हास्य-व्यंग्य शैली, दार्शनिक व्यंग्य और धार्मिक स्वतंत्रता एवं निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार सहित नागरिक स्वतंत्रता के समर्थन के लिए जाने जाते थे। सख्त सेंसरशिप कानूनों और उनका उल्लंघन करने वालों के लिए कठोर दंड के बावजूद, वे सामाजिक सुधारों के मुखर समर्थक थे। एक व्यंग्यात्मक वाद-विवादकार के रूप में, उन्होंने अक्सर अपनी रचनाओं का उपयोग ईसाई चर्च के सिद्धांतों और अपने समय की फ्रांसीसी संस्थाओं की आलोचना करने के लिए किया। वोल्टेयर की कई रचनाओं और विचारों ने अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों के महत्वपूर्ण विचारकों को प्रभावित किया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

5

"...व्यक्तिगत नरक..."

आधुनिक अंग्रेजी शब्द 'हेल' पुराने अंग्रेजी शब्द 'हेल', 'हेले' (लगभग 725 ईस्वी) से लिया गया है और अंततः प्रोटो-जर्मनिक शब्द 'हाल्जा' से आया है, जिसका अर्थ है "जो किसी चीज को छुपाता या छिपाता है"।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

6

"...परम गुप्त"...

कई देशों में 'टॉप सीक्रेट' को गोपनीय जानकारी का सर्वोच्च मान्यता प्राप्त स्तर माना जाता है, जहां इसे ऐसी सामग्री के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके खुलासे से राष्ट्रीय सुरक्षा को 'अत्यंत गंभीर क्षति' हो सकती है। 'टॉप सीक्रेट' शब्द का प्रयोग ऐसी सूचनाओं, कार्यों, संगठनों, परियोजनाओं आदि के लिए किया जा सकता है जिनके बारे में किसी भी प्रकार का ज्ञान अत्यंत प्रतिबंधित होता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

7

"...स्वयं-प्रशासित इच्छामृत्यु...."

इच्छामृत्यु शब्द ग्रीक शब्दों "यू" और "थानाटोस" से आया है, जिनका संयुक्त अर्थ है "अच्छी मृत्यु" या "अच्छी तरह मरना"। हिप्पोक्रेट्स ने 400 से 300 ईसा पूर्व के बीच लिखी गई हिप्पोक्रेटिक शपथ में इच्छामृत्यु का उल्लेख किया है। प्राचीन यूनानियों और रोमनों का आम तौर पर यह मानना नहीं था कि जीवन को किसी भी कीमत पर बचाना आवश्यक है और परिणामस्वरूप, वे उन मामलों में आत्महत्या के प्रति सहिष्णु थे जहां मरने वाले को कोई राहत नहीं दी जा सकती थी या, स्टोइक और एपिक्यूरियन के मामले में, जहां व्यक्ति को अब अपने जीवन की परवाह नहीं थी।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

8

"...काउंटी मीथ, आयरलैंड..."

"मीथ ("मध्य") का गठन मिडहे प्रांत के पूर्वी भाग से हुआ था - देखें मिडहे के राजा - लेकिन अब यह लेइनस्टर का हिस्सा है। ऐतिहासिक रूप से इस मीथ प्रांत में वर्तमान काउंटी के साथ-साथ वेस्टमीथ और कैवन, लॉन्गफोर्ड, लाउथ, ऑफली, डबलिन और किल्डारे के कुछ हिस्से शामिल थे। आयरलैंड के उच्च राजा मीथ के तारा में बैठते थे। ब्रू ना बोइन्ने का

पुरातात्विक परिसर 5,000 वर्ष पुराना है और इसमें काउंटी के उत्तर-पूर्व में स्थित न्यूग्रेंज, नोथ और डाउथ के दफन स्थल शामिल हैं।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

9

"नोथ में स्थित 'महान टीला' और डाउथ में स्थित 'अंधकार का परी टीला'। ये पवित्र 'पत्थर के ढेर' या विशाल पत्थर की संरचनाएं हैं जिनका निर्माण लगभग 3700 ईसा पूर्व में हुआ था और जिन पर अस्पष्ट चित्रलिपि उकेरी गई हैं..."

डाउथ में स्थित कर्बस्टोन 51, जिसे "सात सूर्यों का पत्थर" कहा जाता है, का खगोलीय महत्व: यदि चंद्रमा की रोशनी नॉथ के पूर्वी मार्ग के पिछले पत्थर पर पड़े, तो वह स्वयं चंद्रमा के मानचित्र को प्रकाशित कर देगी, जो चंद्र मारिया* का विश्व का सबसे पुराना ज्ञात चित्रण है। ये नक्काशी लगभग 4800 वर्ष पुरानी है। विज्ञान द्वारा ज्ञात मारिया का अगला सबसे पुराना चित्रण लियोनार्डो दा विंची द्वारा लगभग 1505 ईस्वी में बनाया गया था।

चंद्रमा पर स्थित मारिया (एकवचन: मारे, दो शब्दांश) पृथ्वी के चंद्रमा पर स्थित बड़े, गहरे रंग के बेसाल्टिक मैदान हैं, जो प्राचीन ज्वालामुखी विस्फोटों से बने हैं। इन्हें प्रारंभिक खगोलविदों ने वास्तविक समुद्र समझकर 'मारिया' नाम दिया था, जो लैटिन भाषा में "समुद्र" का अर्थ है। लौह-समृद्धि के कारण ये "पहाड़ी क्षेत्रों" की तुलना में कम परावर्तक होते हैं, और इसलिए नंगी आंखों से देखने पर गहरे रंग के दिखाई देते हैं। मारिया चंद्रमा की सतह के लगभग 16% भाग को कवर करते हैं, जिनमें से अधिकांश पृथ्वी से दिखाई देने वाले निकटवर्ती भाग पर स्थित हैं। दूरवर्ती भाग पर स्थित कुछ मारिया बहुत छोटे हैं, जो ज्यादातर बहुत बड़े गड्ढों में स्थित हैं जहां बहुत कम मात्रा में जलभराव हुआ था। -- संदर्भ: विकिपीडिया

डाउथ के बारे में प्रचलित पौराणिक कथाओं में एक बैल और सात गायों का जिक्र है, ऐसा लगता है कि इस स्थल का संबंध वृषभ नक्षत्र (बैल) से है, जिसमें खुला क्षेत्र शामिल है।

161

प्लीएड्स तारामंडल, जिसे "सात बहनें" भी कहा जाता है। यह तारामंडल ईसा पूर्व लगभग 3000 के आसपास बहुत महत्वपूर्ण था, जब बॉयने घाटी के टीलों का निर्माण हो रहा था, क्योंकि इसमें वसंत विषुव के समय सूर्य स्थित होता था, जो वर्ष का वह महत्वपूर्ण क्षण होता है जब सूर्य का पथ क्रांतिवृत्त के अनुदिश आकाशीय भूमध्य रेखा को पार करते हुए उत्तर की ओर बढ़ता है। इस समय राशि चक्र के तारों के बीच सूर्य की स्थिति ही वर्तमान युग - यानी "वृषभ युग" - को निर्धारित करती है।

इस समय घटित होने वाली एक और रोचक घटना को खगोलविद 'प्लीएड्स का हेलियाकल राइजिंग' कहते हैं। यह तब होता है जब ये तारे पूर्वी क्षितिज पर उदय होते हैं, लेकिन उगते सूरज की तेज रोशनी में जल्दी ही खो जाते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि मिस्रवासियों और अफ्रीका की डोगोन जनजाति (देखें: द ओज़ फैक्टर्स) ने भी हेलियाकल राइजिंग को दर्शाने के लिए डॉवथ के समान 'सूर्य-चक्र' प्रतीकों का उपयोग किया था।

यदि ये 'सूर्य-चक्र' प्रतीक प्लीएड्स नक्षत्र के उदय को दर्शाते हैं, तो यह हमें नवपाषाण काल के लोगों के बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात बताता है – वे पृथ्वी की धुरी के धीमे डगमगाने, यानी प्रीसेशन के महान चक्र से परिचित थे, जिसके कारण खगोलीय ध्रुव समय के साथ खिसकता है, और इसके परिणामस्वरूप वसंत विषुव बिंदु बनता है, वह स्थान जहाँ सूर्य खगोलीय भूमध्य रेखा को पार करता है, और 25,800 वर्षों की विशाल अवधि में राशिचक्र में पीछे की ओर, या पश्चिम की ओर, गति करता है। यह वसंत बिंदु प्रत्येक 72 वर्षों में केवल एक डिग्री (लगभग पूर्णिमा की दो चौड़ाई) आगे बढ़ता है, और औसतन 2,150 वर्ष राशिचक्र के बारह नक्षत्रों में से प्रत्येक में व्यतीत करता है।

संदर्भ: http://www.mythicalireland.com/ancientsites/dowth/candlelight.html

10

"...प्राचीन आयरिश धर्म और पौराणिक कथाओं में यह (तारा) 'देवताओं' का पवित्र निवास स्थान था..."

टेमैर के राजा के सिंहासन (फोराध) के शीर्ष पर तारा के सबसे प्रसिद्ध स्मारक - आयरलैंड का प्राचीन राज्याभिषेक पत्थर - लिया फेल या "भाग्य का पत्थर" स्थित है, जिसे पौराणिक

कथाओं के अनुसार, ईश्वर तुल्य लोग, तुआथा डे डैनन, अपनी पवित्र वस्तुओं में से एक के रूप में यहाँ लाए थे। ऐसा कहा जाता था कि तारा के वास्तविक राजा द्वारा स्पर्श किए जाने पर यह गर्जना करता था।

एक नए सिद्धांत के अनुसार, तारा प्राचीन काल में अटलांटिस नामक लुप्त साम्राज्य की राजधानी थी। एक नई पुस्तक के अनुसार, अटलांटिस की पौराणिक भूमि आयरलैंड थी। तारा पहाड़ी पर बड़ी संख्या में स्मारक और मिट्टी की संरचनाएं मौजूद हैं। इस स्थल पर सबसे पहली बस्ती नवपाषाण काल में बसी थी, और बंधकों का टीला लगभग 2500 ईसा पूर्व में बनाया गया था।

संदर्भ: http://www.mythicalireland.com/ancientsites/tara/

11

"...वह सैन्य-औद्योगिक परिसर जिसके बारे में राष्ट्रपति आइजनहावर ने अपने विदाई भाषण में हमें चेतावनी दी थी..."

"सैन्य-औद्योगिक परिसर (एमआईसी) में किसी राष्ट्र की सशस्त्र सेनाएं, हथियार प्रणालियों, आपूर्ति और सेवाओं के आपूर्तिकर्ता और उसकी नागरिक सरकार शामिल होती है।"

"एमआईसी" शब्द का प्रयोग अक्सर संयुक्त राज्य अमेरिका के संदर्भ में किया जाता है, जहाँ राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर के विदाई भाषण में इसके प्रयोग के बाद यह लोकप्रिय हुआ। भाषण के अंतिम मसौदे से पहले, आइजनहावर ने शुरू में सैन्य-औद्योगिक-कांग्रेसी परिसर शब्द का प्रयोग किया था, और इस प्रकार सैन्य उद्योग के प्रसार में संयुक्त राज्य अमेरिका की कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका को इंगित किया था। लेकिन, ऐसा कहा जाता है कि राष्ट्रपति

संघीय सरकार की विधायी शाखा के सदस्यों को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने 'कांग्रेसनल' शब्द को हटाने का विकल्प चुना।
इसका प्रयोग कभी-कभी व्यापक रूप से किया जाता है, जिसमें रक्षा ठेकेदारों, पेंटागन, कांग्रेस और कार्यपालिका के व्यक्तियों और संस्थानों के बीच अनुबंधों और धन एवं संसाधनों के प्रवाह का संपूर्ण नेटवर्क शामिल होता है। यह क्षेत्र स्वाभाविक रूप से प्रिंसिपल-एजेंट समस्या, नैतिक जोखिम और अनुचित लाभ कमाने की प्रवृत्ति से ग्रस्त है। राजनीतिक भ्रष्टाचार के मामले भी नियमित रूप से सामने आते रहे हैं।
संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति (और सेना के पूर्व जनरल) ड्वाइट डी. आइजनहावर ने बाद में 17 जनवरी, 1961 को राष्ट्र को दिए अपने विदाई भाषण में इस शब्द का प्रयोग किया: "शांति बनाए रखने में हमारी सैन्य व्यवस्था एक महत्वपूर्ण तत्व है। हमारे हथियार शक्तिशाली होने चाहिए, तत्काल कार्रवाई के लिए तैयार होने चाहिए, ताकि कोई भी संभावित हमलावर अपने विनाश का जोखिम उठाने के लिए प्रलोभित न हो सके..."
एक विशाल सैन्य प्रतिष्ठान और एक बड़े शस्त्र उद्योग का यह संयोजन अमेरिकी इतिहास में नया है। इसका संपूर्ण प्रभाव—आर्थिक, राजनीतिक, यहाँ तक कि आध्यात्मिक—हर शहर, हर राज्य विधानसभा, हर संघीय सरकारी कार्यालय में महसूस किया जाता है। हम इस विकास की अत्यावश्यक आवश्यकता को समझते हैं। फिर भी, हमें इसके गंभीर परिणामों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। हमारी मेहनत, संसाधन और आजीविका, सब कुछ दांव पर लगा है; यहाँ तक कि हमारे समाज की संरचना भी।
सरकार की बैठकों में, हमें सैन्य-औद्योगिक संघ द्वारा अनुचित प्रभाव के अधिग्रहण से सावधान रहना चाहिए, चाहे वह जानबूझकर किया गया हो या अनजाने में। सत्ता के दुरुपयोग से विनाशकारी परिणाम होने की संभावना बनी हुई है और यह बनी रहेगी।
हमें कभी भी इस संयोजन के भार को अपनी स्वतंत्रता या लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को खतरे में डालने नहीं देना चाहिए। हमें किसी भी बात को हल्के में नहीं लेना चाहिए। केवल एक जागरूक और जानकार नागरिक ही रक्षा के विशाल औद्योगिक और सैन्य तंत्र को हमारी

शांतिपूर्ण पद्धतियों और लक्ष्यों के साथ उचित रूप से एकीकृत कर सकता है ताकि सुरक्षा और स्वतंत्रता एक साथ फल-फूल सकें।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

12

"... रोसवेल आर्मी एयर फील्ड (आरएएएफ)..."

मई 1946 में, आर्मी एयर फोर्सेज (एएएफ) ने एसएसी को परमाणु बम गिराने की जिम्मेदारी सौंपी। कमांड की बमबारी इकाइयों में से केवल एक, न्यू मैक्सिको में वॉकर एयर फोर्स बेस (तब रोसवेल फील्ड) में स्थित 509 वीं इकाई, परमाणु बम मिशन के लिए प्रशिक्षित और तैयार थी। बी-29 विमान पर प्रशिक्षण प्राप्त कर रही 509 वीं विंग ने जापान पर पहला परमाणु बम गिराया।

संदर्भ: http://www.strategic-air-command.com/bases/Walker_AFB.htm

13

"...8 जुलाई, 1947 को, रोसवेल आर्मी एयर फील्ड (आरएएएफ) ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि फील्ड के 509 वें बॉम्ब ग्रुप के कर्मियों ने रोसवेल, न्यू मैक्सिको के पास एक खेत से दुर्घटनाग्रस्त "उड़न तश्तरी" बरामद की है..."

श्रीमती मैकलरॉय द्वारा अपने पत्र में वर्णित "उड़न तश्तरी के दुर्घटनाग्रस्त होने" की घटना के संबंध में गवाहों और उनके बयानों की निम्नलिखित सूची है:

163

नोट: घटना से संबंधित प्रशंसापत्र, हस्ताक्षरित शपथ पत्र, तस्वीरें और अन्य संसाधन सामग्री निम्नलिखित वेबसाइट पर देखी जा सकती हैं:

-- http://roswellproof.homestead.com/index.html

(कॉपीराइट ©2001 डेविड रुडियाक द्वारा। ईमेल: drudiak@lmi.net)

---

"जब हम संदेश की सामग्री को गवाहों की गवाही के साथ मिलाकर देखते हैं, तो सबूत स्पष्ट रूप से एक वास्तविक उड़न तश्तरी दुर्घटना की ओर इशारा करते हैं, भले ही यह निष्कर्ष कई लोगों को कितना भी आश्चर्यजनक लगे।"

इस गवाही का विस्तृत विवरण इस वेबसाइट के अन्य भाग में दिया गया है। इसमें मुख्य रूप से अत्यंत असामान्य मलबे और कुछ हद तक परग्रही पिंडों के अनेक और सुसंगत वर्णन शामिल हैं। यहाँ कुछ प्रमुख गवाहों के नाम दिए गए हैं:

मेजर जेसी मार्सेल: उस समय रोसवेल में खुफिया प्रमुख और भेड़ पालक मैक ब्रेज़ेल की खोज की जांच करने वाले पहले व्यक्ति, मार्सेल ने 30 साल बाद कई साक्षात्कारों में पुष्टि की कि दुर्घटना के मलबे में अत्यंत असामान्य गुण थे और यह "इस पृथ्वी का नहीं" था। मार्सेल ने फोर्ट वर्थ में रैमी द्वारा मौसम के गुब्बारों से संबंधित मामले को दबाने के बारे में भी बात की। विशेष रूप से रोसवेल के बाद बेस कमांडर कर्नल विलियम ब्लैंचर्ड, जनरल रैमी और भविष्य के अमेरिकी वायु सेना प्रमुख कर्नल जॉन रयान द्वारा की गई अत्यधिक प्रशंसात्मक समीक्षाओं पर ध्यान दें।

लेफ्टिनेंट वाल्टर हाउट: रोसवेल बेस के पूर्व जन सूचना अधिकारी, जिन्होंने बेस की प्रेस विज्ञप्ति जारी की थी। हाउट का "मृत्युशय्या पर" दिया गया गोपनीय हलफनामा हाल ही में प्रकाशित हुआ है। इसमें उन्होंने बेस के हैंगर 84/P-3 में अंतरिक्ष यान और शवों को देखने की बात स्वीकार की है और बताया है कि रहस्यमय प्रेस विज्ञप्ति जनरल रेमी का विचार था, ताकि प्रेस और जनता का ध्यान पास के और अधिक महत्वपूर्ण अंतरिक्ष यान/शव स्थल से हटाया जा सके।

सार्जेंट फ्रेडरिक बेंथल: वाशिंगटन डी.सी. से लाए गए सेना के फोटोग्राफर ने कहा कि उन्होंने दुर्घटनास्थल पर एक तम्बू में एलियन शवों की तस्वीरें खींचीं और दुर्घटनास्थल के मलबे की बड़ी मात्रा को ट्रकों में ले जाते हुए देखा।
पीएफसी एलियास बेंजामिन, रोसवेल सांसद, ने कहा कि उन्होंने कड़ी सुरक्षा वाले बेस हैंगर पी-3 से एलियन शवों को बेस अस्पताल तक पहुंचाया और डॉक्टरों द्वारा एक जीवित एलियन का इलाज करते हुए देखा; बाद में उन्हें चुप न रहने पर धमकी दी गई।
प्रथम लेफ्टिनेंट चेस्टर पी. बार्टन: एक क्रिप्टो विशेषज्ञ और मिलिट्री पुलिस इकाई में तैनात बार्टन ने बताया कि उन्हें शहर से 45 मिनट उत्तर में दुर्घटनास्थल पर सफाई का जायजा लेने का आदेश दिया गया था। वहां उन्होंने फुटबॉल मैदान के आकार का जला हुआ क्षेत्र देखा, जिसकी मिलिट्री पुलिस द्वारा कड़ी सुरक्षा की जा रही थी, वहां धातु का मलबा बिखरा हुआ था। उन्हें बताया गया कि घटनास्थल पर विकिरण मौजूद है, उन्होंने सुना कि पुरातत्वविदों ने सबसे पहले इसकी खोज की थी, और यह भी सुना कि शवों को बेस अस्पताल और फिर फोर्ट वर्थ ले जाया गया था। जो कुछ उन्होंने देखा, उससे उन्हें पता चल गया कि उड़न तश्तरी दुर्घटना की व्याख्या हास्यास्पद थी और मामले को दबाने की कोशिश की गई थी। हालांकि, बार्टन एक उड़न तश्तरी दुर्घटना के संदेहवादी होने के कारण असामान्य थे, उनका मानना था कि यह शायद एक बी-29 दुर्घटना और परमाणु दुर्घटना थी।
बिल ब्रेज़ेल जूनियर: रैंचर मैक ब्रेज़ेल के बेटे, बिल ब्रेज़ेल ने स्वतंत्र रूप से मार्सेल की गवाही के कई विवरणों की पुष्टि की, जिसमें अजीब मलबा, बड़ा, लंबा मलबा क्षेत्र और उनके पिता की एक भयंकर बिजली के तूफान के बीच हुए विस्फोट की कहानी शामिल है।
लुई रिकेट्ट: मार्सेल के कार्यालय में नियमित आर्मी सीआईसी एजेंटों में से एक, रिकेट्ट ने मलबे की असामान्य गुणवत्ता, ब्रेज़ेल के खेत में एक बड़े सफाई अभियान, उच्च गोपनीयता और यान के प्रक्षेप पथ को निर्धारित करने के लिए बाद की जांच में शामिल होने की पुष्टि की।

उन्हें दूसरों से मुख्य विमान के आकार के बारे में भी जानकारी मिली थी। चेस्टर बार्टन की तरह, उन्होंने भी मुख्य प्रभाव स्थल को रोसवेल से 45 मिनट की ड्राइव उत्तर में बताया।
ब्रिगेडियर जनरल आर्थर एक्सॉन: हालांकि वे प्रत्यक्ष रूप से इस घटना में शामिल नहीं थे, लेकिन उस समय वे राइट फील्ड में तैनात थे। घटना के तुरंत बाद उन्होंने उस क्षेत्र का हवाई सर्वेक्षण किया और बाद में राइट-पैटर्सन एयर फ़ोर्स के कमांडिंग ऑफिसर बने। अपने पहले साक्षात्कार में एक्सॉन ने स्पष्ट रूप से कहा, "रोसवेल अंतरिक्ष से एक यान की बरामदगी थी।" अन्य बातों के अलावा, उन्होंने दो मुख्य दुर्घटना स्थलों के अस्तित्व की पुष्टि की। एक्सॉन ने यह भी कहा कि उन्होंने सुना था कि शव बरामद किए गए थे और राइट-पैटर्सन की प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए परीक्षणों के आधार पर उन्होंने पुष्टि की कि मलबा अत्यंत असामान्य था। एक्सॉन ने आगे कहा कि जब वे राइट-पैटर्सन में कमांडिंग ऑफिसर थे, तब हुई अन्य दुर्घटना-बरामदगी की घटनाओं के बारे में भी उन्हें जानकारी थी।
स्टीवन लवकिन (जिन्होंने आइजनहावर और कैनेडी प्रशासन के दौरान व्हाइट हाउस आर्मी सिग्नल कोर में सेवा की, 1959-1961) हालांकि एक्सॉन की तरह प्रत्यक्ष रूप से भागीदार नहीं थे, लवकिन ने बताया कि उन्हें 1959 में पेंटागन से ब्रीफिंग मिली थी और उन्हें 1947 में न्यू मैक्सिको में हुए एक विमान दुर्घटना (संभवतः रोसवेल) से संबंधित प्रतीकों वाली एक धातु की किरण दिखाई गई थी। साथ ही उन्हें बताया गया था कि 3 या 5 एलियंस बरामद किए गए थे, जिनमें से एक शुरू में जीवित था। उन्होंने यह भी बताया कि उन्हें यूएफओ के बहुत ही ठोस फोटोग्राफिक और रडार साक्ष्य दिखाए गए थे। उन्होंने यह भी गवाही दी कि इस जानकारी को सार्वजनिक करने पर सैन्य कर्मियों को धमकियां दी गई थीं। अंत में, उन्होंने आइजनहावर की इस चिंता के बारे में बताया कि सामग्री तक पहुंच प्राप्त निजी निगमों के हाथों में सत्ता जाने से स्थिति पर नियंत्रण खो जाने का खतरा था।
ब्रिगेडियर जनरल थॉमस डुबोस: 1947 में जनरल रेमी के चीफ ऑफ स्टाफ के रूप में, डुबोस ने रोसवेल, फोर्ट वर्थ और वाशिंगटन के बीच उच्च स्तरीय फोन संचार का संचालन किया। डुबोस ने कई बार इस मामले में शामिल अत्यधिक गोपनीयता (जिसमें व्हाइट हाउस तक मामला पहुंचना भी शामिल था) के बारे में बयान दिया, जिसमें वाशिंगटन से कवर-अप

करने के लिए सीधे आदेश प्राप्त करना, जनरल रेमी की मौसम गुब्बारे की झूठी कहानी और रोसवेल से फोर्ट वर्थ, वाशिंगटन और राइट फील्ड तक मलबे की एक अत्यंत गुप्त खेप भेजना शामिल था। डुबोस की निर्णायक गवाही ने उन्हें वायु सेना की 1995 की रोसवेल रिपोर्ट में पूरी तरह से महत्वहीन बना दिया, जिसमें जनरल रेमी की मौसम गुब्बारे के साथ ली गई तस्वीरों में उनकी पहचान तक नहीं बताई गई। (डुबोस की वायु सेना जीवनी, उनके शपथ पत्र और उनकी गवाही की अधिक विस्तृत चर्चा देखने के लिए वेबसाइट पर जाएं, जिसे वायु सेना इतनी उत्सुकता से टाल रही थी।)

सार्जेंट रॉबर्ट स्लशर और प्राइवेट फर्स्ट क्लास लॉयड थॉम्पसन: 9 जुलाई, 1947 को रोसवेल से फोर्ट वर्थ के लिए एक रहस्यमय बी-29 विमान के चालक दल के सदस्य, जो बम बे में सशस्त्र गार्डों से घिरे एक बड़े लकड़ी के बक्से को ले जा रहे थे। विमान के पहुंचने पर, वहां उच्च अधिकारी और एक शव प्रबंधक मौजूद थे। संभवतः यही वह उड़ान थी जिसका जिक्र रैमी के मेमो में किया गया था, जिसमें बी-29 स्पेशल ट्रांसपोर्ट विमान द्वारा "डिस्क" में जो कुछ भी था, उसे फोर्ट वर्थ ले जाने की बात कही गई थी। उड़ान के नए गवाहों, जिनमें मुख्य सुरक्षा गार्ड की बेटी भी शामिल है, का कहना है कि बक्से के अंदर एलियन शव थे।

फ्रैंक कॉफ़मैन: एक बेहद विवादास्पद गवाह, जिसने दावा किया कि वह रोसवेल बचाव अभियान के प्रभारी विशेष सीआईसी (सेना की प्रति-खुफिया कोर) दल के चुनिंदा सदस्यों में से एक था। फिर भी, कॉफ़मैन के कुछ दावों की पुष्टि रैमी के संदेश से होती प्रतीत होती है, जिनमें ऐसे दल का अस्तित्व, रोसवेल अड्डे से लगभग 35 मील उत्तर में शवों से भरी एक अक्षुण्ण "डिस्क" की बरामदगी और रोसवेल अड्डे की प्रारंभिक प्रेस विज्ञप्ति के लिए विशेष दल की ज़िम्मेदारी शामिल है। कॉफ़मैन ने यह भी गवाही दी कि उसे एक लकड़ी के बक्से के बारे में पता था जिसे एक हैंगर में सुरक्षित रखा गया था और जिसमें शवों को शिपमेंट के लिए पैक किया गया था, संभवतः वही बक्सा जिसका वर्णन स्लशर और थॉम्पसन ने स्वतंत्र रूप से किया था।

ग्लेन डेनिस: रोसवेल के एक शव प्रबंधक और एक अन्य बेहद विवादास्पद गवाह, डेनिस ने बताया कि उन्हें बेस से संरक्षण तकनीकों और बच्चों के आकार के ताबूतों के बारे में अजीबोगरीब कॉल आते थे। डेनिस ने यह भी दावा किया कि वह रोसवेल बेस अस्पताल में थे,

जहां उन्होंने एक एम्बुलेंस के पिछले हिस्से में असामान्य मलबा देखा, जिसमें एक फली जैसी वस्तु भी शामिल थी, जिसका जिक्र शायद रैमी के संदेश में किया गया था।
165

और उसे धमकियाँ दी जा रही थीं। उसने यह भी दावा किया कि वह रोसवेल की एक नर्स को जानता है जिसने बेस अस्पताल में प्रारंभिक शव परीक्षण में सहायता की थी और जिसने उसे एलियंस के बारे में बताया था।

बाद में वह नर्स गायब हो गई। हालांकि, डेनिस द्वारा झूठा नाम बताए जाने के बाद उस रहस्यमयी नर्स की पहचान करने के प्रयास पूरी तरह विफल रहे। हालांकि, डेनिस के हलफनामे के तुरंत बाद कुछ सहायक सबूत भी देखने को मिले, जैसे कि मेडिकल टेक्नीशियन डेविड वैगनन, जिन्हें डेनिस द्वारा बताए गए विवरण से मिलती-जुलती नर्स याद थी, और पीट अनाया, जिन्होंने कहा कि वह खूबसूरत नर्स जिसे वह जानते थे और बेस हैंगर में उनसे मिली थी, जिसने उन्हें वहां पड़े शवों के बारे में बताया था, बाद में गायब हो गई।

रोसवेल के पुलिस प्रमुख एल. एम. हॉल ने बताया कि रोसवेल के अखबारों में उड़न तश्तरी दुर्घटना की खबर छपने के कुछ ही दिनों बाद डेनिस उन्हें बंदरगाह से एलियंस के लिए छोटे ताबूतों के बारे में आ रही फोन कॉल के बारे में बता रहा था। इसी तरह, सार्जेंट मिल्टन स्प्रूस ने भी कहा कि उन्होंने डेनिस से ताबूतों के बारे में फोन कॉल सुनी थी और उनके एक चिकित्सक मित्र ने उन्हें अस्पताल में एलियंस के शवों और पोस्टमार्टम के बारे में बताया था। शव परीक्षण में शामिल सभी चिकित्सक और नर्सों को तुरंत स्थानांतरित कर दिया गया और उनके भाग्य का पता नहीं चल पाया। इसके अलावा, अन्य स्वतंत्र गवाहों ने भी डेनिस द्वारा दी गई जानकारी से काफी मिलती-जुलती छोटी लाशों के मिलने के बारे में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष गवाही दी है, जिनमें वाल्टर हाउट, फ्रेडरिक बेंथल, एली बेंजामिन और "पैपी" हेंडरसन के रिश्तेदार शामिल हैं।

ओलिवर "पैपी" हेंडरसन के परिवार और मित्र: हेंडरसन रोसवेल के वरिष्ठ पायलटों में से एक थे। जब 1981 में रोसवेल में एक उड़न तश्तरी दुर्घटना की पहली सार्वजनिक खबरें फैलने लगीं, तो हेंडरसन ने अपने परिवार और मित्रों को बताया कि वही पायलट थे जिन्होंने एलियंस के शवों और दुर्घटना के मलबे को राइट फील्ड तक पहुंचाया था। उन्होंने यह भी दावा किया कि उन्होंने उस यान और शवों को देखा था और एलियंस का विवरण भी दिया था।

सार्जेंट रॉबर्ट ई. स्मिथ: रोसवेल में एक हवाई परिवहन इकाई के सदस्य, स्मिथ ने बताया कि उन्होंने सी-54 विमानों द्वारा परिवहन के लिए मलबे से भरे बक्से लोड करने में मदद की, जिनमें से एक विमान हेंडरसन और उनके दल द्वारा उड़ाया गया था। स्मिथ उन गवाहों में भी शामिल थे जिन्होंने रहस्यमय "मेमोरी फॉइल" का वर्णन किया, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि वह बक्सों में था। उन्होंने आगे बताया कि बेस पर कुछ अजनबी सादे कपड़ों में थे और किसी अज्ञात परियोजना के लिए पहचान पत्र दिखा रहे थे, शायद वे रेमी मेमो और फ्रैंक कॉफ़मैन द्वारा उल्लिखित विशेष सीआईसी टीम का हिस्सा थे। अंत में उन्होंने दावा किया कि उनका एक दूर का चचेरा भाई सीक्रेट सर्विस में था और राष्ट्रपति ट्रूमैन का प्रतिनिधित्व करते हुए बेस पर मौजूद था। (यही नाम कॉफ़मैन ने भी बताया था।)

सार्जेंट अर्ल वी. फुलफोर्ड: इंजीनियरिंग स्क्वाड्रन में, फुलफोर्ड ने कहा कि उन्होंने मिलिट्री पुलिस द्वारा संरक्षित बड़े मलबे के क्षेत्र की सफाई में भाग लिया, रहस्यमय "मेमोरी फॉयल" को संभाला, एक फ्लैटबेड ट्रक पर तिरपाल से ढकी हुई दुर्घटना वस्तु देखी जिसे हैंगर 84 में ले जाया जा रहा था, और आधी रात को उन्हें एक बड़े लकड़ी के बक्से को एक निष्क्रिय सी-54 में लोड करने के लिए मजबूर किया गया।

अर्ल ज़िम्मरमैन: पूर्व में एएफओएसआई (हवाई जहाज़ सुरक्षा खुफिया विभाग) में कार्यरत थे। अधिकारियों के क्लब में रहते हुए उन्होंने उड़न तश्तरी दुर्घटना और हवाई जहाज़ दुर्घटना की आड़ में इसकी जांच किए जाने की कई अफवाहें सुनीं। उन्होंने कई बार जनरल रेमी और चार्ल्स लिंडबर्ग को इस सिलसिले में बिना सूचना दिए अड्डे पर आते देखा। रॉबर्ट स्मिथ की तरह उन्होंने भी अड्डे पर एक अज्ञात सीआईसी अधिकारी को देखने की बात कही। कर्नल ब्लैंचर्ड ने उन्हें बताया कि सब ठीक है। बाद में उन्होंने खगोलशास्त्री डॉ. लिंकन लापाज़ के साथ काम किया और रोसवेल के सीआईसी अधिकारी लुईस रिकेट की कहानी की पुष्टि की कि लापाज़ ने सीआईसी की मदद से रोसवेल की जांच की ताकि वस्तु के प्रक्षेप पथ का पता लगाया जा सके। एक बार फिर हवाई जहाज़ दुर्घटना को बहाना बनाया गया।

लेफ्टिनेंट रॉबर्ट शिरकी: फिर सहायक ऑपरेशन अधिकारी, शिरकी ने लोडिंग देखी।

मेजर मार्सेल को जनरल रेमी से मिलने के लिए फोर्ट वर्थ ले जाने वाला बी-29 विमान। उन्होंने बताया कि उन्होंने विमान में मलबे के बक्से ले जाते हुए देखे, जिनमें उभरे हुए चिह्नों वाला एक आई-बीम और पॉलिश किए हुए स्टेनलेस स्टील रंग का धातु का एक बड़ा टुकड़ा शामिल था, जो स्पष्ट रूप से टिनफ़ॉइल रडार लक्ष्य का हिस्सा नहीं था। उन्हें बताया गया कि यह एक उड़न तश्तरी का था। गवाह रॉबर्ट पोर्टर के साथ, उन्होंने यह भी बताया कि विमान का पायलट डिप्टी कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल पायने जेनिंग्स थे, जो कर्नल ब्लैंचर्ड के आधिकारिक तौर पर छुट्टी पर होने के कारण कार्यवाहक कमांडिंग ऑफिसर थे। नौ दिन बाद, शिर्की का अचानक फिलीपींस में एक ऐसे पद पर तबादला कर दिया गया जो अस्तित्व में ही नहीं था। जेनिंग्स ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से उनके अगले कार्यभार तक पहुँचाया।
सार्जेंट रॉबर्ट पोर्टर: मार्सेल की फोर्ट वर्थ जाने वाली उड़ान में सवार थे और उन्हें मलबे के नमूनों के लिपटे हुए पैकेट सौंपे गए थे। उन्होंने बताया कि उस उड़ान का संचालन डिप्टी बेस कमांडर जेनिंग्स कर रहे थे। उन्हें विमान में बताया गया कि दुर्घटना का मलबा एक उड़न तश्तरी का था। बाद में, उन्हें बताया गया कि यह एक मौसम गुब्बारा था। उन्होंने बताया कि मलबे को दूसरे विमान में लाद दिया गया था।
आर्ट मैककिडी: रोसवेल मॉर्निंग डिस्पैच के पूर्व संपादक। उन्होंने कहा कि बेस कमांडर कर्नल ब्लैंचर्ड ने बेस प्रेस विज्ञप्ति जारी करने की अनुमति देने और अपने सैनिकों द्वारा कुछ अजीब सामग्री पाए जाने की बात स्वीकार की थी।
जुड रॉबर्ट्स: रोसवेल रेडियो स्टेशन KGFL के सह-मालिक। उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने रैंचर मैक ब्रेज़ेल का इंटरव्यू रिकॉर्ड किया था, जिसे बाद में प्रसारित किया जाना था, लेकिन वाशिंगटन से लाइसेंस रद्द होने की चेतावनी मिलने पर उन्होंने इसे वापस ले लिया। उन्होंने ब्रेज़ेल दुर्घटना स्थल के आसपास सैन्य घेरा देखने की गवाही भी दी।
विलियम वुडी: शहर के उत्तर में मुख्य राजमार्ग के किनारे लगाए गए सैन्य घेरे के एक अन्य गवाह, जिसने पश्चिम की ओर जाने वाले रास्ते को अवरुद्ध कर दिया था।
लिडिया स्लेपी: अल्बुकर्क की टेलीटाइप ऑपरेटर और शुरुआती गवाहों में से एक। उन्होंने बताया कि रोसवेल के रेडियो रिपोर्टर जॉनी मैकबॉयल द्वारा दुर्घटनाग्रस्त उड़न तश्तरी को

देखने और शवों के बारे में सुनने की घटना को एफबीआई ने टेलीटाइप तार पर रोककर बीच में ही काट दिया था।

लोरेटा प्रॉक्टर: रैंचर मैक ब्रेज़ल की पड़ोसी। ब्रेज़ल ने उन्हें और उनके पति को रोसवेल जाने से पहले एक अजीब सामग्री मिलने की बात बताई और उन्हें लकड़ी जैसा एक टुकड़ा दिखाया जिसे काटा या जलाया नहीं जा सकता था। उन्होंने ब्रेज़ल को रोसवेल जाकर इसकी सूचना देने की सलाह दी। ब्रेज़ल को सैन्य अड्डे पर हिरासत में लिया गया और लौटने पर उन्होंने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार की कड़ी शिकायत की।

सैली स्ट्रिकलैंड टैडोलिनी: ब्रेज़ेल की एक और पड़ोसी। हालांकि उस समय वह केवल 9 वर्ष की थीं, उन्हें याद था कि मैक ब्रेज़ेल के वयस्क बेटे बिल ब्रेज़ेल ने स्मृति गुणों वाले धातु जैसे दिखने वाले मलबे का एक टुकड़ा उनके परिवार को दिखाने के लिए लाया था (इस घटना की पुष्टि उनकी माँ ने भी की)। उन्होंने इसे सख्त बताया, रेशम या साटन जैसे चिकने "कपड़े" जैसा बताया, और कहा कि यह कुचलने के बाद अपने मूल आकार में वापस आ जाता था। उन्होंने बिल ब्रेज़ेल की सामग्री मिलने की कहानी और मार्सेल की स्मृति गुणों वाले धातु के कपड़े की कहानी की भी स्वतंत्र रूप से पुष्टि की, जिसमें वह फूँक मार सकता था (इसलिए यह गुब्बारे की सामग्री नहीं थी)। उन्हें यह भी याद था कि बड़े लोग मैक ब्रेज़ेल के साथ सेना द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के बारे में बात करते थे।

डॉ. जेसी मार्सेल जूनियर: 1947 में मेजर मार्सेल के 11 वर्षीय बेटे ने बताया कि कैसे उनके पिता मलबे के क्षेत्र से लौटने पर आधी रात को उनकी माँ और उन्हें जगाकर एक "उड़न तश्तरी" के टुकड़े दिखाए। अन्य सामग्रियों के अलावा, उन्हें बैंगनी रंग के "चित्रलिपि" वाले एक छोटे धातु के "आई-बीम" की स्पष्ट याद है।

---

14

"...आठवीं वायु सेना के कमांडिंग जनरल..."

167

"जनरल रोजर एम. रेमी रोसवेल घटना में एक प्रमुख व्यक्ति थे, लेकिन उनके बारे में जानकारी मिलना मुश्किल है। हालांकि वे 1950 के दशक की शुरुआत में एक काफी महत्वपूर्ण वायु सेना जनरल बन गए थे, लेकिन किसी कारणवश वायु सेना के जनरलों के जीवनी संबंधी वेब पेज पर उनका नाम नहीं है।"

रेमी का जन्म 1903 में सल्फर स्प्रिंग्स, टेक्सास में हुआ था, लेकिन वे फोर्ट वर्थ से लगभग 40 मील उत्तर में स्थित डेंटन, टेक्सास में पले-बढ़े। उन्होंने डेंटन के नॉर्थ टेक्सास स्टेट टीचर्स कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और चिकित्सा का अध्ययन करना चाहते थे। लेकिन उन्होंने एक रोडियो प्रतियोगिता जीती और "किताबों की बजाय खेत में काम करना उन्हें ज़्यादा पसंद था।"

वह स्थानीय नेशनल गार्ड यूनिट में मेस सार्जेंट थे, और कप्तान ने युवा "काउबॉय" रेमी से अमेरिकी सैन्य अकादमी में प्रवेश के लिए प्रतियोगी परीक्षा देने का आग्रह किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें वेस्ट पॉइंट में नियुक्ति मिली। उन्होंने 1924 में वेस्ट पॉइंट में प्रवेश किया।

26 जुलाई, 1946: रैमी ने क्रॉसरोड्स अभियान के दौरान रोसवेल के खुफिया प्रमुख मेजर जेसी मार्सेल के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्हें पत्र लिखा। उन्होंने सुरक्षा में उनके महत्वपूर्ण योगदान, जटिल खुफिया मामलों को संभालने की उनकी क्षमता और कर्मचारियों को दी जाने वाली उनकी उत्कृष्ट ब्रीफिंग का उल्लेख किया। एक साल बाद, मार्सेल को रोसवेल के पास रैंचर मैक ब्रेज़ेल द्वारा पाए गए रहस्यमय विमान दुर्घटना के मलबे की प्रारंभिक जांच का जिम्मा सौंपा गया और मलबे को जनरल रैमी द्वारा जांच के लिए फोर्ट वर्थ ले जाया गया।

30 जून, 1947: रेमी और उनके खुफिया प्रमुख प्रेस को साक्षात्कार दे रहे थे और उड़न तश्तरी की नई घटना का खंडन कर रहे थे।

6 जुलाई, 1947: रेमी ने अपना पूरा दिन अपने गृहनगर डेंटन, टेक्सास में एक हवाई प्रदर्शनी में बिताया (और संभवतः रिश्तेदारों से भी मिले)। इस बीच, फोर्ट वर्थ में, रेमी बेस से दूर थे, उनके चीफ ऑफ स्टाफ, ब्रिगेडियर जनरल थॉमस डुबोस ने बताया कि उन्हें रोसवेल में हुई खोज के बारे में सबसे पहले एसएसी के कार्यवाहक चीफ ऑफ स्टाफ जनरल मैकमुलन से

फोन पर पता चला। डुबोस के अनुसार, मैकमुलन ने मलबे के नमूनों को तुरंत "कर्नल कूरियर" द्वारा वाशिंगटन भेजने का आदेश दिया, जो पहले फोर्ट वर्थ में रुका। डुबोस ने बताया कि पूरा ऑपरेशन अत्यंत गोपनीयता के साथ किया गया था। मैकमुलन ने उन्हें किसी को भी, यहां तक कि रेमी को भी, न बताने का आदेश दिया था।

8 जुलाई, 1947: कुख्यात रोसवेल बेस फ्लाइंग डिस्क प्रेस विज्ञप्ति और उसके बाद रैमी द्वारा इसे मौसम गुब्बारा बताकर खंडन करना। डुबोस के अनुसार, मैकमुलन ने वाशिंगटन से डुबोस को किए गए एक अन्य फोन कॉल में इस मामले को दबाने का आदेश दिया था। डुबोस और रोसवेल खुफिया प्रमुख जेसी मार्सेल दोनों ने कहा कि मौसम गुब्बारा वह चीज नहीं थी जो मार्सेल रोसवेल से लाए थे, बल्कि यह प्रेस से बचने के लिए गढ़ी गई एक मनगढ़ंत कहानी थी।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

15

"... अमेरिकी महिला सेना वायु सेना..."

महिला सेना कोर (डब्ल्यूएसी) अमेरिकी सेना की महिला शाखा थी। इसकी स्थापना 1942 में एक सहायक इकाई, महिला सेना सहायक कोर के रूप में हुई थी, और 1943 में इसे डब्ल्यूएसी का पूर्ण दर्जा प्राप्त हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लगभग 150,000 अमेरिकी महिलाओं ने डब्ल्यूएएसी और डब्ल्यूएसी में सेवा की। वे नर्सों के अलावा सेना में सेवा करने वाली पहली महिलाएं थीं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

16

"...फ्लाइट नर्स"...

168

"फ्लाइट नर्स बैज दो अलग-अलग संस्करणों में जारी किया जाता है, एक नौसेना के लिए और दूसरा वायु सेना के लिए। फ्लाइट नर्स बैज प्राप्त करने के लिए, एक सैन्यकर्मी को कमीशन प्राप्त अधिकारी और पंजीकृत नर्स होना चाहिए और साथ ही एयरक्रू बैज के लिए आवश्यक प्रशिक्षण भी पूरा करना होगा। उड़ान के दौरान प्रशिक्षण और अवलोकन की परिवीक्षा अवधि के बाद फ्लाइट नर्स बैज प्रदान किया जाता है।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

17

..."प्रतिखुफिया अधिकारी शेरिडन कैविट"... (कृपया निम्नलिखित फुटनोट देखें)

18

"...मुझे खुफिया अधिकारी श्री कैविट के साथ उनकी गाड़ी के चालक के रूप में दुर्घटनास्थल पर जाने के लिए कहा गया था..."

"इस दस्तावेज़ में दी गई अधिकांश गवाहियाँ स्टैंटन फ्रीडमैन और डॉन बर्लिनर द्वारा लिखित 1992 की पुस्तक "क्रैश एट कोरोना" से ली गई हैं, जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका में पैरागॉन हाउस द्वारा प्रकाशित किया गया था। उस पुस्तक में कई अन्य रोचक सामग्री भी शामिल हैं, जिनमें न्यू मैक्सिको में एक अन्य दुर्घटना स्थल से संबंधित सामग्री भी शामिल है।"

घटनाओं के अनुक्रम:

2 जुलाई, 1947 की शाम को, न्यू मैक्सिको के कोरोना के पास फोस्टर रेंच पर एक उड़न तश्तरी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। यह दुर्घटना भीषण आंधी-तूफान के दौरान हुई। (दुर्घटनास्थल के सबसे नजदीक सैन्य अड्डा न्यू मैक्सिको के रोसवेल में है; इसलिए, कोरोना के दुर्घटनास्थल के करीब होने के बावजूद, रोसवेल इस घटना से कोरोना की तुलना में अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है।)

3 जुलाई 1947 को विलियम "मैक" ब्रेज़ल (उच्चारण "फ्रैज़ल" जैसा) और उनकी सात वर्षीय पड़ोसी डी प्रॉक्टर को दुर्घटनाग्रस्त उड़न तश्तरी का मलबा मिला। ब्रेज़ल फोस्टर रेंच के फोरमैन थे। मलबे के टुकड़े एक बड़े क्षेत्र में फैले हुए थे, शायद आधे मील से भी अधिक लंबे क्षेत्र में। जब ब्रेज़ल डी को घर वापस छोड़ने गए, तो उन्होंने मलबे का एक टुकड़ा डी के माता-

पिता, फ्लॉयड और लोरेटा प्रॉक्टर को दिखाया। वे सभी इस बात पर सहमत थे कि उन्होंने ऐसा मलबा पहले कभी नहीं देखा था।

6 जुलाई, 1947 को ब्रेज़ेल ने मलबे के कुछ टुकड़े चावेस काउंटी के शेरिफ जॉर्ज विलकॉक्स को दिखाए। विलकॉक्स ने रोसवेल आर्मी एयर फील्ड (एएएफ) को फोन किया और खुफिया अधिकारी मेजर जेसी मार्सेल से बात की। मार्सेल शेरिफ के कार्यालय गए और मलबे का निरीक्षण किया। मार्सेल ने अपने कमांडिंग ऑफिसर, कर्नल विलियम "बुच" ब्लैंचर्ड को रिपोर्ट दी। ब्लैंचर्ड ने मार्सेल को काउंटर इंटेलिजेंस कोर से किसी को लाने और ब्रेज़ेल के साथ खेत पर जाकर जितना हो सके उतना मलबा इकट्ठा करने का आदेश दिया, जिसे वे अपने दो वाहनों में लाद सकें।

इसके तुरंत बाद, सैन्य पुलिस शेरिफ के कार्यालय पहुंची, ब्रेज़ेल द्वारा वहां छोड़े गए मलबे को इकट्ठा किया और उसे ब्लैंचर्ड के कार्यालय में पहुंचा दिया। फिर मलबे को फोर्ट वर्थ स्थित आठवीं वायु सेना के मुख्यालय ले जाया गया और वहां से वाशिंगटन भेज दिया गया।

इसी बीच, काउंटर इंटेलिजेंस कोर के मार्सेल और शेरिडन कैविट मैक ब्रेज़ेल के साथ उस फार्महाउस की ओर रवाना हुए। वे देर शाम वहाँ पहुँचे। उन्होंने फार्महाउस के एक छोटे से बाहरी कमरे में स्लीपिंग बैग में रात बिताई और सुबह दुर्घटनास्थल की ओर प्रस्थान किया।

7 जुलाई, 1947 को मार्सेल और कैविट ने दुर्घटनास्थल से मलबा इकट्ठा किया। कैविट की गाड़ी में मलबा भरने के बाद, मार्सेल ने कैविट से आगे जाने को कहा, और बताया कि वह और मलबा इकट्ठा करेगा, और वे बाद में रोसवेल एएएफ में मिलेंगे। मार्सेल ने अपनी गाड़ी में मलबा भर लिया।

मलबे के साथ। हवाई अड्डे पर वापस जाते समय, मार्सेल घर पर रुका ताकि वह अपनी पत्नी और बेटे को वह अजीबोगरीब सामग्री दिखा सके जो उसे मिली थी।
7 जुलाई, 1947 को, शाम लगभग 4:00 बजे, रोसवेल के रेडियो स्टेशन KSWS की लिडिया स्लेपी ने टेलीटाइप मशीन पर फोस्टर रेंच पर दुर्घटनाग्रस्त हुई एक उड़न तश्तरी के बारे में एक खबर प्रसारित करना शुरू किया। प्रसारण बाधित हो गया, ऐसा प्रतीत होता है कि एफबीआई द्वारा।
8 जुलाई, 1947 की सुबह, मार्सेल और कैविट दो गाड़ियों में मलबा भरकर रोसवेल एएएफ वापस पहुंचे। मार्सेल इस मलबे के साथ, या इसके अधिकांश भाग के साथ, फोर्ट वर्थ एएएफ के लिए उड़ान भरी।
8 जुलाई, 1947 को दोपहर के आसपास, रोसवेल एएएफ में कर्नल ब्लैंचर्ड ने सेकंड लेफ्टिनेंट वाल्टर हाउट को एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करने का आदेश दिया, जिसमें देश को बताया गया कि सेना को एक दुर्घटनाग्रस्त उड़न तश्तरी का मलबा मिला है। हाउट रोसवेल एएएफ में 509 वें बॉम्ब ग्रुप के जन सूचना अधिकारी थे। हाउट ने प्रेस विज्ञप्ति रेडियो स्टेशन केजीएफएल के फ्रैंक जॉयस को सौंपी। जॉयस ने हाउट के बेस पर लौटने का इंतजार किया, फिर उन्हें फोन करके खबर की पुष्टि की। इसके बाद जॉयस ने वेस्टर्न यूनियन के तार के माध्यम से खबर यूनाइटेड प्रेस ब्यूरो को भेज दी।
8 जुलाई, 1947 की दोपहर को, वाशिंगटन में जनरल क्लेमेंस मैकमुलन ने फोर्ट वर्थ में कर्नल (बाद में ब्रिगेडियर जनरल) थॉमस डुबोस से टेलीफोन पर बात की, जो आठवीं वायु सेना के कमांडर जनरल रोजर रेमी के चीफ ऑफ स्टाफ थे। मैकमुलन ने डुबोस को आदेश दिया कि वे रेमी को एक झूठी कहानी गढ़कर उड़न तश्तरी की घटना को दबाने के लिए कहें और दुर्घटना से संबंधित कुछ सामग्री तुरंत वाशिंगटन भेजें।
8 जुलाई, 1947 की दोपहर को, जनरल रोजर रेमी ने फोर्ट वर्थ स्थित आठवीं वायु सेना के मुख्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की, जिसमें उन्होंने घोषणा की कि कोरोना में जो दुर्घटनाग्रस्त हुआ था वह एक मौसम गुब्बारा था, न कि उड़न तश्तरी। इस बात को विश्वसनीय बनाने के लिए, उन्होंने प्रेस को एक क्षतिग्रस्त मौसम गुब्बारे के अवशेष दिखाए, जिसके बारे में

उन्होंने दावा किया कि यह दुर्घटनास्थल का वास्तविक मलबा था। (जाहिर है, प्रेस ने यह नहीं पूछा कि सेना ने न्यू मैक्सिको के एक दूरस्थ क्षेत्र में स्थित दुर्घटनास्थल से मौसम गुब्बारे के मलबे को इतनी जल्दी फोर्ट वर्थ, टेक्सास, जहां प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई थी, क्यों पहुंचाया।)

उड़न तश्तरी वाली घटना की शुरुआती खबर छापने वाले एकमात्र समाचार पत्र मध्यपश्चिम से पश्चिम तक के शाम के समाचार पत्र थे, जिनमें शिकागो डेली न्यूज, लॉस एंजिल्स हेराल्ड एक्सप्रेस, सैन फ्रांसिस्को एग्जामिनर और रॉसवेल डेली रिकॉर्ड शामिल थे। न्यूयॉर्क टाइम्स, वाशिंगटन पोस्ट और शिकागो ट्रिब्यून सुबह के समाचार पत्र थे, इसलिए उन्होंने अगली सुबह केवल इस मामले को दबाने वाली खबर छापी।

कुछ समय बाद, फोस्टर रेंच पर मलबे के मैदान में सैनिकों का एक बड़ा दल भेजा गया, जिसमें कई मिलिट्री पुलिस (एमपी) भी शामिल थीं जिनका काम मैदान तक पहुंच को सीमित करना था। एक व्यापक तलाशी अभियान चलाया गया।

इसे मलबे के क्षेत्र की सीमा से काफी दूर लॉन्च किया गया था। एक-दो दिन के भीतर, मलबे के क्षेत्र से कुछ मील दूर, उड़न तश्तरी का मुख्य भाग मिला, और उससे एक-दो मील दूर छोटे मानव जैसे कई शव मिले।

सेना ने मैक ब्रेज़ेल को लगभग एक सप्ताह के लिए हिरासत में रखा, इस दौरान उसे सैन्य सुरक्षाकर्मियों के साथ रोसवेल की सड़कों पर देखा गया। उसके इस व्यवहार ने उसके दोस्तों के बीच जिज्ञासा जगा दी, क्योंकि वह बिना पहचाने उनके सामने से गुजर गया। हिरासत की इस अवधि के बाद, ब्रेज़ेल ने अपनी शुरुआती कहानी को नकार दिया।

--- संदर्भ: http://ufo.jack.sk/unidentified-flying-objects/roswell/

19

"...मुझे पता चला कि विमान में सवार एक कर्मी दुर्घटना में बच गया था..."

निम्नलिखित, श्रीमती मैकलॉय के पत्र में वर्णित घटना के समय, रोसवेल, न्यू मैक्सिको में शव प्रबंधक ग्लेन डेनिस द्वारा 8-7-1991 को प्रस्तुत हस्ताक्षरित हलफनामे की शब्दशः प्रतिलिपि है: (कृपया ध्यान दें: श्रीमती मैकलॉय वही नर्स नहीं हैं जिनका उल्लेख श्री डेनिस ने अपने हलफनामे में किया है। यद्यपि कोई आधिकारिक पहचान नहीं हुई है, कई गवाहों ने "नर्स एक्स" की पहचान प्रथम लेफ्टिनेंट एडेलिन "एलीन" फैंटन के रूप में की है।)

ग्लेन डेनिस का हलफनामा

(1) मेरा नाम ग्लेन डेनिस है

(2) मेरा पता है: XXXX

(3) मैं ( ) इस रूप में कार्यरत हूँ: ___ ( ) सेवानिवृत्त,

(4) जुलाई 1947 में, मैं रोसवेल स्थित बैलार्ड फ्यूनरल होम में शवगृह कर्मचारी के रूप में कार्यरत था, जिसका रोसवेल आर्मी एयर फील्ड के लिए शवगृह सेवाएं प्रदान करने का अनुबंध था। एक दोपहर, लगभग 1:15 या 1:30 बजे, मुझे बेस के शवगृह अधिकारी का फोन आया, जिन्होंने पूछा कि हमारे पास स्टॉक में सबसे छोटे आकार का वायुरोधी ताबूत कौन सा है। उन्होंने कहा, "हमें यह जानना ज़रूरी है, ताकि भविष्य में ज़रूरत पड़ने पर हम इसका इस्तेमाल कर सकें।" उन्होंने पूछा कि इसे मंगवाने में कितना समय लगेगा, और मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि मैं अगले दिन उनके लिए एक ताबूत मंगवा सकता हूँ। उन्होंने कहा कि ज़रूरत पड़ने पर वे दोबारा फोन करेंगे।

(5) लगभग 45 मिनट से एक घंटे बाद, उन्होंने मुझे वापस फोन किया और मुझसे रेगिस्तान में लंबे समय तक पड़े शवों की तैयारी के बारे में बताने को कहा। इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, उन्होंने कहा कि वे विशेष रूप से यह जानना चाहते हैं कि तैयारी की प्रक्रियाओं का शरीर के रासायनिक यौगिकों, रक्त और ऊतकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। मैंने समझाया कि हमारे रसायन मुख्य रूप से फॉर्मेल्डिहाइड और पानी के गाढ़े घोल थे, और इस प्रक्रिया से शरीर की रासायनिक संरचना में बदलाव आ सकता था। मैंने उन्हें किसी भी समस्या में

सहायता करने के लिए बेस पर आने की पेशकश की, लेकिन उन्होंने फिर से कहा कि यह जानकारी भविष्य के उपयोग के लिए है। मैंने सुझाव दिया कि यदि ऐसी कोई स्थिति उत्पन्न होती है, तो मैं भंडारण और परिवहन के लिए शव को सूखी बर्फ में जमा देने का प्रयास करूंगा।

(6) लगभग एक घंटे या एक घंटे और 15 मिनट बाद, मुझे एक सैनिक को ले जाने के लिए फोन आया जिसके सिर पर चोट लगी थी और शायद नाक में फ्रैक्चर था। मैंने उसे प्राथमिक उपचार दिया और उसे बेस तक ले गया। मैं वहाँ शाम लगभग 5:00 बजे पहुँचा।

(7) हालाँकि मैं एक नागरिक था, फिर भी मुझे बेस पर आमतौर पर बिना किसी रोक-टोक के आने-जाने की अनुमति थी क्योंकि वे मुझे जानते थे। मैंने एम्बुलेंस को बेस के अस्पताल के पीछे ले जाकर दूसरी एम्बुलेंस के बगल में खड़ा कर दिया। दरवाज़ा खुला था और अंदर मुझे कुछ मलबा दिखाई दिया। कई टुकड़े थे जो किसी डोंगी के निचले हिस्से जैसे दिख रहे थे, लगभग तीन फीट लंबे। यह बैंगनी रंग के स्टेनलेस स्टील जैसा लग रहा था, मानो इसे उच्च तापमान पर रखा गया हो। उस सामग्री पर कुछ अजीबोगरीब लिखावट थी जो मिस्र के चित्रलिपि जैसी लग रही थी। वहाँ दो सैन्यकर्मी भी मौजूद थे।

(8) मैंने एयरमैन की जाँच की और कोक पीने के लिए स्टाफ लाउंज में चला गया। मेरा इरादा एक नर्स, एक द्वितीय लेफ्टिनेंट को ढूंढने का था, जिसे लगभग तीन महीने पहले ही कॉलेज से कमीशन मिला था। उस समय उसकी उम्र 23 वर्ष थी (मैं 22 वर्ष का था)। मैंने उसे एक जाँच कक्ष से बाहर आते देखा, उसके मुँह पर कपड़ा था। उसने कहा, "हे भगवान, यहाँ से निकल जाओ वरना तुम बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाओगे।" वह दूसरे दरवाजे से अंदर चली गई जहाँ एक कैप्टन खड़ा था।

उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ और यहाँ क्या कर रहा हूँ। मैंने उन्हें बताया, और उन्होंने मुझे वहीं रुकने का निर्देश दिया। मैंने कहा, "लगता है आपका एक्सीडेंट हो गया है; क्या आप चाहते हैं कि मैं तैयार हो जाऊँ?" उन्होंने मुझे वहीं रुकने को कहा। फिर दो सांसद आए और मुझे अस्पताल से बाहर ले जाने लगे। उन्होंने कहा कि उन्हें मेरे पीछे-पीछे शवगृह तक जाने का आदेश मिला है।

(9) हम लगभग 10 या 15 फीट ही आगे बढ़े थे कि मैंने एक आवाज़ सुनी, "उस कमीने से हमारा काम अभी खत्म नहीं हुआ है। उसे वापस लाओ।" वहाँ एक और कैप्टन था, लाल बालों वाला, जिसकी आँखें मैंने अब तक देखी सबसे क्रूर थीं, उसने कहा, "तुमने कुछ नहीं देखा, यहाँ कोई दुर्घटना नहीं हुई है, और अगर तुमने कुछ कहा तो तुम बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाओगे।" मैंने कहा, "देखो साहब, मैं एक आम नागरिक हूँ और आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" उसने कहा, "हाँ, हम बिगाड़ सकते हैं; कोई तुम्हारी हड्डियाँ रेत से निकाल रहा होगा।" वहाँ एक काले रंग का सार्जेंट था जिसके हाथ में एक पैड था, उसने कहा, "वह हमारे कुत्तों के लिए अच्छा खाना बन सकता है।" कैप्टन ने कहा, "उस कमीने को बाहर निकालो।" मिलिट्री पुलिस मेरे पीछे-पीछे शवगृह तक आई।

(10) अगले दिन, मैंने नर्स को फोन करके पता करने की कोशिश की कि क्या हो रहा है। लगभग 11:00 बजे, उसने अंतिम संस्कार गृह में फोन किया और कहा, "मुझे आपसे बात करनी है।" हम अधिकारियों के क्लब में मिलने के लिए सहमत हुए। वह बहुत परेशान थी। उसने कहा, "आपसे बात करने से पहले, आपको मुझसे एक पवित्र शपथ लेनी होगी कि आप मेरा नाम कभी नहीं लेंगे, क्योंकि मैं बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ सकती हूँ।" मैं मान गया।

(11) उसने बताया कि वह कुछ सामान लेने एक कमरे में गई थी जहाँ दो डॉक्टर प्रारंभिक पोस्टमार्टम कर रहे थे। डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें प्रक्रिया के दौरान नोट्स लेने की आवश्यकता है। उसने कहा कि उसने अपने जीवन में कभी इतनी भयानक गंध नहीं सूँघी थी, और यह दृश्य अब तक का सबसे भयावह दृश्य था। उसने कहा, "ऐसा कुछ किसी ने कभी नहीं देखा।" जब वह बोल रही थी, तो मुझे चिंता हुई कि कहीं वह सदमे में न चली जाए।

(12) उसने मुझे शरीरों का एक चित्र बनाकर दिखाया, जिसमें एक हाथ भी था जिसमें केवल चार उंगलियाँ थीं; डॉक्टरों ने देखा कि उंगलियों के सिरों पर चूषण कप जैसे छोटे-छोटे पैड थे। उसने कहा कि शरीर के अनुपात में सिर बहुत बड़ा था; आँखें अंदर धँसी हुई थीं; खोपड़ी लचीली थी; नाक अवतल थी जिसमें केवल दो छिद्र थे; मुँह एक पतली दरार जैसा था, और डॉक्टरों ने कहा कि दाँतों की जगह मोटी उपास्थि थी। कान केवल छोटे छिद्र थे जिन पर फ्लैप थे। उन पर बाल नहीं थे, और त्वचा काली थी—शायद धूप में रहने के कारण। उसने मुझे चित्र दिए।

(13) तीन शव थे; दो बुरी तरह क्षत-विक्षत और टुकड़े-टुकड़े हो चुके थे, मानो किसी शिकारी ने उन्हें मार डाला हो; एक शव लगभग सही-सलामत था। उनकी लंबाई साढ़े तीन से चार फीट थी। उसने मुझे बताया कि डॉक्टरों ने कहा: "हमने ऐसा पहले कभी नहीं देखा; चिकित्सा की किताबों में भी ऐसा कुछ नहीं लिखा है।" उसने बताया कि वह और डॉक्टर दोनों बीमार पड़ गए। उन्हें एयर कंडीशनिंग बंद करनी पड़ी और उन्हें डर था कि बदबू पूरे अस्पताल में फैल जाएगी। उन्हें ऑपरेशन को एक हवाई जहाज के हैंगर में ले जाना पड़ा।

(14) मैं उसे वापस अधिकारियों की बैरक तक ले गया। अगले दिन मैंने अस्पताल में फोन करके उसका हालचाल पूछा, तो उन्होंने बताया कि वह उपलब्ध नहीं है। मैंने कई दिनों तक उससे संपर्क करने की कोशिश की, और आखिरकार एक नर्स से बात हुई जिसने बताया कि लेफ्टिनेंट का कुछ अन्य कर्मियों के साथ तबादला हो गया है। लगभग 10 दिन से दो सप्ताह बाद, मुझे उसका एक पत्र मिला जिस पर एक एपीओ नंबर लिखा था। उसने संकेत दिया कि हम भविष्य में पत्र द्वारा इस घटना पर चर्चा कर सकते हैं। मैंने उसे जवाब में पत्र लिखा और लगभग दो सप्ताह बाद वह पत्र "प्रेषक को लौटाया गया - मृत" लिखकर वापस आ गया। बाद में, बेस पर मौजूद एक नर्स ने बताया कि अफवाह थी कि वह और पांच अन्य नर्सें एक प्रशिक्षण मिशन पर थीं और एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी।

(15) शेरिफ जॉर्ज विलकॉक्स और मेरे पिता बहुत करीबी दोस्त थे। बेस पर हुई घटनाओं के अगले दिन सुबह शेरिफ मेरे माता-पिता के घर गए और मेरे पिता से कहा, "मुझे नहीं पता कि ग्लेन किस तरह की मुसीबत में है, लेकिन आप अपने बेटे से कहिए कि उसे कुछ नहीं पता और

"मैंने अड्डे पर कुछ नहीं देखा है।" उन्होंने आगे कहा, "वे आपका और आपकी पत्नी का नाम, आपका और आपके बच्चों का पता जानना चाहते हैं।" मेरे पिता तुरंत शवगृह गए और मुझसे पूछा कि मैं किस मुसीबत में हूँ। उन्होंने शेरिफ विलकॉक्स के साथ हुई बातचीत के बारे में बताया, और इसलिए मैंने उन्हें पिछले दिन की घटनाओं के बारे में बताया। हाल तक मैंने केवल उन्हीं को यह कहानी सुनाई थी।

(16) मैंने उस दिन नर्स द्वारा दिए गए रेखाचित्रों को संभाल कर रख लिया था। हाल ही में, एक शोधकर्ता के अनुरोध पर, मैंने अंतिम संस्कार गृह में अपनी निजी फाइलों का पता लगाने की कोशिश की, लेकिन वे सभी नष्ट हो चुकी थीं।

(17) मुझे यह बयान देने के लिए कोई भुगतान या मूल्यवान वस्तु नहीं दी गई है, जो मेरी जानकारी के अनुसार सत्य है।

हस्ताक्षर: ग्लेन डेनिस, दिनांक: 8-7-91

संदर्भ: http://roswellproof.homestead.com/Dennis.html

(कॉपीराइट ©2001 डेविड रुडियाक द्वारा। ईमेल: drudiak@lmi.net)

---

20

"...दूरसंवेदी विचार..."

टेलीपैथी, ग्रीक शब्द τελε (टेली) जिसका अर्थ है "दूरस्थ" और πάθεια (पैथिया) जिसका अर्थ है "प्रभावित होना", पांच पारंपरिक इंद्रियों के अलावा अन्य माध्यमों से व्यक्तियों के बीच विचारों या भावनाओं की सूचनाओं के कथित हस्तांतरण का वर्णन करती है। यह शब्द 1882 में शास्त्रीय विद्वान फ्रेडरिक डब्ल्यू. एच. मायर्स, जो सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च के संस्थापकों में से एक थे, द्वारा विशेष रूप से पहले के शब्द "विचार-स्थानांतरण" को प्रतिस्थापित करने के लिए गढ़ा गया था। जो व्यक्ति टेलीपैथी का उपयोग करने में सक्षम होता है, उसे दूसरों के मन को पढ़ने में सक्षम कहा जाता है। टेलीपैथी, मनोगतिकी के साथ, परा-मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की मुख्य शाखाओं का निर्माण करती है, और इस क्षेत्र में टेलीपैथी का पता लगाने और उसे समझने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं।

टेलीपैथी काल्पनिक कथाओं और विज्ञान कथाओं में एक आम विषय है, जिसमें कई सुपरहीरो और सुपरविलेन टेलीपैथिक क्षमताओं से लैस होते हैं। ऐसी क्षमताओं में दूसरों के विचारों को महसूस करना और दूसरों के दिमाग को नियंत्रित करना शामिल है। ट्रांसह्यूमनिस्ट मानते हैं कि

तकनीकी रूप से सक्षम टेलीपैथी, जिसे "टेक्लेपैथी" कहा जाता है, मानवता का अपरिहार्य भविष्य होगा, और हम मानव तंत्रिका तंत्र को सीधे जोड़ने के लिए व्यावहारिक, सुरक्षित उपकरण विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

21

"...मैं उस जगह पर अकेली महिला थी..."

एलियन शवों और एक गायब नर्स के बारे में एक और कहानी पीट और रुबेन अनाया से आई, जिन्होंने बताया कि उन्होंने न्यू मैक्सिको के लेफ्टिनेंट गवर्नर जोसेफ मोंटोया को बड़े बेस हैंगर के बाहर से उठाया था। उन्होंने बताया कि हैंगर की सुरक्षा मिलिट्री पुलिस द्वारा कड़ी की जा रही थी, और एक बेस नर्स (या शायद दो अलग-अलग नर्सें) हैंगर के बाहर आईं और उनसे थोड़ी देर बात की। रुबेन ने बताया कि नर्स ने उनसे कहा कि शव "इस दुनिया के नहीं" थे और फिर उन्होंने उनमें से एक को हिलते हुए देखा। रुबेन ने बताया कि वह खुद देखने गए और उन्होंने भी दूर से हैंगर के अंदर चादरों के नीचे दो छोटे शवों की झलक देखी, जिनमें से एक हिल रहा था। उन्होंने जिस नर्स से बात की थी, उसका वर्णन करते हुए कहा कि वह गोरी और भारी-भरकम थी। [नोट: हालांकि, जून/जुलाई 1947 के आसपास की बेस ईयरबुक में चित्रित पांच नर्सों में से कोई भी गोरी या भारी-भरकम नहीं दिखती है।]

173

इसके विपरीत, पीट अनाया ने कहा कि वह जिस नर्स से बात कर रहे थे, उसे ऑफिसर क्लब में जानते थे (उनके भाई रूबेन वहां रसोइया का काम करते थे), पिछली हैलोवीन पार्टी में उन्होंने उसके साथ एक बार नृत्य किया था, वह उनकी पत्नी मैरी जैसी दिखती थी और खूबसूरत बालों वाली एक सुंदर महिला थी। वह हैंगर के अंदर जाकर देखना चाहते थे कि क्या हो रहा है, लेकिन नर्स ने उनसे कहा कि उन्हें कुछ भी नहीं देखना चाहिए। इसके बाद, उन्होंने कहा कि उन्होंने उसे फिर कभी नहीं देखा। (स्रोत: टिम शॉक्रॉस, द रोसवेल फाइल, 1997)
रोसवेल के पूर्व पुलिस प्रमुख एल.एम. हॉल को याद है कि अखबारों में उड़न तश्तरी के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर छपने के कुछ ही दिनों बाद डेनिस ने उन्हें बताया था कि पुलिस अड्डे से बच्चों के आकार के ताबूतों के लिए अजीबोगरीब फोन आ रहे थे, "ताकि उन एलियंस को भेजा जा सके या दफनाया जा सके।"
डेनिस की कहानी के कुछ हिस्सों की पुष्टि करने वाले एक अन्य गवाह सार्जेंट मिल्टन स्प्रूस थे, जो उस समय 830 वीं बॉम्ब स्क्वाड्रन में बी-29 के क्रू चीफ थे। स्प्रूस ने बताया कि उन्होंने डेनिस से कई साल बाद तब बात की जब डेनिस एक दोस्त के अंतिम संस्कार में शामिल हुए थे। डेनिस ने उन्हें बताया कि उन्हें बेस से दो-तीन दिन पहले हुए एक विमान हादसे में मारे गए पांच बच्चों के ताबूतों के लिए फोन आया था। इस प्रकार ऐसा लगता है कि बच्चों के ताबूतों के बारे में डेनिस की कहानी हाल की नहीं है, बल्कि यह घटना के समय की ही है।
स्प्राउस ने बताया कि शवों को एक हैंगर में ले जाया गया था जिसकी सुरक्षा में मशीनगनों से लैस सैन्यकर्मी तैनात थे। उन्होंने यह भी कहा कि डेनिस द्वारा शुरू में वर्णित शव परीक्षण के बारे में उन्हें कुछ जानकारी थी। उनके बैरक में तैनात एक साथी स्टाफ सार्जेंट, जो बेस अस्पताल में आपातकालीन कक्ष चिकित्सक के रूप में काम करता था, को वहाँ बुलाया गया था। जब वह लौटा तो उसने बताया कि दो डॉक्टरों और दो नर्सों ने एक या दो "मानव-जैसे शवों" का शव परीक्षण किया था। उसके मित्र ने कहा कि उसने शवों को देखा था। डेनिस की नर्स की तरह, सार्जेंट का भी अगले दिन तबादला हो गया और किसी को कभी पता नहीं चला कि उसका क्या हुआ।

स्प्राउस को यह भी पता चला कि शव परीक्षण में शामिल डॉक्टरों और नर्सों का भी तबादला कर दिया गया था और किसी को भी उनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। उनके ग्राउंड क्रू के पांच सदस्यों को भी मलबे को साफ करने में मदद के लिए खेत में भेजा गया था। उन्होंने स्प्राउस को बताया कि सामग्री "अविश्वसनीय" थी, जिसमें पन्नी भी शामिल थी जो कुचलने पर अपने मूल आकार में वापस आ जाती थी।

-- संदर्भ: (सैन डिएगो यूनियन-ट्रिब्यून की खबर, 26/10/2007; नॉर्थ काउंटी टाइम्स की खबर, 30/09/2007 --सैन डिएगो, रिवरसाइड)

22

"...समझने योग्य..."

यह शब्द लैटिन शब्द 'प्रीहेंडेरे' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पकड़ना"। यह किसी अंग का वह गुण है जो पकड़ने या थामने के लिए अनुकूलित होता है। पकड़ने वाले शारीरिक अंगों के उदाहरणों में नई दुनिया के बंदरों और ओपोसम की पूंछ, हाथियों की सूंड, जिराफ की जीभ, घोड़ों के होंठ और टैपिर की सूंड शामिल हैं। प्राइमेट्स के हाथ अलग-अलग मात्रा में पकड़ने वाले होते हैं, और कई प्रजातियों (यहां तक कि कुछ मनुष्यों) के पैर भी पकड़ने वाले होते हैं। बिल्लियों के पंजे भी पकड़ने वाले होते हैं। कई जीवित छिपकलियों की पूंछ पकड़ने वाली होती है (गेको, गिरगिट और स्किंक की एक प्रजाति)। जीवाश्म रिकॉर्ड से पता चलता है कि छिपकलियों (सिमियोसोरिया) में पकड़ने वाली पूंछ लाखों साल पहले ट्राइसिक काल तक पाई जाती है।

पकड़ने की क्षमता एक विकासवादी अनुकूलन है जिसने प्रजातियों को भोजन, खुदाई और रक्षा के लिए अपने पर्यावरण में हेरफेर करने में एक बड़ा प्राकृतिक लाभ प्रदान किया है। यह कई जानवरों, जैसे कि प्राइमेट्स, को ऐसे कार्यों को पूरा करने के लिए उपकरणों का उपयोग करने में सक्षम बनाता है जो अत्यधिक विशिष्ट शारीरिक संरचना के बिना अन्यथा असंभव होंगे। उदाहरण के लिए, चिंपैंजी दीमक और लार्वा पकड़ने के लिए छड़ियों का उपयोग कर सकते हैं। हालांकि, सभी पकड़ने वाले अंग उपकरण के उपयोग में नहीं आते हैं - उदाहरण के लिए, जिराफ की जीभ का उपयोग भोजन और स्वयं को साफ करने के व्यवहार में किया जाता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org
23
"...प्रकाश के दृश्य स्पेक्ट्रम से परे तरंगों या कणों का पता लगाने में सक्षम।"
दृश्य स्पेक्ट्रम (या कभी-कभी इसे ऑप्टिकल स्पेक्ट्रम भी कहा जाता है) विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का वह भाग है जो मानव आंख द्वारा देखा जा सकता है (या जिसका पता लगाया जा सकता है)।
तरंगदैर्ध्य की इस श्रेणी में विद्युतचुंबकीय विकिरण को दृश्य प्रकाश या सामान्य प्रकाश कहा जाता है। एक सामान्य मानव आँख हवा में लगभग 380 से 750 एनएम तक की तरंगदैर्ध्यों पर प्रतिक्रिया करती है। पानी और अन्य माध्यमों में संबंधित तरंगदैर्ध्य अपवर्तनांक के बराबर कम हो जाती हैं। आवृत्ति के संदर्भ में, यह 400-790 टेराहर्ट्ज़ के आसपास के क्षेत्र के अनुरूप है। प्रकाश के अनुकूल आँख की अधिकतम संवेदनशीलता आमतौर पर लगभग 555 एनएम (540 टेराहर्ट्ज़) पर होती है, जो प्रकाशीय स्पेक्ट्रम के हरे क्षेत्र में स्थित है। हालाँकि, स्पेक्ट्रम में वे सभी रंग शामिल नहीं होते जिन्हें मानव आँखें और मस्तिष्क पहचान सकते हैं। उदाहरण के लिए, भूरा, गुलाबी और मैजेंटा रंग अनुपस्थित होते हैं, क्योंकि उन्हें कई तरंगदैर्ध्यों के मिश्रण की आवश्यकता होती है, अधिमानतः लाल रंग के विभिन्न शेड्स। आँखों को दिखाई देने वाली तरंगदैर्ध्य भी "ऑप्टिकल विंडो" से होकर गुजरती हैं, जो विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का वह क्षेत्र है जो पृथ्वी के वायुमंडल से लगभग बिना क्षीण हुए गुजरता है (हालाँकि नीली रोशनी लाल रोशनी की तुलना में अधिक बिखरती है, यही कारण है कि आकाश नीला दिखाई देता है)। मानव आँख की प्रतिक्रिया व्यक्तिपरक परीक्षण द्वारा निर्धारित की जाती है, लेकिन
वायुमंडलीय विभाजक क्षेत्रों को भौतिक माप द्वारा परिभाषित किया जाता है। "दृश्यमान विभाजक क्षेत्र" इसलिए कहलाता है क्योंकि यह मानव दृश्य प्रतिक्रिया स्पेक्ट्रम के साथ ओवरलैप करता है; निकट अवरक्त विभाजक क्षेत्र मानव प्रतिक्रिया क्षेत्र से ठीक बाहर स्थित होते हैं, और मध्यम तरंगदैर्ध्य और दीर्घ तरंगदैर्ध्य या सुदूर अवरक्त क्षेत्र मानव प्रतिक्रिया क्षेत्र से बहुत दूर होते हैं।

कई प्रजातियों की आंखें उन तरंग दैर्ध्यों को देख पाती हैं जो मानव आंखों को दिखाई देने वाले स्पेक्ट्रम से भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, कई कीट, जैसे मधुमक्खियां, पराबैंगनी प्रकाश देख सकती हैं, जो फूलों में अमृत खोजने के लिए उपयोगी है। इसी कारण, पौधों की वे प्रजातियां जिनका जीवन चक्र कीट परागण से जुड़ा होता है, उनकी प्रजनन सफलता संभवतः पराबैंगनी प्रकाश में उनकी उपस्थिति पर निर्भर करती है, न कि इस बात पर कि वे हमारी आंखों को कितनी रंगीन दिखाई देती हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

24

"...इसमें विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम की पूरी श्रृंखला शामिल हो सकती है..."

विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम सभी संभावित विद्युत चुम्बकीय विकिरणों की सीमा है। किसी वस्तु का "विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम" (आमतौर पर केवल स्पेक्ट्रम) उस वस्तु से निकलने वाले विद्युत चुम्बकीय विकिरणों का विशिष्ट वितरण है।

विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम आधुनिक रेडियो में उपयोग की जाने वाली आवृत्तियों से नीचे (दीर्घ-तरंगदैर्ध्य छोर पर) से लेकर गामा विकिरण (लघु-तरंगदैर्ध्य छोर पर) तक फैला हुआ है, जिसमें हजारों किलोमीटर से लेकर परमाणु के आकार के एक अंश तक की तरंगदैर्ध्य शामिल हैं। ऐसा माना जाता है कि लघु तरंगदैर्ध्य सीमा प्लांक लंबाई के आसपास है, और दीर्घ तरंगदैर्ध्य सीमा स्वयं ब्रह्मांड का आकार है, हालांकि सिद्धांत रूप में स्पेक्ट्रम अनंत और निरंतर है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

25

"...उसकी निगाहें मानो मेरे आर-पार भेद रही थीं, मानो उसके पास 'एक्स-रे दृष्टि' हो।"

काल्पनिक कहानियों में, एक्स-रे दृष्टि को आम तौर पर इस महाशक्ति के धारक के विवेक पर वस्तुओं की परतों के आर-पार देखने की क्षमता के रूप में चित्रित किया गया है। लोग अक्सर दिखावा करते हैं कि...

एक्स-रे चश्मों के इस्तेमाल से यह क्षमता हासिल की जा सकती है, जो एक खास तरह के मज़ाकिया खिलौने होते हैं और जिनके "एक्स-रे गुणों" का रहस्य अज्ञात है। इनका उद्देश्य आमतौर पर कपड़ों के आर-पार देखना होता है, ताकि पता लगाया जा सके कि कोई व्यक्ति छिपा हुआ हथियार तो नहीं ले जा रहा है, लेकिन कभी-कभी किसी व्यक्ति के गुप्तांगों को देखने के लिए भी इनका इस्तेमाल किया जाता है। वास्तविक दुनिया में, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में एक्स-रे के कई व्यावहारिक उपयोग हैं। हालांकि वर्तमान में ऐसे उपकरण मौजूद हैं जो कपड़ों के आर-पार देख सकते हैं (टेराहर्ट्ज़ तरंगों का उपयोग करके), लेकिन उनमें से अधिकांश काफी बड़े होते हैं। हालांकि, नाइट विज़न से लैस वीडियो कैमरे भी उपलब्ध हैं जिन्हें दृश्य प्रकाश से ठीक नीचे की आवृत्ति पर कपड़ों के आर-पार देखने के लिए संशोधित किया जा सकता है।

-- स्रोत संदर्भ: Wikipedia.org

26

...तकनीकी रूप से, चिकित्सा दृष्टिकोण से, मैं कहूंगा कि एयरल के शरीर को "जीवित" भी नहीं कहा जा सकता।

"जीव" शब्द को व्यापक रूप से अणुओं के एक ऐसे समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कमोबेश एक स्थिर इकाई के रूप में कार्य करता है और जीवन के गुण रखता है। हालांकि, कई स्रोत, शाब्दिक और वैज्ञानिक, ऐसी शर्तें जोड़ते हैं जो इस शब्द को परिभाषित करने में समस्या पैदा करती हैं।

ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी जीव को "[एक] व्यक्तिगत जानवर, पौधा, या..." के रूप में परिभाषित करती है।

"एककोशिकीय जीवन रूप" यह परिभाषा समस्याग्रस्त रूप से कुछ कवक और प्रोटिस्टा जैसे गैर-पशु और पादप बहुकोशिकीय जीवन रूपों को बाहर कर देती है। शायद कम विवादास्पद रूप से, यह वायरस और सैद्धांतिक रूप से संभव मानव निर्मित गैर-जैविक जीवन रूपों को भी बाहर कर देती है।

चैम्बर्स ऑनलाइन रेफरेंस एक व्यापक परिभाषा प्रदान करता है: "कोई भी जीवित संरचना, जैसे कि पौधा, जानवर, कवक या जीवाणु, जो वृद्धि और प्रजनन करने में सक्षम हो"। "स्वतंत्र प्रजनन में सक्षम कोई भी जीवन रूप, चाहे जैविक हो या अन्य" की परिभाषा में सभी कोशिकीय जीवन के साथ-साथ स्वतंत्र प्रजनन में सक्षम कृत्रिम जीवन की संभावना भी शामिल होगी, लेकिन इसमें वायरस शामिल नहीं होंगे, जो प्रजनन के लिए मेजबान कोशिका की जैव रासायनिक प्रणाली पर निर्भर होते हैं। कुछ लोग ऐसी परिभाषा का उपयोग कर सकते हैं जिसमें वायरस भी शामिल हों।

-- स्रोत संदर्भ: Wikipedia.org

27

"...अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण नहीं होता..."

रोजमर्रा के उपयोग में 'गुरुत्वाकर्षण' और 'गुरुत्वाकर्षण' शब्द अक्सर एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, लेकिन वैज्ञानिक उपयोग में इनमें अंतर किया जा सकता है।

'गुरुत्वाकर्षण' एक सामान्य शब्द है जो द्रव्यमान वाली सभी वस्तुओं द्वारा एक दूसरे पर लगाए जाने वाले आकर्षण बल का वर्णन करता है, जबकि 'गुरुत्वाकर्षण' विशेष रूप से उस बल को संदर्भित करता है जिसे कुछ सिद्धांतों (जैसे न्यूटन के सिद्धांत) में इस आकर्षण का कारण माना जाता है। इसके विपरीत, सामान्य सापेक्षता में गुरुत्वाकर्षण अंतरिक्ष-समय के वक्रों के कारण होता है जो जड़त्वीय रूप से गतिमान वस्तुओं को एक दूसरे की ओर त्वरित करते हैं।

आइजैक न्यूटन का सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत एक भौतिक नियम है जो वर्णन करता है कि

द्रव्यमान वाले पिंडों के बीच गुरुत्वाकर्षण बल। यह शास्त्रीय यांत्रिकी का एक भाग है और इसे सर्वप्रथम न्यूटन की कृति 'फिलोसॉफिया नेचुरेलिस प्रिंसिपिया मैथमेटिका' में प्रतिपादित किया गया था, जो 1687 में प्रकाशित हुई थी। आधुनिक भाषा में इसे इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

प्रत्येक बिंदु द्रव्यमान दूसरे बिंदु द्रव्यमान को उस बल से आकर्षित करता है जो दोनों बिंदुओं को प्रतिच्छेदित करने वाली रेखा के अनुदिश होता है। यह बल दोनों द्रव्यमानों के गुणनफल के समानुपाती और उनके बीच की दूरी के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होता है।

कहाँ:

• • • • •

यहां F दो बिंदु द्रव्यमानों के बीच गुरुत्वाकर्षण बल का परिमाण है, G गुरुत्वाकर्षण स्थिरांक है।

m1 प्रथम बिंदु द्रव्यमान का द्रव्यमान है।

m2 दूसरे बिंदु द्रव्यमान का द्रव्यमान है।

r दो बिंदु द्रव्यमानों के बीच की दूरी है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

28

"...स्टेनोग्राफर..."

शॉर्टहैंड एक संक्षिप्त और/या प्रतीकात्मक लेखन विधि है जो किसी भाषा को लिखने की सामान्य विधि की तुलना में लेखन की गति या संक्षिप्तता को बढ़ाती है। शॉर्टहैंड में लिखने की प्रक्रिया को स्टेनोग्राफी कहा जाता है, जो ग्रीक शब्द स्टेनोस (संकीर्ण) और ग्राफे (लेखन) से बना है। इसे ब्रैकीग्राफी भी कहा जाता है, जो ग्रीक शब्द ब्रैचिस (छोटा) से बना है, और टैकीग्राफी, जो ग्रीक शब्द टैचिस (तेज, शीघ्र) से बना है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि लक्ष्य लेखन की गति या संक्षेपण है। शॉर्टहैंड के कई रूप मौजूद हैं। एक विशिष्ट शॉर्टहैंड प्रणाली प्रतीकों या

शब्दों और आम वाक्यांशों के संक्षिप्त रूप, जो इस प्रणाली में अच्छी तरह से प्रशिक्षित व्यक्ति को बोलने की गति के बराबर तेज़ी से लिखने में सक्षम बनाते हैं। रिकॉर्डिंग और श्रुतलेख मशीनों के आविष्कार से पहले, अतीत में शॉर्टहैंड का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

29

"...जलते बादलों/विकिरण/विस्फोटों की जांच..." "16 जुलाई, 1945..." -- न्यू मैक्सिको के अल्मोगोर्डो के उत्तर में रेगिस्तान में एक परमाणु उपकरण का पहला परीक्षण किया गया। न्यू मैक्सिको का रोसवेल शहर अल्मोगोर्डो से केवल 117 मील दूर है।
नोट: सन् 1932 में ब्रिटिश खोजकर्ताओं ने मॉडल-ए फोर्ड कारों में सवार होकर पहली बार पश्चिमी मिस्र के इस क्षेत्र का दौरा किया, जहाँ उन्होंने सतह पर बिखरे हुए रहस्यमय पीले-हरे रंग के कांच की खोज की। तब से, लीबियाई रेगिस्तानी कांच ने वैज्ञानिकों को मोहित कर रखा है, जिन्होंने इसके निर्माण के बारे में तरह-तरह के विचार रखे हैं। यह ज्वालामुखी से निर्मित होने की तुलना में सिलिका से भरपूर है। कुछ मायनों में यह क्षुद्रग्रहों के टकराने से उत्पन्न उच्च दबावों से बने टेक्टाइट्स जैसा दिखता है। विन्सेन्ज़ो डी मिशेल ने काहिरा स्थित मिस्र संग्रहालय का दौरा किया और पाया कि राजा तुतनखामुन के रत्नजड़ित कवच में खुदा हुआ एक स्कारब था जो देखने में कांच के टुकड़े जैसा लग रहा था। 1998 में एक साधारण ऑप्टिकल माप ने इसकी पुष्टि की। परमाणु विस्फोट इतने गर्म होते हैं कि वे सतह की सामग्री को कांच में बदल सकते हैं, ठीक उसी तरह जैसे 1945 में न्यू मैक्सिको के ट्रिनिटी स्थल पर पहले परमाणु विस्फोट से पीले-हरे रंग का कांच बना था। दुनिया भर में कई ऐसे ही स्थल जो अस्पष्ट "प्रलयकारी" घटनाओं से जुड़े हैं, उनमें भी इसी तरह का पीले-हरे रंग का कांच पाया गया है। यह "पीले-हरे रंग का कांच" दुनिया भर में चट्टानों की उन परतों में पाया गया है जिनमें डायनासोर के जीवाश्म मौजूद हैं।
30 जून, 1947 -- परमाणु ऊर्जा आयोग द्वारा तैयार की गई "सैन्य हथियार के रूप में परमाणु बम का मूल्यांकन" नामक रिपोर्ट राष्ट्रपति ट्रूमैन को प्राप्त हुई। आत्मघाती तर्कों के बेतुके अंदाज़ में, जिसे केवल सेना, राजनेता और अन्य सनकी ही समझ सकते हैं, आयोग की सिफारिश, न्यू मैक्सिको के अल्मोगोर्डो में हुए बम विस्फोटों, जापान के दो शहरों में निर्दोष नागरिकों पर हुए बम विस्फोटों और मार्शल द्वीप समूह पर हुए बम विस्फोटों के आधार पर, इस प्रकार थी: (सच में, आप ऐसी बातें सोच भी नहीं सकते!)

भाग एक - निष्कर्ष

1. बोर्ड निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्षों पर पहुंचा है:

(1) यदि परमाणु बमों का बड़ी संख्या में प्रयोग किया जाए, तो वे न केवल किसी भी राष्ट्र के सैन्य प्रयासों को निष्फल कर सकते हैं, बल्कि उसकी सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं को भी नष्ट कर सकते हैं और लंबे समय तक उनके पुनर्निर्माण को रोक सकते हैं। ऐसे हथियारों से, विशेषकर यदि इनका प्रयोग अन्य सामूहिक विनाशक हथियारों, जैसे कि रोगजनक जीवाणुओं के साथ किया जाए, तो पृथ्वी की सतह के विशाल क्षेत्रों को निर्जन करना संभव है, जिससे मनुष्य द्वारा निर्मित भौतिक कृतियों के केवल अवशेष ही शेष रह जाएंगे।

(2) परमाणु बम और अन्य सामूहिक विनाश के हथियारों के अनियंत्रित उपयोग का खतरा मानवता और सभ्यता के लिए खतरा है। केवल सभी प्रकार के युद्धों पर प्रतिबंध लगाकर और सामूहिक विनाश के हथियारों पर पर्याप्त अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण स्थापित करके ही विश्व के लोगों से इस खतरे को दूर किया जा सकता है।

(3) स्थायी शांति की पूर्ण गारंटी के अभाव में, संयुक्त राज्य अमेरिका के पास परमाणु विखंडन हथियारों का निर्माण और भंडारण जारी रखने तथा उनके वितरण के साधनों में सुधार के लिए निरंतर अनुसंधान और विकास करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।"

(संदर्भ: राष्ट्रपति के सचिव की फाइल, ट्रूमैन पेपर्स।)

(
http://www.trumanlibrary.org/whistlestop/study_collections/bomb/large/index.php )

8 जुलाई, 1947 -- न्यू मैक्सिको के रोसवेल में परमाणु परीक्षण की जांच के दौरान एक एलियन अंतरिक्ष यान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। -- संपादक



"...खरबों..."

एक हजार हजार = एक मिलियन (1,000,000) एक हजार मिलियन = एक बिलियन (1,000,000,000) एक हजार बिलियन = एक ट्रिलियन (1,000,000,000,000)

बड़ी संख्याओं के लिए अंग्रेजी नाम छोटी संख्याओं n के लिए लैटिन नामों से लिए गए हैं, जिनमें "मिलियन" नाम से प्रेरित प्रत्यय -illion जोड़ा गया है। इस प्रकार बिलियन और ट्रिलियन क्रमशः लैटिन उपसर्ग bi- (n = 2) और tri- (n = 3) से लिए गए हैं।
हाल के वर्षों में, अमेरिकी उपयोग ने यूरोपीय संख्या परिभाषाओं को कमजोर कर दिया है, विशेष रूप से ब्रिटेन में और कुछ हद तक अन्य देशों में भी। इसका मुख्य कारण अमेरिकी वित्त व्यवस्था है, क्योंकि अमेरिकी इस बात पर जोर देते हैं कि 1,000,000,000 डॉलर को एक अरब डॉलर कहा जाए। 1974 में, प्रधानमंत्री हेरोल्ड विल्सन की सरकार ने घोषणा की कि अब से "अरब" का अर्थ 9 होगा।
10 और 10 नहीं
12
आधिकारिक ब्रिटिश रिपोर्टों और आंकड़ों में। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर "अरब" और "खरब" शब्दों का प्रयोग करने वाले किसी भी व्यक्ति को यह स्पष्ट करना चाहिए कि इन शब्दों का कौन सा अर्थ अभिप्रेत है।
-- संदर्भ: रस्स रोलेट और चैपल हिल स्थित उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय।
31
"...उसका नाम गर्ट्रूड कुछ ऐसा था..."
यह संभवतः गर्ट्रूड आर. श्मेड्लर थीं, जो उस समय की एक प्रख्यात प्रायोगिक मनोवैज्ञानिक और परा मनोविज्ञान विशेषज्ञ थीं। उन्होंने विभिन्न कारकों और विशेषताओं के माध्यम से किसी व्यक्ति की अलौकिक बोध (ईएसपी) क्षमताओं पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में शोधपत्र और पुस्तकें प्रकाशित कीं।
उन्होंने परा मनोविज्ञान में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किया और ईएसपी के अध्ययन में रुचि रखने वाले समूहों और संस्थानों का गठन किया, जैसे कि अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च, ड्यूक यूनिवर्सिटी परा मनोविज्ञान प्रयोगशाला और परा मनोविज्ञान फाउंडेशन, इंक.
178

उनके अधिकांश शोध में वह कार्य परिलक्षित होता है जिसके लिए श्मेइडलर सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं, यानी भेड़ और बकरियों के रूपक का विकास। उन्होंने ईएसपी कार्ड-अनुमान लगाने के प्रयोगों के कई चक्रों के माध्यम से यह निर्धारित किया कि "भेड़" (वे व्यक्ति जो मानते थे कि ईएसपी कार्यों में सफलता संभव है) "बकरियों" (वे लोग जो सफलता की संभावना को अस्वीकार करते थे) की तुलना में अधिक अंक प्राप्त करते हैं।
संदर्भ: http://library.duke.edu/
32
"...कृष्णमूर्ति..."
जिद्दू कृष्णमूर्ति (12 मई, 1895 – 17 फरवरी, 1986) का जन्म भारत के मदनपल्ले में एक तेलुगु ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 1909 में उनकी मुलाकात मद्रास (अब चेन्नई), भारत के अड्यार स्थित थियोसोफिकल सोसाइटी के मुख्यालय के निजी समुद्र तट पर सी.डब्ल्यू. लीडबीटर से हुई। बाद में उनका पालन-पोषण एनी बेसेंट और सी.डब्ल्यू. लीडबीटर के मार्गदर्शन में हुआ, जो उस समय सोसाइटी के प्रमुख थे और उन्हें एक संभावित "विश्व शिक्षक" का "माध्यम" मानते थे। युवावस्था में ही उन्होंने इस विचार को अस्वीकार कर दिया और इस विचार का समर्थन करने के लिए स्थापित विश्वव्यापी संगठन (ऑर्डर ऑफ द स्टार) को भंग कर दिया। उन्होंने अपना शेष जीवन एक व्यक्तिगत वक्ता के रूप में विश्व यात्रा करते हुए बिताया, जहाँ उन्होंने बड़े और छोटे समूहों के साथ-साथ इच्छुक व्यक्तियों को भी संबोधित किया। वे मौलिक दार्शनिक और आध्यात्मिक विषयों पर एक प्रसिद्ध लेखक और वक्ता थे। उनके विषयों में (लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं) ध्यान का उद्देश्य, मानवीय संबंध और वैश्विक समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के तरीके शामिल थे। 34 वर्ष की आयु में, उन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी द्वारा मैत्रेय बुद्ध के नए अवतार घोषित किए जाने से प्राप्त प्रसिद्धि और मसीहा का दर्जा सार्वजनिक रूप से त्याग दिया और अपना शेष जीवन नियमित रूप से प्रकाशन करने और सार्वजनिक भाषण देने में व्यतीत किया, मुख्यतः दक्षिण एशिया, यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में। 90 वर्ष की आयु में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को शांति और

जागरूकता के विषय पर संबोधित किया और उन्हें 1984 का संयुक्त राष्ट्र शांति पदक प्रदान किया गया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

33

"...सत्ता में बैठे लोग..."

"अर्थ - सत्ता की स्थापित सरकार।"

उत्पत्ति - बाइबिल, रोमियों 13:1 (किंग जेम्स संस्करण): "प्रत्येक प्राणी परमेश्वर के अधीन रहे। क्योंकि परमेश्वर के सिवा कोई शक्ति नहीं है; जो भी शक्तियाँ हैं, वे परमेश्वर द्वारा नियुक्त की गई हैं।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

34

"...कोलंबस..."

क्रिस्टोफर कोलंबस नाम लैटिन नाम क्रिस्टोफोरस कोलंबस का अंग्रेज़ीकरण है। आधुनिक इतालवी में उनके नाम का प्रसिद्ध अनुवाद क्रिस्टोफोरो कोलंबो, पुर्तगाली में क्रिस्टोवाओ कोलंबो (पूर्व में क्रिस्टोवम कोलोम) और स्पेनिश में क्रिस्टोबल कोलोन है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

"क्रिस्टोफर कोलंबस के 1492 में आगमन से पहले, अमेरिका के स्वदेशी लोगों और अन्य महाद्वीपों - यूरोप, अफ्रीका, एशिया या ओशिनिया - के लोगों के बीच हुए अंतर्संबंधों को कोलंबस-पूर्व काल के समुद्री संपर्कों में शामिल किया गया है। ऐसी कई घटनाएं घटित हुई हैं।"

179

ऐतिहासिक रिपोर्टों, पुरातात्विक खोजों और सांस्कृतिक तुलनाओं के आधार पर, समय-समय पर इनका प्रस्ताव रखा गया था।"
(कोलंबस से पहले "नई दुनिया" के साथ हुए कई अन्य संपर्कों के विवरण के लिए कृपया निम्नलिखित वेबसाइट पते को देखें):
http://en.wikipedia.org/wiki/Pre-Columbian_trans-oceanic_contact
35
"...अन्वेषित ब्रह्मांड..."
यानी, मानव जाति द्वारा "अन्वेषित"। कोलंबस की तरह, जिसने पश्चिमी गोलार्ध की "खोज" की थी, जिसे यूरोपियों ने अभी तक खोजा नहीं था, यह स्पष्ट है कि यूरोप के अस्तित्व में आने से बहुत पहले लाखों मूल निवासियों द्वारा इसकी खोज की जा चुकी थी।
यदि "एलियन इंटरव्यू" की प्रतिलेखों में दी गई कोई भी जानकारी तथ्यात्मक है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रह्मांड का बहुत ही गहन अन्वेषण हो चुका है - लेकिन मनुष्यों द्वारा नहीं। - संपादक
36
"...हमें तारों के मानचित्र पर दिखाओ कि तुम्हारे गृह ग्रह का तारा कौन सा है..."
"दृश्यमान ब्रह्मांड में संभवतः 100 अरब ($10^{11}$) से अधिक आकाशगंगाएँ हैं। अधिकांश आकाशगंगाओं का व्यास 1,000 से 100,000 पारसेक (लगभग $3.086\times10^{16}$ मीटर, 3.262 प्रकाश वर्ष या 19,176,075,967,324.937 मील) है और वे आमतौर पर लाखों पारसेक (या मेगापारसेक) की दूरी पर स्थित होती हैं। अंतर-आकाशगंगा अंतरिक्ष (आकाशगंगाओं के बीच का स्थान) एक विरल गैस से भरा है जिसका औसत घनत्व एक घन मीटर में एक परमाणु से भी कम है।"
1990 के दशक में शुरू होकर, हबल स्पेस टेलीस्कोप ने बेहतर अवलोकन प्रदान किए। अन्य बातों के अलावा, इसने यह स्थापित किया कि हमारी आकाशगंगा में लुप्त डार्क मैटर केवल स्वाभाविक रूप से मंद और छोटे तारों से मिलकर नहीं बना हो सकता है। हबल डीप

फील्ड, आकाश के अपेक्षाकृत खाली हिस्से का एक अत्यंत लंबा एक्सपोज़र, इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि ब्रह्मांड में (कम से कम) 125 अरब आकाशगंगाएँ हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
37
"...नौसेना से एक जापानी भाषा विशेषज्ञ ..."
जॉन ए. क्न्यूबुल मिश्रित समोअन/अमेरिकी वंश के थे। वे प्रशांत द्वीप समूह के एक प्रशंसित नाटककार थे जिनका 1992 में निधन हो गया। समोअन, अंग्रेजी और जर्मन वंश के क्न्यूबुल 13 वर्ष की आयु तक अपनी समोअन दादी की फूस की झोपड़ी में पले-बढ़े। उन्होंने पुनाहो और येल विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और होनोलूलू कम्युनिटी थिएटर के लिए नाटक लिखे। वे 1942 में अमेरिकी नौसेना में शामिल हुए और जुलाई 1942 में कोलोराडो विश्वविद्यालय के अमेरिकी नौसेना जापानी भाषा स्कूल में दाखिला लिया और अगस्त 1943 में स्नातक हुए। उन्होंने नौसेना में जापानी भाषा अधिकारी के रूप में सेवा की। युद्ध के बाद, उन्होंने हॉलीवुड में 20 वर्षों तक टीवी लेखक के रूप में काम किया और वाइल्ड, वाइल्ड वेस्ट, वाटरफ्रंट, मार्खम, वेस्ट प्वाइंट स्टोरी और अन्य शो के लिए पटकथाएँ लिखीं। जॉन ने स्टार ट्रेक: द ओरिजिनल सीरीज के एपिसोड "ब्रेड एंड सर्कस" की कहानी लिखी, हालाँकि उन्हें अंतिम एपिसोड में स्क्रीन क्रेडिट नहीं मिला।
सारांश: कैप्टन कर्क और उनके साथियों को रोमन साम्राज्य की तर्ज पर बने एक ग्रह पर ग्लेडिएटर खेलों में लड़ने के लिए मजबूर किया जाता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org और
http://209.85.173.104/search?
q=cache:zIAm_bPdRQEJ:ucblibraries.colorado.edu/archives/c
ollections/jlsp/interpreter131.doc+language+expert,
+1947&hl=en&ct=clnk&cd=3&gl=us.
180

38

"...जापानी लोगों में समध्वनि शब्दों की संख्या बहुत अधिक होती है..."

भाषाविज्ञान में, समध्वनिक शब्द उन शब्दों के समूह में से एक है जिनकी वर्तनी और उच्चारण समान होते हैं, लेकिन अर्थ भिन्न होते हैं। कुछ स्रोत यह भी मानते हैं कि समध्वनिक शब्दों के लिए समान वर्तनी या उच्चारण होना आवश्यक है (अंतर-भिन्न अर्थों के अतिरिक्त)। समध्वनिक शब्दों के उदाहरण हैं: stalk (जिसका अर्थ पौधे का एक भाग या किसी के पीछे-पीछे चलना हो सकता है), bear (पशु) और bear (ले जाना), left (दाएं का विलोम) और left (छोड़ने का भूतकाल)। कुछ स्रोत निम्नलिखित तीन शब्दों को भी समध्वनिक मानते हैं, जबकि अन्य इन्हें केवल समध्वनिक शब्द मानते हैं: to, too और two (वास्तव में, to, to, too, too और two क्रमशः "किसी उद्देश्य के लिए" हैं, जैसे "इसे आसान बनाने के लिए", और "from", also, excessly और "2" के विलोम हैं)। "समध्वनिक" शब्द ग्रीक उपसर्ग homo- (जिसका अर्थ समान है) और प्रत्यय -onym (जिसका अर्थ नाम है) के संयोजन से बना है। इस प्रकार, यह दो या दो से अधिक भिन्न शब्दों को संदर्भित करता है जिनका नाम समान होता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

39

"...मानक चीनी अक्षर..."

चीनी अक्षर या हान अक्षर (सरलीकृत चीनी: ; पारंपरिक चीनी: ; पिनयिन: Hànzì) एक प्रकार का शब्द-प्रणाली है जिसका उपयोग चीनी, जापानी, कभी-कभी कोरियाई और पूर्व में वियतनामी भाषा लिखने में किया जाता था। कांग्शी शब्दकोश में लगभग 47,035 चीनी अक्षर हैं, हालांकि इनमें से बड़ी संख्या में ऐसे अक्षर हैं जिनका उपयोग बहुत कम होता है और जो इतिहास भर में संचित हुए हैं। चीन में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि पूर्ण साक्षरता के लिए तीन से चार हजार अक्षरों का ज्ञान आवश्यक है।

चीनी लेखन प्रणाली में, प्रत्येक अक्षर एक शब्दांश के अनुरूप होता है। आधुनिक चीनी भाषा की अधिकांश बोलियाँ बहु-शब्दांश वाली होती हैं, इसलिए उन्हें लिखने के लिए दो या दो से अधिक अक्षरों की आवश्यकता होती है। विभिन्न चीनी भाषाओं/बोलियों में समान या मिलते-

जुलते अर्थ वाले, लेकिन अलग-अलग उच्चारण वाले शब्दों को एक ही अक्षर से लिखा जा सकता है। इसके अलावा, जापानी और कोरियाई भाषाओं ने मूल शब्दों को दर्शाने के लिए कई चीनी अक्षरों को उनके अर्थ के अनुसार अपनाया है, उच्चारण की बिल्कुल भी परवाह किए बिना।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

40

"...मैकगफी के विविध पाठकों की रचनाएँ..."

मैकगफी की इलेक्टिक रीडर्स विलियम होम्स मैकगफी द्वारा लिखी गई थीं, जिन्होंने 14 वर्ष की आयु में स्कूल में पढ़ाना शुरू किया था। वे 1826 से 1836 में अपने इस्तीफे तक मियामी विश्वविद्यालय में प्राचीन भाषाओं के प्रोफेसर रहे। इसके बाद उन्होंने सिनसिनाटी कॉलेज (1836-1839) और ओहियो विश्वविद्यालय (1839-1843) के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। सिनसिनाटी लौटने पर, मैकगफी ने 1843 से 1845 तक वुडवर्ड कॉलेज में पढ़ाया, जिसके बाद वे वर्जीनिया विश्वविद्यालय में नैतिक दर्शन के प्रोफेसर बन गए। उन्हें 1829 में प्रेस्बिटेरियन पादरी के रूप में नियुक्त किया गया था। मियामी में अपने वर्षों के दौरान ही मैकगफी से स्कूली बच्चों के लिए रीडर्स की एक श्रृंखला लिखने का अनुरोध किया गया था। विलियम होम्स मैकगफी द्वारा किए गए कार्य के अलावा, उनके भाई, अलेक्जेंडर हैमिल्टन मैकगफी ने भी उनकी सहायता की, जिन्होंने एक स्पेलर भी संकलित किया और पाँचवीं रीडर की पूरी जिम्मेदारी संभाली। अलेक्जेंडर ने कानून की डिग्री प्राप्त करते हुए स्कूल में पढ़ाया और एक लॉ ऑफिस खोला। सन् 1839 में सिनसिनाटी में, मैकगफी रीडर्स की 125,000,000 से अधिक प्रतियां बिकीं।

मैकगफी 14 साल की उम्र में एक "घूमने-फिरने वाले" शिक्षक बन गए, उन्होंने ओहियो के कलकत्ता में एक कमरे के स्कूल में 48 छात्रों के साथ अपने शिक्षण कार्य की शुरुआत की। कक्षा का आकार उनके सामने आने वाली कई चुनौतियों में से एक था।

181

युवा मैकगफी द्वारा। कई एक-शिक्षक स्कूलों में बच्चों की उम्र छह से इक्कीस वर्ष तक होती थी। मैकगफी अक्सर सीमावर्ती स्कूलों में सप्ताह में छह दिन, दिन में ग्यारह घंटे काम करते थे। उनमें अद्भुत स्मृति शक्ति थी और वे बाइबिल की पूरी पुस्तकें याद कर सकते थे। पहली रीडर में ध्वन्यात्मक विधि, अक्षरों की पहचान और उन्हें शब्दों में व्यवस्थित करने के तरीके का उपयोग करके पढ़ना सिखाया जाता था, और स्लेट पर अभ्यास करने में सहायता प्रदान की जाती थी। दूसरी रीडर तब उपयोगी होती थी जब छात्र पढ़ना सीख जाते थे, और वाक्यों का अर्थ समझने में उनकी मदद करती थी, साथ ही ऐसी रोचक कहानियाँ भी प्रदान करती थी जिन्हें बच्चे याद रख सकें। तीसरी रीडर में शब्दों की परिभाषाएँ सिखाई जाती थीं, और इसे आधुनिक पाँचवीं या छठी कक्षा के स्तर के अनुसार लिखा गया था। चौथी रीडर व्याकरण विद्यालय स्तर पर उच्चतम स्तर की क्षमता वाले छात्रों के लिए लिखी गई थी, जिसे छात्रों ने इस पुस्तक के साथ पूरा किया।

मैकगफी की 'रीडर्स' अमेरिका की उन शुरुआती पाठ्यपुस्तकों में से थीं जिन्हें हर खंड के साथ उत्तरोत्तर अधिक चुनौतीपूर्ण बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया था। इनमें पाठ में शब्दों की पुनरावृत्ति को एक शिक्षण उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया था, जिससे चुनौतीपूर्ण पठन के माध्यम से मजबूत पठन कौशल विकसित हुए। शब्दों के उच्चारण, स्पष्टता और लहजे पर विशेष जोर दिया गया था। औपनिवेशिक काल की पाठ्यपुस्तकों में याद करने के लिए प्रति पृष्ठ 20 से 100 नए शब्दों की नीरस सूचियाँ दी जाती थीं। इसके विपरीत, मैकगफी ने वास्तविक साहित्य के संदर्भ में नए शब्दावली शब्दों का उपयोग किया, धीरे-धीरे नए शब्दों को पेश किया और पुराने शब्दों को सावधानीपूर्वक दोहराया।

मैकगफी का मानना था कि शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ-साथ पाठों का अध्ययन करना चाहिए और उन्होंने सुझाव दिया कि वे अपनी कक्षाओं में पाठ पढ़कर सुनाएँ। उन्होंने प्रत्येक कहानी के बाद प्रश्न भी सूचीबद्ध किए, क्योंकि उनका मानना था कि एक शिक्षक को निर्देश देने के लिए प्रश्न पूछना आवश्यक है। 'रीडर्स' में वर्तनी, शब्दावली और औपचारिक सार्वजनिक भाषण पर जोर दिया गया था, जो 19 वीं सदी के अमेरिका में आज की तुलना में कहीं अधिक आम आवश्यकता थी।

हेनरी फोर्ड ने मैकगफी रीडर्स को अपने बचपन के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक बताया। वे मैकगफी रीडर्स के प्रथम संस्करणों के बहुत बड़े प्रशंसक थे और वयस्क होने पर भी वे मैकगफी रीडर्स से लंबे-लंबे उद्धरण याद करके सुना सकते थे। फोर्ड ने 1857 के संस्करण से सभी छह रीडर्स को पुनः प्रकाशित किया और अपने खर्च पर संयुक्त राज्य अमेरिका के स्कूलों में उनके पूरे सेट वितरित किए।

मैकगफी की 'रीडर्स' में जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति कई अपमानजनक टिप्पणियाँ हैं। उदाहरण के लिए, मूल अमेरिकी लोगों को "जंगली" कहा गया है। कुछ लोग इस पुस्तक में यहूदियों और यहूदी धर्म के संदर्भों को यहूदी-विरोधी मानते हैं। उदाहरण के लिए, नील बाल्डविन की पुस्तक 'हेनरी फोर्ड एंड द ज्यूज' में लेखक यह तर्क देते हैं कि हेनरी फोर्ड की स्वयं-घोषित यहूदी-विरोध की भावनाएँ मैकगफी की पुस्तक के स्कूली अध्ययन से उत्पन्न हुईं। बाल्डविन शाइलॉक और यहूदियों द्वारा यीशु और पॉल पर किए गए हमलों के कई यहूदी-विरोधी संदर्भों का हवाला देते हैं। वे चौथे पाठक का भी हवाला देते हैं जिसमें कहा गया है कि "यहूदी लेखक सुसमाचार में निहित भाषा और नैतिकता से अनभिज्ञ थे।" पाठक यहूदियों को "ईसा मसीह के हत्यारे" के रूप में चित्रित करते हैं और पुराने नियम के प्रति उनके आदर को "अंधविश्वास" बताते हैं, और यह सिखाते हैं कि यहूदियों को "विश्वासघाती" होने के कारण ईश्वर ने अस्वीकार कर दिया है।

आप मैकगफी रीडर के टेक्स्ट संस्करण को निम्नलिखित वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं: http://www.gutenberg.org/etext/14640

41

"...ध्वनि विज्ञान विधि ..."

फोनिक्स बच्चों को अंग्रेजी पढ़ना सिखाने की एक शिक्षण विधि है। फोनिक्स में बच्चों को ध्वनियों को अक्षरों या अक्षरों के समूहों से जोड़ना सिखाया जाता है (उदाहरण के लिए, कि

ध्वनि /k/ को c, k, या ck वर्तनी द्वारा दर्शाया जा सकता है) और उन्हें अज्ञात शब्दों के अनुमानित उच्चारण उत्पन्न करने के लिए अक्षरों की ध्वनियों को एक साथ मिलाने का तरीका सिखाना।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

42

"...एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का एक सेट लाया गया..."

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका एक सामान्य अंग्रेजी भाषा का विश्वकोश है जिसे निजी स्वामित्व वाली कंपनी एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, इंक. द्वारा प्रकाशित किया जाता है। ब्रिटानिका को मानव ज्ञान के सभी पहलुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए जाना जाता है। अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए, कई लोगों ने संपूर्ण ब्रिटानिका को पढ़ने में अपना जीवन समर्पित कर दिया है, जिसमें उन्हें तीन से 22 वर्ष तक का समय लगा है। जब 1797 में फतह अली फारस के शाह बने, तो उन्हें ब्रिटानिका के तीसरे संस्करण का एक पूरा सेट दिया गया, जिसे उन्होंने पूरी तरह से पढ़ा; इस उपलब्धि के बाद, उन्होंने अपनी शाही उपाधि में "एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के सबसे शक्तिशाली स्वामी और स्वामी" को भी शामिल कर लिया। लेखक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने दावा किया कि उन्होंने विज्ञान लेखों को छोड़कर नौवां संस्करण पूरा पढ़ा था, और रिचर्ड एवलिन बर्ड ने 1934 में दक्षिणी ध्रुव पर अपने पांच महीने के प्रवास के दौरान ब्रिटानिका को पठन सामग्री के रूप में लिया था।

ब्रिटानिका में प्रकाशित लेख शिक्षित वयस्क पाठकों के लिए हैं और इन्हें 19 पूर्णकालिक संपादकों और 4,000 से अधिक विशेषज्ञ योगदानकर्ताओं की टीम द्वारा लिखा गया है। इसे व्यापक रूप से सबसे विद्वतापूर्ण विश्वकोश माना जाता है। तीसरे संस्करण से ही ब्रिटानिका को अपनी उत्कृष्ट गुणवत्ता के लिए लोकप्रियता और आलोचनात्मक प्रशंसा प्राप्त है। 14 वें संस्करण के प्रकाशन पर टाइम पत्रिका ने ब्रिटानिका को "पुस्तकालय का संरक्षक" कहा था।

इसी से संबंधित एक विज्ञापन में, प्रकृतिवादी विलियम बीबे के हवाले से कहा गया था कि ब्रिटानिका "अतुलनीय है क्योंकि इसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं है।" ब्रिटानिका के संदर्भ अंग्रेजी

साहित्य में हर जगह मिलते हैं, विशेष रूप से आर्थर कॉनन डॉयल की पसंदीदा शर्लक होम्स कहानियों में से एक, "द रेड-हेडेड लीग" में।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

43

"...उनकी पसंदीदा किताबें एलिस इन वंडरलैंड थीं..."

"एलिस एडवेंचर्स इन वंडरलैंड (1865) अंग्रेजी लेखक चार्ल्स लुटविज डोडसन द्वारा लुईस कैरोल के छद्म नाम से लिखी गई एक साहित्यिक निरर्थक रचना है, जिसे इस शैली और सामान्य रूप से अंग्रेजी साहित्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह एलिस नाम की एक लड़की की कहानी है जो एक खरगोश के बिल में गिरकर एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में पहुँच जाती है जहाँ विचित्र और मानवरूपी जीव रहते हैं। यह कहानी डोडसन के दोस्तों (और दुश्मनों) और उन पाठों के संदर्भों से भरी हुई है जिन्हें ब्रिटिश स्कूली बच्चों को याद करना होता था। यह कहानी तर्क के साथ इस तरह से खेलती है कि यह बच्चों के साथ-साथ वयस्कों के बीच भी हमेशा लोकप्रिय रही है। इसे साहित्यिक निरर्थक शैली के सबसे विशिष्ट उदाहरणों में से एक माना जाता है, और इसकी कथा शैली और संरचना का विशेष रूप से फंतासी शैली पर बहुत प्रभाव पड़ा है।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

44

"...ला मंचा के डॉन क्विक्सोट..."

स्पेनिश लेखक मिगुएल डी सेर्वेंट्स सावेद्रा द्वारा लिखित एक प्रारंभिक उपन्यास। सेर्वेंट्स ने काल्पनिक मूरिश इतिहासकार सिडे हामेट बेनेंगेली की पांडुलिपि के आधार पर कहानी की काल्पनिक उत्पत्ति की रचना की। यह कृति दो खंडों में प्रकाशित हुई: पहला 1605 में और दूसरा 1614 में।

कहानी का मुख्य पात्र, अलोंसो क्विक्सानो, एक देहाती सज्जन है जिसने वीरता की इतनी कहानियाँ पढ़ी हैं कि वह कल्पनाओं की दुनिया में खो जाता है और खुद को एक वीर योद्धा समझने लगता है। अपने सीधे-सादे साथी सांचो पांजा के साथ, खुद को "डॉन क्विक्सोट डे ला मांचा" कहने वाला क्विक्सोनो रोमांच की खोज में निकल पड़ता है। जिस "महिला" के लिए क्विक्सोनो मेहनत करना चाहता है, वह है डुलसीनिया डेल टोबोसो, एक काल्पनिक पात्र जिसे क्विक्सोनो ने अपने प्रेम का पात्र बनाने के लिए पास की एक किसान लड़की (जिसका असली नाम एल्डोंज़ा लोरेंजो है) से गढ़ा है। "डुलसीनिया" क्विक्सोनो की भावनाओं से पूरी तरह अनजान है, और न ही वह उपन्यास में कहीं दिखाई देती है।

दो खंडों में, एक दशक के अंतराल पर प्रकाशित, डॉन क्विक्सोट स्पेनिश स्वर्ण युग से उभरने वाली सबसे प्रभावशाली साहित्यिक कृति है और शायद संपूर्ण स्पेनिश साहित्यिक परंपरा में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक पश्चिमी साहित्य की एक संस्थापक कृति के रूप में, यह नियमित रूप से अब तक प्रकाशित महानतम कथा कृतियों की सूचियों में शीर्ष पर या उसके आसपास दिखाई देती है और यह सर्वकालिक सबसे अधिक बिकने वाली गैर-धार्मिक, गैर-राजनीतिक कथा कृति है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

45

"...एक हजार एक रातें..."

"एक हज़ार एक रातें" (अरबी: كتاب ألف ليلة وليلة - kit āb 'alf laylah wa-laylah; फ़ारसी: هزار و یک شب - ezār-o yak šab) कहानियों का एक संग्रह है जिसे विभिन्न देशों के कई लेखकों, अनुवादकों और विद्वानों ने हज़ारों वर्षों में संकलित किया है। इन कहानियों के संग्रह की जड़ें प्राचीन अरब और यमन, प्राचीन भारत, प्राचीन फ़ारस (विशेष रूप से सस्सानी हज़ार अफ़सान फ़ारसी: هزار افسان, शाब्दिक अर्थ: हज़ार कहानियाँ), प्राचीन मिस्र, प्राचीन मेसोपोटामिया की पौराणिक कथाओं, प्राचीन सीरिया और खलीफ़ा काल की मध्यकालीन अरबी लोक कथाओं में मिलती हैं। हालाँकि मूल पांडुलिपि कभी नहीं मिली है,

फिर भी कई संस्करणों में इस संग्रह की उत्पत्ति की तिथि बताई गई है। उत्पत्ति का समय लगभग 800-900 ईस्वी के बीच का है।
मुख्य कथा एक फ़ारसी राजा और उसकी नई दुल्हन के इर्द-गिर्द घूमती है। राजा शाहरयार को जब अपनी पूर्व पत्नी के विश्वासघात का पता चलता है, तो वह उसे मृत्युदंड दे देता है और फिर सभी महिलाओं को विश्वासघाती घोषित कर देता है। वह एक के बाद एक कुंवारी कन्याओं से विवाह करता है, लेकिन हर एक को अगली सुबह मृत्युदंड दे देता है। अंततः वज़ीर को कोई और कुंवारी कन्या नहीं मिलती। वज़ीर की पुत्री शहज़ादे अगली दुल्हन बनने का प्रस्ताव रखती है और उसके पिता अनिच्छा से मान जाते हैं। विवाह की रात, शहज़ादे राजा को एक कहानी सुनाती है, लेकिन उसे पूरा नहीं करती। इस प्रकार राजा को कहानी का अंत सुनने के लिए उसे जीवित रखना पड़ता है। अगली रात, कहानी समाप्त होते ही, वह दूसरी कहानी शुरू कर देती है (और केवल शुरू ही करती है)। यह सिलसिला 1001 रातों तक चलता है।
इन कहानियों में विविधता देखने को मिलती है: इनमें ऐतिहासिक कथाएँ, प्रेम कहानियाँ, दुखद नाटक, हास्य नाटक, कविताएँ, व्यंग्य नाटक, कामुकता के विभिन्न रूप और मुस्लिम धार्मिक कथाएँ शामिल हैं। अनेक कहानियों में जिन्न, जादूगर और पौराणिक स्थानों का चित्रण है, जो अक्सर वास्तविक लोगों और भूगोल के साथ मिश्रित होते हैं; ऐतिहासिक खलीफा हारून अल-रशीद एक आम नायक हैं, साथ ही उनके कथित दरबारी कवि अबू नुवास और उनके वज़ीर जाफ़र अल-बरमाकी भी। कभी-कभी शहज़ादे की कहानी में एक पात्र अन्य पात्रों को अपनी कहानी सुनाना शुरू कर देता है, और उस कहानी में एक और कहानी समाहित हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप एक समृद्ध और बहुआयामी कथात्मक संरचना बनती है।
विभिन्न संस्करणों में अलग-अलग विस्तृत अंत हैं (कुछ में शेहेरज़ादे क्षमा मांगती है, कुछ में राजा अपने बच्चों को देखकर अपनी पत्नी को फांसी न देने का फैसला करता है, कुछ में अन्य घटनाएं होती हैं जो राजा का ध्यान भटकाती हैं) लेकिन उन सभी का अंत राजा द्वारा अपनी पत्नी को क्षमादान देने और उसकी जान बख्शने के साथ होता है।

कहानीकार के लिए किसी रोमांचक अंत की परिभाषा आधुनिक साहित्य की तुलना में कहीं अधिक व्यापक प्रतीत होती है। जहाँ कई मामलों में कहानी का अंत इस प्रकार होता है कि नायक का जीवन खतरे में होता है या वह किसी अन्य प्रकार की गंभीर मुसीबत में फँस जाता है, वहीं पूर्ण पाठ के कुछ हिस्सों में शेहेरज़ादे अपना वर्णन बीच में ही रोक देती है।

अमूर्त दार्शनिक सिद्धांतों या इस्लामी दर्शन के जटिल बिंदुओं की व्याख्या के बीच में, और एक मामले में गैलेन के अनुसार मानव शरीर रचना विज्ञान के विस्तृत वर्णन के दौरान - और इन सभी मामलों में उसका यह विश्वास उचित साबित होता है कि आगे की कहानी के बारे में राजा की जिज्ञासा उसे एक और दिन का जीवन दिला देगी।
भारतीय लोककथाओं में कुछ पशु कथाएँ मिलती हैं, जो प्राचीन संस्कृत कथाओं से प्रभावित हैं। जातक कथाओं का संग्रह 547 कथाएँ हैं, जिनमें से अधिकांश नैतिक संदेश देने वाली कथाएँ हैं। बैल और गधे की कथा तथा व्यापारी और उसकी पत्नी की कथा जातक कथाओं और अरेबियन नाइट्स दोनों में पाई जाती हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
46
"...हकलबेरी फिन के कारनामे..."
मार्क ट्वेन द्वारा लिखित "हकलबेरी फिन के साहसिक कारनामे" (1884) (जिसे अक्सर हक फिन के नाम से जाना जाता है) अपनी मासूमियत भरे युवा नायक, मिसिसिपी नदी के किनारे बसे लोगों और स्थानों के रंगीन वर्णन और गहरी जड़ें जमा चुकी सोच, विशेष रूप से नस्लवाद पर तीखे व्यंग्य के लिए प्रसिद्ध है। हकलबेरी फिन और उसके दोस्त, भगोड़े गुलाम जिम की अपनी नाव पर मिसिसिपी नदी में बहती यात्रा, अमेरिकी साहित्य में पलायन और स्वतंत्रता की सबसे यादगार छवियों में से एक हो सकती है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
47
"... गुलिवर की यात्राएँ ..."
"गुलिवर ट्रेवल्स (1726, संशोधित 1735), आधिकारिक रूप से 'ट्रैवल्स इनटू सेवरल रिमोट नेशंस ऑफ द वर्ल्ड, इन फोर पार्ट्स', बाय लेमुएल गुलिवर, फर्स्ट ए सर्जन, एंड देन ए कैप्टन ऑफ सेवरल शिप्स", जोनाथन स्विफ्ट का एक उपन्यास है जो मानव स्वभाव पर व्यंग्य और "ट्रैवलर्स टेल्स" साहित्यिक उप-शैली की पैरोडी दोनों है। यह स्विफ्ट की सबसे प्रसिद्ध पूर्ण-लंबी रचना है और अंग्रेजी साहित्य की एक क्लासिक कृति है। पुस्तक प्रकाशित होते ही

अत्यधिक लोकप्रिय हो गई (जॉन गे ने 1726 में स्विफ्ट को लिखे एक पत्र में कहा था कि "इसे कैबिनेट परिषद से लेकर बच्चों तक, हर कोई पढ़ता है"), और संभवतः तब से यह कभी भी मुद्रण से बाहर नहीं हुई है। पुस्तक स्वयं को एक साधारण यात्री वृत्तांत के रूप में प्रस्तुत करती है, जिसका भ्रामक शीर्षक है "ट्रैवल्स इनटू सेवरल रिमोट नेशंस ऑफ द वर्ल्ड", और इसके लेखक के रूप में केवल "लेमुएल गुलिवर, फर्स्ट ए सर्जन, देन ए कैप्टन ऑफ सेवरल शिप्स" का नाम दिया गया है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

48

"...पीटर पैन..."

पीटर पैन स्कॉटिश उपन्यासकार और नाटककार जे. एम. बैरी (1860-1937) द्वारा रचित एक पात्र है। एक शरारती लड़का जो उड़ सकता है और जादुई रूप से बड़ा होने से इनकार करता है, पीटर पैन अपने अंतहीन बचपन को नेवरलैंड नामक छोटे द्वीप पर अपने गिरोह, लॉस्ट बॉयज़ के नेता के रूप में रोमांचकारी कारनामों में बिताता है, परियों और समुद्री डाकुओं के साथ मेलजोल करता है, और समय-समय पर बाहरी दुनिया के साधारण बच्चों से मिलता है।

बैरी ने पीटर के रूप-रंग का विस्तृत वर्णन कभी नहीं किया, जिससे इसका अधिकांश भाग पाठक की कल्पना और चरित्र को रूपांतरित करने वाले किसी भी व्यक्ति की व्याख्या पर छोड़ दिया गया। वे उसे एक सुंदर मुस्कान वाला एक सुंदर लड़का बताते हैं, जो "कंकाल के पत्तों और पेड़ों से बहने वाले रस से ढका हुआ" है।

185

पीटर मुख्य रूप से एक घमंडी और लापरवाह लड़के का अतिरंजित स्टीरियोटाइप है। वह अपनी महानता का बखान करने में जरा भी देर नहीं लगाता। पीटर का रवैया बेपरवाह और लापरवाह है, और खतरे में पड़ने से पहले ही वह निडर हो जाता है। बैरी लिखते हैं कि जब पीटर को लगा कि वह मैरूनर्स रॉक पर मरने वाला है, तो उसे डर लगा, लेकिन उसे सिर्फ एक कंपकंपी महसूस हुई, जबकि कोई भी दूसरा व्यक्ति मृत्यु तक डरता रहता। मृत्यु की त्रासदी से बेखबर वह कहता है, "मरना एक बहुत बड़ा रोमांच होगा।"
पीटर की सबसे विशिष्ट विशेषता उसका बड़ा न होने का दृढ़ निश्चय है। बैरी ने यह नहीं बताया कि वह ऐसा कैसे कर पाता था, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह उसकी इच्छाशक्ति का ही परिणाम था।
पीटर एक कुशल तलवारबाज है, जिसकी तलवारबाजी में वह कैप्टन हुक को भी टक्कर देता है, जिसका हाथ उसने द्वंद्वयुद्ध में काट दिया था। उसकी दृष्टि और श्रवण शक्ति असाधारण रूप से तीव्र है। कहा जाता है कि पीटर पैन लगभग कुछ भी कर सकता है। जब पीटर नेवरलैंड में होता है, तो उसका पूरे नेवरलैंड और उसके निवासियों पर प्रभाव पड़ता है। बैरी कहते हैं कि जब वह लंदन की यात्रा से लौटता है, तो द्वीप जागृत हो उठता है। पीटर लॉस्ट बॉयज़ का नेता है, जो उन लड़कों का एक समूह है जिन्हें उनके माता-पिता ने खो दिया था और वे नेवरलैंड में रहने आए थे। वह टिंकर बेल का मित्र है, जो एक साधारण परी है और अक्सर ईर्ष्या से उसकी रक्षा करती है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
49
"...स्लीपी हॉलो की किंवदंती..."
वॉशिंगटन इरविंग की एक लघु कहानी, जो उनके संग्रह "द स्केच बुक ऑफ जियोफ्रे क्रेयॉन, जेंटलमैन" में शामिल है, जिसे उन्होंने इंग्लैंड के बर्मिंघम में रहते हुए लिखा था और पहली बार 1820 में प्रकाशित किया था। इरविंग की सहयोगी रचना "रिप वैन विंकल" के साथ, "द लीजेंड ऑफ स्लीपी हॉलो" आज भी पढ़ी जाने वाली सबसे शुरुआती अमेरिकी कथाओं में से एक है।

यह कहानी सन् 1790 के आसपास न्यूयॉर्क के टैरी टाउन नामक डच बस्ती में, स्लीपी हॉलो नामक एकांत घाटी में घटित होती है। यह कहानी कनेक्टिकट के एक दुबले-पतले स्कूल मास्टर इचैबोड क्रेन की है, जो एक धनी किसान की इकलौती बेटी, 18 वर्षीय कैटरीना वैन टैसल से प्रेम करने के लिए कस्बे के बदमाश अब्राहम "ब्रोम बोन्स" वैन ब्रंट से प्रतिस्पर्धा करता है। एक शरद ऋतु की रात को जब क्रेन वैन टैसल के घर पर एक पार्टी से निकलता है, तो उसका पीछा एक सिर कटे घुड़सवार द्वारा किया जाता है, जिसे अमेरिकी क्रांति युद्ध के "किसी अज्ञात युद्ध" में तोप के गोले से अपना सिर गंवा बैठे एक हेसियन सैनिक का भूत माना जाता है, जो "हर रात अपने सिर की तलाश में युद्ध के मैदान में जाता है।" क्रेन कस्बे से गायब हो जाता है, और कैटरीना की शादी ब्रोम बोन्स से हो जाती है, जो "इचैबोड की कहानी सुनाए जाने पर बेहद जानकार दिखने लगता था।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

50

"...वैदिक भजनों की संस्कृत..."

संस्कृत (सःकता ं ृ वाक ् sa sktā v āk, संक्षेप में सःकतम ं ृ sa ् sktam) दक्षिण एशिया की एक शास्त्रीय भाषा है, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, जैन धर्म की एक धार्मिक भाषा है और भारत की 23 आधिकारिक भाषाओं में से एक है।

दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया की संस्कृतियों में इसका स्थान यूरोप में लैटिन और ग्रीक के समान है और इसने दुनिया की कई आधुनिक भाषाओं को विकसित करने के साथ-साथ प्रभावित भी किया है। यह पूर्व-शास्त्रीय रूप में वैदिक संस्कृत के रूप में दिखाई देती है, जिसमें ऋग्वेद की भाषा सबसे पुरानी और प्राचीन अवस्था है। लगभग 1500 ईसा पूर्व से,

186

वैदिक संस्कृत सबसे प्राचीन प्रमाणित इंडो-आर्यन भाषा है, और इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार के सबसे प्राचीन प्रमाणित सदस्यों में से एक है।
संस्कृत साहित्य में काव्य और नाटक की समृद्ध परंपरा के साथ-साथ वैज्ञानिक, तकनीकी, दार्शनिक और धार्मिक ग्रंथ भी समाहित हैं। आज भी, हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों में भजनों और मंत्रों के रूप में संस्कृत का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। भारत में कुछ पारंपरिक संस्थानों में आज भी संस्कृत बोली जाती है, और इसके पुनरुद्धार के प्रयास जारी हैं।
इस लेख का विषय पाणिनि द्वारा लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में वर्णित शास्त्रीय संस्कृत भाषा है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
51
"खोज के एक हिस्से के रूप में उस समय आसपास के क्षेत्र में रहने वाली मानव आबादी के साथ बातचीत करना आवश्यक था।"
-- संपादक की टिप्पणी: (पाकिस्तान की पश्चिमी सीमाओं में खैबर दर्रा और बोलन दर्रा शामिल हैं, जो मध्य एशिया के बीच पारंपरिक आक्रमण मार्ग थे। उस समय संस्कृत का उपयोग करने वाली और "डोमेन बेस" के सबसे निकट स्थित सभ्यता हिमालय की तलहटी में रही होगी। यह "मेहरगढ़" क्षेत्र में थी, जो सिंधु घाटी सभ्यता का प्रारंभिक स्थल है और जिसकी हाल ही में खुदाई की गई है।)
(बोलान दर्रा (उर्दू: ) पश्चिमी पाकिस्तान में टोबा काकर पर्वत श्रृंखला से होकर गुजरने वाला एक पहाड़ी दर्रा है, जो अफगानिस्तान सीमा से 120 किलोमीटर दूर है। रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित होने के कारण, व्यापारियों, आक्रमणकारियों और खानाबदोश जनजातियों ने भी इसे दक्षिण एशिया से आने-जाने के प्रवेश द्वार के रूप में इस्तेमाल किया है।)
खैबर दर्रा (जिसे Khaiber या Khaybar भी लिखा जाता है) (उर्दू: ) (ऊंचाई: 1,070 मीटर, 3,510 फीट) पाकिस्तान और अफगानिस्तान को जोड़ने वाला पर्वतीय दर्रा है। इतिहास में

यह मध्य एशिया और दक्षिण एशिया के बीच एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग और एक रणनीतिक सैन्य स्थान रहा है।

"मेहरगढ़ को अब सिंधु घाटी सभ्यता का अग्रदूत माना जाता है। इस्लामाबाद के कायद-ए-आजम विश्वविद्यालय में पुरातत्व के प्रोफेसर एमेरिटस अहमद हसन दानी के अनुसार, "मेहरगढ़ में हुई खोजों ने सिंधु सभ्यता की पूरी अवधारणा को बदल दिया। वहां हमें बसे हुए ग्रामीण जीवन की शुरुआत से लेकर पूरी श्रृंखला मिलती है।"

काची का मैदान और बोलन बेसिन, बोलन दर्रे पर स्थित हैं, जो दक्षिणी अफगानिस्तान, पूर्वी ईरान, बलूचिस्तान की पहाड़ियों और सिंधु घाटी को जोड़ने वाले प्रमुख मार्गों में से एक है। यह पहाड़ी क्षेत्र सिंधु घाटी के पश्चिमी किनारे पर स्थित है, जहाँ लगभग 2500 ईसा पूर्व, मेसोरपोटामिया और प्राचीन मिस्र साम्राज्य के साथ ही एक विशाल शहरी सभ्यता का उदय हुआ था। भारतीय उपमहाद्वीप में पहली बार, 7000 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक आवास स्थलों की एक निरंतर श्रृंखला स्थापित की गई है। मेहरगढ़ के ताम्रपाषाण काल के लोगों का उत्तरी अफगानिस्तान, उत्तरपूर्वी ईरान और दक्षिणी मध्य एशिया की समकालीन संस्कृतियों से भी संपर्क था।

अप्रैल 2006 में, वैज्ञानिक पत्रिका नेचर में यह घोषणा की गई कि मेहरगढ़ में जीवित व्यक्ति के दांतों में छेद करने का सबसे पुराना (और प्रारंभिक नवपाषाण काल का पहला) प्रमाण मिला है। लेखकों के अनुसार, उनकी खोज उस क्षेत्र की प्रारंभिक कृषि संस्कृतियों में आदिम दंत चिकित्सा की परंपरा की ओर इशारा करती है। "यहाँ हम ग्यारह छेदे हुए दाढ़ के मुकुटों का वर्णन करते हैं जो मेहरगढ़ में पाए गए हैं।

पाकिस्तान में नवपाषाण काल के एक कब्रिस्तान में नौ वयस्क शव मिले हैं, जो 7,500 से 9,000 वर्ष पुराने हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
52
"...उन्होंने उस क्षेत्र में 'विमान' या अंतरिक्ष यान देखे जाने की सूचना दी..."
"विमान (संस्कृत: ) एक पौराणिक उड़ने वाली मशीन है, जिसका वर्णन संस्कृत महाकाव्यों में मिलता है। संस्कृत महाकाव्यों के उड़ने वाले विमानों के पूर्ववर्ती वेदों में विभिन्न देवताओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले उड़ने वाले रथ हैं।"
हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित पहला उड़ने वाला विमान:
"मेरे भाई का पुष्पक रथ, जो सूर्य के समान दिखता है, शक्तिशाली रावण द्वारा लाया गया था; वह दिव्य और उत्कृष्ट रथ जो अपनी इच्छा से हर जगह विचरण करता है... वह रथ आकाश में एक उज्ज्वल बादल के समान दिखता है... और राजा [राम] उसमें सवार हुए, और रागीरा के आदेश पर वह उत्कृष्ट रथ उच्च वायुमंडल में ऊपर उठ गया।"
ऋग्वेद में विमानों का उल्लेख नहीं है, लेकिन श्लोक ऋग्वेद 1.164.47-48 को "यांत्रिक पक्षियों" के विचार के प्रमाण के रूप में लिया गया है:
"अंधेरा उतर रहा है: पक्षी सुनहरे रंग के हैं; वे जल में लिपटे हुए आकाश की ओर उड़ते हैं।"
वे फिर से व्यवस्था के सिंहासन से उतरते हैं, और सारी पृथ्वी उनकी उमंग से भीग जाती है।
बारह भुजाएँ हैं, और पहिया एक है; तीन केंद्र हैं। इसे कौन समझ पाया है?
इसमें कुल तीन सौ साठ तीलियाँ लगी हैं, जिन्हें किसी भी तरह से ढीला नहीं किया जा सकता है। (अनुवाद: ग्रिफ़िथ)
दयानंद सरस्वती के "अनुवाद" में ये श्लोक इस प्रकार हो जाते हैं:
"आग और पानी का उपयोग करने वाले एक यान के साथ तेजी से अंतरिक्ष में छलांग लगाना... जिसमें बारह स्तंभ (खंभे), एक पहिया, तीन मशीनें, 300 धुरी और 60 उपकरण शामिल हैं।"
लेकिन जब उस भजन की रचना हुई थी, तब मूल भारतीय प्रतीकात्मकता में पहिया एक वर्ष का प्रतीक था, 12 "पहाड़" महीने (चंद्रमा चक्र) थे, और 360 तीलियाँ दिन थीं।

रामायण में रावण के पुष्पक ("पुष्पयुक्त") विमान का वर्णन इस प्रकार किया गया है:
"मेरे भाई का पुष्पक रथ, जो सूर्य के समान दिखता है, शक्तिशाली रावण द्वारा लाया गया था; वह दिव्य और उत्कृष्ट रथ जो अपनी इच्छा से हर जगह विचरण करता है... वह रथ आकाश में एक उज्ज्वल बादल के समान दिखता है... और राजा [राम] उसमें सवार हुए, और रागीरा के आदेश पर वह उत्कृष्ट रथ उच्च वायुमंडल में ऊपर उठ गया।"
यह हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित पहला उड़ने वाला विमान है (देवताओं के उड़ने वाले अश्व-चालित रथों से भिन्न)।

पुष्पक का निर्माण मूल रूप से माया ने धन के देवता कुबेर के लिए किया था, लेकिन बाद में लंका के साथ-साथ पुष्पक को भी उनके सौतेले भाई, राक्षस राजा रावण ने चुरा लिया था।
इसका एक उदाहरण यह है कि असुर माया के पास बारह क्यूबिट लंबा विमान था।
चार मजबूत पहियों वाला एक गोलाकार गोला। 'तेज गति से चलने वाले मिसाइलों' के अलावा, कविता में अन्य घातक हथियारों के उपयोग का भी वर्णन है। 'इंद्रवज्र' एक वृत्ताकार 'परावर्तक' के माध्यम से संचालित होता था। चालू करने पर, यह 'प्रकाश की किरण' उत्पन्न करता था, जो किसी भी लक्ष्य पर केंद्रित होने पर उसे तुरंत 'अपनी शक्ति से भस्म कर देता था'।
एक प्रसंग में, नायक कृष्ण आकाश में अपने शत्रु साल्व का पीछा कर रहे होते हैं, तभी किसी कारणवश साल्व का विमान, सौभा, अदृश्य हो जाता है। फिर भी, कृष्ण तुरंत एक विशेष हथियार चलाते हैं: "मैंने तुरंत एक ऐसा बाण चलाया, जिसने ध्वनि का पता लगाकर ही वध किया।"
महाभारत में कई अन्य भयानक हथियारों का वर्णन है, लेकिन उनमें से सबसे भयावह वह हथियार है जिसका प्रयोग वृषियों के विरुद्ध किया गया था। वृत्तांत में दर्ज है:
"एक गोरखा अपने तीव्र और शक्तिशाली विमान में सवार होकर वृष्णि और अंधकों के तीनों नगरों पर ब्रह्मांड की समस्त शक्ति से परिपूर्ण एक ही प्रक्षेपास्त्र दागता है। दस हजार सूर्यों के समान तेजस्वी, धुएँ और अग्नि का एक प्रज्वलित स्तंभ अपने पूरे वैभव के साथ उठता है। यह अज्ञात शस्त्र, लौह वज्र था, मृत्यु का एक विशाल दूत जिसने वृष्णि और अंधकों की संपूर्ण जाति को राख में मिला दिया।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
53
"मैंने आपके द्वारा उपलब्ध कराई गई सभी पुस्तकों और सामग्री को स्कैन कर लिया है। इस क्षेत्र में स्थित अंतरिक्ष स्टेशन के कंप्यूटरों द्वारा इसकी प्रक्रिया पूरी कर ली गई है, मेरी अपनी भाषा में इसका अनुवाद किया गया है और मुझे वापस भेज दिया गया है।"

संपादक की टिप्पणी -- ऐसा प्रतीत होता है कि एयरल अपनी "गुड़िया जैसी आकृति" की आँखों के लेंस से जो कुछ भी देखती है उसे "स्कैन" कर सकती है, डेटा को "अंतरिक्ष स्टेशन" पर स्थित कंप्यूटर पर अपलोड कर सकती है, उसे प्रोसेस करवा सकती है और फिर उसे डाउनलोड करवा सकती है? या शायद वह यह सब टेलीपैथी के माध्यम से करती है? प्रतिलेखों या टिप्पणियों में कहीं भी इसका स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है।

54

"...मैं अपने शरीर से 'बाहर' था, छत से नीचे देख रहा था..."

शरीर से बाहर का अनुभव (ओबीई) एक ऐसा अनुभव है जिसमें व्यक्ति को अपने शरीर से बाहर तैरने का अहसास होता है और कुछ मामलों में, शरीर के बाहर से अपने भौतिक शरीर को देखना (ऑटोस्कोपी) भी शामिल होता है। लगभग दस में से एक व्यक्ति ने अपने जीवन में कभी न कभी शरीर से बाहर का अनुभव होने की बात कही है। ऐसा माना जाता है कि ओबीई का अनुभव करने वाले लोग कभी-कभी ऐसी बातें भी देख पाते हैं जो उन्हें पहले से पता नहीं होतीं।

भूतपूर्व आत्माओं के अनुभव (OBE) का पहला व्यापक वैज्ञानिक अध्ययन सेलिया ग्रीन (1968) द्वारा किया गया था। उन्होंने मुख्यधारा के मीडिया में अपील के माध्यम से भर्ती किए गए कुल 400 प्रतिभागियों से लिखित, प्रत्यक्ष विवरण एकत्र किए और प्रश्नावली के माध्यम से उनका अनुवर्ती अध्ययन किया। लगभग 80% ने बताया कि उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे वे एक 'शरीरविहीन चेतना' हैं, जिसका कोई बाहरी शरीर नहीं है।

मृत्यु के निकट के अनुभव (एनडीई) के दौरान एक अन्य प्रकार का स्वतःस्फूर्त ओबीई (OBE) होता है। एनडीई की घटना में आमतौर पर शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और पारलौकिक कारक शामिल होते हैं (पार्निया, वालर, येएट्स और फेनविक, 2001), जैसे कि भौतिक शरीर से बाहर होने का आभास (शरीर से बाहर का अनुभव)। आमतौर पर यह अनुभव एक विशिष्ट क्रम में आगे बढ़ता है, जिसकी शुरुआत शरीर के ऊपर तैरने और आसपास के क्षेत्र को देखने की अनुभूति से होती है।

189

-- संदर्भ: Wikipedia.org

55

अंतरिक्ष यान पर बिजली गिरी...

बिजली एक वायुमंडलीय विद्युत निर्वहन है, जो आमतौर पर गरज के साथ होने वाले तूफानों के दौरान और कभी-कभी ज्वालामुखी विस्फोट या धूल भरी आंधी के दौरान घटित होती है। बिजली की एक किरण 60,000 मीटर प्रति सेकंड की गति से यात्रा कर सकती है और इसका तापमान 30,000 डिग्री सेल्सियस (54,000 डिग्री फारेनहाइट) तक पहुंच सकता है, जो मिट्टी या रेत को पिघलाकर कांच की नलियों में बदलने के लिए पर्याप्त है। हर साल 1.6 करोड़ से अधिक बिजली के तूफान आते हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

56

..."इलेक्ट्रॉनिक तरंगदैर्ध्य"...

भौतिकी में, तरंगदैर्घ्य किसी दी गई आवृत्ति की गतिमान तरंग की दोहराई जाने वाली इकाइयों के बीच की दूरी होती है। इसे आमतौर पर ग्रीक अक्षर लैम्डा (λ) से दर्शाया जाता है। तरंग जैसी घटनाओं के उदाहरण प्रकाश, जल तरंगें और ध्वनि तरंगें हैं। तरंग में, एक गुण स्थिति के साथ बदलता रहता है। उदाहरण के लिए, यह गुण ध्वनि तरंग के लिए वायु दाब या प्रकाश के लिए विद्युत या चुंबकीय क्षेत्र का परिमाण हो सकता है। मानव कान द्वारा श्रव्य आवृत्तियों (20 हर्ट्ज़-20 किलोहर्ट्ज़) की तरंगदैर्घ्य क्रमशः लगभग 17 मीटर और 17 मिलीमीटर के बीच होती है। दृश्य प्रकाश गहरे लाल रंग (लगभग 700 एनएम) से लेकर बैंगनी रंग (लगभग 400 एनएम) (430-750 थाउज़ेंड हर्ट्ज़) तक होता है। अन्य उदाहरणों के लिए, विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम देखें।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

57

..."स्पेस ओपेरा" सभ्यता"...

1920 के दशक तक अंतरिक्ष पर आधारित वास्तविक उपन्यास 'वीर्ड टेल्स' और 'अमेजिंग स्टोरीज' जैसी लोकप्रिय पत्रिकाओं में प्रकाशित नहीं हुए थे। अंतरिक्ष रोमांच की पिछली कहानियों के विपरीत, जिनमें या तो पृथ्वी पर अलौकिक प्राणियों के आक्रमण की बात होती थी, या किसी प्रतिभाशाली आविष्कारक द्वारा अंतरिक्ष यान के आविष्कार पर ध्यान केंद्रित किया जाता था, शुद्ध अंतरिक्ष उपन्यास अंतरिक्ष यात्रा को स्वाभाविक मानकर चलता था (आमतौर पर कहानी को सुदूर भविष्य में स्थापित करके), प्रारंभिक पहलुओं को छोड़ देता था, और सीधे सितारों के बीच साहसिक कारनामों की कहानियों में उतर जाता था।
इस प्रकार की पहली कहानियाँ जे. श्लोसेल की 'द सेकंड स्वार्म' (वसंत 1928) 'अमेजिंग स्टोरीज क्वार्टरली' में और एडमंड हैमिल्टन की 'क्रैशिंग सन्स' (अगस्त-सितंबर 1928) और 'द स्टार स्टीलर्स' (फरवरी 1929) 'वीर्ड टेल्स' में प्रकाशित हुईं। 1929 और 1930 के दौरान अन्य लेखकों द्वारा भी इसी प्रकार की कहानियाँ प्रकाशित हुईं; 1931 तक स्पेस ओपेरा विज्ञान कथा की एक प्रमुख उप-शैली के रूप में अच्छी तरह स्थापित हो चुका था।
ई. ई. "डॉक" स्मिथ की रचनाओं में अंतरिक्ष यात्रा की पुरानी कहानियों से अंतरिक्ष ओपेरा की ओर बदलाव देखा जा सकता है। उनकी पहली प्रकाशित रचना, द स्काईलार्क ऑफ स्पेस (अगस्त-अक्टूबर 1928, अमेजिंग स्टोरीज), एक वैज्ञानिक द्वारा अंतरिक्ष-चालित वाहन के आविष्कार की पारंपरिक कहानी को एडगर राइस बरोज की शैली में ग्रहीय रोमांस के साथ जोड़ती है; लेकिन इसके सीक्वल, स्काईलार्क थ्री (अगस्त-अक्टूबर 1930, अमेजिंग स्टोरीज) के समय तक, जिसमें फेनाक्रोन नामक अंतरिक्ष यात्री जाति का परिचय कराया गया है, स्मिथ अंतरिक्ष ओपेरा शैली के करीब पहुंच चुके थे।
अंतरिक्ष वृत्तांत अपने सबसे परिचित रूप में 1930-40 के दशक की लोकप्रिय पत्रिकाओं की उपज था। सामान्य तौर पर प्रारंभिक विज्ञान कथाओं की तरह, अंतरिक्ष वृत्तांत ने भी अपनी शैली का अधिकांश भाग स्थापित साहसिक, अपराध और थ्रिलर शैलियों से लिया।
उल्लेखनीय प्रभावों में वे कहानियाँ शामिल थीं जो विदेशी या असभ्य सीमाओं पर रोमांच का वर्णन करती थीं, जैसे कि अमेरिकी पश्चिम, अफ्रीका या पूर्व।

अंतरिक्ष ओपेरा के काल्पनिक भविष्य में विशाल अंतरिक्ष यान, अज्ञात दुनिया के साहसी खोजकर्ता, अंतरिक्ष मार्गों के समुद्री डाकू और सख्त लेकिन ईमानदार अंतरिक्ष पुलिस शामिल थे।
ई. ई. "डॉक" स्मिथ की बाद की लेंसमैन सीरीज़ और 1930 और 1940 के दशक में एडमंड हैमिल्टन, जॉन डब्ल्यू. कैंपबेल और जैक विलियमसन की रचनाएँ पाठकों के बीच लोकप्रिय थीं और अन्य लेखकों द्वारा इनकी नकल की गई थी। 1940 के दशक की शुरुआत तक, इनमें से कुछ कहानियों की पुनरावृत्ति और अतिशयोक्ति के कारण कुछ प्रशंसकों ने आपत्ति जताई।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
58
"...1493 ईस्वी -- "आवश्यकता"..."
"यह आवश्यकता एक पोप के "बुल" के रूप में प्रकाशित हुई थी, जिसे कुख्यात पोप अलेक्जेंडर VI (रोड्रिगो बोर्जिया) द्वारा जारी किया गया था, जो 1492 से अपनी मृत्यु तक रोमन कैथोलिक पोप रहे और पुनर्जागरण काल के पोप्स में सबसे यादगार हैं।"
सन् 1493 में अमेरिका में लाखों लोगों की पूर्व-उपस्थिति के कारण, स्पेन के राजा को इस बात का हल्का सा भय था कि कहीं ईश्वर उन पर क्रोधित न हो जाएँ, क्योंकि उन्होंने नई दुनिया में हत्या, चोरी और अराजकता को बढ़ावा दिया था। इसलिए, उन्होंने पोप अलेक्जेंडर VI को राजी किया कि वे एक आधिकारिक घोषणा को मंजूरी दें, जिसका उद्देश्य राजा की अमर आत्मा से रक्तपात के कलंक को मिटाना था। "द रिक्वायरमेंट" नामक इस दस्तावेज़ को, चाहे निवासियों की मूल भाषा में अनुवादित किया गया हो या नहीं, प्रत्येक विदेशी राष्ट्र के नागरिकों को उनकी विजय से ठीक पहले पढ़कर सुनाया जाना था। घोषणा का सार यह था कि जल्द ही पराजित होने वाले लोगों को सूचित किया जाए कि उनकी भूमि स्पेन को "दान" की जा रही है। आवश्यकता में आंशिक रूप से यह लिखा था:
मैं, (विजेता का नाम), कैस्टिले और लियोन के महान और शक्तिशाली राजाओं का सेवक, बर्बर लोगों का विजेता, और उनका दूत और सेनापति, आपको सूचित करता/करती हूँ... कि

हमारे प्रभु परमेश्वर, एक और शाश्वत, ने स्वर्ग और पृथ्वी तथा एक पुरुष और एक स्त्री की रचना की, जिनसे आप और मैं तथा इनसे उत्पन्न समस्त जनसमूह की उत्पत्ति हुई, पिछले पाँच हज़ार वर्षों में जब से संसार की रचना हुई है... अतः मैं आपसे निवेदन करता/करती हूँ... कि आप चर्च को अपनी स्वामिनी और संसार की शासक के रूप में, और पोप कहलाने वाले महायाजक को उसके नाम पर, तथा महामहिम (स्पेन के राजा) को उसके स्थान पर शासक और स्वामी के रूप में स्वीकार करें... और यदि आप ऐसा नहीं करते... तो परमेश्वर की सहायता से मैं आपके विरुद्ध बलपूर्वक आऊँगा/आऊँगी, और मैं हर जगह और हर संभव तरीके से आप पर युद्ध करूँगा/करूँगी, और मैं आपको चर्च और महामहिम के अधीन कर दूँगा/करूँगी, और मैं आपकी स्त्रियों और बच्चों को पकड़ लूँगा/पकड़ लूँगी, और उन्हें गुलाम बनाकर बेच दूँगा/दूँगी। जैसा महाराज ने आदेश दिया है, मैं तुम्हें हर वो बुराई और नुकसान पहुँचाऊँगा जो मैं कर सकता हूँ। और मैं इस बात पर ज़ोर देता हूँ कि इसके परिणामस्वरूप होने वाली मौतें और विनाश तुम्हारी ही गलती होगी।"

सबसे पहले 'द रिक्वायरमेंट' के बारे में सुनने वालों में माया सभ्यता के प्रमुख भी शामिल थे। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति की उनकी समय-सारणी पोप के सुझाव के अनुसार मात्र 5,000 वर्ष पहले शुरू नहीं हुई थी, बल्कि माया सभ्यता के लोग खगोलीय कैलेंडर के अनुसार लाखों वर्षों में सृष्टि की उत्पत्ति की गणना करते थे, जो सौर वर्ष को कुछ सेकंड के भीतर सटीकता से मापता था। 'द रिक्वायरमेंट' के बारे में सुनकर उनकी टिप्पणी थी, "पवित्र पिता ने वास्तव में दूसरों की संपत्ति के प्रति उदारता दिखाई है।"

यह आवश्यकता मूल रूप से स्पेनिश धर्मगुरुओं की उन शिकायतों के जवाब में बनाई गई थी कि मूल अमेरिकी लोगों के खिलाफ युद्ध अन्यायपूर्ण थे। स्पेन द्वारा मूरों के खिलाफ किए गए युद्धों से तुलना करते हुए, धर्मगुरुओं ने दावा किया कि मुसलमानों को ईसा मसीह का ज्ञान था और उन्होंने उन्हें अस्वीकार कर दिया, इसलिए उनके खिलाफ धर्मयुद्ध छेड़ना वैध था। इसके विपरीत, युद्धों

मूल अमेरिकी लोगों के खिलाफ, जिनका ईसाई धर्म से कभी कोई संपर्क नहीं हुआ था, यह प्रावधान अस्वीकार्य था। इस प्रावधान का उद्देश्य एक कानूनी खामी के रूप में मूल निवासियों को ईसाई धर्म को अस्वीकार करने की स्थिति में डालना था। इसमें कहा गया था: "हम विरोध करते हैं कि इस [ईसाई धर्म को अस्वीकार करने] के परिणामस्वरूप होने वाली किसी भी मृत्यु के लिए आप ही जिम्मेदार हैं..."

विजय प्राप्त करने वालों की नीतियों के कई आलोचक इस आदेश की हल्की-फुल्की प्रकृति से स्तब्ध थे, और पुजारी बार्टोलोमियो डी लास कासास ने इसके जवाब में कहा कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि हँसें या रोएँ। हालाँकि विजय प्राप्त करने वालों को आदेश पढ़ने के लिए दुभाषिए का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था, लेकिन यह बिल्कुल आवश्यक नहीं था, और कई मामलों में, इसे एक ऐसी जनता को पढ़कर सुनाया गया जो इसे समझ नहीं पाती थी। कुछ मामलों में, इसे बंजर समुद्र तटों और वीरान गाँवों में, मूल निवासियों के भाग जाने के बहुत बाद, कैदियों को उनके पकड़े जाने के बाद, या यहाँ तक कि जहाजों के डेक से भी, जब उन्होंने तट को देख लिया था, पढ़कर सुनाया गया।

फिर भी, विजेताओं के लिए, इसने मूल निवासियों पर हमला करने और उन्हें गुलाम बनाने के लिए एक धार्मिक औचित्य प्रदान किया, और स्पेन के खजाने को समृद्ध करने की इसकी क्षमता के कारण, इस आवश्यकता पर आम तौर पर सवाल नहीं उठाया गया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

"नई दुनिया" की "खोज" का अंतिम परिणाम, जो वास्तव में "नई" नहीं थी क्योंकि यह अन्य महाद्वीपों के समान ही अस्तित्व में थी और इसकी जनसंख्या यूरोप से भी अधिक थी, इस प्रकार था:

1) सैकड़ों स्वदेशी संस्कृतियों का विनाश हुआ। 2) लगभग 1 करोड़ लोग "विदेशियों" द्वारा लाई गई बीमारियों और युद्धों से मारे गए। 3) अफ्रीका के स्वर्ण तट से 1 करोड़ लोगों को यूरोपीय लोगों द्वारा गुलाम बनाया गया और/या उनकी हत्या कर दी गई, ताकि पश्चिमी गोलार्ध की स्वदेशी आबादी के नरसंहार के बाद उनकी "श्रमशक्ति" की पूर्ति की जा सके। 4) पश्चिमी गोलार्ध के लगभग सभी अमूल्य साहित्य, इतिहास, सांस्कृतिक और कलात्मक कलाकृतियों

को नष्ट कर दिया गया। 5) स्वदेशी लोगों द्वारा हजारों वर्षों में खनन किए गए अधिकांश सोने और रत्नों को चुरा लिया गया और यूरोप के कुछ लालची, मूर्ख, अशिक्षित, गंदे, रोगग्रस्त, अंधविश्वासी, हत्यारे चोरों के पास भेज दिया गया, जिन्होंने इसे व्यर्थ के भोग-विलास में लुटा दिया। -- संपादक

59

"...वे मुख्य रूप से इस अंतरिक्ष स्टेशन में मौजूद 'कम गुरुत्वाकर्षण' वाले उपग्रहों में रुचि रखते हैं, जो मुख्य रूप से चंद्रमा के अंधेरे हिस्से से बना है..."।

नासा के अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग के अनुसार, एलियंस का चंद्रमा पर एक अड्डा है और (एलियंस ने) हमें स्पष्ट शब्दों में कहा है कि हम चंद्रमा से हट जाएं और वहां से दूर रहें!

क्या यह बात अविश्वसनीय लगती है? नौसेना खुफिया अधिकारी मिल्टन कूपर हमें बताते हैं कि न केवल एलियन मून बेस मौजूद है, बल्कि अमेरिकी नौसेना खुफिया समुदाय इसे "लूना" के नाम से संदर्भित करता है, वहां एक विशाल खनन अभियान चल रहा है, और यहीं पर एलियंस अपने विशाल मदरशिप रखते हैं, जबकि पृथ्वी की यात्राएं छोटे "उड़न तश्तरियों" में की जाती हैं।

लूना: चंद्रमा के सुदूर भाग पर स्थित एलियन बेस। इसे अपोलो अंतरिक्ष यात्रियों ने देखा और फिल्माया था। वहां एक बेस, बहुत बड़ी मशीनों का उपयोग करके खनन कार्य और बहुत बड़े एलियन यान मौजूद हैं, जिन्हें देखने की रिपोर्टों में मदरशिप के रूप में वर्णित किया गया है। - मिल्टन कूपर

क्या अपोलो 11 ने चंद्रमा पर यूएफओ का सामना किया था? टिमोथी गुड की पुस्तक "अबव टॉप सीक्रेट" से।

192

अब तक अपुष्ट रिपोर्टों के अनुसार, नील आर्मस्ट्रांग और एडविन "बज़" एल्ड्रिन दोनों ने 21 जुलाई 1969 को अपोलो 11 मिशन के तहत चंद्रमा पर ऐतिहासिक लैंडिंग के तुरंत बाद यूएफओ देखे थे। मुझे याद है कि टेलीविजन प्रसारण के दौरान मैंने एक अंतरिक्ष यात्री को किसी कार्टर में या उस पर "रोशनी" का जिक्र करते सुना था, जिसके बाद मिशन कंट्रोल ने और जानकारी मांगी थी। इसके बाद कुछ और सुनाई नहीं दिया।

नासा के पूर्व कर्मचारी ओटो बाइंडर के अनुसार, नासा के प्रसारण आउटलेट्स को दरकिनार करते हुए, अपने स्वयं के वीएचएफ रिसीविंग सुविधाओं वाले अज्ञात रेडियो हैम ने निम्नलिखित बातचीत सुनी:

नासा: क्या खबर है? मिशन कंट्रोल अपोलो 11 को बुला रहा है...

अपोलो: ये "बच्चे" तो बहुत बड़े हैं, महोदय! विशाल! हे भगवान! आप विश्वास नहीं करेंगे! मैं आपको बता रहा हूँ, वहाँ और भी अंतरिक्ष यान हैं, जो गड्ढे के किनारे की दूसरी तरफ कतार में खड़े हैं! वे चाँद पर हमें देख रहे हैं!

1979 में, नासा के संचार प्रणाली के पूर्व प्रमुख मॉरिस चैटेलैन ने पुष्टि की कि आर्मस्ट्रांग ने वास्तव में एक क्रेटर के किनारे पर दो यूएफओ देखे जाने की सूचना दी थी। उन्होंने खुलासा किया, "यह घटना नासा में सर्वविदित थी, लेकिन अब तक किसी ने इस बारे में बात नहीं की थी।"

कथित तौर पर सोवियत वैज्ञानिकों ने सबसे पहले इस घटना की पुष्टि की थी। मॉस्को विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञानी और गणित के प्रोफेसर डॉ. व्लादिमीर अज़हाज़ा ने कहा, "हमारी जानकारी के अनुसार, मॉड्यूल के उतरने के तुरंत बाद इस घटना की सूचना मिली थी। नील आर्मस्ट्रांग ने मिशन कंट्रोल को संदेश भेजा था कि चंद्रमा मॉड्यूल के पास उतरने के बाद दो बड़ी, रहस्यमयी वस्तुएं उन्हें देख रही थीं। लेकिन उनका यह संदेश जनता तक नहीं पहुंचा क्योंकि नासा ने इसे सेंसर कर दिया था।"

एक अन्य सोवियत वैज्ञानिक, डॉ. अलेक्जेंडर कज़ांत्सेव के अनुसार, बज़ एल्ड्रिन ने मॉड्यूल के अंदर से यूएफओ की रंगीन फिल्म बनाई और आर्मस्ट्रांग के बाहर आने के बाद भी

फिल्मांकन जारी रखा। डॉ. कज़ांत्सेव का दावा है कि अंतरिक्ष यात्रियों के चंद्र सतह पर उतरने के कुछ ही मिनटों बाद यूएफओ वहां से चले गए।
मौरिस चैटेलैन ने यह भी पुष्टि की कि अपोलो 11 के रेडियो प्रसारण को कई बार बाधित किया गया ताकि जनता से खबर छुपाई जा सके। चैटेलैन के सनसनीखेज दावों को खारिज करने से पहले, अंतरिक्ष उद्योग और अंतरिक्ष कार्यक्रम में उनकी प्रभावशाली पृष्ठभूमि पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। फ्रांस से आने के बाद उनकी पहली नौकरी कॉनवेयर में एक इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर के रूप में थी, जहाँ वे दूरसंचार, टेलीमेट्री और रडार में विशेषज्ञता रखते थे। 1959 में वे एक विद्युत चुम्बकीय अनुसंधान समूह के प्रभारी थे, जो नए रडार और
रयान के लिए दूरसंचार प्रणालियों का निर्माण किया। उनके ग्यारह पेटेंटों में से एक चंद्रमा पर स्वचालित उड़ान का था। बाद में, नॉर्थ अमेरिकन एविएशन में, चैटलेन को अपोलो संचार और डेटा-प्रोसेसिंग प्रणालियों को डिजाइन और बनाने का काम सौंपा गया।
चैटेलैन का दावा है कि "अपोलो और जेमिनी की सभी उड़ानों का दूर से और कभी-कभी काफी करीब से भी, अलौकिक मूल के अंतरिक्ष यानों - उड़न तश्तरियों, या यूएफओ (यदि आप उन्हें इस नाम से पुकारना चाहें) - द्वारा पीछा किया गया था। हर बार ऐसा होने पर, अंतरिक्ष यात्रियों ने मिशन कंट्रोल को सूचित किया, जिसने तब पूर्ण चुप्पी का आदेश दिया।"
वह आगे कहते हैं:
"मुझे लगता है कि मरकरी 8 पर सवार वाल्टर शिर्रा पहले अंतरिक्षयात्री थे जिन्होंने अंतरिक्ष कैप्सूल के बगल में उड़न तश्तरियों की उपस्थिति को इंगित करने के लिए 'सांता क्लॉस' कोड नाम का इस्तेमाल किया था। हालांकि, उनकी घोषणाओं पर आम जनता ने शायद ही ध्यान दिया हो।"

जब अपोलो 8 कमांड मॉड्यूल में सवार जेम्स लवेल चंद्रमा के पीछे से निकले और सबके सामने यह बात कही, तो स्थिति थोड़ी अलग थी:
कृपया ध्यान दें कि सांता क्लॉस मौजूद है।
हालांकि यह घटना 1968 में क्रिसमस के दिन घटी थी, लेकिन कई लोगों ने उन शब्दों में एक छिपा हुआ अर्थ महसूस किया।
अफवाहें अभी भी बनी हुई हैं। नासा भले ही एक नागरिक एजेंसी हो, लेकिन इसके कई कार्यक्रम रक्षा बजट से वित्त पोषित होते हैं और अधिकांश अंतरिक्ष यात्री सैन्य सुरक्षा नियमों के अधीन होते हैं। इसके अलावा, राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी सभी फिल्मों और संभवतः रेडियो संचार की भी जांच करती है। हमारे पास ओटो बाइंडर, डॉ. गैरी हेंडरसन और मौरिस चैटेलैन के बयान हैं कि अंतरिक्ष यात्रियों को अपने देखे गए दृश्यों पर चर्चा न करने के सख्त आदेश थे। और गॉर्डन कूपर ने संयुक्त राष्ट्र समिति के सामने गवाही दी है कि एक अंतरिक्ष यात्री ने वास्तव में जमीन पर एक यूएफओ देखा था। यदि कोई गोपनीयता नहीं है, तो इस घटना को सार्वजनिक क्यों नहीं किया गया?
एक प्रोफेसर, जिन्होंने अपना नाम गुप्त रखने की इच्छा जताई, नासा के एक संगोष्ठी के दौरान नील आर्मस्ट्रांग के साथ चर्चा में लगे हुए थे।
प्रोफेसर: अपोलो 11 के साथ अंतरिक्ष में वास्तव में क्या हुआ था?
आर्मस्ट्रांग: यह अविश्वसनीय था, बेशक हम हमेशा से जानते थे कि ऐसी संभावना है, असल में, हमें (एलियंस द्वारा) चेतावनी दी गई थी! उस समय अंतरिक्ष स्टेशन या चंद्रमा पर शहर बसाने का कोई सवाल ही नहीं था।
प्रोफेसर: "चेतावनी देना" से आपका क्या मतलब है?
आर्मस्ट्रांग: मैं विस्तार से नहीं बता सकता, बस इतना कह सकता हूँ कि उनके जहाज आकार और तकनीक दोनों में हमारे जहाजों से कहीं बेहतर थे - अरे वाह, वे कितने विशाल थे!... और कितने भयावह! नहीं, अंतरिक्ष स्टेशन का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।
प्रोफेसर: लेकिन अपोलो 11 के बाद नासा के और भी मिशन थे?

आर्मस्ट्रांग: स्वाभाविक रूप से, नासा उस समय प्रतिबद्ध था और पृथ्वी पर अफरा-तफरी का जोखिम नहीं उठा सकता था। लेकिन यह वास्तव में एक त्वरित खोज थी और तुरंत वापस लौटना पड़ा।

आर्मस्ट्रांग ने इस बात की पुष्टि की कि कहानी सच थी, लेकिन उन्होंने इस बात को स्वीकार करने के अलावा और कोई विवरण देने से इनकार कर दिया कि सीआईए इस मामले को दबाने के पीछे थी।

एक परग्रही सभ्यता की संदिग्ध गतिविधियाँ अचानक हमारे निकट प्रकट हुईं। हम इसके लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे।

आज भी हमें ऐसी कई पत्रिकाएँ देखने को मिलती हैं जो इस सवाल का जवाब खोजने की कोशिश करती हैं: क्या हम ब्रह्मांड में अकेले हैं? वहीं दूसरी ओर, हमारे घर के ठीक पास, चंद्रमा पर बुद्धिमान प्राणियों की उपस्थिति का पता चला है। हालांकि, इस खोज को तुरंत गुप्त घोषित कर दिया गया, क्योंकि यह इतनी अविश्वसनीय थी कि इससे पहले से मौजूद सामाजिक सिद्धांतों को भी हिला देने की क्षमता थी, ऐसा रूस के अखबार "वेचेर्नी वोल्गोग्राद" ने बताया है।

आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति का एक अंश यहाँ दिया गया है:

21 मार्च, 1996 को वाशिंगटन नेशनल प्रेस क्लब में आयोजित एक ब्रीफिंग में मंगल और चंद्रमा के अन्वेषण में भाग ले रहे नासा के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने अपनी खोजों के परिणाम प्रस्तुत किए। पहली बार यह घोषणा की गई कि चंद्रमा पर मानव निर्मित संरचनाएं और वस्तुएं खोजी गई हैं। वैज्ञानिकों ने यूएफओ को छोड़कर, कार्यशील वस्तुओं के बारे में काफी सावधानी और टालमटोल से बात की। उन्होंने हमेशा मानव निर्मित वस्तुओं को संभावित वस्तु के रूप में उल्लेख किया और बताया कि जानकारी अभी भी अध्ययन के अधीन है और आधिकारिक परिणाम बाद में प्रकाशित किए जाएंगे।

ब्रीफिंग में यह भी बताया गया कि सोवियत संघ के पास कुछ ऐसी फोटो सामग्रियां थीं जो चंद्रमा पर संभावित गतिविधि के प्रमाण प्रस्तुत करती थीं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं किया गया कि यह किस प्रकार की गतिविधि थी, अपोलो और क्लेमेंटाइन अंतरिक्ष स्टेशनों से ली गई हजारों फोटो और वीडियो सामग्रियों ने चंद्रमा की सतह के कई हिस्सों को दिखाया जहां गतिविधि और उसके निशान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। ब्रीफिंग में अपोलो कार्यक्रम के दौरान अमेरिकी अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा बनाई गई वीडियो फिल्में और तस्वीरें दिखाई गईं। लोग यह देखकर बेहद हैरान थे कि इन सामग्रियों को पहले जनता के सामने क्यों नहीं पेश किया गया। नासा के विशेषज्ञों ने जवाब दिया: "यह अनुमान लगाना मुश्किल था कि चंद्रमा पर कुछ जीव थे या अभी भी हैं, इस जानकारी पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया होगी। इसके अलावा, इसके कुछ अन्य कारण भी थे, जो नासा की समझ से परे थे।"

चंद्र कलाकृतियों के विशेषज्ञ रिचर्ड होगलैंड का कहना है कि नासा अभी भी सार्वजनिक कैटलॉग और फाइलों में प्रकाशित होने से पहले तस्वीरों को छिपाने की कोशिश कर रहा है; वे कॉपी करते समय उनमें कुछ बदलाव करते हैं या उन्हें आंशिक रूप से रीफोकस करते हैं। कुछ शोधकर्ता, जिनमें होगलैंड भी शामिल हैं, मानते हैं कि किसी अलौकिक जाति ने पृथ्वी पर अपनी गतिविधियों के दौरान चंद्रमा को अंतिम स्टेशन के रूप में इस्तेमाल किया था। ये सुझाव हमारे ग्रह के विभिन्न देशों द्वारा गढ़ी गई किंवदंतियों और मिथकों से पुष्ट होते हैं। कई किलोमीटर तक फैले चंद्र नगरों के खंडहर, विशाल तहखानों पर बने बड़े पारदर्शी गुंबद, असंख्य सुरंगें और अन्य निर्माण वैज्ञानिकों को चंद्र समस्याओं के बारे में अपने विचारों पर

पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करते हैं। चंद्रमा कैसे प्रकट हुआ और पृथ्वी के चारों ओर उसकी परिक्रमा के सिद्धांत अभी भी वैज्ञानिकों के लिए एक बड़ी पहेली बने हुए हैं।
चंद्रमा की सतह पर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त कुछ वस्तुओं को प्राकृतिक भूवैज्ञानिक संरचनाओं में शामिल नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनकी संरचना और ज्यामितीय रूप जटिल हैं। अपोलो-15 के उतरने के स्थान से कुछ ही दूरी पर स्थित रिमा हेडली के ऊपरी भाग में एक ऊँची डी-आकार की दीवार से घिरी एक संरचना का पता चला है। अब तक 44 क्षेत्रों में विभिन्न कलाकृतियाँ खोजी जा चुकी हैं।
नासा के गोडार्ड अंतरिक्ष उड़ान केंद्र, ह्यूस्टन ग्रह संस्थान और अंतरिक्ष सूचना बैंक के विशेषज्ञ इन क्षेत्रों की जांच कर रहे हैं। तिहो क्रेटर के पास चट्टान में रहस्यमय सीढ़ीनुमा गड्ढे खोजे गए हैं। ये संकेंद्रित षट्भुजाकार गड्ढे और सीढ़ी के किनारे पर सुरंग का प्रवेश द्वार प्राकृतिक भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का परिणाम नहीं हो सकते; बल्कि, ये खुले खदानों की तरह दिखते हैं।
गड्ढे के किनारे से ऊपर उठा हुआ एक पारदर्शी गुंबद गड्ढे के पास खोजा गया। कोपरनिकस। इसका गुंबद अनोखा है क्योंकि यह अंदर से सफेद और नीले रंग से चमक रहा है। फैक्ट्री क्षेत्र के ऊपरी हिस्से में एक ऐसी अनोखी वस्तु खोजी गई है, जो वास्तव में चंद्रमा के लिए भी असामान्य है। लगभग 50 मीटर व्यास की एक डिस्क एक वर्गाकार आधार पर टिकी है, जो समचतुर्भुज दीवारों से घिरी हुई है। चित्र में, समचतुर्भुजों के पास, जमीन में एक गहरा गोलाकार छेद भी दिखाई देता है, जो किसी भूमिगत गड्ढे के प्रवेश द्वार जैसा दिखता है। फैक्ट्री और कोपरनिकस क्रेटर के बीच एक नियमित आयताकार क्षेत्र है, जो 300 मीटर चौड़ा और 400 मीटर लंबा है।

अपोलो 10 के अंतरिक्ष यात्रियों ने कैसल नामक एक मील लंबी वस्तु की एक अनोखी तस्वीर (AS10-32-4822) ली, जो चंद्रमा की सतह पर 14 किलोमीटर की ऊंचाई पर लटकी हुई है और एक स्पष्ट छाया डालती है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह वस्तु कई बेलनाकार इकाइयों और एक बड़ी संयोजी इकाई से बनी है। तस्वीरों में से एक में कैसल की आंतरिक छिद्रयुक्त संरचना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिससे ऐसा आभास होता है कि वस्तु के कुछ हिस्से पारदर्शी हैं।

जैसा कि उस ब्रीफिंग में पता चला, जिसमें नासा के कई वैज्ञानिक मौजूद थे, जब रिचर्ड होगलैंड ने दूसरी बार कैसल की तस्वीरों की मूल प्रतियां मांगीं, तो वहां कोई भी तस्वीर नहीं मिली। वे अपोलो 10 के दल द्वारा ली गई तस्वीरों की सूची से भी गायब हो गईं। अभिलेखागार में केवल वस्तु की मध्यवर्ती तस्वीरें मिलीं, जो दुर्भाग्य से वस्तु की आंतरिक संरचना को नहीं दर्शाती हैं।

जब अपोलो-12 के चालक दल ने चंद्रमा की सतह पर कदम रखा, तो उन्होंने देखा कि एक अर्ध-पारदर्शी पिरामिडनुमा वस्तु उनकी लैंडिंग को देख रही थी। यह वस्तु चंद्रमा की सतह से कुछ ही मीटर ऊपर लटकी हुई थी और काले आकाश के बीच इंद्रधनुषी रंगों से जगमगा रही थी।

1969 में, जब अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा तूफ़ान सागर की यात्रा पर बनी फ़िल्म दिखाई गई (अंतरिक्ष यात्रियों ने एक बार फिर उन अजीब वस्तुओं को देखा, जिन्हें बाद में "धारीदार चश्मे" कहा गया), तब नासा को आखिरकार समझ आया कि इस तरह के नियंत्रण के क्या परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष यात्री मिशेल ने सफल वापसी के बाद अपनी भावनाओं के बारे में पूछे जाने पर कहा: "मेरी गर्दन में अभी भी दर्द होता है क्योंकि मुझे लगातार अपना सिर घुमाना पड़ता था, क्योंकि हमें लगता था कि हम वहाँ अकेले नहीं हैं। हमारे पास प्रार्थना करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।" ह्यूस्टन अंतरिक्ष केंद्र में काम करने वाले और अपोलो कार्यक्रम के दौरान ली गई तस्वीरों और वीडियो सामग्री का अध्ययन करने वाले जॉनस्टन ने रिचर्ड होगलैंड के साथ उन कलाकृतियों पर चर्चा की और कहा कि नासा का नेतृत्व चंद्रमा पर बड़ी संख्या में असामान्य वस्तुओं को देखकर बेहद परेशान था। यहाँ तक कि यह भी कहा

गया कि कार्यक्रम के नेटवर्क में चंद्रमा पर मानवयुक्त उड़ानों पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है।

जांचकर्ताओं की दिलचस्पी खास तौर पर आंशिक रूप से नष्ट हो चुके शहरों जैसी प्राचीन संरचनाओं में है। ऑर्बिटल शूटिंग से वर्गाकार और आयताकार संरचनाओं की आश्चर्यजनक रूप से नियमित ज्यामिति का पता चलता है। ये संरचनाएं 5-8 किलोमीटर की ऊंचाई से देखने पर हमारे पृथ्वी पर मौजूद शहरों जैसी दिखती हैं। मिशन कंट्रोल के एक विशेषज्ञ ने तस्वीरों पर टिप्पणी करते हुए कहा: "हमारे साथियों ने चंद्रमा पर मौजूद शहरों के खंडहर, पारदर्शी पिरामिड, गुंबद और न जाने क्या-क्या देखा, जो फिलहाल नासा के सुरक्षित भंडारों में गहराई में छिपे हुए हैं। उन्हें ऐसा लगा जैसे रॉबिन्सन क्रूसो को रेगिस्तानी द्वीप की रेत पर अचानक नंगे पैरों के निशान मिल गए हों।" चंद्रमा पर मौजूद शहरों और अन्य असामान्य वस्तुओं की तस्वीरों का अध्ययन करने के बाद भूवैज्ञानिक और वैज्ञानिक क्या कहते हैं? उनका कहना है कि ऐसी वस्तुएं प्राकृतिक संरचनाएं नहीं हो सकतीं। "हमें मानना होगा कि ये कृत्रिम हैं, खासकर गुंबद और पिरामिड।" किसी एलियन सभ्यता की गतिविधि अप्रत्याशित रूप से हमारे इतने करीब दिखाई दी है। हम इसके लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे, और कुछ लोगों को तो अब भी इस पर यकीन करना मुश्किल है।"

मारिया गौसेवा द्वारा अनुवादित (मूल स्रोत =

http://english.pravda.ru/main/2002/10/05/37771.html)

-- स्रोत: http://www.ufocasebook.com/moon.html

60

"...जिप्सम से संश्लेषित..."

जिप्सम एक सामान्य खनिज है, जो अवसादी चट्टानों के साथ मोटी और विस्तृत वाष्पीकरण परतों में पाया जाता है। पर्मियन युग से ही इसकी परतें पाई जाती हैं। जिप्सम झीलों और समुद्र के जल में, साथ ही गर्म झरनों में, ज्वालामुखी वाष्पों से और शिराओं में सल्फेट विलयनों से जमा होता है। शिराओं में हाइड्रोथर्मल एनहाइड्राइट आमतौर पर जलयुक्त होता है।

196

सतही क्षेत्रों के निकट भूजल द्वारा जिप्सम का निर्माण होता है। यह अक्सर हैलाइट और सल्फर खनिजों के साथ पाया जाता है।
जिप्सम शब्द ग्रीक क्रिया μαγειρεύω के मूल रूप से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पकाना", और यह जले हुए या कैल्सीनेटेड खनिज को संदर्भित करता है। पेरिस के मोंटमार्ट्रे जिले की खदानों से प्राप्त जिप्सम से लंबे समय से विभिन्न प्रयोजनों के लिए जला हुआ जिप्सम प्राप्त होता रहा है, इसलिए इसे प्लास्टर ऑफ पेरिस कहा जाता है। इसका उपयोग फुट क्रीम, शैंपू और कई अन्य हेयर प्रोडक्ट्स में भी किया जाता है।
क्योंकि जिप्सम समय के साथ पानी में घुल जाता है, इसलिए यह रेत के रूप में बहुत कम पाया जाता है। हालांकि, अमेरिका के न्यू मैक्सिको राज्य में स्थित व्हाइट सैंड्स नेशनल मॉन्यूमेंट की अनूठी परिस्थितियों के कारण 710 वर्ग किलोमीटर (275 वर्ग मील) में फैला सफेद जिप्सम रेत का क्षेत्र बन गया है, जो निर्माण उद्योग को 1,000 वर्षों तक ड्राईवॉल की आपूर्ति करने के लिए पर्याप्त है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
61
"... विद्युत चुम्बकीय बल..."
भौतिकी में, लोरेंत्ज़ बल विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों के कारण एक बिंदु आवेश पर लगने वाला बल है। लोरेंत्ज़ ने 1892 में इस बल की अवधारणा प्रस्तुत की। हालाँकि, लोरेंत्ज़ बल की खोज उनके समय से पहले ही हो चुकी थी। विशेष रूप से, इसे मैक्सवेल के 1861 के शोधपत्र "ऑन फिजिकल लाइन्स ऑफ फोर्स" में समीकरण (77) में देखा जा सकता है। बाद में, मैक्सवेल ने इसे अपने 1864 के शोधपत्र "ए डायनामिकल थ्योरी ऑफ द इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड" में समीकरण "डी" के रूप में आठ मूल मैक्सवेल समीकरणों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया। इस शोधपत्र में समीकरण को इस प्रकार लिखा गया था:
कहाँ
A चुंबकीय सदिश विभव है, φ स्थिर विद्युत विभव है, H चुंबकीय क्षेत्र H है, और μ चुंबकीय पारगम्यता है।

हालांकि यह समीकरण स्पष्ट रूप से आधुनिक लोरेंत्ज़ बल समीकरण का प्रत्यक्ष पूर्ववर्ती है, लेकिन वास्तव में यह दो मामलों में भिन्न है:

•

•

इसमें आवेश $q$ का कोई गुणनखंड नहीं है। मैक्सवेल ने आवेश की अवधारणा का प्रयोग नहीं किया। मैक्सवेल द्वारा यहाँ प्रयुक्त $E$ की परिभाषा स्पष्ट नहीं है। वे विद्युत-प्रेरक बल शब्द का प्रयोग करते हैं। उन्होंने फैराडे की विद्युत-संवेदी अवस्था $A$ से कार्य किया, जिसे वे अपने भंवर सागर में संवेग मानते थे। मैक्सवेल के लेखों में विद्युत आवेश के सबसे निकट का शब्द जो हम खोज सकते हैं, वह है मुक्त विद्युत का घनत्व, जो उनके आणविक भंवरों के ईथर माध्यम के घनत्व को संदर्भित करता प्रतीत होता है और जो संवेग $A$ को जन्म देता है। मैक्सवेल का मानना था कि $A$ एक मूलभूत मात्रा है जिससे विद्युत-प्रेरक बल व्युत्पन्न किया जा सकता है।

यहां दिए गए समीकरण में वह जानकारी निहित है जिसे हम आजकल $E$ कहते हैं, जिसे आज स्केलर और वेक्टर पोटेंशियल के संदर्भ में व्यक्त किया जा सकता है।

इस तथ्य के आधार पर कि E को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है, यह आधुनिक मैक्सवेल के चार समीकरणों में से एक, मैक्सवेल-फैराडे समीकरण के समतुल्य है।
हालांकि लोरेंत्ज़ बल की उत्पत्ति मूल रूप से मैक्सवेल के आठ समीकरणों के समूह में हुई थी, लेकिन इसे अब "मैक्सवेल के समीकरणों" में से एक नहीं माना जाता है, जैसा कि वर्तमान में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है (अर्थात, जैसा कि हेविसाइड द्वारा पुनर्परिभाषित किया गया है)। यह अब मैक्सवेल के समीकरणों के साथ एक अलग और आवश्यक नियम के रूप में मौजूद है।

लोरेंट्ज़ बल का महत्व

आधुनिक मैक्सवेल के समीकरण बताते हैं कि विद्युत आवेशित कण और वस्तुएँ किस प्रकार विद्युत और चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करते हैं, वहीं लोरेंत्ज़ बल का नियम विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों की उपस्थिति में गतिमान बिंदु आवेश q पर लगने वाले बल का वर्णन करके इस चित्र को पूर्ण करता है। लोरेंत्ज़ बल का नियम बिंदु आवेश पर E और B के प्रभाव का वर्णन करता है, लेकिन ये विद्युत चुम्बकीय बल संपूर्ण चित्र नहीं हैं। आवेशित कण संभवतः अन्य बलों, विशेष रूप से गुरुत्वाकर्षण और नाभिकीय बलों से जुड़े होते हैं। इस प्रकार, मैक्सवेल के समीकरण अन्य भौतिक नियमों से अलग नहीं हैं, बल्कि आवेश और धारा घनत्वों के माध्यम से उनसे जुड़े हुए हैं। लोरेंत्ज़ नियम के प्रति बिंदु आवेश की प्रतिक्रिया एक पहलू है; धाराओं और आवेशों द्वारा E और B का उत्पन्न होना दूसरा पहलू है।
वास्तविक पदार्थों में, लॉरेंट्ज़ बल आवेशित कणों के व्यवहार का वर्णन करने के लिए सिद्धांत और गणना दोनों ही दृष्टियों से अपर्याप्त है। किसी पदार्थ माध्यम में आवेशित कण E और B क्षेत्रों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं और इन क्षेत्रों को उत्पन्न भी करते हैं। आवेशों की समय और स्थानिक प्रतिक्रिया निर्धारित करने के लिए जटिल परिवहन समीकरणों को हल करना आवश्यक है, उदाहरण के लिए, बोल्ट्ज़मैन समीकरण, फोकर-प्लैंक समीकरण या नेवियर-स्टोक्स समीकरण। उदाहरण के लिए, चुंबक जलगतिकी, द्रव गतिकी, विद्युत जलगतिकी, अतिचालकता, तारकीय विकास देखें। इन विषयों से निपटने के लिए एक संपूर्ण भौतिक तंत्र

विकसित हो चुका है। उदाहरण के लिए, ग्रीन-कुबो संबंध और ग्रीन का फलन (बहु-पिंड सिद्धांत) देखें।
हालांकि कोई यह सुझाव दे सकता है कि ये सिद्धांत केवल "बिंदु कणों" के बड़े समूहों से निपटने के लिए बनाए गए अनुमान हैं, लेकिन शायद एक गहरा परिप्रेक्ष्य यह है कि आवेश-युक्त कण गुरुत्वाकर्षण, या परमाणु बलों, या सीमा शर्तों जैसे बलों पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
62
"... क्वाड्रिलियन..."
क्वाड्रिलियन का अर्थ इन दो संख्याओं में से कोई भी हो सकता है:
1,000,000,000,000,000 (एक हजार मिलियन मिलियन; 1015; SI उपसर्ग पेटा) - अंग्रेजी भाषा के उपयोग में तेजी से आम होता जा रहा अर्थ।
1,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000 (1024; SI उपसर्ग योट्टा) - अंग्रेजी भाषा के प्रयोग में यह अर्थ तेजी से दुर्लभ होता जा रहा है।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
198

63

"...आयु और अवधि निर्धारित करने के लिए उत्पत्ति के बिंदु।"

"अभी तक वैज्ञानिकों को पृथ्वी की चट्टानों से सीधे पृथ्वी की सटीक आयु निर्धारित करने का कोई तरीका नहीं मिला है, क्योंकि पृथ्वी की सबसे पुरानी चट्टानें प्लेट टेक्टोनिक्स की प्रक्रिया द्वारा पुनर्चक्रित और नष्ट हो चुकी हैं। यदि पृथ्वी की कोई भी प्रारंभिक चट्टानें अपनी मूल अवस्था में बची हैं, तो वे अभी तक नहीं मिली हैं। फिर भी, वैज्ञानिकों ने सौर मंडल की संभावित आयु निर्धारित करने और पृथ्वी की आयु की गणना करने में सफलता प्राप्त की है, यह मानकर कि पृथ्वी और सौर मंडल के बाकी ठोस पिंड एक ही समय में बने थे और इसलिए, उनकी आयु समान है।"

पृथ्वी और चंद्रमा की चट्टानों तथा उल्कापिंडों की आयु का निर्धारण चट्टानों और खनिजों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले तत्वों के दीर्घ-जीवित रेडियोधर्मी समस्थानिकों के क्षय द्वारा किया जाता है, जो 700 मिलियन से लेकर 100 बिलियन वर्षों से अधिक की अर्धायु के साथ अन्य तत्वों के स्थिर समस्थानिकों में परिवर्तित होते हैं। भौतिकी पर आधारित ये आयु निर्धारण तकनीकें, जिन्हें सामूहिक रूप से रेडियोमेट्रिक डेटिंग के रूप में जाना जाता है, उस समय को मापने के लिए उपयोग की जाती हैं जब किसी चट्टान को अंतिम बार पिघलाया गया था या उसमें इतनी हलचल हुई थी कि उसके रेडियोधर्मी तत्व पुनः समरूप हो गए थे।

संदर्भ: http://pubs.usgs.gov/gip/geotime/age.html

64

"...भौतिक ब्रह्मांड स्वयं कई अन्य अलग-अलग ब्रह्मांडों के अभिसरण और एकीकरण से बना है..."

सृष्टि की कथा एक अलौकिक पौराणिक-धार्मिक कहानी या व्याख्या है जो मानवता, पृथ्वी, जीवन और ब्रह्मांड (ब्रह्मांड की उत्पत्ति) की शुरुआत का वर्णन करती है, आमतौर पर एक सर्वोच्च सत्ता द्वारा जानबूझकर की गई "सृष्टि" के रूप में। सृष्टि के कई वृत्तांतों में व्यापक रूप से समान विषय होते हैं। सामान्य विषयों में आदिम अराजकता से संसार की वस्तुओं का

विखंडन; माता और पिता देवताओं का पृथक्करण; अनंत और शाश्वत सागर से भूमि का उद्भव; या शून्य से सृष्टि (लैटिन: कुछ भी नहीं से) शामिल हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
65
"...ऊर्जा और रूपों का सृजन किया जा सकता है, लेकिन उन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता..."
भौतिकी में, ऊर्जा संरक्षण का नियम कहता है कि किसी भी पृथक प्रणाली में ऊर्जा की कुल मात्रा स्थिर रहती है, लेकिन इसे पुनः उत्पन्न नहीं किया जा सकता है, हालांकि यह अपना रूप बदल सकती है, उदाहरण के लिए घर्षण गतिज ऊर्जा को ऊष्मीय ऊर्जा में बदल देता है। ऊष्मागतिकी में, ऊष्मागतिकी का पहला नियम ऊष्मागतिक प्रणालियों के लिए ऊर्जा संरक्षण का कथन है, और यह ऊर्जा संरक्षण का अधिक व्यापक संस्करण है। संक्षेप में, ऊर्जा संरक्षण का नियम कहता है कि ऊर्जा को न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है, इसे केवल एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
66
"...जादू-टोना, तंत्र-मंत्र और सम्मोहन की कहानियाँ, परियों की कहानियाँ और पौराणिक कथाएँ ऐसी ही बातों का जिक्र करती हैं..."
जादू, जिसे कभी-कभी टोना-टोटका भी कहा जाता है, एक वैचारिक प्रणाली है जो रहस्यमय, अलौकिक या अतिप्राकृतिक साधनों के माध्यम से प्राकृतिक दुनिया (घटनाओं, वस्तुओं, लोगों और भौतिक घटनाओं सहित) को नियंत्रित करने की मानवीय क्षमता का दावा करती है। यह शब्द उस व्यक्ति द्वारा अपनाई जाने वाली प्रथाओं और विभिन्न घटनाओं की व्याख्या करने वाली मान्यताओं को भी संदर्भित कर सकता है।
199

घटनाओं और परिघटनाओं को इसी तरह के शब्दों में परिभाषित किया जाता है। कई संस्कृतियों में, जादू वैज्ञानिक और धार्मिक अवधारणात्मक प्रणालियों के दबाव में और उनके साथ प्रतिस्पर्धा में रहता है।

जादू-टोने में विश्वास रखने वाले लोग मानते हैं कि यह निम्नलिखित बुनियादी सिद्धांतों में से एक या अधिक के आधार पर काम कर सकता है:

•

ऐसी प्राकृतिक शक्तियाँ जिन्हें विज्ञान वर्तमान में पता नहीं लगा सकता, और वास्तव में शायद कभी पता ही न लगा पाए। कहा जाता है कि ये जादुई शक्तियाँ प्रकृति की चार मूलभूत शक्तियों - गुरुत्वाकर्षण, विद्युत चुंबकत्व, प्रबल बल और दुर्बल बल - के अतिरिक्त और उनके साथ-साथ मौजूद हैं।

•

इन काल्पनिक प्राकृतिक शक्तियों के समान आत्माओं का हस्तक्षेप, लेकिन उनकी अपनी चेतना और बुद्धि होती है। आत्माओं में विश्वास करने वाले लोग अक्सर अनेक प्रकार के प्राणियों के एक संपूर्ण ब्रह्मांड का वर्णन करते हैं, जो कभी-कभी एक पदानुक्रम में संगठित होते हैं।

एलेस्टर क्रॉली ने मैजिक शब्द की वर्तनी को प्राथमिकता दी और इसे "इच्छा के अनुरूप परिवर्तन लाने का विज्ञान और कला" के रूप में परिभाषित किया। इसमें उन्होंने इच्छा के "साधारण" कार्यों के साथ-साथ अनुष्ठानिक जादू को भी शामिल किया। मैजिक इन थ्योरी एंड प्रैक्टिस के अध्याय XIV में क्रॉली कहते हैं:

"जादुई क्रिया क्या है? इसे प्रकृति में होने वाली किसी भी घटना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो इच्छाशक्ति द्वारा घटित होती है। हमें अपनी परिभाषा से आलू उगाना या बैंकिंग को बाहर नहीं रखना चाहिए। आइए एक बहुत ही सरल जादुई क्रिया का उदाहरण लें: एक आदमी का अपनी नाक साफ करना।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

"...वे अन्य आईएस-बीई को गुलाम बनाकर पकड़ लेंगे..."
अंग्रेजी भाषा में 'दास' शब्द की उत्पत्ति मध्य अंग्रेजी के 'sclave' से हुई है, जो पुराने फ्रांसीसी शब्द 'esclave', मध्यकालीन लैटिन शब्द 'sclavus', प्रारंभिक ग्रीक शब्द 'sklabos' से आया है, जिसका अर्थ है स्लाव मूल के लोग; यह पुराने रूसी शब्द 'Slovene' से मिलता-जुलता है, जो एक पूर्वी स्लाव जनजाति थी। मूल रूप से 'sclavus' शब्द पूर्वी और मध्य यूरोप के स्लाव लोगों को संदर्भित करता था, क्योंकि इनमें से कई लोगों को ओटो द ग्रेट और उनके उत्तराधिकारियों द्वारा बंदी बनाकर दास के रूप में बेच दिया गया था। 'दास' के लिए पूर्व लैटिन शब्द 'servus' था (अंग्रेजी शब्द 'serf' से तुलना करें)।
दास प्रथा के प्रमाण लिखित अभिलेखों से भी पुराने हैं। यह लगभग सभी संस्कृतियों और महाद्वीपों में पाई जाती है। दास प्रथा के प्रमाण मेसोपोटामिया के हम्मुराबी संहिता (लगभग 1800 ईसा पूर्व) जैसे प्राचीन अभिलेखों में मिलते हैं, जिसमें इसे एक स्थापित संस्था के रूप में वर्णित किया गया है। एक महत्वपूर्ण अपवाद फारस में 500 ईसा पूर्व के अचमेनिद साम्राज्य के शासनकाल में देखने को मिला। कुछ प्राचीन और आधुनिक संस्कृतियों में महिलाओं से जबरन श्रम करवाना भी दास प्रथा के अंतर्गत आता है। इस संदर्भ में, दास प्रथा में यौन सेवाएं भी शामिल हैं।
ऐतिहासिक रूप से, अधिकांश दासों को युद्धों में पकड़ा जाता था या छिटपुट छापों में अपहरण कर लिया जाता था, लेकिन कुछ लोगों को उनके माता-पिता द्वारा या स्वयं उनके द्वारा अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में जीवित रहने के साधन के रूप में गुलामी में बेच दिया जाता था। अधिकांश दास जन्म से ही गुलाम होते थे, क्योंकि उनके माता-पिता गुलाम होते थे। प्राचीन युद्धों के परिणामस्वरूप अक्सर कैदियों और उनके परिवारों को गुलामी में डाल दिया जाता था, जिन्हें या तो मार दिया जाता था, फिरौती देकर छुड़ाया जाता था या गुलाम के रूप में बेच दिया जाता था। कैदियों को अक्सर पकड़ने वालों की संपत्ति माना जाता था और उन्हें युद्ध की लूट के रूप में देखा जाता था। गुलामी शायद मूल रूप से उन लोगों को मार डालने की तुलना में अधिक मानवीय थी जो मुक्त होने पर वापस लड़ने के लिए लौट आते, लेकिन इसके परिणामस्वरूप लोगों के कुछ विशेष समूहों का व्यापक रूप से दासत्व हो गया। पकड़े गए लोग कभी-कभी अपने गुलाम बनाने वालों से जातीयता, राष्ट्रीयता, धर्म या नस्ल में भिन्न होते थे,

लेकिन अक्सर वे पकड़ने वालों के समान ही होते थे। किसी क्षेत्र का प्रमुख समूह कैदियों को पकड़कर उन्हें गुलाम बना सकता था और उन्हें उसी भाग्य का सामना करने का बहुत कम डर होता था। यह संभावना हमेशा बनी रहती थी कि

भाग्य का उलटफेर, जैसा कि सेनेका ने रोमन साम्राज्य के चरम पर चेतावनी दी थी, जब शक्तिशाली राष्ट्र आपस में लड़ते थे, तो कोई भी खुद को गुलाम पा सकता था।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
68
"...क्षुद्रग्रह बेल्ट..."
क्षुद्रग्रह पेटी सौर मंडल का वह क्षेत्र है जो लगभग मंगल और बृहस्पति ग्रहों की कक्षाओं के बीच स्थित है। इसमें कई अनियमित आकार के पिंड हैं जिन्हें क्षुद्रग्रह या लघु ग्रह कहा जाता है। मुख्य पेटी के आधे से अधिक द्रव्यमान में चार सबसे बड़े पिंड समाहित हैं: सेरेस, 4 वेस्टा, 2 पलास और 10 हाइगिया। इन सभी का औसत व्यास 400 किमी से अधिक है, जबकि सेरेस, मुख्य पेटी का एकमात्र बौना ग्रह, लगभग 950 किमी व्यास का है। शेष पिंड धूल के कण के आकार तक छोटे हैं। क्षुद्रग्रहों का पदार्थ इतना विरल रूप से वितरित है कि कई मानवरहित अंतरिक्ष यान बिना किसी घटना के इससे गुजर चुके हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
69
"... बिग डिपर तारामंडल..."
"उर्सा मेजर के भीतर, बिग डिपर के तारों को कटोरे से लेकर हैंडल तक लगातार ग्रीक वर्णमाला क्रम में बायर पदनाम प्राप्त हैं।"
उचित नाम
बायर आभासी दूरी पदनाम परिमाण (लीटर वर्ष)
दुभे α 124
यूएमए 1.8
एम β युग यूएम 2.4 79 के ए
फ़ेकडा γ यूएमए 2.4 84 मेग्रेज़ δ 81
यूएमए 3.3
अली ε ओथ यूएम 1.8 81

ए

Mi ζ zar UM 2.1 78

ए

Al η kai UM 1.9 101 d a

मिज़ार के पास अल्कोर नाम का एक तारा है और इन्हें अनौपचारिक रूप से घोड़ा और सवार के नाम से जाना जाता है। 4.1 की चमक वाला अल्कोर आमतौर पर बिना किसी उपकरण के आसानी से देखा जा सकता है, लेकिन मिज़ार के निकट होने के कारण इसे स्पष्ट रूप से देखना कठिन हो जाता है, और यह दृष्टि की पारंपरिक परीक्षा के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। 17 वीं शताब्दी में, मिज़ार को स्वयं एक द्विआधारी तारा प्रणाली के रूप में खोजा गया था।

201

दूरबीन द्वारा खोजा गया पहला द्विआधारी तारामंडल। इसके घटक तारों को मिज़ार ए और मिज़ार बी के नाम से जाना जाता है। 1889 में, मिज़ार ए को वास्तव में एक द्विआधारी तारामंडल के रूप में खोजा गया, जो स्पेक्ट्रोस्कोपी द्वारा खोजा गया पहला द्विआधारी तारामंडल था, और बाद में यह पता चला कि मिज़ार बी भी एक द्विआधारी तारामंडल है, कुल मिलाकर मिज़ार वर्तमान में कम से कम एक चतुर्भुज तारामंडल प्रणाली के रूप में जाना जाता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

70

"...ऑस्ट्रिया के आर्चड्यूक का शव..."

फ्रांज फर्डिनेंड (18 दिसंबर, 1863 - 28 जून, 1914) ऑस्ट्रिया-एस्टे के आर्कड्यूक, ऑस्ट्रिया के शाही राजकुमार और हंगरी और बोहेमिया के शाही राजकुमार थे, और 1896 से अपनी मृत्यु तक, ऑस्ट्रिया-हंगरी के सिंहासन के संभावित उत्तराधिकारी थे। साराजेवो में उनकी हत्या ने ऑस्ट्रिया द्वारा युद्ध की घोषणा को प्रेरित किया। इसके कारण ऑस्ट्रिया-हंगरी के सहयोगी देशों (केंद्रीय शक्तियां) और सर्बिया के सहयोगी देशों (एंटेन्टे शक्तियां) ने एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी, जिससे प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ।

1889 में, फ्रांज फर्डिनेंड के जीवन में एक नाटकीय परिवर्तन आया। उनके चचेरे भाई युवराज रुडोल्फ ने मेयरलिंग स्थित अपने शिकारगाह में आत्महत्या कर ली, जिससे फ्रांज फर्डिनेंड के पिता, आर्चड्यूक कार्ल लुडविग, सिंहासन के उत्तराधिकारी बन गए। हालांकि, युवराज की मृत्यु के कुछ दिनों बाद ही उनके पिता ने अपने उत्तराधिकार के अधिकार का त्याग कर दिया। इसके बाद, फ्रांज फर्डिनेंड को उत्तराधिकारी के रूप में तैयार किया जाने लगा।

28 जून, 1914 को लगभग सुबह 11:15 बजे, ऑस्ट्रो-हंगेरियन प्रांत बोस्निया और हर्ज़ेगोविना की राजधानी साराजेवो में, यंग बोस्निया के सदस्य और द ब्लैक हैंड (Црна рука/Tsrna Ruka) द्वारा संगठित कई (कुछ) हत्यारों में से एक गैवरिलो प्रिंसिप द्वारा फ्रांज फर्डिनेंड और

उनकी पत्नी की हत्या कर दी गई। साराजेवो हत्याकांड के नाम से जानी जाने वाली इस घटना ने प्रथम विश्व युद्ध को जन्म दिया।
इससे पहले फ्रांज और सोफी पर बम से हमला हुआ था। बम उन्हें तो नहीं लगा, लेकिन कई नागरिक घायल हो गए। फ्रांज और सोफी दोनों ने अस्पताल में सभी घायलों को देखने जाने की जिद की। इसी वजह से प्रिंसिप ने उन्हें देख लिया और सोफी के पेट में गोली मार दी। फ्रांज की गर्दन की नस में गोली लगी थी और जब गवाह उसकी मदद के लिए पहुंचे तब तक वह जीवित था, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी; कुछ ही मिनटों में उसकी मौत हो गई। हत्याओं के साथ-साथ हथियारों की होड़, राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद, सैन्यवाद और गठबंधन प्रणाली ने प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत में योगदान दिया, जो फ्रांज फर्डिनेंड की मृत्यु के दो महीने से भी कम समय बाद ऑस्ट्रिया-हंगरी द्वारा सर्बिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा के साथ शुरू हुआ।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
71
..."बल क्षेत्र"...
मूल रूप से माइकल फैराडे द्वारा विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों के व्यवहार के लिए एक सहज प्रतिमान, लेकिन सैद्धांतिक संरचना प्रदान करने के लिए गढ़ा गया, बल क्षेत्र शब्द बल की उन रेखाओं को संदर्भित करता है जो एक वस्तु ("स्रोत वस्तु") दूसरी वस्तु या अन्य वस्तुओं के समूह पर लगाती है। उदाहरण के लिए, एक वस्तु द्रव्यमान कण या विद्युत या चुंबकीय आवेश हो सकती है। यूक्लिडियन ज्यामिति के मामले में, रेखाएँ सीधी होना आवश्यक नहीं है, बल्कि घुमावदार भी हो सकती हैं। फैराडे ने वस्तुओं के बीच इन सैद्धांतिक संबंधों को बल रेखाएँ कहा क्योंकि वस्तुएँ इस रेखा के अनुदिश स्रोत वस्तु से सबसे सीधे जुड़ी होती हैं।
202

बल क्षेत्रों के उदाहरण:

•

•

•

•

•

पृथ्वी की सतह के निकट स्थित स्थानीय न्यूटनियन गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में आमतौर पर एक दिशा में इंगित करने वाले सदिशों का एकसमान क्रम होता है—नीचे की ओर, सतह की ओर; इसके बल क्षेत्र को कार्तीय सदिश द्वारा दर्शाया जाता है, जहाँ सतह से दूर की दिशा में इंगित करता है, और $m$ द्रव्यमान को तथा $g$ गुरुत्वाकर्षण के कारण त्वरण को दर्शाता है। वैश्विक गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में गुरुत्वाकर्षण केंद्र की ओर इंगित करने वाले सदिशों का एक गोलाकार क्रम होता है। गोलाकार निर्देशांकों में इसके शास्त्रीय बल क्षेत्र को सदिश द्वारा दर्शाया जाता है, जो न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण नियम का ही रूप है, जिसमें त्रिज्यीय इकाई सदिश गोले के मूल (पृथ्वी के केंद्र) की ओर इंगित करता है।

संरक्षी विद्युत क्षेत्र में विद्युत आवेश (या विद्युत आवेशों का एक समूह) स्रोत वस्तु होता है। बिंदु आवेशों के मामले में, बल क्षेत्र को द्वारा दर्शाया जाता है, जहाँ स्रोत आवेश और दूसरे आवेश के बीच की सबसे सीधी रेखा को दर्शाने वाला स्थिति सदिश है।

एक स्थिर चुंबकीय क्षेत्र में एक चुंबकीय आवेश (एक चुंबकीय मोनोपोल या एक आवेश वितरण) होता है।

विद्युत चुम्बकीय बल को लोरेंत्ज़ बल के सूत्र द्वारा दर्शाया जाता है, जो एसआई इकाइयों में इस प्रकार है: "

-- संदर्भ: Wikipedia.org



"इलेक्ट्रोशॉक..."

बिजली के झटके की कहानी 1938 में शुरू हुई, जब इतालवी मनोचिकित्सक यूगो सेर्लेटी रोम के एक बूचड़खाने में सूअरों को काटने की विधि से कुछ सीखने की उम्मीद में गए। सेर्लेटी के शब्दों में, "जैसे ही सूअरों को [बिजली के] चिमटे से पकड़ा गया, वे बेहोश हो गए, अकड़ गए, और फिर कुछ सेकंड बाद ऐंठन से कांपने लगे... बेहोशी की इस अवधि (मिर्गी के दौरे) के दौरान, कसाई ने जानवरों को चाकू मारकर आसानी से उनका खून निकाला..."
"इस बिंदु पर मुझे लगा कि हम मनुष्य पर प्रयोग करने का जोखिम उठा सकते हैं, और मैंने अपने सहायकों को एक उपयुक्त विषय के चयन के लिए सतर्क रहने का निर्देश दिया।"
सेर्लेटी का पहला शिकार स्थानीय पुलिस ने मुहैया कराया था - एक ऐसा व्यक्ति जिसे सेर्लेटी ने "होश में और पूरी तरह से सचेत" बताया था। पहले विस्फोट में बेहोश हुए बिना बच जाने के बाद, पीड़ित ने सेर्लेटी को दूसरे विस्फोट के बारे में बात करते हुए सुना, जिसमें अधिक वोल्टेज का इस्तेमाल किया जाएगा। उसने सेर्लेटी से विनती की, "नॉन उना सेकेंडा! मोर्टिफेरेल" ("एक और नहीं! यह मुझे मार डालेगा!")
अपने सहायकों की आपत्तियों को अनसुना करते हुए, सेर्लेटी ने वोल्टेज और अवधि बढ़ा दी और दोबारा गोली चलाई। अपने शिकार को बिजली से प्रेरित "सफल" ऐंठन पहुँचाकर, यूगो सेर्लेटी ने सूअर वध करने की तकनीकों को मनुष्यों पर लागू किया और मनोचिकित्सा की सबसे क्रूर तकनीकों में से एक का निर्माण किया।
*विद्युत के झटके को इलेक्ट्रो-कन्वल्सिव "थेरेपी" या उपचार (ईसीटी), इलेक्ट्रोशॉक थेरेपी या इलेक्ट्रिक शॉक ट्रीटमेंट (ईएसटी), इलेक्ट्रोस्टिम्यूलेशन और इलेक्ट्रोलाइटिक थेरेपी (ईएलटी) भी कहा जाता है। ये सभी एक ही प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त नरम शब्दों का प्रयोग हैं: मस्तिष्क में बिजली का तीव्र झटका भेजकर व्यवहार में परिवर्तन लाना। (संदर्भ: http://www.sntp.net/ect/ect3.htm)
आजकल इलेक्ट्रोशॉक थेरेपी (ईसीटी) का उपयोग अक्सर गंभीर अवसाद के उपचार के लिए किया जाता है, जो अन्य उपचारों से ठीक नहीं होता है, और इसका उपयोग उन्माद, कैटाटोनिया, सिज़ोफ्रेनिया और अन्य विकारों के उपचार में भी किया जाता है। इसे पहली बार एक उपचार पद्धति के रूप में व्यापक रूप से उपयोग में लाया गया था।

1940 और 50 के दशक में उपचार का प्रचलन था। आज, विश्व स्तर पर अनुमानित 10 लाख लोग हर साल ईसीटी प्राप्त करते हैं, आमतौर पर 6-12 उपचारों के एक कोर्स में जो सप्ताह में 2 या 3 बार दिए जाते हैं।

इलेक्ट्रोकन्वल्सिव थेरेपी (ईसीटी) के कुछ दुष्प्रभाव होते हैं, जिनमें उपचार के दौरान भ्रम और स्मृति हानि शामिल हैं। ईसीटी से स्थायी स्मृति हानि भी हो सकती है। ईसीटी का दीर्घकालिक स्मृति पर पड़ने वाला प्रभाव ही इसके उपयोग को लेकर चिंता का मुख्य कारण है। ईसीटी के तात्कालिक प्रभावों में स्मृतिलोप भी शामिल है।

पंजीकृत नर्स बारबरा सी. कोडी ने वाशिंगटन पोस्ट को लिखे एक पत्र में बताया कि 1983 में मुझे कराए गए 13 बाह्य रोगी ईसीटी (इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राम) से मेरा जीवन हमेशा के लिए बदल गया। शॉक 'थेरेपी' ने मुझे पूरी तरह से और स्थायी रूप से विकलांग बना दिया। ईईजी (इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राम) से मेरे मस्तिष्क को हुए व्यापक नुकसान की पुष्टि होती है। मेरे जीवन के 15 से 20 साल पूरी तरह से मिट गए; केवल कुछ अंश ही याद आए हैं। मुझे अल्पकालिक स्मृति हानि और गंभीर संज्ञानात्मक कमियां भी हो गईं। शॉक 'थेरेपी' ने मेरा अतीत, मेरी कॉलेज की शिक्षा, मेरी संगीत प्रतिभा, यहां तक कि यह ज्ञान भी छीन लिया कि मेरे बच्चे वास्तव में मेरे बच्चे हैं।

अमेरिकी लेखक अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने 1961 में मेनिंगर क्लिनिक में इलेक्ट्रिक शॉक उपचार के कुछ समय बाद आत्महत्या कर ली थी। कहा जाता है कि उन्होंने अपने जीवनीकार से कहा था, "खैर, मेरे दिमाग को बर्बाद करने और मेरी याददाश्त, जो मेरी पूंजी है, को मिटाने और मुझे इस पेशे से बाहर करने का क्या मतलब है? यह एक शानदार इलाज था, लेकिन हमने मरीज को खो दिया..."

-- संदर्भ: Wikipedia.org

73

"...विद्युत वोल्टेज..."

आम जनता घरेलू मुख्य सर्किट (100-250 वोल्ट एसी) को, जो उनके द्वारा सामान्यतः सामना किए जाने वाले उच्चतम वोल्टेज होते हैं, उच्च वोल्टेज मान सकती है। उदाहरण के लिए,

हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग उपकरण स्थापित करने वाले किसी व्यक्ति को 24 वोल्ट नियंत्रण सर्किट स्थापित करने का लाइसेंस प्राप्त हो सकता है, लेकिन उसे उपकरण के 240 वोल्ट पावर सर्किट को जोड़ने की अनुमति नहीं हो सकती है।
लगभग 50 वोल्ट से अधिक वोल्टेज आमतौर पर किसी परिपथ के दो बिंदुओं को छूने वाले मनुष्य के शरीर में खतरनाक मात्रा में धारा प्रवाहित कर सकता है।
50 वोल्ट से अधिक वोल्टेज शरीर के ऊतकों में विद्युत धारा उत्पन्न कर सकता है, यदि वह धारा छाती से होकर गुजरती है। विद्युत चुम्बकीय झटके का खतरा मुख्य रूप से सूखी त्वचा की कम चालकता पर निर्भर करता है। यदि त्वचा गीली हो, घाव हों, या वोल्टेज उन इलेक्ट्रोडों पर लगाया जाए जो त्वचा में प्रवेश करते हैं, तो 40 वोल्ट से कम वोल्टेज के संपर्क में आने पर भी जानलेवा हो सकता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
74
"...सम्मोहन के बाद के सुझाव..."
सम्मोहन की अवस्था से बाहर आने के बाद किसी व्यक्ति को किसी विशेष प्रकार के व्यवहार या विचार के प्रति प्रेरित करने की क्षमता। सम्मोहनकर्ता द्वारा सम्मोहन के बाद के सुझाव दिए जाते हैं, जिनमें समय सीमा भी शामिल हो सकती है। सम्मोहन के अधीन व्यक्ति में धारणा या व्यवहार के बदले हुए पैटर्न को "प्रोग्राम" किया जा सकता है। घटनाओं के कुछ क्रम सम्मोहन के बाद के पैटर्न में प्रवेश करने या उससे बाहर निकलने के लिए ट्रिगर के रूप में निर्धारित किए जा सकते हैं। व्यवहार के ये पैटर्न अभ्यस्त प्रतिवर्तों के समान होते हैं, हालांकि इन्हें व्यवहार परिवर्तन की पारंपरिक तकनीकों के बिना ही दिया जाता है।
204

उदाहरण:
पूरी तरह होश में आने के बाद रोगी को किसी भी संख्या, रंग, वस्तु आदि को अनदेखा करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। सुझाव एक विशेष शब्द से शुरू होता है और एक अलग शब्द से समाप्त होता है। रोगी को अनदेखा की जाने वाली वस्तु के बारे में पता नहीं होगा और न ही वह उसका उपयोग करेगा। यदि उसे नीले रंग को अनदेखा करने के लिए कहा जाए, तो वह कह सकता है कि समुद्र का रंग लाल है। यदि किसी संख्या - जैसे कि 5 - को अनदेखा करने के लिए कहा जाए, तो रोगी अपनी उंगलियां गिनकर ग्यारह तक गिन सकता है। इस प्रकार रोगी 1-2-3-4-6-7-8-9-10-11 गिनता है।
विभिन्न प्रकार के व्यवहार पैटर्न उत्पन्न किए जा सकते हैं, जैसे कि रोगी को किसी विशेष शब्द को ज़ोर से बोलने पर एक निश्चित वाक्य दोहराने के लिए मजबूर करना। रोगी इस क्रिया के बारे में पूरी तरह से अवगत होता है, लेकिन इसे करने से रोकना बहुत मुश्किल, बल्कि लगभग असंभव होता है। जब तक रोगी निर्धारित क्रिया नहीं कर लेता, तब तक उसे पसीना आना, तालमेल की कमी और एकाग्रता का पूर्ण अभाव जैसी समस्याएं होती हैं।
किसी वस्तु को अदृश्य बनाया जा सकता है और सुझाव की अवधि के दौरान उसे पूरी तरह से अनदेखा और टाला जा सकता है। कॉफी मग को अदृश्य बनाकर प्रयोग किए जा सकते हैं। यदि मग को किसी लिखे हुए पृष्ठ के ऊपर रखा जाए, तो रोगी केवल वही भाग पढ़ेगा जो मग से ढका नहीं है। भले ही वाक्य अर्थहीन लगें, संदिग्ध को कुछ भी गलत नहीं लगेगा। किसी वस्तु को अदृश्य बनाना और फिर भी उसे स्पर्शनीय बनाए रखना कठिन है। आमतौर पर वस्तु को सभी इंद्रियों द्वारा पूरी तरह से अनदेखा कर दिया जाता है। इस प्रकार, उदाहरण में मग का अस्तित्व कथित तौर पर नहीं होगा, भले ही रोगी उसे छू रहा हो।
स्टेज सम्मोहनकर्ता कभी-कभी ऐसे शो करते हैं जिनमें वे प्रतिभागियों को सम्मोहित करके उन्हें किसी सेलिब्रिटी की तरह सोचने और ठीक उसी तरह व्यवहार करने के लिए मजबूर करते हैं। जॉन मोहल, जो एक स्टेज सम्मोहनकर्ता और नेशनल गिल्ड ऑफ हिप्नोटिस्ट्स के सदस्य हैं, कहते हैं कि उन्होंने अक्सर लोगों को सम्मोहित करके उन्हें किसी और का रूप धारण करवाया है! मोहल ने गौर किया कि वयस्क अक्सर सेलिब्रिटी बन जाते थे, जबकि

मिडिल या हाई स्कूल के छात्र आमतौर पर कुछ अधिक रचनात्मक या कल्पनाशील बन जाते थे।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

75

"...अछूतों..."

भारतीय जाति व्यवस्था में, दलित, जिसे अक्सर अछूत या बहिष्कृत कहा जाता है, वह व्यक्ति होता है जिसका पारंपरिक हिंदू मान्यता के अनुसार कोई वर्ण नहीं होता। वर्ण से तात्पर्य हिंदू मान्यता से है कि अधिकांश मनुष्य पुरुष देवता के शरीर के विभिन्न अंगों से उत्पन्न हुए हैं। जिस अंग से वर्ण उत्पन्न हुआ है, वह व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करता है, जैसे कि विवाह करने का अधिकार और व्यवसाय। दलित वर्ण व्यवस्था से बाहर हैं और ऐतिहासिक रूप से उन्हें सबसे निम्न स्तर के कामों के अलावा कोई अन्य काम करने से वंचित रखा गया है। (हालांकि, निम्न जाति के लोगों और अछूतों के बीच अंतर करना आवश्यक है।) इनमें चमड़ा कारीगर (जिन्हें चमार कहा जाता है), शव संभालने वाले (जिन्हें महार कहा जाता है), गरीब किसान और भूमिहीन मजदूर, मल-मूत्र साफ करने वाले (जिन्हें भंगी या चूरा कहा जाता है), सड़क किनारे हस्तशिल्पकार, लोक कलाकार, सड़क सफाईकर्मी, धोबी आदि शामिल हैं।

परंपरागत रूप से, दक्षिण एशियाई समाज में दलितों को अछूत माना जाता था और उन्हें अपने समुदायों में भी अलग-थलग कर दिया जाता था, यहाँ तक कि उच्च जातियाँ उनकी परछाई से भी बचती थीं। ग्रामीण क्षेत्रों में निजी जीवन में, खान-पान और जल स्रोतों तक पहुँच जैसे धार्मिक अनुष्ठानों में भी दलितों के साथ भेदभाव आज भी मौजूद है। हालाँकि, शहरी क्षेत्रों और सार्वजनिक जीवन में, आवागमन के अधिकार और स्कूलों में प्रवेश के मामलों में यह भेदभाव काफी हद तक समाप्त हो चुका है। कम से कम आध्यात्मिक मामलों में, भेदभाव का सबसे पहला खंडन 16 वीं शताब्दी ईस्वी तक किया गया था।

205

भगवद गीता कहती है कि कोई भी व्यक्ति, चाहे उसकी परिस्थितियाँ कैसी भी हों, ज्ञान प्राप्ति से वंचित नहीं है। भारत में अनुमानित 16 करोड़ दलित हैं।
संदर्भ: Wikipedia.org
दलितों के नाम से जाने जाने वाले इन लोगों के खिलाफ मानवाधिकारों का हनन व्यापक है। मुख्यधारा के भारतीय समाचार पत्रों की कुछ चुनिंदा सुर्खियाँ ही इसकी कहानी बयां करती हैं: "फूल तोड़ने पर दलित लड़के को पीट-पीटकर मार डाला गया"; "पुलिस ने तीन दिन तक दलित को प्रताड़ित किया"; "बिहार में दलित 'चुड़ैल' को नग्न अवस्था में घुमाया गया"; "कुरनूल के लॉकअप में दलित की हत्या कर दी गई"; "जातिगत संघर्ष में 7 दलितों को जिंदा जला दिया गया"; "हरियाणा में 5 दलितों की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई"; "दलित महिला के साथ सामूहिक बलात्कार कर उसे नग्न अवस्था में घुमाया गया"; "पुलिस ने भीड़ को दलितों की पीट-पीटकर हत्या करने के लिए उकसाया"।
ह्यूमन राइट्स वॉच की वरिष्ठ शोधकर्ता और 'ब्रोकन पीपल: कास्ट वायलेंस अगेंस्ट इंडियाज अनटचेबल्स' की लेखिका स्मिता नरूला ने कहा, "दलितों को एक ही कुएं से पानी पीने, एक ही मंदिर में जाने, उच्च जाति के लोगों की उपस्थिति में जूते पहनने या चाय की दुकानों में एक ही कप में चाय पीने की अनुमति नहीं है।" ह्यूमन राइट्स वॉच न्यूयॉर्क स्थित एक वैश्विक कार्यकर्ता संगठन है। भारत के अछूतों को सबसे निचले दर्जे के कामों में धकेल दिया गया है और वे उच्च जाति के हिंदुओं द्वारा सार्वजनिक रूप से अपमानित किए जाने, नग्न घुमाए जाने, पीटे जाने और बलात्कार किए जाने के निरंतर भय में जीते हैं, जो उन्हें उनकी जगह पर रखना चाहते हैं। उच्च जाति के मोहल्ले से गुजरना मात्र जानलेवा अपराध है। लगभग 90 प्रतिशत गरीब भारतीय और 95 प्रतिशत निरक्षर भारतीय दलित हैं।
संदर्भ:
http://news.nationalgeographic.com/news/
2003/06/0602_030602_untouchables.html

"...राजनीतिक कैदियों..."

"राजनीतिक कैदी वह व्यक्ति होता है जिसे राजनीतिक गतिविधि में उसकी संलिप्तता के कारण जेल में रखा जाता है या किसी अन्य प्रकार से हिरासत में लिया जाता है, संभवतः घर में नजरबंद रखा जाता है।"
राजनीतिक कैदियों को कानूनी आड़ में गिरफ्तार किया जाता है और उन पर मुकदमा चलाया जाता है, जहां झूठे आपराधिक आरोप, मनगढ़ंत सबूत और अनुचित मुकदमों का इस्तेमाल इस तथ्य को छिपाने के लिए किया जाता है कि व्यक्ति एक राजनीतिक कैदी है। यह उन स्थितियों में आम है जिनकी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकार उल्लंघन और राजनीतिक असंतुष्ट के दमन के रूप में निंदा की जा सकती है। एक राजनीतिक कैदी वह व्यक्ति भी हो सकता है जिसे अनुचित रूप से जमानत देने से इनकार कर दिया गया हो, पैरोल देने से इनकार कर दिया गया हो जबकि समान अपराध के आरोपी कैदी को पैरोल दी जानी चाहिए थी, या न्यायपालिका द्वारा विशेष शक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है।
विशेष रूप से इस दूसरी स्थिति में, किसी व्यक्ति को राजनीतिक कैदी माना जाए या नहीं, यह व्यक्तिपरक राजनीतिक दृष्टिकोण या साक्ष्यों की व्याख्या पर निर्भर हो सकता है। सरकारें आमतौर पर इस बात को खारिज करती हैं कि उन्होंने राजनीतिक कैदियों को हिरासत में रखा है।
उदाहरण:
सोवियत संघ में, संदिग्ध मनोरोग निदानों का इस्तेमाल कभी-कभी राजनीतिक कैदियों को कैद करने के लिए किया जाता था। नाज़ी जर्मनी में, "रात और कोहरे" के कैदी फासीवादी दमन के पहले पीड़ितों में से थे। उत्तर कोरिया में, अगर परिवार के किसी एक सदस्य पर सरकार विरोधी भावना रखने का संदेह होता है, तो पूरे परिवार को जेल में डाल दिया जाता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
77
"...उनके कमांडिंग ऑफिसर ने एक युद्धपोत भेजने का आदेश दिया..."
206

संपादक का नोट: विकिपीडिया डॉट ऑर्ग पर "बैटल क्रूज़र" शब्द का एकमात्र संदर्भ अमेरिकी या ब्रिटिश नौसेना के जहाजों से संबंधित है। एक अन्य रोचक और मनोरंजक संदर्भ इस प्रकार है:
"होनरवर्स, डेविड वेबर द्वारा लिखित सैन्य विज्ञान कथा कहानियों की एक श्रृंखला का अर्ध-आधिकारिक नाम है, जिसमें होनर हैरिंगटन मुख्य किरदार है, जो नेल्सन जैसी नायिका है और सी.एस. फॉरेस्टर की होराटियो हॉर्नब्लोवर पुस्तक श्रृंखला की याद दिलाती है। ये पुस्तकें संयुक्त राज्य अमेरिका में लोकप्रिय हैं और इनके नए संस्करण नियमित रूप से न्यूयॉर्क टाइम्स की बेस्टसेलर सूची में शामिल होते हैं।"
निम्नलिखित सूची ऑनरवर्स के विभिन्न क्षेत्रों में स्टारशिप श्रेणियों को संदर्भित करती है:
ये स्टारशिप श्रेणियां पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ हेवन में स्थित हैं:

• • • • • • • • • • • • • • • • • • • • • • • • •

Cimeterres-class: LAC
कार्यक्रम 13-कक्षा: एलएसी
बास्तोग्ने-श्रेणी: विध्वंसक
शहर-श्रेणी: विध्वंसक
डेसफोर्ज-क्लास: विध्वंसक
फ्रिगेट-श्रेणी: हल्का क्रूजर
कॉन्करर-क्लास: हल्का क्रूज़र
चार्ल्स वेड पोप-श्रेणी: हल्का क्रूजर
ब्रिलियंस-क्लास: हल्का क्रूज़र
मार्स-ए-क्लास: भारी क्रूजर
मार्स-बी-क्लास: भारी क्रूजर
स्किमिटर-श्रेणी: भारी क्रूजर
तलवार-श्रेणी: भारी क्रूज़र
टाइगर-क्लास: बैटलक्रूजर

सरदार-श्रेणी: युद्धपोत
सुल्तान-श्रेणी: युद्धपोत
ट्रायम्फेंट-क्लास: युद्धपोत
नूवो पेरिस-श्रेणी: ड्रेडनॉफ़्ट - औपचारिक रूप से न्यू बोस्टन-श्रेणी रूसो-श्रेणी: ड्रेडनॉफ़्ट माना जाता था
ड्यूक्केस्ने-श्रेणी: सुपरड्रेडनॉउट
अंतरिक्ष-श्रेणी का संप्रभु: पॉड-सुपरड्रेडनॉट
टेमेरायर-क्लास: पॉड-सुपरड्रेडनॉट
एस्ट्रा-क्लास: एलएसी कैरियर
पक्षीशाला-वर्ग: एलएसी वाहक"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
78
"...मंगल ग्रह पर भूमध्य रेखा से कुछ सौ मील उत्तर में, सिडोनिया क्षेत्र में।"
यह बयान एयरल ने 1947 में दिया था। इस क्षेत्र की निम्नलिखित तस्वीरें 1970 के दशक में नासा के उपग्रहों द्वारा नहीं ली गई थीं!
(निम्नलिखित इंटरनेट लिंक कृत्रिम दिखने वाली संरचनाओं के एक परिसर के नक्शे दिखाते हैं जिन्हें कुछ लोग "पिरामिड परिसर", "मंगल ग्रह पर चेहरा" और अन्य भूवैज्ञानिक विशेषताओं के रूप में संदर्भित करते हैं जो मेसोअमेरिकन और मिस्र की पिरामिड सभ्यताओं में पाए जाने वाले प्रतीकों और वास्तुकला के समान हैं। ध्यान दें कि "पिरामिड" और चेहरे की संरचनाएं ऐसी दिखती हैं मानो वे आंशिक रूप से नष्ट हो गई हों! यदि कोई "पुराना"
207

इस स्थान पर स्थित "एम्पायर" बेस, जिसे डोमेन फोर्स के क्रूजर हमले में नष्ट कर दिया गया था, को काफी नुकसान पहुंचा होगा।

http://www.greatdreams.com/cydonia.htm

http://www.qtm.net/~geibdan/cydonia.html

इसके अतिरिक्त, संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के वैज्ञानिकों की एक टीम ने ह्यूस्टन, टेक्सास में हाल ही में आयोजित वार्षिक चंद्र और ग्रह विज्ञान सम्मेलन में बताया कि नासा के मंगल ग्रह की परिक्रमा करने वाले अंतरिक्ष यान मार्स ओडिसी द्वारा ली गई छवियों में गुफाओं के प्रवेश द्वार दिखाई देते हैं जहां आदिम जीवन रूप - "अतीत या वर्तमान सूक्ष्मजीव जीवन" - आश्रय ले सकते थे, और जहां पानी तरल रूप में मौजूद हो सकता था।

रिपोर्ट का और अधिक विस्तृत अध्ययन करने पर पता चलता है कि अंतरिक्ष यान ने वास्तव में दृश्य और अवरक्त दोनों माध्यमों से इन गुफाओं से जुड़ी रहस्यमय, गहरे रंग की गोलाकार संरचनाओं की तस्वीरें लीं - इन संरचनाओं का आकार 100 से 250 मीटर (330 से 825 फीट) तक था। जून 2007 के अंक में इस अनसुनी कहानी को प्रकाशित करते हुए, प्रतिष्ठित पत्रिका साइंटिफिक अमेरिकन ने अब अतिरिक्त जानकारी प्रदान की है: ऐसी सात "फुटबॉल के आकार" की गुफाओं की पहचान की गई; ये 425 फीट गहरी हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

79

"... मन पर नियंत्रण..."

"मन पर नियंत्रण (या "ब्रेनवाशिंग") से तात्पर्य मनोवैज्ञानिक युक्तियों की एक विस्तृत श्रृंखला से है जो किसी व्यक्ति के अपने विचार, व्यवहार, भावनाओं या निर्णयों पर नियंत्रण को समाप्त करने में सक्षम होती हैं। यह अवधारणा सम्मोहन से निकटता से संबंधित है, लेकिन व्यावहारिक दृष्टिकोण में भिन्न है।"

विलियम सार्जेंट ने पावलोव (रूसी शोधकर्ता जिन्होंने कुत्तों पर उद्दीपन-प्रतिक्रिया तंत्र का प्रयोग किया था) के निष्कर्षों को इस बात से जोड़ा कि लोग विश्वास प्रणालियों को कैसे सीखते और आत्मसात करते हैं। अनुकूलित व्यवहार पैटर्न को उत्तेजित तनावों द्वारा बदला जा सकता

है जो कुत्ते की प्रतिक्रिया क्षमता से परे होते हैं, जिससे मूल रूप से एक तरह का मानसिक विघटन हो सकता है। यह तीव्र संकेतों, सामान्य से अधिक लंबे प्रतीक्षा समय, सकारात्मक और नकारात्मक संकेतों के बार-बार आने और कुत्ते की शारीरिक स्थिति में बदलाव, जैसे कि बीमारी के कारण भी हो सकता है। कुत्ते के प्रारंभिक व्यक्तित्व के आधार पर, यह संभवतः एक नई विश्वास प्रणाली को दृढ़ता से अपनाने का कारण बन सकता है। सार्जेंट ने पावलोव के निष्कर्षों को मस्तिष्क-धुलाई की प्रक्रियाओं से भी जोड़ा।

"यद्यपि मनुष्य कुत्ते नहीं हैं, फिर भी उन्हें विनम्रतापूर्वक यह याद रखना चाहिए कि मस्तिष्क की कार्यप्रणाली में वे कुत्तों से कितने मिलते-जुलते हैं, और स्वयं को देवता-तुल्य नहीं समझना चाहिए। उन्हें धार्मिक और सामाजिक समझ तथा तर्कशक्ति प्राप्त है; परन्तु ये सभी क्षमताएँ शारीरिक रूप से मस्तिष्क से जुड़ी हुई हैं। इसलिए मस्तिष्क का दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए, उस पर किसी भी प्रकार का धार्मिक या राजनीतिक रहस्य थोपकर जो तर्कशक्ति को अवरुद्ध करता है, या किसी भी प्रकार के अपरिष्कृत तर्कवाद को थोपकर जो धार्मिक भावना को अवरुद्ध करता है।" (पृष्ठ 274)

मनोवैज्ञानिक मार्गरिट सिंगर ने छह ऐसी स्थितियों का वर्णन किया है जो विचार परिवर्तन के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करती हैं। सिंगर का कहना है कि इन स्थितियों में शारीरिक बल प्रयोग या हिंसा की कोई आवश्यकता नहीं है।

•

पीड़ित को इस बात से अनजान रखें कि क्या हो रहा है और उसे धीरे-धीरे किस तरह बदला जा रहा है।

•
•
•
•
पीड़ित के सामाजिक और/या भौतिक वातावरण को नियंत्रित करें; विशेष रूप से पीड़ित के समय को नियंत्रित करें।
पीड़ित व्यक्ति में व्यवस्थित रूप से शक्तिहीनता की भावना पैदा करना। यह पीड़ितों को उनके सामान्य सामाजिक सहायता समूह से कुछ समय के लिए दूर करके और ऐसे वातावरण में ले जाकर किया जाता है जहां अधिकांश लोग पहले से ही समूह के सदस्य होते हैं।
पीड़ित व्यक्ति समूह के दृष्टिकोण और व्यवहार के आदर्श के रूप में कार्य करते हैं और अपने समूह की भाषा बोलें।
पीड़ितों को उनके मुख्य व्यवसाय से वंचित करना (नौकरी छोड़ना, स्कूल छोड़ना) या आय का स्रोत या उन्हें अपनी आय (या उसका अधिकांश भाग) सौंपने के लिए कहें समूह।
o एक बार जब आप अपने सामान्य सहायता नेटवर्क से वंचित हो जाते हैं, तो आपका आत्मविश्वास कम हो जाता है।
धारणा क्षीण हो जाती है।
जैसे-जैसे आपकी शक्तिहीनता की भावना बढ़ती है, आपका विवेक और निर्णय लेने की क्षमता कम होती जाती है।
दुनिया की समझ कम हो गई है। (वास्तविकता का सामान्य दृष्टिकोण)
अस्थिर)
जब कोई समूह आपके पूर्व दृष्टिकोण पर हमला करता है, तो इससे आपको पीड़ा और आंतरिक कष्ट होता है।

भ्रम की स्थिति; फिर भी आपको इस भ्रम के बारे में बोलने या आपत्ति करने की अनुमति नहीं है।
नेतृत्व सवालों को दबाता है और प्रतिरोध का मुकाबला करता है।
o यदि आपको थका हुआ रखा जाए तो यह प्रक्रिया तेज हो जाती है।
पुरस्कार, दंड और अनुभवों की एक ऐसी प्रणाली में हेरफेर करें जिससे पीड़ित की पूर्व सामाजिक पहचान को प्रतिबिंबित करने वाले व्यवहार को रोका जा सके।
अनुभवों में हेरफेर विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है।
समाधि प्रेरण की तकनीकों का उपयोग करने वाले नेताओं सहित, गतिबद्ध तरीके से।
बोलने के तरीके, निर्देशित कल्पना, मंत्रोच्चार, लंबी प्रार्थना सभाएँ या
व्याख्यान और लंबे ध्यान सत्र।
आपके पुराने विश्वास और व्यवहार के तौर-तरीकों को अप्रासंगिक या बुरा माना जाता है।
नेतृत्व इन पुरानी पद्धतियों को खत्म करना चाहता है, इसलिए पीड़ितों को
उन्हें दबा दो।
पीड़ितों को समूह की मान्यताओं के अनुरूप व्यवहार करने पर सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है और
पुराने विश्वासों और व्यवहारों के लिए नकारात्मक प्रतिक्रिया और व्यवहार संबंधी प्रतिक्रियाएं।
समूह की विचारधारा या विश्वास प्रणाली और समूह द्वारा अनुमोदित व्यवहारों को सीखने को बढ़ावा देने के लिए पुरस्कार, दंड और अनुभवों की एक प्रणाली में हेरफेर करना।
अच्छा व्यवहार, जो समझ और स्वीकृति को दर्शाता है
समूह की मान्यताओं और अनुपालन को पुरस्कृत किया जाता है, जबकि प्रश्न पूछने और अपनी राय व्यक्त करने को पुरस्कृत किया जाता है।
शंकाओं या आलोचनाओं का खंडन, निवारण और संभवतः अस्वीकृति के रूप में किया जाता है।
यदि कोई व्यक्ति प्रश्न पूछता है, तो उसे यह आभास कराया जाता है कि वहाँ
सवाल उठाने का मतलब है कि उनमें कुछ जन्मजात खामी है।
पीड़ितों को मिलने वाली एकमात्र प्रतिक्रिया समूह से ही होती है, वे पूरी तरह से

यह उन लोगों द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कारों पर निर्भर करता है जो वातावरण को नियंत्रित करते हैं।
पीड़ितों को अन्य लोगों की मान्यताओं के बारे में अलग-अलग मात्रा में नई जानकारी सीखनी पड़ती है।
समूह और समूह से अपेक्षित व्यवहार।
नई व्यवस्था जितनी अधिक जटिल और विरोधाभासों से भरी होगी,
सीखने में जितनी कठिनाई होगी, रूपांतरण प्रक्रिया उतनी ही अधिक प्रभावी होगी।
होना।
नए कर्मचारियों के लिए सहकर्मियों से सम्मान और स्नेह बहुत महत्वपूर्ण होता है। स्वीकृति
यह तब होता है जब नए पीड़ित के व्यवहार और विचार पैटर्न उसके अनुरूप हो जाते हैं।
मॉडल (पीड़ितों) के लिए। पीड़ितों के साथियों के साथ संबंध खतरे में पड़ जाते हैं।
जब भी वे नए व्यवहार सीखने या प्रदर्शित करने में विफल होते हैं। समय के साथ, आसान
नई भाषा सीखने की कठिनाइयों से उत्पन्न असुरक्षा का समाधान
इस प्रणाली का उद्देश्य किसी भी प्रकार के संदेह को प्रकट होने से रोकना है - नए रंगरूट
बस सहमति दे देते हैं।
वे इस बात की पुष्टि करते हैं और ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वे नई विचारधारा को समझते और स्वीकार करते हों।

•

एक बंद तर्क प्रणाली और एक सत्तावादी संरचना प्रस्तुत करें जो किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया की अनुमति नहीं देती है और नेतृत्व की स्वीकृति या कार्यकारी आदेश के अलावा संशोधित होने से इनकार करती है।

समूह की संरचना ऊपर से नीचे की ओर पिरामिडनुमा है। नेताओं के पास मौखिक क्षमता होनी चाहिए।

कभी न हारने के तरीके।

पीड़ितों को सवाल उठाने, आलोचना करने या शिकायत करने की अनुमति नहीं है - यदि वे ऐसा करते हैं, तो

नेताओं का आरोप है कि पीड़ित व्यक्ति दोषपूर्ण है - संगठन या कंपनी नहीं।

विश्वास।

व्यक्ति हमेशा गलत होता है - व्यवस्था, उसके नेता और उसकी मान्यताएँ गलत होती हैं।

हमेशा सही।

पीड़ित व्यक्ति का पुनर्निर्माण एक बंद प्रणाली में होता है। पीड़ितों के रूप में

इस बंद व्यवस्था में स्वीकार्य होने के लिए उन्हें अपने व्यवहार में बदलाव करना सीखना होगा।

वे बदल जाते हैं—भाषा बोलना शुरू कर देते हैं—जिससे अलगाव और बढ़ जाता है।

उन्हें उनकी पूर्व मान्यताओं और व्यवहारों से अलग करें।"

सामाजिक मनोविज्ञान की रणनीति

मन पर नियंत्रण के समकालीन दृष्टिकोण के अनुसार, इसे अनुपालन, अनुरूपता, अनुनय, असंगति, प्रतिक्रिया, रूपरेखा तैयार करना या भावनात्मक हेरफेर जैसे अच्छी तरह से शोध किए गए सामाजिक मनोविज्ञान सिद्धांतों के गहन और निरंतर उपयोग के रूप में देखा जाता है।

इन सिद्धांतों के सबसे उल्लेखनीय समर्थकों में से एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक फिलिप जिम्बार्डो हैं, जो अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष थे।

मैं मन नियंत्रण को एक ऐसी घटना के रूप में देखता हूं जिसमें वे सभी तरीके शामिल हैं जिनसे व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत शक्तियों का प्रयोग दूसरों में अनुपालन, अनुरूपता, विश्वास, दृष्टिकोण और मूल्य परिवर्तन को प्रेरित करने के लिए किया जाता है। "मन पर नियंत्रण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से चुनाव और कार्रवाई की स्वतंत्रता को उन कारकों या एजेंसियों द्वारा प्रभावित किया जाता है जो धारणा, प्रेरणा, भावना, अनुभूति और/या व्यवहारिक परिणामों को संशोधित या विकृत करते हैं। यह न तो जादुई है और न ही रहस्यमय, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बुनियादी सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का एक समूह शामिल होता है।"

सामाजिक मनोवैज्ञानिक रॉबर्ट सियाल्डिनी ने अपनी पुस्तक "इन्फ्लुएंस, साइंस एंड प्रैक्टिस" में तर्क दिया है कि स्वस्थ मानवीय सामाजिक अंतःक्रियाओं को आधार प्रदान करने वाले और सुगम बनाने वाले अचेतन नियमों के गुप्त शोषण के माध्यम से मन पर नियंत्रण संभव है। उनका कहना है कि सामान्य सामाजिक नियमों का उपयोग भोले-भाले लोगों को अपना शिकार बनाने के लिए किया जा सकता है, और उन्होंने इन्हें निम्नलिखित नाम दिए हैं:

• • • • • •

"पारस्परिकता: पुराना लेन-देन...और-लेना" "प्रतिबद्धता और निरंतरता: मन के भ्रम"

"सामाजिक प्रमाण: सत्य ही हम हैं"

"पसंद: द फ्रेंडली थीफ"

"अधिकार: निर्देशित सम्मान"

"कमी: कुछ लोगों का शासन"

इन छह व्यापक श्रेणियों का उपयोग करते हुए, वह हल्के और चरम दोनों प्रकार के मन नियंत्रण (व्यक्तिगत और समूहों दोनों में) के विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, उन परिस्थितियों को नोट करते हैं जिनके तहत प्रत्येक सामाजिक नियम का गलत उद्देश्यों के लिए सबसे आसानी से शोषण किया जा सकता है, और ऐसी विधियों का विरोध करने के तरीके सुझाते हैं।

संदर्भ: Wikipedia.org

"... दूरस्थ विचार नियंत्रण..."
संपादक की टिप्पणी: यदि "हाइपरसोनिक ध्वनि" (नीचे दिए गए संदर्भ देखें) का उपयोग पृथ्वी पर पहले से ही किया जा सकता है, जो केवल 150 वर्षों से बिजली का उपयोग कर रही है, तो कल्पना कीजिए कि लाखों वर्षों में परिष्कृत की गई एक ऐसी तकनीक क्या कर सकती है, जो लाखों मील की दूरी पर स्थित अंतरिक्ष में किसी व्यक्ति विशेष को लक्षित करके सटीक विचार प्रसारित कर सके।
पिंक फ्लॉयड ने 35 साल पहले रिलीज़ हुए अपने ऐतिहासिक एल्बम "डार्क साइड ऑफ़ द मून" में गाया था, "मेरे दिमाग में एक पागल बैठा है। मेरे दिमाग में कोई है, लेकिन वह मैं नहीं हूँ।"
2008 में, संभव है कि आपके दिमाग के अंदर की आवाज़ आपको कुछ बेचने की कोशिश कर रही हो। विज्ञापनदाता एक नई ध्वनिक तकनीक का उपयोग करके विज्ञापन के नारे सीधे आपके दिमाग में पहुंचा रहे हैं। और हर कोई इस तरह के श्रवण हस्तक्षेप से खुश नहीं है। दरअसल, आपके कानों के बीच का स्थान निजता और प्रौद्योगिकी के बीच संघर्ष का नवीनतम अखाड़ा बन सकता है। इस तकनीक को हाइपरसोनिक ध्वनि कहा जाता है और इसका आविष्कार वुडी नॉरिस ने किया था। हाइपरसोनिक ध्वनि (एचएसएस) प्रक्षेपण से ध्वनि को बिना किसी फैलाव के सटीक रूप से एक व्यक्ति तक पहुंचाया जा सकता है। अल्ट्रासोनिक उत्सर्जक और सिग्नल प्रोसेसर/एम्पलीफायर के साथ मिलकर, एचएसएस (हाइपरसोनिक साउंड सिस्टम) हवा में मॉड्यूलेटेड अल्ट्रासोनिक आवृत्तियों का एक स्तंभ प्रक्षेपित करता है। ये अल्ट्रासोनिक आवृत्तियाँ स्वयं में अश्रव्य होती हैं, लेकिन हवा के साथ इनकी परस्पर क्रिया से ऐसी ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं जिन्हें स्तंभ के भीतर मौजूद कोई भी व्यक्ति सुन सकता है। हाइपरसोनिक ध्वनि, ध्वनि को उतनी ही सटीकता से निर्देशित कर सकती है जितनी सटीकता से लेजर किरण प्रकाश को निर्देशित कर सकती है।
एचएसएस किरण के मार्ग में खड़े होने मात्र से ही ध्वनि सुनाई देती है। हालांकि, सुनने वालों को ऐसा प्रतीत होता है कि ध्वनि उनकी खोपड़ी के अंदर से प्रक्षेपित हो रही है।

आविष्कारक नॉरिस को लगता है, "काफी शानदार।" या फिर अगर आपको पता न हो कि क्या हो रहा है, तो काफी डरावना भी हो सकता है। न्यूयॉर्क शहर के प्रिंस स्ट्रीट पर एक बिलबोर्ड पर पहले से ही ऐसा किया जा रहा है।

आर्ट्स एंड एंटरटेनमेंट नेटवर्क (A&E) पर प्रसारित होने वाले "पैरानॉर्मल स्टेट" नामक टेलीविजन शो का विज्ञापन HSS के माध्यम से उन राहगीरों तक पहुंचाया गया है, जो चलते समय सेंसर को सक्रिय कर देते हैं। इससे निकलने वाली ध्वनि केवल उन्हीं को सुनाई देती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी लेखक क्लाइव थॉम्पसन ने वायर्ड पत्रिका के लिए प्रिंस स्ट्रीट के बिलबोर्ड के बारे में लिखा है। उन्होंने स्वयं एचएसएस (हाई-स्पीड सिग्नल्स) का अनुभव किया और लिखा कि एक महिला की फुसफुसाती आवाज, "कौन है? कौन है?" सुनना "डरावना" लगा।

पहले कम से कम हमारे कानों के बीच की जगह में तो निजता की गारंटी होती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है, "दिमाग के अंदर विज्ञापन" के आविष्कार के कारण।

बाहरी स्रोतों के कृत्रिम हेरफेर के बिना अपने विचारों को सोचने की स्वतंत्रता शायद हमारी नवीनतम नागरिक अधिकार लड़ाई हो सकती है।"

रूथ एन. गेलर द्वारा

HumanistNetworkNews.org

2 अप्रैल, 2008

संदर्भ: http://humaniststudies.org/enews/?id=342&showAll=true

81

"...दूरस्थ मन-नियंत्रण अभियान..."

211

"रिमोट कंट्रोल के शुरुआती उदाहरणों में से एक को 1893 में निकोला टेस्ला द्वारा विकसित किया गया था, और उनके पेटेंट, यू.एस. पेटेंट 613,809 में वर्णित किया गया था, जिसका नाम "चलते वाहन या वाहनों के तंत्र को नियंत्रित करने के लिए उपकरण की विधि" था।"
1903 में, लियोनार्डो टोरेस क्वेवेडो ने पेरिस विज्ञान अकादमी में टेलीकिनो को एक संक्षिप्त विवरण के साथ प्रस्तुत किया और एक प्रायोगिक प्रदर्शन किया। उसी वर्ष, उन्होंने फ्रांस, स्पेन, ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में इसका पेटेंट प्राप्त किया। टेलीकिनो एक रोबोट था जो विद्युत चुम्बकीय तरंगों द्वारा प्रेषित आदेशों का निष्पादन करता था। यह रेडियो नियंत्रण के लिए दुनिया का पहला उपकरण था और रिमोट कंट्रोल के क्षेत्र में अग्रणी था।
1906 में, राजा की उपस्थिति में और एक विशाल जनसमूह के सामने, टोरेस ने बिलबाओ बंदरगाह में सफलतापूर्वक इस आविष्कार का प्रदर्शन किया और तट से एक नाव का मार्गदर्शन किया। बाद में, उन्होंने टेलीकिनो को प्रक्षेपास्त्रों और टॉरपीडो पर लागू करने का प्रयास किया, लेकिन वित्तपोषण की कमी के कारण उन्हें परियोजना को छोड़ना पड़ा।
पहला रिमोट-कंट्रोल्ड मॉडल हवाई जहाज 1932 में उड़ा था, और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सैन्य उद्देश्यों के लिए रिमोट कंट्रोल तकनीक के उपयोग पर गहनता से काम किया गया था, जिसका एक परिणाम जर्मन वासरफॉल मिसाइल था।
अंतरिक्ष यात्रा में भी रिमोट कंट्रोल तकनीक का उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए रूसी लूनोखोद यानों को पृथ्वी से रिमोट कंट्रोल द्वारा संचालित किया जाता था। पृथ्वी से अधिक दूरी पर स्थित अंतरिक्ष यानों का प्रत्यक्ष रिमोट कंट्रोल व्यावहारिक नहीं है क्योंकि सिग्नल में देरी का समय बढ़ता जाता है।
संदर्भ: Wikipedia.org
82
"... मन पर नियंत्रण..."
संपादक का नोट: मन-नियंत्रण अभियानों के उपयोग का सबसे प्रसिद्ध और चर्चित प्रमाण सीआईए की परियोजना "एमके-अल्ट्रा" है:

"प्रोजेक्ट एमके-अल्ट्रा, या एमकेअल्ट्रा, सीआईए के एक गुप्त मन-नियंत्रण और रासायनिक पूछताछ अनुसंधान कार्यक्रम का कोड नाम था, जिसे वैज्ञानिक खुफिया कार्यालय द्वारा चलाया गया था, जो 1950 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ और कम से कम 1960 के दशक के अंत तक जारी रहा। इस बात के कई प्रकाशित प्रमाण हैं कि इस परियोजना में व्यक्तिगत मानसिक अवस्थाओं में हेरफेर करने और मस्तिष्क के कार्यों को बदलने के लिए कई प्रकार की दवाओं के साथ-साथ अन्य पद्धतियों का गुप्त रूप से उपयोग शामिल था।"
प्रोजेक्ट एमके-अल्ट्रा को पहली बार 1975 में अमेरिकी कांग्रेस द्वारा चर्च कमेटी और रॉकफेलर आयोग के नाम से जाने जाने वाले राष्ट्रपति आयोग की जांच के माध्यम से व्यापक जन ध्यान में लाया गया था। जांच प्रयासों में इस तथ्य से बाधा उत्पन्न हुई कि सीआईए निदेशक रिचर्ड हेल्म्स ने 1973 में एमके-अल्ट्रा की सभी फाइलों को नष्ट करने का आदेश दिया था। हालांकि सीआईए का दावा है कि एमके-अल्ट्रा जैसे प्रयोग बंद कर दिए गए हैं, लेकिन सीआईए में 14 साल तक सेवा दे चुके विक्टर मार्शेट्टी ने कई साक्षात्कारों में कहा है कि सीआईए नियमित रूप से दुष्प्रचार अभियान चलाती है और सीआईए का मन नियंत्रण अनुसंधान जारी रहा। 1977 के एक साक्षात्कार में, मार्शेट्टी ने विशेष रूप से सीआईए के इस दावे को कि एमके-अल्ट्रा को बंद कर दिया गया है, एक 'मनगढ़ंत कहानी' बताया था।
1977 में सीनेट में बोलते हुए सीनेटर टेड कैनेडी ने कहा:
सीआईए के उप निदेशक ने खुलासा किया कि तीस से अधिक विश्वविद्यालय और संस्थान एक 'व्यापक परीक्षण और प्रयोग' कार्यक्रम में शामिल थे, जिसमें गुप्त रूप से दवाओं का परीक्षण भी शामिल था।

सभी सामाजिक स्तरों के नागरिकों पर, चाहे वे उच्च वर्ग के हों या निम्न वर्ग के, मूल अमेरिकी हों या विदेशी, अनजाने में परीक्षण किए गए। इनमें से कई परीक्षणों में सामाजिक परिस्थितियों में अनजाने लोगों को एलएसडी दिया गया। कम से कम एक मौत, डॉ. [फ्रैंक] ओलसन की, इन्हीं गतिविधियों के परिणामस्वरूप हुई। एजेंसी ने स्वयं स्वीकार किया कि इन परीक्षणों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई विशेष औचित्य नहीं था। निगरानी करने वाले एजेंट योग्य वैज्ञानिक पर्यवेक्षक नहीं थे।

एमके-अल्ट्रा कार्यक्रम का पूर्ववर्ती चरण 1945 में शुरू हुआ जब संयुक्त खुफिया उद्देश्य एजेंसी की स्थापना की गई और उसे ऑपरेशन पेपरक्लिप की सीधी जिम्मेदारी सौंपी गई। ऑपरेशन पेपरक्लिप एक ऐसा कार्यक्रम था जिसके तहत पूर्व नाज़ी जासूसों, वैज्ञानिकों और यातना एवं मस्तिष्क-रोगीकरण के विशेषज्ञों की भर्ती की जानी थी, जिनमें से कुछ को नूर्नबर्ग परीक्षणों के दौरान युद्ध अपराधियों के रूप में पहचाना और उन पर मुकदमा चलाया गया था।

ऑपरेशन पेपरक्लिप से कई गुप्त अमेरिकी सरकारी परियोजनाएं विकसित हुईं। इनमें प्रोजेक्ट चैटर (1947 में स्थापित) और प्रोजेक्ट ब्लू बर्ड (1950 में स्थापित) शामिल थीं, जिसका नाम बाद में 1951 में बदलकर प्रोजेक्ट आर्टिचोक कर दिया गया। इनका उद्देश्य मन-नियंत्रण, पूछताछ, व्यवहार संशोधन और संबंधित विषयों का अध्ययन करना था।

डॉ. सिडनी गॉटलिब के नेतृत्व में, एमके-अल्ट्रा परियोजना 13 अप्रैल, 1953 को सीआईए निदेशक एलन डुलेस के आदेश पर शुरू की गई थी। यह परियोजना मुख्य रूप से कोरिया में अमेरिकी युद्धबंदियों पर सोवियत संघ, चीन और उत्तर कोरिया द्वारा अपनाई गई मानसिक नियंत्रण तकनीकों के जवाब में शुरू की गई थी। सीआईए भी अपने कैदियों पर इसी तरह के तरीकों का इस्तेमाल करना चाहती थी। सीआईए विदेशी नेताओं को भी इन तकनीकों से प्रभावित करने में रुचि रखती थी और बाद में उसने फिदेल कास्त्रो को नशीली दवा देने की कई योजनाएँ बनाईं।

प्रयोग अक्सर प्रतिभागियों की जानकारी या सहमति के बिना ही किए जाते थे। कुछ मामलों में, सीआईए के मुखपत्र संगठनों से अनुदान प्राप्त कर रहे अकादमिक शोधकर्ताओं को इस बात की जानकारी नहीं थी कि उनके काम का उपयोग इन उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है। 1964 में, इस परियोजना का नाम बदलकर एमके-सर्च कर दिया गया। इस परियोजना का उद्देश्य शीत युद्ध के दौरान संदिग्ध सोवियत जासूसों से पूछताछ के लिए एक सटीक सत्य बताने वाली दवा का उत्पादन करना और सामान्य रूप से मन को नियंत्रित करने की अन्य संभावनाओं का पता लगाना था।

"ऑपरेशन टीपॉट" नामक एमके-अल्ट्रा कार्यक्रम के तहत, गर्भवती महिलाओं पर विकिरण के परीक्षण किए गए। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत, अमेरिकी सेना के सैनिकों को एलएसडी की खुराक दी गई ताकि उनमें घबराहट के प्रभावों का अध्ययन किया जा सके।

एमके-अल्ट्रा का एक अन्य प्रयास, सबप्रोजेक्ट 54, नौसेना का अत्यंत गुप्त "परफेक्ट कनकशन" कार्यक्रम था, जिसमें स्मृति मिटाने के लिए सब-ऑरल फ्रीक्वेंसी विस्फोटों का उपयोग किया गया था। इस कार्यक्रम के दौरान नियंत्रित और निर्देशित सामूहिक दहशत पर एलएसडी के परिणामी प्रभाव की खोज की गई थी।

एमके-अल्ट्रा के प्रमुख सिडनी गॉटलिब ऑपरेशन टीपॉट और सबप्रोजेक्ट 54 दोनों में शामिल थे। अमेरिकी सरकार ने 1995 तक आधिकारिक तौर पर अपनी संलिप्तता से इनकार किया, जब गर्भवती महिलाओं और प्रभावित अमेरिकी सेना के सैनिकों से आधिकारिक माफी मांगी गई। हालांकि, प्रभावित अमेरिकी नौसेना के सैनिकों या ओरेगन जेल के कैदियों के एक समूह से कोई माफी नहीं मांगी गई, जिनके अंडकोष उनकी जानकारी के बिना विकिरणित किए गए थे। इन प्रयोगों के परिणामस्वरूप चिकित्सा उपचार के मुआवजे को लेकर विवाद बना हुआ है और घटना के 40 से अधिक वर्षों बाद भी यह मामला मध्यस्थता में उलझा हुआ है। 1995 के बाद से, इससे संबंधित अधिकांश फाइलों को अति गोपनीय श्रेणी में पुनः वर्गीकृत कर दिया गया है।

चूंकि एमके-अल्ट्रा के अधिकांश रिकॉर्ड 1973 में तत्कालीन सीआईए निदेशक रिचर्ड हेल्म्स के आदेश पर जानबूझकर नष्ट कर दिए गए थे, इसलिए जांचकर्ताओं के लिए एमके अल्ट्रा और संबंधित सीआईए कार्यक्रमों द्वारा प्रायोजित 150 से अधिक व्यक्तिगत रूप से वित्त पोषित अनुसंधान उप-परियोजनाओं की पूरी समझ हासिल करना मुश्किल, यदि असंभव नहीं तो, हो गया है।

उद्देश्य

एजेंसी ने मन को प्रभावित करने और नियंत्रित करने के दर्जनों तरीकों की जांच करने वाले अध्ययनों में लाखों डॉलर खर्च किए। 1955 के एमके-अल्ट्रा दस्तावेज़ से इस प्रयास के आकार और दायरे का अंदाजा लगता है; यह दस्तावेज़ मन को बदलने वाले विभिन्न पदार्थों के अध्ययन का उल्लेख करता है, जिनका वर्णन इस प्रकार है:

1. ऐसे पदार्थ जो तर्कहीन सोच और आवेगशीलता को इस हद तक बढ़ावा देते हैं कि जहां प्राप्तकर्ता की सार्वजनिक रूप से प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी।
2. वे पदार्थ जो मानसिक और बोध क्षमता की दक्षता बढ़ाते हैं।
3. वे पदार्थ जो शराब के नशे को रोकते या कम करते हैं। 4. वे पदार्थ जो शराब के नशे को बढ़ाते हैं।
5. ऐसी सामग्री जो किसी व्यक्ति में मान्यता प्राप्त बीमारियों के लक्षण और संकेत उत्पन्न करेगी

इसे उलटा जा सकता है ताकि इसका उपयोग बीमारी का बहाना करने आदि के लिए किया जा सके।

6. वे सामग्रियां जो सम्मोहन की प्रक्रिया को आसान या अन्यथा सुगम बनाती हैं इसकी उपयोगिता बढ़ाएं।
7. वे पदार्थ जो व्यक्तियों की अभावग्रस्त परिस्थितियों को सहन करने की क्षमता को बढ़ाते हैं। पूछताछ के दौरान यातना और दबाव तथा तथाकथित "ब्रेन-वॉशिंग"।
8. वे सामग्रियां और भौतिक विधियां जो पिछली घटनाओं के लिए विस्मृति उत्पन्न करेंगी और उनके उपयोग के दौरान।

9. लंबे समय तक सदमा और भ्रम उत्पन्न करने की भौतिक विधियाँ
और जिसका गुप्त रूप से उपयोग किया जा सकता है।
10. ऐसे पदार्थ जो शारीरिक अक्षमता उत्पन्न करते हैं, जैसे पैरों का पक्षाघात, तीव्र पक्षाघात आदि।
एनीमिया, आदि।
11. ऐसे पदार्थ जो बिना किसी बाद की निराशा के "शुद्ध" परमानंद उत्पन्न करते हैं। 12. ऐसे पदार्थ जो व्यक्तित्व संरचना को इस प्रकार परिवर्तित करते हैं कि व्यक्ति की प्रवृत्ति बदल जाती है।
प्राप्तकर्ता के दूसरे व्यक्ति पर निर्भर होने की संभावना बढ़ जाती है।
13. एक ऐसी सामग्री जो इस प्रकार का मानसिक भ्रम उत्पन्न करेगी कि व्यक्ति
इसके प्रभाव के कारण पूछताछ के दौरान मनगढ़ंत कहानी को बनाए रखना मुश्किल हो जाएगा। 14. ऐसे पदार्थ जो पुरुषों की महत्वाकांक्षा और सामान्य कार्यक्षमता को कम करते हैं।
जब इसे इतनी कम मात्रा में दिया जाए कि इसका पता न चल सके।
15. वे पदार्थ जो दृष्टि या श्रवण शक्ति को कमजोर या विकृत करते हैं।
ऐसी क्षमताएं, जिनका कोई स्थायी प्रभाव न हो।
16. एक बेहोश करने वाली गोली जिसे पेय पदार्थों, भोजन, सिगरेट आदि में मिलाकर चुपके से दिया जा सकता है।
एरोसोल आदि के रूप में, जो उपयोग करने के लिए सुरक्षित होगा, अधिकतम स्मृतिलोप प्रदान करेगा, और
यह एजेंटों द्वारा तदर्थ आधार पर उपयोग के लिए उपयुक्त हो।
17. एक ऐसी सामग्री जिसे उपरोक्त मार्गों से गुप्त रूप से प्रशासित किया जा सकता है और जो
बहुत कम मात्रा में भी इसका सेवन करने से पुरुष के लिए कोई भी शारीरिक क्रिया करना असंभव हो जाएगा।
किसी भी प्रकार की गतिविधि।

इतिहासकारों ने पाया है कि "मन नियंत्रण" तकनीकों के माध्यम से "मंचूरियन कैंडिडेट" जैसा व्यक्ति बनाना निस्संदेह एमके-अल्ट्रा और संबंधित सीआईए परियोजनाओं का एक लक्ष्य था।[214]

## बजट

एक गुप्त समझौते के तहत सीआईए के बजट का एक निश्चित प्रतिशत हिस्सा आवंटित किया गया था। एमके-अल्ट्रा के निदेशक को 1953 में सीआईए के परिचालन बजट का छह प्रतिशत हिस्सा बिना किसी निगरानी या लेखा-जोखा के दिया गया था।

## प्रयोगों

सीआईए के दस्तावेजों से पता चलता है कि एमके-अल्ट्रा के हिस्से के रूप में मन को नियंत्रित करने के उद्देश्य से "रासायनिक, जैविक और रेडियोलॉजिकल" साधनों की जांच की गई थी।

### ड्रग्स

#### एलएसडी

शुरुआती प्रयासों का ध्यान एलएसडी पर केंद्रित था, जो बाद में एमके-अल्ट्रा के कई कार्यक्रमों पर हावी हो गया।

प्रयोगों में सीआईए कर्मचारियों, सैन्य कर्मियों, डॉक्टरों, अन्य सरकारी एजेंटों, वेश्याओं, मानसिक रूप से बीमार रोगियों और आम जनता के सदस्यों को एलएसडी देकर उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना शामिल था। एलएसडी और अन्य नशीले पदार्थ आमतौर पर विषय की जानकारी और सूचित सहमति के बिना दिए जाते थे, जो नूर्नबर्ग संहिता का उल्लंघन था, जिसका पालन करने के लिए अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सहमति व्यक्त की थी। विषयों को "भर्ती" करने के प्रयास अक्सर अवैध थे, भले ही इसमें नशीली दवाओं का सेवन शामिल था (हालांकि, उदाहरण के लिए, एलएसडी का वास्तविक उपयोग 6 अक्टूबर, 1966 तक संयुक्त राज्य अमेरिका में कानूनी था)। ऑपरेशन मिडनाइट क्लाइमेक्स में, सीआईए ने कई वेश्यालय स्थापित किए ताकि ऐसे पुरुषों का चयन किया जा सके जो घटनाओं के बारे में बात करने में शर्म महसूस करें। पुरुषों को एलएसडी की खुराक दी गई, और वेश्यालय एक तरफा दर्पणों से सुसज्जित थे और "सेशन" को बाद में देखने और अध्ययन के लिए फिल्माया गया था।

कुछ प्रतिभागियों की भागीदारी सहमति से थी, और इनमें से कई मामलों में, प्रतिभागियों को और भी अधिक चरम प्रयोगों के लिए चुना गया प्रतीत होता है। एक मामले में, स्वयंसेवकों को लगातार 77 दिनों तक एलएसडी दिया गया।

अंततः एमके-अल्ट्रा के शोधकर्ताओं ने एलएसडी को इसके प्रभावों के अत्यधिक अप्रत्याशित होने के कारण खारिज कर दिया। हालांकि एलएसडी के प्रभाव में विषयों से पूछताछ के माध्यम से कभी-कभी उपयोगी जानकारी प्राप्त की जाती थी, लेकिन अक्सर सबसे प्रमुख प्रभाव यह होता था कि विषय को पूर्ण और निश्चित रूप से विश्वास हो जाता था कि वे किसी भी प्रकार की पूछताछ, यहां तक कि शारीरिक यातना का भी सामना करने में सक्षम हैं।

अन्य दवाएँ

जांच की गई एक अन्य तकनीक में एक हाथ में बार्बिट्यूरेट का IV और दूसरे हाथ में एम्फ़ेटामाइन का IV लगाया गया। पहले बार्बिट्यूरेट दिए गए, और जैसे ही व्यक्ति को नींद आने लगी, एम्फ़ेटामाइन दिए गए। इस समय व्यक्ति अस्पष्ट रूप से बड़बड़ाने लगता था, और कभी-कभी प्रश्न पूछना और उपयोगी उत्तर प्राप्त करना संभव हो जाता था।

अन्य प्रयोगों में हेरोइन, मॉर्फिन, टेमाज़ेपम (जिसे एमके-सर्च कोड नाम से जाना जाता था), मेस्केलिन, साइलोसाइबिन, स्कोपोलामाइन, मारिजुआना, अल्कोहल और सोडियम पेंटोथल शामिल थे।

## सम्मोहन

वर्गीकृत एमके-अल्ट्रा दस्तावेजों से पता चलता है कि 1950 के दशक की शुरुआत में सम्मोहन का अध्ययन किया गया था। प्रयोगात्मक लक्ष्यों में शामिल थे: "सम्मोहन द्वारा प्रेरित चिंताएँ" उत्पन्न करना, "सम्मोहन द्वारा जटिल लिखित सामग्री को सीखने और याद रखने की क्षमता बढ़ाना", सम्मोहन और पॉलीग्राफ परीक्षाओं का अध्ययन करना, "सम्मोहन द्वारा भौतिक वस्तुओं की जटिल व्यवस्थाओं को देखने और याद रखने की क्षमता बढ़ाना" और "व्यक्तित्व का सम्मोहन के प्रति संवेदनशीलता से संबंध" का अध्ययन करना।

## कनाडाई प्रयोगों

इन प्रयोगों को कनाडा में तब निर्यात किया गया जब सीआईए ने स्कॉटिश मनोचिकित्सक डोनाल्ड इवेन कैमरून को नियुक्त किया, जो "मनोवैज्ञानिक प्रेरक शक्ति" की अवधारणा के जनक थे और सीआईए को यह अवधारणा विशेष रूप से दिलचस्प लगी। कैमरून सिज़ोफ्रेनिया को मौजूदा यादों को मिटाकर और मन का पूरी तरह से पुनर्निर्माण करके ठीक करने की उम्मीद कर रहे थे। वे हर हफ्ते अल्बानी, न्यूयॉर्क से मॉन्ट्रियल आते-जाते थे और मैकगिल विश्वविद्यालय के एलन मेमोरियल इंस्टीट्यूट में काम करते थे। उन्हें 1957 से 1964 तक एमकेयूएलटीआरए प्रयोगों को करने के लिए 69,000 डॉलर का भुगतान किया गया था। एलएसडी के अलावा, कैमरून ने विभिन्न लकवा पैदा करने वाली दवाओं और सामान्य शक्ति से तीस से चालीस गुना अधिक विद्युत-आघात चिकित्सा (इलेक्ट्रोकन्वल्सिव थेरेपी) के साथ भी प्रयोग किए। उनके "ड्राइविंग" प्रयोगों में विषयों को हफ्तों तक (एक मामले में तीन महीने तक) दवा-प्रेरित कोमा में रखना शामिल था, जबकि शोर या सरल दोहराव वाले कथनों के टेप लूप चलाए जाते थे। उनके प्रयोग आमतौर पर उन रोगियों पर किए जाते थे जो चिंता विकार और प्रसवोत्तर अवसाद जैसी मामूली समस्याओं के लिए संस्थान में भर्ती हुए थे, जिनमें से कई उनके कार्यों से स्थायी रूप से पीड़ित हुए। उनके उपचारों के परिणामस्वरूप पीड़ितों में असंयम, स्मृतिलोप, बोलना भूल जाना, अपने माता-पिता को भूल जाना और अपने पूछताछकर्ताओं को अपने माता-पिता समझने जैसी समस्याएं उत्पन्न हुईं। उनका काम लंदन के सेंट थॉमस अस्पताल और सरे के बेलमोंट अस्पताल में ब्रिटिश मनोचिकित्सक डॉ.

विलियम सार्जेंट से प्रेरित और मिलता-जुलता था, जिन्होंने भी अपने रोगियों की सहमति के बिना उन पर व्यापक और बेहद हानिकारक प्रयोग किए और खुफिया सेवाओं से समान रूप से जुड़े हुए थे।

इसी दौर में कैमरून विश्व स्तर पर विश्व मनोचिकित्सा संघ के पहले अध्यक्ष और साथ ही अमेरिकी और कनाडाई मनोचिकित्सा संघों के अध्यक्ष के रूप में प्रसिद्ध हुए। कैमरून इससे मात्र एक दशक पहले नूर्नबर्ग चिकित्सा न्यायाधिकरण के सदस्य भी रह चुके थे।

रहस्योद्घाटन

1973 में, सीआईए निदेशक रिचर्ड हेल्म्स ने एमके-अल्ट्रा से संबंधित सभी फाइलों को नष्ट करने का आदेश दिया। इस आदेश के परिणामस्वरूप, परियोजना से संबंधित सीआईए के अधिकांश दस्तावेज़ नष्ट कर दिए गए, जिससे एमके-अल्ट्रा की पूरी जांच करना लगभग असंभव हो गया।

दिसंबर 1974 में, द न्यूयॉर्क टाइम्स ने रिपोर्ट किया कि सीआईए ने 1960 के दशक के दौरान अमेरिकी नागरिकों पर प्रयोगों सहित अवैध घरेलू गतिविधियाँ संचालित की थीं। उस रिपोर्ट के बाद अमेरिकी कांग्रेस ने चर्च कमेटी के रूप में और राष्ट्रपति आयोग, जिसे रॉकफेलर आयोग के नाम से जाना जाता है, ने सीआईए, एफबीआई और सेना की खुफिया एजेंसियों की घरेलू गतिविधियों की जांच शुरू की।

1975 की गर्मियों में, कांग्रेस की चर्च कमेटी की रिपोर्ट और राष्ट्रपति की रॉकफेलर आयोग की रिपोर्ट ने पहली बार जनता के सामने यह खुलासा किया कि सीआईए और रक्षा विभाग ने अनजाने और जानबूझकर दोनों तरह के लोगों पर प्रयोग किए थे।

एलएसडी और मेस्केलिन जैसी मनो-सक्रिय दवाओं और अन्य रासायनिक, जैविक और मनोवैज्ञानिक साधनों के उपयोग के माध्यम से मानव व्यवहार को प्रभावित और नियंत्रित करने के एक व्यापक कार्यक्रम के हिस्से के रूप में सचेत मनुष्यों पर प्रयोग किए गए। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि एलएसडी दिए जाने के बाद कम से कम एक प्रतिभागी की मृत्यु हो गई थी।

सीआईए के शोध की जांच कर रही कांग्रेस समिति, जिसकी अध्यक्षता सीनेटर फ्रैंक चर्च कर रहे थे, ने निष्कर्ष निकाला कि "स्पष्ट रूप से किसी भी प्रतिभागी से पूर्व सहमति प्राप्त नहीं की गई थी"। समिति ने कहा कि "इन शोधकर्ताओं द्वारा प्रायोजित प्रयोगों से एजेंसियों द्वारा प्रयोगों के लिए दिशानिर्देश निर्धारित न करने के निर्णय पर सवाल उठते हैं।"

कनाडा में इस मुद्दे को सामने आने में काफी समय लगा और 1984 में सीबीसी के एक समाचार कार्यक्रम, द फिफ्थ एस्टेट, के माध्यम से यह व्यापक रूप से चर्चित हुआ। पता चला कि सीआईए ने न केवल डॉ. कैमरून के प्रयासों को वित्त पोषित किया था, बल्कि इससे भी अधिक चौंकाने वाली बात यह थी कि कनाडाई सरकार को इसकी पूरी जानकारी थी और उसने बाद में प्रयोगों को जारी रखने के लिए 500,000 डॉलर की अतिरिक्त धनराशि भी प्रदान की थी। इस खुलासे ने पीड़ितों द्वारा सीआईए पर मुकदमा करने के प्रयासों को काफी हद तक विफल कर दिया, जैसा कि उनके अमेरिकी समकक्षों ने किया था, और अंततः कनाडाई सरकार ने अदालत के बाहर 127 पीड़ितों में से प्रत्येक को 100,000 डॉलर का मुआवजा देकर समझौता कर लिया।

अमेरिकी सामान्य लेखा कार्यालय की रिपोर्ट

अमेरिकी जनरल अकाउंटिंग ऑफिस ने 28 सितंबर, 1994 को एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें कहा गया कि 1940 और 1974 के बीच, रक्षा विभाग और अन्य राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों ने खतरनाक पदार्थों से जुड़े परीक्षणों और प्रयोगों में हजारों मानव विषयों का अध्ययन किया।

अध्ययन से उद्धरण:

सीआईए के सहयोग से, रक्षा विभाग ने 1950 और 1960 के दशक में हजारों "स्वयंसेवक" सैनिकों को मतिभ्रम पैदा करने वाली दवाएं दीं। एलएसडी के अलावा, सेना ने

क्विनुक्लिडिनिल बेंजिलेट नामक मतिभ्रम पैदा करने वाले पदार्थ का भी परीक्षण किया, जिसका कोड नाम बीजेड था। इनमें से कई परीक्षण तथाकथित एमकेयूएलटीआरए कार्यक्रम के तहत किए गए थे, जिसे सोवियत और चीनी मस्तिष्क-प्रलोभन तकनीकों में कथित प्रगति का मुकाबला करने के लिए स्थापित किया गया था। 1953 और 1964 के बीच, इस कार्यक्रम में 149 परियोजनाएं शामिल थीं जिनमें अनजाने मनुष्यों पर दवा परीक्षण और अन्य अध्ययन शामिल थे।

भागीदारी की सीमा

एमकेयूएलटीआरए में 44 अमेरिकी कॉलेज या विश्वविद्यालय, 15 अनुसंधान संस्थान या रासायनिक या दवा कंपनियां और इसी तरह के संस्थान, 12 अस्पताल या क्लीनिक (विश्वविद्यालयों से जुड़े लोगों के अलावा), और 3 जेलों ने भाग लिया है।

प्रसिद्ध विषय

पर्याप्त सबूत इस बात का समर्थन करते हैं कि यूनाबॉम्बर थियोडोर काज़िन्स्की ने सीआईए द्वारा प्रायोजित एमके-अल्ट्रा प्रयोगों में भाग लिया था, जो हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सामाजिक संबंधों के प्रोफेसर हेनरी ए. मरे द्वारा 1959 के पतझड़ से 1962 के वसंत तक संचालित किए गए थे। जब काज़िन्स्की ने अपनी भागीदारी शुरू की थी, तब वह सोलह वर्ष का एक होशियार, हालांकि आसानी से प्रभावित होने वाला लड़का था; उसका कोड नाम "लॉफुल" रखा गया था। वर्षों बाद, वह एक आतंकवादी के रूप में सामने आया और उसे पैरोल की संभावना के बिना आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है।

"मज़ेदार शरारती" केन केसी, जो "वन फ़्लू ओवर द कुकूज़ नेस्ट" के लेखक हैं, ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में छात्र रहते हुए एमके-अल्ट्रा प्रयोगों में स्वेच्छा से भाग लिया था। केसी द्वारा एलएसडी का सेवन

इन प्रयोगों के दौरान हुई घटनाओं ने सीधे तौर पर इस दवा के व्यापक प्रचार और उसके परिणामस्वरूप हिप्पी संस्कृति के विकास को जन्म दिया।
संदर्भ: Wikipedia.org
83
..."अंधकार युग"...
यह सर्वमान्य है कि अंधकार युग की अवधारणा पेट्रार्क ने 1330 के दशक में गढ़ी थी। अपने से पूर्व के लोगों के बारे में लिखते हुए उन्होंने कहा, "गलतियों के बीच भी प्रतिभावान लोग चमके, उनकी दृष्टि उतनी ही तीक्ष्ण थी, यद्यपि वे अंधकार और घोर निराशा से घिरे हुए थे।" ईसाई लेखकों के पास "अच्छाई बनाम बुराई" का वर्णन करने के लिए "प्रकाश बनाम अंधकार" के पारंपरिक रूपक थे। पेट्रार्क पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस रूपक को अपनाया और इसके प्रयोग को उलट कर इसे धर्मनिरपेक्ष अर्थ दिया। शास्त्रीय प्राचीन काल, जिसे ईसाई धर्म के अभाव के कारण लंबे समय से "अंधकार युग" माना जाता था, अब पेट्रार्क द्वारा अपनी सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण "प्रकाश युग" के रूप में देखा गया, जबकि पेट्रार्क का समय, ऐसी सांस्कृतिक उपलब्धियों के अभाव में, अंधकार युग के रूप में देखा गया। एक इतालवी होने के नाते, पेट्रार्क रोमन साम्राज्य और शास्त्रीय काल को इतालवी महानता की अभिव्यक्ति मानते थे। उन्होंने अपना अधिकांश समय यूरोप की यात्रा में बिताया, जहाँ उन्होंने शास्त्रीय लैटिन और ग्रीक ग्रंथों को पुनः खोजा और प्रकाशित किया। वे शास्त्रीय लैटिन भाषा को उसकी पूर्व शुद्धता में पुनर्स्थापित करना चाहते थे। मानवतावादियों ने पूर्ववर्ती 900 वर्षों को ठहराव का काल माना। उन्होंने इतिहास को संत ऑगस्टीन के विश्व के छह युगों की धार्मिक रूपरेखा के अनुसार नहीं, बल्कि शास्त्रीय आदर्शों, साहित्य और कला के प्रगतिशील विकास के माध्यम से सांस्कृतिक (या धर्मनिरपेक्ष) रूप में विकसित होते देखा।
पेट्रार्क ने लिखा कि इतिहास के दो कालखंड रहे हैं: यूनानियों और रोमनों का शास्त्रीय काल, जिसके बाद अंधकार का काल आया, जिसमें वे स्वयं को जीवित मानते थे। मानवतावादियों का मानना था कि एक दिन रोमन साम्राज्य फिर से उठेगा और शास्त्रीय सांस्कृतिक शुद्धता को पुनर्स्थापित करेगा, और इसलिए 14 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 15 वीं शताब्दी के आरंभ

में, लियोनार्डो ब्रूनी जैसे मानवतावादियों का मानना था कि वे इस नए युग में प्रवेश कर चुके हैं, और एक तीसरा, आधुनिक युग शुरू हो चुका है। उनके अपने युग से पहले का युग, जिसे पेट्रार्क ने अंधकारमय युग कहा था, इस प्रकार शास्त्रीय और आधुनिक युग के बीच का "मध्य युग" बन गया।

संदर्भ: Wikipedia.org

84

"...भौतिकी के मूलभूत नियम..."

आधुनिक युग के आरंभिक काल को पुनर्जागरण का उत्कर्ष माना जाता है, जिसे अक्सर "वैज्ञानिक क्रांति" के रूप में जाना जाता है और आधुनिक विज्ञान की नींव माना जाता है। हावर्ड मार्गोलिस जैसे इतिहासकारों का मानना है कि वैज्ञानिक क्रांति की शुरुआत 1543 में हुई, जब निकोलस कोपरनिकस को उनकी पुस्तक 'डी रेवोल्यूशनिबस' की पहली प्रति प्राप्त हुई, जिसे नूर्नबर्ग में जोहान्स पेट्रियस द्वारा मुद्रित किया गया था। इसकी अधिकांश सामग्री वर्षों पहले लिखी जा चुकी थी, लेकिन प्रकाशन में देरी हुई थी। प्रति प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद कोपरनिकस की मृत्यु हो गई।

इसके बाद की शताब्दी में गैलीलियो गैलीली, क्रिस्टियान ह्यूजेन्स, जोहान्स केप्लर और ब्लेज़ पास्कल ने महत्वपूर्ण प्रगति की। सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में, गैलीलियो ने भौतिक सिद्धांतों को प्रमाणित करने के लिए प्रयोगों का व्यापक उपयोग किया, जो आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति का मूल विचार है। गैलीलियो ने गतिकी में कई परिणाम प्रतिपादित किए और उनका सफलतापूर्वक परीक्षण किया, विशेष रूप से जड़त्व का नियम। गैलीलियो की रचना 'टू न्यू साइंसेज' में, सिम्प्लिशियो और साल्वियाती नामक पात्रों के बीच संवाद में एक जहाज की गति (एक गतिशील फ्रेम के रूप में) और उस जहाज के माल पर जहाज के माल के प्रभाव पर चर्चा की गई है। ह्यूजेन्स ने संवेग संरक्षण के प्रारंभिक रूप को दर्शाने के लिए एक डच नहर में नाव की गति का उपयोग किया।

218

वैज्ञानिक क्रांति का चरमोत्कर्ष गणितज्ञ, भौतिक विज्ञानी, रसायनज्ञ और आविष्कारक सर आइजैक न्यूटन (1643-1727) द्वारा 1687 में प्रकाशित पुस्तक 'फिलोसॉफिया नेचुरेलिस प्रिंसिपिया मैथमेटिका' के साथ माना जाता है। 1687 में, न्यूटन ने 'प्रिंसिपिया' प्रकाशित की, जिसमें दो व्यापक और सफल भौतिक सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन किया गया था: न्यूटन के गति के नियम, जिनसे शास्त्रीय यांत्रिकी का उद्भव हुआ; और न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का नियम, जो गुरुत्वाकर्षण के मूलभूत बल का वर्णन करता है। दोनों सिद्धांत प्रयोगों के अनुरूप थे। 'प्रिंसिपिया' में द्रव गतिकी के कई सिद्धांत भी शामिल थे।
न्यूटन द्वारा शास्त्रीय यांत्रिकी को परिभाषित करने के बाद, भौतिकी के भीतर अनुसंधान का अगला महान क्षेत्र विद्युत की प्रकृति था।
संदर्भ: Wikipedia.org
85
"...बिजली..."
दो सहस्राब्दियों से अधिक समय तक विद्युत एक बौद्धिक जिज्ञासा से अधिक कुछ नहीं रही, जब तक कि 1600 में अंग्रेज चिकित्सक विलियम गिलबर्ट ने विद्युत और चुंबकत्व का गहन अध्ययन नहीं किया और चुंबकत्व प्रभाव को एम्बर को रगड़ने से उत्पन्न होने वाली स्थिर विद्युत से अलग किया। उन्होंने रगड़ने के बाद छोटी वस्तुओं को आकर्षित करने के गुण को संदर्भित करने के लिए नए लैटिन शब्द 'इलेक्ट्रिकस' ("एम्बर का" या "एम्बर जैसा", ग्रीक शब्द 'इलेक्ट्रॉन' से लिया गया है) का प्रयोग किया। इसी संबंध से अंग्रेजी शब्द "इलेक्ट्रिक" और "इलेक्ट्रिसिटी" का जन्म हुआ, जो पहली बार 1646 में थॉमस ब्राउन की पुस्तक 'स्यूडोडेक्सिया एपिडेमिका' में प्रकाशित हुए।
आगे चलकर ओटो वॉन गुएरिक, रॉबर्ट बॉयल, स्टीफन ग्रे और सी. एफ. डु फे ने इस विषय पर कार्य किया। 18 वीं शताब्दी में बेंजामिन फ्रैंकलिन ने बिजली पर व्यापक शोध किया और अपने शोध के लिए धन जुटाने के लिए अपनी संपत्ति बेच दी। कहा जाता है कि जून 1752 में उन्होंने एक गीली पतंग की डोरी के निचले हिस्से में एक धातु की चाबी बांधी और तूफान से घिरे आकाश में पतंग उड़ाई। उन्होंने चाबी से अपने हाथ के पिछले हिस्से तक चिंगारियों की

एक श्रृंखला उछलते हुए देखी, जिससे यह सिद्ध हुआ कि बिजली वास्तव में विद्युतीय प्रकृति की होती है।

1791 में लुइगी गैलवानी ने जैवविद्युत की खोज प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि विद्युत वह माध्यम है जिसके द्वारा तंत्रिका कोशिकाएं मांसपेशियों को संकेत भेजती हैं। 1800 में एलेसेंड्रो वोल्टा द्वारा जस्ता और तांबे की वैकल्पिक परतों से निर्मित बैटरी, या वोल्टेइक पाइल ने वैज्ञानिकों को पहले इस्तेमाल की जाने वाली इलेक्ट्रोस्टैटिक मशीनों की तुलना में विद्युत ऊर्जा का अधिक विश्वसनीय स्रोत प्रदान किया। 1820 में आंद्रे-मैरी एम्पीयर ने विद्युत और चुंबकत्व के बीच संबंध की खोज की; 1821 में माइकल फैराडे ने विद्युत मोटर का आविष्कार किया, और 1827 में जॉर्ज ओम ने विद्युत परिपथ का गणितीय विश्लेषण किया।

हालांकि उन्नीसवीं सदी के आरंभ में विद्युत विज्ञान में तीव्र प्रगति देखी गई थी, लेकिन उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में विद्युत विज्ञान में सबसे बड़ी प्रगति हुई।

इंजीनियरिंग के क्षेत्र में, निकोला टेस्ला, थॉमस एडिसन, जॉर्ज वेस्टिंगहाउस, अर्न्स्ट वर्नर वॉन सीमेंस, अलेक्जेंडर ग्राहम बेल और लॉर्ड केल्विन जैसे लोगों के माध्यम से, बिजली एक वैज्ञानिक जिज्ञासा से आधुनिक जीवन के लिए एक आवश्यक उपकरण में परिवर्तित हो गई, और द्वितीय औद्योगिक क्रांति की प्रेरक शक्ति बन गई।

संदर्भ: Wikipedia.org

86

"... सर आइजैक न्यूटन..."

सर आइजैक न्यूटन (4 जनवरी 1643 – 31 मार्च 1727) एक अंग्रेज भौतिक विज्ञानी, गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, धर्मशास्त्री, प्राकृतिक दार्शनिक और कीमियागर थे। उनकी कृति

फिलोसॉफी नेचुरेलिस प्रिंसिपिया मैथमेटिका का प्रकाशन 1687 में हुआ था और इसे विज्ञान के इतिहास का सबसे महान कार्य माना जाता है। इसमें सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण और गति के तीन नियमों का वर्णन किया गया है, जिसने शास्त्रीय यांत्रिकी की नींव रखी, जिसने अगले तीन शताब्दियों तक भौतिक ब्रह्मांड के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रभुत्व जमाया और आधुनिक इंजीनियरिंग का आधार है। उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि पृथ्वी पर वस्तुओं और खगोलीय पिंडों की गति एक ही प्रकार के प्राकृतिक नियमों द्वारा नियंत्रित होती है। उन्होंने ग्रहों की गति के केप्लर के नियमों और अपने गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत के बीच संगति को सिद्ध करके सूर्यकेंद्रीयता के बारे में अंतिम संदेहों को दूर किया और वैज्ञानिक क्रांति को आगे बढ़ाया। यांत्रिकी में, न्यूटन ने संवेग और कोणीय संवेग के संरक्षण के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया। प्रकाशिकी में, उन्होंने परावर्तक दूरबीन का आविष्कार किया और इस अवलोकन के आधार पर रंग का सिद्धांत विकसित किया कि एक प्रिज्म सफेद प्रकाश को दृश्य स्पेक्ट्रम में विभाजित करता है। उन्होंने शीतलन का एक अनुभवजन्य नियम भी प्रतिपादित किया और ध्वनि की गति का अध्ययन किया।

गणित में, न्यूटन और गॉटफ्रीड लाइबनिज़ दोनों को कैलकुलस के विकास का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने सामान्यीकृत द्विपद प्रमेय को भी सिद्ध किया, किसी फलन के शून्यकों का अनुमान लगाने के लिए तथाकथित "न्यूटन विधि" विकसित की, और घात श्रृंखलाओं के अध्ययन में योगदान दिया।

विज्ञान के इतिहास पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाले व्यक्ति के बारे में रॉयल सोसाइटी द्वारा 2005 में किए गए एक सर्वेक्षण में, न्यूटन को अल्बर्ट आइंस्टीन की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली माना गया।

संदर्भ: Wikipedia.org

87

"...कई जन्मों के बीच।"

डॉ. कार्ल सागन एक प्रख्यात वैज्ञानिक, शिक्षक और संशयवादी थे। सागन उस समूह के संस्थापक सदस्य थे जिसने अवैज्ञानिक दावों का खंडन करने का बीड़ा उठाया और उन्होंने 'द

डेमन-हॉन्टेड वर्ल्ड' नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने कहा कि परा मनोविज्ञान में कई ऐसे क्षेत्र हैं जो गंभीर अध्ययन के योग्य हैं।

इस लेख को लिखते समय, ईएसपी (इष्टतम संवेदी क्षमता) के क्षेत्र में तीन दावे हैं, जो मेरी राय में गंभीर अध्ययन के योग्य हैं: (1) कि केवल विचार के द्वारा मनुष्य कंप्यूटर में यादृच्छिक संख्या जनरेटरों को (मुश्किल से) प्रभावित कर सकते हैं; (2) कि हल्के संवेदी अभाव से ग्रस्त लोग उन पर "प्रक्षेपित" किए गए विचारों या छवियों को ग्रहण कर सकते हैं; और (3) कि छोटे बच्चे कभी-कभी पिछले जीवन के विवरण बताते हैं, जो जाँच करने पर सटीक साबित होते हैं और जिनके बारे में वे पुनर्जन्म के अलावा किसी अन्य तरीके से नहीं जान सकते थे। मैंने इन दावों को इसलिए नहीं चुना है क्योंकि मुझे लगता है कि वे मान्य होने की संभावना रखते हैं (मुझे ऐसा नहीं लगता), बल्कि उन तर्कों के उदाहरण के रूप में चुना है जो सत्य हो सकते हैं।

वर्जीनिया विश्वविद्यालय के मनोचिकित्सक डॉ. जिम टकर और प्रोफेसर इयान स्टीवेन्सन ने बचपन के पूर्व जन्म की यादों और जन्मचिह्नों से संबंधित मामलों की जांच पर अपने काम के बारे में किताबें और सहकर्मी-समीक्षित शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। पुनर्जन्म के पक्ष में व्यक्तिगत रिपोर्टों का सबसे विस्तृत संग्रह प्रोफेसर इयान स्टीवेन्सन द्वारा प्रकाशित किया गया है, जैसे कि 'ट्वेंटी केसेज सजेस्टिव ऑफ रीइन्कार्नेशन' नामक पुस्तक में।

स्टीवेन्सन ने अपने जीवन के 40 से अधिक वर्ष उन बच्चों के अध्ययन में समर्पित किए हैं जिन्होंने अपने पूर्व जन्मों के बारे में बताया है। प्रत्येक मामले में, स्टीवेन्सन व्यवस्थित रूप से बच्चे के कथनों को दस्तावेज़ित करते हैं। फिर, वे उस मृत व्यक्ति की पहचान करते हैं जिससे बच्चा कथित तौर पर जुड़ाव महसूस करता है, और मृत व्यक्ति के जीवन के उन तथ्यों की पुष्टि करते हैं जो बच्चे की स्मृति से मेल खाते हैं। स्टीवेन्सन का मानना है कि उनकी सावधानीपूर्वक पद्धतियाँ बच्चे के इस अनुभव के सभी संभावित "सामान्य" स्पष्टीकरणों को खारिज कर देती हैं।

यादें। हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि वर्जीनिया विश्वविद्यालय द्वारा रिपोर्ट किए गए पुनर्जन्म के मामलों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पूर्वी समाजों से आता है, जहां प्रमुख धर्म अक्सर पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार करते हैं। भारत में - जहां यह घटना काफी आम है - यदि एक गरीब परिवार का बच्चा दावा करता है कि वह एक अमीर परिवार का पुनर्जन्म है, तो इससे उस बच्चे को उस परिवार द्वारा गोद लिया जा सकता है, एक ऐसा मकसद जिसके कारण बच्चे फर्जी पुनर्जन्म के दावे करते हैं।

स्टीवेन्सन ने उन 2500 मामलों के बारे में कहा है जिनमें बच्चों को पिछले जन्मों की याद होने का आभास होता था, जिनकी उन्होंने और उनके सहयोगियों ने जांच की थी:

अब तक मेरा निष्कर्ष यह है कि पुनर्जन्म इन मामलों की एकमात्र व्याख्या नहीं है, लेकिन यह उन गंभीर मामलों के लिए सबसे अच्छी व्याख्या है, जिनमें एक बच्चा किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में काफी संख्या में (जैसे 20 या 30) सही कथन देता है जो उसके अपने परिवार से काफी दूर स्थित परिवार में रहता है और जिसके साथ उसके परिवार का पहले कोई संपर्क नहीं रहा है। जब हम दूरी की बात करते हैं, तो हमारा मतलब केवल भौतिक दूरी से नहीं होता है। हम जानते हैं कि दो परिवार केवल 10 किलोमीटर की दूरी पर रह सकते हैं और फिर भी वे बहुत दूर हो सकते हैं क्योंकि वे अलग-अलग आर्थिक और सामाजिक वर्गों से संबंधित हैं।

प्रोफेसर स्टीवेन्सन ने जन्मचिह्नों और जन्मजात विकारों का मिलान मृतकों के घावों और निशानों से भी किया है, जिसकी पुष्टि शव परीक्षण की तस्वीरों जैसे चिकित्सा अभिलेखों से हुई है। जन्मचिह्नों और जन्मजात विकारों पर स्टीवेन्सन का शोध पुनर्जन्म के प्रमाण के लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह पुनर्जन्म के वस्तुनिष्ठ और स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो पूछताछ किए गए बच्चों और वयस्कों की (अक्सर खंडित) स्मृतियों और रिपोर्टों से कहीं बेहतर हैं, जिन्हें बाद में सत्यापित किए जाने पर भी शायद समान महत्व नहीं दिया जा सकता।

संदर्भ: Wikipedia.org

88

"...अटलांटिस की लुप्त सभ्यताएँ..."

निम्नलिखित वेबसाइट पर अटलांटिस के बारे में अधिकांश लोकप्रिय जानकारी उपलब्ध है:

http://www.lost-civilizations.net/atlantis.html

89

"...और लेमुरिया..."

लेमुरियन सभ्यता के उत्थान और पतन का सटीक दस्तावेजीकरण संभव नहीं है, हालांकि कई लोग इस पौराणिक महाद्वीप की खोज में गए हैं। लुप्त सभ्यताओं का उत्थान और पतन होता रहा है - या वे बिना किसी स्पष्टीकरण के प्रकट और लुप्त हो जाती हैं। अटलांटिस की तरह, पुरातात्विक साक्ष्यों, किंवदंतियों, शोधकर्ताओं द्वारा संकलित सिद्धांतों और कुछ मामलों में आध्यात्मिक अंतर्दृष्टियों के आधार पर ही अनुमान लगाया जा सकता है कि वास्तव में क्या हुआ था।

लेमुरिया की सटीक स्थिति को लेकर विभिन्न शोधकर्ताओं और लेखकों के विचार अलग-अलग हैं, हालांकि यह प्रशांत क्षेत्र के उन रहस्यों का हिस्सा है जो अमेरिकी महाद्वीप तक फैले हुए हैं, ठीक वैसे ही जैसे अटलांटिस भूमध्य सागर तक फैले अटलांटिक भूभाग से जुड़ा हुआ है। लेमुरिया की स्थिति चाहे जो भी हो, यह रिंग ऑफ फायर से जुड़ा हुआ है। कई वर्षों तक शांत रहने के बाद, यह क्षेत्र 26 दिसंबर, 2004 को आई सुनामी, शक्तिशाली भूकंपों और लगातार सक्रिय ज्वालामुखियों के कारण फिर से सक्रिय हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन लेमुरिया की किंवदंतियाँ हमें एक बार फिर चेतावनी दे रही हैं - जैसा कि माना जाता है कि उन्होंने लेमुरियावासियों को महाद्वीप - या द्वीपों के समूह - के समुद्र में समा जाने से पहले दिया था।

221

लेमुरिया, जिसे पैसिफिका, म्यू और जिसे केसी ने ज़ू या ओज़ कहा था, का भाग्य अटलांटिस के लिए प्रस्तावित भाग्य से मिलता-जुलता है। यह प्राचीन भविष्यवक्ताओं और आधुनिक भविष्यवक्ताओं द्वारा हमारी समयरेखा में मानवता के भविष्य की भविष्यवाणी से बहुत मिलता-जुलता है। सभी किंवदंतियाँ एक जैसी हैं... एक समृद्ध, उन्नत संस्कृति जो अचानक कहीं से प्रकट हुई। उनकी उत्पत्ति और पतन का संबंध उस विनाश से है जब प्राकृतिक आपदाओं और मानवीय असंतुलन के कारण उनका महाद्वीप 'समुद्र' में डूब गया।
संदर्भ: http://www.crystalinks.com/lemuria.html
90
"...ध्रुवीय परिवर्तन"...
1852 में, गणितज्ञ जोसेफ अधेमर ने सुझाव दिया कि ध्रुवों पर मोटी बर्फ के जमाव के कारण समय-समय पर पृथ्वी पलट जाती है और भूमध्य रेखा ध्रुवों की ओर खिसक जाती है। पृथ्वी की धुरी के खिसकने का प्रारंभिक उल्लेख 1872 के एक लेख में मिलता है जिसका शीर्षक है "क्रोनोलॉजी हिस्टोरिक डेस मेक्सिकेंस", जिसमें प्राचीन मैक्सिकन मिथकों को लगभग 10,500 ईसा पूर्व शुरू हुई वैश्विक आपदाओं के चार कालखंडों के प्रमाण के रूप में व्याख्यायित किया गया है।
रिचर्ड हैटफील्ड के उपन्यास 'गीज़रलैंड: एम्पिरिसिज्म इन सोशल रिफॉर्म: बीइंग डेटा एंड ऑब्जर्वेशन्स रिकॉर्डेड बाय द लेट मार्क स्टबल, एम.डी., पीएच.डी.' (1908) में एक काल्पनिक अध्ययन के माध्यम से उत्तरी ध्रुव पर अटलांटिस द्वीप पर शुद्ध साम्यवाद के एक आनंदमय राष्ट्र की कल्पना की गई है। यह काल्पनिक आदर्शलोक 9262 ईसा पूर्व में हुए ध्रुवीय परिवर्तन के कारण नष्ट हो गया।
विद्युत अभियंता ह्यू ऑचिनक्लोस ब्राउन ने अधेमर के पूर्व मॉडल से प्रभावित होकर एक विनाशकारी ध्रुवीय परिवर्तन का सिद्धांत प्रतिपादित किया। ब्राउन ने यह भी तर्क दिया कि ध्रुवों पर बर्फ के जमाव के कारण अक्ष का बार-बार झुकाव होता है, जिससे लगभग 7 सहस्राब्दियों के चक्रों की पहचान होती है।

चार्ल्स हैपगुड को शायद अब सबसे ज़्यादा याद किया जाता है, जिन्होंने अपनी पुस्तकों 'द अर्थ्स शिफ्टिंग क्रस्ट' (1958) (जिसमें अल्बर्ट आइंस्टीन की प्रस्तावना शामिल है) और 'पाथ ऑफ द पोल' (1970) में इस सिद्धांत का समर्थन किया था। हैपगुड ने अधेमर के बहुत पुराने मॉडल पर आधारित होकर यह अनुमान लगाया कि एक या दोनों ध्रुवों पर बर्फ का अत्यधिक संचय पृथ्वी के घूर्णन संतुलन को बिगाड़ देता है, जिससे पृथ्वी की बाहरी परत का अधिकांश भाग पृथ्वी के कोर के चारों ओर खिसक जाता है, जबकि कोर अपनी अक्षीय स्थिति बनाए रखता है। अपने स्वयं के शोध के आधार पर, उन्होंने तर्क दिया कि प्रत्येक बदलाव में लगभग पाँच हज़ार वर्ष लगते हैं, जिसके बाद 20 से 30 हज़ार वर्षों की अवधि में कोई ध्रुवीय हलचल नहीं होती है। साथ ही, उनकी गणनाओं में, हलचल का क्षेत्र कभी भी 40 डिग्री से अधिक नहीं था। उत्तरी ध्रुव के लिए उनके द्वारा सुझाए गए हालिया स्थानों में युकोन क्षेत्र, हडसन खाड़ी और आइसलैंड और नॉर्वे के बीच अटलांटिक महासागर शामिल हैं।

यह ध्रुवीय बदलाव की धीमी गति का एक उदाहरण है, जिसमें बहुत मामूली परिवर्तन होते हैं और कोई विनाश नहीं होता। एक अधिक नाटकीय दृष्टिकोण में तेज़ बदलावों की कल्पना की जाती है, जिसमें भूकंप और सुनामी के कारण भूगोल में नाटकीय परिवर्तन और स्थानीय क्षेत्रों में विनाश शामिल है। हाल ही में प्रकाशित कई पुस्तकें ऐसे परिवर्तनों का प्रस्ताव करती हैं जो हफ्तों, दिनों या घंटों में होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई तरह के प्रलयकारी परिदृश्य सामने आते हैं।

गति चाहे जो भी हो, किसी भी प्रकार के परिवर्तन के परिणामस्वरूप पृथ्वी की सतह के अधिकांश भाग में बड़े पैमाने पर जलवायु परिवर्तन होते हैं, क्योंकि जो क्षेत्र पहले भूमध्यरेखीय थे वे समशीतोष्ण हो जाते हैं, और जो क्षेत्र समशीतोष्ण थे वे या तो अधिक भूमध्यरेखीय या अधिक आर्कटिक हो जाते हैं।

हैपगुड ने कनाडाई लाइब्रेरियन रैंड फ्लेम-एथ को पत्र लिखकर अपने दावे का समर्थन करने वाले वैज्ञानिक प्रमाण जुटाने और सिद्धांत का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित किया। फ्लेम-एथ ने इस कार्य के परिणाम 1995 में अपनी पत्नी रोज़ के साथ मिलकर लिखित पुस्तक "व्हेन द स्काई फेल" में प्रकाशित किए।

अन्य सिद्धांत जो ध्रुवीय बर्फ के द्रव्यमान पर निर्भर नहीं हैं, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

•

•

•

•

•

एक उच्च वेग वाला क्षुद्रग्रह या धूमकेतु जो पृथ्वी से इस प्रकार के कोण पर टकराता है कि स्थलमंडल मेंटल से स्वतंत्र रूप से गति करता है।

एक उच्च वेग वाला क्षुद्रग्रह या धूमकेतु जो पृथ्वी से इस प्रकार के कोण पर टकराता है कि पूरा ग्रह अपनी धुरी से हट जाता है।

एक असामान्य रूप से चुंबकीय खगोलीय पिंड जो पृथ्वी के इतने करीब से गुजरता है कि वह अस्थायी रूप से चुंबकीय क्षेत्र की दिशा बदल देता है, जिससे स्थलमंडल एक नए घूर्णन अक्ष पर घूमने लगता है। अंततः, सूर्य का चुंबकीय क्षेत्र फिर से पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को निर्धारित करता है, जब वह खगोलीय पिंड ऐसी जगह पर लौट जाता है जहाँ से वह पृथ्वी को प्रभावित नहीं कर सकता।

कोर-मेंटल सीमा की स्थलाकृति में विक्षोभ, संभवतः कोर के विभेदक घूर्णन और उसके अक्षीय घूर्णन सदिश के विस्थापन के कारण, सीएमबी द्रव्यमान के पुनर्वितरण की ओर ले जाते हैं। उदाहरण के लिए, बोविन देखें।

मेंटल हिमस्खलन या अन्य विकृतियों के कारण मेंटल में द्रव्यमान का पुनर्वितरण। उदाहरण के लिए, लैडबरी, और स्टाइनबर्गर और ओ'कोनेल देखें।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

91

"... सर्वाधिकारवादी..."

"तानाशाही राजनीति विज्ञान में प्रयुक्त एक अवधारणा है जो एक ऐसे राज्य का वर्णन करती है जो सार्वजनिक और निजी व्यवहार के लगभग हर पहलू को नियंत्रित करता है। तानाशाही

शासन या आंदोलन गुप्त पुलिस, राज्य-नियंत्रित जनसंचार माध्यमों के माध्यम से प्रसारित प्रचार, व्यक्तित्व पूजा, स्वतंत्र चर्चा और आलोचना के नियमन और प्रतिबंध, एकदलीय राज्य, व्यापक निगरानी और आतंक की रणनीति के व्यापक उपयोग के माध्यम से राजनीतिक सत्ता में बने रहते हैं।"

कई लोगों का मानना है कि पहले अधिनायकवादी शासन 20 वीं शताब्दी में शुरू हुए, जिनमें सोवियत संघ और क्यूबा के साम्यवादी शासन, नाज़ी जर्मनी, फासीवादी इटली, फ्रेंको के नेतृत्व में स्पेन, सालज़ार के नेतृत्व में पुर्तगाल आदि शामिल हैं। हालांकि, कुछ लोगों का तर्क है कि अधिनायकवाद सदियों पहले से मौजूद था, जैसे कि प्राचीन चीन में प्रधानमंत्री ली सी के राजनीतिक नेतृत्व में, जिन्होंने किन राजवंश को चीन को एकजुट करने में मदद की। ली सी ने विधिवाद के राजनीतिक दर्शन को चीन के प्रमुख दार्शनिक विचार के रूप में अपनाया और राजनीतिक गतिविधियों को प्रतिबंधित कर दिया, सभी साहित्य को नष्ट कर दिया और विधिवाद का समर्थन न करने वाले विद्वानों की हत्या कर दी। प्राचीन ग्रीस में स्पार्टा राज्य द्वारा भी अधिनायकवाद का प्रयोग किया गया था। इसकी "शिक्षा प्रणाली" अधिनायकवादी सैन्य समाज का हिस्सा थी। राज्य मशीनरी चलाने वाले कुलीनतंत्र ने बच्चों के पालन-पोषण सहित जीवन के हर पहलू को नियंत्रित किया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

92

"...ग्रहीय सरकारें, जो एक क्रूर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पदानुक्रम द्वारा नियंत्रित होती हैं..."

"पदानुक्रम (ग्रीक में: हायरोस, 'पवित्र', और अर्खो, 'शासन') चीजों या लोगों को क्रमबद्ध करने और व्यवस्थित करने की एक प्रणाली है, जहां प्रणाली का प्रत्येक तत्व (शीर्ष तत्व को छोड़कर) किसी अन्य तत्व के अधीन होता है।"

एक पदानुक्रम संस्थाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, और लंबवत या क्षैतिज रूप से जोड़ सकता है। पदानुक्रम में, जहाँ तक वे पदानुक्रमित हैं, केवल प्रत्यक्ष संबंध किसी के तत्काल वरिष्ठ या किसी अधीनस्थ से होते हैं, हालाँकि एक मुख्य रूप से पदानुक्रमित प्रणाली में अन्य

संगठनात्मक पैटर्न भी शामिल हो सकते हैं। अप्रत्यक्ष पदानुक्रमित संबंध विस्तारित हो सकते हैं।

एक ही दिशा में कई कड़ियों के माध्यम से "ऊर्ध्वाधर" रूप से ऊपर या नीचे की ओर। पदानुक्रम के वे सभी भाग जो एक दूसरे से ऊर्ध्वाधर रूप से जुड़े नहीं हैं, फिर भी पदानुक्रम में ऊपर जाकर एक सामान्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वरिष्ठ अधिकारी को ढूंढकर और फिर नीचे आकर "क्षैतिज" रूप से जुड़े हो सकते हैं। यह दो सहकर्मियों के समान है, जिनमें से कोई भी दूसरे का बॉस नहीं है, लेकिन अंततः दोनों की कमान श्रृंखलाएँ मिलेंगी।
सरकार, शिक्षण संस्थान, व्यवसाय, चर्च, सेना और राजनीतिक आंदोलन जैसे कई मानवीय संगठन, कम से कम आधिकारिक तौर पर, पदानुक्रमित संगठन होते हैं; आमतौर पर वरिष्ठों, जिन्हें "बॉस" कहा जाता है, के पास अपने अधीनस्थों की तुलना में अधिक शक्ति होती है। इस प्रकार, इस पदानुक्रम को परिभाषित करने वाला संबंध "आदेश देना" या "अधिकार रखना" है। हालांकि, कुछ विश्लेषक इस बात पर सवाल उठाते हैं कि क्या शक्ति वास्तव में उसी तरह काम करती है जैसा कि पारंपरिक संगठनात्मक चार्ट दर्शाता है। यह दृष्टिकोण अनौपचारिक संगठन के महत्व पर जोर देता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
93
"...शाही सम्राट इसके नाममात्र के मुखिया के रूप में।"
राजनीति में, नाममात्र का मुखिया (समुद्री जहाज के अग्रभाग पर बनी नक्काशीदार प्रतिमा के रूपक के संदर्भ में) वह व्यक्ति होता है जो एक महत्वपूर्ण पद या ओहदा धारण करता है लेकिन वास्तविक शक्ति का प्रयोग बहुत कम करता है। नाममात्र के मुखियाओं में जापान के सम्राट जैसे संवैधानिक सम्राट या इज़राइल के राष्ट्रपति जैसे संसदीय लोकतंत्रों के राष्ट्रपति शामिल हैं।
हालांकि नाममात्र के राष्ट्रपति का अधिकार आम तौर पर प्रतीकात्मक होता है, लेकिन सम्मान और सरकार के उच्च स्तरों तक पहुंच उन्हें कुछ घटनाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की शक्ति प्रदान कर सकती है। इसका एक उदाहरण द्वितीय विश्व युद्ध में सम्राट हिरोहितो की भागीदारी है। संसदीय प्रणालियों में, राष्ट्रपति शांति काल में नाममात्र के राष्ट्रपति होते हैं (उन्हें

राष्ट्रीय विधायिका को बुलाने या भंग करने जैसी शक्तियां सौंपी जाती हैं), लेकिन युद्धकाल में वे अक्सर सेनापति होते हैं।
आपातकाल के समय कभी-कभी नाममात्र के राष्ट्रपति का दुरुपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने नाममात्र के राष्ट्रपति का उपयोग करके एकतरफा आदेश जारी किए, जिससे उन्हें संसद को दरकिनार करने की अनुमति मिली, जब संसद ने उनका समर्थन करना बंद कर दिया था।
इस शब्द के और भी भयावह अर्थ हो सकते हैं, और यह एक शक्तिहीन नेता को संदर्भित करता है जिसे पूर्ण अधिकार का प्रयोग करना चाहिए, फिर भी वास्तव में वह सत्ता के पीछे बैठे किसी अधिक शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है।
कई अन्य शब्दों की तरह, जिनके अर्थों में तेजी से परिवर्तन हो रहा है, इस शब्द की भी अपमानजनक अर्थ में परिवर्तित होने की प्रवृत्ति इसे सीमित संवैधानिक अधिकार वाले राष्ट्राध्यक्ष के लिए अनुपयुक्त बना रही है, जिससे संसदीय प्रणालियों में सम्राटों और राष्ट्रपतियों के संदर्भ में इसका उपयोग तेजी से अनुचित होता जा रहा है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
94
"...समानतावादी सामूहिक भावना से एकजुट..."
समूह के मनोबल की चर्चा करते समय, "एस्प्रिट डी कॉर्प्स" एक अमूर्त शब्द है जिसका उपयोग किसी संस्था या लक्ष्य में, या स्वयं और दूसरों में विश्वास बनाए रखने की लोगों की क्षमता के लिए किया जाता है। अलेक्जेंडर एच. लेटन के अनुसार, "मनोबल किसी समूह की एक सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लगातार और निरंतर रूप से एकजुट होने की क्षमता है।"
224

समतावाद (फ्रेंच शब्द égal से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है समान) एक राजनीतिक सिद्धांत है जो मानता है कि सभी लोगों को जन्म से ही समान माना जाना चाहिए। सामान्यतः यह कानून, चर्च और समाज में समानता पर लागू होता है। व्यवहार में, कोई व्यक्ति ऊपर सूचीबद्ध अधिकांश क्षेत्रों में समतावादी माना जा सकता है, भले ही वह व्यक्तिगत भिन्नता के हर क्षेत्र में समानता का समर्थन न करता हो। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति नस्ल संबंधी मामलों में समान अधिकारों का समर्थन कर सकता है लेकिन लिंग संबंधी मामलों में नहीं, या इसके विपरीत भी हो सकता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

95

"...पृथ्वी पर मौजूद कई आईएस-बीई यहाँ इसलिए हैं क्योंकि वे अधिनायकवादी सरकारों का हिंसक विरोध करते हैं..."

-- संपादक की टिप्पणी: संयोगवश, या शायद संयोगवश नहीं, इस साक्षात्कार के लगभग एक वर्ष बाद, जॉर्ज ऑरवेल का उपन्यास "1984", जो जून 1948 में प्रकाशित हुआ था, प्रकाशित हुआ। अमेरिकी सरकार की स्थिति ऑरवेल द्वारा पुस्तक "नाइनटीन एटी-फोर" में वर्णित कई विशेषताओं को प्रतिबिंबित करने लगी है। यह अनुमान लगाना आसान है कि इस पुस्तक को लिखते समय ऑरवेल "द डोमेन" के किसी आईएस-बीई से "प्रभावित" रहे होंगे। या, कम से कम, वे उन आईएस-बीई में से एक थे जिन्हें पृथ्वी पर भेजा गया था क्योंकि वे "... पृथ्वी पर मौजूद आईएस-बीई में से एक हैं क्योंकि वे अधिनायकवादी सरकारों का हिंसक विरोध करते हैं..."।

ऑर्वेल के उपन्यास "1984" के आधार का निम्नलिखित विवरण विकिपीडिया डॉट ओआरजी से हूबहू लिया गया है। यह "पुराने साम्राज्य" की सरकार का बहुत सटीक वर्णन है:

ओशेनिक समाज का अधिकांश भाग स्टालिन के सोवियत संघ पर आधारित है। "दो मिनट की नफरत" राज्य के शत्रुओं और प्रतिद्वंद्वियों को शैतान के रूप में चित्रित करने की एक रस्म थी; बिग ब्रदर जोसेफ स्टालिन से मिलता-जुलता है; पार्टी का कट्टर शत्रु, इमैनुएल गोल्डस्टीन, लियोन ट्रॉट्स्की से मिलता-जुलता है (दोनों यहूदी हैं, दोनों की शारीरिक बनावट एक जैसी है,

और ट्रॉट्स्की का असली उपनाम 'ब्रोंस्टीन' था)। गोल्डस्टीन के लिए एक और संभावित प्रेरणा प्रसिद्ध अराजकतावादी हस्ती एम्मा गोल्डमैन हैं। छेड़छाड़ की गई तस्वीरें प्रचार की एक तकनीक हैं और कहानी में ऐसे पात्रों का निर्माण करती हैं जिन्हें व्यक्ति नहीं माना जाता, ठीक उसी तरह जैसे स्टालिन के शत्रुओं को व्यक्ति नहीं माना गया और आधिकारिक फोटोग्राफिक रिकॉर्ड से मिटा दिया गया; कई पात्रों के साथ पुलिस का व्यवहार ग्रेट पर्ज के मॉस्को ट्रायल्स की याद दिलाता है।

ऑरवेल द्वारा "1984" में चर्चा की गई अवधारणाओं और एलियन के साथ "एलियन इंटरव्यू" के प्रतिलेखों में वर्णित "पुराने साम्राज्य" की सरकार और पृथ्वी के जेल ग्रह की गतिविधियों के बीच कई रोचक समानताएं हैं।

उदाहरण के लिए, इंटरनेट विश्वकोश विकिपीडिया डॉट ओआरजी के निम्नलिखित अंश में इनमें से कुछ समानताओं का उल्लेख किया गया है:

विचार पुलिस विंस्टन और जूलिया को उनके गुप्त शयनकक्ष में पकड़ लेती है और उनसे प्रेम मंत्रालय में अलग-अलग पूछताछ की जाती है, जहाँ शासन के विरोधियों को यातनाएँ दी जाती हैं और मार डाला जाता है, लेकिन कभी-कभी उन्हें रिहा भी कर दिया जाता है (बाद में फाँसी देने के लिए); वह दुकानदार चैरिंगटन, जिसने उन्हें कमरा किराए पर दिया था, खुद को विचार पुलिस का अधिकारी बताता है। प्रेम मंत्रालय के यातना कक्ष में, ओ'ब्रायन स्मिथ से कहता है कि पार्टी के प्रति उसकी नफरत दूर कर दी जाएगी। एक सत्र के दौरान, वह विंस्टन को समझाता है कि यातना का उद्देश्य उसकी सोच को बदलना है, न कि झूठा बयान निकलवाना, और आगे कहता है कि एक बार ठीक हो जाने पर - पार्टी द्वारा वर्णित वास्तविकता को स्वीकार कर लेने पर - उसे फाँसी दे दी जाएगी; बिजली के झटके से यातना दी जाएगी, जो तब तक जारी रहेगी जब तक ओ'ब्रायन यह तय नहीं कर लेता कि विंस्टन ठीक हो गया है।

संपूर्ण तुलनात्मक विश्लेषण के लिए, "1984" नामक पुस्तक पढ़ें या Wikipedia.org पर इंटरनेट पर पुस्तक के संपूर्ण संदर्भ को पढ़ें, जिसका अंश नीचे दिया गया है:

जॉर्ज ऑरवेल (एरिक आर्थर ब्लेयर का उपनाम) द्वारा लिखित "नाइनटीन एटी-फोर" (जिसे 1984 के नाम से भी जाना जाता है) एक अंग्रेजी डिस्टोपियन उपन्यास है जो सत्य मंत्रालय में कार्यरत एक बुद्धिजीवी विंस्टन स्मिथ के जीवन और 1984 में ओशिनिया की अधिनायकवादी सरकार से टकराव होने पर उसके पतन के बारे में है।

ऑरवेल के प्रभाव

अपने निबंध 'व्हाई आई राइट' में ऑरवेल बताते हैं कि 1936 में स्पेनिश गृहयुद्ध के बाद से उन्होंने जो भी गंभीर रचनाएँ लिखीं, वे सभी "प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अधिनायकवाद के विरुद्ध और लोकतांत्रिक समाजवाद के पक्ष में" थीं। इसलिए, 'नाइनटीन एटी-फोर' एक अधिनायकवाद-विरोधी चेतावनी है जो क्रांति के रक्षकों द्वारा उसके विश्वासघात को दर्शाती है। 'होमेज टू कैटालोनिया' और 'एनिमल फार्म' में भी वे अधिनायकवाद और विश्वासघातित क्रांतियों के प्रति अविश्वास व्यक्त कर चुके थे। 'कमिंग अप फॉर एयर' में कुछ जगहों पर 'नाइनटीन एटी-फोर' में खोई हुई व्यक्तिगत और राजनीतिक स्वतंत्रता का जश्न मनाया गया है।

उपन्यास का शीर्षक, उसके शब्द और भाषा (न्यूस्पीक), और उसके लेखक का उपनाम राष्ट्रीय राज्य सुरक्षा के नाम पर खोई हुई व्यक्तिगत निजता के पर्याय बन गए हैं। विशेषण "ऑरवेलियन" अधिनायकवादी कार्रवाई और संगठन को दर्शाता है; वाक्यांश: बिग ब्रदर इज़ वाचिंग यू व्यापक, घुसपैठिया निगरानी का संकेत देता है। निम्नलिखित उद्धरण प्रसिद्ध हो गया है:

युद्ध ही शांति है, स्वतंत्रता ही गुलामी है, अज्ञान ही शक्ति है।

हालांकि कुछ देशों में इस उपन्यास पर प्रतिबंध लगा दिया गया है या इसे चुनौती दी गई है, फिर भी यह एल्डस हक्सले की 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' और रे ब्रैडबरी की 'फारेनहाइट 451' के साथ साहित्य की सबसे प्रसिद्ध डिस्टोपिया रचनाओं में से एक है। 2005 में, टाइम पत्रिका ने इसे 1923 के बाद प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ सौ अंग्रेजी उपन्यासों में शामिल किया था।

उन्नीस सौ चौरासी ओशिनिया का परिचय कराती है, जो विश्व के तीन अंतरमहाद्वीपीय अधिनायकवादी महाशक्तियों में से एक है। कहानी लंदन में घटित होती है, जो "एयरस्ट्रिप वन

का प्रमुख शहर" है, और स्वयं ओशिनिया का एक प्रांत है जिसे "इंग्लैंड या ब्रिटेन" कहा जाता था। पार्टी नेता "बिग ब्रदर" के पोस्टर, जिन पर "बिग ब्रदर आपको देख रहा है" लिखा है, शहर के परिदृश्य पर हावी हैं; दो-तरफ़ा टेलीविजन (टेलीस्क्रीन) जनता के निजी और सार्वजनिक स्थानों पर सर्वत्र व्याप्त है।

ओशिनिया के लोग तीन वर्गों में विभाजित हैं — (i) आंतरिक दल, (ii) बाह्य दल और (iii) "प्रोल्स"। यह सरकार, जिसे पार्टी कहा जाता है, सत्य मंत्रालय (मिनीट्रू) के माध्यम से इन पर नियंत्रण रखती है, जहाँ नायक विंस्टन स्मिथ काम करता है; वह बाह्य दल का सदस्य है। मिनीट्रू में उसका काम इतिहास को लगातार पुनर्लिखना और उसमें हेरफेर करना है ताकि सरकार हमेशा सही और सटीक साबित हो: सबूतों को नष्ट करना, अखबारों के लेखों में संशोधन करना, और "अमानव" के रूप में पहचाने जाने वाले लोगों के अस्तित्व को मिटाना। कहानी 4 अप्रैल, 1984 को शुरू होती है: "अप्रैल का एक चमकदार ठंडा दिन था, और घड़ियों में तेरह बज रहे थे।" तारीख संदिग्ध है, क्योंकि यह विंस्टन स्मिथ की धारणा पर आधारित है। कहानी के दौरान, वह इसे अप्रासंगिक मान लेता है, क्योंकि राज्य इसे मनमाने ढंग से बदल सकता है; वर्ष 1984 और उसकी दुनिया परिवर्तनशील है।

यह उपन्यास 1984 तक के विश्व के संपूर्ण इतिहास को प्रस्तुत नहीं करता है। दरअसल, चूंकि विंस्टन को जो पुस्तक पढ़ने को मिलती है, वह उसे एक पार्टी सदस्य द्वारा दी जाती है, इसलिए यह संभव है कि पुस्तक स्वयं एक छल हो, और 1984 के विश्व का इतिहास कुछ अलग हो। विंस्टन का

उनकी स्मृतियों और इमैनुअल गोल्डस्टीन द्वारा लिखित 'द थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ ओलिगार्चिकल कलेक्टिविज्म' में उनके द्वारा पढ़े गए तथ्यों से पता चलता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, यूनाइटेड किंगडम गृहयुद्ध में उलझ गया और ओशिनिया का हिस्सा बन गया। साथ ही, सोवियत संघ ने मुख्य भूमि यूरोप को अपने में समाहित कर लिया और यूरेशिया का गठन किया; तीसरा महाशक्तिशाली राज्य, ईस्टएशिया, चीन और जापान के आसपास के पूर्वी एशियाई देशों से मिलकर बना है।

एक परमाणु युद्ध हुआ, जो मुख्य रूप से यूरोप, पश्चिमी रूस और उत्तरी अमेरिका में लड़ा गया। यह स्पष्ट नहीं है कि पहले क्या हुआ: वह गृहयुद्ध जिसमें पार्टी ने सत्ता संभाली, या संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य का विलय, या वह युद्ध जिसके दौरान कोलचेस्टर पर बमबारी हुई।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, जॉर्ज ऑरवेल ने बार-बार कहा कि 1939 से पहले मौजूद ब्रिटिश लोकतंत्र युद्ध में टिक नहीं पाएगा; सवाल यह था: क्या इसका अंत फासीवादी तख्तापलट (ऊपर से) के माध्यम से होगा या समाजवादी क्रांति (नीचे से) के माध्यम से? युद्ध के दौरान, ऑरवेल ने स्वीकार किया कि घटनाओं ने उन्हें गलत साबित कर दिया: "वास्तव में महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं इस भ्रम में पड़ गया था कि 'युद्ध और क्रांति अविभाज्य हैं'।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

96

"...युद्ध इलेक्ट्रॉनिक तोपों से लड़े जाते हैं।"

"भविष्य में युद्ध बिजली के साधनों से लड़े जाएंगे, यह भविष्यवाणी करना मुझे जोखिम भरा नहीं लगता।" -- निकोला टेस्ला, 1915

टेस्ला ने "टेलीफोर्स" नामक हथियार के संबंध में कुछ उल्लेखनीय दावे किए। प्रेस ने इसे "शांति किरण" या मृत्यु किरण कहा। कुल मिलाकर, इसके घटकों और विधियों में निम्नलिखित शामिल थे:

1. उच्च तापमान के बजाय खुली हवा में ऊर्जा की अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न करने वाला एक उपकरण।

अतीत की तरह निर्वात। टेस्ला के अनुसार, 1934 में यह हासिल किया गया था। 2. अत्यधिक विद्युत बल उत्पन्न करने की एक प्रणाली। टेस्ला के अनुसार,
यह कार्य भी पूरा हो गया।
3. दूसरे बल द्वारा उत्पन्न बल को तीव्र और प्रवर्धित करने का एक साधन।
तंत्र।
4. अत्यधिक विद्युत प्रतिकर्षण बल उत्पन्न करने की एक नई विधि। यह विधि होगी:
इस आविष्कार का प्रक्षेपक, या बंदूक।
टेस्ला ने 1900 के दशक की शुरुआत से लेकर अपनी मृत्यु तक निर्देशित-ऊर्जा हथियार की योजनाओं पर काम किया। 1937 में, टेस्ला ने आवेशित कण प्रक्षेपों के बारे में "प्राकृतिक माध्यमों के माध्यम से केंद्रित अविक्षेपणीय ऊर्जा प्रक्षेपित करने की कला" नामक एक ग्रंथ लिखा। टेस्ला ने इस दस्तावेज़ को "एक ऐसे महाहथियार" के तकनीकी विवरण को स्पष्ट करने के प्रयास में प्रकाशित किया जो सभी युद्धों को समाप्त कर देगा। कण प्रक्षेप पर यह ग्रंथ वर्तमान में बेलग्रेड के निकोला टेस्ला संग्रहालय के अभिलेखागार में है। इसमें एक खुले सिरे वाली निर्वात नली का वर्णन किया गया है जिसमें गैस जेट सील लगी होती है जो कणों को बाहर निकलने देती है, कणों को लाखों वोल्ट तक आवेशित करने की विधि और (विद्युतस्थ प्रतिकर्षण के माध्यम से) अविक्षेपणीय कण धाराओं को बनाने और निर्देशित करने की विधि का वर्णन किया गया है।
उनके अभिलेखों से पता चलता है कि यह तरल पारे या टंगस्टन के परमाणु समूहों की एक संकीर्ण धारा पर आधारित था, जिसे उच्च वोल्टेज (उनके आवर्धक ट्रांसफार्मर के समान एक उपकरण द्वारा) के माध्यम से त्वरित किया जाता था। टेस्ला ने कण तोप के संचालन के बारे में निम्नलिखित विवरण दिया: "[नोजल] मुक्त हवा में कणों की केंद्रित किरणें भेजेगा, जिनकी ऊर्जा इतनी जबरदस्त होगी कि वे किसी देश की सीमा से 200 मील की दूरी पर 10,000 शत्रु विमानों के बेड़े को गिरा देंगे और सेनाओं को उनके स्थान पर ही मृत कर देंगे।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

97

"...जैसे धुरी शक्तियां..."

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मित्र देशों के विरोधी रहे धुरी शक्तियाँ, जिन्हें धुरी गठबंधन, धुरी राष्ट्र, धुरी देश या कभी-कभी केवल धुरी भी कहा जाता है, वे देश थे। तीन प्रमुख धुरी शक्तियाँ - नाज़ी जर्मनी, फ़ासिस्ट इटली और साम्राज्यवादी जापान - सितंबर 1940 में त्रिपक्षीय संधि पर हस्ताक्षर के साथ एक सैन्य गठबंधन का हिस्सा बनीं, जिसने आधिकारिक तौर पर धुरी शक्तियों की स्थापना की। अपने चरम पर, धुरी शक्तियों ने यूरोप, अफ्रीका, पूर्वी और दक्षिणपूर्वी एशिया और प्रशांत महासागर के बड़े हिस्सों पर प्रभुत्व वाले साम्राज्यों पर शासन किया, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध उनकी पूर्ण पराजय के साथ समाप्त हुआ। मित्र देशों की तरह, धुरी की सदस्यता भी अस्थिर थी, और युद्ध के दौरान कुछ देश धुरी में शामिल हुए और बाद में इससे अलग हो गए।

इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम बेनिटो मुसोलिनी ने नवंबर 1936 में किया था, जब उन्होंने 25 अक्टूबर 1936 को इटली और जर्मनी के बीच हस्ताक्षरित मैत्री संधि से उत्पन्न रोम-बर्लिन धुरी की बात की थी। मुसोलिनी ने घोषणा की कि दोनों देश एक "धुरी" बनाएंगे जिसके चारों ओर यूरोप के अन्य राज्य घूमेंगे। यह संधि तब हुई जब इटली, जो मूल रूप से जर्मनी का विरोधी था, को अबीसीनिया में अपने युद्ध के लिए राष्ट्र संघ से विरोध का सामना करना पड़ा और उसे जर्मनी से समर्थन प्राप्त हुआ। बाद में, मई 1939 में, यह संबंध एक गठबंधन में परिवर्तित हो गया, जिसे मुसोलिनी ने "स्टील संधि" का नाम दिया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

98

"...वैदिक भजन..."

वेद अत्यंत विस्तृत ग्रंथ हैं। प्रत्येक वेद में कई खंड और हजारों श्लोक हैं। कुछ वैदिक श्लोक, विशेषकर ऋग्वेद के श्लोक, कम से कम 6000-8000 वर्ष पुराने माने जाते हैं। वेदों को ईश्वरीय वाणी माना जाता है, क्योंकि इन्हें दिव्य उत्पत्ति का माना जाता है। चूंकि इन्हें किसी

मनुष्य द्वारा नहीं लिखा गया था, बल्कि गहन ध्यान अवस्था में ही सुना गया था, इसलिए इन्हें सामान्यतः "सुने गए" कहा जाता है।
यह ऋग्वेद के सबसे प्रसिद्ध भजनों में से एक है: "सृष्टि का भजन"।
"एक ऐसे समय की कल्पना की गई है जब दुनिया नहीं थी, केवल एक जलमय अराजकता थी (अंधेरा,
एक "अविभाज्य सागर" और एक गर्म ब्रह्मांडीय श्वास, जो जीवन को प्रेरणा दे सकती है। ध्यान दीजिए कि कैसे विचार इच्छा को जन्म देता है (जब किसी चीज़ के बारे में सोचा जाता है तो उसकी इच्छा की जा सकती है) और इच्छा अस्तित्वहीनता को अस्तित्व से जोड़ती है (हम उस चीज़ की इच्छा करते हैं जो अस्तित्व में नहीं है, लेकिन फिर उसे अस्तित्व में लाने का प्रयास करते हैं)। फिर भी, पूरी प्रक्रिया रहस्य से घिरी हुई है।
इस सृष्टि रचना में देवताओं की क्या भूमिका है?
जो अस्तित्वहीन था, वह नहीं था; जो अस्तित्व में था, वह उस समय नहीं था। न तो वातावरण था, न ही उससे परे का आकाश। क्या छिपा हुआ था? कहाँ? किसकी सुरक्षा में? क्या वह पानी था? या कोई अथाह खाई?
तब न तो मृत्यु थी और न ही अमरता। दिन-रात का कोई भेद नहीं था। केवल वही अपनी शक्ति से निर्वात में सांस लेता था। उसके अलावा और कुछ नहीं था।
आरंभ में अंधकार अंधकार में छिपा हुआ था। यह सब एक अविभाज्य सागर था। जो कुछ भी उत्पन्न हुआ, जो शून्य में समाया हुआ था, वह केवल ऊष्मा की शक्ति से ही उत्पन्न हुआ था।

आरंभ में इसी इच्छा का उदय हुआ। यही विचार की पहली अभिव्यक्ति थी। ऋषियों ने हृदय में गहन ज्ञान का प्रयोग करके विद्यमान और असत्य के इस संबंध का पता लगाया।
उनकी दृष्टि का दायरा व्यापक था; नीचे क्या था, ऊपर क्या था? गर्भ धारण करने वाले थे, शक्तियाँ थीं: नीचे अंतर्निहित शक्ति, ऊपर आवेग।
कौन जानता है सच में? यहाँ कौन बताएगा कि यह कहाँ से उत्पन्न हुआ, यह सृष्टि कहाँ से आई? देवता तो इसके बाद आए हैं। तो फिर कौन जानता है कि यह कहाँ से अस्तित्व में आया?
यह सृष्टि कहाँ से अस्तित्व में आई; इसे बनाया गया था या नहीं; इसका अवलोकन सर्वोच्च स्वर्ग में बैठा वही कर सकता है। निश्चय ही वह जानता है, या शायद वह नहीं जानता।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
99
"...आर्यन लोग..."
वैदिक शब्द आर्य का सबसे पुराना अर्थ "अजनबी" है, लेकिन "अजनबी" का अर्थ "संभावित अतिथि" होता है। संस्कृत शब्दकोश में आर्य को महाकुल कुलिनार्य "कुलीन परिवार का", सभ्य "विनम्र या परिष्कृत व्यवहार वाला", सज्जन "कुलीन और सम्माननीय" और साध्व "गुणी, आदरणीय या धर्मी" के रूप में परिभाषित किया गया है। आर्य एक सम्मान और आदर की उपाधि है जो कुछ लोगों को उनके नेक व्यवहार के लिए दी जाती है।
आर्यन जाति शब्द का प्रयोग 20 वीं शताब्दी के आरंभ में यूरोपीय नस्लीय सिद्धांतकारों द्वारा किया गया था, जो मानवता को जैविक रूप से भिन्न विशेषताओं वाली विशिष्ट नस्लों में विभाजित करने में दृढ़ विश्वास रखते थे। इन लेखकों का मानना था कि प्रोटो-इंडो-यूरोपियन एक विशिष्ट नस्ल थे जो यूरोप, ईरान और उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों में फैले हुए थे। इस प्रयोग में संस्कृत के "महान" या "उत्कृष्ट" अर्थ को भाषा वितरण द्वारा चिह्नित विशिष्ट व्यवहारिक और पैतृक जातीयता के विचार के साथ मिला दिया जाता है।
नाज़ीवाद ने "आर्यन जाति" की अपनी व्याख्या को एकमात्र ऐसी जाति के रूप में प्रस्तुत किया जो संस्कृति और सभ्यताओं के निर्माण और संरक्षण में सक्षम या रुचि रखती है, जबकि अन्य

जातियाँ केवल धर्म परिवर्तन या संस्कृति के विनाश में सक्षम हैं। ये तर्क उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के नस्लीय पदानुक्रमों से उत्पन्न हुए थे। कुछ नाज़ी मैडम ब्लावत्स्की की पुस्तक "द सीक्रेट डॉक्ट्रिन" (1888) से भी प्रभावित थे, जिसमें उन्होंने "आर्यों" को अपनी "मूल जातियों" में से पाँचवीं जाति के रूप में माना है, और उनकी उत्पत्ति लगभग दस लाख वर्ष पूर्व बताई है, जिसका संबंध अटलांटिस से है।

आर्यन शब्द के ऐतिहासिक नस्लवादी उपयोग, और विशेष रूप से नाज़ीवाद के प्रचार के संबंध में आर्यन नस्ल के उपयोग के कारण, पश्चिम में इस शब्द को कभी-कभी स्वास्तिक चिन्ह की तरह ही कलंकित मानकर टाला जाता है। वर्तमान में, भारत और ईरान ही ऐसे देश हैं जो जनसांख्यिकीय वर्गीकरण में आर्यन शब्द का उपयोग करते हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

100

"...वैदिक भजन..."

"वेद शब्द का अर्थ 'ज्ञान' है, (पवित्र) विद्या में ऐसे ग्रंथों का समूह समाहित है जिनकी उत्पत्ति दैवीय रहस्योद्घाटन (श्रुति, शाब्दिक रूप से 'सुनना') से मानी जाती है, और जो ब्राह्मणवादी धार्मिक विश्वास प्रणाली की नींव बनाते हैं। इस पवित्र ग्रंथ को तीन या (बाद की एक योजना के अनुसार) चार समन्वित संग्रहों में विभाजित किया गया है, जिन्हें वेद कहा जाता है।"

229

(1) ऋग्वेद, या स्तुति (या भजनों) का ज्ञान; (2) सामवेद, या धुनों (या मंत्रों) का ज्ञान; (3) यजुर्वेद, या प्रार्थना (या यज्ञ संबंधी सूत्रों) का ज्ञान; और (4) अथर्ववेद, या अथर्ववेदों का ज्ञान। इन चारों वेदों में से प्रत्येक में मुख्य रूप से भक्तिमय प्रकृति के पवित्र, अधिकतर काव्यात्मक ग्रंथों का संग्रह (संहिता) है, जिसे मंत्र कहा जाता है। ग्रंथों के इस संपूर्ण समूह (और विशेष रूप से पहले तीन संग्रहों) को अक्सर त्रयी विद्या, या भजनों (ऋक्), धुन या मंत्र (सामन) और प्रार्थना (यजुस) की त्रिविध ज्ञान के रूप में भी जाना जाता है, यदि चौथे वेद को इसमें शामिल किया जाता है, तो उसे ऋक् के साथ ही वर्गीकृत किया जाता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

101

"...विष्णु..."

विष्णु समस्त प्राणियों का सर्वव्यापी सार हैं, भूत, वर्तमान और भविष्य के स्वामी और उनसे परे हैं, समस्त अस्तित्वों के सृष्टिकर्ता और संहारक हैं, ब्रह्मांड को सहारा देने, पालने-पोसने और नियंत्रित करने वाले हैं तथा उसमें सभी तत्वों की उत्पत्ति और विकास करने वाले हैं। ऋग्वेद में विष्णु का उल्लेख 93 बार किया गया है।

विउ नाम की परंपरागत संस्कृत व्याख्या में मूल शब्द 'विश्' शामिल है, जिसका अर्थ है "बसना, प्रवेश करना" या "व्यापक होना", और प्रत्यय 'नु', जिसका अनुवाद लगभग "सर्वव्यापी" होता है।

उनके नौ अवतार हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे अतीत में घटित हुए थे, और एक अवतार कलियुग के अंत में घटित होना बाकी है। भगवद् गीता में उनके उद्देश्य को नकारात्मक शक्तियों का पराजय कराना बताया गया है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

102

"...पूर्व जन्म।"

स्मृतिभ्रंश और बंदी ग्रह पर किए जा रहे ऑपरेशन के संदर्भ में, "पूर्व जन्मों" का परिदृश्य स्वतः ही "भविष्य के जन्म" का संकेत देता है। यह पुनर्जन्म की घटना को दर्शाता है।

पुनर्जन्म, जिसका शाब्दिक अर्थ है "पुनः शरीर धारण करना", एक ऐसा सिद्धांत या आध्यात्मिक मान्यता है जिसके अनुसार किसी भी जीवित प्राणी (कुछ रूपों में केवल मनुष्य) का कोई अनिवार्य अंश मृत्यु के बाद भी जीवित रहता है और नए शरीर में पुनर्जन्म लेता है। इस अनिवार्य अंश को अक्सर आत्मा, "उच्चतर" या "सच्चा" स्व, "दिव्य चिंगारी" या "मैं" कहा जाता है। ऐसी मान्यताओं के अनुसार, भौतिक जगत में प्रत्येक जीवन के दौरान एक नया व्यक्तित्व विकसित होता है, लेकिन स्व का कुछ अंश सभी जन्मों में स्थिर रहता है।
पुनर्जन्म में विश्वास एक प्राचीन अवधारणा है। यह सिद्धांत हिंदू धर्म (योग, वैष्णववाद और शैव धर्म सहित), जैन धर्म और सिख धर्म जैसी अधिकांश भारतीय धार्मिक परंपराओं का एक प्रमुख आधार है। प्राचीन यूनानी दार्शनिकों ने भी इस विचार पर विचार किया था। कई आधुनिक पैगन भी पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, साथ ही कुछ न्यू एज आंदोलन, स्पिरिटिज्म के अनुयायी, कुछ अफ्रीकी परंपराओं के अनुयायी और कबाला, सूफीवाद और ग्नोस्टिक एवं गूढ़ ईसाई धर्म जैसे गूढ़ दर्शन के छात्र भी इसमें विश्वास रखते हैं। बौद्ध धर्म की पुनर्जन्म की अवधारणा, जिसे अक्सर पुनर्जन्म कहा जाता है, हिंदू धर्म की परंपराओं और न्यू एज आंदोलनों से इस मायने में काफी भिन्न है कि इसमें पुनर्जन्म लेने के लिए कोई "स्व" (या शाश्वत आत्मा) नहीं है।
हाल के दशकों में, पश्चिम में लोगों के एक महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक वर्ग ने पुनर्जन्म में विश्वास विकसित किया है। उल्लेखनीय अपवादों में हेनरी फोर्ड और जनरल जॉर्ज पैटन शामिल हैं।

हेनरी फोर्ड को पूरा विश्वास था कि वह पहले भी जी चुके हैं, और हाल ही में उन्होंने गेटिसबर्ग की लड़ाई में एक सैनिक के रूप में अपनी जान गंवाई थी। 26 अगस्त, 1928 के सैन फ्रांसिस्को एग्जामिनर के एक उद्धरण में फोर्ड के विश्वासों का वर्णन किया गया है:
मैंने छब्बीस वर्ष की आयु में पुनर्जन्म के सिद्धांत को अपनाया। धर्म से मुझे कोई ठोस मार्गदर्शन नहीं मिला। यहाँ तक कि काम से भी मुझे पूर्ण संतुष्टि नहीं मिली। काम व्यर्थ है यदि हम एक जीवन के अनुभव को अगले जीवन में उपयोग न कर सकें। जब मैंने पुनर्जन्म के बारे में जाना, तो ऐसा लगा जैसे मुझे कोई सर्वव्यापी योजना मिल गई हो। मुझे एहसास हुआ कि मेरे विचारों को साकार करने का अवसर है। समय अब सीमित नहीं था। मैं अब घड़ी की सुइयों का गुलाम नहीं था। प्रतिभा अनुभव से आती है। कुछ लोग इसे वरदान या प्रतिभा मानते हैं, लेकिन यह कई जन्मों के लंबे अनुभव का फल है। कुछ आत्माएँ दूसरों से अधिक परिपक्व होती हैं, इसलिए वे अधिक जानती हैं। पुनर्जन्म की खोज ने मेरे मन को शांति प्रदान की। यदि आप इस बातचीत का रिकॉर्ड रखें, तो इसे लिखें ताकि यह लोगों के मन को शांति दे सके। मैं दूसरों को जीवन के दीर्घकालिक दृष्टिकोण से मिलने वाली शांति का संदेश देना चाहता हूँ।
जनरल जॉर्ज एस. पैटन पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रखते थे और अपने परिवार के कई अन्य सदस्यों के साथ अक्सर अपने पूर्वजों के सजीव और स्पष्ट दर्शन होने का दावा करते थे। विशेष रूप से, पैटन का मानना था कि वे कार्थेजियन जनरल हैनिबल का पुनर्जन्म थे।
पुनर्जन्म के पक्ष में व्यक्तिगत रिपोर्टों का सबसे विस्तृत संग्रह वर्जीनिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर इयान स्टीवेन्सन द्वारा ट्वेंटी केसेज सजेस्टिव ऑफ रीइन्कार्नेशन जैसी पुस्तकों में प्रकाशित किया गया है।
स्टीवेन्सन ने 40 से अधिक वर्ष उन बच्चों के अध्ययन में समर्पित किए जिन्होंने कथित तौर पर अपने पूर्व जीवन के बारे में बताया था। प्रत्येक मामले में, प्रोफेसर स्टीवेन्सन ने बच्चे के कथनों को व्यवस्थित रूप से दस्तावेजित किया। फिर उन्होंने उस मृत व्यक्ति की पहचान की जिससे बच्चा कथित तौर पर खुद को जोड़ता था, और मृत व्यक्ति के जीवन के उन तथ्यों की पुष्टि की जो बच्चे की स्मृति से मेल खाते थे। उन्होंने जन्मचिह्नों और जन्मजात विकारों का मिलान मृत

व्यक्ति के घावों और निशानों से भी किया, जिसकी पुष्टि शव परीक्षण की तस्वीरों जैसे चिकित्सा अभिलेखों से की गई।
एक आम घटना में, बेरूत के एक लड़के ने बताया कि वह 25 साल का मैकेनिक था, जिसकी समुद्र तट की सड़क पर तेज रफ्तार कार से गिरने से मौत हो गई। कई गवाहों के अनुसार, लड़के ने चालक का नाम, दुर्घटनास्थल का सटीक स्थान, मैकेनिक की बहनों, माता-पिता और चचेरे भाइयों के नाम, और उन लोगों के नाम बताए जिनके साथ वह शिकार पर जाता था - ये सभी बातें उस व्यक्ति के जीवन से मेल खाती थीं, जिसकी मृत्यु लड़के के जन्म से कई साल पहले हो गई थी, और जिसका लड़के के परिवार से कोई स्पष्ट संबंध नहीं था।
स्टीवेन्सन का मानना था कि उनकी कठोर पद्धतियों ने बच्चे की यादों के सभी संभावित "सामान्य" स्पष्टीकरणों को खारिज कर दिया था। हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि प्रोफेसर स्टीवेन्सन द्वारा रिपोर्ट किए गए पुनर्जन्म के अधिकांश मामले पूर्वी समाजों से संबंधित हैं, जहां प्रमुख धर्म अक्सर पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार की आलोचना के बाद, स्टीवेन्सन ने पुनर्जन्म के संकेत देने वाले यूरोपीय मामलों पर एक पुस्तक प्रकाशित की।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
103
"...मूसा..."
अखेनातेन के देवता और स्वर्गिक पिता, एटेन के कार्टूश पर इमरान नाम अंकित था। बाइबिल में, मूसा को अमराम का पुत्र कहा गया है, जो हिब्रू भाषा में अमराम का समकक्ष है।
231

मिस्र के देवता एटेन का नाम हिब्रू शब्द एडोन में लिप्यंतरित होता है। एडोन, जिसका अंग्रेजी बाइबलों में अनुवाद "प्रभु" (और एडोनाई, जिसका अनुवाद "मेरा प्रभु") के रूप में किया गया है, बाइबल में यहोवा (Yhwh) के साथ ईश्वर के अनन्य व्यक्तिगत नामों के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, प्राचीन काल में, यहोवा (Yhwh) नाम लिखा जाता था, लेकिन कभी बोला नहीं जाता था। जब भी यहोवा (Yhwh) का लिखित नाम जोर से पढ़ा जाना होता था, तो उसके स्थान पर एडोन (एटेन) का उच्चारण किया जाता था। एडोन का लिखित रूप दुर्लभ है, हालांकि, इसका सीमित उपयोग महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से बाइबल की पहली छह पुस्तकों में (स्ट्रॉन्ग के संपूर्ण शब्दकोश में "प्रभु" के अंतर्गत देखें), जहां यह केवल निम्नलिखित अनुप्रयोगों के लिए आरक्षित है: मूसा ईश्वर को एडोन/एटेन उपाधि से संबोधित करता है (निर्गमन 4:10,13; 5:22; 34:9; गिनती 14:17; व्यवस्थाविवरण 3:23; 7:26; 10:17); मूसा को स्वयं हारून (निर्गमन 32:22; गिनती 12:11) और यहोशू (गिनती 11:28) दोनों ने अदोन/अतेन उपाधि से संबोधित किया है; और यहोशू भी परमेश्वर को अदोन/अतेन उपाधि से संबोधित करते हैं (यहोशू 5:14 ख; 7:7)। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, मिस्र के 18 वें राजवंश के साहित्य और बाइबिल के बीच एक स्थापित संबंध है। भजन संहिता 104, अखेतेन शहर में पुरातत्वविदों द्वारा पाए गए अतेन के भजन का एक अलंकृत रूप है।

http://www.domainofman.com/ankhemmaat/moses.html

हाल ही में प्रचलित और गैर-बाइबलीय मत के अनुसार, मूसा फिरौन अखेनातेन के दरबार में एक कुलीन व्यक्ति थे। सिगमंड फ्रायड से लेकर जोसेफ कैंपबेल तक कई विद्वानों का मानना है कि अखेनातेन की मृत्यु (लगभग 1334 ईसा पूर्व) के बाद मूसा मिस्र से भाग गए होंगे, जब फिरौन के कई एकेश्वरवादी सुधारों को हिंसक रूप से उलट दिया जा रहा था। इस सिद्धांत के पीछे मुख्य विचार ये हैं: अखेनातेन का एकेश्वरवादी धर्म मूसा के एकेश्वरवाद का संभावित पूर्ववर्ती हो सकता है, और कुलीनों द्वारा अखेनातेन को लिखे गए "अमरना पत्र", जिनमें मेसोपोटामिया में मिस्र के क्षेत्रों पर आक्रमण करने वाले "हाबिरू" के हमलावर गिरोहों का वर्णन है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

104

"...अमेनहोटेप तृतीय..."

अमेनहोटेप तृतीय, जिसका अर्थ है अमुन संतुष्ट, अठारहवीं राजवंश के नौवें फिरौन थे। विभिन्न लेखकों के अनुसार, उन्होंने जून 1391 ईसा पूर्व से दिसंबर 1353 ईसा पूर्व तक या अपने पिता थुटमोस चतुर्थ की मृत्यु के बाद जून 1388 ईसा पूर्व से दिसंबर 1351 ईसा पूर्व/1350 ईसा पूर्व तक मिस्र पर शासन किया। अमेनहोटेप तृतीय, थुटमोस चतुर्थ और उनकी एक अन्य पत्नी मुतेमविया के पुत्र थे। अमेनहोटेप तृतीय के अपनी महान पत्नी तिये से दो पुत्र थे, जो युवराज तुथमोस (जिनकी मृत्यु उनके पिता से पहले हो गई थी) के माध्यम से एकेश्वरवाद की प्रवर्तक के रूप में जानी जाने वाली एक महान रानी थीं, और उनके दूसरे पुत्र अखेनातेन थे, जो अंततः उनके उत्तराधिकारी बने।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

105

"...अखेनातेन..."

अखेनातेन, जिसका अर्थ है एटेन की प्रभावी आत्मा, जिसे पहले अमेनहोटेप चतुर्थ (कभी-कभी अमेनोफिस चतुर्थ भी पढ़ा जाता है और जिसका अर्थ है अमून संतुष्ट है) के नाम से जाना जाता था, मिस्र के अठारहवें राजवंश का एक फ़राओ था। वह विशेष रूप से मिस्र की आबादी को एटेन की एकेश्वरवादी पूजा में विवश करने के प्रयास के लिए जाना जाता है, हालांकि इस बात पर संदेह है कि वह इसमें कितना सफल रहा।

अमेनहोतेप तृतीय की 38 वर्षों के शासनकाल के अंत में मृत्यु के बाद अमेनहोतेप चतुर्थ ने अपने पिता का स्थान लिया। संभवतः उनके बीच एक सह-शासन रहा जो 1 से 2 या 12 वर्षों तक चला। मिस्र के कालक्रम से संबंधित विवादों के कारण अखेनातेन के शासनकाल की संभावित तिथियां 1353 ईसा पूर्व से 1336 ईसा पूर्व या 1351 ईसा पूर्व से 1334 ईसा पूर्व हैं। अखेनातेन की प्रमुख पत्नी नेफ़र्टिटी थीं।

ऐसा प्रतीत होता है कि उनके धार्मिक सुधार की शुरुआत उनके शासनकाल के तीसरे वर्ष में सेड उत्सव मनाने के उनके निर्णय से हुई - यह एक अत्यंत असामान्य कदम था, क्योंकि सेड उत्सव, जो कि एक प्रकार का शाही जयंती समारोह था जिसका उद्देश्य फिरौन की राजत्व की दैवीय शक्तियों को सुदृढ़ करना था, परंपरागत रूप से फिरौन के शासनकाल के तीसवें वर्ष में आयोजित किया जाता था।
आठवें वर्ष में, उनकी नई राजधानी अखेतेन ('अतेन का क्षितिज') का निर्माण शुरू हुआ, जो आज अमरना के नाम से जाना जाता है। उसी वर्ष, अमेनहोतेप चतुर्थ ने अपने धार्मिक दृष्टिकोण में बदलाव के प्रमाण के रूप में आधिकारिक तौर पर अपना नाम बदलकर अखेनातेन ('अतेन की प्रभावशाली आत्मा') रख लिया। इसके तुरंत बाद, उन्होंने अखेनातेन में मिस्र की धार्मिक प्रथाओं को केंद्रीकृत कर दिया, हालांकि शहर का निर्माण कई और वर्षों तक जारी रहा। अतेन के सम्मान में, अखेनातेन ने प्राचीन मिस्र के कुछ सबसे विशाल मंदिर परिसरों के निर्माण की देखरेख भी की, जिनमें अमून के पुराने मंदिर के पास स्थित करनाक का एक मंदिर भी शामिल है। इन नए मंदिरों में, अतेन की पूजा खुले सूर्य के प्रकाश में की जाती थी, न कि अंधेरे मंदिर परिसरों में, जैसा कि पहले प्रथा थी। ऐसा माना जाता है कि अखेनातेन ने ही अतेन के लिए महान भजन की रचना की थी।
आरंभ में, अखेनातेन ने एटेन को प्रचलित सर्वोच्च देवता अमून-रा के एक रूप के रूप में प्रस्तुत किया (जो स्वयं अमून पंथ के उदय का परिणाम था, जिसके कारण अमून सूर्य देवता रा में विलीन हो गया था), ताकि वह अपने विचारों को मिस्र के परिचित धार्मिक संदर्भ में रख सके। हालाँकि, अपने शासनकाल के नौवें वर्ष तक अखेनातेन ने घोषणा कर दी कि एटेन केवल सर्वोच्च देवता ही नहीं, बल्कि एकमात्र देवता है, और वह, अखेनातेन, एटेन और उसकी प्रजा के बीच एकमात्र मध्यस्थ है। उसने पूरे मिस्र में अमून के मंदिरों को विरूपित करने का आदेश दिया, और कई मामलों में 'देवताओं' के बहुवचन शिलालेखों को भी हटा दिया गया। नौवीं कक्षा के बाद एटेन का नाम भी अलग तरह से लिखा जाता है, जो नए शासन की कट्टरता पर ज़ोर देता है। इस कट्टरता में मूर्तियों पर प्रतिबंध शामिल था, सिवाय एक किरणयुक्त सौर चक्र के, जिसमें किरणें (आमतौर पर हाथों में समाप्त होती हुई दिखाई देती हैं) एटेन की

अदृश्य आत्मा का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती हैं, जिन्हें उस समय तक स्पष्ट रूप से केवल सूर्य देवता नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक देवता माना जाता था। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि एटेन के चित्रण के साथ हमेशा एक प्रकार का "चित्रलिपि फुटनोट" होता था, जिसमें कहा गया था कि सूर्य को सर्व-शक्तिशाली देवता के रूप में दर्शाना
सृष्टिकर्ता को समाहित करने का अर्थ केवल यही था: किसी ऐसी चीज़ का प्रतिनिधित्व जो अपनी प्रकृति के कारण, सृष्टि से परे होने के कारण, पूरी तरह या पर्याप्त रूप से व्यक्त नहीं की जा सकती।
उस सृष्टि के किसी एक भाग द्वारा दर्शाया गया।"
अमरना काल में एक गंभीर महामारी भी फैली थी, संभवतः प्लेग, पोलियो या शायद इन्फ्लूएंजा का विश्व का पहला दर्ज प्रकोप, जो मिस्र से शुरू हुआ और पूरे मध्य पूर्व में फैल गया, जिससे हित्ती राजा सुप्पिलुलियम प्रथम की मृत्यु हो गई। इन्फ्लूएंजा एक ऐसी बीमारी है जो जलपक्षी, सूअर और मनुष्यों के निकट संपर्क से जुड़ी है, और एक महामारी के रूप में इसकी उत्पत्ति कृषि प्रणालियों के विकास के कारण हो सकती है जो इन जानवरों और उनके अपशिष्टों के मिश्रण की अनुमति देती हैं।
इस कृषि प्रणाली के कुछ पहले पुरातात्विक प्रमाण प्राचीन मिस्र के अमरना काल के दौरान मिलते हैं, और इस काल के बाद प्राचीन निकट पूर्व में फैली महामारी संभवतः इन्फ्लूएंजा का सबसे पहला दर्ज प्रकोप थी। हालांकि, इस मिस्र की महामारी का सटीक स्वरूप अभी भी अज्ञात है और एशिया को भी मनुष्यों में महामारी इन्फ्लूएंजा की उत्पत्ति का संभावित स्थान माना गया है। इस बीमारी के व्यापक प्रसार से अखेतेन स्थल के शीघ्र परित्याग की व्याख्या करने में मदद मिल सकती है। इससे यह भी स्पष्ट हो सकता है कि बाद की पीढ़ियों ने क्यों माना कि देवता अमरना के राजाओं के विरुद्ध हो गए थे। अमरना में महामारी के निशान पाए जाने के कारण काली महामारी का भी सुझाव दिया गया है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org

"... नेफ़र्टिटी..."
नेफ़र्टिटी (उस समय इसका उच्चारण लगभग *नाफ़राती ता होता था) (लगभग 1370 ईसा पूर्व - लगभग 1330 ईसा पूर्व) मिस्र के फ़राओ अखेनातेन की महान शाही पत्नी (या प्रमुख संगिनी/पत्नी) थीं। वह फ़राओ तुतनखामुन की सास और संभवतः सौतेली माँ थीं। हो सकता है कि नेफ़र्टिटी ने अपने पति की मृत्यु के बाद और तुतनखामुन के सिंहासन पर बैठने से पहले कुछ समय के लिए नेफ़रनेफ़रुआतेन के नाम से स्वयं फ़राओ के रूप में शासन किया हो, हालाँकि नवीनतम शोध इस पहचान पर संदेह पैदा करते हैं। उनके नाम का मोटे तौर पर अनुवाद "सुंदर (या परिपूर्ण) स्त्री आ गई है" होता है। उनका नाम एक प्रकार के लंबे सोने के मनके, जिसे "नेफ़र" कहा जाता है, से भी मिलता-जुलता है, जिसे अक्सर उन्हें पहने हुए चित्रित किया जाता था। उनकी प्रतिमा, जो अब बर्लिन के अल्टेस संग्रहालय में है, ने उन्हें प्रसिद्धि दिलाई।
नेफ़र्टिटी के माता-पिता के बारे में निश्चित रूप से जानकारी नहीं है, लेकिन अब आम तौर पर यह माना जाता है कि वह बाद में फ़राओ बनने वाले अय की पुत्री थीं। एक अन्य सिद्धांत, जिसे कुछ समर्थन मिला है, नेफ़र्टिटी को मिट्टानी राजकुमारी तादुखिपा के रूप में पहचानता है। पुराने ग्रंथों में निमेरिथिन नाम का उल्लेख एक वैकल्पिक नाम के रूप में मिलता है, लेकिन इसकी अभी तक आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। यह भी सुझाव दिया गया है कि नेफ़र्टिटी अमेनहोतेप तृतीय की पुत्री या रिश्तेदार थीं, या उच्च थेबन कुलीन वर्ग से थीं। एक अन्य सिद्धांत नेफ़र्टिटी को अमेनहोतेप तृतीय की सौतेली बहन सीतामुन की पुत्री बताता है। रानी इयारेट सीतामुन की माता थीं। इयारेट के पास महत्वपूर्ण वंशानुगत उपाधियाँ थीं जो अमेनहोतेप तृतीय के सिंहासनारोहण के बाद समाप्त हो गईं। सीतामुन को तिये के साथ महान शाही पत्नी का दर्जा दिया गया है, लेकिन इस बात का कोई संकेत नहीं है कि उनके कभी बच्चे थे और यदि थे तो किसके साथ। इन दोनों महिलाओं की उपाधियों के आधार पर कुछ प्रमाण मिलते हैं जो यह संकेत देते हैं कि वे किसी न किसी रूप में उनके परिवार में एक-दूसरे से संबंधित थीं... उनके नाम का अर्थ है "सुंदर"। नेफ़र्टिटी केवल एटेन नामक एक देवता

की पूजा करती थी। प्राचीन मिस्र के फ़राओओं की वंशावली के जिस भी पुनर्निर्माण का अनुसरण किया जाए, उसके अनुसार, उनके पति अखेनातेन फ़राओ तुतनखातेन (बाद में तुतनखामेन कहलाए) के पिता या सौतेले भाई हो सकते हैं।
फ़राओ अखेनातेन से उनकी छह ज्ञात बेटियाँ थीं। यह संभावित जन्म वर्षों के साथ एक सूची है:

• • • • • •

मेरिटेटेन: पहले वर्ष से पहले या पहले वर्ष की शुरुआत (1356 ईसा पूर्व)। मेकेतेटेन: वर्ष 1 या तीन (1349 ईसा पूर्व)।
अंखेसेनपातेन, जो बाद में तुतनखामुन की रानी बनीं।
नेफरनेफरुआतेन ताशेरित: वर्ष 6 (1344 ईसा पूर्व)
नेफ़रनेफ़र: वर्ष 9 (1341 ईसा पूर्व)।
सेटेपेनरे: वर्ष 11 (1339 ईसा पूर्व)।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
107
"... तुतनखामुन..."
वह अखेनातेन, जिन्हें अमेनहोतेप चतुर्थ के नाम से भी जाना जाता है, और उनकी नाबालिग पत्नी रानी किया के पुत्र थे। रानी किया की उपाधि "अखेनातेन की अत्यंत प्रिय पत्नी" थी, इसलिए संभव है कि उन्होंने उन्हें एक उत्तराधिकारी को जन्म दिया हो। इस सिद्धांत का समर्थन करते हुए, अखेनातेन के मकबरे की दीवार पर बने चित्र किया के मृत्युशय्या के पास एक शाही पंखाधारी को खड़े हुए दिखाते हैं, जो किसी राजकुमारी या अधिक संभावना है कि एक धाय को पंखा कर रहा है, जिसने एक बच्चे को गोद में लिया हुआ है, जिससे यह संकेत मिलता है कि धाय ने भावी राजा बालक को गोद में लिया हुआ था।
तुतनखामुन जब फ़राओ बना तब उसकी उम्र केवल नौ या दस वर्ष थी, और उसने लगभग दस वर्षों तक शासन किया, जिससे उसकी मृत्यु के समय उसकी आयु उन्नीस वर्ष थी।
ऐतिहासिक दृष्टि से तुतनखामुन का महत्व कट्टरपंथी धार्मिक नवाचारों को अस्वीकार करने से उत्पन्न होता है।

तुतनखामुन की स्थापना उनके पूर्ववर्ती अकेनहातेन ने की थी और उनकी कब्र, जो राजाओं की घाटी में स्थित है, लगभग पूरी तरह से सुरक्षित अवस्था में पाई गई थी - यह अब तक पाई गई सबसे पूर्ण प्राचीन मिस्र की कब्र है। चूंकि तुतनखामुन ने इतनी कम उम्र में अपना शासन शुरू किया था, इसलिए उनके वज़ीर और भावी उत्तराधिकारी अय ने संभवतः तुतनखामुन के शासनकाल के दौरान अधिकांश महत्वपूर्ण राजनीतिक निर्णय लिए थे।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

108

"...सांप के भाई"...

इस बात पर जोर देना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सर्प या नाग नियमित फ्रीमेसनरी की शिक्षाओं या अनुष्ठानों में कोई भूमिका नहीं निभाता है। मेसोनिक एप्रन के लिए एक फास्टनर के रूप में इसका उपयोग स्पष्ट रूप से प्रतीक चिन्ह निर्माताओं का काम माना जा सकता है। फिर भी, धर्म, गूढ़ विद्या और इतिहास के छात्रों के लिए सर्प के प्रतीकात्मक उपयोग रुचिकर हैं।

दूसरी ओर, जॉर्ज ओलिवर लिखते हैं कि सर्प "फ्रीमेसनरी में एक महत्वपूर्ण प्रतीक है: मूसा की छड़ी सर्प में बदल गई, "मेसनरी का सर्प प्रतीक... आशा का एक उज्ज्वल प्रतीक है; क्योंकि प्रतिज्ञा किया गया उद्धारकर्ता अपने वफादार अनुयायियों के लिए स्वर्ग के द्वार खोलेगा, उसके सिर को कुचलकर, और वे विजयी होकर उसके गिरे हुए शरीर को रौंदते हुए प्रवेश करेंगे।" "ईसाई धर्म की विजय का एक प्रभावशाली प्रतीक; और आदम के दुर्भाग्यपूर्ण पतन के बाद उससे किए गए वादे का एक निर्विवाद संदर्भ।" मुख्यधारा की ईसाई मान्यताओं में, सर्प प्रलोभन और बुराई का प्रतिनिधित्व करता है: सर्प शैतान का सेवक है। लेकिन इसका एक अधिक सकारात्मक महत्व भी रहा है।

प्राचीन मिस्र की पौराणिक कथाओं में, दुनिया की रचना चार शक्तियों द्वारा की गई थी, जिनमें से एक सूर्य देवता अमून-रा थे, जिन्होंने एक सांप का रूप धारण किया और पानी से बाहर निकले।

उन्होंने अन्य देवताओं द्वारा निर्मित ब्रह्मांडीय अंडे, नेफ को निषेचित किया। एक अन्य कथा के अनुसार, हैथोर नामक देवता ने स्वयं को एगेप नामक एक विषैले साँप में रूपांतरित कर सेठ की हत्या कर दी। उन्होंने गेहूँ के खेतों की भी रक्षा की जहाँ होरस की आत्मा निवास करती थी, और गेहूँ की बाली लाते थे जिसे पुनर्जन्म का प्रतीक माना जाता था। डब्ल्यू. ब्रो. एच. मेइज का सुझाव है कि यही फेलोक्राफ्ट डिग्री में मेसोनिक परंपरा के अनुसार मक्के की बाली के उपयोग का मूल है।

ग्रीक पौराणिक कथाओं में, ज़्यूस ने दो चीलों को मुक्त किया जो दुनिया के केंद्र में मिले, जिसे कभी-कभी पृथ्वी की नाभि कहा जाता है, जिसकी रक्षा पाइथो नामक एक सर्प करता है। सर्पेंस कैंडिवोरेंस का प्रतीक, एक सर्प जो अपनी पूंछ को काटता है, विनाश और नवसृजन, जीवन और मृत्यु के बीच प्रकृति के अंतहीन चक्र का प्रतिनिधित्व करता है। यूनानियों ने इस आकृति को ओरोबोरोस कहा। चीनी पौराणिक कथाओं में, दुनिया दो आपस में लिपटे हुए सर्पों से घिरी हुई थी, जो सृष्टिकर्ता की शक्ति और ज्ञान का प्रतीक थे। एक अन्य कथा के अनुसार, बुद्ध पर एक सर्प ने हमला किया जिसने उनकी कमर के चारों ओर सात बार लिपट गया। बुद्ध की आंतरिक शक्ति के कारण, सर्प उन्हें मार नहीं सका बल्कि उनका अनुयायी बन गया।

ज्योतिषियों या ज्योतिष के ऐतिहासिक विकास में रुचि रखने वालों का मानना है कि कुछ प्रणालियों में राशि चक्र की तेरहवीं राशि, ओफियुकस सर्पेंटेरियस (सर्प धारक) के नाम से जानी जाती है। यह नक्षत्र धनु और तुला राशि के बीच, वृश्चिक राशि के ठीक ऊपर स्थित है। सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में इस नक्षत्र को अल्फेइचियस कहा जाता था। "आवाहन के देवता" के रूप में विख्यात इस नक्षत्र का नाम प्रसिद्ध चिकित्सक ओफियुकस (एस्क्लेपियस) के नाम पर रखा गया था। उनके हाथों में मौजूद दो सर्पों ने बाद में कैड्यूसियस के चारों ओर लिपटी दो पट्टियों का स्थान ले लिया, जो चिकित्सकों का प्रतीक बन गया।

-- संदर्भ: freemasonry.bcy.ca/symbolism/serpent.html

109

"...अमेन के पुजारियों द्वारा हत्या कर दी गई..."

"अमुन का महायाजक या अमुन का प्रथम पैगंबर प्राचीन मिस्र के देवता अमुन के पुरोहित वर्ग में सर्वोच्च पद का पुजारी था।"

अखेनातेन के चौथे वर्ष तक "माया" अमेन की महायाजक थीं। रेडफोर्ड का अनुमान है कि माया, प्तहमोज़ का संक्षिप्त रूप है और प्तहमोज़ ने अमेनहोतेप तृतीय के शासनकाल के अंत से लेकर अखेनातेन के काल की शुरुआत तक सेवा की थी।

तुतनखामेन और होरेमहेब के शासनकाल के दौरान "पारेन्नेफर" अमेन का महायाजक था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

110

"...मूसा..."

"(मूसा के नेतृत्व में मिस्र से हिब्रू दासों का पलायन) लगभग 1400 ईसा पूर्व हुआ होगा, क्योंकि लगभग चालीस साल बाद फिरौन अमेनहोटेप तृतीय और अमेनहोटेप चतुर्थ (अखेनातेन) को लिखे गए अमरना पत्रों से संकेत मिलता है कि कनान पर "हाबिरू" द्वारा आक्रमण किया जा रहा था - जिसे 1950 से 1970 के दशक में कुछ विद्वान "हिब्रू" के रूप में व्याख्या करते हैं।"

निर्गमन 34:29-35 में बताया गया है कि परमेश्वर से मिलने के बाद मूसा के चेहरे की त्वचा चमकने लगी, जिससे इस्राएली भयभीत हो गए और मूसा को अपना चेहरा ढकना पड़ा। जोनाथन किर्श ने अपनी पुस्तक "मूसा: एक जीवन" में लिखा है कि, चूंकि बाद में मूसा को इसे छिपाने के लिए चेहरा ढकना पड़ा, इसलिए उनका चेहरा एक प्रकार के "दिव्य विकिरण से जलने" के कारण विकृत हो गया था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

111

यहोवा..."

अखेनातेन के देवता और स्वर्गिक पिता, एटेन के कार्टूश पर इमरान नाम अंकित था। बाइबल में मूसा को अमराम का पुत्र कहा गया है, जो हिब्रू भाषा में अमराम का समकक्ष है। मिस्र के देवता एटेन का लिप्यंतरण हिब्रू शब्द एडोन में होता है। एडोन, जिसका अंग्रेजी बाइबलों में अनुवाद "प्रभु" (और एडोनाई, जिसका अनुवाद "मेरे प्रभु") के रूप में किया गया है) है, बाइबल में यहोवा (Yhwh) के साथ ईश्वर के अनन्य व्यक्तिगत नामों के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, प्राचीन काल में, यहोवा (Yhwh) नाम लिखा जाता था, लेकिन कभी बोला नहीं जाता था। जब भी यहोवा (Yhwh) का लिखित नाम जोर से पढ़ा जाना होता था, तो उसके स्थान पर एडोन (एटेन) का उच्चारण किया जाता था। एडोन का लिखित रूप दुर्लभ है, हालांकि, इसका सीमित उपयोग महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से बाइबल की पहली छह पुस्तकों में (स्ट्रॉन्ग की संपूर्ण शब्दकोश में "प्रभु" के अंतर्गत देखें), जहां यह केवल निम्नलिखित अनुप्रयोगों के लिए आरक्षित है: मूसा ईश्वर को एडोन/एटेन उपाधि से संबोधित करता है (निर्गमन) 4:10,13; 5:22; 34:9; गिनती 14:17; व्यवस्थाविवरण 3:23; 7:26; 10:17); मूसा को स्वयं हारून (निर्गमन 32:22; गिनती 12:11) और यहोशू (गिनती 11:28) दोनों ने अदोन/अतेन की उपाधि से संबोधित किया है; और यहोशू भी परमेश्वर को अदोन/अतेन की उपाधि से संबोधित करता है (यहोशू 5:14 ख; 7:7)। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, मिस्र के 18 वें राजवंश के साहित्य और बाइबल के बीच एक स्थापित संबंध है। भजन संहिता 104, अखेतेन शहर में पुरातत्वविदों द्वारा पाए गए अतेन के भजन का एक अलंकृत रूप है। संदर्भ: http://www.domainofman.com/ankhemmaat/moses.html
"यहोवा, इज़राइल के ईश्वर के नाम יהוה का अंग्रेज़ी अनुवाद है। बेबीलोन की कैद के दौरान, यहूदियों द्वारा बोली जाने वाली हिब्रू भाषा को बदल दिया गया था।

बेबीलोन के उनके बंदी बनाने वालों की अरामी भाषा, जो हिब्रू से घनिष्ठ रूप से संबंधित थी और जिसमें कई शब्दावली शब्द समान थे, कुछ ऐसे शब्द भी थे जो सुनने में एक जैसे या मिलते-जुलते थे लेकिन उनके अर्थ अलग थे। अरामी भाषा में, लैव्यव्यवस्था 24:16 में प्रयुक्त हिब्रू शब्द "ईशनिंदा" का अर्थ "जो कोई यहोवा के नाम की निंदा करता है उसे मृत्युदंड दिया जाना चाहिए" था, जिसका अर्थ "ईशनिंदा" नहीं बल्कि "उच्चारण करना" था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

112

"...तोराह...का अर्थ निकाला गया..."

"द बाइबल कोड" माइकल ड्रोस्निन की एक बहुचर्चित और विवादित पुस्तक है, जो पहली बार 1997 में प्रकाशित हुई थी। इसका अगला भाग, "द बाइबल कोड II", 2002 में प्रकाशित हुआ और यह भी बहुचर्चित पुस्तक बन गई।"

ड्रोस्निन ने एक कथित "बाइबल कोड" का वर्णन किया है, जिसमें हिब्रू बाइबल में संदेशों को कोडित किया गया है। ये संदेश टोरा में छिपे हुए बताए जाते हैं, और इन्हें ग्राफ के अंदर फिट होने के लिए स्वरूपित पाठ में टोरा के विभिन्न अंशों के अक्षरों को समान अंतराल पर रखकर समझा जा सकता है।

ड्रोस्निन का मानना है कि यह कोड किसी अलौकिक जीव द्वारा लिखा गया था (जिसके बारे में उनका दावा है कि वह मानव आनुवंशिक कोड का डीएनए भी पृथ्वी पर लाया था)। ड्रोस्निन ने अपनी पुस्तक "द बाइबल कोड II" में इस सिद्धांत को विस्तार से समझाया है, जिसमें उन्होंने सुझाव दिया है कि कोड लाने वाले एलियन ने इसकी कुंजी एक इस्पात के ओबिलिस्क में छोड़ दी थी। ड्रोस्निन ने इस ओबिलिस्क को खोजने का प्रयास किया, जिसके बारे में उनका मानना है कि यह मृत सागर के पास दबा हुआ है। ड्रोस्निन की पुस्तक इज़राइल के हिब्रू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एलियाहू रिप्स द्वारा डोरोन विट्ज़टम और योआव रोसेनबर्ग के साथ मिलकर लिखे गए शोध पत्र "उत्पत्ति की पुस्तक में समदूरस्थ अक्षर अनुक्रम" में वर्णित तकनीक पर आधारित है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

113

"... बुद्ध ..."

निम्नलिखित बिंदु गौतम बुद्ध से संबंधित शिक्षाओं के कुछ मूलभूत सिद्धांत हैं:

चार आर्य सत्य: दुख जीवन का एक अंतर्निहित हिस्सा है; दुख का मूल अज्ञान है और उस अज्ञान के मुख्य लक्षण आसक्ति और लालसा हैं; आसक्ति और लालसा को समाप्त किया जा सकता है; और आर्य अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करने से आसक्ति और लालसा का अंत होता है और इस प्रकार दुख समाप्त हो जाता है।

आर्य अष्टांगिक मार्ग: सही समझ, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता।

आश्रित उत्पत्ति: किसी भी घटना का 'अस्तित्व' केवल इसलिए है क्योंकि समय के अतीत, वर्तमान और भविष्य को समाहित करने वाले कारण और प्रभाव के एक जटिल जाल में अन्य घटनाओं का 'अस्तित्व' है।

क्योंकि सभी चीजें इस प्रकार सशर्त और क्षणभंगुर (अनिच्चा) हैं, इसलिए उनकी कोई वास्तविक स्वतंत्र पहचान (अनत्ता) नहीं है।

Anicca (Sanskrit: anitya): That all things are impermanent.

अनात्म (संस्कृत: an ātman): एक स्थिर "स्वयं" की धारणा एक भ्रम है। दुःख (संस्कृत: du kha): सभी प्राणी अस्पष्ट मन के कारण सभी परिस्थितियों से पीड़ित होते हैं।

परंपरा के अनुसार, बुद्ध ने नैतिकता और सही समझ पर जोर दिया। उन्होंने आम आदमी की दैवीयता और मोक्ष की धारणाओं पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि देवता स्वयं कर्म के अधीन हैं; और बुद्ध केवल मनुष्य के लिए मार्गदर्शक और शिक्षक हैं।

237

सभी सजीव प्राणियों को स्वयं निर्वाण के मार्ग पर चलना होगा ताकि वे बोधि नामक आध्यात्मिक जागृति प्राप्त कर सकें और सत्य एवं वास्तविकता को उसके वास्तविक स्वरूप में देख सकें। बौद्ध धर्म की अंतर्दृष्टि और ध्यान पद्धति को दिव्य रूप से प्रकट नहीं माना जाता, बल्कि मन की वास्तविक प्रकृति की समझ से प्राप्त माना जाता है, जिसे बुद्ध की शिक्षाओं द्वारा निर्देशित आध्यात्मिक मार्ग पर व्यक्तिगत रूप से चलकर ही खोजा जा सकता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

114

"...लाओज़ी..."

दाओदेजिंग, जिसे अक्सर इसके प्रतिष्ठित लेखक के नाम पर केवल लाओजी कहा जाता है, दाओ (या ताओ) को समस्त अस्तित्व का रहस्यमय स्रोत और आदर्श बताता है: यह अदृश्य है, पर पारलौकिक नहीं, अत्यंत शक्तिशाली होते हुए भी अत्यंत विनम्र, समस्त चीजों का मूल है। दाओदेजिंग के अनुसार, मनुष्य का दाओ में कोई विशेष स्थान नहीं है, वह इसके अनेक ("दस हजार") अभिव्यक्तियों में से एक मात्र है। लोगों में इच्छाएँ और स्वतंत्र इच्छाशक्ति होती है (और इस प्रकार वे अपने स्वभाव को बदलने में सक्षम होते हैं)। कई लोग "अस्वाभाविक" तरीके से कार्य करते हैं, जिससे दाओ का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाता है। दाओदेजिंग का उद्देश्य छात्रों को दाओ के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए उनकी स्वाभाविक अवस्था में "वापसी" की ओर ले जाना है। भाषा और पारंपरिक ज्ञान का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है। ताओवाद इन्हें स्वाभाविक रूप से पक्षपाती और कृत्रिम मानता है, और अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए विरोधाभासों का व्यापक रूप से उपयोग करता है।

वू वेई, जिसका शाब्दिक अर्थ है "निष्क्रियता" या "अभिनय न करना", दाओदेजिंग की एक केंद्रीय अवधारणा है। वू वेई की अवधारणा अत्यंत जटिल है और इसके अनेक अर्थ अंग्रेजी अनुवाद में भी परिलक्षित होते हैं; इसका अर्थ "कुछ न करना", "बल प्रयोग न करना", नाट्य अर्थ में "अभिनय न करना", "शून्यता का सृजन करना", "सहज रूप से कार्य करना" और "क्षण के साथ बहना" हो सकता है।

लाओत्ज़ी ने इस शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग किया, जिसमें सादगी और विनम्रता प्रमुख गुण थे, जो अक्सर स्वार्थी कार्यों के विपरीत थे। राजनीतिक स्तर पर, इसका अर्थ है युद्ध, कठोर कानूनों और भारी करों जैसी परिस्थितियों से बचना। कुछ ताओवादी वू वेई और गूढ़ प्रथाओं के बीच संबंध देखते हैं, जैसे कि ज़ुआंगज़ी में वर्णित "विस्मरण में बैठना" (मन को शारीरिक जागरूकता और विचारों से मुक्त करना)।
ताओवाद एक ऐसा धर्म है जो अमरता की खोज से संबंधित है।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
115
"...ज़ोरोस्टर..."
"सबसे प्रसिद्ध पारसी लोग थे मैगी, बाइबिल में वर्णित 'पूर्व से आए ज्ञानी पुरुष', (जो बेथलहम में उपहार लेकर आए थे) और जिनकी कब्रें मार्को पोलो ने ईरान के तेहरान के पास स्थित सावेह जिले में देखने का दावा किया था। अंग्रेजी में, यह शब्द 'मैजिक' और 'मैजिशियन' शब्दों का मूल है।"
पारसी धर्म की कई विशेषताओं का पता प्रोटो-इंडो-ईरानी काल की संस्कृति और मान्यताओं से लगाया जा सकता है, और परिणामस्वरूप पारसी धर्म ऐतिहासिक वैदिक धर्म के साथ कुछ तत्वों को साझा करता है जिसकी उत्पत्ति भी उसी युग में हुई थी।
पारसी धर्म का मूल सिद्धांत नैतिक चुनाव पर बल देता है, जिसमें यह चुनना होता है कि व्यक्ति इस नश्वर संसार में अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्य को निभाए या फिर इस कर्तव्य का त्याग करके द्रुज (मानव जाति) के कार्य में सहयोग प्रदान करे। इसी प्रकार, पारसी धर्म में नियतिवाद को अस्वीकार किया जाता है। मनुष्य अपने जीवन में आने वाली हर परिस्थिति और एक-दूसरे के प्रति अपने व्यवहार के लिए उत्तरदायी होता है। पुरस्कार, दंड, सुख और दुःख सब इस बात पर निर्भर करते हैं कि व्यक्ति अपना जीवन कैसे जीता है।
238

पारसी धर्म में, नेक कर्म करने वालों का ही भला होता है। बुराई करने वाले अपने विनाश के लिए स्वयं ही जिम्मेदार होते हैं। पारसी नैतिकता को संक्षेप में "अच्छे विचार, अच्छे शब्द, अच्छे कर्म" कहा जा सकता है।
एक ही सार्वभौमिक और पारलौकिक ईश्वर है, अहूरा मज़्दा, जो एकमात्र अजन्मा सृष्टिकर्ता है और जिसकी ओर अंततः समस्त पूजा निर्देशित होती है।
अहुरा मज़्दा की रचना—जो सत्य और व्यवस्था का स्पष्ट प्रतीक है—अराजकता, असत्य और अव्यवस्था का प्रतिरूप है। परिणामस्वरूप उत्पन्न संघर्ष में संपूर्ण ब्रह्मांड, यहाँ तक कि मानवता भी शामिल है, सक्रिय भूमिका निभाती है।
अच्छे विचारों, अच्छे शब्दों और अच्छे कर्मों के माध्यम से जीवन में सक्रिय भागीदारी सुख सुनिश्चित करने और अराजकता को दूर रखने के लिए आवश्यक है। यह सक्रिय भागीदारी ज़ोरोस्टर की स्वतंत्र इच्छा की अवधारणा का एक केंद्रीय तत्व है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
116
"भूभाग लगातार टूटते, बिखरते और खिसकते रहते हैं।"
प्लेट टेक्टोनिक्स (ग्रीक शब्द τέκτων, tektōn से लिया गया है जिसका अर्थ है "निर्माता" या "राजमिस्त्री") भूविज्ञान का एक सिद्धांत है जिसे पृथ्वी के स्थलमंडल की व्यापक गति के प्रेक्षित प्रमाणों की व्याख्या करने के लिए विकसित किया गया है। इस सिद्धांत ने 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के महाद्वीपीय बहाव के पुराने सिद्धांत और 1960 के दशक में विकसित समुद्री तल के फैलाव की अवधारणा को समाहित किया और उसका स्थान ले लिया।
पृथ्वी के आंतरिक भाग का सबसे बाहरी हिस्सा दो परतों से बना है: ऊपर स्थलमंडल है, जिसमें भूपर्पटी और मेंटल का कठोर ऊपरी भाग शामिल है। स्थलमंडल के नीचे एस्थेनोस्फीयर स्थित है। हालांकि यह ठोस है, एस्थेनोस्फीयर की श्यानता और अपरूपण शक्ति अपेक्षाकृत कम है और भूवैज्ञानिक समय के पैमाने पर यह तरल की तरह बह सकता है। एस्थेनोस्फीयर के नीचे स्थित मेंटल अधिक कठोर है। हालांकि, इसका कारण कम तापमान नहीं बल्कि उच्च दबाव है।

स्थलमंडल विवर्तनिक प्लेटों में विभाजित है - पृथ्वी के मामले में, सात प्रमुख और कई छोटी प्लेटें हैं। स्थलमंडलीय प्लेटें एस्थेनोस्फीयर पर टिकी होती हैं। ये प्लेटें तीन प्रकार की प्लेट सीमाओं पर एक-दूसरे के सापेक्ष गति करती हैं: अभिसारी या टकराव सीमाएँ, अपसारी या फैलाव सीमाएँ और रूपांतरण सीमाएँ। भूकंप, ज्वालामुखी गतिविधि, पर्वत निर्माण और महासागरीय खाई का निर्माण प्लेट सीमाओं के साथ होता है। प्लेटों की पार्श्व गति आमतौर पर 5-10 सेंटीमीटर प्रति वर्ष की गति से होती है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

117

"ग्रह के चुंबकीय ध्रुवों में लगभग हर 20,000 वर्षों में एक बार आमूल-चूल परिवर्तन होता है।" "ध्रुवीय विस्थापन सिद्धांत एक परिकल्पना है जिसके अनुसार किसी ग्रह का घूर्णन अक्ष हमेशा से अपने वर्तमान स्थान पर नहीं रहा है या वह अक्ष वहाँ स्थिर नहीं रहेगा; दूसरे शब्दों में, उसके भौतिक ध्रुव स्थानांतरित हो चुके हैं या हो जाएंगे। ध्रुवीय विस्थापन सिद्धांत पर लगभग हमेशा पृथ्वी के संदर्भ में चर्चा की जाती है, लेकिन सौर मंडल के अन्य पिंडों ने भी अपने अस्तित्व के दौरान अक्षीय पुनर्संरेखण का अनुभव किया हो सकता है।"

239

ध्रुवीय बदलाव के सिद्धांतों को प्लेट टेक्टोनिक्स के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो एक सर्वमान्य भूवैज्ञानिक सिद्धांत है जिसके अनुसार पृथ्वी की सतह ठोस प्लेटों से बनी है जो एक तरल एस्थेनोस्फीयर के ऊपर खिसकती हैं; न ही महाद्वीपीय बहाव के साथ, जो प्लेट टेक्टोनिक्स का एक उपसिद्ध सिद्धांत है और यह मानता है कि महाद्वीपों के स्थान पृथ्वी की सतह पर धीरे-धीरे स्थानांतरित हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप सैकड़ों लाखों वर्षों में महाद्वीपों और महासागरों का धीरे-धीरे उद्भव और विखंडन हुआ है।
ध्रुव परिवर्तन के सिद्धांतों को भूचुंबकीय उत्क्रमण से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का आवधिक उत्क्रमण है (जिससे उत्तरी और दक्षिणी चुंबकीय ध्रुव आपस में बदल जाते हैं)। भूचुंबकीय उत्क्रमण को वैज्ञानिक समुदाय में ध्रुव परिवर्तन के सिद्धांतों की तुलना में अधिक मान्यता प्राप्त है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
118
"इस अभियान का प्रबंधन गुप्त पुलिस द्वारा किया जा रहा है..."
गुप्त पुलिस (कभी-कभी राजनीतिक पुलिस) एक पुलिस संगठन है जो राज्य के आंतरिक खतरों से राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखने के लिए गुप्त रूप से कार्य करता है। गुप्त पुलिस बल आमतौर पर अधिनायकवादी शासनों से जुड़े होते हैं, क्योंकि इनका उपयोग अक्सर कानून के शासन को बनाए रखने के बजाय राज्य की राजनीतिक शक्ति को बनाए रखने के लिए किया जाता है। गुप्त पुलिस कानून प्रवर्तन संगठन हैं जिन्हें आधिकारिक तौर पर नागरिक पुलिस बलों से कहीं अधिक अधिकार प्राप्त होते हैं, जो कानून की सामान्य सीमाओं से बाहर कार्य करते हैं, और वे अक्सर केवल सरकार की कार्यकारी शाखा के प्रति जवाबदेह होते हैं। वे पूरी तरह या आंशिक रूप से गुप्त रूप से कार्य करते हैं; अर्थात्, उनके अधिकांश या सभी कार्य आम जनता और शीर्ष कार्यकारी अधिकारियों को छोड़कर सभी सरकारी अधिकारियों से छिपे और गुप्त रहते हैं।
गुप्त पुलिस संगठनों का अक्सर राजनीतिक दमन के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। जिन राज्यों में गुप्त पुलिस का दबदबा होता है, उन्हें कभी-कभी पुलिस राज्य कहा

जाता है। गुप्त पुलिस आधुनिक उदार लोकतांत्रिक देशों की घरेलू सुरक्षा एजेंसियों से भिन्न होती है, क्योंकि घरेलू सुरक्षा एजेंसियां आमतौर पर सरकारी नियमों, रिपोर्टिंग आवश्यकताओं और अन्य जवाबदेही उपायों के अधीन होती हैं। इस तरह की निगरानी के बावजूद, घरेलू सुरक्षा एजेंसियों द्वारा गैरकानूनी रूप से कार्य करने और गुप्त पुलिस की कुछ विशेषताओं को अपनाने की संभावना बनी रहती है।

गुप्त पुलिस के पास न केवल गिरफ्तारी और हिरासत में लेने का पारंपरिक पुलिस अधिकार होता है, बल्कि कुछ मामलों में उन्हें हिरासत की अवधि पर बिना किसी निगरानी के नियंत्रण दिया जाता है, सार्वजनिक न्यायपालिका से स्वतंत्र रूप से दंड लागू करने का अधिकार दिया जाता है, और उन्हें उन दंडों को प्रशासित करने की अनुमति दी जाती है।

बिना बाहरी समीक्षा के दंड दिए जाते हैं। गुप्त पुलिस द्वारा अपनाई जाने वाली जांच और डराने-धमकाने की रणनीति उन्हें इतनी शक्ति प्रदान करती है कि वे आमतौर पर बिना किसी व्यावहारिक रोक-टोक के काम करते हैं। गुप्त पुलिस संगठन विरोध प्रदर्शन के नेताओं या असंतुष्टों का पता लगाने के लिए आंतरिक जासूसों और नागरिक मुखबिरों का इस्तेमाल करते हैं, और वे सरकार के खिलाफ अवैध कृत्यों को अंजाम देने के लिए राजनीतिक विरोधियों को उकसाने के लिए एजेंटों को भी नियुक्त कर सकते हैं, जिसके बाद ऐसे विरोधियों को गिरफ्तार किया जा सकता है। गुप्त पुलिस डाक खोल सकती है, टेलीफोन लाइनें टैप कर सकती है, और किसी संदिग्ध के रिश्तेदारों या दोस्तों को जानकारी देने के लिए बरगलाने, ब्लैकमेल करने या मजबूर करने के लिए विभिन्न तकनीकों का इस्तेमाल कर सकती है। गुप्त पुलिस आधी रात से सुबह के बीच घरों पर छापा मारने और असहमति के संदिग्ध लोगों को गिरफ्तार करने के लिए कुख्यात है।

गुप्त पुलिस द्वारा पकड़े गए लोगों को अक्सर मनमाने ढंग से गिरफ्तार किया जाता है और उचित कानूनी प्रक्रिया के बिना हिरासत में रखा जाता है। हिरासत में रहने के दौरान, गिरफ्तार लोगों को यातना दी जा सकती है या उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जा सकता है। संदिग्धों को सार्वजनिक सुनवाई का अवसर नहीं मिलता, बल्कि उन्हें दिखावटी अदालती मुकदमे या गुप्त न्यायाधिकरण द्वारा दोषी ठहराया जा सकता है।

गुप्त पुलिस का इस्तेमाल कई तरह की सरकारों द्वारा किया गया है। तानाशाही और सर्वाधिकारवादी राज्यों में गुप्त पुलिस बल आमतौर पर हिंसा और आतंक के कृत्यों का इस्तेमाल करते हैं।

राजनीतिक विरोध और असहमति को दबा सकते हैं, और हत्याओं और "लापता करने" के लिए डेथ स्क्वाड का इस्तेमाल कर सकते हैं। हालांकि लोकतांत्रिक राज्यों में आमतौर पर गुप्त पुलिस का अस्तित्व नहीं होता है, लेकिन लोकतंत्र के विभिन्न प्रकार होते हैं और आपातकाल या युद्ध के समय, एक लोकतंत्र कानूनी रूप से अपनी पुलिस और सुरक्षा सेवाओं को अतिरिक्त या व्यापक शक्तियां प्रदान कर सकता है, जिन्हें गुप्त पुलिस के रूप में देखा या समझा जा सकता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

119

"...अपनी गतिविधियों को छिपाने के लिए झूठे उकसावे वाले अभियानों का उपयोग करना..."

"झूठे झंडे वाले अभियान सरकारों द्वारा संचालित गुप्त अभियान होते हैं।"

निगमों या अन्य संगठनों द्वारा किए जाने वाले ऐसे कार्य, जो देखने में किसी अन्य संस्था द्वारा संचालित प्रतीत होते हैं। यह नाम सैन्य अवधारणा 'झूठे झंडे फहराना' से लिया गया है; अर्थात्, अपने देश के अलावा किसी अन्य देश का झंडा फहराना। झूठे झंडे वाले अभियान केवल युद्ध और आतंकवाद विरोधी अभियानों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि शांति काल में भी इनका उपयोग किया गया है; उदाहरण के लिए, इटली की तनाव रणनीति के दौरान।

1970 के दशक में इटली में अपनाई गई तनाव फैलाने की रणनीति के दौरान, कई बम विस्फोटों का आरोप वामपंथी संगठनों पर लगाया गया, जबकि वास्तव में ये धमाका इतालवी गुप्त सेवाओं के सहयोग से दक्षिणपंथी संगठनों द्वारा किए गए थे (देखें ऑपरेशन ग्लैडियो, 1969 पियाज़ा फोंटाना बम विस्फोट, 1972 विन्सेन्ज़ो विन्सिग्वेरा द्वारा पेटियानो हमला, 1973 पूर्व गृह मंत्री मारियानो रुमोर पर जानलेवा हमला, 1980 बोलोग्ना नरसंहार आदि और विभिन्न जांचें, उदाहरण के लिए गुइडो साल्विनी द्वारा)। फ्रांस में, मसाडा एक्शन एंड डिफेंस मूवमेंट, जिसे कथित तौर पर एक ज़ायोनिस्ट समूह बताया गया था, वास्तव में एक नव-फासीवादी आतंकवादी समूह था जो फ्रांस में अरबों और यहूदियों के बीच तनाव बढ़ाना चाहता था।

1994 के मध्य में शुरू हुए अल्जीरियाई गृहयुद्ध के दौरान भी झूठे झंडे वाली रणनीति का इस्तेमाल किया गया था। डीआरएस (डिपार्टमेंट डू रेन्सिग्नेमेंट एट डे ला सेक्यूरिटी) सुरक्षा बलों से बने डेथ स्क्वाड ने खुद को इस्लामी आतंकवादियों के रूप में छिपाकर झूठे झंडे वाले आतंकी हमले किए। ऐसे समूहों में ओजेएएल (ऑर्गेनाइजेशन ऑफ यंग फ्री अल्जीरियाई) या ओएसएसआरए (सीक्रेट ऑर्गनाइजेशन फॉर द सेफगार्ड ऑफ द अल्जीरियाई रिपब्लिक) शामिल थे। रोजर फालिगोट और पास्कल क्रोप (1999) के अनुसार, ओजेएएल "ऑर्गेनाइजेशन ऑफ द फ्रेंच अल्जीरियाई रेजिस्टेंस (ओआरएएफ)" की याद दिलाता है, जो दिसंबर 1956 में डीएसटी (डायरेक्शन डे ला सर्विलांस डू टेरिटोयर / टेरिटोरियल सर्विलांस डायरेक्टोरेट) द्वारा गठित आतंकवाद विरोधी समूह था, जिसका मिशन किसी भी राजनीतिक समझौते की उम्मीदों को कुचलने के उद्देश्य से आतंकवादी हमले करना था।

27 फरवरी, 1933 की रात को रैहस्टाग भवन में आग लगा दी गई। हिटलर के उकसावे पर, हिंडेनबर्ग ने अगले दिन "जनता और राज्य की सुरक्षा के लिए" एक आपातकालीन आदेश जारी किया, जिसमें कहा गया था: "व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर प्रतिबंध, विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार पर प्रतिबंध, जिसमें प्रेस की स्वतंत्रता भी शामिल है; सभा और संगठन के अधिकारों पर प्रतिबंध; और डाक, तार और टेलीफोन संचार की गोपनीयता का उल्लंघन तथा घर की तलाशी के वारंट, ज़ब्ती के आदेश और संपत्ति पर प्रतिबंध, ये सभी निर्धारित कानूनी सीमाओं से परे भी अनुमेय हैं।" 74 वर्ष बाद भी, रैहस्टाग में आग किसने लगाई, यह प्रश्न अभी भी अज्ञात है और कभी-कभी इस पर बहस होती रहती है।

9/11 को लेकर कई तरह की साजिश की थ्योरी मौजूद हैं (और इसके समर्थन में बहुत सारे ठोस सबूत भी हैं - संपादक) जो कहती हैं कि 11 सितंबर, 2001 को अमेरिका पर हुए हमले एक झूठा झंडा ऑपरेशन थे।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

"...सरकारी मनोचिकित्सकों द्वारा विकसित मन-नियंत्रण विधियाँ..."
विलियम सार्जेंट ब्रिटिश गुप्त खुफिया सेवा (MI5/MI6) के सलाहकार थे। 1953 में उन्होंने सीआईए के विशेष अभियानों के उप कार्यवाहक प्रमुख फ्रैंक ओलसन के साथ मिलकर पोर्टन डाउन स्थित जैविक युद्ध केंद्र में दिमाग को नियंत्रित करने वाली दवाओं के उपयोग की जांच की।
1944 में उन्होंने स्लेटर के साथ मिलकर 'मनोचिकित्सा में उपचार की भौतिक विधियों का परिचय' नामक एक पाठ्यपुस्तक लिखी, जो जैविक मनोचिकित्सा पर आधारित थी और जिसमें लोबोटॉमी और शॉक थेरेपी शामिल थी, और यह तीन दशकों तक छपती रही।
विलियम सार्जेंट मरीजों में झूठी यादें डालने की विधियों के अग्रणी थे। उन्होंने 1977 में अमेरिकी सीनेट की सुनवाई में यह प्रमाणित किया कि "चिकित्सक को रोगी के जीवन के अनुभवों के तथ्यों को जानबूझकर तोड़-मरोड़ कर पेश करना चाहिए ताकि तीव्र भावनात्मक प्रतिक्रिया और मस्तिष्क-विरोध उत्पन्न हो सके। नार्कोएनालिसिस की नशे की अवस्था में रोगी चिकित्सक द्वारा गढ़ी गई झूठी बातों को स्वीकार करने के लिए प्रवृत्त होते हैं।"
1957 में विलियम सार्जेंट ने मस्तिष्क-प्रवर्तन के मनोविज्ञान पर लिखी गई शुरुआती पुस्तकों में से एक, 'बैटल फॉर द माइंड' प्रकाशित की। विलियम सार्जेंट ने पावलोव के निष्कर्षों को लोगों द्वारा विश्वास प्रणालियों को सीखने और आत्मसात करने के तरीकों से जोड़ा। अनुकूलित व्यवहार पैटर्न को कुत्ते की प्रतिक्रिया क्षमता से परे उत्तेजित तनावों द्वारा बदला जा सकता है, जिससे मूल रूप से मानसिक आघात हो सकता है। यह तीव्र संकेतों, सामान्य से अधिक लंबे प्रतीक्षा समय, सकारात्मक और नकारात्मक संकेतों के बार-बार आने और कुत्ते की शारीरिक स्थिति में बदलाव, जैसे कि बीमारी के कारण, से भी हो सकता है। कुत्ते के प्रारंभिक व्यक्तित्व के आधार पर, यह संभवतः एक नई विश्वास प्रणाली को दृढ़ता से अपनाने का कारण बन सकता है। सार्जेंट ने पावलोव के निष्कर्षों को धर्म और राजनीति में मस्तिष्क-प्रवर्तन की प्रक्रियाओं से भी जोड़ा।

सार्जेंट और प्रोजेक्ट एमकेयूएलटीआरए के कुख्यात डॉ. इवेन कैमरून मित्र और सहकर्मी थे, जो ब्रेनवाशिंग और डिपैटर्निंग तकनीकों पर अपने विचार और जानकारी साझा करते थे और इस क्षेत्र में अपने पारस्परिक शोध में भी सहयोग करते थे। दोनों व्यक्तियों के सीआईए और ब्रिटिश गुप्त खुफिया सेवा से व्यापक संबंध थे।

कैमरून, सार्जेंट और सीआईए के शोधकर्ताओं का उद्देश्य सहयोगी जासूस की यादों को मिटाने ('डी-पैटर्निंग') और गहरी स्मृतियों को स्थापित करने का तरीका खोजना था, ताकि यदि वह जासूस अपने गोद लिए देश में पकड़ा जाए, तो वह दबाव या यातना के तहत भी अपनी वास्तविक अमेरिकी/ब्रिटिश निष्ठा को प्रकट करने में असमर्थ हो। वह केवल उन झूठी स्मृतियों को ही प्रकट कर पाएगा जो उसके द्वारा गढ़े गए व्यक्तित्व का समर्थन करती हैं। इस अवधारणा को उपन्यास के नाम पर 'द मंचूरियन कैंडिडेट' नाम दिया गया। इस संदर्भ में इलेक्ट्रॉन कन्वल्सिव शॉक ट्रीटमेंट (एलएसडी), डीप स्लीप ट्रीटमेंट (नार्कोसिस), एंटीडिप्रेसेंट्स, टेप-लूप्स, इंसुलिन कोमा थेरेपी और अन्य दवाओं की अत्यधिक मात्रा का व्यापक उपयोग विनाशकारी स्मृति हानि उत्पन्न करने के लिए किया गया था, जिसे बाद में कथित तौर पर झूठी यादों और विचारों से प्रतिस्थापित किया जाएगा (टेप लूप्स, सम्मोहन, एलएसडी या व्यक्ति के नशे में होने के दौरान बातचीत के माध्यम से)।

एलएसडी के अलावा, कैमरून ने विभिन्न लकवा पैदा करने वाली दवाओं के साथ-साथ सामान्य शक्ति से 30 से 40 गुना अधिक विद्युत-आघात चिकित्सा का भी प्रयोग किया। उनके "प्रेरक" प्रयोगों में विषयों को महीनों तक (एक मामले में तीन महीने तक) दवा-प्रेरित कोमा में रखना शामिल था, जबकि शोर या सरल दोहराव वाले कथनों के टेप लूप चलाए जाते थे। उनके प्रयोग आमतौर पर उन रोगियों पर किए जाते थे जो चिंता विकार और प्रसवोत्तर अवसाद जैसी मामूली समस्याओं के लिए संस्थान में भर्ती हुए थे, जिनमें से कई उनके कार्यों से स्थायी रूप से पीड़ित हुए।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

121

..."पृथ्वी एक "गंदी बस्ती" वाला ग्रह है..."

"घेटो" शब्द का प्रयोग लाक्षणिक रूप से किसी भी प्रकार के व्यक्ति की सघनता वाले भौगोलिक क्षेत्रों को इंगित करने के लिए भी किया जाता है।

बस्ती का निर्माण तीन तरीकों से होता है:

• •

•

नस्लीय अल्पसंख्यकों और आप्रवासी नस्लीय अल्पसंख्यकों के लिए प्रवेश द्वार के रूप में।

जब बहुसंख्यक वर्ग अल्पसंख्यकों को किसी विशेष क्षेत्र में जाने के लिए विवश करने हेतु दबाव (आमतौर पर हिंसा, शत्रुता या कानूनी बाधाओं) का उपयोग करता है।

जब बहुसंख्यक वर्ग अपने ही लोगों के साथ रहने के लिए अल्पसंख्यक वर्ग की तुलना में अधिक भुगतान करने को तैयार और सक्षम हो।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, 1939-1944 में नाज़ियों द्वारा कब्ज़े वाले यूरोप में यहूदी बस्तियाँ स्थापित की गईं, जिनमें यहूदियों और कभी-कभी जिप्सियों को पूर्वी यूरोप के शहरों के तंग इलाकों में कैद कर दिया गया, जिससे वे होलोकॉस्ट में वास्तविक रूप से यातना शिविर और मृत्यु शिविर बन गए।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

122

"...होलोकॉस्ट..."

होलोकॉस्ट (ग्रीक शब्द λόκαυστον (holókauston) से लिया गया है: होलोस, "पूरी तरह से" और कौस्टोस, "जला हुआ"), यह शब्द आम तौर पर द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लगभग छह मिलियन यूरोपीय यहूदियों की हत्या का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो एडॉल्फ हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवादी (नाजी) शासन द्वारा नियोजित और निष्पादित जानबूझकर नरसंहार के कार्यक्रम का हिस्सा था।

शासन द्वारा अन्य समूहों को भी सताया गया और मार डाला गया, जिनमें रोमा लोग; सोवियत नागरिक, विशेष रूप से युद्धबंदी; जातीय पोल; अन्य स्लाव लोग; विकलांग लोग; समलैंगिक पुरुष; और राजनीतिक और धार्मिक असंतुष्ट शामिल थे।
उत्पीड़न और नरसंहार को कई चरणों में अंजाम दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने से कई साल पहले ही यहूदियों को नागरिक समाज से बाहर निकालने के लिए कानून बनाए गए थे।
यातना शिविर स्थापित किए गए जिनमें कैदियों से गुलामों की तरह काम करवाया जाता था जब तक कि वे थकावट या बीमारी से मर न जाएं। पूर्वी यूरोप में जहां भी तीसरे रैह ने नए क्षेत्रों पर कब्जा किया, वहां आइंज़ैट्सग्रुपें नामक विशेष इकाइयों ने यहूदियों और राजनीतिक विरोधियों की सामूहिक गोलीबारी में हत्या कर दी। यहूदियों और रोमाओं को यहूदी बस्तियों में ठूंस दिया गया और फिर मालगाड़ियों द्वारा सैकड़ों मील दूर विनाश शिविरों में ले जाया गया, जहां अगर वे यात्रा में बच भी जाते थे, तो उनमें से अधिकांश को गैस चैंबरों में मार दिया जाता था। जर्मनी के नौकरशाही तंत्र का हर अंग इस सामूहिक नरसंहार की व्यवस्था में शामिल था, जिससे देश एक ऐसे राज्य में बदल गया जिसे एक होलोकॉस्ट विद्वान ने "नरसंहार राज्य" कहा है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
123
"...अंतिम समाधान..."
होलोकॉस्ट के दस्तावेजीकरणकर्ताओं का तर्क है कि 1930 के दशक में जर्मन मानसिक संस्थानों में सामाजिक समस्याओं का चिकित्सीयकरण और लोगों का व्यवस्थित इच्छामृत्यु ने संस्थागत ढांचा प्रदान किया,
243

1940 के दशक में हुए सामूहिक नरसंहार के प्रक्रियात्मक और सैद्धांतिक मूल कारण। नूर्नबर्ग ट्रायल में नाज़ी शासन में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन कई मनोचिकित्सकों को दोषी ठहराया गया।
-- संदर्भ: लैपोन, लेनी (1986). सफेद कोट में सामूहिक हत्यारे: नाज़ी जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका में मनोरोग नरसंहार।
हिटलर और सुजननवादी मनोचिकित्सकों के बीच संबंध इतने घनिष्ठ थे कि मीन कैम्फ का अधिकांश भाग भाषा और लहजे में उस समय की प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं और मनोचिकित्सा पाठ्यपुस्तकों से लगभग अप्रभेद्य है। मीन कैम्फ के ऐसे कई अंशों में से कुछ इस प्रकार हैं:
"दोषपूर्ण लोगों को समान रूप से दोषपूर्ण संतान उत्पन्न करने से रोकने की मांग करना सबसे स्पष्ट तर्क पर आधारित मांग है और यदि इसे व्यवस्थित रूप से क्रियान्वित किया जाए, तो यह मानवता का सबसे मानवीय कार्य है..."
जो लोग शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थ और अयोग्य हैं, उन्हें अपने बच्चों के शरीर में अपने कष्टों को निरंतर नहीं रहने देना चाहिए...
"शारीरिक रूप से पतित और मानसिक रूप से बीमार लोगों की संतानोत्पत्ति की क्षमता और अवसर को रोकना... न केवल मानवता को एक अपार दुर्भाग्य से मुक्ति दिलाएगा बल्कि एक ऐसी पुनर्प्राप्ति की ओर ले जाएगा जो आज शायद ही संभव प्रतीत होती है।"
सत्ता में आने के बाद हिटलर को दुनिया भर के मनोचिकित्सकों और समाज वैज्ञानिकों का समर्थन मिला। दुनिया की प्रमुख चिकित्सा पत्रिकाओं में कई लेखों में हिटलर के सुजनन संबंधी कानूनों और नीतियों की समीक्षा की गई और उनकी जमकर प्रशंसा की गई।
अब्राम्स द्वारा अस्पताल में खोजे गए रिकॉर्ड इस बात की पुष्टि करते हैं कि हिटलर द्वारा यहूदियों के सुनियोजित नरसंहार को शुरू करने से पहले ही राष्ट्रीय मनोरोग कार्यक्रम के तहत यह नरसंहार शुरू हो चुका था। 1941 के अंत से पहले ही सैकड़ों रोगियों को मनोरोग केंद्रों में भेज दिया गया था, जब राष्ट्रीय कार्यक्रम को काफी हद तक बंद कर दिया गया और स्थानीय राज्य मानसिक अस्पतालों ने स्वयं ही यह कार्य अपने हाथ में ले लिया।

मनोरोगियों को मौत के घाट उतारने का कार्यक्रम मनोचिकित्सा का कोई छिपा हुआ, गुप्त कलंक नहीं था - कम से कम शुरुआत में तो नहीं। इसे मनोचिकित्सा के प्रमुख प्रोफेसरों और मानसिक अस्पतालों के निदेशकों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित बैठकों और कार्यशालाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से संगठित किया गया था। तथाकथित इच्छामृत्यु प्रपत्र अलग-अलग अस्पतालों में वितरित किए गए थे, और प्रत्येक मृत्यु को अंतिम स्वीकृति बर्लिन में देश के उत्कृष्ट मनोचिकित्सकों की एक समिति द्वारा दी जाती थी। जनवरी 1940 तक रोगियों को मनोचिकित्सकों द्वारा संचालित छह विशेष मृत्यु केंद्रों में भेजा जा रहा था।

1941 के अंत में, जनता के आक्रोश और हिटलर की उदासीनता के कारण यह कार्यक्रम गुप्त रूप से चलाया जाने लगा, लेकिन तब तक 100,000 से 200,000 जर्मन मानसिक रोगियों को मार डाला गया था। इसके बाद से, कौफब्यूरन जैसे कुछ संस्थानों ने अपने दम पर काम करना जारी रखा, यहाँ तक कि नए रोगियों को भी उनकी हत्या के उद्देश्य से भर्ती किया। युद्ध के अंत तक, कई बड़े संस्थान पूरी तरह से खाली हो गए थे, और नूर्नबर्ग सहित विभिन्न युद्ध अपराध न्यायाधिकरणों के अनुमानों के अनुसार मृतकों की संख्या 250,000 से 300,000 के बीच थी, जिनमें से अधिकांश मनोरोग अस्पतालों और मंदबुद्धि लोगों के घरों के निवासी थे।

मनोचिकित्सक फ्रेडरिक वर्थम, जो अपने पेशे के कट्टर आलोचक बिल्कुल नहीं थे, नाज़ी जर्मनी में मनोचिकित्सा की भूमिका का वर्णन करने वाले पहले व्यक्ति होने का श्रेय पाने के पात्र हैं: ...

"दुखद बात यह है कि मनोचिकित्सकों को किसी आदेश की आवश्यकता नहीं थी। वे अपने दम पर काम करते थे। वे किसी और द्वारा सुनाए गए मृत्युदंड को लागू नहीं कर रहे थे। वे ही वे कानून निर्माता थे जिन्होंने यह तय करने के नियम बनाए कि किसे मरना है; वे ही वे प्रशासक थे जिन्होंने प्रक्रियाएं तैयार कीं, रोगियों और स्थानों की व्यवस्था की और मारने के तरीके तय किए; उन्होंने प्रत्येक मामले में जीवन या मृत्यु का फैसला सुनाया; वे ही वे जल्लाद थे जिन्होंने सजाओं को अंजाम दिया या - बिना किसी दबाव के - अपने रोगियों को अन्य संस्थानों में मारे जाने के लिए सौंप दिया; उन्होंने धीमी मौतों की निगरानी की और अक्सर उन्हें देखा..."

1 नवंबर, 1941 तक, पहले नरसंहार शिविरों का निर्माण किया जा रहा था: पहले बेल्ज़ेक, फिर सोबिबोर, ट्रेब्लिंका, चेल्मनो और माजदानेक, और अंत में ऑशविट्ज़-बिरकेनाउ। शुरुआत में, नाज़ी जर्मनी में सभी यूरोपीय यहूदियों को निर्वासित करने की अस्पष्ट योजनाएँ बनाई गईं।

मेडागास्कर। विशेष रूप से एडॉल्फ आइचमैन ने 1942 के वानसी सम्मेलन से पहले इस विकल्प का समर्थन किया था, जहां उन्हें "अंतिम समाधान" के सटीक विवरणों से अवगत कराया गया था।

एसएस प्रमुख हेनरिक हिमलर ने कहा:

"चाहे प्रत्येक मामला कितना भी क्रूर और दुखद क्यों न हो, यदि कोई बोल्शेविकों द्वारा किसी जनसमूह के शारीरिक संहार की पद्धति को आंतरिक दृढ़ विश्वास के आधार पर गैर-जर्मन और असंभव मानकर अस्वीकार करता है, तो यह विधि अभी भी सबसे सौम्य और सर्वोत्तम है।"

मूल योजना यह थी कि ब्रिटेन की पराजय के बाद शाही नौसेना का उपयोग करके यूरोप के सभी यहूदियों को मेडागास्कर निर्वासित कर दिया जाए। हालाँकि, नाज़ियों की अपेक्षा के अनुरूप ब्रिटिश सेना पराजित नहीं हुई, इसलिए मेडागास्कर योजना को छोड़ना पड़ा।

बेल्ज़ेक, सोबिबोर और ट्रेब्लिंका में नरसंहार की प्रक्रिया जर्मनी और ऑस्ट्रिया के छह नरसंहार शिविरों में इस्तेमाल की जाने वाली विधि के समान थी, लेकिन इसे एक बार में लोगों के पूरे समूहों को मारने के लिए बड़े पैमाने पर लागू किया गया था।

पीड़ितों को अपनी कीमती वस्तुएँ सौंपनी पड़ती थीं, जो जर्मन रीच्सबैंक की संपत्ति बन जाती थीं। फिर उन्हें कपड़े उतारने पड़ते थे और उनके कपड़ों की तलाशी ली जाती थी, जिसमें गहने और अन्य कीमती सामान शामिल होते थे। इसके बाद पीड़ितों को गैस चैंबर में ले जाया जाता था और ताजी हवा को कम से कम करने के लिए उन्हें ठूंस-ठूंस कर भर दिया जाता था। एक इंजन कार्बन मोनोऑक्साइड गैस उत्पन्न करता था, जिसे गैस पाइपों के माध्यम से छोड़ा जाता था, जिससे सभी की मृत्यु हो जाती थी। उनके शवों को अंतिम संस्कार के लिए जला दिया जाता था, इससे पहले उनके दांतों में लगे सोने के फिलिंग्स निकाल दिए जाते थे। इस सामूहिक हत्याकांड पर सावधानीपूर्वक नज़र रखी गई और इसका दस्तावेजीकरण किया गया।

उदाहरण के लिए, एसएस-स्टुरमबैनफ्यूहरर हरमन होफ्ले द्वारा 11 जनवरी, 1943 को बर्लिन में एसएस-ओबरस्टुरमबैनफ्यूहरर एडॉल्फ आइचमैन को भेजा गया इंटरसेप्टेड होफ्ले टेलीग्राम, 1942 के अंत तक एक्शन रेनहार्ड के चार शिविरों में कुल 1,274,166 आगमन और साथ ही 1942 के अंतिम दो सप्ताहों के लिए शिविर के अनुसार कुल आगमन की सूची देता है।

सभी शिविरों की संरचना लगभग एक जैसी थी। रैंप और कपड़े उतारने वाले बैरकों वाले स्वागत क्षेत्र से, यहूदी एक संकरे, छिपे हुए रास्ते (जिसे स्लुइस या ट्यूब कहा जाता था) से होकर गैस चैंबर, गड्ढों और शवदाह की जाली वाले नरसंहार क्षेत्र में जाते थे। एसएस और ट्रावनिकी एक अलग क्षेत्र में रहते थे। चीड़ की शाखाओं से आंशिक रूप से ढकी कांटेदार तारों की बाड़ शिविर को घेरे हुए थी और विभिन्न हिस्सों को अलग करती थी। ऑशविट्ज़ के विपरीत, यहाँ बिजली की बाड़ का उपयोग नहीं किया गया था। लकड़ी के निगरानी टावर शिविर की सुरक्षा करते थे।

ऑपरेशन रेनहार्ड के दौरान बेल्ज़ेक, सोबिबोर, ट्रेब्लिंका और माजदानेक में लगभग 20 लाख यहूदियों ने अपनी जान गंवाई। लगभग 178,045,960 जर्मन रीचमार्क मूल्य की यहूदी संपत्ति (आज के हिसाब से लगभग 700,000,000 अमेरिकी डॉलर या 550,000,000 यूरो) चोरी हो गई। यह पैसा न केवल जर्मन अधिकारियों के पास गया, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी कई लोगों (एसएस और पुलिसकर्मियों, शिविर रक्षकों, यहूदी बस्तियों या आस-पास के शिविरों वाले कस्बों और गांवों के गैर-यहूदी निवासियों) के पास गया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

124

"...वह "पुराना साम्राज्य", जिसका मुख्यालय उरसा मेजर (बिग डिपर) के "पूंछ वाले तारों" में से एक के पास स्थित था..."

उर्सा मेजर के "पूंछ तारे" अल्कोर, एलियोथ और अल्केड हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

125

"...रेडियोधर्मिता..."

परमाणु हथियार दृश्य, अवरक्त और पराबैंगनी प्रकाश के रूप में भारी मात्रा में विद्युत चुम्बकीय विकिरण उत्सर्जित करते हैं। इनके मुख्य खतरे जलने और आंखों में चोट लगना हैं। साफ मौसम में, ये चोटें विस्फोट क्षेत्र से काफी दूर तक भी हो सकती हैं। यह प्रकाश इतना शक्तिशाली होता है कि विस्फोट के बाद बचे मलबे में आग लग सकती है जो तेजी से फैलती है। परमाणु हथियारों की क्षमता बढ़ने के साथ-साथ तापीय प्रभावों का दायरा भी काफी बढ़ जाता है। विस्फोट में उत्सर्जित ऊर्जा का 35-45% हिस्सा तापीय विकिरण के कारण होता है, जो परमाणु हथियार की क्षमता पर निर्भर करता है।

युद्ध के दौरान इस्तेमाल किया गया पहला परमाणु बम 6 अगस्त, 1945 को हिरोशिमा पर गिराया गया था, जिसके परिणामस्वरूप उस वर्ष के अंत तक 130,000 से 150,000 लोग मारे गए थे। बमबारी में जीवित बचे लोग कई वर्षों के संघर्ष के बाद अब तेजी से बूढ़े हो रहे हैं।

हिरोशिमा में विस्फोट के 20 मिनट के भीतर ही भीषण आग का तूफान उठ खड़ा हुआ और कई इमारतों और घरों को नष्ट कर दिया। आग के तूफान में चारों दिशाओं से तेज हवाएं आग के केंद्र की ओर चलती हैं।

बम गिरने के समय श्री हिरोशी सावाचिका 28 वर्ष के थे। वे उजिना स्थित सेना मुख्यालय में तैनात एक सैन्य चिकित्सक थे। जब वे बम के संपर्क में आए, तब वे मुख्यालय की इमारत के अंदर थे, जो बम के केंद्र से 4.1 किलोमीटर दूर थी। बम के केंद्र से काफी दूर होने के कारण उन्हें गंभीर चोट नहीं आई। बम गिरने के बाद, वे बचे हुए लोगों को चिकित्सा सहायता पहुंचाने में व्यस्त रहे।

साक्षात्कारकर्ता: आपने 6 अगस्त को कितने मरीजों का इलाज किया?

उत्तर: खैर, उस दिन कम से कम 2 या 3 हज़ार मरीज़ थे, अगर उनमें वे मरीज़ भी शामिल हों जिन्हें मैंने निर्देश दिए थे। मुझे ऐसा लगा जैसे वह दिन शुरू हुआ तो कभी खत्म ही नहीं हुआ। मुझे लगातार मरीज़ों का इलाज करना ही था। वह मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन था। बाद में, जब मुझे उस दिन के बारे में सोचने का समय मिला, तो मुझे एहसास हुआ कि हम डॉक्टरों ने उस अनुभव से, उन सभी लोगों के दुख से बहुत कुछ सीखा। यह सच है कि चिकित्सा ज्ञान, चिकित्सा सुविधाओं, एकीकृत संगठन आदि की कमी ने हमें पर्याप्त चिकित्सा उपचार देने से रोका। फिर भी उस दिन हम डॉक्टरों को बहुत कुछ सीखने को मिला। मैंने सीखा कि परमाणु हथियार, जो इंसानों के दिमाग और शरीर को कुतरते हैं, उनका कभी इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का जरा सा भी विचार इंसानों के दिमाग से पूरी तरह मिटा देना चाहिए। अन्यथा, हम वही त्रासदी दोहराएंगे। और हम खुद पर शर्मिंदा होना कभी बंद नहीं करेंगे।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

126

"...अटलांटा..."

"अटलांटिस एक महाद्वीप था। इसकी राजधानी का नाम भी यही था, या कहें तो पोसीडोनिस का नाम, और यह इसके तट से सटे एक द्वीप पर स्थित थी। इस महाद्वीप के समुद्र में डूब जाने के बाद, केवल इसके सबसे ऊंचे पहाड़ों की चोटियाँ ही पानी के ऊपर रह गईं, जिनसे प्राचीन काल में 'धन्य द्वीपों' के नाम से जाना जाने लगा, और जिन्हें हम आज इंडोनेशिया के द्वीपों के रूप में जानते हैं।"

अटलांटिस ने एक विश्वव्यापी साम्राज्य स्थापित किया और दुनिया भर में उसकी उपनिवेश थीं। इन उपनिवेशों ने, हमेशा की तरह, अपनी मातृभूमि की नकल करने का प्रयास किया, जैसा कि उपनिवेशवादी अक्सर करते हैं। अटलांटिस और लेमुरिया के युग, आकार और स्थान के बारे में विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा घोर विकृत और गलत व्याख्या की गई है। वास्तव में, अटलांटिस और लेमुरिया लगभग एक ही समय में साथ-साथ अस्तित्व में थीं।

अधिक सटीक रूप से कहें तो, लेमुरिया आदर्श अटलांटिस था, ठीक उसी प्रकार जैसे ईडन या स्वर्ग, जो मानव जाति और सभ्यता दोनों का उद्गम स्थल था। वहीं से, लेमुरिया के अटलांटिसवासियों ने भारत के निकटवर्ती क्षेत्र में उपनिवेश स्थापित किया, जो उसका "जुड़वां" और सहयोगी बन गया। पौराणिक दृष्टि से, हम कह सकते हैं कि लेमुरिया-इंडोनेशिया सभी अन्य सभ्यताओं की माता थी, और अटलांटिस-भारत उनका पिता था।

हमारी अटलांटिस विरासत में कृषि और पशुपालन जैसी कलाएँ और तकनीकें भी शामिल हैं, जो अब तक के सबसे महान आविष्कार हैं। पालतू पौधों और जानवरों के बिना - जिनमें से अधिकांश या सभी की उत्पत्ति अटलांटिस में हुई थी, और जो अक्सर आनुवंशिक इंजीनियरिंग के उन्नत उपयोग को दर्शाते हैं - सभ्यता का विकास कभी संभव नहीं हो सकता था। इनके अलावा, समय की शुरुआत से ही हमें प्राप्त हुए रहस्यमय मूल के कई आविष्कार भी अटलांटिस और लेमुरिया की देन हैं: धातु विज्ञान, पत्थर की चिनाई और मूर्तिकला, कागज, वर्णमाला, औषधीय दवाएँ, बारूद, बुनाई, इत्यादि।

संदर्भ: http://www.atlan.org/

127

"...लेमूर..."

लेमुरिया एक काल्पनिक "खोई हुई भूमि" का नाम है, जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में अलग-अलग स्थानों पर स्थित है। इसकी उत्पत्ति 19 वीं शताब्दी में पृथ्वी के भूभाग में पाई जाने वाली विसंगतियों का कारण बताने के प्रयासों से हुई।

जैवभूगोल। हालाँकि लेमुरिया अब पारंपरिक विज्ञान के दायरे से बाहर हो चुका है, फिर भी इसे रहस्यवादी लेखकों के साथ-साथ भारत के कुछ तमिल लेखकों ने भी अपनाया है।

लेमुरिया के विवरण अपने संदर्भों की आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन सभी में एक समान मान्यता है कि प्राचीन काल में एक महाद्वीप अस्तित्व में था और भूवैज्ञानिक परिवर्तन, जो अक्सर प्रलयकारी होते थे, के परिणामस्वरूप समुद्र में डूब गया।

लेमुरिया का उल्लेख रहस्यवाद की शब्दावली में मैडम ब्लावत्स्की की रचनाओं के माध्यम से हुआ, जिन्होंने 1880 के दशक में दावा किया था कि महात्माओं ने उन्हें प्राचीन, अटलांटिस-पूर्व काल की पुस्तक 'दज़्यान' दिखाई थी। कुमारी कंडम एक डूबा हुआ राज्य है जिसकी तुलना कभी-कभी लेमुरिया से की जाती है। शास्त्रीय तमिल साहित्य में वर्णित विषयों की इन आधुनिक व्याख्याओं के अनुसार—महाकाव्य सिलप्पतिकारम और मणिमेकलाई, जिनमें पुहार के डूबे हुए शहर का वर्णन है—द्रविड़ मूल रूप से दक्षिण भारत के वर्तमान तट के दक्षिण में स्थित भूमि से आए थे, जो लगातार बाढ़ों के कारण डूब गई थी। तमिल लेखकों के कई दावे हैं कि ऑस्ट्रेलिया और वर्तमान तमिलनाडु तट को जोड़ने वाला एक विशाल भूभाग था।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि मैडम ब्लावत्स्की ने लेमुरियन (उनकी तीसरी मूल जाति) को काले रंग का बताया और नीग्रोइड जाति, द्रविड़ियन, ऑस्ट्रेलोइड, पापुआन और मेलनेशियन को उनसे उत्पन्न बताया।

247

महाद्वीपीय बहाव की मान्यता से पहले, जीवविज्ञानी अक्सर जलमग्न भूभागों की परिकल्पना करते थे ताकि उन भूमि-आधारित प्रजातियों की आबादी को समझाया जा सके जो अब जल की बाधाओं से अलग हो गई हैं। इसी प्रकार, भूवैज्ञानिकों ने विभिन्न महाद्वीपों पर चट्टान संरचनाओं की उल्लेखनीय समानताओं को समझाने का प्रयास किया। पहला व्यवस्थित प्रयास मेल्चियोर न्यूमेयर ने अपनी पुस्तक 'एर्डगेस्चिच्टे' में 1887 में किया था। 19 वीं शताब्दी के दौरान, प्रजातियों के वर्तमान वितरण को समझाने के लिए कई काल्पनिक जलमग्न भू-पुलों और महाद्वीपों का प्रस्ताव रखा गया था।

जैसे-जैसे वैज्ञानिक समुदाय में लेमुरिया को कुछ स्वीकृति मिलने लगी, यह अन्य विद्वानों के कार्यों में भी दिखाई देने लगा। जर्मन डार्विनवादी वर्गीकरणशास्त्री अर्न्स्ट हेकेल ने जीवाश्म अभिलेखों की अनुपलब्धता के स्पष्टीकरण के रूप में लेमुरिया का प्रस्ताव रखा। एक अन्य स्रोत के अनुसार, हेकेल ने स्क्लेटर से पहले यह सिद्धांत प्रस्तुत किया था (लेकिन 'लेमुरिया' नाम का प्रयोग किए बिना)। इस लुप्त महाद्वीप पर मानव प्रजाति की उत्पत्ति का पता लगाते हुए, उन्होंने दावा किया कि जीवाश्म अभिलेख इसलिए नहीं मिल सके क्योंकि यह समुद्र में डूब गया था।

अन्य वैज्ञानिकों ने यह परिकल्पना की कि लेमुरिया प्रशांत महासागर के कुछ हिस्सों में फैला हुआ था, जिससे एशिया और अमेरिका में प्रजातियों के वितरण की व्याख्या होती है।

प्लेट टेक्टोनिक्स और महाद्वीपीय बहाव के सिद्धांतों को व्यापक वैज्ञानिक समुदाय द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद लेमुरिया सिद्धांत पारंपरिक वैज्ञानिक विचार-विमर्श से पूरी तरह गायब हो गया। प्लेट टेक्टोनिक्स के सिद्धांत के अनुसार (जो आजकल भूविज्ञान में एकमात्र स्वीकृत प्रतिमान है), मेडागास्कर और भारत वास्तव में कभी एक ही भूभाग का हिस्सा थे (इस प्रकार भूवैज्ञानिक समानताओं का कारण बनता है), लेकिन प्लेटों की गति के कारण लाखों साल पहले भारत टूटकर अलग हो गया और अपनी वर्तमान स्थिति में आ गया। मूल भूभाग टूट गया - यह समुद्र तल के नीचे नहीं डूबा।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

..."सुमात्रा में टोबा झील"...
टोबा ज्वालामुखी विस्फोट (टोबा घटना) लगभग 67,500 से 75,500 वर्ष पूर्व उस स्थान पर हुआ था जिसे अब टोबा झील कहा जाता है। इसका अनुमानित ज्वालामुखी विस्फोट सूचकांक 8 था (जिसे "अत्यंत विशाल" बताया गया है), जो इसे पिछले पच्चीस मिलियन वर्षों में संभवतः सबसे बड़ा विस्फोटक ज्वालामुखी विस्फोट बनाता है। विस्फोटित पदार्थ की कुल मात्रा लगभग 2800 घन किमी (670 घन मील) थी - लगभग 2,000 किमी$^3$ इग्निम्ब्राईट जो जमीन पर बह गया और लगभग 800 किमी$^3$ राख के रूप में गिरा, जिसका अधिकांश भाग हवा के साथ पश्चिम की ओर बह गया।
इसके विपरीत, 1980 में माउंट सेंट हेलेंस के विस्फोट से लगभग 1.2 घन किलोमीटर पदार्थ निकला, जबकि ऐतिहासिक काल में सबसे बड़ा ज्वालामुखी विस्फोट, 1815 में माउंट टैम्बोरा में हुआ, जिससे लगभग 100 घन किलोमीटर घनी चट्टान के बराबर पदार्थ निकला और उत्तरी अमेरिका तक "बिना गर्मी का वर्ष" की स्थिति उत्पन्न हुई।
टोबा ज्वालामुखी का विस्फोट, ज्वालामुखी में हुए कम से कम तीन ज्वालामुखी विस्फोटों की श्रृंखला में नवीनतम घटना थी, जिनसे ज्वालामुखीय गर्त (काल्डेरा) का निर्माण हुआ था। इससे पहले लगभग 700,000 और 840,000 वर्ष पूर्व काल्डेरा का निर्माण हुआ था।
इसकी भयावहता का अंदाजा लगाने के लिए, यह ध्यान रखें कि यद्यपि यह विस्फोट इंडोनेशिया में हुआ था, लेकिन इसने पूरे भारतीय भूभाग पर लगभग 15 सेंटीमीटर (6 इंच) मोटी राख की परत जमा कर दी थी।
उपमहाद्वीप में; मध्य भारत में एक स्थान पर, टोबा राख की परत आज 6 मीटर (20 फीट) तक मोटी है और मलेशिया के कुछ हिस्से 9 मीटर राख से ढके हुए थे। इसके अलावा, यह 10 अनुमान लगाया गया है कि इस घटना के कारण वायुमंडल में 10 मीट्रिक टन सल्फ्यूरिक एसिड उत्सर्जित हुआ, जिससे अम्लीय वर्षा हुई।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

129

"...क्राकाटोआ पर्वत..."

"माउंट क्राकाटोआ इंडोनेशिया में जावा और सुमात्रा के बीच सुंडा जलडमरूमध्य में स्थित एक ज्वालामुखी द्वीप है। यह नाम द्वीप समूह, मुख्य द्वीप (जिसे राकाटा भी कहा जाता है), और पूरे ज्वालामुखी के लिए प्रयुक्त होता है। दर्ज इतिहास में यह बार-बार, बड़े पैमाने पर और विनाशकारी परिणामों के साथ फटा है। सबसे प्रसिद्ध विस्फोट 26-27 अगस्त 1883 को हुए कई बड़े विस्फोटों के रूप में सामने आया, जो आधुनिक समय की सबसे हिंसक ज्वालामुखी घटनाओं में से एक था। 6 के ज्वालामुखी विस्फोट सूचकांक के साथ, यह 200 मेगाटन टीएनटी के बराबर था - जो जापान के हिरोशिमा को तबाह करने वाले लिटिल बॉय बम (13 से 16 केटी) की क्षमता से लगभग 13,000 गुना अधिक था।"

1883 में हुए ज्वालामुखी विस्फोट से 25 घन किलोमीटर से अधिक चट्टान, राख और प्यूमिस निकले और इसने इतिहास में अब तक की सबसे तेज़ आवाज़ पैदा की: इस विनाशकारी विस्फोट की आवाज़ ऑस्ट्रेलिया के पर्थ तक, लगभग 1,930 मील (3,110 किमी) और मॉरीशस के पास रॉड्रिग्स द्वीप तक, लगभग 3,000 मील (5,000 किमी) तक स्पष्ट रूप से सुनी गई। आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार, क्राकाटोआ के पास 165 गाँव और कस्बे नष्ट हो गए और 132 गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गए, कम से कम 36,417 (आधिकारिक आंकड़ा) लोगों की मृत्यु हुई और हजारों लोग विस्फोट से घायल हुए, जिनमें से अधिकांश विस्फोट के बाद आई सुनामी से घायल हुए थे।

इस ज्वालामुखी विस्फोट ने क्राकाटोआ द्वीप के दो तिहाई हिस्से को नष्ट कर दिया। 1927 से इस ज्वालामुखी में हुए विस्फोटों ने उसी स्थान पर एक नया द्वीप बना दिया है, जिसे अनाक क्राकाटोआ (क्राकाटोआ का बच्चा) कहा जाता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

130

"...विशाल ज्वालामुखी विस्फोट..."

सुपरज्वालामुखी पृथ्वी पर सबसे बड़े और सबसे अधिक मात्रा में विस्फोट करने वाला ज्वालामुखी है। ऐसे विस्फोटों की तीव्रता अलग-अलग होती है, लेकिन उत्सर्जित टेफ्रा की मात्रा इतनी होती है कि यह भूदृश्य को पूरी तरह से बदल देती है और वर्षों तक वैश्विक जलवायु को गंभीर रूप से प्रभावित करती है, जिससे जीवन पर विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। VEI-8 ज्वालामुखी घटनाओं में निम्नलिखित स्थानों पर हुए विस्फोट शामिल हैं। उत्सर्जित सामग्री की अनुमानित मात्रा कोष्ठकों में दी गई है।

•

• •

•

ताओपो झील - ओरुआनुई विस्फोट 26,500 साल पहले (1,170 किमी3)
टोबा झील, सुमात्रा, इंडोनेशिया - 75,000 वर्ष पूर्व (2,800 वर्ग किमी)
येलोस्टोन काल्डेरा, व्योमिंग, संयुक्त राज्य अमेरिका - 22 लाख वर्ष पूर्व (2,500 वर्ग किमी) और 640,000 वर्ष पूर्व (1,000 वर्ग किमी)
ला गारिटा काल्डेरा, कोलोराडो, संयुक्त राज्य अमेरिका - 27.8 मिलियन वर्ष पूर्व (~5,000 वर्ग किमी$^3$) फिश कैन्यन टफ के विशाल विस्फोट का स्रोत।
टोबा झील के विस्फोट ने पृथ्वी को ज्वालामुखी शीतकाल में धकेल दिया, जिससे अनुमानित 60% मानव आबादी का सफाया हो गया (हालांकि मनुष्य ज्वालामुखी के आसपास भी जीवित रहने में कामयाब रहे), और यह वायुमंडल में सल्फ्यूरिक एसिड के निर्माण के लिए जिम्मेदार था।
भूवैज्ञानिक अतीत में कई अन्य विशालकाय ज्वालामुखी विस्फोट भी हुए हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org

131

"...वायुमंडलीय प्रदूषण के साथ-साथ एक लंबी अवधि के दौरान सूर्य से निकलने वाली विकिरण अंतरिक्ष में वापस परावर्तित हो जाती है, जिससे वैश्विक शीतलन होता है..."

परमाणु शीतकाल एक काल्पनिक वैश्विक जलवायु स्थिति है, जिसके बारे में भविष्यवाणी की गई है कि यह बड़े पैमाने पर परमाणु युद्ध का संभावित परिणाम हो सकता है। ऐसा माना जाता है कि बड़ी संख्या में परमाणु हथियारों के विस्फोट से, विशेष रूप से शहरों जैसे ज्वलनशील लक्ष्यों पर, भीषण ठंड पड़ सकती है, जहां पृथ्वी में बड़ी मात्रा में धुआं और कालिख समाहित हो जाएगी।

समतापमंडल। इस शब्द का प्रयोग महाज्वालामुखी विस्फोट के बाद उत्पन्न होने वाले प्रभावों में से एक के लिए भी किया जाता है।

वैश्विक औसत सतही तापमान में कई वर्षों तक -7°C से -8°C की गिरावट बनी रहती है, और एक दशक बाद भी यह गिरावट -4°C ही रहती है (चित्र 2)। यह देखते हुए कि 18,000 वर्ष पूर्व अंतिम हिमयुग के चरम पर वैश्विक औसत गिरावट लगभग -5°C थी, यह मानव जाति के इतिहास में गति और तीव्रता के मामले में अभूतपूर्व जलवायु परिवर्तन होगा। तापमान में सबसे अधिक परिवर्तन भूमि पर होते हैं... उत्तरी अमेरिका के बड़े क्षेत्रों में -20°C से अधिक और यूरेशिया के अधिकांश हिस्सों में, जिनमें सभी कृषि क्षेत्र शामिल हैं, -30°C से अधिक की गिरावट दर्ज की जाती है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

132

"...वह वैश्विक प्रलय जिसने डायनासोरों का विनाश किया..."

पिछले 60 करोड़ वर्षों में पाँच बड़े सामूहिक विलुप्तिकरण हुए हैं, जिनमें औसतन सभी प्रजातियों में से आधी प्रजातियाँ विलुप्त हो गईं। पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा सामूहिक विलुप्तिकरण पर्मियन-ट्राइसिक काल में हुआ था, जिसने 25 करोड़ वर्ष पहले पर्मियन काल का अंत किया और सभी प्रजातियों में से 90% को नष्ट कर दिया। इस प्रकार के अंतिम सामूहिक विलुप्तिकरण के कारण डायनासोरों का अंत हुआ और यह पाया

गया है कि यह एक बड़े क्षुद्रग्रह के प्रभाव के साथ हुआ था; यह क्रेटेशियस-टर्शियरी विलुप्तिकरण घटना है। अन्य चार बड़े सामूहिक विलुप्तिकरणों के लिए किसी प्रभाव के ठोस प्रमाण नहीं हैं, हालांकि ओहियो स्टेट के वैज्ञानिकों की एक हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि उन्होंने पूर्वी अंटार्कटिक हिम चादर के नीचे 483 किमी व्यास का एक प्रभाव गड्ढा खोजा है, जो गुरुत्वाकर्षण माप के आधार पर लगभग 25 करोड़ वर्ष पुराना हो सकता है, जो इसे पर्मियन-ट्राइसिक विलुप्तिकरण घटना से जोड़ सकता है।

1980 में, भौतिक विज्ञानी लुइस अल्वारेज़, उनके बेटे, भूविज्ञानी वाल्टर अल्वारेज़, और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले के परमाणु रसायनज्ञ फ्रैंक असारो और हेलेन वी. माइकल ने इरिडियम की असामान्य रूप से उच्च सांद्रता की खोज की। इरिडियम एक ऐसा तत्व है जो पृथ्वी की पपड़ी में दुर्लभ है, लेकिन कई उल्कापिंडों में अपेक्षाकृत प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। 65 मिलियन वर्ष पुरानी "इरिडियम परत" में मौजूद इरिडियम की मात्रा और वितरण के आधार पर, अल्वारेज़ की टीम ने बाद में अनुमान लगाया कि 10-14 किलोमीटर के एक क्षुद्रग्रह का पृथ्वी से टकराव हुआ होगा। के-टी सीमा पर स्थित यह इरिडियम परत विश्व स्तर पर 100 विभिन्न स्थानों पर पाई गई है। बहुदिशात्मक रूप से प्रभावित क्वार्ट्ज (कोएसाइट), जो केवल बड़े प्रभावों या परमाणु बम विस्फोटों के परिणामस्वरूप बनता है, भी इसी परत में 30 से अधिक स्थानों पर पाया गया है। उपरोक्त के साथ कालिख और राख का स्तर सामान्य स्तर से हजारों गुना अधिक पाया गया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

अंतिम क्रेटेशियस काल की पर्यावरणीय घटनाओं के भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड से पता चलता है कि इरिडियम और अन्य संबंधित तत्व एक ही क्षण में जमा नहीं हुए थे, बल्कि लगभग 10,000 से 100,000 वर्षों के अंतराल में जमा हुए थे। उपलब्ध भूवैज्ञानिक साक्ष्य इन तत्वों की उत्पत्ति उल्कापिंड से होने के बजाय मेंटल से होने का समर्थन करते हैं। ये परिणाम अपेक्षाकृत कम भूवैज्ञानिक समय अंतराल में घटित होने वाली तीव्र ज्वालामुखी विस्फोटों की एक श्रृंखला के परिदृश्य के अनुरूप हैं, न कि किसी एक बड़े क्षुद्रग्रह के टकराने की घटना के परिदृश्य के।

संदर्भ: लेख: अंतिम क्रेटेशियस पर्यावरणीय घटनाएँ, चार्ल्स बी. ऑफिसर 1 और चार्ल्स एल. ड्रेक
2

1
डार्टमाउथ कॉलेज, हनोवर, न्यू हैम्पशायर 03755 के पृथ्वी विज्ञान विभाग में शोध प्रोफेसर।
डार्टमाउथ कॉलेज, हनोवर, न्यू हैम्पशायर 03755 में पृथ्वी विज्ञान विभाग के प्रोफेसर।
133
"परमाणु विस्फोटों से वायुमंडल में ज्वालामुखी विस्फोटों के समान ही विकिरण फैलता है।"
26 अक्टूबर, 2007 - बंगाल की खाड़ी के तटों से मिले नए साक्ष्य इस क्रांतिकारी विचार का समर्थन करते हैं कि डायनासोरों का सफाया मैक्सिको की खाड़ी में उल्कापिंड के टकराने से नहीं, बल्कि कई विशाल ज्वालामुखी विस्फोटों की एक श्रृंखला से हुआ था। केलर ने कहा कि इस खोज से दो महत्वपूर्ण बातें पुष्ट होती हैं: पहली, कि दक्कन का सबसे बड़ा विस्फोट और के-टी सामूहिक विलुप्तिकरण एक ही समय में हुए थे। दूसरी, कि बाद वाला, अंतिम विस्फोट कई जीवित प्राणियों के पुनरुद्धार को धीमा करने के लिए बिल्कुल सही समय पर हुआ था। उन्होंने कहा कि धीमी पुनर्प्राप्ति का यह दूसरा पहलू लंबे समय से जीवाश्म विज्ञानियों के लिए एक रहस्य बना हुआ था।
संदर्भ: http://dsc.discovery.com/news/2007/10/26/dinosaur-volcano.html
पृथ्वी पर जीवन के इतिहास में हुए सामूहिक विलुप्तिकरणों के एक नए सांख्यिकीय अध्ययन से इस विचार को बल मिल रहा है कि किसी एक उल्कापिंड, ज्वालामुखी विस्फोट या अन्य किसी एक कारण को इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, यहां तक कि क्रेटेशियस-टर्शियरी घटना के मामले में भी, जिसने 65 मिलियन वर्ष पहले डायनासोरों का अंत कर दिया था।

इसके विपरीत, सबसे भीषण विलुप्ति तब होती है जब जीवन पर किसी प्रकार का निरंतर, बहु-पीढ़ीगत दबाव कुछ शक्तिशाली आघातों के साथ जुड़ जाता है। इसे अब सामूहिक विलुप्ति का प्रेस/पल्स सिद्धांत कहा जा रहा है।

यह सिद्धांत "असल में वही बात कहने का एक अधिक प्रभावशाली तरीका है जो मैं और कई अन्य लोग कहते हैं।"

प्रिंसटन विश्वविद्यालय की गर्टा केलर ने कहा, "जीवाश्म विज्ञानी कई वर्षों से यही कहते आ रहे हैं कि उल्कापिंडों के टकराने से हुई मृत्यु की परिकल्पना पूरी तरह गलत है। केवल उल्कापिंडों के टकराने से ही के-टी या किसी अन्य बड़े सामूहिक विलुप्तिकरण की मृत्यु नहीं हो सकती थी।"

लेट क्रेटेशियस काल में, बड़े पैमाने पर ज्वालामुखी विस्फोट - भारत में दक्कन ट्रैप विस्फोट - और उससे जुड़े जलवायु परिवर्तन, एक ऐसे प्रभाव के साथ हुए जिसने अत्यधिक तनावग्रस्त जीव-जंतुओं को विलुप्त होने के कगार पर धकेल दिया।

संदर्भ: http://dsc.discovery.com/news/2006/10/20/extinction_pla.html

134

"... रुवेंज़ोरी पर्वत श्रृंखला..."

"रवेनज़ोरी की सबसे ऊँची चोटियाँ स्थायी रूप से बर्फ से ढकी रहती हैं, और माउंट किलिमंजारो और माउंट केन्या के साथ ये अफ्रीका में एकमात्र ऐसी चोटियाँ हैं। रवेनज़ोरी को अक्सर टॉलेमी द्वारा वर्णित "चंद्रमा के पर्वत" के रूप में पहचाना जाता है। रवेनज़ोरी अपनी वनस्पति के लिए प्रसिद्ध है, जो उष्णकटिबंधीय वर्षावन से लेकर अल्पाइन घास के मैदानों और बर्फ तक फैली हुई है; और अपनी वन्यजीव आबादी के लिए भी, जिसमें वन हाथी, कई प्राइमेट प्रजातियाँ और कई स्थानिक पक्षी शामिल हैं।"

251

-- संदर्भ: Wikipedia.org

135

..."पाइरेनीज़ पर्वत"...

"पाइरेनीज़ पर्वतमाला का नाम पाइरेन (ग्रीक में अग्नि) के नाम पर रखा गया है, जो बेब्रिक्स की पुत्री थी और हेराक्लेस द्वारा उसके साथ बलात्कार किया गया था। सर्प को जन्म देने से भयभीत होकर वह पहाड़ों में भाग गई और या तो दफन हो गई या जंगली जानवरों द्वारा खा ली गई। हेरोडोटस ने 450 ईसा पूर्व में ही ओइकुमेने के अपने मानचित्र में इस किंवदंती का उल्लेख किया था।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

136

"... मंगोलिया के मैदान..."

बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध की अराजकता में, तेमुजिन नामक एक सरदार अंततः मंचूरिया और अल्ताई पर्वतों के बीच मंगोल जनजातियों को एकजुट करने में सफल रहा। 1206 में, उसने चंगेज खान की उपाधि धारण की, और उसने और उसके उत्तराधिकारियों ने मंगोल साम्राज्य का विस्तार विश्व इतिहास के सबसे बड़े सन्निहित भूमि साम्राज्य के रूप में शुरू किया, जो उत्तर-पश्चिम में कीवन रूस तक और दक्षिण में उत्तरी वियतनाम, तिब्बत और ईरान तक फैला हुआ था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

137

..."उनकी संपत्ति लूट लो।"

लूटपाट, डकैती, लूटपाट या डकैती किसी सैन्य या राजनीतिक विजय के दौरान, या किसी आपदा या दंगे के समय, जैसे युद्ध, प्राकृतिक आपदा या दंगे के दौरान, बलपूर्वक अंधाधुंध तरीके से सामान छीनना है। इस शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में भी किया जाता है (कुछ लोग इसे लाक्षणिक अर्थ कहेंगे), जिसमें चोरी और गबन के जघन्य मामलों का वर्णन किया जाता है, जैसे भ्रष्ट या अत्यधिक लालची कॉर्पोरेट अधिकारियों या सरकारी अधिकारियों द्वारा निजी या

सार्वजनिक संपत्तियों की "लूटपाट"। इन सभी गतिविधियों से प्राप्त धन को लूट, डकैती या लूटपाट कहा जा सकता है।
मूल रूप से लूटपाट का तात्पर्य न केवल युद्ध के दौरान विजयी सैनिकों द्वारा, बल्कि समुदाय के आम नागरिकों द्वारा भी गांवों और शहरों की लूटपाट से था। उदाहरण के लिए, 'वॉर एंड पीस' देखें, जिसमें नेपोलियन की सेना के शहर में प्रवेश करने से पहले मॉस्को के नागरिकों द्वारा की गई व्यापक लूटपाट और अन्य जगहों पर फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा की गई लूटपाट का वर्णन है; द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजियों द्वारा कलाकृतियों की लूटपाट पर भी ध्यान दें।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
138
"...टियाहुआनाको..."
इस स्थल के पुरातत्व के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी के लिए, निम्नलिखित वेबसाइटों पर जाएँ:
http://www.sacredsites.com/americas/bolivia/tiahuanaco.html
http://www.viewzone.com/tia.html
http://www.world-mysteries.com/mpl_6.htm
139
"...ग्रह के ध्रुवों का विस्थापन..."।
चार्ल्स हैपगुड पहली बार 1950 के दशक के मध्य में पृथ्वी की पपड़ी के विस्थापन के अपने सिद्धांत के साथ सार्वजनिक ध्यान में आए, जो एक क्रांतिकारी भूवैज्ञानिक विचार था जिसने जिज्ञासा और समर्थन को आकर्षित किया।
252

अल्बर्ट आइंस्टीन। आइंस्टीन-हैपगुड पत्राचार विज्ञान के इतिहास का एक भुला हुआ पन्ना है। रोज़ और मैंने 1995 की शरद ऋतु में अल्बर्ट आइंस्टीन के अभिलेखागार से ये पत्र (आइंस्टीन द्वारा हैपगुड को लिखे गए दस पत्र) प्राप्त किए। ये पत्र पहली बार दिखाते हैं कि अल्बर्ट आइंस्टीन ने चार्ल्स हैपगुड को सिद्धांत के विकास में किस प्रकार व्यापक रूप से सहायता प्रदान की थी। इस पत्राचार का विस्तृत विवरण 'द अटलांटिस ब्लूप्रिंट' में दिया गया है। यहाँ इसका संक्षिप्त सारांश है:

हैपगुड को दिए गए अपने दूसरे उत्तर (24 नवंबर 1952) में आइंस्टीन ने लिखा कि पृथ्वी की पपड़ी के विस्थापन के विचार को केवल इसलिए "अचानक" खारिज नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह पृथ्वी के अतीत के बारे में हमारी मान्यताओं से मेल नहीं खाता। आइंस्टीन का दावा था कि इसके लिए ठोस "भूवैज्ञानिक और जीवाश्मवैज्ञानिक तथ्यों" की आवश्यकता थी। छह महीनों तक, हैपगुड ने पृथ्वी की पपड़ी के विस्थापन के विचार का समर्थन करने के लिए भूवैज्ञानिक साक्ष्य एकत्र किए। 3 मई 1953 को उन्होंने इस साक्ष्य के अड़तीस पृष्ठ आइंस्टीन को भेजे। उनके तर्क का मुख्य आधार हैपगुड का यह साक्ष्य था कि जिस समय उत्तरी अमेरिका बर्फ से ढका हुआ था, उसी समय लघु अंटार्कटिका बर्फ-मुक्त था। आइंस्टीन ने 8 मई 1953 को उत्तर दिया:

"मुझे आपके तर्क बहुत प्रभावशाली लगे और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि आपकी परिकल्पना सही है। इस बात पर शायद ही कोई संदेह कर सकता है कि भूपर्पटी में महत्वपूर्ण परिवर्तन बार-बार और थोड़े समय के अंतराल में हुए हैं।"

उन्होंने हैपगुड से "पृथ्वी की दरारों" के साक्ष्यों पर आगे शोध करने का आग्रह किया। एक महीने बाद (11 जून 1953) हैपगुड ने आइंस्टीन को पृथ्वी की दरारों और बर्फ की चादरों के विकास से संबंधित साक्ष्यों के बयालीस पृष्ठ भेजे।

आइंस्टीन ने (17 दिसंबर 1953) हैपगुड को पत्र लिखकर "अपकेंद्री संवेग" की समस्या पर ध्यान देने का आग्रह किया। हैपगुड ने इस समस्या पर चार पृष्ठों का पत्र और आर्कटिक साइबेरिया के जमे हुए मैमथ सहित "जीवाश्म संबंधी साक्ष्यों" के सैंतीस पृष्ठों का पत्र लिखकर उत्तर दिया। आइंस्टीन अब आश्वस्त हो गए थे। 18 मई 1954 को, आइंस्टीन ने हैपगुड की

पुस्तक "पृथ्वी की बदलती परत: पृथ्वी विज्ञान की कुछ मूलभूत समस्याओं की कुंजी" (1958 में पैंथियन बुक्स, न्यूयॉर्क द्वारा प्रकाशित) के लिए एक बहुत ही अनुकूल प्रस्तावना लिखी। प्रस्तावना इस प्रकार शुरू होती है:
मुझे अक्सर ऐसे लोगों से संदेश मिलते हैं जो अपने अप्रकाशित विचारों के बारे में मुझसे सलाह लेना चाहते हैं। यह तो स्पष्ट है कि इन विचारों की वैज्ञानिक वैधता बहुत कम ही होती है। लेकिन श्री हैपगुड से मुझे जो पहला संदेश मिला, उसने मुझे झकझोर दिया। उनका विचार मौलिक, अत्यंत सरल और अगर यह पृथ्वी की सतह के इतिहास से संबंधित हर चीज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होता है, तो... मुझे लगता है कि यह आश्चर्यजनक, बल्कि आकर्षक विचार, पृथ्वी के विकास के सिद्धांत में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति का गंभीरता से ध्यान आकर्षित करने योग्य है।
-- संदर्भ: व्हेन द स्काई फेल, रैंड और रोज़ फ्लेम्थ-अथ
140
"गीज़ा के पिरामिडों की ज़मीन पर स्थिति, गीज़ा से आकाश में दिखाई देने वाले ओरियन तारामंडल की स्थिति से बिल्कुल मेल खाती है..."
"(रॉबर्ट) बाउवल विशेष रूप से ओरियन सहसंबंध सिद्धांत (ओसीटी) के लिए जाने जाते हैं। यह सिद्धांत गीज़ा पठार के चौथे राजवंश के मिस्र के पिरामिडों और ओरियन तारामंडल में कुछ तारों के संरेखण के बीच एक संबंध प्रस्तावित करता है।"
एक रात, सऊदी अरब में काम करते समय, वह अपने परिवार और एक दोस्त के परिवार को लेकर अरब रेगिस्तान के रेतीले टीलों में कैंपिंग के लिए गए। उनके दोस्त ने ओरियन की ओर इशारा करते हुए बताया कि मिंटाका, जो ओरियन की बेल्ट बनाने वाले तारों में से छोटा और पूर्वी तारा है,
253

अन्य तारों से थोड़ा हटकर स्थित। इसके बाद बाउवल ने ओरियन की पेटी में तीन मुख्य तारों की संरचना और गीज़ा के कब्रिस्तान में तीन मुख्य पिरामिडों की संरचना के बीच संबंध स्थापित किया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

141

"...हेलियोपोलिस..."

"प्रीडायनेस्टिक काल से ही हेलियोपोलिस पर कब्ज़ा रहा है, और प्राचीन और मध्य साम्राज्यों के दौरान यहाँ व्यापक निर्माण कार्य हुए। दुर्भाग्य से, आज यह अधिकतर नष्ट हो चुका है, इसके मंदिरों और अन्य इमारतों का उपयोग मध्यकालीन काहिरा के निर्माण में किया गया था; इसके बारे में अधिकांश जानकारी लिखित स्रोतों से मिलती है।"

डायोडोरस सिकुलस के अनुसार, हेलियोपोलिस का निर्माण हेलिओस और रोड के पुत्र एक्टिस ने करवाया था, जिसने शहर का नाम अपने पिता के नाम पर रखा था। बाढ़ के दौरान सभी यूनानी शहर नष्ट हो गए थे, लेकिन हेलियोपोलिस सहित मिस्र के शहर बच गए थे। हेलियोपोलिस के प्रमुख देवता एटम थे, जिनकी पूजा मुख्य मंदिर में की जाती थी।

यह शहर एनेड देवताओं की पूजा का मूल स्रोत भी था, हालांकि बाद के समय में, जैसे-जैसे होरस का महत्व बढ़ता गया, पूजा समकालिक सौर देवता रा-हरख्टी (शाब्दिक रूप से रा, (जो) दो क्षितिजों का होरस है) पर केंद्रित हो गई।

अमरना काल के दौरान, फ़राओ अखेनातेन ने सूर्य के देवता, एटेन की एकेश्वरवादी पूजा की शुरुआत की। कुछ समय के लिए मिस्र की राजधानी होने के कारण, हेलियोपोलिस में सर्दियों के महीनों के लिए अनाज का भंडार किया जाता था, जब बहुत से लोग भोजन की तलाश में शहर में आते थे, जिससे इसे "रोटी का स्थान" कहा जाने लगा। "मृतकों की पुस्तक" में आगे बताया गया है कि हेलियोपोलिस "रोटी के गुणन का स्थान" था, जिसमें एक मिथक का वर्णन है जिसमें होरस ने केवल 7 रोटियों से वहाँ के लोगों को भोजन कराया था, जो बाइबिल के नए नियम के दृष्टांत का आधार है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

142

"...नेफिलिम..."

"नेफिलिम जलप्रलय से पहले की एक जाति थी, जिन्हें बाइबिल में विशालकाय कहा गया है।"

-- संदर्भ: http://www.nwcreation.net/nephilim.html

उत्पत्ति 6:4 में लिखा है, “उन दिनों में और उसके बाद भी, जब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों के साथ यौन संबंध बनाए और उनसे संतान उत्पन्न की, तब पृथ्वी पर नेफिलिम थे। वे प्राचीन काल के वीर और प्रसिद्ध पुरुष थे।” नेफिलिम विशालकाय लोगों की एक जाति थी, जो परमेश्वर के पुत्रों (संभवतः पतित स्वर्गदूतों) और मनुष्यों की पुत्रियों के यौन मिलन से उत्पन्न हुई थी। इब्रानी ग्रंथों से अनुवादित, “नेफिलिम” का अर्थ है “पतित लोग”। वे अपनी शक्ति, पराक्रम और पाप करने की अपार क्षमता के लिए प्रसिद्ध थे।

नेफिलिम की उत्पत्ति पतित स्वर्गदूतों की कहानी से शुरू होती है। उच्च कोटि के स्वर्गदूत शेमहेज़ाई ने स्वर्गदूतों के एक समूह का नेतृत्व करते हुए मनुष्यों को धार्मिकता का उपदेश देने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए। यह उपदेश कुछ शताब्दियों तक चला, लेकिन जल्द ही स्वर्गदूतों में मानव स्त्रियों के प्रति लालसा जागृत हो गई। वासना से ग्रस्त होकर, पतित स्वर्गदूतों ने स्त्रियों को जादू-टोना सिखाया, उनके साथ शारीरिक संबंध स्थापित किए और संकर संतान उत्पन्न की: नेफिलिम।

नेफिलिम विशालकाय थे। उनकी ताकत बेमिसाल थी और भूख भी बहुत ज़्यादा थी। मानव जाति के सारे संसाधनों को खा जाने के बाद, उन्होंने मनुष्यों को खाना शुरू कर दिया।

254

स्वयं नेफिलिमों ने मनुष्यों पर हमला किया और उन पर अत्याचार किया तथा पृथ्वी पर व्यापक विनाश का कारण बने।

नेफिलिम की कहानी के लिए दो अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ, बाइबिल और मृत सागर स्क्रॉल, नेफिलिम के लिए कई नामों का उल्लेख करते हैं। इन विशालकाय जीवों के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कई अंशों में किया गया है। उन्हें अलग-अलग नामों से पुकारा गया है, जैसे एमिम, या "आतंक" (उत्पत्ति 14:5; व्यवस्थाविवरण 2:10), रेफाइम, या "कमजोर करने वाले" या "मृतक" (2 शमूएल 23:13; 1 इतिहास 11:15), गिब्बोरिम, या "विशालकाय वीर" (अय्यूब 16:4), ज़मज़ुम्मिम, या "सफलता प्राप्त करने वाले" (व्यवस्थाविवरण 2:10), अनाकिम, या "लंबी गर्दन वाले" (व्यवस्थाविवरण 2:10; यहोशू 11:22, 14:15), और अव्विम, या "विनाश करने वाले" और "सांप"। इन ग्रंथों में अन्य विशालकाय व्यक्तियों का भी उल्लेख है, जैसे गोलियत (2 शमूएल 21:19), बारह उंगलियों और बारह पैर की उंगलियों वाला एक विशालकाय व्यक्ति जिसे रेफाइम में से एक बताया गया है (2 शमूएल 21:20), और एक लंबा मिस्री (1 इतिहास 11:23)। गिनती 13:26-33 का अंश कनान के नेफिलिमों का वर्णन करता है जिन्हें यहोशू और अन्य इब्रानी जासूसों ने देखा था। इसके अलावा, यहूदी परंपरा के अनुसार, नेफिलिमों में से एक, अरबा ने किरियथ अरबा नामक एक शहर का निर्माण किया, जिसका नाम उसके निर्माता के नाम पर रखा गया और अब इसे हेब्रोन के नाम से जाना जाता है।

नेफिलिमों की दुष्टता का परिणाम बहुत भयानक रहा। उत्पत्ति 6:5 में नेफिलिमों द्वारा मनुष्यों और स्वयं में फैलाई गई बुराई का उल्लेख है: "यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य की दुष्टता कितनी बढ़ गई है..." उनके इस दुष्ट विद्रोह ने परमेश्वर के क्रोध और दुःख को जन्म दिया। परमेश्वर ने स्वर्गदूत गेब्रियल को नेफिलिमों के बीच गृहयुद्ध भड़काने का आदेश दिया। उन्होंने धर्मी पुरुष हनोक को भी चुना ताकि वह गिरे हुए स्वर्गदूतों को उन पर और उनके बच्चों पर सुनाए गए न्याय की सूचना दे। परमेश्वर ने गिरे हुए स्वर्गदूतों को शांति नहीं दी, क्योंकि वे स्वर्ग की ओर आँखें नहीं उठा सकते थे और बाद में उन्हें जंजीरों में जकड़ दिया

जाना था। गेब्रियल द्वारा भड़काए गए युद्ध में नेफिलिमों का अंत हुआ, जिसमें अंततः उन दानवों ने एक-दूसरे को नष्ट कर दिया।

संदर्भ: http://www.pantheon.org/articles/n/nephilim.html

143

"...अत्यधिक सांद्रित प्रकाश तरंगों और इलेक्ट्रॉनिक ऊर्जा के काटने के औजारों का उपयोग किया गया..."

लेजर एक इलेक्ट्रॉनिक-ऑप्टिकल उपकरण है जो सुसंगत प्रकाश विकिरण उत्सर्जित करता है। "लेजर" शब्द लाइट एम्प्लीफिकेशन बाय स्टिमुलेटेड एमिशन ऑफ रेडिएशन का संक्षिप्त रूप है। एक सामान्य लेजर एक संकीर्ण, कम विचलन वाली मोनोक्रोमैटिक (दृश्य स्पेक्ट्रम में लेजर के संचालन के मामले में एकल-रंग वाली) किरण के रूप में एक निश्चित तरंगदैर्ध्य के साथ प्रकाश उत्सर्जित करता है। इस प्रकार, लेजर प्रकाश, तापदीप्त बल्ब जैसे प्रकाश स्रोत से भिन्न होता है, जो एक विस्तृत क्षेत्र और तरंगदैर्ध्य के व्यापक स्पेक्ट्रम में प्रकाश उत्सर्जित करता है।

पहला कारगर लेज़र मई 1960 में थियोडोर मैमन द्वारा ह्यूजेस रिसर्च लेबोरेटरीज में प्रदर्शित किया गया था। हाल ही में, लेज़र एक अरबों डॉलर का उद्योग बन गया है। लेज़र का सबसे व्यापक उपयोग ऑप्टिकल स्टोरेज उपकरणों जैसे कॉम्पैक्ट डिस्क और डीवीडी प्लेयर में होता है, जिसमें लेज़र (कुछ मिलीमीटर आकार का) डिस्क की सतह को स्कैन करता है। लेज़र के अन्य सामान्य अनुप्रयोगों में बार कोड रीडर, लेज़र प्रिंटर और लेज़र पॉइंटर शामिल हैं।

उद्योग में, लेज़रों का उपयोग स्टील और अन्य धातुओं को काटने और पैटर्न (जैसे कंप्यूटर कीबोर्ड पर अक्षर) उकेरने के लिए किया जाता है। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में भी लेज़रों का व्यापक रूप से उपयोग होता है, विशेष रूप से स्पेक्ट्रोस्कोपी में, क्योंकि पल्स लेज़रों की तरंगदैर्ध्य स्पष्ट होती है या पल्स की अवधि कम होती है। सेना द्वारा लेज़रों का उपयोग दूरी का पता लगाने, लक्ष्य की पहचान करने और हथियार पहुंचाने के लिए प्रकाश व्यवस्था हेतु किया जाता है। चिकित्सा में लेज़रों का उपयोग आंतरिक शल्य चिकित्सा और कॉस्मेटिक अनुप्रयोगों में किया जाता है।

लेजर कटिंग एक ऐसी तकनीक है जिसमें सामग्री को काटने के लिए लेजर का उपयोग किया जाता है, और आमतौर पर इसका उपयोग औद्योगिक विनिर्माण में होता है। लेजर कटिंग उच्च शक्ति वाले लेजर के आउटपुट को निर्देशित करके काम करती है।
255

कंप्यूटर द्वारा, काटने के लिए सामग्री पर लेजर कटर का उपयोग किया जाता है। सामग्री या तो पिघल जाती है, जल जाती है, वाष्पीकृत हो जाती है, या गैस के जेट द्वारा उड़ा दी जाती है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाली सतह वाली किनारी बच जाती है। औद्योगिक लेजर कटर का उपयोग सपाट शीट सामग्री के साथ-साथ संरचनात्मक और पाइपिंग सामग्री को काटने के लिए किया जाता है। कुछ 6-एक्सिस लेजर कास्टिंग या मशीनिंग द्वारा पहले से तैयार किए गए भागों पर भी कटिंग ऑपरेशन कर सकते हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

144

"... बालबेक..."

बालबेक के खंडहरों का सबसे बड़ा रहस्य, और वास्तव में प्राचीन दुनिया के सबसे बड़े रहस्यों में से एक, बृहस्पति के रोमन मंदिर के नीचे स्थित विशाल नींव के पत्थरों से जुड़ा है। बृहस्पति मंदिर का प्रांगण एक चबूतरे पर स्थित है, जिसे ग्रैंड टेरेस कहा जाता है, जिसमें एक विशाल बाहरी दीवार और बड़े-बड़े पत्थरों की भराई शामिल है। बाहरी दीवार के निचले हिस्से विशाल, बारीक नक्काशीदार और सटीक रूप से रखे गए ब्लॉकों से बने हैं। इनकी लंबाई तीस से तैंतीस फीट, ऊंचाई चौदह फीट और गहराई दस फीट तक है, और प्रत्येक का वजन लगभग 450 टन है। इनमें से नौ ब्लॉक मंदिर के उत्तरी भाग में, नौ दक्षिणी भाग में और छह पश्चिमी भाग में दिखाई देते हैं (अन्य भी हो सकते हैं, लेकिन पुरातात्विक खुदाई में अभी तक ग्रैंड टेरेस के सभी हिस्सों के नीचे खुदाई नहीं की गई है)। पश्चिमी भाग में स्थित छह ब्लॉकों के ऊपर तीन और भी बड़े पत्थर हैं, जिन्हें ट्रिलिथॉन कहा जाता है, जिनका वजन प्रत्येक का 1000 टन से अधिक है। इन विशाल पत्थरों की लंबाई तिरसठ से पैंसठ फीट के बीच है, ऊंचाई चौदह फीट छह इंच और गहराई बारह फीट है।

बालबेक परिसर से एक चौथाई मील दूर एक चूना पत्थर की खदान में एक और भी बड़ा पत्थर पड़ा है। अनुमानित 1200 टन वजनी यह पत्थर 69 फीट लंबा, 16 फीट चौड़ा और 13 फीट 10 इंच ऊंचा है, जो इसे दुनिया में अब तक निर्मित सबसे बड़ा पत्थर का नमूना बनाता है। इसे हजर अल गौबल, यानी दक्षिण का पत्थर, या हजर अल हिबला, यानी गर्भवती महिला का

पत्थर कहा जाता है। यह पत्थर एक उठे हुए कोण पर पड़ा है और इसका निचला हिस्सा अभी भी खदान की चट्टान से जुड़ा हुआ है, मानो इसे काटकर अलग करने और त्रिलिथॉन के अन्य पत्थरों के पास इसके संभावित स्थान पर ले जाने के लिए लगभग तैयार हो।

ये पत्थर आज के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और पुरातत्वविदों, सभी के लिए एक रहस्य क्यों बने हुए हैं? इसका कारण यह है कि इन्हें निकालने, परिवहन करने और सटीक रूप से स्थापित करने की विधि किसी भी ज्ञात प्राचीन या आधुनिक निर्माता की तकनीकी क्षमता से परे है। कई विद्वान, जो इस धारणा से असहज हैं कि प्राचीन संस्कृतियों ने आधुनिक विज्ञान से कहीं अधिक ज्ञान विकसित किया होगा, यह मानते हैं कि विशाल बालबेक पत्थरों को पास की खदानों से मंदिर स्थल तक श्रमसाध्य तरीके से घसीटकर लाया गया था। यद्यपि मिस्र और मेसोपोटामिया के मंदिरों में उत्कीर्ण मूर्तियां वास्तव में पत्थरों के परिवहन की इस विधि का प्रमाण देती हैं - जिसमें रस्सियों, लकड़ी के रोलर्स और हजारों मजदूरों का उपयोग किया गया था - लेकिन घसीटकर लाए गए पत्थर बालबेक पत्थरों के आकार और वजन के केवल दसवें हिस्से के थे और उन्हें चौड़े रास्तों वाली समतल सतहों पर ले जाया गया था। हालांकि, बालबेक स्थल तक का मार्ग पहाड़ी पर, ऊबड़-खाबड़ और घुमावदार है, और प्राचीन काल में समतल सतह बनाए जाने का कोई प्रमाण नहीं है।

इसके बाद समस्या यह है कि विशालकाय पत्थरों को स्थल पर लाने के बाद उन्हें कैसे उठाया गया और सटीक रूप से अपनी जगह पर रखा गया। यह सिद्धांत दिया गया है कि पत्थरों को मचान, रैंप और पुली की एक जटिल श्रृंखला का उपयोग करके उठाया गया था, जिसे बड़ी संख्या में मनुष्यों और जानवरों के एक साथ काम करने से शक्ति मिली थी। इस विधि का एक ऐतिहासिक उदाहरण बालबेक रहस्य के समाधान के रूप में सुझाया गया है। पुनर्जागरण काल के वास्तुकार डोमेनिको फोंटाना ने रोम में सेंट पीटर बेसिलिका के सामने 327 टन के मिस्र के ओबिलिस्क का निर्माण करते समय 40 विशाल पुली का उपयोग किया था, जिसके लिए 800 पुरुषों और 140 घोड़ों की संयुक्त शक्ति की आवश्यकता थी। हालाँकि, जिस क्षेत्र में इस ओबिलिस्क का निर्माण किया गया था, वह एक विशाल खुला स्थान था।

वहाँ उठाने वाले सभी उपकरण और रस्सियों को खींचने वाले आदमी और घोड़े आसानी से समा सकते थे। बालबेक पत्थरों की स्थापना के संदर्भ में ऐसी कोई जगह उपलब्ध नहीं है। पहाड़ियाँ उस जगह से दूर ढलान वाली हैं जहाँ उठाने वाले उपकरण रखे जाने चाहिए थे और किसी समतल और संरचनात्मक रूप से मजबूत सतह के निर्माण का कोई सबूत नहीं मिला है (जिसे उठाने के बाद रहस्यमय तरीके से हटा दिया गया हो)। इसके अलावा, केवल एक ओबिलिस्क नहीं बनाया गया था, बल्कि विशाल पत्थरों की एक श्रृंखला को सटीक रूप से अगल-बगल रखा गया था। इन पत्थरों की स्थिति के कारण, ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ एक विशाल पुली उपकरण लगाया जा सके।

संदर्भ: (निम्नलिखित दोनों वेबसाइटों पर इस क्षेत्र की उत्कृष्ट तस्वीरें उपलब्ध हैं)

http://www.sacredsites.com/middle_east/lebanon/baalbek.htm

http://www.bibliotecapleyades.net/esp_baalbek_1.htm

145

"...डोमेन ने शुक्र ग्रह पर कब्जा कर लिया..."

शुक्र सूर्य का दूसरा सबसे निकटतम ग्रह है, जो 224.7 पृथ्वी दिनों में सूर्य की परिक्रमा करता है। चंद्रमा को छोड़कर, यह रात्रि आकाश में सबसे चमकीला प्राकृतिक पिंड है, जिसकी आभासी चमक -4.6 तक पहुँचती है। क्योंकि शुक्र एक निम्न ग्रह है, इसलिए पृथ्वी से देखने पर यह सूर्य से अधिक दूर नहीं दिखाई देता: इसका अधिकतम अक्षांश 47.8 डिग्री है। शुक्र सूर्योदय से ठीक पहले या सूर्यास्त के ठीक बाद अपनी अधिकतम चमक पर पहुँचता है, इसी कारण इसे अक्सर भोर का तारा या शाम का तारा कहा जाता है।

शुक्र ग्रह को स्थलीय ग्रह के रूप में वर्गीकृत किया गया है, और इसे कभी-कभी पृथ्वी का "बहन ग्रह" भी कहा जाता है, क्योंकि दोनों आकार, गुरुत्वाकर्षण और संरचना में समान हैं। शुक्र ग्रह सल्फ्यूरिक अम्ल के अत्यधिक परावर्तक बादलों की एक अपारदर्शी परत से ढका हुआ है, जिसके कारण इसकी सतह अंतरिक्ष से दृश्य प्रकाश में दिखाई नहीं देती; बीसवीं शताब्दी में ग्रह विज्ञान द्वारा इसके कुछ रहस्यों के उजागर होने तक यह एक बड़ा विवाद का विषय था। शुक्र ग्रह का वायुमंडल सभी स्थलीय ग्रहों में सबसे घना है, जो मुख्य रूप से कार्बन

डाइऑक्साइड से बना है, क्योंकि इसमें कार्बन को चट्टानों और सतही संरचनाओं में वापस जमा करने के लिए कोई कार्बन चक्र नहीं है, न ही जैव द्रव्यमान में इसे अवशोषित करने के लिए कोई जैविक जीवन है। यह इतना गर्म हो गया है कि युवा शुक्र ग्रह पर मौजूद पृथ्वी जैसे महासागर पूरी तरह से वाष्पीकृत हो गए हैं, जिससे कई सपाट चट्टानों के साथ एक धूल भरा शुष्क रेगिस्तानी परिदृश्य बन गया है। वाष्पीकृत जल वाष्प विघटित हो गया है और हाइड्रोजन अंतरग्रहीय अंतरिक्ष में फैल गया है। ग्रह की सतह पर वायुमंडलीय दबाव पृथ्वी के दबाव का 92 गुना है, जिसमें से अधिकांश कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसें हैं।
शुक्र ग्रह की सतह का विस्तृत मानचित्रण पिछले 20 वर्षों में ही किया गया है; प्रोजेक्ट मैगेलन ने लगभग एक हजार उल्कापिंड क्रेटर्स सूचीबद्ध किए हैं, जो पृथ्वी की तुलना में आश्चर्यजनक रूप से कम संख्या है। यह भूवैज्ञानिक रूप से बहुत युवा होने और व्यापक ज्वालामुखी गतिविधि के प्रमाण दिखाता है, और वायुमंडल में मौजूद सल्फर के आधार पर कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इसके कई ज्वालामुखी आज भी सक्रिय हैं, लेकिन यह एक रहस्य बना हुआ है कि किसी भी दृश्यमान ज्वालामुखीय गड्ढे के साथ लावा प्रवाह का कोई प्रमाण क्यों नहीं मिलता है।
आकाश के सबसे चमकीले पिंडों में से एक होने के कारण, शुक्र ग्रह प्रागैतिहासिक काल से ही ज्ञात है और इसी कारण मानव संस्कृति में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है। बेबीलोनियों ने इस ग्रह का नाम इश्तारा रखा था, जो नारीत्व का प्रतीक और प्रेम की देवी हैं।
पश्चिमी ज्योतिष में, स्त्रीत्व और प्रेम की देवियों से जुड़े इसके ऐतिहासिक संबंध के कारण, शुक्र ग्रह को मानव जीवन के इन पहलुओं को प्रभावित करने वाला माना जाता है। भारतीय वैदिक ज्योतिष में, शुक्र को शुक्र के नाम से जाना जाता है, जिसका संस्कृत में अर्थ है "स्पष्ट, शुद्ध" या "चमक, स्पष्टता"।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

146

"...पृथ्वी पर कुछ ऐसे जीव हैं जो शुक्र ग्रह जैसे वायुमंडलीय वातावरण को सहन कर सकते हैं..."

"पर्यावरण में रहने वाले जीवों की कई अलग-अलग श्रेणियां होती हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने पर्यावरणीय परिवेश के अनुरूप होती है। कई चरमपंथी जीव एकाधिक श्रेणियों के अंतर्गत आते हैं। उदाहरण के लिए:

• • •

• •

• •

•

• •

•

•

•

•

• •

अम्लप्रेमी: एक ऐसा जीव जिसका इष्टतम पीएच स्तर 3 या उससे कम होता है।

एल्केलिफाइल: एक ऐसा जीव जिसका इष्टतम विकास pH स्तर 9 या उससे अधिक पर होता है।

एंडोलिथ: एक ऐसा जीव जो चट्टानों के भीतर सूक्ष्म स्थानों में रहता है, जैसे कि समुच्चय कणों के बीच के छिद्र। इन्हें क्रिप्टोएंडोलिथ भी कहा जा सकता है। इस शब्द में गहरे भूमिगत जल से भरी दरारों, जलभंडारों और भ्रंशों में रहने वाले जीव भी शामिल हैं।

हेलोफाइल: एक ऐसा जीव जिसे वृद्धि के लिए कम से कम 2M लवण, NaCl की आवश्यकता होती है।

हाइपरथर्मोफाइल: एक ऐसा जीव जो 80-121 डिग्री सेल्सियस के बीच के तापमान पर पनप सकता है, जैसे कि हाइड्रोथर्मल सिस्टम में पाए जाने वाले जीव।
हाइपोलिथ: एक जीव जो ठंडे रेगिस्तानों में चट्टानों के अंदर रहता है।
लिथोऑटोट्रॉफ़: एक जीव (आमतौर पर बैक्टीरिया) जिसका कार्बन का एकमात्र स्रोत कार्बन डाइऑक्साइड और एक्सर्जोनिक अकार्बनिक ऑक्सीकरण (केमोलिथोट्रॉफ़) होता है, जैसे कि नाइट्रोसोमोनास यूरोपा। ये जीव पाइराइट जैसे अपचयित खनिज यौगिकों से ऊर्जा प्राप्त करने में सक्षम होते हैं और भू-रासायनिक चक्रण तथा मूल चट्टान के अपक्षय से मिट्टी निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।
धातु-सहिष्णु: विलयन में घुली हुई भारी धातुओं, जैसे तांबा, कैडमियम, आर्सेनिक और जस्ता, की उच्च मात्रा को सहन करने में सक्षम। उदाहरणों में शामिल हैं:
फेरोप्लाज्मा एसपी. और राल्स्टोनिया मेटालिडुरन्स।
अल्पपोषी: पोषक तत्वों की कमी वाले वातावरण में पनपने में सक्षम जीव। परास्नातक: उच्च शर्करा सांद्रता वाले वातावरण में पनपने में सक्षम जीव।
पीज़ोफाइल: एक ऐसा जीव जो उच्च जलस्थैतिक दाब पर सर्वोत्तम रूप से जीवित रहता है। यह पृथ्वी की गहरी उपसतह के साथ-साथ महासागरीय खाइयों में भी आम है।
पॉलीएक्सट्रीमोफाइल: एक ऐसा जीव जो एक से अधिक श्रेणियों के अंतर्गत एक्सट्रीमोफाइल के रूप में योग्य होता है।
साइक्रोफाइल/क्रायोफाइल: एक ऐसा जीव जो 15 डिग्री सेल्सियस या उससे कम तापमान पर बेहतर तरीके से विकसित होता है। यह ठंडी मिट्टी, पर्माफ्रॉस्ट, ध्रुवीय बर्फ, ठंडे समुद्री जल और अल्पाइन हिमपात के भीतर/नीचे आम तौर पर पाया जाता है।
विकिरण प्रतिरोधी: उच्च स्तर के आयनीकरण विकिरण के प्रति प्रतिरोधी, जिसमें आमतौर पर पराबैंगनी विकिरण शामिल होता है, लेकिन इसमें परमाणु विकिरण का प्रतिरोध करने में सक्षम जीव भी शामिल होते हैं।
थर्मोफाइल: एक ऐसा जीव जो 60-80 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर पनप सकता है।
ज़ेरोफाइल: एक ऐसा जीव जो अत्यधिक शुष्क, निर्जलित परिस्थितियों में पनप सकता है। इस प्रकार के जीव का उदाहरण अटाकामा रेगिस्तान के मृदा सूक्ष्मजीव हैं।

गहरे समुद्र में रहने वाले अधिकांश चरमपंथी जीवों की तुलना में, पनडुब्बी हाइड्रोथर्मल वेंट के आसपास के क्षेत्र जैविक रूप से अधिक उत्पादक होते हैं, अक्सर वेंट तरल पदार्थों में घुले रसायनों द्वारा पोषित जटिल समुदायों की मेजबानी करते हैं, जो विशाल ट्यूब कीड़े, क्लैम और झींगा सहित विविध जीवों का समर्थन करते हैं।

हाइड्रोथर्मल वेंट से निकलने वाला पानी 400°C तक के तापमान पर होता है, जबकि आसपास के गहरे समुद्र के पानी का सामान्य तापमान 2°C होता है। इन गहराइयों पर उच्च दबाव के कारण पानी के तरल अवस्था में रहने की तापीय सीमा काफी बढ़ जाती है।

पानी उबलता नहीं है। 3,000 मीटर की गहराई और 407 डिग्री सेल्सियस तापमान पर पानी अतिक्रांतिक अवस्था में पहुँच जाता है।
एक बस्ती की खोज की गई है जिसे 'ईल सिटी' नाम दिया गया है, जिसमें मुख्य रूप से ईल मछलियाँ पाई जाती हैं। हालाँकि ईल मछलियाँ यहाँ असामान्य नहीं हैं, जैसा कि पहले बताया गया है कि जलतापीय विस्फोट स्थलों पर आमतौर पर अकशेरुकी जीव ही पाए जाते हैं। ईल सिटी अमेरिकी समोआ में नाफानुआ ज्वालामुखी शंकु के पास स्थित है।
इस पारिस्थितिकी तंत्र में निवास करने वाले अद्वितीय जीवों के अन्य उदाहरणों में लोहे और कार्बनिक पदार्थों से बने शल्कों से युक्त घोंघा और पोम्पेई कृमि (एल्विनेला पोम्पेजाना) शामिल हैं, जो 80°C (176°F) तक के तापमान को सहन करने में सक्षम है। जलतापीय उद्गम स्थलों पर 300 से अधिक नई प्रजातियों की खोज की गई है।
ऐसा माना जाता है कि बृहस्पति के चंद्रमा यूरोपा पर सक्रिय जलतापीय छिद्र मौजूद हैं, और मंगल ग्रह पर प्राचीन जलतापीय छिद्रों के अस्तित्व की अटकलें लगाई गई हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org

147

"...क्षुद्रग्रह बेल्ट..."

क्षुद्रग्रह पेटी सौर मंडल का वह क्षेत्र है जो लगभग मंगल और बृहस्पति ग्रहों की कक्षाओं के बीच स्थित है। इसमें कई अनियमित आकार के पिंड मौजूद हैं जिन्हें क्षुद्रग्रह या लघु ग्रह कहा जाता है। सौर मंडल के भीतर लघु ग्रहों के अन्य समूहों, जैसे कि कुइपर पेटी और बिखरी हुई डिस्क, से अलग करने के लिए क्षुद्रग्रह पेटी क्षेत्र को मुख्य पेटी भी कहा जाता है।
मुख्य क्षुद्रग्रह बेल्ट के आधे से अधिक द्रव्यमान में चार सबसे बड़े पिंड समाहित हैं: सेरेस, 4 वेस्टा, 2 पलास और 10 हाइगिया। इन सभी का औसत व्यास 400 किमी से अधिक है, जबकि सेरेस, जो मुख्य बेल्ट का एकमात्र बौना ग्रह है, लगभग 950 किमी व्यास का है। शेष पिंड धूल के कण जितने छोटे हैं। क्षुद्रग्रहों का पदार्थ इतनी पतली परत में फैला हुआ है कि कई मानवरहित अंतरिक्ष यान बिना किसी घटना के इससे गुजर चुके हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org

148
"... तियाहुआनाको..."
तिवानाकू की स्मारकीय वास्तुकला असाधारण कारीगरी वाले बड़े पत्थरों से बनी है। बाद के इंका काल की पत्थर की चिनाई शैली के विपरीत, तिवानाकू के पत्थर
वास्तुकला में आमतौर पर आयताकार पत्थरों को नियमित पंक्तियों में बिछाया जाता था, और स्मारकीय संरचनाओं में अक्सर जटिल जल निकासी प्रणालियाँ लगाई जाती थीं। बड़े पत्थरों को स्थिर रखने के लिए अक्सर कांस्य या तांबे के "डबल-टी" क्लैंप का उपयोग किया जाता था। तिवानाकु के निर्माण में प्रयुक्त पत्थर खदानों से निकाले गए और फिर 40 किलोमीटर या उससे अधिक की दूरी तय करके शहर तक लाए गए। हालाँकि अधिकांश दूरी पानी के ऊपर से तय की गई थी, फिर भी उन्हें बिना पहिए की सहायता के ले जाया गया था।
प्राचीन काल में यह समुदाय शहरी रूप से विकसित हुआ और दक्षिणी एंडीज में एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय शक्ति बन गया। हाल ही में उपग्रह इमेजिंग का उपयोग करके तिवानाकू की तीन प्रमुख घाटियों में जीवाश्मयुक्त सुका कोल्लस के विस्तार का मानचित्रण किया गया, जिससे जनसंख्या वहन क्षमता का अनुमान 285,000 से 1,482,000 लोगों के बीच लगाया गया।
वे अनेक देवताओं की पूजा करते थे, और उनमें से एक सबसे महत्वपूर्ण देवता वीरकोचा थे, जो कर्म के देवता, अनेक लोकों के निर्माता और अनेक लोकों के विनाशक थे। उन्होंने सृष्टि की रचना की।
259

एक विशाल चट्टान पर दो सेवकों के साथ लोग खड़े थे। फिर उसने चट्टान पर खंड बनाए और अपने सेवकों को उन क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों के नाम लिखने के लिए भेजा। तिवानकु जनजाति में, उसने लोगों को चट्टान से बनाया और धरती के माध्यम से उन्हें जीवन प्रदान किया। तिवानकु जनजाति का मानना था कि विराकोचा ने उन विशालकाय पत्थरों को स्थानांतरित करने के लिए दानवों का निर्माण किया था जो उनके पुरातत्व का एक बड़ा हिस्सा हैं, लेकिन बाद में वह उन दानवों से नाराज हो गया और उन्हें नष्ट करने के लिए बाढ़ ला दी।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
149
"...ओलान्टायटैम्बो..."
"ओलान्टायटैम्बो दक्षिणी पेरू का एक कस्बा है, जो कुस्को क्षेत्र के उरुबाम्बा प्रांत के ओलान्टायटैम्बो जिले में स्थित है। यह कुस्को शहर से लगभग 60 किमी उत्तर-पश्चिम में स्थित है और समुद्र तल से 2792 मीटर की ऊंचाई पर बसा है।"
ओलान्टायटैम्बो शहर अपने खंडहरों और उस स्थान के लिए सबसे प्रसिद्ध है जहाँ इंका सम्राट मानको इंका ने सुनियोजित युद्ध में स्पेनिश सेना को परास्त किया था। बारीक तराशे गए पत्थर और बागानों की सीढ़ियाँ विजय प्राप्त करने वालों के लिए बहुत बड़ी बाधाएँ थीं, और इस किले का उपयोग मानको ने फ्रांसिस्को पिजारो और लीमा में स्थित अन्य विजय प्राप्त करने वालों पर सफल हमले करने के लिए भी किया था।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
150
"... माचू पिचू ..."
माचू पिचू (केचुआ: माचू पिचू, "पुरानी चोटी") समुद्र तल से 2,400 मीटर (7,875 फीट) की ऊंचाई पर स्थित एक कोलंबस-पूर्व इंका स्थल है। यह पेरू में उरुबाम्बा घाटी के ऊपर एक पर्वत श्रृंखला पर स्थित है, जो कुज़्को से 80 किमी (50 मील) उत्तर-पश्चिम में है। इसे अक्सर "इंकाओं का खोया हुआ शहर" कहा जाता है, और माचू पिचू संभवतः इंका साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध प्रतीक है।

एक सिद्धांत के अनुसार, माचू पिचू एक इंका "इलेक्टा" था: एक ऐसी बस्ती जिसे जीते गए क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए बनाया गया था। यह भी संभव है कि इसे उन चुनिंदा लोगों के लिए एक जेल के रूप में बनाया गया हो जिन्होंने इंका समाज के खिलाफ जघन्य अपराध किए थे। जॉन रोवे और रिचर्ड बर्गर जैसे विद्वानों द्वारा किए गए शोध ने अधिकांश पुरातत्वविदों को यह विश्वास दिलाया है कि माचू पिचू एक रक्षात्मक आश्रय स्थल नहीं, बल्कि इंका सम्राट पचकुटी की जागीर थी। इसके अलावा, जोहान रेनहार्ड ने ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किए हैं कि इस स्थल का चयन पवित्र भू-आकृतियों के सापेक्ष इसकी स्थिति के आधार पर किया गया था। इसका एक उदाहरण इसके पहाड़ हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे प्रमुख खगोलीय घटनाओं के साथ संरेखित हैं।

शमैनिक कथाओं के अनुसार, यदि आप संवेदनशील व्यक्ति हैं और विश्व प्रसिद्ध इंतिहुआताना पत्थर पर अपना माथा रगड़ते हैं, तो आपको आत्माओं की दुनिया दिखाई देगी। इंतिहुआताना पत्थर दक्षिण अमेरिका के कई अनुष्ठानिक पत्थरों में से एक है। इन्हें इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि शीतकालीन संक्रांति के दौरान ये सीधे सूर्य की ओर इंगित करते हैं। स्पेनिश लोगों को माचू पिचू की खोज 20 वीं शताब्दी तक नहीं हुई थी, इसलिए इंतिहुआताना पत्थर अन्य कई अनुष्ठानिक पत्थरों की तरह नष्ट नहीं हुआ। इसे "सूर्य का ठहराव बिंदु" भी कहा जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता था कि यह सूर्य को अपनी जगह पर स्थिर रखता है। ऐसा माना जाता है (जैसा कि पहले कहा गया है) कि यह इंकाओं द्वारा निर्मित एक खगोलीय घड़ी है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

151

"...पचाकामाक..."

260

पेरू के लीमा से 40 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित पचकामाक मंदिर, लुरिन नदी की घाटी में एक पुरातात्विक स्थल है। इसमें कम से कम एक पिरामिड था। पचकामाक का उपयोग मुख्य रूप से सृष्टिकर्ता देवता पचकामाक की पूजा के लिए एक धार्मिक स्थल के रूप में किया जाता था। इचमा लोग इंका साम्राज्य में शामिल हो गए और पचकामाक एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र बन गया।
हालांकि, इंका लोगों ने इसे एक धार्मिक स्थल के रूप में बनाए रखा और पचकामाक पुजारियों को इंका पुरोहित वर्ग से स्वतंत्र रूप से कार्य करने की अनुमति दी। इसमें भविष्यवक्ता भी शामिल था, जिससे इंका लोग संभवतः परामर्श लेते थे। इंका लोगों ने मुख्य चौक पर सूर्य मंदिर सहित पांच अतिरिक्त इमारतें बनवाईं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
152
"...एक इलेक्ट्रॉनिक, प्रकाश-तरंग उत्सर्जक पत्थर काटने और नक्काशी करने वाले उपकरण..."
"आपकी पसंद के अनुसार तैयार उत्पाद के प्रकार के आधार पर विभिन्न प्रकार के लेजर कटिंग उपकरण उपलब्ध हैं। कंप्यूटर-नियंत्रित लेजर कटर राउटर प्रत्येक अक्षर को सटीकता से काट सकते हैं, जिससे चयनित शैली का हर विवरण सटीक रूप से समाहित हो जाता है। ये विनिर्माण प्रणालियाँ प्रतीकों और लोगो को कम लागत में काटने में उपयोगी हैं।"
ठोस अवस्था में लेजर में एक क्रिस्टल छड़ का उपयोग किया जाता है जिसके दोनों सिरे समतल और समानांतर होते हैं। दोनों सिरों की सतहें परावर्तित करने की क्षमता रखती हैं। क्रिस्टल के चारों ओर उच्च घनत्व वाला प्रकाश स्रोत और एक फ्लैश ट्यूब लगी होती है। जब पल्स-फॉर्मिंग नेटवर्क द्वारा शक्ति प्रदान की जाती है, तो रॉड क्रिस्टल में से एक में फोटॉन नामक एक तीव्र प्रकाश स्पंदन उत्सर्जित होता है। उत्सर्जित प्रकाश एक तरंगदैर्ध्य का होता है और न्यूनतम विचलन सुनिश्चित करता है।

लेजर प्रकाश का सौ प्रतिशत भाग पीछे के दर्पण पर परावर्तित होता है जबकि तीस से पचास प्रतिशत भाग दर्पण से होकर शटर असेंबली से होते हुए कोण वाले दर्पण तक जाता है, फिर लेंस से होकर नीचे जाता है और अंत में वर्कपीस तक पहुंचता है।
लेजर प्रकाश किरण न केवल सुसंगत होती है बल्कि इसमें उच्च ऊर्जा भी होती है। जब इसे सतह पर केंद्रित किया जाता है, तो लेजर प्रकाश ऊष्मा उत्पन्न करता है जिसका उपयोग वेल्डिंग, ड्रिलिंग और कटिंग के लिए किया जाता है।
रोबोटिक्स के उपयोग से लेजर बीम और वर्क पीस को नियंत्रित किया जाता है। इसे विभिन्न आकारों और ताप तीव्रता के अनुसार समायोजित किया जा सकता है। छोटे लेजर का उपयोग ड्रिलिंग, कटिंग और वेल्डिंग के लिए किया जाता है, जबकि बड़ी मशीनों का उपयोग ताप उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।
संदर्भ: http://ezinearticles.com/?Laser-Cutting-Tools&id=352889
153
"महान पिरामिड..."
इसके निर्माण में कुल मिलाकर 2,300,000 से अधिक चूना पत्थर और ग्रेनाइट के ब्लॉकों का उपयोग किया गया था, जिनमें से प्रत्येक ब्लॉक का औसत वजन 2.5 टन था और किसी भी ब्लॉक का वजन 2 टन से कम नहीं था। राजा के कक्ष की छत में उपयोग किए गए बड़े ब्लॉकों का वजन 9 टन तक है।
• • • •
निर्माण तिथि (अनुमानित): 2589 ईसा पूर्व।
निर्माण अवधि (अनुमानित): 20 वर्ष।
कुल वजन (अनुमानित): 6.5 मिलियन टन।
इस संरचना का अनुमानित कुल वजन 65 लाख टन है!
261

•
•
पिरामिड का आधार 13 एकड़ यानी 568,500 वर्ग फुट में फैला हुआ है और इसकी प्रत्येक भुजा की लंबाई मूल रूप से 754 फुट थी, लेकिन अब यह 745 फुट है।
मूल रूप से इसकी ऊंचाई 481 फीट थी, लेकिन अब यह केवल 449 फीट रह गई है।
सूर्य से पृथ्वी की सबसे निकट की दूरी (पेरिहेलियन) $147x10^6$ किमी है, जिसे शाही क्यूबिट में $280x10^6$ किमी के बराबर माना जाता है।
9, जो कि महान पिरामिड की ऊंचाई, 280 शाही क्यूबिट्स की ओर इशारा करता है।
पृथ्वी और चंद्रमा का संबंध हमारे सौर मंडल में एकमात्र ऐसा संबंध है जिसमें यह अनूठा स्वर्णिम खंड अनुपात मौजूद है जो "वृत्त को वर्ग में बदल देता है"। इसके साथ ही, चंद्रमा और सूर्य एक ही आकार के दिखाई देते हैं, जो ग्रहण के दौरान सबसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह भी केवल पृथ्वी से देखने पर ही संभव है... हमारे सौर मंडल में किसी अन्य ग्रह और चंद्रमा के संबंध में यह दावा नहीं किया जा सकता।
हालांकि वृत्त को वर्ग में बदलने की समस्या को 19 वीं शताब्दी में गणितीय रूप से असंभव साबित कर दिया गया था (क्योंकि पाई एक अपरिमेय संख्या है, जिसे सटीक रूप से मापा नहीं जा सकता), पृथ्वी, चंद्रमा और ग्रेट पिरामिड, सभी इस समस्या के समाधान के जितना करीब हो सकते हैं, उतना ही करीब आ रहे हैं!
यदि ग्रेट पिरामिड के आधार को पृथ्वी के व्यास के बराबर माना जाए, तो पिरामिड की ऊंचाई में से पृथ्वी की त्रिज्या को घटाकर चंद्रमा की त्रिज्या ज्ञात की जा सकती है।
ग्रेट पिरामिड की ऊँचाई को $2\pi$ से गुणा करने पर पिरामिड की परिधि ठीक-ठीक प्राप्त होती है। यह अनुपात पिरामिड की उत्कृष्ट डिज़ाइन का परिणाम है, जिसमें ऊँचाई एक वृत्त के दो व्यासों के बराबर और आधार वृत्त की परिधि के बराबर है।
सूर्य पिरामिड और मिस्र के महान पिरामिड का आधार परिधि लगभग बराबर है। सूर्य पिरामिड की ऊँचाई महान पिरामिड की लगभग आधी है। थोड़ा सा अंतर है। महान पिरामिड

सूर्य पिरामिड के आधार से 1.03 गुना बड़ा है। वहीं दूसरी ओर, सूर्य पिरामिड का आधार महान पिरामिड के आधार का 97% है।
संदर्भ: http://www.world-mysteries.com/mpl_2.htm
154
"...पिरामिड ग्रंथ।"
पिरामिड ग्रंथ प्राचीन मिस्र के धार्मिक ग्रंथों का संग्रह हैं, जो पुराने साम्राज्य काल के हैं और अधिकतर पिरामिडों में स्थित मकबरों की दीवारों पर खुदे हुए हैं। इनमें मिस्रवासियों के परलोक संबंधी दृष्टिकोण और मृत्यु के बाद दिव्य फ़राओ के आकाश में आरोहण का वर्णन है। ये ग्रंथ पाँच हज़ार वर्ष से भी अधिक समय पहले लिखे गए थे; इस प्रकार, ये विश्व के सबसे प्राचीन ज्ञात लेखों में से कुछ हैं।
पिरामिड ग्रंथ प्राचीन मिस्र से ज्ञात धार्मिक मंत्रों का सबसे पुराना संग्रह भी है। यह संग्रह प्राचीन मिस्र के बाद के धार्मिक धर्मशास्त्र और साहित्य का आधार बनता है। इन अंशों को समय के साथ अलग-अलग श्रेणियों में बाँटा गया, सचित्रित किया गया और अंततः ये मृतकों की पुस्तक, या अधिक सटीक रूप से, दिन के उजाले की पुस्तक के रूप में विकसित हुए। पिरामिड ग्रंथों की तिथि निर्धारित करना कठिन है। इनकी उत्पत्ति को लेकर काफी अटकलें लगाई जाती हैं क्योंकि पुरातात्विक अभिलेखों में इनका कोई पूर्व उदाहरण नहीं मिलता, और ये अंत्येष्टि ग्रंथों के एक पूर्ण संग्रह के रूप में सामने आते हैं। यह तथ्य कि ये ग्रंथ अलग-अलग कथनों से बने हैं और इनमें कोई निश्चित कथात्मक क्रम नहीं है, विद्वानों को यह मानने पर मजबूर करता है कि इनमें से कई ग्रंथ विशेष रूप से अंत्येष्टि के उद्देश्य से रचे नहीं गए थे।
262

ये शब्द पिरामिडों पर खुदे हुए हैं, लेकिन संभवतः इनका पहले भी उपयोग होता रहा होगा। वास्तव में, मंत्र संख्या 273-4, जिसे नरभक्षी भजन कहा जाता है और जो केवल उनास और टेटी के पिरामिडों में ही मिलता है, अंत्येष्टि अनुष्ठान के उन पहलुओं को संदर्भित करता है जो पिरामिडों के निर्माण के समय प्रचलन में नहीं थे।

प्रारंभिक विश्लेषकों ने इन ग्रंथों की तिथि यथासंभव प्रारंभिक काल तक निर्धारित करने का प्रयास किया; यहाँ तक कि प्रागैतिहासिक काल तक भी। इन ग्रंथों की प्रारंभिक तिथि निर्धारित करना एक प्रबल संभावना बनी हुई है, हालाँकि आज विद्वान इन ग्रंथों की उत्पत्ति को उन स्मारकों की तिथि से जोड़ते हैं जहाँ वे पाए जाते हैं। वास्तव में, इनके प्रारंभिक आविष्कार की तिथि के बारे में हमारे पास बहुत कम जानकारी है, शायद प्रयुक्त प्राचीन भाषा के अलावा।

संदर्भ: http://www.crystalinks.com/pyramidtext.html

155

"महान पिरामिड पृथ्वी के सभी भूभागों के ठीक केंद्र में स्थित था..."

मिस्र के गीज़ा में स्थित महान पिरामिड (खुफू का पिरामिड, या ग्रीक में चेओप्स) पृथ्वी की सतह पर अपनी उल्लेखनीय स्थिति को दर्शाता है। यह पिरामिड महाद्वीपों के गुरुत्वाकर्षण केंद्र में स्थित है। यह विश्व के संपूर्ण भूभाग के ठीक केंद्र में भी स्थित है, जो पृथ्वी के भूभाग को लगभग बराबर चार भागों में विभाजित करता है।

उत्तर-दक्षिण अक्ष (ग्रीनविच से 31 डिग्री पूर्व) पृथ्वी की सबसे लंबी देशांतर रेखा है, और पूर्व-पश्चिम अक्ष (30 डिग्री उत्तर) पृथ्वी की सबसे लंबी समानांतर रेखा है। जाहिर है, पृथ्वी की ये सबसे लंबी भू-रेखाएँ केवल एक ही स्थान पर एक-दूसरे को काट सकती हैं, और वह स्थान है ग्रेट पिरामिड!

संदर्भ: http://www.world-mysteries.com/mpl_2.htm

156

"...ओरियन बेल्ट (ऐनीटक), सीरियस, अल्फा ड्रेकोनिस और बीटा उर्सा माइनर तारामंडल में स्थित तारे..."

ग्रेट पिरामिड में स्थित "प्रकाश में सत्य का हॉल" ऊपर की ओर जाने वाले मार्ग का ही विस्तार है, जो एक भव्य गैलरी के रूप में खुलता है। अन्य आंतरिक विशेषताओं में शामिल हैं: एक विशाल सीढ़ी; एक निचला रानी कक्ष; एक ऊपरी राजा कक्ष जिसमें एक खुली कब्र है जिसका उपयोग कभी दफनाने के लिए नहीं किया गया; और, दो मार्ग जो वास्तव में ओरियन तारामंडल की "बेल्ट" में सीरियस और ऐनीटाक की ओर इंगित करते हैं - अन्य दो मार्ग ड्रेको तारामंडल में थुबन की ओर सटीक रूप से इंगित करते हैं, जो पिरामिड के कथित निर्माण के समय का पुराना उत्तरी तारा था और वर्तमान उत्तरी तारा है।

संदर्भ: http://www.geocities.com/regkeith/rkeith5a.htm

बिग डिपर तारामंडल के तारों में शामिल हैं:

दुबे मेराक फेकडा मेग्रेज़ अलीओथ मिज़ार अल्कैद

अलनीटक एक दोहरा तारा मंडल है। अलनीटक ए एक नीला 9.7 पाउंड का विशालकाय तारा है जिसका व्यास सूर्य के व्यास से लगभग 15 गुना और सूर्य से कम से कम 11,000 गुना अधिक चमकदार है।

थुबन तारे का दूसरा नाम अदीब है, जो अरबी शब्द अल धीबाह से लिया गया है, जिसका अर्थ है "लकड़बग्घे"। यह तारामंडल ड्रेको में स्थित है। एलन के अनुसार, नाविक थुबन को "ड्रैगन की पूंछ" कहते थे। थुबन एक सफेद A0III विशाल तारा है जिसकी चमक सूर्य की तुलना में लगभग 260 गुना अधिक है। वर्णक्रमीय विश्लेषण से पता चलता है कि थुबन के चारों ओर एक सहचर तारा परिक्रमा कर रहा है, जिसकी परिक्रमा अवधि 51.4 दिन है।

सीरियस को बोलचाल की भाषा में "डॉग स्टार" भी कहा जाता है, जो इसके तारामंडल, कैनिस मेजर में इसकी प्रमुखता को दर्शाता है। सूर्य के अलावा, किसी भी अन्य तारे की तुलना में यह सबसे अधिक पौराणिक और लोककथाओं का विषय है। प्राचीन मिस्र में, सीरियस के उदय के समय नील नदी में बाढ़ आती थी और ग्रीष्म ऋतु के 'डॉग डेज़' की शुरुआत होती थी।

सीरियस रात्रि आकाश का सबसे चमकीला तारा है, जिसकी दृश्य आभा -1.47 है, जो कि दूसरे सबसे चमकीले तारे कैनोपस से लगभग दोगुनी चमकीली है। नंगी आंखों से देखने पर जो एक तारा दिखाई देता है, वह वास्तव में एक द्विआधारी तारा प्रणाली है, जिसमें सीरियस ए और एक धुंधला सफेद बौना तारा (स्पेक्ट्रल प्रकार डीए 2) शामिल है, जिसे सीरियस बी कहा जाता है।

सीरियस तारामंडल अपनी आंतरिक चमक और सूर्य से निकटता दोनों के कारण चमकीला है। 2.6 पारसेक (8.6 प्रकाश वर्ष) की दूरी पर स्थित सीरियस तारामंडल हमारे निकटतम ग्रहों में से एक है। सीरियस ए का द्रव्यमान सूर्य से लगभग दोगुना है और इसका निरपेक्ष दृश्य परिमाण 1.42 है। यह सूर्य से 25 गुना अधिक चमकीला है।

सीरियस का उल्लेख प्राचीन खगोलीय अभिलेखों में मिलता है, जिसे प्राचीन मिस्र में सोपडेट (ग्रीक: सोथिस) के नाम से जाना जाता था। मध्य साम्राज्य काल के दौरान, मिस्रवासियों ने अपना कैलेंडर सीरियस के सूर्य उदय के आधार पर बनाया था, अर्थात् वह दिन जब सूर्य की चकाचौंध से पर्याप्त दूरी पर जाने के बाद यह सूर्योदय से ठीक पहले दिखाई देने लगता था।

यह घटना नील नदी की वार्षिक बाढ़ और ग्रीष्म संक्रांति से ठीक पहले, आकाश से 70 दिनों तक अनुपस्थित रहने के बाद घटित होती थी। सोथिस के चित्रलिपि में एक तारा और एक त्रिभुज दर्शाया गया है। सोथिस को महान देवी आइसिस से जोड़ा जाता था, जो अपने पति ओसिरिस और पुत्र होरस के साथ त्रिमूर्ति का हिस्सा थीं, जबकि 70 दिनों की अवधि आइसिस और ओसिरिस के दुआत (मिस्र के पाताल लोक) से गुजरने का प्रतीक थी।

ध्रुव तारा, जिसे उत्तरी ध्रुव भी कहा जाता है, आकाश में उत्तरी ध्रुव के सबसे निकट स्थित तारा है, जो पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव पर स्थित प्रेक्षक को सीधे सिर के ऊपर दिखाई देता है। वर्तमान ध्रुव तारा पोलारिस है, जो उरसा माइनर तारामंडल में लिटिल डिपर तारामंडल के "हैंडल" के सिरे पर ध्रुव से लगभग दो-तिहाई डिग्री की दूरी पर स्थित है। पोलारिस की दृश्य चमक 1.97 (सेकंड मैग्नीट्यूड) है। (कुछ लोग गलती से सोचते हैं कि पोलारिस रात्रि आकाश का सबसे चमकीला तारा है। यह उपाधि सीरियस को प्राप्त है, और पोलारिस से भी अधिक चमकीले कई अन्य तारे हैं।)

विषुवों के अग्रगमन के कारण पृथ्वी के अक्ष की दिशा बहुत धीमी गति से लेकिन निरंतर बदलती रहती है, और जैसे-जैसे पृथ्वी के अक्ष का प्रक्षेपण सहस्राब्दियों में खगोलीय गोले के चारों ओर घूमता है, ध्रुव तारे की भूमिका एक तारे से दूसरे तारे को हस्तांतरित होती रहती है। विषुवों का अग्रगमन इतना धीमा होने के कारण, आमतौर पर एक ही तारा कई शताब्दियों तक इस उपाधि को धारण करता है।

3000 ईसा पूर्व में, ड्रैको तारामंडल में स्थित मंद तारा थुबन उत्तरी तारा था। 3.67 (चौथी तीव्रता) के साथ, यह वर्तमान उत्तरी तारा पोलारिस (जो 430 प्रकाश वर्ष दूर स्थित है) की तुलना में केवल एक-पांचवां चमकीला है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

157

"...वन के देवता पैन..."

-- संदर्भ: पैन के नाम से जाने जाने वाले इस देवता के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी के लिए, कृपया लॉरेंस आर. स्पेंसर द्वारा लिखित पुस्तक "पैन, गॉड ऑफ द वुड्स" (www.godofthewoods.com) पढ़ें।

158

"मानव फराओ ने मिस्र की राजधानी को मेम्फिस से हेराक्लियोपोलिस में स्थानांतरित कर दिया।"

हेराक्लियोपोलिस हमारे इतिहास के एक अशांत काल, प्रथम मध्यवर्ती काल के दौरान मिस्र का प्रमुख शहर था। विवरण स्पष्ट नहीं हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि जब छठे राजवंश का अंत हुआ, तो उसके बाद आने वाले शासक पूरे देश पर शासन करने के लिए बहुत कमजोर थे। स्थानीय नोमार्क अख्तोय ने मेम्फिस से स्वतंत्रता की घोषणा की, और जब अंतिम मेम्फिस फ़राओ की निःसंतान मृत्यु हो गई, तो उसने स्वयं को दो भूमियों का देव-राजा और नौवें राजवंश का संस्थापक घोषित कर दिया। मध्य मिस्र का संपूर्ण भाग और पूर्वी नील डेल्टा का कुछ हिस्सा अख्तोय के अधिकार में आ गया। नौवें नोम में स्थित अखमिन, अख्तोय का समर्थन करने वालों और उसका विरोध करने वालों के बीच दक्षिणी सीमा बन गया।

ऊपरी मिस्र में कम से कम तीन ऐसे शासक थे जिन्होंने नई व्यवस्था को मानने से इनकार कर दिया: थिनिस, वास्त (थेब्स) और नेखेन (हीराकोनोपोलिस)। लंबे समय तक वे आपस में लड़ते रहे, क्योंकि जहाँ कोई केंद्रीय सत्ता नहीं होती, वहाँ हमेशा अराजकता ही व्याप्त रहती है। अंततः उनमें से एक, वास्त के इन्योतेफ द्वितीय, ने अन्यों पर विजय प्राप्त की; अस्युत के नोमार्क अब हेराक्लियोपोलिस के राजाओं की गरिमा के रक्षक बन गए। नौवीं राजवंश के बाद दसवीं राजवंश ने सत्ता संभाली, और दोनों ओर से लगातार हमलों के बावजूद, अखमिन में साठ वर्षों से अधिक समय तक वंश कायम रहा। अंततः इन्योतेफ के पोते, मेंटूहोतेप द्वितीय ने अस्युत पर कब्जा कर लिया; ऐसा होते ही वह तेजी से नदी के किनारे आगे बढ़ा और दसवीं

राजवंश को उखाड़ फेंका। इसने मिस्र के पुनर्मिलन और मध्य साम्राज्य की शुरुआत को चिह्नित किया। हेराक्लियोपोलिस बाद में कभी उतना महत्वपूर्ण नहीं रहा, हालाँकि यह 22 वीं राजवंश में एक महत्वपूर्ण किले का स्थल था, जिसका निर्माण ओसोरकोन द्वितीय के दूसरे पुत्र ने करवाया था।

संदर्भ: http://members.tripod.com/~Raseneb/Akhtoy.htm

159

"...जब अटलांटिस का पतन हुआ..."

प्लेटो ने सोलोन के माध्यम से मिस्र को अटलांटिस मिथक का स्रोत बताया है। मिस्रवासी अटलांटिस को केपचू कहते थे, जो संयोगवश क्रीट के लोगों का भी नाम था। ऐसा अनुमान है कि मिनोअन ज्वालामुखी आपदा से बचे लोगों ने मिस्र से मदद मांगी थी, क्योंकि उस समय मिस्र ही एकमात्र ऐसी सभ्यता थी जिसकी संस्कृति उच्च स्तर की थी।

प्लेटो ने अटलांटिस द्वीप पर स्थित उन खदानों का वर्णन किया है जहाँ पहाड़ियों से "सफेद, काले और लाल" रंग के पत्थर निकाले जाते थे और उनका उपयोग एक विशाल द्वीप शहर के निर्माण में किया जाता था। यह वर्णन सेंटोरिनी द्वीप पर पाए जाने वाले पत्थरों से मेल खाता है। अटलांटिस द्वीप-शहर का वर्णन भूमि और जल के संकेंद्रित वृत्तों की एक श्रृंखला के रूप में किया गया है, जिनमें से प्रत्येक एक गहरी नहर द्वारा समुद्र से जुड़ा हुआ है। बड़ी संख्या में जहाजों के लिए गोदी और उन जहाजों से माल उतारने के लिए एक पुल का भी वर्णन किया गया है। द्वीप से प्राप्त भित्तिचित्रों में सेंटोरिनी को इसी प्रकार चित्रित किया गया है। इसमें द्वीप पर एक विशाल शहर भी दिखाया गया है, जिसे पुरातत्वविदों ने ज्वालामुखीय ज्वालामुखी के केंद्र के रूप में माना है।

265

अक्रोटिरी में बहुमंजिला इमारतें हैं। संभवतः इस शहर में अब तक खोजी गई नगर नियोजन की सबसे प्रारंभिक अवस्था (आपस में जुड़ी सड़कों और रास्तों का संरचित जाल) रही होगी, जिसमें प्रत्येक घर में स्वच्छ बहता पानी और शौचालय थे जो सीवर प्रणाली से जुड़े थे। क्रेते और सेंटोरिनी दोनों जगहों पर अब तक ऐसे कई स्थल खोजे जा चुके हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org (देखें "सैंटोरिनी")

160

"...मिस्रवासी, जो 'अटलांटिस' को केपचू कहते थे, जो संयोगवश क्रीट के लोगों के लिए भी उनका दिया हुआ नाम है।"

"मिनोअन सभ्यता अपने चरम धन और शक्ति के समय अचानक लुप्त हो गई। यह प्लेटो द्वारा 'अटलांटियन' के भाग्य के वर्णन से भी मिलता-जुलता था। वैज्ञानिकों का मानना है कि लगभग 1500 ईसा पूर्व में कई सुनामी ने क्रीट द्वीप को तबाह कर दिया था, जो क्रीट से लगभग 100 मील दूर स्थित सेंटोरिनी द्वीप (जिसे तब थेरा कहा जाता था) की दिशा से आई थीं।"

सैंटोरिनी एक विशाल ज्वालामुखीय ज्वालामुखी का स्थल है जिसके केंद्र में एक द्वीप स्थित है। ज्वालामुखी वैज्ञानिकों ने यह निर्धारित किया है कि यह दुर्भाग्यपूर्ण द्वीप लगभग 1500 ईसा पूर्व में स्ट्रोंगिली ज्वालामुखी के भयानक विस्फोट और उसके ढहने से नष्ट हो गया था, जिसने पूरे पूर्वी भूमध्य सागर को प्रभावित किया, यहाँ तक कि निकट पूर्व तक भी। यह संभवतः इतिहास का सबसे शक्तिशाली विस्फोट था, जिसने लगभग 30 वर्ग किमी (7 घन मील) मैग्मा को 36 किमी (23 मील) ऊँचाई तक बाहर निकाला। इस प्रकार की तीव्रता वाली ज्वालामुखी घटनाओं से सुनामी उत्पन्न होने की संभावना रहती है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

161

"...मिस्र का सटीक भू-माप केंद्र..."

सह-शासन के पाँच वर्ष बाद, अमेनहोतेप चतुर्थ ने अपना नाम बदलकर अखेनातेन रख लिया और थेब्स छोड़कर एक नई मिस्री राजधानी की स्थापना की, जिसका नाम उन्होंने अखेतातेन रखा (जिसका अर्थ है एटेन का विश्राम स्थल या क्षितिज)। नाम में यह परिवर्तन दर्शाता था कि

अब वे स्वयं को देवता अमून का पुत्र नहीं, बल्कि एटेन का पुत्र मानते थे। नए शहर के चारों कोनों पर बने स्मारकों में, अखेनातेन ने अमून के पुजारियों द्वारा उनके और उनके पूर्वजों के बारे में बोले गए घृणास्पद शब्दों का उल्लेख किया। स्पष्ट रूप से, उन्होंने आशा की थी कि अखेतातेन शहर उनका विश्राम स्थल भी होगा।

अखेतेन शहर में, एतेन के प्राचीन धर्म का कायापलट हुआ। एतेन मंदिर की संरचना, अनुष्ठान और प्रतीकवाद (एक बाज़ के सिर वाले पुरुष और रे-हेराख्ती नामक सूर्य चक्र द्वारा) मूल रूप से पारंपरिक सौर देवता रा से प्रेरित थे, जिनका पूजा केंद्र प्राचीन काल से मेम्फिस और ओन (हेलियोपोलिस) में था। सह-शासन के अंत तक, एतेन के प्रतीक से बाज़-पुरुष को हटा दिया गया था। एतेन सार रूप में एक ऐसे देवता बन गए थे जिनका कोई मानवीय या पशु स्वरूप नहीं था। सूर्य चक्र को अब अदृश्य और शाश्वत देवता रा का एकमात्र भौतिक प्रतिनिधित्व और स्वयं में एक देवता माना जाता था। (सूर्य चक्र का उपयोग बाद में यहूदा के राजाओं द्वारा शाही "लामेलेक" मुहर के रूप में किया गया था)। अखेतेन के देवता और स्वर्गीय पिता, एतेन के कार्टूच पर इमरान नाम अंकित था। बाइबिल में, मूसा को अमराम का पुत्र कहा गया है, जो हिब्रू भाषा में अमराम का समकक्ष है।

मिस्र के देवता एटेन का नाम हिब्रू शब्द एडोन में लिप्यंतरित होता है। एडोन, जिसका अंग्रेजी बाइबलों में अनुवाद "प्रभु" (और एडोनाई, जिसका अनुवाद "मेरा प्रभु") किया गया है, बाइबल में यहोवा (Yhwh) के साथ ईश्वर के अनन्य व्यक्तिगत नामों के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, प्राचीन काल में, यहोवा (Yhwh) नाम लिखा जाता था, लेकिन कभी बोला नहीं जाता था। जब भी यहोवा (Yhwh) का लिखित नाम जोर से पढ़ा जाना होता था, तो उसके स्थान पर एडोन (एटेन) का उच्चारण किया जाता था। एडोन का लिखित रूप दुर्लभ है, हालांकि, इसका सीमित उपयोग महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से बाइबल की पहली छह पुस्तकों में (स्ट्रॉन्ग की बाइबिल में "प्रभु" के अंतर्गत देखें)।

(विस्तृत संदर्भ) में इसका उल्लेख केवल निम्नलिखित संदर्भों में किया गया है: मूसा परमेश्वर को अदोन/अतेन कहकर संबोधित करते हैं (निर्गमन 4:10,13; 5:22; 34:9; गिनती 14:17; व्यवस्थाविवरण 3:23; 7:26; 10:17); मूसा को स्वयं हारून (निर्गमन 32:22; गिनती 12:11) और यहोशू (गिनती 11:28) दोनों ने अदोन/अतेन कहकर संबोधित किया है; और यहोशू भी परमेश्वर को अदोन/अतेन कहकर संबोधित करते हैं (यहोशू 5:14 ख; 7:7)। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, मिस्र के 18 वें राजवंश के साहित्य और बाइबल के बीच एक स्थापित संबंध है। भजन संहिता 104, अखेतेन शहर में पुरातत्वविदों द्वारा खोजे गए अतेन के भजन का एक विस्तृत रूप है।

अखेनातेन के धार्मिक सुधारों में अमून पंथ से जुड़ी पारंपरिक मिस्री जादू-टोना और ज्योतिष का अस्वीकरण, साथ ही शाश्वत न्याय और परलोक में विश्वास रखने वाले ओसिरिस पंथ का भी अस्वीकरण शामिल था। मिस्र की नई राजधानी के लिए चुना गया स्थान अखेनातेन की एक नए संतुलन की इच्छा को और भी स्पष्ट करता है, क्योंकि यह देश के ठीक भौगोलिक केंद्र में स्थित था।

संदर्भ: http://www.domainofman.com/ankhemmaat/moses.html

162

"...ट्रोजन युद्ध के अंत में ट्रॉय का विनाश।"

ग्रीक पौराणिक कथाओं में, ट्रॉय के पेरिस द्वारा स्पार्टा के राजा मेनेलास से हेलेन को अगवा करने के बाद, अचेयनों ने ट्रॉय शहर के विरुद्ध ट्रोजन युद्ध छेड़ा था। यह युद्ध ग्रीक पौराणिक कथाओं की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है और होमर की इलियड और ओडिसी सहित ग्रीक साहित्य की कई रचनाओं में इसका वर्णन मिलता है। इलियड में ट्रॉय की घेराबंदी के अंतिम वर्ष का वर्णन है, जबकि ओडिसी में अचेयन नेताओं में से एक ओडीसियस की घर वापसी की यात्रा का वर्णन है। युद्ध के अन्य भागों को महाकाव्य कविताओं के एक चक्र में वर्णित किया गया है, जिसके केवल कुछ अंश ही बचे हैं। युद्ध के प्रसंगों ने ग्रीक त्रासदी और ग्रीक साहित्य की अन्य रचनाओं के साथ-साथ वर्जिल और ओविड जैसे रोमन कवियों के लिए भी सामग्री प्रदान की।

यह युद्ध देवियों एथेना, हेरा और एफ़्रोडाइट के बीच झगड़े से शुरू हुआ, जब कलह और कलह की देवी एरिस ने उन्हें एक सुनहरा सेब दिया, जिसे कभी-कभी कलह का सेब भी कहा जाता है, जिस पर "सबसे सुंदर के लिए" लिखा था। देवियाँ पेरिस के पास गईं, जिसने फैसला किया कि एफ़्रोडाइट, "सबसे सुंदर" होने के नाते, सेब की हकदार है। इसके बदले में, एफ़्रोडाइट ने हेलेन, जो सभी महिलाओं में सबसे सुंदर थी, को पेरिस से प्रेम करवा दिया, जो उसे ट्रॉय ले गया। माइसेना के राजा और हेलेन के पति मेनेलास के भाई, एगामेम्नन ने अचेयन सैनिकों के साथ ट्रॉय पर आक्रमण किया और दस वर्षों तक शहर को घेरे रखा। अचेयन योद्धाओं अकिलीज़ और एजैक्स, और ट्रोजन योद्धाओं हेक्टर और पेरिस सहित कई नायकों की मृत्यु के बाद, शहर ट्रोजन हॉर्स के धोखे का शिकार हो गया। अचेयनों ने ट्रोजनों का नरसंहार किया और मंदिरों को अपवित्र किया, जिससे देवताओं का क्रोध उन पर भड़क उठा। कुछ अचेयन लोग सुरक्षित रूप से अपने घरों में लौट आए और कई लोगों ने दूर-दराज के तटों पर बस्तियाँ बसाईं। रोमनों ने बाद में अपनी उत्पत्ति ट्रोजन वंश के एक व्यक्ति, एनीस से मानी, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसने बचे हुए ट्रोजनों को इटली तक पहुँचाया था। प्राचीन यूनानियों का मानना था कि ट्रोजन युद्ध एक ऐतिहासिक घटना थी जो ईसा पूर्व 13 वीं या 12 वीं शताब्दी में घटी थी, और उनका मानना था कि ट्रॉय आधुनिक तुर्की में डार्डानेल्स के पास स्थित था। आधुनिक समय तक, युद्ध और शहर दोनों को व्यापक रूप से ऐतिहासिक नहीं माना जाता था। हालाँकि, 1870 में, जर्मन पुरातत्वविद् हेनरिक श्लीमैन ने इस क्षेत्र में एक स्थल की खुदाई की जिसे उन्होंने ट्रॉय के रूप में पहचाना; अब अधिकांश विद्वान इस दावे को स्वीकार करते हैं।

ट्रोजन युद्ध एक विशिष्ट ऐतिहासिक संघर्ष से उत्पन्न हुआ है, जिसे आमतौर पर 12 वीं या 11 वीं शताब्दी ईसा पूर्व का माना जाता है, अक्सर एराटोस्थनीज द्वारा दी गई तिथियों, 1194-1184 ईसा पूर्व को प्राथमिकता दी जाती है, जो ट्रॉय के विनाशकारी जलने के पुरातात्विक साक्ष्यों से लगभग मेल खाती है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

163

"होमर, वह अंधा यूनानी कवि..."

होमर (प्राचीन यूनानी: μηρος, होमेरोस) एक प्राचीन यूनानी (आयनियन) महाकाव्य कवि थे, जिन्हें परंपरागत रूप से इलियड और ओडिसी जैसे महाकाव्यों का रचयिता माना जाता है। शास्त्रीय काल से होमर के बारे में कोई विश्वसनीय जीवनी संबंधी जानकारी उपलब्ध नहीं है। होमर की शैली के प्रमुख गुणों को मैथ्यू अर्नोल्ड ने बखूबी व्यक्त किया है: वे कहते हैं, "होमर के अनुवादक को सर्वप्रथम उनके लेखक के चार गुणों का गहन ज्ञान होना चाहिए: उनकी लेखन शैली अत्यंत तीव्र है; उनके विचार के विकास और अभिव्यक्ति, अर्थात् वाक्य रचना और शब्दों, दोनों में वे अत्यंत सरल और प्रत्यक्ष हैं; उनके विचार का सार, अर्थात् विषयवस्तु और विचार, अत्यंत सरल और प्रत्यक्ष हैं; और अंत में, वे अत्यंत महान हैं।"

होमर द्वारा प्रयुक्त भाषा आयोनिक ग्रीक का एक प्राचीन रूप है, जिसमें कुछ अन्य बोलियों, जैसे कि एओलिक ग्रीक, का मिश्रण है। बाद में यह एपिक ग्रीक का आधार बनी, जो महाकाव्य कविता की भाषा है, जो आमतौर पर डैक्टिलिक हेक्सामीटर में लिखी जाती है।

कई परंपराओं के अनुसार, होमर अंधे थे (शायद इसलिए कि साइम की इओलियन बोली में होमेरोस शब्द का यही अर्थ था) और उनका जन्म चियोस द्वीप पर, स्मिरना में या आयोनिया के किसी अन्य स्थान पर हुआ था, जहाँ विभिन्न शहर उन्हें अपना मूल निवासी होने का दावा करते थे। होमर को एक अंधे कवि के रूप में चित्रित करने का समर्थन ओडिसी के एक संभवतः आत्म-संदर्भित अंश से मिलता है, जिसमें जहाज़ टूटने के बाद ओडीसियस, फ़ेएशियन राजा के दरबार में डेमोडोकस नामक एक अंधे कवि की कहानियाँ सुनता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

164

ग्रीस के एक बुद्धिमान व्यक्ति सोलोन ने अटलांटिस के अस्तित्व की सूचना दी थी।

सोलन एथेंस के एक प्रसिद्ध राजनेता, विधिकार और गीतकार थे। यात्रा वृत्तांत पौसानियास ने सोलन को प्राचीन विश्व के सात ऋषियों में शामिल किया है। प्राचीन एथेंस में राजनीतिक,

आर्थिक और नैतिक पतन के विरुद्ध कानून बनाने के उनके प्रयासों के कारण सोलन ने इतिहास और लोककथाओं में अपना स्थान बना लिया है। उनके कुछ सुधार अल्पकालिक रूप से विफल रहे, फिर भी उन्हें अक्सर एथेंस के लोकतंत्र की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है।

देश में सुधार करने के बाद, सोलोन ने विदेश यात्रा की। उनका पहला पड़ाव मिस्र था। वहाँ उन्होंने हेलियोपोलिस का दौरा किया, जहाँ उन्होंने दर्शनशास्त्र के एक मिस्री विशेषज्ञ, प्सेनोफिस के साथ इस विषय पर चर्चा की। इसके बाद, साइज़ में, उन्होंने नीथ के मंदिर का दौरा किया और वहाँ के पुजारियों से अटलांटिस के इतिहास का विवरण प्राप्त किया। सोलोन ने इस इतिहास को एक कविता के रूप में लिखा, जिसका उल्लेख प्लेटो ने बाद में अपने संवादों तिमायोस और क्रिटियास में किया। इसके बाद सोलोन साइप्रस के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्होंने एक स्थानीय राजा के लिए एक नई राजधानी के निर्माण की देखरेख की, जिसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए राजा ने उसका नाम सोलोई रखा।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

165

"ज़ोरोस्टर..."

पैगंबर और कवि पारसी ज़ोरोएस्टर ब्रह्मांड को 'आशा' (सत्य) और 'द्रुज' (झूठ) के बीच ब्रह्मांडीय संघर्ष के रूप में देखते हैं। 'आशा' की मूल अवधारणा - जो अत्यंत सूक्ष्म है और जिसका अनुवाद करना मुश्किल है - अन्य सभी पारसी सिद्धांतों की नींव है, जिसमें अहूरा मज़्दा (जो आशा है), सृष्टि (जो आशा है), अस्तित्व (जो आशा है) और स्वतंत्र इच्छाशक्ति शामिल हैं, जिसे संभवतः धार्मिक दर्शन में पारसी ज़ोरोएस्टर का सबसे बड़ा योगदान माना जा सकता है। मानव जाति का उद्देश्य, अन्य सभी सृष्टि की तरह, आशा को बनाए रखना है। मानव जाति के लिए, यह जीवन में सक्रिय भागीदारी और अच्छे विचारों, शब्दों और कर्मों के अभ्यास के माध्यम से होता है।

268

शास्त्रीय प्राचीन काल में ज़ोरोस्टर नाम प्रसिद्ध था, और कई अलग-अलग ज़ोरोस्टर - जिन्हें गुप्त शक्तियों से युक्त बताया गया है - इतिहास संबंधी लेखों में दिखाई देते हैं।
प्लिनी के 'नेचुरल हिस्ट्री' में ज़ोरोएस्टर के जन्म के दिन हँसने की बात कही गई है। वे बचपन से ही जंगल में रहते थे और वहाँ घूमना-फिरना उन्हें बहुत पसंद था। प्लूटार्क उनकी तुलना लिकर्गस और नुमा पोम्पिलियस से करते हैं (नुमा, 4)। प्लूटार्क, थियोपोम्पस के कुछ अंशों का हवाला देते हुए, 'आइसिस एंड ओसिरिस' में ज़ोरोएस्टर के बारे में लिखते हैं: इस रचना में, पैगंबर को अपने ईश्वर पर विश्वास और अपने सहयोगियों की सुरक्षा से शक्ति मिलती है। उन्हें बाहरी विरोध और अविश्वास का सामना करना पड़ता है, और आंतरिक संदेह भी होता है।
ज़ोरोस्टर के कार्यों का ग्रीक और रोमन दर्शन पर गहरा प्रभाव पड़ा। प्राचीन ग्रीक लेखक यूडोक्सस ऑफ कनिडस और लैटिन लेखक प्लिनी द एल्डर ने ज़ोरोस्टर के दर्शन को "सबसे प्रसिद्ध और सबसे उपयोगी" बताया। प्लेटो ने यूडोक्सस के माध्यम से ज़ोरोस्टर के दर्शन के बारे में जाना और इसके कुछ अंशों को अपने प्लेटोनिक यथार्थवाद में शामिल किया।
हालाँकि, तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में, कोलोट्स ने प्लेटो के 'द रिपब्लिक' पर ज़ोरोस्टर के 'ऑन नेचर' के कुछ अंशों (जैसे कि एर की मिथक) की नकल करने का आरोप लगाया। प्लेटो के समकालीन, हेराक्लाइड्स पोंटिकस ने प्राकृतिक दर्शन पर प्लेटो से असहमति व्यक्त करने के लिए ज़ोरोस्टर के दर्शन पर आधारित 'ज़ोरोस्टर' नामक एक ग्रंथ लिखा।
उन्नीसवीं सदी के कवि विलियम बटलर येट्स ने ज़ोरोस्टर का ज़िक्र किया था। कहा जाता है कि उन्होंने और उनकी पत्नी ने "स्वचालित लेखन" के माध्यम से ज़ोरोस्टर से संपर्क करने का दावा किया था।
ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी के 2005 संस्करण में दार्शनिकों के कालक्रम में ज़ोरोस्टर को प्रथम स्थान दिया गया है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
166
"...अहुरा मज़्दा नामक एक आईएस-बीई।"

"अहुरा मज़्दा (अहुरा मज़्दा) अवेस्ता भाषा में उस देवता का नाम है जिसे ज़ोरोएस्टर ने एकमात्र अजन्मे सृष्टिकर्ता, यानी ईश्वर के रूप में महिमामंडित किया है। वह नामहीन "पिता असुर" हैं, अर्थात् ऋग्वेद के वरुण। इस दृष्टिकोण से, ज़ोरोएस्ट्रियन मज़्दा वैदिक मेधिरा के समतुल्य है, जिसका वर्णन ऋग्वेद 8.6.10 में "ब्रह्मांडीय व्यवस्था में (प्रकट) अंतर्दृष्टि" के रूप में किया गया है।"

अहुरा मज़्दा को सर्वोत्कृष्ट अहुरा माना जाता है, जो *वोरुना और *मित्र दोनों से श्रेष्ठ हैं, और ऋग्वेद के नामहीन "पिता असुर" हैं, तथा एक विशिष्ट देवता हैं। पारसी धर्म को उसके अनुयायी मज़दायास्ना, यानी मज़्दा की पूजा के रूप में वर्णित करते हैं। अवेस्ता में कहा गया है, "अहुरा मज़्दा सर्वोच्च पूजनीय हैं"।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

167

"लाओत्ज़ी, एक दार्शनिक जिन्होंने "द वे" नामक एक छोटी सी पुस्तक लिखी..."

परंपरा के अनुसार, इसे ईसा पूर्व छठी शताब्दी के आसपास ताओवादी ऋषि लाओज़ी (या लाओ त्ज़ू, "पुराने गुरु") द्वारा लिखा गया था, जो झोउ राजवंश के दरबार में अभिलेखपाल थे और चीन में इसी नाम से यह ग्रंथ जाना जाता है। ताओ ते चिंग एक चीनी शास्त्रीय ग्रंथ है। इसका नाम इसके दो खंडों के शुरुआती शब्दों से आया है: दाओ "मार्ग" और दे "सद्गुण"। यह प्राचीन पुस्तक चीनी धर्म में भी केंद्रीय भूमिका निभाती है, न केवल ताओवाद (दाओजियाओ) के लिए बल्कि चीनी बौद्ध धर्म के लिए भी, जिसे जब पहली बार चीन में पेश किया गया था, तो बड़े पैमाने पर ताओवादी शब्दों और अवधारणाओं के उपयोग के माध्यम से व्याख्या की गई थी। कई चीनी कलाकार, जिनमें कवि, चित्रकार आदि शामिल हैं,

269

सुलेखकों और यहां तक कि बागवानों ने भी ताओ ते चिंग को प्रेरणा के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया है। पश्चिमी भाषाओं में सैकड़ों अनुवादों की बदौलत पूर्वी एशिया के बाहर भी इसका प्रभाव व्यापक रूप से फैला है।
ताओ नामहीन है। (ताओ) भेदों से परे है और भाषा से ऊपर है। लाओत्ज़ी समय या स्थान से परे अस्तित्व की एक अवस्था का वर्णन करते हैं:
"जिस मार्ग का वर्णन किया जा सकता है, वह अपरिवर्तनीय मार्ग नहीं है।"
जिन नामों को नाम दिया जा सकता है, वे अपरिवर्तनीय नाम नहीं हैं। नामहीन से ही स्वर्ग और पृथ्वी की उत्पत्ति हुई; नामी तो वह माता मात्र है जो दस हजार प्राणियों का पालन-पोषण करती है, प्रत्येक अपनी-अपनी जाति के अनुसार।
आत्मा कभी नहीं मरती।
यह रहस्यमयी महिला है।
रहस्यमयी स्त्रीत्व का द्वार ही वह आधार है जिससे स्वर्ग और पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। यह हमारे भीतर हर समय विद्यमान है;
आप इसका जैसे चाहें उपयोग कर सकते हैं।
यह कभी सूखता नहीं है।
हम तीलियों को आपस में जोड़कर पहिया बनाते हैं;
लेकिन पहिये का मूल्य उस स्थान पर निर्भर करता है जहाँ कुछ भी नहीं होता। हम मिट्टी को घुमाकर बर्तन बनाते हैं;
लेकिन किसी भी वस्तु का मूल्य उस स्थान पर निर्भर करता है जहाँ कुछ भी नहीं होता। हम घर बनाने के लिए दरवाजे और खिड़कियाँ छेदते हैं;
और घर का मूल्य इन्हीं जगहों पर निर्भर करता है जहां कुछ भी नहीं होता।
इसलिए जिस प्रकार हम वर्तमान का लाभ उठाते हैं,
हमें उस चीज के महत्व को पहचानना चाहिए जो मौजूद नहीं है।
दूसरों को जानना ही बुद्धिमत्ता है;
स्वयं को जानना ही ज्ञानोदय है।

दूसरों पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए बल प्रयोग की आवश्यकता होती है;
स्वयं पर विजय प्राप्त करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है;
जिसके पास पर्याप्त धन है, वही धनी है।
दृढ़ता इच्छाशक्ति की निशानी है।
जो व्यक्ति स्थिर रहता है, वही टिकाऊ होता है।
मरना तो ठीक है, लेकिन नष्ट न होना ही शाश्वत उपस्थिति है।"
कई लोगों का मानना है कि ताओ ते चिंग में सार्वभौमिक सत्य समाहित हैं जिन्हें अन्य दर्शनों, चाहे वे धार्मिक हों या धर्मनिरपेक्ष, में स्वतंत्र रूप से मान्यता दी गई है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
168
"...उत्पत्ति..."
उत्पत्ति (ग्रीक: "जन्म", "उत्पत्ति") यहूदी धर्म और ईसाई धर्म की बाइबिल की पहली पुस्तक है, और पेंटेट्यूक या टोरा की पांच पुस्तकों में से पहली पुस्तक है।
1. फिर ऐसा हुआ कि जब धरती पर पुरुषों की संख्या बढ़ने लगी और उनके पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं,
270

2 परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि मनुष्यों की पुत्रियाँ सुंदर थीं; और उन्होंने अपनी पसंद की लड़कियों से विवाह कर लिया।
3 तब यहोवा ने कहा, “मेरी आत्मा मनुष्य के साथ सदा संघर्ष नहीं करेगी, क्योंकि वह भी शरीर है; अतः उसके दिन एक सौ बीस वर्ष होंगे।”
4 उन दिनों में और उसके बाद भी, जब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों से विवाह किया और उनसे संतान उत्पन्न की, तब नफिलिम पृथ्वी पर थे। वे प्राचीन काल के बलवान और प्रसिद्ध पुरुष थे।
5 तब यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्यों की दुष्टता बहुत बढ़ गई थी, और उनके मन के विचारों का एकमात्र उद्देश्य निरंतर बुराई ही था।
संदर्भ: http://bible.cc/genesis/6-4.htm
169
"... ओम्फालोस पत्थर..."
ओम्फालोस एक प्राचीन धार्मिक पत्थर की कलाकृति है, जिसे बेटिलस भी कहा जाता है। ग्रीक भाषा में, ओम्फालोस शब्द का अर्थ "नाभि" होता है (रानी ओम्फले के नाम से तुलना करें)। प्राचीन यूनानियों के अनुसार, ज़्यूस ने दो चीलों को दुनिया भर में उड़ान भरने के लिए भेजा था ताकि वे दुनिया के केंद्र, यानी दुनिया की "नाभि" पर मिल सकें। इस बिंदु को दर्शाने के लिए भूमध्य सागर के आसपास के कई क्षेत्रों में ओम्फालोस पत्थर स्थापित किए गए थे; इनमें से सबसे प्रसिद्ध डेल्फी में स्थित ओरेकल में था।
अधिकांश विवरणों के अनुसार, ओम्फालोस को पाइथिया के पास स्थित मंदिर के एडायटन में रखा गया है। पत्थर (जो संभवतः एक प्रतिकृति हो सकता है) की सतह पर एक गाँठदार जाल की नक्काशी है, और इसका मध्य भाग खोखला है, जो आधार की ओर चौड़ा होता जाता है। डेल्फी में स्थित ओम्फालोस पत्थर को उस पत्थर के रूप में पहचाना जाने लगा जिसे रिया ने कपड़ों में लपेटकर ज़्यूस होने का नाटक किया था। ऐसा उसने अपने पिता क्रोनस को धोखा देने के लिए किया था, जिसने अपने बच्चों को निगल लिया था ताकि वे बड़े होकर उसे गद्दी से

न हटा सकें, जैसा कि उसने अपने पिता यूरेनस को हटाया था। ऐसा कहा जाता था कि ओम्फालोस पत्थरों के माध्यम से "देवताओं" से सीधा संवाद संभव था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

170

"...पायथन, सर्प..."

ग्रीक पौराणिक कथाओं में, पायथन, यानी सर्प, डेल्फ़ी का पृथ्वी-ड्रैगन था, जिसे मूर्तियों और फूलदानों पर चित्रित करते समय हमेशा सर्प के रूप में दर्शाया जाता था। वह डेल्फ़िक ओरेकल में निवास करती थी, जो उसकी माता, पृथ्वी की देवी गाया के पूजा केंद्र में स्थित था (पायथो उस स्थान का नाम है)। इस स्थान को पृथ्वी का केंद्र माना जाता था, जिसे एक पत्थर, ओम्फालोस या नाभि द्वारा दर्शाया जाता था, जिसकी पायथन रक्षा करती थी। पायथो बाद में ओलंपियन देवता अपोलो की शत्रु बन गई, जिसने उसे मार डाला और उसके पूर्व निवास और ओरेकल, जो शास्त्रीय ग्रीस में सबसे प्रसिद्ध था, को अपना बना लिया। कई चित्रों में सर्प पायथन को ओम्फालोस, पवित्र नाभि-पत्थर और पृथ्वी के मध्य बिंदु की रक्षा करते हुए दिखाया गया है, जो अपोलो के मंदिर में स्थित था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

171

"...फारस का साइरस द्वितीय..."

साइरस महान (लगभग 590 ईसा पूर्व या 576 ईसा पूर्व - अगस्त 529 ईसा पूर्व या 530 ईसा पूर्व), जिन्हें फारस के साइरस द्वितीय और साइरस द एल्डर के नाम से भी जाना जाता है, एक फारसी सम्राट थे। वे फारसी साम्राज्य के संस्थापक थे।

271

अचमेनिद राजवंश के अधीन साम्राज्य। उनके शासनकाल में साम्राज्य का विस्तार हुआ और अंततः इसने दक्षिण-पश्चिम एशिया के अधिकांश भाग और मध्य एशिया के बड़े हिस्से पर विजय प्राप्त कर ली, पश्चिम में मिस्र और हेलेस्पोंट से लेकर पूर्व में सिंधु नदी तक, और इस प्रकार विश्व का अब तक का सबसे बड़ा राज्य स्थापित किया।

अपने उनतीस वर्षों के शासनकाल के दौरान, साइरस ने अपने समय के कुछ सबसे महान राज्यों, जिनमें मेडियन साम्राज्य, लिडियन साम्राज्य और नव-बेबिलोनियन साम्राज्य शामिल थे, के विरुद्ध युद्ध किया। साइरस ने मिस्र पर आक्रमण नहीं किया, क्योंकि अगस्त 530 ईसा पूर्व में सिर दरिया के किनारे मस्सागेटे साम्राज्य से लड़ते हुए उनकी स्वयं मृत्यु हो गई। उनके बाद उनके पुत्र कंबिसिस द्वितीय शासक बने, जिन्होंने अपने छोटे से शासनकाल में मिस्र को जीत लिया।

अपने राष्ट्र से परे, साइरस ने यहूदी धर्म (अपने पुनर्स्थापना के फरमान के माध्यम से), राजनीति और सैन्य रणनीति के साथ-साथ पूर्वी और पश्चिमी सभ्यता दोनों पर एक स्थायी विरासत छोड़ी।

उनकी धार्मिक नीति का एकमात्र ज्ञात उदाहरण बेबीलोन में यहूदियों के प्रति उनका व्यवहार है। बाइबल में दर्ज है कि यहूदी आबादी का एक छोटा समूह बेबीलोन से प्रतिज्ञा की भूमि पर लौट आया, क्योंकि उन्होंने मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए साइरस का आदेश जारी किया था। यह आदेश एज्रा की पुस्तक में पूरी तरह से अंकित है। साइरस की नीतियों के परिणामस्वरूप, यहूदियों ने उन्हें एक सम्मानित और धर्मी राजा के रूप में आदर दिया। वह एकमात्र गैर-यहूदी हैं जिन्हें तनाख (यशायाह 45:1-6) में मसीहा, ईश्वर द्वारा नियुक्त राजा के रूप में नामित किया गया है।

कुछ समकालीन मुस्लिम विद्वानों ने सुझाव दिया है कि धुल-कर्नैन का कुरानिक चित्र साइरस महान है। यह सिद्धांत सुन्नी विद्वान अबुल कलाम आज़ाद द्वारा प्रस्तावित किया गया था और शिया विद्वान अल्लामेह तबताबाई ने अपने तफ़सीर अल-मिज़ान और मकारेम शिराज़ी और सुन्नी विद्वान अबुल अला मौदुदी में इसका समर्थन किया था।

अपने शासनकाल के दौरान, साइरस ने विजित राज्यों के एक विशाल क्षेत्र पर अपना नियंत्रण बनाए रखा, जो आंशिक रूप से मेडियन प्रांतों को बरकरार रखने और उनका विस्तार करने के माध्यम से हासिल हुआ था। साइरस की विजयों ने साम्राज्य निर्माण के युग में एक नए युग की शुरुआत की, जहाँ दर्जनों देशों, जातियों, धर्मों और भाषाओं से मिलकर बने एक विशाल महाशक्ति पर एक केंद्रीय सरकार के नेतृत्व में एक ही प्रशासन द्वारा शासन किया जाता था। 1992 में, माइकल एच. हार्ट की इतिहास के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में उन्हें 87 वें स्थान पर रखा गया था। 10 दिसंबर, 2003 को नोबेल शांति पुरस्कार स्वीकार करते हुए, शिरीन एबादी ने साइप्रस का जिक्र करते हुए कहा:

मैं एक ईरानी हूँ, महान साइरस का वंशज। इस सम्राट ने 2500 साल पहले सत्ता के शिखर पर यह घोषणा की थी कि 'यदि लोग न चाहें तो वह उन पर शासन नहीं करेंगे।' उन्होंने किसी को भी अपना धर्म या आस्था बदलने के लिए मजबूर न करने का वादा किया और सभी के लिए स्वतंत्रता की गारंटी दी। महान साइरस के चार्टर का मानव अधिकारों के इतिहास में अध्ययन किया जाना चाहिए।

संयुक्त राज्य अमेरिका के कई पूर्वजों ने साइरोपीडिया जैसी रचनाओं के माध्यम से महान साइरस से प्रेरणा ली। उदाहरण के लिए, थॉमस जेफरसन के पास इस पुस्तक की दो निजी प्रतियां थीं, "जो मैकियावेली की 'द प्रिंस' के साथ-साथ राजनेताओं के लिए अनिवार्य पठन सामग्री थी।"

एबीसी के नाइटलाइन विद टेड कोप्पेल के हालिया सेगमेंट में, टेड कोप्पेल ने साइरस द ग्रेट का जिक्र किया, जब वे उनके सम्मान में बन रही नई डॉक्यूमेंट्री फिल्म के बारे में बात कर रहे थे, और उनके बारे में उन्होंने यह कहा:

"साइरस द ग्रेट वास्तव में इतिहास की महान हस्तियों में से एक हैं। थॉमस जेफरसन जैसे अमेरिका के संस्थापकों पर मानवाधिकारों के क्षेत्र में साइरस द ग्रेट का प्रभाव था।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
172
"...साइरस द्वितीय द्वारा अपनाई गई संगठन की अनूठी प्रणाली..."
अपने शासनकाल के दौरान, साइरस ने विजित राज्यों के एक विशाल क्षेत्र पर नियंत्रण बनाए रखा, जो आंशिक रूप से मेडियन प्रांतों को बनाए रखने और उनका विस्तार करने के माध्यम से हासिल किया गया था। साइरस के उत्तराधिकारी डेरियस द ग्रेट ने नव-विजित क्षेत्रों को प्रांतों में संगठित करना जारी रखा, जिन पर क्षत्रप कहलाने वाले जागीरदार राजाओं का शासन था। साइरस के साम्राज्य ने राज्य के कई हिस्सों से केवल कर और अनिवार्य सैनिकों की मांग की।
साइरस एक कुशल राजनेता और एक कुशल सैनिक दोनों के रूप में समान रूप से प्रसिद्ध थे। दमन की बजाय उदारता की नीति अपनाकर और स्थानीय धर्मों को संरक्षण देकर, वे अपने नव-विजित क्षेत्रों को उत्साही समर्थकों में परिवर्तित करने में सफल रहे। उनके द्वारा निर्मित राजनीतिक संरचना के कारण ही अचमेनिद साम्राज्य उनकी मृत्यु के बाद भी लंबे समय तक कायम रहा।
साइरस के शासनकाल में फारस के उदय का विश्व इतिहास की दिशा पर गहरा प्रभाव पड़ा। फारसी दर्शन, साहित्य और धर्म ने अगले सहस्राब्दियों तक विश्व की घटनाओं में प्रमुख भूमिका निभाई। 7 वीं शताब्दी ईस्वी में इस्लामी खिलाफत (अरब साम्राज्य) द्वारा फारस पर विजय प्राप्त करने के बावजूद, इस्लामी स्वर्ण युग के दौरान मध्य पूर्व में फारस का व्यापक प्रभाव बना रहा।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
173
"... ज़िन्दगी का पेड़...."

"जीवन के वृक्ष लोककथाओं, संस्कृति और कथाओं में दिखाई देते हैं, जो अक्सर अमरता से संबंधित होते हैं। ये अक्सर उन लोगों के लिए सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व रखते हैं जिनके लिए वे प्रकट होते हैं।"

सुमेरियन (या फारसी) जीवन वृक्ष को कई गांठों और एक-दूसरे को काटती रेखाओं की श्रृंखला द्वारा दर्शाया गया था। यह इन लोगों के बीच एक महत्वपूर्ण धार्मिक प्रतीक था, जिसकी अक्सर बाज के सिर वाले देवताओं और पुजारियों, या स्वयं राजा द्वारा देखभाल की जाती थी।

•

•

•

चीनी पौराणिक कथाओं में, जीवन वृक्ष की नक्काशी में एक फीनिक्स और एक ड्रैगन को दर्शाया गया है - चीनी पौराणिक कथाओं में ड्रैगन अक्सर अमरता का प्रतीक होता है। ताओवाद में एक ऐसे वृक्ष की कथा भी प्रचलित है जो हर तीन हजार वर्षों में एक आड़ू पैदा करता है। जो भी इस फल को खाता है उसे अमरता प्राप्त होती है।

1990 के दशक में चीन के सेचुआन प्रांत के सैनक्सिंगडुई में एक बलि देने वाले गड्ढे की पुरातात्विक खोज हुई। लगभग 1200 ईसा पूर्व के इस गड्ढे में तीन कांसे के वृक्ष थे, जिनमें से एक 4 मीटर ऊंचा था। आधार पर एक अजगर था और निचली शाखाओं से फल लटक रहे थे। शीर्ष पर पंजों वाला एक विचित्र पक्षी जैसा (फीनिक्स) प्राणी था। सेचुआन से ही, हान राजवंश के उत्तरार्ध (लगभग 25 - 220 ईस्वी) का एक और जीवन वृक्ष मिला है। इसके मिट्टी के बने आधार की रक्षा पंखों वाले सींगदार जानवर द्वारा की जा रही है। वृक्ष की पत्तियां सिक्के और मनुष्य के रूप में हैं।

मिस्र की पौराणिक कथाओं में, हेलियोपोलिस की एनेड प्रणाली में, शू और टेफनट (नमी और सूखापन) तथा गेब और नुइट (पृथ्वी और आकाश) के अलावा, पहला जोड़ा आइसिस और ओसिरिस है। ऐसा कहा जाता है कि वे साओसिस के बबूल के पेड़ से निकले थे, जिसे मिस्रवासी जीवन का वृक्ष मानते थे और इसे "वह वृक्ष जिसमें जीवन और मृत्यु समाहित हैं" कहते थे।

•
•
•
•
•
•
•
•
मिस्रवासियों का पवित्र सिकोमोर वृक्ष भी जीवन और मृत्यु की दहलीज पर खड़ा था, जो दो लोकों को जोड़ता था।
जर्मनिक मूर्तिपूजा में, वृक्षों ने एक प्रमुख भूमिका निभाई, जो जीवित ग्रंथों के विभिन्न पहलुओं में और संभवतः देवताओं के नाम में भी दिखाई देते हैं।
नॉर्स धर्म में जीवन वृक्ष को यग्द्रसिल के रूप में दर्शाया गया है, जो विश्व वृक्ष है और एक विशाल वृक्ष है जिसके चारों ओर व्यापक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। संभवतः यग्द्रसिल से संबंधित, जर्मनिक जनजातियों द्वारा अपने समाजों में पवित्र वृक्षों का सम्मान करने के वृत्तांत भी मिलते हैं। नॉर्स पौराणिक कथाओं में, इडुन के वृक्ष से प्राप्त सुनहरे सेब ही देवताओं को अमरता प्रदान करते हैं।
उत्पत्ति की पुस्तक में जीवन वृक्ष का उल्लेख है, जिसमें आदम और हव्वा को अमरता प्रदान करने की क्षमता बताई गई है। (हालाँकि, यह तुरंत स्पष्ट नहीं है, और न ही सर्वमान्य है, कि उत्पत्ति की पुस्तक और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वर्णित जीवन वृक्ष एक ही है।)
जीवन वृक्ष, जो दस परस्पर जुड़े हुए नोड्स के रूप में है, कबालाह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस प्रकार, यह दस सेफिरोट के समान है।
जीवन वृक्ष मॉर्मन की पुस्तक में लेही को दिए गए एक रहस्योद्घाटन में प्रकट होता है (देखें 1 नेफी 8:10-12)। यह ईश्वर के प्रेम का प्रतीक है (देखें 1 नेफी 11:21-23), और कभी-कभी इसे मोक्ष और मृत्यु के बाद के अस्तित्व के रूप में समझा जाता है।

एत्ज़ चैम, जिसका हिब्रू में अर्थ है "जीवन का वृक्ष", यहूदी धर्म में एक आम शब्द है। नीतिवचन की पुस्तक में पाया जाने वाला यह वाक्यांश, लाक्षणिक रूप से तोराह के लिए ही प्रयोग किया जाता है।

•

•

•

•

•

कोलंबस-पूर्व मेसोअमेरिकी संस्कृतियों में, "विश्व वृक्ष" की अवधारणा मेसोअमेरिकी पौराणिक ब्रह्मांड विज्ञान और प्रतिमा विज्ञान में एक प्रचलित रूपांकन है। विश्व वृक्ष चार प्रमुख दिशाओं का प्रतीक थे, जो एक केंद्रीय विश्व वृक्ष की चतुर्गुणी प्रकृति का भी प्रतिनिधित्व करते थे, जो एक प्रतीकात्मक अक्ष मुंडी था जो पाताल लोक और आकाश के तलों को स्थलीय जगत से जोड़ता था।

विश्व वृक्षों के चित्रण, उनके दिशात्मक और केंद्रीय दोनों पहलुओं में, माया, एज़्टेक, इज़पान, मिक्सटेक, ओल्मेक और अन्य जैसी संस्कृतियों की कला और पौराणिक परंपराओं में पाए जाते हैं, जो कम से कम मेसोअमेरिकन कालक्रम के मध्य/उत्तर प्रारंभिक काल से संबंधित हैं।

दिशात्मक विश्व वृक्ष मेसोअमेरिकन कैलेंडर में चार वर्ष वाहकों और दिशात्मक रंगों और देवताओं से भी जुड़े हुए हैं।

विश्व वृक्षों को अक्सर उनकी शाखाओं में पक्षियों के साथ चित्रित किया जाता है, और उनकी जड़ें पृथ्वी या जल में फैली होती हैं (कभी-कभी "जल-राक्षस" के ऊपर, जो पाताल लोक का प्रतीक है)।

केंद्रीय विश्व वृक्ष को आकाशगंगा की पट्टी के प्रतीक के रूप में भी व्याख्यायित किया गया है।
उरारतु से प्राप्त एक कांस्य हेलमेट का टुकड़ा, जिस पर "जीवन वृक्ष" चित्रित है।

•

ईसा पूर्व 13 वीं से 6 वीं शताब्दी के आसपास प्राचीन आर्मेनिया में, जीवन वृक्ष एक धार्मिक प्रतीक था, जिसे किलों की बाहरी दीवारों पर उकेरा जाता था और योद्धाओं के कवच पर भी उकेरा जाता था। वृक्ष की शाखाएँ तने के दाएँ और बाएँ बराबर भागों में बँटी होती थीं, प्रत्येक शाखा पर एक पत्ती होती थी, और वृक्ष के शीर्ष पर भी एक पत्ती होती थी। सेवक (कुछ पंखों वाले) वृक्ष के दोनों ओर खड़े होते थे, एक हाथ ऊपर उठाए हुए, मानो वे उसकी देखभाल कर रहे हों। यह वृक्ष कई उरारतु कलाकृतियों पर पाया जा सकता है, जैसे कि आर्मेनिया के येरेवन में स्थित एरेबुनी किले की दीवारों पर बने चित्र।

•

•

वृक्ष के प्रतीकवाद का उल्लेख ऋग्वेद के दसवें खंड के 135 वें श्लोक और भगवद्गीता के 15 वें अध्याय (1-4) में किया गया है।

जापान के शिंटो धर्म में, पेड़ों को पवित्र कागज से चिह्नित किया जाता था जो बिजली के बोल्ट का प्रतीक होता था, क्योंकि पेड़ों को पवित्र माना जाता था।

•
•
•
यह इस तथ्य से प्रचारित हुआ कि पूर्वजों और जानवरों की मृत्यु के बाद, उन्हें अक्सर पेड़ की शाखाओं के रूप में चित्रित किया जाता था।
'एक हजार एक रातों की किताब' में 'बुलुकिया की कहानी' नाम की एक कहानी है, जिसमें नायक अमरता की खोज में निकलता है और रत्नों से जड़े पेड़ों वाला एक स्वर्ग पाता है। पास ही में यौवन का झरना है जिसकी रक्षा अल-खिदिर करता है। रक्षक को हराने में असमर्थ बुलुकिया को खाली हाथ लौटना पड़ता है।
गिलगामेश का महाकाव्य भी अमरत्व की ऐसी ही खोज है। मेसोपोटामिया की पौराणिक कथाओं में, एटाना एक ऐसे पौधे की तलाश करता है जो उसे पुत्र प्रदान करे। इसका पुख्ता प्रमाण है कि यह प्राचीन काल से ही प्रचलित है, क्योंकि यह अक्काद (2390 - 2249 ईसा पूर्व) से प्राप्त बेलनाकार मुहरों में पाया गया है।
प्राचीन यूनानी धर्म के सबसे प्रारंभिक रूपों में से एक की उत्पत्ति वृक्ष पूजा से जुड़ी हुई है। विश्व धर्मों की रहस्यवादी परंपराओं में, पवित्र ग्रंथों का अध्ययन मन की अवस्थाओं और वास्तविकता के बाह्य अनुभव के बीच संबंध से संबंधित लाक्षणिक अर्थों के लिए किया जाता है। इस प्रकार, वृक्ष एक अभिव्यक्ति/कारण प्रतीक है - जीवन वृक्ष शाश्वत जीवंतता या पूर्णता की वांछित अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, न कि शरीर या आत्मा की अमरता का। ऐसी अवस्था में, शारीरिक मृत्यु (जिस पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती) फिर भी एक विकल्प है, और पूर्ण अच्छाई/दिव्य वास्तविकता/ईश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव न केवल संभव है, बल्कि सर्वव्यापी है।
जब अहंकार (सतही चेतना) को शर्मिंदगी का अनुभव होता है, क्योंकि वह द्वैतवाद को आत्मसात करने या उसमें विश्वास करने के प्रलोभन में पड़ जाता है (जैसे कि भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाना), तो स्वर्ग में वापसी के द्वार की रक्षा करने वाले देवदूत हमें उस सीमित,

पतित अनुभव में शाश्वत रूप से जीने से बचाते हैं। देवदूत आत्मज्ञान या सच्चे स्वरूप के पूर्ण ज्ञान के प्रतीक हैं, जिनमें शुद्धिकरण और पुन: अस्तित्व में लौटने की शक्ति होती है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

174

"...नक्काशी में शंकु के आकार के उपकरण और इलेक्ट्रॉनिक पहचान उपकरण दिखाए गए हैं, जिन्हें टोकरियों या पानी की बाल्टियों के रूप में दर्शाया गया है, और जिन्हें बाज के सिर वाले, पंखों वाले प्राणी ले जा रहे हैं...."

संपादक का नोट: इनकी बेहतरीन तस्वीरें निम्नलिखित वेबसाइट पर देखी जा सकती हैं:

http://www.crystalinks.com/godswaterbuckets.html

175

"... faravahar..."

"फरावहर या फारोहर (लिप्यंतरण भिन्न-भिन्न हो सकता है) पारसी धर्म के सबसे प्रसिद्ध प्रतीकों में से एक है।"

पंखयुक्त चक्र का प्राचीन निकट और मध्य पूर्व की कला और संस्कृति में एक लंबा इतिहास रहा है। ऐतिहासिक रूप से, यह प्रतीक कांस्य युग की शाही मुहरों पर दिखाई देने वाले "पंखयुक्त सूर्य" चित्रलिपि से प्रभावित है। हालांकि वर्तमान में यह माना जाता है कि यह प्रतीक एक फरावशी (यानी संरक्षक देवदूत) का प्रतिनिधित्व करता है और इसी से इसका नाम पड़ा है, लेकिन मेसोपोटामिया और मिस्र की प्राचीन नक्काशी से इसे अपनाने वालों के मन में इसका क्या अर्थ था, यह स्पष्ट नहीं है। चूंकि यह प्रतीक सबसे पहले शाही शिलालेखों पर दिखाई देता है, इसलिए यह भी माना जाता है कि यह 'दिव्य राजसी महिमा' (ख्वारेनाह), या राजा के फरावशी का प्रतिनिधित्व करता है, या उस दैवीय आदेश का प्रतिनिधित्व करता है जो राजा के अधिकार का आधार था।

275

प्रतीक के नाम और दिव्य सत्ताओं के वर्ग के बीच यह संबंध इस वर्तमान मान्यता को दर्शाता है कि प्रतीक एक फरावशी का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि, अवेस्ता में फरावशी का कोई भौतिक वर्णन नहीं है और अवेस्ताई भाषा में ये सत्ताएँ
व्याकरणिक रूप से स्त्रीलिंग।
दारियस प्रथम के शासनकाल से पहले, इस प्रतीक में पंखों के ऊपर मानव आकृति नहीं होती थी। वर्तमान पारसी धर्म में, फरावहार को जीवन के उद्देश्य की याद दिलाने वाला माना जाता है, जो कि इस प्रकार जीना है कि आत्मा फ्रशो-केरेती, यानी अहूरा मज़्दा के साथ मिलन की ओर अग्रसर हो।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
176
"...ओनेस..."
"तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बेबीलोन के लेखक बेरोसस ने ओएनेस नाम एक पौराणिक प्राणी को दिया था, जिसने मानव जाति को ज्ञान प्रदान किया। बेरोसस ने ओएनेस का वर्णन मछली के शरीर वाले, लेकिन मनुष्य के रूप में किया है। उनका वर्णन फारस की खाड़ी में निवास करने वाले और दिन के समय पानी से बाहर निकलकर मानव जाति को लेखन, कला और विभिन्न विज्ञानों की शिक्षा देने वाले प्राणी के रूप में किया गया है।"
एक समय ऐसा माना जाता था कि ओएनेस प्राचीन बेबीलोनियन देवता ईए पर आधारित है, लेकिन अब यह ज्ञात है कि वास्तव में ओआन (अडापा) पर आधारित है - जो सात प्राचीन ऋषियों या अबगल्लू (सुमेरियन में अब = जल, गल = महान, लू = मनुष्य) में से प्रथम थे, जिन्हें ईए ने प्राचीन सुमेरियन पौराणिक कथाओं में सुमेर के सबसे पुराने शहर एरिडू में मानव जाति को सभ्यता की कलाओं का प्रसार करने के लिए भेजा था।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
177
"लापता बटालियन के कुछ सदस्य महासागरों में डॉल्फ़िन या व्हेल के शरीर में निवास करते हुए पाए गए हैं।"

डॉल्फ़िन का मानव संस्कृति में लंबे समय से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ग्रीक पौराणिक कथाओं में डॉल्फ़िन का विशेष महत्व है और उस समय के कई सिक्कों पर एक पुरुष या लड़के को डॉल्फ़िन की पीठ पर सवार दिखाया गया है। प्राचीन यूनानी लोग उनका स्वागत करते थे; किसी जहाज़ के पीछे डॉल्फ़िन को तैरते देखना एक सुखद यात्रा का शुभ संकेत माना जाता था। नोसोस के खंडहर महल से मिले कलात्मक साक्ष्यों से यह प्रतीत होता है कि मिनोअन लोगों के लिए भी डॉल्फ़िन का विशेष महत्व था। हिंदू पौराणिक कथाओं में, गंगा नदी की डॉल्फ़िन को गंगा नदी की देवी गंगा से जोड़ा जाता है।
डॉल्फ़िन को अक्सर पृथ्वी के सबसे बुद्धिमान जीवों में से एक माना जाता है, हालांकि यह कहना मुश्किल है कि वे वास्तव में कितनी बुद्धिमान हैं, क्योंकि विभिन्न प्रजातियों की सापेक्ष बुद्धिमत्ता की तुलना करना संवेदी तंत्र, प्रतिक्रिया के तरीकों और संज्ञानात्मक प्रकृति में अंतर के कारण जटिल हो जाता है। इसके अलावा, बड़े जलीय जीवों पर प्रायोगिक कार्य करने की कठिनाई और लागत के कारण, कुछ ऐसे परीक्षण जो सार्थक परिणाम दे सकते थे, अभी तक नहीं किए गए हैं, या अपर्याप्त नमूना आकार और कार्यप्रणाली के साथ किए गए हैं। हालांकि, मनुष्यों द्वारा डॉल्फ़िन के व्यवहार का व्यापक अध्ययन किया गया है, चाहे वे कैद में हों या जंगली में।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
178
"...अनुनकी..."
"अनुनकी सुमेरियन और अक्काडियन देवताओं का एक समूह है जो अन्नुना ('पचास महान देवता') और इगिगी (छोटे देवता) से संबंधित हैं, और कुछ मामलों में उनसे अतिव्यापी भी हैं।"
276

इसका अर्थ कुछ इस तरह है, 'शाही वंश के लोग'

या 'राजसी संतान' या "स्वर्ग और पृथ्वी"।
बेबीलोन की सृष्टि कथा, एनुमा एलिश में अनुनाकी का उल्लेख मिलता है। मारडुक की महिमा मंडित करने वाले बाद के संस्करण में, मानव जाति की रचना के बाद, मारडुक अनुनाकी को विभाजित करता है और उन्हें उनके उचित स्थान सौंपता है: तीन सौ स्वर्ग में और तीन सौ पृथ्वी पर। अनुनाकी देवताओं की उच्च परिषद और अनु के साथी थे। वे पृथ्वी और पाताल लोक में वितरित थे।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
179
"...एक 'पंखदार डिस्क' पर उड़ते हुए।"
"पंखों वाला सूर्य प्राचीन निकट पूर्व (मिस्र, मेसोपोटामिया, अनातोलिया और फारस) में दिव्यता, राजसीपन और शक्ति से जुड़ा प्रतीक है। यह प्रतीक दक्षिण अमेरिका के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया में रहने वाली प्राचीन संस्कृतियों के अभिलेखों में भी पाया गया है।"
प्राचीन मिस्र में, यह प्रतीक पुराने साम्राज्य (स्नेफेरू, 26 वीं शताब्दी ईसा पूर्व) से प्रमाणित है, जिसके दोनों ओर अक्सर उरेयस बना होता था। प्रारंभिक मिस्री धर्म में, बेहेदेती प्रतीक एडफू के होरस का प्रतिनिधित्व करता था, जिसे बाद में रा-हाराचते के रूप में पहचाना गया। इसे कभी-कभी प्तह के बैल एपिस की गर्दन पर भी दर्शाया जाता है। समय बीतने के साथ (व्याख्या के अनुसार) मिस्र के सभी अधीनस्थ देवताओं को सूर्य देवता के विभिन्न रूप माना जाने लगा, जिनमें खेपरी भी शामिल है।
लगभग 2000 ईसा पूर्व से, यह प्रतीक लेवांत और मेसोपोटामिया में फैल गया। यह असीरियन शासकों के चित्रों में और चित्रलिपि अनातोलियन में राजत्व के प्रतीक के रूप में दिखाई देता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, "स्वयं उसका सूर्य"। लगभग 8 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से, यह हिब्रू मुहरों पर दिखाई देने लगा, जो अब "शक्ति" के एक सामान्य प्रतीक के रूप में प्रचलित था। पारसी फारस में यह प्रतीक फरावहर ("अहुरा मज़्दा का दृश्य रूप") में विकसित हुआ।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

180

"...उन्होंने नैतिक और मानवतावादी दर्शन के उच्च मानक स्थापित किए..."

"साइरस महान द्वारा मीडिया पर विजय प्राप्त करने तक, मेडियाई सम्राट अपने विजित क्षेत्रों पर आश्रित राजाओं और राज्यपालों के माध्यम से प्रांतों के रूप में शासन करते थे। अचमेनिद साम्राज्य की सफलता की एक प्रमुख वजह (अधिकांश स्थायी महान साम्राज्यों की तरह) विजित लोगों की संस्कृति और धर्म के प्रति उनका खुला दृष्टिकोण था, इसलिए विडंबना यह है कि फारसी संस्कृति ही सबसे अधिक प्रभावित हुई क्योंकि महान राजा ने अपनी सभी प्रजाओं के तत्वों को एक नई शाही शैली में समाहित करने का प्रयास किया।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

181

"... तेओतिहुआकन..."

ज़ेचरिया सिचिन और ग्राहम हैनकॉक सहित कई लेखकों ने इस बात को दोहराया है कि गीज़ा और तेओतिहुआकान के पिरामिडों में काफी समानताएं हैं। सूर्य का पिरामिड 225 मीटर चौड़ा और 65 मीटर ऊंचा है, जो मिट्टी की पांच क्रमिक परतों से बना है। इस पर चढ़ने के लिए 242 सीढ़ियां हैं। इसका लेआउट गीज़ा के खुफू के पिरामिड से काफी मिलता-जुलता है। चंद्रमा का पिरामिड आकार में काफी छोटा है: 42 मीटर ऊंचा और 150 मीटर चौड़ा, फिर भी इसका शिखर सूर्य के पिरामिड जितना ऊंचा है, क्योंकि यह स्थल के सबसे ऊंचे स्थान पर स्थित है।

277

यह विशेषता गीज़ा में भी देखी जा सकती है, जहाँ खुफू और खफ्रे के पिरामिड समान ऊँचाई तक पहुँचते हैं, भले ही एक दूसरे से लंबा हो।

सबसे स्पष्ट तुलना यह है कि गीज़ा के तीनों पिरामिड और तेओतिहुआकान की तीनों मुख्य संरचनाएँ ओरियन बेल्ट का प्रतिनिधित्व करती हैं। चंद्रमा का पिरामिड पठार के सबसे छोटे पिरामिड से, सूर्य का पिरामिड खफ्रे से और क्वेट्ज़लकोट्ल का मंदिर, जिसका आधार सबसे बड़ा है, लेकिन जिसे कभी पूर्ण पिरामिड के रूप में नहीं बनाया गया, खुफू के मंदिर से तुलना की जा सकती है।

हालांकि व्यक्तिगत भिन्नताएं हैं, मेरा सुझाव है कि समान तत्वों का उपयोग किया गया है, जो एक ही मूल अवधारणा को पूरा करते हैं: ओरियन बेल्ट का प्रतिनिधित्व करना, जो प्राचीन मिस्र में होरस का प्रतीक था (न कि ओसिरिस का जैसा कि एड्रियन गिल्बर्ट और रॉबर्ट बाउवल ने तर्क दिया है) और माया संस्कृति में सृष्टि की पौराणिक कथा का हिस्सा था। स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार, इस परिसर का निर्माण मनुष्यों को देवताओं में परिवर्तित करने के लिए किया गया था। निश्चित रूप से, एक "एलियन अंतरिक्ष स्टेशन" इसकी एक व्याख्या हो सकती है, लेकिन यह स्पष्ट है कि इसका उत्तर धर्म के क्षेत्र में ही निहित है।

लगभग 150 ईस्वी में, 17 मई को, प्लीएड्स नक्षत्र सूर्योदय से ठीक पहले, भोर के आकाश में उदय हुआ। प्लीएड्स के सूर्य उदय के रूप में जाना जाने वाला यह समकालिकण लगभग 100 वर्षों तक ही चला। अब यह माना जाता है कि यही घटना तेओतिहुआकान की उत्पत्ति का कारण थी। सूर्य और प्लीएड्स नक्षत्र धार्मिक अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सूर्य-प्लीएड्स के शिखर संयोजन को नव अग्नि समारोह के रूप में जाना जाता है। बर्नार्डिनो डी साहूगुन के एज़्टेक सूचनादाताओं ने बताया कि यह समारोह प्रत्येक 52 वर्षीय कैलेंडर चक्र के अंत में होता था। एज़्टेक और उनके पूर्वजों ने प्लीएड्स नक्षत्र का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया था, और जिस रात उनके शिखर से गुजरने की उम्मीद होती थी, ठीक आधी रात को, उसी समय समारोह संपन्न होता था।

संदर्भ: http://www.philipcoppens.com/orionimage.html

"...अल-हसन इब्न-अल-सब्बा..."
"कहानी यह है कि अल-हसन इब्न-अल-सब्बा ने हशीश का इस्तेमाल करके नौजवानों को अपनी निजी सेना में भर्ती किया, जिन्हें हत्यारे (अशिशिन - या हसन के अनुयायी) के रूप में जाना जाता था। इस जानकारी का एक प्रमुख स्रोत मार्को पोलो के लेख हैं, जिन्होंने अल-हसन के शासनकाल के लगभग 150 साल बाद, 1273 में इस क्षेत्र का दौरा किया था।"
इस जानकारी के लिए कई विरोधाभासी तथ्य और स्रोत मौजूद हैं।
11 वीं शताब्दी के आरंभ में, अल-हसन फारसी संप्रदाय इस्माइलियों का प्रमुख बन गया। यह एक अपेक्षाकृत अज्ञात कट्टरपंथी समूह था जिसने उसके मार्गदर्शन में स्थानीय शक्ति प्राप्त की। 1090 में, अल-हसन और उसके अनुयायियों ने कैस्पियन सागर के दक्षिण में स्थित पर्वतीय क्षेत्र में रुदबार प्रांत के आलमूत किले पर कब्जा कर लिया। इसी पर्वतीय निवास से उसने क्रूसेडरों के बीच "पहाड़ों के बूढ़े" के रूप में कुख्याति प्राप्त की और मुस्लिम जगत में आतंक फैलाया।
मार्को पोलो द्वारा "द एडवेंचर्स [या ट्रेवल्स] ऑफ मार्को पोलो" में दिए गए विवरण में बताया गया है कि "बूढ़ा आदमी अपने दरबार में बारह साल के उन लड़कों को रखता था जो उसे साहसी पुरुष बनने के लिए नियत प्रतीत होते थे। जब बूढ़ा आदमी उन्हें चार, दस या बीस के समूहों में बगीचे में भेजता था, तो वह उन्हें पीने के लिए हशीश देता था। वे तीन दिन तक सोते रहे, फिर उन्हें सोते हुए बगीचे में लाया जाता था जहाँ वह उन्हें जगाता था।"
278

जब ये युवक जागे और खुद को उस बगीचे में इन सभी अद्भुत चीजों के बीच पाया, तो उन्हें सचमुच लगा कि वे स्वर्ग में हैं। और ये युवतियाँ गीतों और शानदार मनोरंजनों में हमेशा उनके साथ थीं; उन्हें वह सब कुछ मिला जो उन्होंने माँगा, इसलिए वे अपनी इच्छा से उस बगीचे को कभी नहीं छोड़ते।

संदर्भ: http://www.alamut.com/subj/ideologies/alamut/etymolAss.html

183

"... नाइट्स टेम्प्लर..."

"ईसा मसीह और सुलेमान के मंदिर के गरीब साथी सैनिक, जिन्हें आमतौर पर नाइट्स टेम्प्लर के नाम से जाना जाता है, पश्चिमी ईसाई सैन्य संगठनों में सबसे प्रसिद्ध थे। यह संगठन मध्य युग में लगभग दो शताब्दियों तक अस्तित्व में रहा। इसकी स्थापना 1096 के प्रथम धर्मयुद्ध के बाद यरूशलेम की विजय के बाद वहाँ तीर्थयात्रा करने वाले कई यूरोपीय लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए की गई थी।"

लगभग सन् 1119 में, प्रथम धर्मयुद्ध के दो अनुभवी योद्धाओं, फ्रांसीसी शूरवीर ह्यूग्स डी पायेंस और उनके रिश्तेदार गॉडफ्रे डी सेंट-ओमर ने तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए एक मठवासी संघ की स्थापना का प्रस्ताव रखा। यरूशलेम के राजा बाल्डविन द्वितीय ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और उन्हें टेंपल माउंट पर, कब्ज़ा की गई अल-अक्सा मस्जिद में मुख्यालय के लिए जगह दी। टेंपल माउंट का अपना एक विशेष महत्व था, क्योंकि यह उस स्थान के ऊपर स्थित था जिसे सुलेमान के मंदिर के खंडहर माना जाता था। इसलिए धर्मयुद्धियों ने अल-अक्सा मस्जिद को सुलेमान का मंदिर कहा और इसी स्थान से इस संघ ने 'गरीब शूरवीर और सुलेमान का मंदिर' या 'टेम्पलर' शूरवीर नाम ग्रहण किया। लगभग नौ शूरवीरों वाले इस संघ के पास सीमित वित्तीय संसाधन थे और यह अपने अस्तित्व के लिए दान पर निर्भर था। उनका प्रतीक चिन्ह एक ही घोड़े पर सवार दो शूरवीरों का था, जो संघ की गरीबी को दर्शाता था।

टेम्पलर्स की दयनीय स्थिति अधिक समय तक नहीं रही। उन्हें बर्नार्ड ऑफ क्लेयरवॉक्स का शक्तिशाली समर्थन प्राप्त था, जो चर्च के एक प्रमुख व्यक्ति और संस्थापक शूरवीरों में से एक

के भतीजे थे। उन्होंने टेम्पलर्स के पक्ष में प्रभावशाली ढंग से बात की और लिखा, और 1129 में ट्रॉयस की परिषद में, चर्च द्वारा टेम्पलर्स को आधिकारिक रूप से मान्यता दे दी गई। इस औपचारिक स्वीकृति के साथ, टेम्पलर्स पूरे यूरोप में एक पसंदीदा दान संगठन बन गए, जिन्हें पवित्र भूमि में लड़ाई में मदद करने के इच्छुक परिवारों से धन, भूमि, व्यवसाय और कुलीन पुत्र प्राप्त हुए। एक और बड़ा लाभ 1139 में मिला, जब पोप इनोसेंट द्वितीय के पोप के आदेश 'ओम्ने डेटम ऑप्टिमम' ने टेम्पलर्स को स्थानीय कानूनों के पालन से मुक्त कर दिया। इस आदेश का अर्थ था कि टेम्पलर्स सभी सीमाओं से स्वतंत्र रूप से गुजर सकते थे, उन्हें कोई कर नहीं देना पड़ता था, और पोप को छोड़कर सभी अधिकार उनके अधीन थे।

अपने स्पष्ट उद्देश्य और प्रचुर संसाधनों के बल पर, टेम्प्लर्स संगठन का तेजी से विस्तार हुआ। धर्मयुद्धों की प्रमुख लड़ाइयों में टेम्प्लर्स अक्सर अग्रिम पंक्ति में होते थे, क्योंकि भारी हथियारों से लैस उनके योद्धा अपने घोड़ों पर सवार होकर दुश्मन की ओर पूरी गति से दौड़ते थे और उनकी रक्षा पंक्ति को तोड़ने का प्रयास करते थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध विजयों में से एक 1177 में मोंटगिसार्ड की लड़ाई में हुई थी, जहाँ लगभग 500 टेम्प्लर योद्धाओं ने सलादीन की 26,000 से अधिक सैनिकों की सेना को पराजित करने में मदद की थी।

हालाँकि इस संगठन का प्राथमिक मिशन सैन्य था, फिर भी इसके अपेक्षाकृत कम सदस्य लड़ाकू थे। बाकी सदस्य शूरवीरों की सहायता करने और वित्तीय ढांचे का प्रबंधन करने के लिए सहायक पदों पर कार्यरत थे। हालाँकि इसके सदस्यों ने व्यक्तिगत गरीबी की शपथ ली थी, फिर भी टेम्प्लर संगठन को प्रत्यक्ष दान से परे धन पर नियंत्रण दिया गया था। धर्मयुद्ध में भाग लेने के इच्छुक एक कुलीन व्यक्ति अपनी अनुपस्थिति के दौरान अपनी सभी संपत्तियों को टेम्प्लर प्रबंधन के अधीन रख सकता था। इस प्रकार पूरे यूरोप और आउट्रेमर में धन संचित करते हुए, संगठन ने 1150 में पवित्र भूमि की यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए साख पत्र जारी करना शुरू किया: तीर्थयात्री यात्रा शुरू करने से पहले अपनी कीमती वस्तुएं स्थानीय टेम्प्लर प्रीसेप्टरी में जमा करते थे, और उन्हें एक एन्क्रिप्टेड दस्तावेज़ प्राप्त होता था जो यह दर्शाता था कि

उन्होंने अपनी जमा राशि का विवरण तैयार किया और पवित्र भूमि पहुँचने पर उसी दस्तावेज़ का उपयोग करके अपनी धनराशि वापस ले ली। यह अभिनव व्यवस्था संभवतः चेक के उपयोग को समर्थन देने वाली पहली औपचारिक प्रणाली थी; इसने तीर्थयात्रियों को चोरों के लिए कम आकर्षक लक्ष्य बनाकर उनकी सुरक्षा में सुधार किया और टेम्प्लर कोष में भी योगदान दिया।

दान और व्यापारिक सौदों के इस मिश्रण के आधार पर, टेम्प्लर ने पूरे ईसाई जगत में वित्तीय नेटवर्क स्थापित किए। उन्होंने यूरोप और मध्य पूर्व दोनों में बड़े-बड़े भूभाग हासिल किए; उन्होंने खेत और अंगूर के बाग खरीदे और उनका प्रबंधन किया; उन्होंने चर्च और महल बनवाए; वे विनिर्माण, आयात और निर्यात में शामिल थे; उनके पास जहाजों का अपना बेड़ा था; और एक समय तो वे साइप्रस द्वीप के पूर्ण स्वामित्व में भी थे। टेम्प्लर को यकीनन दुनिया की पहली बहुराष्ट्रीय निगम कहा जा सकता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

184

"फ्रांस के राजा फिलिप चतुर्थ, जो संगठन के भारी ऋणी थे, ने नाइट्स टेम्प्लर को भंग कर दिया था।"

"राजा फिलिप अंग्रेजों के साथ युद्ध के कारण पहले से ही टेम्प्लर्स के भारी कर्ज में डूबे हुए थे और उन्होंने अफवाहों का फायदा उठाकर खुद को कर्ज से मुक्त करने का फैसला किया। उन्होंने चर्च पर टेम्प्लर्स के खिलाफ कार्रवाई करने का दबाव डालना शुरू कर दिया, ताकि वे अपने कर्ज से मुक्त हो सकें।"

शुक्रवार, 13 अक्टूबर, 1307 (यह तिथि शुक्रवार 13 तारीख के अंधविश्वास की उत्पत्ति से जुड़ी है) को, फिलिप ने डी मोले और कई अन्य फ्रांसीसी टेम्प्लर्स को एक साथ गिरफ्तार करने का आदेश दिया। टेम्प्लर्स पर कई धर्मविरोधी आरोप लगाए गए और उनसे ईशनिंदा के झूठे बयान निकलवाने के लिए उन्हें यातनाएं दी गईं। दबाव में लिए गए इन बयानों ने पेरिस में एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया। फिलिप के और अधिक दबाव के बाद, पोप क्लेमेंट ने 22 नवंबर, 1307 को पास्टोरलिस प्रेमिनेंटिया नामक आदेश जारी किया, जिसमें यूरोप के सभी

ईसाई सम्राटों को सभी टेम्प्लर्स को गिरफ्तार करने और उनकी संपत्ति जब्त करने का निर्देश दिया गया था।
पोप क्लेमेंट ने टेम्प्लर्स के अपराध या निर्दोषता का निर्धारण करने के लिए पोप स्तरीय सुनवाई का आह्वान किया, और पूछताछकर्ताओं की यातनाओं से मुक्त होने के बाद, कई टेम्प्लर्स ने अपने इकबालिया बयान वापस ले लिए। कुछ के पास मुकदमों में अपना बचाव करने के लिए पर्याप्त कानूनी अनुभव था, लेकिन 1310 में फिलिप ने इस प्रयास को विफल कर दिया, और पहले जबरन लिए गए इकबालिया बयानों का उपयोग करके पेरिस में दर्जनों टेम्प्लर्स को दांव पर जला दिया।
संगठन के अंतिम नेता के चले जाने के बाद, यूरोप भर में बचे हुए टेम्प्लर्स को या तो पोप की जांच के तहत गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया गया (जिनमें से लगभग किसी को भी दोषी नहीं ठहराया गया), या नाइट्स हॉस्पिटेलर जैसे अन्य सैन्य संगठनों में शामिल कर लिया गया, या उन्हें पेंशन देकर शांतिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने की अनुमति दी गई। कुछ लोग पोप के नियंत्रण से बाहर के अन्य क्षेत्रों में भाग गए होंगे, जैसे कि बहिष्कृत स्कॉटलैंड या स्विट्जरलैंड।
ऐसा अनुमान है कि अपने चरम पर इस संगठन में 15,000 से 20,000 टेम्प्लर थे, जिनमें से लगभग दसवां हिस्सा वास्तविक शूरवीर थे।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
185
टेम्पलर्स स्विट्जरलैंड भाग गए जहाँ उन्होंने एक अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग प्रणाली की स्थापना की...
280

"स्विट्जरलैंड में बैंकिंग स्थिरता, गोपनीयता और ग्राहकों की संपत्ति और जानकारी की सुरक्षा की विशेषता रखती है। देश में बैंक गोपनीयता की परंपरा मध्य युग से चली आ रही है।"
सीआईए वर्ल्ड फैक्टबुक के अनुसार, स्विट्जरलैंड "एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केंद्र है जो मनी लॉन्ड्रिंग के स्तरीकरण और एकीकरण चरणों के प्रति संवेदनशील है; महत्वपूर्ण कानून और रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के बावजूद, गोपनीयता के नियम बने हुए हैं और गैर-निवासियों को ऑफशोर संस्थाओं और विभिन्न मध्यस्थों के माध्यम से व्यापार करने की अनुमति है..."
1998 में, इतिहासकारों के एक अंतरराष्ट्रीय पैनल ने एक अध्ययन जारी किया जिसमें दावा किया गया कि होलोकॉस्ट पीड़ितों और साथ ही जीते गए देशों के खजानों से बड़ी मात्रा में सोना चुराया गया था और स्विस नेशनल बैंक में जमा किया गया था। पैनल ने पाया कि चोरी और सोने के अवैध अधिग्रहण के सबूतों के बावजूद, एसएनबी ने जमा स्वीकार करना जारी रखा। 2000 में, संयुक्त राज्य अमेरिका के एक जिला न्यायालय के न्यायाधीश ने कई स्विस बैंकों और होलोकॉस्ट पीड़ितों के बीच 1.85 बिलियन अमेरिकी डॉलर के समझौते को मंजूरी दी।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
186
"पुराने साम्राज्य" के कार्यकर्ताओं का प्राथमिक प्रभाव अंतरराष्ट्रीय बैंकरों पर पड़ता है...
संपादक की टिप्पणी: इस प्रकार की गतिविधि का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण "बिल्डरबर्ग सम्मेलन" है। विकिपीडिया डॉट ओआरजी से इस संगठन के बारे में निम्नलिखित संदर्भ देखें:
"बिल्डरबर्ग समूह या बिल्डरबर्ग सम्मेलन लगभग 130 मेहमानों का एक अनौपचारिक वार्षिक सम्मेलन है, जिसमें केवल आमंत्रण पर ही भाग लिया जा सकता है, जिनमें से अधिकांश व्यापार, मीडिया और राजनीति के क्षेत्रों में प्रभावशाली व्यक्ति होते हैं।"
यह विशिष्ट समूह विश्व भर के आलीशान होटलों या रिसॉर्ट्स में वार्षिक रूप से मिलता है — आमतौर पर यूरोप में — और हर चार साल में एक बार संयुक्त राज्य अमेरिका या कनाडा में। इसका कार्यालय नीदरलैंड के दक्षिणी हॉलैंड के लीडेन में स्थित है। 2007 का सम्मेलन 31 मई से 3 जून तक तुर्की के इस्तांबुल स्थित रिट्ज़-कार्लटन होटल में आयोजित हुआ था।

बिल्डरबर्ग सम्मेलन में भाग लेने वालों में केंद्रीय बैंकर, रक्षा विशेषज्ञ, जनसंचार माध्यमों के दिग्गज, सरकारी मंत्री, प्रधान मंत्री, शाही परिवार के सदस्य, अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषक और यूरोप और उत्तरी अमेरिका के राजनीतिक नेता शामिल हैं।
पश्चिमी दुनिया के कुछ प्रमुख वित्तपोषक और विदेश नीति रणनीतिकार बिल्डरबर्ग में शामिल होते हैं। डोनाल्ड रम्सफेल्ड बिल्डरबर्ग के सक्रिय सदस्य हैं, साथ ही आयरलैंड के पीटर सदरलैंड भी, जो यूरोपीय संघ के पूर्व आयुक्त और गोल्डमैन सैक्स और ब्रिटिश पेट्रोलियम के अध्यक्ष रह चुके हैं। रम्सफेल्ड और सदरलैंड ने 2000 में स्वीडिश/स्विस इंजीनियरिंग कंपनी एबीबी के बोर्ड में एक साथ काम किया था। अमेरिका के पूर्व उप रक्षा सचिव और विश्व बैंक के पूर्व प्रमुख पॉल वुल्फोविट्ज़ भी इसके सदस्य हैं। समूह के वर्तमान अध्यक्ष बेल्जियम के व्यवसायी और राजनीतिज्ञ एटियेन डेविग्नन हैं।
आलोचकों का कहना है कि बिल्डरबर्ग समूह लोकतंत्र की कीमत पर उन राजनेताओं के करियर को बढ़ावा देता है जिनके विचार बहुराष्ट्रीय निगमों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। समूह की गोपनीयता और सत्ताधारी अभिजात वर्ग से इसके संबंधों ने उन कई लोगों को बल दिया है जो मानते हैं कि समूह एक नई विश्व व्यवस्था बनाने की साजिश का हिस्सा है।

रेडियो होस्ट एलेक्स जोन्स इस सिद्धांत को बढ़ावा देते हैं कि समूह भंग करने का इरादा रखता है।
अमेरिका और अन्य देशों की संप्रभुता को यूरोपीय संघ जैसी एक अंतरराष्ट्रीय संरचना में समाहित करने का प्रयास किया जा रहा है। मैड्रिड स्थित लेखक डैनियल एस्टुलिन का दावा है कि बिल्डरबर्ग का दीर्घकालिक उद्देश्य "एक विश्व साम्राज्य का निर्माण" करना है। उनका कहना है कि यह समूह "भविष्य की एक विश्व सरकार का लक्ष्य नहीं, बल्कि एक साधन है"। समूह के एक अन्य विरोधी, टोनी गोस्लिंग ने Bilderberg.org डोमेन नाम पंजीकृत कराया है, जिस पर मुख्य रूप से बिल्डरबर्ग की आलोचना करने वाली सामग्री उपलब्ध है।
बीबीसी न्यूज ऑनलाइन मैगजीन में लिखते हुए रिपोर्टर जोनाथन डफी कहते हैं, "इस तरह की दूरी से पैदा हुए शून्य में, समूह के इर्द-गिर्द एक असाधारण षड्यंत्र सिद्धांत पनपा है जो आरोप लगाता है कि दुनिया का भाग्य काफी हद तक बिल्डरबर्ग द्वारा तय किया जाता है।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
187
"पुराने साम्राज्य" के कार्यकर्ताओं का अंतरराष्ट्रीय बैंकरों पर प्राथमिक प्रभाव एक अदृश्य, गैर-लड़ाकू उकसाने वाले के रूप में कार्य करना है जो गुप्त रूप से हथियारों और युद्ध को बढ़ावा देता है और वित्तपोषण करता है..."
(संपादक का नोट: इस गतिविधि का एक उत्कृष्ट आधुनिक उदाहरण द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजियों को वित्तपोषण करने के मामले में दर्ज किया गया है, जिसे राष्ट्रपति जॉर्ज बुश और उनके बेटे, राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश के पूर्वज (यूनियन बैंकिंग कॉर्प के निदेशक प्रेस्कॉट बुश) ने अंजाम दिया था।)
"20 अक्टूबर, 1942 को, अमेरिकी सरकार ने न्यूयॉर्क शहर में नाज़ी जर्मन बैंकिंग संचालन को जब्त करने का आदेश दिया, जिसका संचालन पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज हर्बर्ट वॉकर बुश के पिता प्रेस्कॉट बुश द्वारा किया जा रहा था।"
हैरिमन बैंक कई जर्मन कंपनियों और फ्रिट्ज थिसेन के विभिन्न अमेरिकी वित्तीय हितों के लिए वॉल स्ट्रीट का मुख्य संपर्क था। थिसेन 1938 तक नाज़ी पार्टी के शुरुआती वित्तीय समर्थकों में

से एक थे, लेकिन 1939 तक वे जर्मनी से भाग गए थे और हिटलर की कड़ी निंदा कर रहे थे। बाद में शासन के विरोध के कारण नाज़ियों ने उन्हें जेल में डाल दिया।
11 दिसंबर, 1941 को जब हिटलर ने संयुक्त राज्य अमेरिका पर युद्ध की घोषणा की, तब जर्मनी के साथ लेन-देन अवैध नहीं था, लेकिन पर्ल हार्बर पर हमले के छह दिन बाद, राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डेलानो रूजवेल्ट ने 'दुश्मन के साथ व्यापार अधिनियम' पर हस्ताक्षर किए, क्योंकि यह सार्वजनिक हो गया था कि अमेरिकी कंपनियां संयुक्त राज्य अमेरिका के घोषित दुश्मन के साथ व्यापार कर रही थीं।
20 अक्टूबर, 1942 को अमेरिकी सरकार ने न्यूयॉर्क शहर में जर्मन बैंकिंग संचालन को जब्त करने का आदेश दिया। रूजवेल्ट के विदेशी संपत्ति संरक्षक, लियो टी. क्रॉली ने शत्रुतापूर्ण व्यापार अधिनियम के तहत बुश की संपत्ति को जब्त करने के लिए आदेश संख्या 248 पर हस्ताक्षर किए। आदेश में केवल यूनियन बैंकिंग कॉर्पोरेशन (यूबीसी) का उल्लेख किया गया था, जिसके बुश निदेशक थे और उनके पास एक शेयर था, जिसका थिसेन के स्वामित्व वाले एक डच बैंक से संबंध था।
फॉक्स न्यूज ने रिपोर्ट किया है कि हाल ही में सार्वजनिक किए गए दस्तावेजों से पता चलता है कि डच बैंक के स्वामित्व वाले यूनियन बैंकिंग के 4,000 शेयर सात अमेरिकी निदेशकों के नाम पर पंजीकृत थे। यह जानकारी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान स्थापित विदेशी संपत्ति संरक्षक कार्यालय के जांच और अनुसंधान विभाग के प्रमुख होमर जोन्स द्वारा हस्ताक्षरित एक दस्तावेज़ में दी गई है। 1941 तक थिसेन का अपने बैंकिंग साम्राज्य पर नियंत्रण समाप्त हो चुका था, जो नाज़ी सरकार के हाथों में था।

•

•

ई. रोलैंड हैरिमन - 3991 शेयर (प्रेस्कॉट बुश द्वारा प्रबंधित और मतदान नियंत्रण के अधीन)
कॉर्नेलिस लिवेन्से – 4 शेयर (वह नाज़ी पार्टी के न्यूयॉर्क स्थित बैंकर थे)

•
• •
•
•
हैरोल्ड डी. पेनिंगटन – 1 शेयर (ब्राउन ब्रदर्स हैरिमन में प्रेस्कॉट बुश द्वारा नियोजित)
रे मॉरिस - 1 शेयर (बुश और हैरिमन परिवारों के एक व्यावसायिक भागीदार) प्रेस्कॉट एस. बुश - 1 शेयर (यूबीसी के निदेशक, जिसकी सह-स्थापना और प्रायोजन उनके ससुर जॉर्ज वॉकर ने किया था; ई. रोलैंड हैरिमन और एवेरेल हैरिमन के वरिष्ठ प्रबंध भागीदार)
एच.जे. कौवेनहोवेन - 1 शेयर (वॉन थिसेन के लिए यूबीसी का आयोजन किया, नाज़ी कब्जे वाले नीदरलैंड में यूबीसी का प्रबंधन किया)
जोहान जी. ग्रोएनिंगर – 1 शेयर (जर्मन औद्योगिक कार्यकारी, नाज़ी पार्टी के एक महत्वपूर्ण सदस्य)
ई. रोलैंड हैरिमन और प्रेस्कॉट बुश दोनों ही स्कल एंड बोन्स के सदस्य होने के साथ-साथ ब्राउन ब्रदर्स हैरिमन एंड कंपनी के बोर्ड के सदस्य भी थे।
अक्टूबर और नवंबर 1942 में अधिनियम के तहत जब्त किए गए हैरिमन के व्यावसायिक हितों में निम्नलिखित शामिल थे:
•
• • •
यूनियन बैंकिंग कॉर्पोरेशन (यूबीसी) (थिसन और ब्राउन ब्रदर्स हैरिमन के लिए)। उस समय यूबीसी के अध्यक्ष जॉर्ज हर्बर्ट वॉकर थे, जो बुश के ससुर थे। डच-अमेरिकन ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन (हैरिमन के साथ)
सीमलेस स्टील इक्विपमेंट कॉर्पोरेशन (हैरिमैन के साथ)
सिलेसियन-अमेरिकन कॉर्पोरेशन (इस कंपनी का कुछ हिस्सा एक जर्मन इकाई के स्वामित्व में था; युद्ध के दौरान जर्मनों ने सिलेसियन-अमेरिकन पर पूर्ण नियंत्रण करने की कोशिश की।

इसके जवाब में, अमेरिकी सरकार ने कंपनी में जर्मन स्वामित्व वाले अल्पसंख्यक शेयरों को जब्त कर लिया, जिससे अमेरिकी साझेदारों को व्यवसाय जारी रखने की जिम्मेदारी मिली।) युद्ध की अवधि के दौरान संपत्ति सरकार के पास रही, और युद्ध समाप्त होने के बाद उसे वापस कर दिया गया। यूबीसी को 1951 में भंग कर दिया गया था। बुश यूबीसी के निदेशक मंडल में थे और कंपनी में उनका एक शेयर था। इसके बदले उन्हें 1,500,000 डॉलर का भुगतान किया गया (उस समय यह बहुत बड़ी रकम थी - लेकिन इस दावे का समर्थन करने वाला कोई दस्तावेजी प्रमाण नहीं है)। बाद में इन कथित संपत्तियों का उपयोग बुश परिवार द्वारा टेक्सास के ऊर्जा उद्योग में निवेश शुरू करने के लिए किया गया।

टोबी रोजर्स ने दावा किया है कि सिलेसियाई व्यवसायों (थिसन और फ्लिक के साथ) से बुश के संबंध उन्हें नाजी-कब्जे वाले पोलैंड में खनन कार्यों में संलिप्त बनाते हैं, जिसमें ओस्विसीम से दास श्रम का उपयोग किया गया था, जहां बाद में ऑशविट्ज़ एकाग्रता शिविर का निर्माण किया गया था।

न्यूयॉर्क हेराल्ड-ट्रिब्यून ने थिसेन को "हिटलर का फ़रिश्ता" बताया और बुश का ज़िक्र थिसेन द्वारा अमेरिका में इस्तेमाल की जाने वाली निवेश बैंकिंग फर्म के कर्मचारी के रूप में किया। राष्ट्रीय अभिलेखागार में मौजूद कुछ रिकॉर्ड, जिनमें हैरिमन के दस्तावेज़ भी शामिल हैं, ब्राउन ब्रदर्स हैरिमन और थिसेन तथा उनके कुछ जर्मन निवेशों के बीच 1951 में उनकी मृत्यु तक चले निरंतर संबंधों को दर्शाते हैं। जांचकर्ता जॉन लॉफ़्टस ने कहा है, "एक पूर्व संघीय अभियोजक के रूप में, मैं प्रेस्कॉट बुश, उनके ससुर (जॉर्ज वॉकर) और एवेरेल हैरिमन पर दुश्मन को सहायता और समर्थन देने के लिए मुकदमा चलाने का पक्षधर हूं। वे इन कंपनियों के बोर्ड में यह जानते हुए भी बने रहे कि इनसे जर्मनी को वित्तीय लाभ मिल रहा है।"

पोलैंड के दो पूर्व गुलाम मजदूरों ने लंदन में अमेरिकी सरकार और प्रेस्कॉट बुश के वारिसों के खिलाफ 40 अरब डॉलर का मुकदमा दायर किया है। राज्य संप्रभुता के सिद्धांत के आधार पर 2001 में अमेरिका में दायर एक सामूहिक मुकदमे को खारिज कर दिया गया था।

प्रेस्कॉट बुश का "मर्चेंट्स ऑफ डेथ" उद्योग से संबंध उनके पिता सैमुअल पी. बुश के माध्यम से आया, जो बकी स्टील कास्टिंग्स कंपनी में काम करते थे, जो रेलवे उद्योग के लिए रेलवे पुर्जे और रेमिंगटन आर्म्स के लिए बंदूकों के बैरल और गोलियों के खोल बनाती थी।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

कई ऐसी सुस्थापित पुस्तकें भी मौजूद हैं जो स्विस बैंकों और नाज़ी युद्ध मशीन के बीच संबंधों का विस्तृत वर्णन करती हैं:

जर्मनी और द्वितीय विश्व युद्ध: खंड VI: वैश्विक युद्ध (हॉर्स्ट बूग, वर्नर रहन और रेनहार्ड स्टम्पफ द्वारा लिखित जर्मनी और द्वितीय विश्व युद्ध)

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में नाज़ी शासन को वित्तपोषण देने में स्विस बैंकों और सरकार की मिलीभगत का खुलासा हो चुका था। अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित वेबसाइट देखें:

http://www.religioustolerance.org/holo_apol.htm

"द सीक्रेट वॉर अगेंस्ट द ज्यूज, अनहोली ट्रिनिटी" (मार्क आरोन्स, जॉन लॉफ्टस द्वारा) द्वितीय विश्व युद्ध की सबसे भयावह कहानियों में से एक को बयां करती है। युद्ध समाप्त होने के बाद, सोवियत संघ के बढ़ते प्रभाव के डर से, पोप ने ब्रिटिश और अमेरिकी खुफिया एजेंटों के साथ जासूसी गठबंधन किया। न्याय को शीत युद्ध की उभरती विचारधारा के अधीन करते हुए, इन तीनों शक्तियों ने नाज़ी अपराधियों को यूरोप से बाहर निकाला ताकि उन्हें साम्यवाद के खिलाफ कथित रूप से बड़े संघर्ष में इस्तेमाल किया जा सके। वैटिका के नाज़ी तस्करी नेटवर्क में प्रिंस एंटोन तुर्कुल, एक महान सोवियत डबल एजेंट, ने सेंध लगाई, जिसने क्रेमलिन में अपने आकाओं के लिए इन ऑपरेशनों को एक जाल में बदल दिया। "अनहोली ट्रिनिटी" पहली बार तुर्कुल के "रेड नाज़ी" ऑपरेशन का पर्दाफाश करती है और दिखाती है कि कैसे कुख्यात ब्रिटिश-सोवियत डबल एजेंट किम फिलबी और उसके नेटवर्क को तुर्कुल के वैटिकन ऑपरेशन को बचाने के लिए लगभग बलिदान कर दिया गया था। 1991 में प्रकाशित यह पुस्तक, नाज़ी अपराधियों को उनके अपराधों के लिए सजा से बचने में वैटिकन की भूमिका की पड़ताल करती है और पहली बार कई रहस्यों का खुलासा करती है। वेटिकन और स्विस बैंकों के नाज़ी सोने से संबंध और नाज़ी जर्मनी में पश्चिमी निवेशकों के गुप्त संबंधों

का दस्तावेजीकरण किया गया है। 1991 से, स्विस बैंकों की भूमिका के बारे में हुए प्रमुख खुलासों ने 'अनहोली ट्रिनिटी' के नाज़ियों के चुराए गए खजानों के गुप्त हस्तांतरण के खुलासे की पुष्टि की है। इस संस्करण के लिए एरॉन्स और लॉफ्टस द्वारा लिखित नए परिचय और अंतिम अध्यायों ने पुस्तक को पूरी तरह से अद्यतन कर दिया है और दिखाया है कि कैसे मीडिया ने स्विस-बैंक कहानी में वेटिकन के महत्वपूर्ण संबंध को नज़रअंदाज़ किया है। अन्य बातों के अलावा, लेखकों ने यह प्रदर्शित किया है कि अमेरिकी और ब्रिटिश कोड-ब्रेकर 1941 की शुरुआत में ही होलोकॉस्ट से पूरी तरह अवगत थे, लेकिन उन्होंने पश्चिमी प्रेस से झूठ बोला; कि कोड-ब्रेकरों ने स्विस बैंकों में जासूसी उपकरण लगाए और फिर अमेरिकी खुफिया प्रमुख एलन डुलेस की रक्षा के लिए नाज़ी सोने के हस्तांतरण के रहस्यों को छिपा दिया; और यह कि ऑस्ट्रेलियाई, ब्रिटिश और कनाडाई सरकारें अभी भी अपने नागरिकों को उनके बीच रहने वाले नाज़ी युद्ध अपराधियों के बारे में अनभिज्ञ रखने के लिए अभियान चला रही हैं। इन सभी विषयों और कई अन्य विषयों को शामिल करते हुए, 'अनहोली ट्रिनिटी' गहन रूप से महत्वपूर्ण घटनाओं की एक श्रृंखला का निश्चित इतिहास है। होली सी, एलन डुलेस, स्विस बैंकों और थर्ड रीच के अवशेषों से जुड़े परेशान करने वाले कवर-अप।"

-- संदर्भ:

http://books.google.com/books?

id=HXxew8zc1GQC&vq=secret+war+funding,+Swiss+Banks

&source=gbs_summary_s&cad=0

ओटो नाथन (1893-1987) एक अर्थशास्त्री थे जिन्होंने प्रिंसटन विश्वविद्यालय (1933-35), न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय (1935-42), वासर कॉलेज (1942-44) और हॉवर्ड विश्वविद्यालय (1946-52) में पढ़ाया। डॉ. नाथन कई वर्षों तक अल्बर्ट आइंस्टीन के घनिष्ठ मित्र थे और आइंस्टीन ने उन्हें हेलेन ड्यूकास के साथ अपनी साहित्यिक संपत्ति का सह-ट्रस्टी नियुक्त किया था। ओटो नाथन ने निम्नलिखित पुस्तकें लिखीं जिनमें द्वितीय विश्व युद्ध में स्विस बैंकों की भागीदारी का विस्तृत वर्णन है:

नाज़ी युद्ध वित्त और बैंकिंग: युद्ध में हमारी अर्थव्यवस्था। कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स: राष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान ब्यूरो, 1944। पेपरबैक: ASIN B000J0VXBG।
नाज़ी आर्थिक प्रणाली: जर्मनी का युद्ध के लिए लामबंदी। न्यूयॉर्क: रसेल एंड रसेल, 1971। हार्डकवर पाठ्यपुस्तक: ISBN 0-846-21501-2, ISBN 978-0-84621-501-1
-- संदर्भ: Wikipedia.org
188
"...रक्तस्राव..."
रक्तमोक्षण सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों में से एक है, जिसका अभ्यास मेसोपोटामियाई, मिस्रवासी, यूनानी, माया और एज़्टेक सहित विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं में किया जाता रहा है। ग्रीस में, हिप्पोक्रेट्स के समय के आसपास रक्तमोक्षण का प्रचलन था, जिन्होंने रक्तमोक्षण का उल्लेख तो किया है, लेकिन सामान्यतः आहार संबंधी तकनीकों पर ही निर्भर रहते थे। हालांकि, एरासिस्ट्रेटस ने यह सिद्धांत दिया कि कई रोग रक्त में अधिकता या अतिभार के कारण होते हैं, और उन्होंने सलाह दी कि इन अधिकताओं का उपचार प्रारंभ में व्यायाम, पसीना बहाने, भोजन का सेवन कम करने और उल्टी करने के माध्यम से किया जाना चाहिए। हेरोफिलस ने रक्तमोक्षण का समर्थन किया। रोम में अभ्यास करने वाले पहले यूनानी चिकित्सकों में से एक, आर्कागाथस ने व्यापक रूप से रक्तमोक्षण का अभ्यास किया और एक बेहद खूनी चिकित्सक के रूप में ख्याति प्राप्त की।
ग्रीस में रक्तपात की लोकप्रियता गैलेन के विचारों से और भी मजबूत हुई, जब उन्होंने पाया कि नसें और धमनियां हवा से नहीं बल्कि रक्त से भरी होती हैं, जैसा कि उस समय आम तौर पर माना जाता था। उनके रक्तपात की प्रणाली में दो प्रमुख अवधारणाएं थीं। पहली यह थी कि रक्त बनता है और फिर उपयोग हो जाता है, यह शरीर में संचारित नहीं होता और इसलिए शरीर में 'स्थिर' रह सकता है।
शरीर के अंगों के बीच संतुलन बनाए रखना ही बीमारी या स्वास्थ्य का आधार था। चार रस थे रक्त, कफ, काला पित्त और पीला पित्त, जो वायु, जल, पृथ्वी और अग्नि, इन चार ग्रीक शास्त्रीय तत्वों से संबंधित थे। गैलेन का मानना था कि रक्त प्रमुख रस है और इसे नियंत्रित करना सबसे

अधिक आवश्यक है। रसों को संतुलित करने के लिए, चिकित्सक या तो रोगी के शरीर से अतिरिक्त रक्त (प्लेथोरा) निकाल देते थे या उल्टी कराने के लिए उल्टी लाने वाली दवा या पेशाब कराने के लिए मूत्रवर्धक दवा देते थे।
खून निकालना खासकर नवयुवत अमेरिकी राज्य में बहुत प्रचलित था, जहाँ बेंजामिन रश (स्वतंत्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर करने वालों में से एक) धमनियों की स्थिति को बीमारी का मुख्य कारण मानते थे और उस समय के हिसाब से भी बहुत अधिक मात्रा में खून निकालने की सलाह देते थे। घुड़सवारी दुर्घटना के बाद जॉर्ज वाशिंगटन का भी इसी तरह इलाज किया गया था: लगभग 4 पाउंड (1.7 लीटर) खून निकाला गया था, जिसके कारण 1799 में गले में संक्रमण से उनकी मृत्यु हो गई।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
189
"...प्राचीन वैदिक भजनों में आपको 'विकास' का उल्लेख मिलेगा..."
वेद अत्यंत विस्तृत ग्रंथ हैं। प्रत्येक वेद में कई खंड और हजारों श्लोक हैं। कुछ वैदिक श्लोक, विशेष रूप से ऋग्वेद के श्लोक, कम से कम 6000-8000 वर्ष पुराने माने जाते हैं।
वेदों को ईश्वरीय वाणी माना जाता है, क्योंकि इन्हें दिव्य उत्पत्ति का माना जाता है। चूंकि इन्हें किसी मनुष्य द्वारा नहीं लिखा गया था, बल्कि गहन ध्यान अवस्था में ही सुना गया था, इसलिए इन्हें आमतौर पर श्रुतियाँ या सुनी हुई रचनाएँ कहा जाता है।
संदर्भ: http://www.hinduwebsite.com/vedicsection/vedicymns.asp
285

वेद (संस्कृत में véda वद े "ज्ञान") प्राचीन भारत में उत्पन्न ग्रंथों का एक विशाल संग्रह है। ये संस्कृत साहित्य की सबसे प्राचीन परत और हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन पवित्र ग्रंथ हैं। हिंदू परंपरा के अनुसार, वेद "मानव निर्मित नहीं" हैं, बल्कि प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हुए माने जाते हैं, इसलिए इन्हें श्रुति ("जो सुना गया हो") कहा जाता है। हिंदू प्रार्थनाओं, धार्मिक अनुष्ठानों और अन्य शुभ अवसरों पर वैदिक मंत्रों का पाठ किया जाता है।

भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित दर्शनों और संप्रदायों ने वेदों पर भिन्न-भिन्न मत रखे हैं। भारतीय दर्शन के वे स्कूल जो वेदों को अपना शास्त्रोक्त मानते हैं, उन्हें "आस्तिक" (रूढ़िवादी) कहा जाता है। अन्य परंपराएँ, विशेष रूप से बौद्ध धर्म और जैन धर्म, यद्यपि वे (वेदांत की तरह) मोक्ष से संबंधित हैं, वेदों को दैवीय विधान नहीं बल्कि उच्च आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्र की मानवीय व्याख्याएँ मानते हैं, इसलिए उन्हें पवित्र नहीं मानते।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

190

"...वह आईएस-बीई जिसने एक अंधेरी और तूफानी रात में एक काल्पनिक कहानी लिखी..."

फ्रेंकस्टीन: या, द मॉडर्न प्रोमेथियस ब्रिटिश लेखिका मैरी शेली द्वारा लिखित एक उपन्यास है। शेली ने यह उपन्यास 18 वर्ष की आयु में लिखा था। इसका पहला संस्करण 1818 में लंदन में गुमनाम रूप से प्रकाशित हुआ था। 1831 में प्रकाशित संशोधित तीसरे संस्करण में शेली का नाम अंकित है। उपन्यास का शीर्षक विक्टर फ्रेंकस्टीन नामक एक वैज्ञानिक को संदर्भित करता है, जो जीवन का सृजन करना सीखता है और मनुष्य के समान एक प्राणी का निर्माण करता है, जो औसत से बड़ा और अधिक शक्तिशाली होता है।

इस कहानी का साहित्य और लोकप्रिय संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है और इसने डरावनी कहानियों और फिल्मों की एक पूरी विधा को जन्म दिया है। इसे संभवतः पहला पूर्ण विकसित विज्ञान कथा उपन्यास माना जाता है। यह उपन्यास कई ऐसे मुद्दों को उठाता है जिन्हें आज के समाज से जोड़ा जा सकता है।

सन् 1816 की बरसाती गर्मियों के दौरान, जिसे "बिना गर्मी का वर्ष" कहा जाता है, दुनिया 1815 में माउंट टैम्बोरा के विस्फोट के कारण आई एक लंबी, ठंडी, ज्वालामुखी शीत ऋतु की

चपेट में थी। 19 वर्षीय मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट गॉडविन और उनके प्रेमी (और बाद में पति) पर्सी बिशे शेली, स्विट्जरलैंड में जिनेवा झील के किनारे स्थित विला डियोडाटी में लॉर्ड बायरन से मिलने गए। उस गर्मी में मौसम लगातार इतना ठंडा और उदास था कि वे अपनी योजनाबद्ध बाहरी गतिविधियों का आनंद नहीं ले सके, इसलिए समूह सुबह होने तक घर के अंदर ही रहा और विज्ञान और अलौकिक विषयों पर चर्चा करता रहा। जर्मन भूत कहानियों के संकलन, फैंटासमागोरियाना को पढ़ने के बाद, उन्होंने एक-दूसरे को अपनी-अपनी कहानी लिखने की चुनौती दी, और प्रतियोगिता में सबसे डरावनी कहानी लिखने वाले को विजेता घोषित किया गया।

मैरी को एक विचार तब आया जब वह एक स्वप्न या दुःस्वप्न में लीन हो गई, जिसमें उसने "अपवित्र कलाओं के एक पीले पड़े छात्र को अपनी बनाई हुई वस्तु के पास घुटने टेकते हुए" देखा। बायरन बाल्कन की यात्रा के दौरान सुनी गई पिशाच कथाओं पर आधारित एक अंश ही लिख पाए, और इसी से पोलिडोरी ने द वैम्पायर (1819) की रचना की, जो रोमांटिक पिशाच साहित्यिक शैली का जनक है। इस एक घटना से दो प्रसिद्ध डरावनी कहानियों का जन्म हुआ।

राडू फ्लोरेस्कु ने अपनी पुस्तक "इन सर्च ऑफ फ्रेंकस्टीन" में तर्क दिया कि मैरी और पर्सी शेली स्विट्जरलैंड जाते समय राइन नदी के किनारे डार्मस्टेड के पास स्थित फ्रेंकस्टीन महल गए थे, जहां कोनराड डिप्पेल नामक एक कुख्यात कीमियागर ने मानव शरीरों पर प्रयोग किए थे।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

"...ग्रिम की परियों की कहानियाँ..."
जर्मन मूल की विश्व प्रसिद्ध परीकथाओं का संग्रह किंडर- अंड हौसमार्शेन (केएचएम; अंग्रेजी: चिल्ड्रन्स एंड हाउसहोल्ड टेल्स), जिसे आमतौर पर ग्रिम्स फेयरी टेल्स के नाम से जाना जाता है, पहली बार 1812 में जैकब और विल्हेम ग्रिम, ग्रिम बंधुओं द्वारा प्रकाशित किया गया था। इन बंधुओं को प्राचीन परीकथाओं में रुचि थी। उन्होंने उन कहानियों को एकत्र करना और लिखना शुरू किया, जिनके बारे में उनका दावा था कि वे पीढ़ियों से चली आ रही हैं। 20 दिसंबर, 1812 को उन्होंने पहले संस्करण का पहला खंड प्रकाशित किया, जिसमें 86 कहानियाँ थीं; 70 कहानियों का दूसरा खंड 1814 में प्रकाशित हुआ।
पहले खंडों की बहुत आलोचना हुई क्योंकि, हालांकि उन्हें "बच्चों की कहानियाँ" कहा जाता था, लेकिन उनमें शामिल विद्वतापूर्ण जानकारी और विषयवस्तु दोनों के कारण उन्हें बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता था। संस्करणों में कई बदलाव किए गए—जैसे स्नो व्हाइट और हैंसेल और ग्रेटेल के पहले संस्करण में दुष्ट माँ को सौतेली माँ में बदलना—संभवतः इसी उपयुक्तता को ध्यान में रखते हुए किए गए थे। उन्होंने यौन संदर्भों को हटा दिया, जैसे कि रैपुन्ज़ेल द्वारा राजकुमार से यह पूछकर धोखा देना कि उसके कपड़े अब उसे फिट क्यों नहीं आ रहे हैं, और इस तरह अपनी गर्भावस्था का खुलासा करना, लेकिन कई मामलों में, हिंसा, विशेष रूप से खलनायकों को दंडित करते समय, बढ़ा दी गई।
इन पुस्तकों का प्रभाव व्यापक था। बिक्री के मामले में यह बाइबिल और विलियम शेक्सपियर की रचनाओं के बाद दूसरे स्थान पर है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान डब्ल्यू. एच. ऑडन ने इसे पश्चिमी संस्कृति की मूलभूत रचनाओं में से एक बताया था। इन कहानियों का अनेक उपयोग हुए हैं। नाजियों ने इन्हें लोककथाएँ कहकर सराहा, जिनमें स्वस्थ नस्लीय प्रवृत्ति वाले बच्चे शुद्ध नस्ल के जीवनसाथी की तलाश करते हैं। नाजियों ने इन्हें इतनी मजबूती से सराहा कि मित्र देशों की सेनाओं ने इनके खिलाफ चेतावनी जारी की। होलोकॉस्ट पर लिखने वाले लेखकों ने इन कहानियों को अपने संस्मरणों में शामिल किया है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org

192

"...हिंदू धर्म..."

"हिंदू धर्म को अक्सर सनातन धर्म कहा जाता है, जो एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ है "शाश्वत मार्ग" या "शाश्वत नियम"।

हिंदू धर्म विश्व का सबसे प्राचीन प्रमुख धर्म है जिसका पालन आज भी किया जाता है। इसकी उत्पत्ति प्राचीन वैदिक सभ्यता से मानी जा सकती है। विविध मान्यताओं और परंपराओं का संगम होने के कारण हिंदू धर्म का कोई एक संस्थापक नहीं है। यह ईसाई धर्म और इस्लाम के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है, जिसके लगभग एक अरब अनुयायी हैं, जिनमें से लगभग 9.5 करोड़ भारत और नेपाल में रहते हैं।

हिंदू धर्म एक अत्यंत विविधतापूर्ण धर्म है। यद्यपि इस धर्म के कुछ सिद्धांत अधिकांश हिंदुओं द्वारा स्वीकार किए जाते हैं, फिर भी विद्वानों को सभी संप्रदायों में सर्वमान्य सिद्धांतों की पहचान करना कठिन लगा है। हिंदू मान्यताओं के प्रमुख विषयों में धर्म (नैतिकता/कर्तव्य), संसार (जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म का निरंतर चक्र), कर्म (क्रिया और उसकी प्रतिक्रिया), मोक्ष (संसार से मुक्ति) और विभिन्न योग (मार्ग या अभ्यास) शामिल हैं।

हिंदू धर्म एक विविध विचारधारा है जिसमें एकेश्वरवाद, बहुदेववाद, सर्वेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, अद्वैतवाद और नास्तिकता जैसे विश्वास शामिल हैं। इसे कभी-कभी एकेश्वरवाद (अन्य देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए एक ईश्वर के प्रति श्रद्धा) भी कहा जाता है, लेकिन ऐसा कोई भी शब्द विश्वास की जटिलताओं और विविधताओं का सरलीकरण है।

287

अधिकांश हिंदू मानते हैं कि आत्मा या रूह—प्रत्येक व्यक्ति का सच्चा "स्वभाव", जिसे आत्मन कहा जाता है—शाश्वत है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
193
"... आर्केडिया रीजनरेशन कंपनी"।
ज़्यूस के जन्मस्थानों में से एक आर्केडिया में स्थित माउंट लाइकेयम है। नरभक्षी पेलसगियन राजा लाइकेऑन को ज़्यूस ने वेयरवोल्फ में बदल दिया था। लाइकेऑन की बेटी का नाम कैलिस्टो था। यह भी कहा जाता है कि यह ज़्यूस के पुत्र हेमीज़ का जन्मस्थान था।
आर्केडिया एक देहाती, एकांत क्षेत्र बना रहा, और इसके निवासी सरल, देहाती, अपरिष्कृत लेकिन सुखी जीवन जीने वाले आदिम चरवाहों के रूप में प्रसिद्ध हो गए, इस हद तक कि आर्केडिया किसी काल्पनिक रमणीय स्वर्ग का संदर्भ दे सकता है।
लैटिन वाक्यांश Et in Arcadia ego, जिसका सामान्य अर्थ "मैं भी अर्काडिया में हूँ" या "मैं अर्काडिया में भी हूँ" होता है, मेमेंटो मोरी का एक उदाहरण है, जो जीवन की क्षणभंगुरता और मृत्यु की अनिवार्यता की चेतावनी देता है। यह वाक्यांश अक्सर निकोलस पौसिन की 1647 की पेंटिंग, जिसे "द अर्काडियन शेफर्ड्स" के नाम से भी जाना जाता है, से जुड़ा हुआ है। पेंटिंग में यह वाक्यांश शास्त्रीय वेशभूषा में सजे युवा लोगों द्वारा खोजी गई एक कब्र पर शिलालेख के रूप में दिखाई देता है। ऐसा माना जाता है कि यह वाक्यांश लैटिन वाक्यांश "I! Tego arcana Dei" का एनाग्राम है, जिसका अनुवाद "जाओ! मैं ईश्वर के रहस्यों को रखता हूँ" होता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
194
"... अधिकांश मूलभूत आनुवंशिक सामग्री सभी प्रजातियों में समान होती है..."
"सार्वभौमिक पूर्वज का आनुवंशिक मूल"
जे. किर्क हैरिस, स्कॉट टी. केली,1 जॉर्ज बी. स्पीगेलमैन,
3

और नॉर्मन आर. पेस
1
1
आणविक, कोशिकीय और विकासात्मक जीवविज्ञान विभाग, कोलोराडो विश्वविद्यालय, 2 बोल्डर, कोलोराडो 80309-0347, संयुक्त राज्य अमेरिका; माइक्रोबायोलॉजी में स्नातक समूह, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, बर्कले, कैलिफोर्निया 94720, संयुक्त राज्य अमेरिका;
3
सूक्ष्मजीवविज्ञान एवं प्रतिरक्षाविज्ञान विभाग, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, वैंकूवर, ब्रिटिश कोलंबिया, कनाडा V6T 1Z3
आधुनिक जीवों के राइबोसोमल आरएनए में संरक्षित अनुक्रमों के आणविक विश्लेषण से एक त्रि-प्रमुख विकासात्मक संरचना का पता चलता है जो समस्त जीवन के एक सार्वभौमिक पूर्वज में अभिसरित होती है। हमने ऑर्थोलॉगस समूहों के क्लस्टर डेटाबेस और प्रकाशित जीनोम से प्राप्त जानकारी का उपयोग करके अन्य सार्वभौमिक रूप से संरक्षित जीनों की खोज की, जिनका विकासात्मक पैटर्न राइबोसोमल आरएनए के समान है, और इसलिए वे कोशिकाओं के पैतृक आनुवंशिक मूल का निर्माण करते हैं। हमारे विश्लेषणों ने जीनों के एक छोटे समूह की पहचान की है जिन्हें सार्वभौमिक पूर्वज से जोड़ा जा सकता है और तब से उनका सह-विकास हुआ है।
पहले के अध्ययनों से संकेत मिलता है कि इनमें से लगभग सभी जीन आनुवंशिक जानकारी के हस्तांतरण में शामिल हैं, और उनमें से अधिकांश सीधे राइबोसोम के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। अन्य सार्वभौमिक जीन या तो अतीत में पार्श्व स्थानांतरण से गुज़रे हैं, या अनुक्रम में इतना अधिक विचलन हो गया है कि उनके सुदूर अतीत का पता नहीं लगाया जा सका है। संरक्षित जीनों की प्रकृति उन नवाचारों का संकेत देती है जो जीवन के तीन डोमेन के विचलन के लिए आवश्यक रहे होंगे। विश्लेषण में अज्ञात कार्य वाले कई जीनों की भी पहचान की गई है।

राइबोसोमल आरएनए जीनों के साथ चलने वाली वंशावली। इन जीनों के उत्पाद कोशिकीय प्रक्रियाओं में मौलिक भूमिका निभा सकते हैं।
संदर्भ: http://www.genome.org/cgi/content/abstract/GR-6528v1?etoc
195
"...जैविक इंजीनियर..."
जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी, मानव स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करने के लिए अभियांत्रिकी सिद्धांतों और डिजाइन का अनुप्रयोग है। जैव अभियांत्रिकी, जैविक अभियांत्रिकी से संबंधित है, जिसमें सूक्ष्मजीवों और पौधों से लेकर पारिस्थितिकी तंत्र तक, सभी प्रकार के जीवित तंत्रों पर अभियांत्रिकी सिद्धांतों का अनुप्रयोग शामिल है। जैव अभियांत्रिकी आणविक जीव विज्ञान, जैव रसायन विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान और तंत्रिका विज्ञान के साथ-साथ संवेदन, इलेक्ट्रॉनिक्स और इमेजिंग में हुए नए विकासों का लाभ उठाती है और उन्हें चिकित्सा उपकरणों, निदान उपकरणों, जैव-अनुकूलित सामग्रियों और अन्य महत्वपूर्ण चिकित्सा आवश्यकताओं के डिजाइन में लागू करती है।
बायोइंजीनियरिंग में इंजीनियरिंग विशेषज्ञता को आनुवंशिकी, आणविक जीवविज्ञान, प्रोटीन रसायन विज्ञान, कोशिका विज्ञान, तंत्रिका जीवविज्ञान, प्रतिरक्षा विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान और औषध विज्ञान जैसे जैविक विज्ञानों के ज्ञान के साथ जोड़ा जाता है। बायोइंजीनियर चिकित्सा चिकित्सकों और अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ मिलकर काम करते हैं, लेकिन उनका काम केवल इन्हीं तक सीमित नहीं है, ताकि वर्तमान और उभरती स्वास्थ्य समस्याओं के तकनीकी समाधान विकसित किए जा सकें।
बायोइंजीनियरिंग केवल चिकित्सा क्षेत्र तक सीमित नहीं है। बायोइंजीनियरों में जटिल प्रणालियों के क्षेत्र में नए अवसरों का लाभ उठाने और समस्याओं को हल करने की क्षमता होती है। उन्हें जीवित प्रणालियों की जटिल प्रणालियों के रूप में गहरी समझ होती है, जिसे उद्यमिता सहित कई क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
196

"...कमियों को दूर किया गया, संशोधन किए गए और अंततः नए जानवर को अंतिम परीक्षण के लिए वास्तविक ग्रहीय वातावरण में उतारा गया।"
"यूजेनिक्स के मूल आदर्श पश्चिमी सभ्यता के आरंभ से ही मिलते हैं। इस दर्शन को सबसे प्रसिद्ध रूप से प्लेटो ने प्रतिपादित किया था, जिनका मानना था कि मानव प्रजनन की निगरानी और नियंत्रण राज्य द्वारा किया जाना चाहिए। प्लेटो की रचना 'द रिपब्लिक' में वर्णित मूल यूजेनिक्स सिद्धांत यह था, "सर्वोत्तम पुरुषों को यथासंभव सर्वोत्तम महिलाओं के साथ यौन संबंध बनाना चाहिए, और निम्न स्तर के पुरुषों के लिए इसका विपरीत सत्य है।"
हालांकि, प्लेटो समझते थे कि सरकार का यह नियंत्रण आसानी से स्वीकार नहीं किया जाएगा, और उन्होंने एक निश्चित लॉटरी के माध्यम से जनता से सच्चाई छिपाने का प्रस्ताव रखा। प्लेटो के रिपब्लिक में, जीवनसाथी का चुनाव एक "विवाह संख्या" के आधार पर किया जाएगा, जिसमें व्यक्ति के गुणों का मात्रात्मक विश्लेषण किया जाएगा, और उच्च संख्या वाले व्यक्तियों को उच्च संख्या वाले अन्य व्यक्तियों के साथ संतान उत्पन्न करने की अनुमति दी जाएगी। सैद्धांतिक रूप से, इससे अनुमानित परिणाम प्राप्त होंगे और मानव जाति का विकास होगा। हालांकि, प्लेटो ने "विवाह संख्या" की विफलता को स्वीकार किया क्योंकि "स्वर्ण आत्मा" वाले व्यक्ति भी "कांस्य आत्मा" वाले बच्चे पैदा कर सकते थे। यह आनुवंशिक विरासत का गणितीय विश्लेषण करने के शुरुआती प्रयासों में से एक हो सकता है, जो मेंडेलियन आनुवंशिकी के विकास और मानव जीनोम के मानचित्रण तक पूर्ण नहीं हो पाया था।
रोम और स्पार्टा जैसी अन्य प्राचीन सभ्यताओं में शिशुहत्या को शारीरिक विशेषताओं के चयन के एक रूप के रूप में प्रचलित किया गया था। स्पार्टा में, नवजात शिशुओं का निरीक्षण शहर के बुजुर्गों द्वारा किया जाता था, जो शिशु के भाग्य का निर्णय करते थे। यदि बच्चे को जीवित रहने में असमर्थ माना जाता था, तो उसे आमतौर पर टैगेटस पर्वत से फेंक दिया जाता था। इस तरह से मारे जाने वाली लड़कियों की संख्या लड़कों की तुलना में अधिक थी।

शिशुओं के लिए अपनाई जाने वाली प्रथाओं में उन्हें शराब में नहलाना और खुले में छोड़ देना शामिल था। स्पार्टा के अनुसार, इससे केवल बलवान ही जीवित रहते और संतान उत्पन्न करते थे। एडॉल्फ हिटलर स्पार्टा को पहला "वोल्किश राज्य" मानता था और उससे पहले अर्न्स्ट हेकेल की तरह, उसने विकृत बच्चों पर लागू की जाने वाली चयनात्मक शिशुहत्या नीति के आदिम रूप के कारण स्पार्टा की प्रशंसा की।

रोमन गणराज्य के गठन के शुरुआती दौर में स्थापित रोमन कानून की 12 तालिकाओं की चौथी तालिका में यह उल्लेख था कि विकृत बच्चों को मृत्युदंड दिया जाएगा। इसके अलावा, रोमन समाज में पितृसत्तात्मक व्यक्तियों को अपनी इच्छा से शिशुओं को "त्यागने" का अधिकार दिया गया था। ऐसा अक्सर अवांछित नवजात शिशुओं को टाइबर नदी में डुबोकर किया जाता था।

सर फ्रांसिस गैल्टन ने सामाजिक सांख्यिकी का उपयोग करते हुए सुजननशास्त्र के विचारों को प्रारंभ में विकसित किया। सर फ्रांसिस गैल्टन ने 1860 और 1870 के दशक के दौरान अपने चचेरे भाई चार्ल्स डार्विन के सिद्धांत द्वारा प्रदान किए गए मनुष्य और पशुओं के विकास के नए ज्ञान के अनुसार इन विचारों और प्रथाओं को व्यवस्थित किया। डार्विन की 'ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' पढ़ने के बाद, गैल्टन ने डार्विन के विचारों को आगे बढ़ाया, जिसके अनुसार प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया को मानव सभ्यता द्वारा संभावित रूप से बाधित किया जा सकता था। उन्होंने तर्क दिया कि, चूंकि कई मानव समाजों ने प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया को संरक्षित करने का प्रयास किया,

वंचित और कमजोर होने के कारण, वे समाज प्राकृतिक चयन के विपरीत थे जो सबसे कमजोरों के विलुप्त होने के लिए जिम्मेदार था; और केवल इन सामाजिक नीतियों को बदलकर ही समाज को "औसत दर्जे की ओर वापसी" से बचाया जा सकता था, यह वाक्यांश उन्होंने पहली बार सांख्यिकी में गढ़ा था और जो बाद में अब आम हो चुके "औसत की ओर प्रतिगमन" में बदल गया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

"...प्रजातियाँ..."
जीव विज्ञान में, प्रजाति जैविक वर्गीकरण की मूलभूत इकाइयों में से एक है और एक वर्गीकरण श्रेणी है। प्रजाति को अक्सर ऐसे जीवों के समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है जो आपस में प्रजनन करने और उपजाऊ संतान उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं। हालांकि कई मामलों में यह परिभाषा पर्याप्त है, लेकिन डीएनए या आकारिकी की समानता जैसे अधिक सटीक या भिन्न मापदंडों का भी अक्सर उपयोग किया जाता है। विशिष्ट स्थानीय रूप से अनुकूलित लक्षणों की उपस्थिति प्रजातियों को उप-प्रजातियों में विभाजित कर सकती है। पौधों और जानवरों के वर्गीकरणों के लिए आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले नाम कभी-कभी प्रजातियों से मेल खाते हैं: उदाहरण के लिए, "शेर," "वालरस," और "कपूर का पेड़," प्रत्येक एक प्रजाति को संदर्भित करता है। अन्य मामलों में, सामान्य नाम ऐसा नहीं करते: उदाहरण के लिए, "हिरण" 34 प्रजातियों के एक परिवार को संदर्भित करता है, जिसमें एल्ड्स हिरण, लाल हिरण और वैपिटी (एल्क) शामिल हैं। पिछली दो प्रजातियों को कभी एक ही प्रजाति माना जाता था, जो दर्शाता है कि वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि के साथ प्रजातियों की सीमाएं कैसे बदल सकती हैं।
प्रत्येक प्रजाति को एक ही वंश के अंतर्गत रखा जाता है। यह एक परिकल्पना है कि प्रजाति अपने वंश की अन्य प्रजातियों से अन्य वंशों की प्रजातियों की तुलना में अधिक निकटता से संबंधित है। सभी प्रजातियों को वंश नाम और प्रजाति नाम (या विशिष्ट विशेषण) से मिलकर बना द्विपद नाम दिया जाता है। उदाहरण के लिए, पाइनस पैलस्ट्रिस (जिसे आमतौर पर लॉन्गलीफ पाइन के नाम से जाना जाता है)।
जीव विज्ञान संबंधी सिद्धांतों को स्थापित करने, उनका परीक्षण करने और जैव विविधता को मापने के लिए "प्रजाति" शब्द की एक उपयोगी परिभाषा और विशिष्ट प्रजातियों की पहचान करने के विश्वसनीय तरीके आवश्यक हैं। परंपरागत रूप से, किसी प्रस्तावित प्रजाति को प्रजाति मानने से पहले, उसके कई उदाहरणों का अध्ययन करके उनमें समानताओं का पता लगाना आवश्यक होता है। केवल जीवाश्मों से ज्ञात विलुप्त प्रजातियों को सटीक वर्गीकरण देना आमतौर पर कठिन होता है। वैज्ञानिक रूप से वर्णित प्रजाति को उसके द्विपद नामों से संदर्भित किया जा सकता है।

फिर भी, जैसा कि चार्ल्स डार्विन ने कहा था,

'मैं 'प्रजाति' शब्द को एक ऐसे शब्द के रूप में देखता हूँ जिसे सुविधा के लिए मनमाने ढंग से उन व्यक्तियों के समूह को दिया जाता है जो एक दूसरे से काफी मिलते-जुलते हैं... यह 'विविधता' शब्द से मूलतः भिन्न नहीं है, जो कम विशिष्ट और अधिक परिवर्तनशील रूपों को दिया जाता है। 'विविधता' शब्द, फिर से मात्र व्यक्तिगत अंतर की तुलना में, मनमाने ढंग से और केवल सुविधा के लिए ही प्रयोग किया जाता है।'
विश्व में विभिन्न प्रजातियों की कुल संख्या को परिभाषित करने और उसकी गणना करने में आने वाली कठिनाइयों के कारण, यह अनुमान लगाया जाता है कि 20 लाख से लेकर 10 करोड़ तक विभिन्न प्रजातियां हो सकती हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
198
"...भृंग की प्रजाति..."
भृंग कीटों का वह समूह है जिसमें प्रजातियों की संख्या सबसे अधिक है। इन्हें कोलियोप्टेरा गण में रखा गया है, जिसका अर्थ है "ढके हुए पंख"। जीव जगत के किसी भी अन्य गण की तुलना में इसमें सबसे अधिक वर्णित प्रजातियाँ शामिल हैं, जो सभी ज्ञात जीव रूपों का लगभग पच्चीस प्रतिशत हैं। सभी वर्णित कीट प्रजातियों में से चालीस प्रतिशत भृंग हैं (लगभग 350,000 प्रजातियाँ), और नई प्रजातियों की खोज अक्सर होती रहती है। अनुमान के अनुसार, वर्णित और अवर्णित प्रजातियों की कुल संख्या 50 लाख से 80 लाख के बीच है। भृंग लगभग सभी आवासों में पाए जाते हैं, लेकिन समुद्र या ध्रुवीय क्षेत्रों में इनका पाया जाना ज्ञात नहीं है। ये अपने पारिस्थितिकी तंत्र के साथ कई तरह से परस्पर क्रिया करते हैं। ये अक्सर पौधों और कवकों को खाते हैं, पशु और पौधों के अवशेषों को विघटित करते हैं और अन्य अकशेरुकी जीवों को भी खाते हैं। कुछ प्रजातियाँ पक्षियों और स्तनधारियों सहित विभिन्न जानवरों का शिकार होती हैं। कुछ प्रजातियाँ कृषि कीट हैं, जैसे कोलोराडो आलू भृंग लेप्टिनोटार्सा डेसेमलाइनटा, बॉल वीविल एंथोनोमस ग्रैंडिस, लाल आटा भृंग ट्राइबोलियम कैस्टेनियम और मूंग या लोबिया भृंग कैलोसोब्रुचस मैकुलेटस, जबकि भृंग की अन्य प्रजातियाँ कृषि कीटों के महत्वपूर्ण नियंत्रक हैं। उदाहरण के लिए, कोकिनेलिडे ("लेडीबर्ड" या

"लेडीबग") एफिड्स, स्केल कीट, थ्रिप्स और अन्य पौधों का रस चूसने वाले कीटों का सेवन करते हैं जो फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
199
"पृथ्वी की पाठ्यपुस्तकों में बताए गए अनुसार, एक प्रजाति दूसरी प्रजाति में तब तक विकसित नहीं होती जब तक कि उसमें किसी IS-BE द्वारा आनुवंशिक सामग्री का हस्तक्षेप और हेरफेर न किया जाए।"
"आनुवंशिक अभियांत्रिकी, पुनर्संयोजित डीएनए प्रौद्योगिकी, आनुवंशिक संशोधन / जीन हेरफेर (जीएम) और जीन स्प्लिसिंग, जीव के जीनों में प्रत्यक्ष हेरफेर के लिए प्रयुक्त शब्द हैं। आनुवंशिक अभियांत्रिकी को पारंपरिक प्रजनन से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जिसमें जीव के जीनों में अप्रत्यक्ष रूप से हेरफेर किया जाता है। आनुवंशिक अभियांत्रिकी आणविक क्लोनिंग और रूपांतरण की तकनीकों का उपयोग करती है। आनुवंशिक अभियांत्रिकी के प्रयासों ने फसल प्रौद्योगिकी में सुधार, संशोधित जीवाणुओं के उपयोग से कृत्रिम मानव इंसुलिन के निर्माण, चीनी हैम्स्टर अंडाशय कोशिकाओं में एरिथ्रोपोइटिन के निर्माण और अनुसंधान के लिए ऑन्कोमाउस (कैंसर माउस) जैसे नए प्रकार के प्रायोगिक चूहों के उत्पादन में कुछ सफलता प्राप्त की है।
क्योंकि प्रोटीन अनुक्रम जीन नामक डीएनए के एक खंड द्वारा निर्धारित होता है, इसलिए जीन के डीएनए अनुक्रम को बदलकर उस प्रोटीन के नए संस्करण तैयार किए जा सकते हैं। संशोधित जीनोम का स्वामित्व रखने वाली कंपनियां इसका पेटेंट करा सकती हैं। बुनियादी फसलों के मामले में, कंपनियां खाद्य पदार्थों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेती हैं, बड़े पैमाने पर खाद्य उत्पादन को नियंत्रित करती हैं और कृषि विविधता को कुछ ही किस्मों तक सीमित कर देती हैं। बीज कंपनियों जैसे दावों के बावजूद, इस तकनीक को बढ़ावा देने में एकमात्र स्पष्ट रुचि विशुद्ध रूप से आर्थिक प्रतीत होती है।
291

मोनसेंटो और नोवार्टिस ने विश्व में खाद्य संकट को दूर करने का प्रयास किया है। अब यह सर्वमान्य हो चुका है कि मुख्य समस्या व्यापक स्तर पर भोजन की कमी नहीं है, बल्कि इसका वितरण है, जो समृद्ध देशों द्वारा लगाए गए अत्यधिक शुल्कों से और भी बढ़ गया है।
आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें भूख को कम नहीं करतीं। अधिकांश आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें विकसित देशों में मांस की उच्च मांग को पूरा करने के लिए पशुओं के चारे के रूप में उपयोग की जाती हैं। इस दिशा में तमाम वादों के बावजूद, कोई भी आनुवंशिक संशोधन अभी तक मानव जाति की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं है।
हालांकि, इस तकनीक की अपार संभावनाओं के बावजूद, कुछ लोगों ने आनुवंशिक रूप से संशोधित पौधों और जानवरों को पर्यावरण में लाने और मानव द्वारा इन खाद्य पदार्थों के सेवन से होने वाले संभावित खतरों के बारे में चिंता जताई है। उनका कहना है कि ये जीव अपने संशोधित जीन को स्थानीय आबादी में फैलाकर प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र को बाधित कर सकते हैं। ऐसा पहले ही हो चुका है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
200
"...किसी प्रजाति का आनुवंशिक हेरफेर..."
आनुवंशिक विविधता कितनी है? ऐतिहासिक बहस: शास्त्रीय मत के अनुसार, आनुवंशिक विविधता बहुत कम होती है, अधिकांश व्यक्ति "वाइल्ड-टाइप" एलील के लिए समयुग्मजी होते हैं। बार-बार होने वाले उत्परिवर्तन के कारण दुर्लभ विषमयुग्मजी स्थान पाए जाते हैं; प्राकृतिक चयन आबादी से उत्परिवर्तनों का भार कम कर देता है। संतुलन मत के अनुसार, प्राकृतिक आबादी में कई स्थान विषमयुग्मजी होंगे और विषमयुग्मजी "संतुलन चयन" (विषमयुग्मजी लाभ) द्वारा बनाए रखे जाते हैं। इस प्रकार, चयन विविधता को बनाए रखने में भूमिका निभाता है।
हम विविधता को कैसे मापते हैं? किसी निरंतर परिवर्तनशील लक्षण के आनुवंशिक आधार को दर्शाने के लिए, हम निम्नलिखित तरीकों का अध्ययन कर सकते हैं: 1) रिश्तेदारों के बीच समानता: वितरण के विभिन्न भागों में स्थित माता-पिता से उत्पन्न संतानों को देखें; इससे

आनुवंशिकता का अनुमान लगाया जा सकता है (इस पर आगे विस्तार से चर्चा की जाएगी)।
2) कृत्रिम चयन: कबूतर और कुत्ते विविधता को दर्शाते हैं; लेकिन यह नहीं बताते कि विविधता कितनी है।
संदर्भ: http://biomed.brown.edu/Courses/BIO48/5.Geno.Pheno.HTML
201
"... प्रोटियोबैक्टीरिया..."
प्रोटियोबैक्टीरिया जीवाणुओं का एक प्रमुख समूह (फाइलम) है। इसमें एस्चेरिचिया, साल्मोनेला, विब्रियो, हेलिकोबैक्टर और कई अन्य उल्लेखनीय वंशों जैसे विभिन्न प्रकार के रोगजनक शामिल हैं। कुछ अन्य स्वतंत्र रूप से जीवित रहते हैं और इनमें नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए जिम्मेदार कई जीवाणु शामिल हैं। इस समूह को मुख्य रूप से राइबोसोमल आरएनए (आरआरएनए) अनुक्रमों के आधार पर परिभाषित किया जाता है और इसका नाम ग्रीक देवता प्रोटियस के नाम पर रखा गया है (जो इस समूह के भीतर एक जीवाणु वंश का नाम भी है)।
प्रोटियोबैक्टीरिया नामक जीव, जो अपना आकार बदल सकते थे, इस समूह में पाए जाने वाले रूपों की महान विविधता के कारण ऐसा संभव था।
सभी प्रोटियोबैक्टीरिया ग्राम-ऋणात्मक होते हैं, जिनकी बाहरी झिल्ली मुख्य रूप से लिपोपॉलीसेकेराइड से बनी होती है। इनमें से कई फ्लैजेला का उपयोग करके गति करते हैं, लेकिन कुछ गतिहीन होते हैं या बैक्टीरियल ग्लाइडिंग पर निर्भर करते हैं। इनमें माइक्सोबैक्टीरिया शामिल हैं, जो बैक्टीरिया का एक अनूठा समूह है जो बहुकोशिकीय फलन निकाय बनाने के लिए एकत्रित हो सकता है। चयापचय के प्रकारों में भी व्यापक विविधता पाई जाती है। अधिकांश सदस्य वैकल्पिक या अनिवार्य रूप से अवायवीय और परपोषी होते हैं, लेकिन कई अपवाद भी हैं। विभिन्न वंश, जो एक दूसरे से निकटता से संबंधित नहीं हैं, प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से प्रकाश से ऊर्जा परिवर्तित करते हैं। इन्हें बैंगनी बैक्टीरिया कहा जाता है, जो इनके अधिकतर लाल रंगद्रव्य को दर्शाता है।
292

-- संदर्भ: Wikipedia.org

202

"...फाइलम..."

जीव विज्ञान में, 'फाइलम' एक वर्गीकरण श्रेणी है जो वर्ग से नीचे और जगत से ऊपर के स्तर पर आती है। 'फाइलम' शब्द ग्रीक शब्द φυλαί phylai से लिया गया है, जो ग्रीक नगर-राज्यों में कबीले-आधारित मतदान समूहों को दर्शाता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

203

"...अत्यंत गर्म नीला तारा..."

नीले तारे बहुत गर्म और बेहद चमकदार होते हैं; वास्तव में, इनका अधिकांश प्रकाश पराबैंगनी श्रेणी में होता है। ये मुख्य अनुक्रम तारों में सबसे दुर्लभ हैं, सौर मंडल के आसपास इनकी संख्या मात्र 3,000,000 में से 1 है। (नीले) तारे हमारे सूर्य के प्रकाश की तुलना में दस लाख गुना से भी अधिक शक्ति से चमकते हैं। उदाहरण: ज़ेटा ओरियोनिस, ज़ेटा पप्पिस, लैम्डा ओरियोनिस, डेल्टा ओरियोनिस।

संदर्भ: Wikipedia.org

204

"...जीवों के उत्पादन के समन्वय के लिए जिम्मेदार..."

संपादक का नोट: जैव प्रौद्योगिकी उद्योग की विश्व कांग्रेस को नियंत्रित करने वाले संगठन के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, उनकी वेबसाइट http://www.bio.org पर जाएं। उनकी वेबसाइट पर उनके बारे में और उनके कार्यों के बारे में एक विवरण दिया गया है: "बायो विश्व का सबसे बड़ा जैव प्रौद्योगिकी संगठन है, जो दुनिया भर में 1,150 से अधिक सदस्यों के लिए वकालत, व्यवसाय विकास और संचार सेवाएं प्रदान करता है। हमारा मिशन जैव प्रौद्योगिकी का समर्थक बनना और अपने सदस्य संगठनों - चाहे वे बड़े हों या छोटे - के लिए हिमायती बनना है।"

BIO के सदस्य स्वास्थ्य सेवा, कृषि, उद्योग और पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचारी तकनीकों के अनुसंधान और विकास में संलग्न हैं। कॉर्पोरेट सदस्यों में पहली बार उत्पाद विकसित कर रही उद्यमी कंपनियों से लेकर फॉर्च्यून 100 बहुराष्ट्रीय कंपनियां शामिल हैं। हम राज्य और क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी संघों, उद्योग को सेवाएं प्रदान करने वाले संगठनों और शैक्षणिक केंद्रों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। BIO सदस्यों और वेबसाइटों के लिंक के साथ-साथ BIO के राज्य और अंतर्राष्ट्रीय संबद्ध संगठनों को देखने के लिए BIO सदस्य निर्देशिका पर जाएं।

संदर्भ: http://bio.org/aboutbio/

205

"...जैविक अभियांत्रिकी प्रक्रिया के लिए पेटेंट लाइसेंस ..."

"जैविक पेटेंट जीव विज्ञान में किसी आविष्कार या खोज से संबंधित पेटेंट होता है।"

1970 के दशक में पहली बार वैज्ञानिकों ने पुनर्संयोजित डीएनए से संबंधित अपने जैव प्रौद्योगिकी आविष्कारों के तरीकों का पेटेंट कराया। 1980 तक जीवित जीवों के संपूर्ण आकार के पेटेंट की अनुमति नहीं थी। डायमंड बनाम चक्रबर्ती मामले में, सर्वोच्च न्यायालय ने जीवित पदार्थों के पेटेंट की अनुमति देने वाले पिछले फैसले को पलट दिया। इस विशेष मामले का विषय एक जीवाणु था जिसे तेल रिसाव को साफ करने और नष्ट करने में मदद करने के लिए विशेष रूप से संशोधित किया गया था।

293

सन् 1980 से शुरू हुए कानूनी बदलावों के बाद से, सजीव पदार्थों से संबंधित आविष्कारों का पेटेंट कराने का चलन बढ़ गया है। हाल के वर्षों में पहले से कहीं अधिक ज्ञान और डेटा उपलब्ध हुआ है। हालांकि, लोगों के जीवन में सार्थक बदलाव लाने के लिए, इसमें बड़ी मात्रा में धन निवेश करना आवश्यक है। जैव प्रौद्योगिकी और दवा कंपनियों ने हाल के वर्षों में जैविक अनुसंधान की लाभप्रदता को समझा है। ये कंपनियां निजी क्षेत्र द्वारा उपलब्ध कराए गए अनुदान के माध्यम से अनुसंधान के अनेक अवसर प्रदान करती हैं।

पेटेंट ने अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया है, क्योंकि जिन कंपनियों के पास वित्तीय संसाधन हैं, वे अंततः धन प्राप्त करने के लक्ष्य की कल्पना कर सकती हैं। विशेष रूप से जीनोमिक युग के दौरान, अधिक पेटेंट जारी किए गए। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय जैसी कंपनियों और संगठनों ने संपूर्ण जीनोम का पेटेंट कराया।

1998 में, अमेरिकी पेटेंट और ट्रेडमार्क कार्यालय (पीटीओ) ने प्राइमेट (मानव सहित) भ्रूण स्टेम कोशिकाओं पर दावा करते हुए एक व्यापक पेटेंट जारी किया, जिसका शीर्षक था "प्राइमेट भ्रूण स्टेम कोशिकाएं" (पेटेंट 5,843,780)। 13 मार्च 2001 को, इसी शीर्षक से एक दूसरा पेटेंट (6,200,806) जारी किया गया, लेकिन यह मानव भ्रूण स्टेम कोशिकाओं पर केंद्रित था।

हाल ही में, दुनिया भर में जैविक सामग्री के पेटेंट के खिलाफ मंदी और विरोध देखने को मिला है।

कुछ लोगों का मानना है कि जैविक सूचनाओं के पेटेंट में वृद्धि से अनुसंधान में अक्षमता आती है। कई वैज्ञानिक पेटेंट के जाल में फंस जाते हैं, जो सूचनाओं का विशाल भंडार होता है, जिसके उपयोग के लिए उन्हें अनुमति लेनी पड़ती है (और अक्सर भारी शुल्क भी चुकाना पड़ता है) इससे पहले कि वे उस जानकारी पर काम कर सकें।

माइकल हेलर और रेबेका आइज़ेनबर्ग (2005) बताते हैं कि अनुसंधान प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का पेटेंट कराने का एक नया चलन देखा जा रहा है। इससे "एंटीकॉमन्स की त्रासदी" उत्पन्न होती है, जिसके अंतर्गत "प्रत्येक प्रारंभिक पेटेंट अपने स्वामी को उत्पाद विकास के मार्ग में एक और बाधा उत्पन्न करने की अनुमति देता है, जिससे लागत बढ़ती है और बाद के

नवाचार की गति धीमी हो जाती है।" एक रिपोर्ट से पता चलता है कि बढ़ते वित्तपोषण के बावजूद, पिछले पांच वर्षों में जैव चिकित्सा नवाचार में उल्लेखनीय कमी आई है। खाद्य एवं औषधि प्रशासन द्वारा अनुमोदित दवाओं की संख्या पूर्व के वर्षों की तुलना में कम हो गई है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि अनुमोदित प्रौद्योगिकियां पूर्व में अनुमोदित नवाचारों की तुलना में कम प्रभावशाली हैं। जिन चीजों को पहले मूलभूत विज्ञान की अंतर्दृष्टि माना जाता था, उनका पेटेंट कराने के वर्तमान चलन ने ऐसी अंतर्दृष्टि का उपयोग करने के इच्छुक अन्य वैज्ञानिकों के लिए वित्तीय बाधा को बढ़ा दिया है। अधिक पेटेंट का यह समग्र चलन नवाचार को धीमा कर सकता है।

हालांकि, कुछ अन्य लोगों का कहना है कि अनुसंधान के लिए पेटेंट आवश्यक हैं। इनके बिना, वैज्ञानिक अपने सहयोगियों और अन्य लोगों द्वारा विचारों की चोरी के डर से सभी खोजों को गुप्त रखेंगे। निजी क्षेत्र से बड़े पैमाने पर निवेश के लिए भी कोई प्रोत्साहन नहीं होगा।

संदर्भ: Wikipedia.org

206

"...चक्रीय उद्दीपन-प्रतिक्रिया जनरेटर"।

"निश्चित क्रिया पैटर्न (एफएपी) एक सहज व्यवहार अनुक्रम है जो अविभाज्य है और पूर्णता तक चलता है। निश्चित क्रिया पैटर्न अपरिवर्तनीय होते हैं और एक तंत्रिका नेटवर्क द्वारा उत्पन्न होते हैं जिसे सहज रिलीजिंग तंत्र के रूप में जाना जाता है, जो एक बाहरी संवेदी उत्तेजना के जवाब में होता है जिसे संकेत उत्तेजना या रिलीजर के रूप में जाना जाता है।"

294

एक उदाहरण के रूप में, संभोग नृत्य का प्रयोग किया जा सकता है। कई पक्षी प्रजातियाँ विशिष्ट प्रकार की जटिल गतिविधियों में संलग्न होती हैं, जो आमतौर पर चमकीले रंग के नर द्वारा की जाती हैं। नर पक्षी द्वारा किए गए "नृत्य" की कुशलता का उपयोग प्रजाति की मादाएँ संभावित साथी के रूप में उसकी उपयुक्तता का आकलन करने के लिए करती हैं। मुख्य उत्तेजना आमतौर पर मादा की उपस्थिति होती है।
हालांकि स्थिर क्रिया पैटर्न सरल संज्ञानात्मक क्षमताओं वाले जानवरों में सबसे आम हैं, मनुष्य भी स्थिर क्रिया पैटर्न प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, शिशु स्पर्श उत्तेजना की प्रतिक्रिया में अपने हाथों से मजबूती से पकड़ते हैं।
संदर्भ: Wikipedia.org
207
"...रासायनिक-विद्युत ट्रिगर तंत्र..."
टैक्सीस (बहुवचन टैक्सेस) किसी जीव द्वारा किसी उद्दीपन के प्रति दी जाने वाली एक सहज व्यवहारिक प्रतिक्रिया है। टैक्सीस, ट्रॉपिज्म (मुड़ने की प्रतिक्रिया, जो अक्सर उद्दीपन की ओर या उससे दूर बढ़ने की होती है) से इस मायने में भिन्न है कि इसमें जीव में गतिशीलता होती है और वह उद्दीपन की ओर या उससे दूर निर्देशित गति प्रदर्शित करता है। यह काइनेसिस से भी भिन्न है, जो किसी उद्दीपन के प्रति प्रतिक्रिया में गतिविधि में एक गैर-दिशात्मक परिवर्तन है, जिसके परिणामस्वरूप उद्दीपन की तीव्रता के आधार पर गतिविधि की विभिन्न दरों के कारण निर्देशित गति का भ्रम उत्पन्न होता है।
उदाहरण के लिए, यूग्लेना वंश के फ्लैजेलेट प्रोटोजोआ प्रकाश स्रोत की ओर गति करते हैं। यहाँ दिशात्मक उद्दीपन प्रकाश है, और अभिविन्यास गति प्रकाश की ओर होती है। यह प्रतिक्रिया या व्यवहार प्रकाश के प्रति सकारात्मक है और इसे विशेष रूप से "सकारात्मक फोटोटैक्सिस" कहा जाता है, क्योंकि फोटोटैक्सिस प्रकाश उद्दीपन के प्रति प्रतिक्रिया है, और जीव उद्दीपन की ओर गति कर रहा है। यदि जीव उद्दीपन से दूर गति करता है, तो टैक्सीस नकारात्मक होती है। प्रतिक्रिया उत्पन्न करने वाले उद्दीपन को निर्दिष्ट करने के लिए उपसर्गों का उपयोग करके कई प्रकार की टैक्सीस की पहचान की गई है और उन्हें नाम दिए गए हैं।

इनमें एनेमोटैक्सिस (हवा द्वारा उत्तेजना), बैरोटैक्सिस (दबाव), केमोटैक्सिस (रसायन), गैल्वनोटैक्सिस (विद्युत प्रवाह), जियोटैक्सिस (गुरुत्वाकर्षण), हाइड्रोटैक्सिस (नमी), फोटोटैक्सिस (प्रकाश), रियोटैक्सिस (द्रव प्रवाह), थर्मोटैक्सिस (तापमान परिवर्तन) और थिगमोटैक्सिस (भौतिक संपर्क) शामिल हैं।
रसायन-प्रेरित प्रतिक्रिया को कीमोटैक्सिस कहते हैं। एककोशिकीय (जैसे प्रोटोजोआ) या बहुकोशिकीय (जैसे कृमि) जीव इन पदार्थों के लक्ष्य होते हैं। तरल अवस्था में विकसित रसायनों का सांद्रता प्रवणता प्रतिक्रिया करने वाली कोशिकाओं या जीवों की दिशात्मक गति को निर्देशित करता है।
इलेक्ट्रो टैक्सिस विद्युत क्षेत्र के प्रति प्रतिक्रिया में गतिशील कोशिकाओं की दिशात्मक गति है। ऐसा माना जाता है कि कोशिकाएं विद्युत क्षेत्रों का पता लगाकर और उनकी ओर उन्मुख होकर गति करती हैं। यह धारणा 1) घाव भरने, विकास और पुनर्जनन के दौरान स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होने वाले मापने योग्य विद्युत क्षेत्रों के अस्तित्व; और 2) कल्चर में कोशिकाएं लागू विद्युत क्षेत्रों के प्रति दिशात्मक प्रतिक्रिया द्वारा नियंत्रित होती हैं, पर आधारित है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
208
"... टेस्टोस्टेरोन या एस्ट्रोजन द्वारा उत्तेजित प्रजनन रासायनिक-विद्युत आवेग।"
टेस्टोस्टेरोन एंड्रोजन समूह का एक स्टेरॉयड हार्मोन है। स्तनधारियों में, टेस्टोस्टेरोन मुख्य रूप से पुरुषों के वृषण और महिलाओं के अंडाशय में स्रावित होता है, हालांकि अधिवृक्क ग्रंथियों द्वारा भी थोड़ी मात्रा में स्रावित होता है। यह प्रमुख पुरुष यौन हार्मोन और एक एनाबॉलिक स्टेरॉयड है।
295

1930 के दशक के आरंभ से 1950 के दशक तक के काल को "स्टेरॉयड रसायन विज्ञान का स्वर्ण युग" कहा जाता है, और इस दौरान कार्य में तीव्र प्रगति हुई। इस स्वर्ण युग के शोध ने सिद्ध किया कि यह नव-संश्लेषित यौगिक - टेस्टोस्टेरोन - या बल्कि यौगिकों का समूह (क्योंकि 1940, 50 और 60 के दशक में कई व्युत्पन्न विकसित किए गए थे), मांसपेशियों, शक्ति और स्वास्थ्य को बढ़ाने वाला एक शक्तिशाली यौगिक था।
पुरुषों और महिलाओं दोनों में, टेस्टोस्टेरोन स्वास्थ्य और कल्याण के साथ-साथ यौन क्रिया में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन हार्मोन अधिक मात्रा में बनता है, जबकि महिलाओं में कम। इसी प्रकार, महिलाओं में एस्ट्रोजन हार्मोन अधिक मात्रा में बनता है, जबकि पुरुषों में कम। औसतन, एक वयस्क पुरुष का शरीर एक वयस्क महिला के शरीर की तुलना में लगभग चालीस से साठ गुना अधिक टेस्टोस्टेरोन का उत्पादन करता है।
टेस्टोस्टेरोन मर्दाना लक्षणों (जैसे आवाज का गहरा होना, गुप्तांग और चेहरे पर बाल आना, मांसल शरीर आदि) के प्रकट होने का कारण बनता है। पुरुषों की तरह, महिलाएं भी जीवन भर कामेच्छा, हड्डियों के घनत्व और मांसपेशियों को बनाए रखने के लिए टेस्टोस्टेरोन पर निर्भर करती हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
209
"यौन सौंदर्य-दर्द" की इलेक्ट्रॉनिक तरंग का दुर्बल करने वाला प्रभाव और लत..."
"यौन व्यसन शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्ति के व्यवहार का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिसमें असामान्य रूप से तीव्र यौन इच्छा या यौन जुनून होता है। यौन व्यसन, जिसे यौन बाध्यता भी कहा जाता है, एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक व्यसन है।"
यौन व्यसनियों का व्यवहार शराबियों और अन्य व्यसनियों के व्यवहार के समान होता है, जहाँ यौन संबंध एक नशे की तरह काम करता है। शराब की लत की एक सामान्य परिभाषा यह है कि व्यक्ति का इस मनोदशा बदलने वाले नशे के साथ एक विकृत संबंध होता है। यह तुरंत मनोदशा में बदलाव लाता है, हर बार असर करता है और उपयोगकर्ता अपनी लत पर

नियंत्रण खो देता है। शराबियों की तरह, यौन व्यसनियों का जीवन भी उनकी पसंदीदा "नशे" की निरंतर इच्छा के इर्द-गिर्द घूमता रहता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

210

"...डोमेन के अंतरिक्ष यान एक ही दिन में खरबों प्रकाश वर्ष की यात्रा करते हैं..."

जूलियन कैलेंडर वर्ष (ग्रेगोरियन कैलेंडर नहीं) के अनुसार, जिसमें 365.25 दिन होते हैं, यानी ठीक 31,557,600 सेकंड, प्रकाश वर्ष का सटीक मान 9,460,730,472,580,800 मीटर होता है। (एक मीटर = 3.281 फीट या 39.37 इंच)।

पृथ्वी से निकटतम तारे की दूरी 4.24 प्रकाश वर्ष है!

प्रकाश वर्ष के अंशों में मापी जाने वाली दूरियाँ आमतौर पर एक तारामंडल के भीतर स्थित वस्तुओं से संबंधित होती हैं। प्रकाश वर्ष में मापी जाने वाली दूरियों में निकटवर्ती तारों के बीच की दूरियाँ शामिल होती हैं, जैसे कि एक ही सर्पिल भुजा या गोलाकार तारामंडल में स्थित तारे।

एक किलोलाइट-वर्ष, जिसे संक्षेप में "kly" लिखा जाता है, एक हजार प्रकाश-वर्ष या लगभग 307 पारसेक के बराबर होता है। किलोलाइट-वर्ष का उपयोग आमतौर पर आकाशगंगा के भागों के बीच की दूरी मापने के लिए किया जाता है।

296

एक मेगालाइट-वर्ष, जिसे संक्षेप में "Mly" लिखा जाता है, दस लाख प्रकाश-वर्ष या लगभग 306,600 पारसेक के बराबर होता है। मेगालाइट-वर्ष का उपयोग आमतौर पर पड़ोसी आकाशगंगाओं और आकाशगंगा समूहों के बीच की दूरी मापने के लिए किया जाता है। एक गीगालाइट-वर्ष, जिसे संक्षेप में "Gly" कहते हैं, एक अरब प्रकाश-वर्ष के बराबर होता है — यह दूरी मापने के लिए उपयोग किए जाने वाले सबसे बड़े मापों में से एक है। एक गीगालाइट-वर्ष लगभग 306.6 मिलियन पारसेक के बराबर होता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

211

"...एक भारी गुरुत्वाकर्षण वाला, नाइट्रोजन/ऑक्सीजन वायुमंडल वाला ग्रह..."

पृथ्वी का वायुमंडल पृथ्वी ग्रह को घेरे हुए गैसों की एक परत है, जो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण द्वारा स्थिर रहती है। इसमें लगभग (आयतन के अनुसार) 78.08% नाइट्रोजन, 20.95% ऑक्सीजन, 0.93% आर्गन, 0.038% कार्बन डाइऑक्साइड, अन्य गैसों की थोड़ी मात्रा और जल वाष्प की परिवर्तनशील मात्रा (औसतन लगभग 1%) होती है। गैसों के इस मिश्रण को सामान्यतः वायु कहा जाता है। वायुमंडल पराबैंगनी सौर विकिरण को अवशोषित करके और दिन-रात के तापमान में अत्यधिक अंतर को कम करके पृथ्वी पर जीवन की रक्षा करता है। वायुमंडल और अंतरिक्ष के बीच कोई निश्चित सीमा रेखा नहीं है। यह धीरे-धीरे पतला होता जाता है और अंतरिक्ष में विलीन हो जाता है। वायुमंडल का तीन-चौथाई द्रव्यमान पृथ्वी की सतह से 11 किलोमीटर के भीतर स्थित है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, 80.5 किलोमीटर (50 मील) से अधिक की ऊंचाई पर यात्रा करने वाले लोगों को अंतरिक्ष यात्री कहा जाता है। 120 किलोमीटर (लगभग 75 मील या 400,000 फीट) की ऊंचाई वह सीमा है जहां पुनः प्रवेश के दौरान वायुमंडलीय प्रभाव स्पष्ट होने लगते हैं। 100 किलोमीटर (62 मील या 328,000 फीट) पर स्थित कार्मन रेखा को भी अक्सर वायुमंडल और अंतरिक्ष के बीच की सीमा रेखा माना जाता है।

मंगल ग्रह का वायुमंडल अपेक्षाकृत पतला है, और सतह पर वायुमंडलीय दबाव ओलंपस मॉन्स की चोटी पर लगभग 30 पा (0.03 किलो पा) से लेकर हेलास प्लैनिटिया की गहराई में

1155 पा (1.155 किलो पा) से अधिक तक भिन्न होता है। औसत सतह दबाव 600 पा (0.6 किलो पा) है, जबकि पृथ्वी का औसत सतह दबाव 101.3 किलो पा है। हालांकि, वायुमंडल की माप ऊंचाई लगभग 11 किमी है, जो पृथ्वी की 6 किमी से कुछ अधिक है। मंगल ग्रह का वायुमंडल 95% कार्बन डाइऑक्साइड, 3% नाइट्रोजन, 1.6% आर्गन से बना है, और इसमें ऑक्सीजन, जल और मीथेन की थोड़ी मात्रा पाई जाती है। वायुमंडल काफी धूल भरा है, जिसके कारण सतह से देखने पर मंगल ग्रह का आकाश भूरा दिखाई देता है; मंगल अन्वेषण रोवर्स से प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि निलंबित धूल के कण लगभग 1.5 माइक्रोमीटर व्यास के हैं।

सूर्य से दूसरे ग्रह शुक्र का वायुमंडल पृथ्वी के वायुमंडल से कहीं अधिक घना और गर्म है। शुक्र की सतह का तापमान 740 K (467°C) और दाब 93 बार है। शुक्र के वायुमंडल में सल्फ्यूरिक अम्ल से बने घने और स्थिर बादल मौजूद हैं, जिनके कारण सतह का प्रकाशीय अवलोकन असंभव है। शुक्र की सतह की विशेषताओं के बारे में जानकारी केवल पृथ्वी और वेनेरा 15-16 द्वारा किए गए रडार इमेजिंग और मैगेलन अंतरिक्ष यानों द्वारा प्राप्त की गई है। शुक्र के वायुमंडल में मुख्य गैसें कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन हैं, जो कुल अणुओं का क्रमशः 96.5% और 3.5% हैं। अन्य रासायनिक यौगिक बहुत कम मात्रा में मौजूद हैं।

शुक्र ग्रह का वायुमंडल तीव्र परिसंचरण और अति-घूर्णन की अवस्था में है। पूरा वायुमंडल मात्र चार दिनों में ग्रह का चक्कर लगा लेता है (अति-घूर्णन), जो कि नक्षत्र के 243 दिनों के घूर्णन काल की तुलना में बहुत कम समय है। अति-घूर्णन को सहारा देने वाली हवाएँ 100 मीटर प्रति सेकंड की गति से चलती हैं। शुक्र के ध्रुवों के पास ध्रुवीय भंवर नामक प्रतिचक्रवाती संरचनाएँ स्थित हैं। इनमें हवा नीचे की ओर बहती है। प्रत्येक भंवर दो आँखों वाला होता है और बादलों का एक विशिष्ट S-आकार का पैटर्न दिखाता है।

शुक्र ग्रह के वायुमंडल को अंतरिक्ष से केवल आयनमंडल और पतले प्रेरित चुंबकमंडल द्वारा ही अलग किया जाता है। ये सौर पवन से वायुमंडल की रक्षा करते हैं, जो आमतौर पर इसमें गहराई तक प्रवेश नहीं कर पाती। हालांकि, ये जल के क्षय को रोकने में असमर्थ हैं, जो प्रेरित चुंबकपूंछ के माध्यम से सौर पवन द्वारा लगातार उड़ा दिया जाता है।
सतह पर कठोर परिस्थितियों के बावजूद, ग्रह की सतह से लगभग 50 किमी से 65 किमी ऊपर वायुमंडलीय दबाव और तापमान पृथ्वी के लगभग समान है, जिससे इसका ऊपरी वायुमंडल सौर मंडल का सबसे पृथ्वी-समान क्षेत्र बन जाता है, यहाँ तक कि मंगल की सतह से भी अधिक। दबाव और तापमान में समानता और इस तथ्य के कारण कि सांस लेने योग्य हवा (21% ऑक्सीजन, 78% नाइट्रोजन) शुक्र पर एक उत्थापनकारी गैस है, ठीक उसी तरह जैसे हीलियम पृथ्वी पर उत्थापनकारी गैस है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
212
"...जोहान्स गुटेनबर्ग..."
जोहान्स जेन्सफ्लेश ज़ुर लाडेन ज़ुम गुटेनबर्ग (लगभग 1400 - 3 फरवरी, 1468) एक जर्मन सुनार और प्रिंटर थे, जिन्हें यूरोप में चल प्रकार की छपाई (लगभग 1439) और विश्व स्तर पर यांत्रिक छपाई का आविष्कार करने का श्रेय दिया जाता है। उनकी प्रमुख कृति, गुटेनबर्ग बाइबिल, जिसे 42-पंक्ति बाइबिल के नाम से भी जाना जाता है, को इसकी उच्च सौंदर्य और तकनीकी गुणवत्ता के लिए सराहा गया है।
हालांकि गुटेनबर्ग अपने जीवनकाल में आर्थिक रूप से सफल नहीं हुए, लेकिन छपाई की तकनीक तेजी से फैली और समाचार और किताबें पहले की तुलना में यूरोप भर में बहुत तेजी से पहुंचने लगीं। इसने बढ़ते पुनर्जागरण को बढ़ावा दिया और वैज्ञानिक प्रकाशन को बहुत सुगम बनाकर, यह बाद की वैज्ञानिक क्रांति का एक प्रमुख उत्प्रेरक बना। कहा जाता है कि गुटेनबर्ग ने कहा था: "मुझे सीसे के 26 सैनिक दे दो और मैं दुनिया को जीत लूंगा।"
धर्म सुधार आंदोलन में मुद्रण की भी अहम भूमिका थी: मार्टिन लूथर ने पाया कि उनके द्वारा अपने चर्च के दरवाजे पर लगाए गए 95 सिद्धांत मुद्रित होकर व्यापक रूप से प्रसारित हुए;

इसके बाद उन्होंने अपने क्षमादान विरोधी रुख को रेखांकित करते हुए ब्रॉडशीट भी जारी कीं (विडंबना यह है कि क्षमादान गुटेनबर्ग द्वारा मुद्रित की गई पहली वस्तुओं में से एक थे)। ब्रॉडशीट का विकास समाचार पत्रों में हुआ और इसने आज के जनसंचार माध्यमों को परिभाषित किया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

213

"...जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर..."

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर (12 जुलाई, 1864 - 5 जनवरी, 1943) एक अमेरिकी वनस्पति शोधकर्ता और कृषि विज्ञान शिक्षक थे, जिन्होंने अलबामा के टस्केगी में टस्केगी संस्थान में कृषि विस्तार में काम किया, और पूर्व दासों को आत्मनिर्भरता के लिए खेती की तकनीक सिखाई।

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने मूंगफली के तीन सौ और सोयाबीन, पेकान और शकरकंद के सैकड़ों उपयोग खोजे थे। दक्षिणी किसानों को आर्थिक रूप से मदद करने के लिए उन्होंने जो चीजें सुझाईं, उनमें चिपकने वाले पदार्थ, एक्सल ग्रीस, ब्लीच, छाछ, मिर्च की चटनी, ईंधन ब्रिकेट, स्याही, इंस्टेंट कॉफी, लिनोलियम, मेयोनेज़, मीट टेंडराइज़र, मेटल पॉलिश, कागज, प्लास्टिक, फुटपाथ, शेविंग क्रीम, शू पॉलिश, सिंथेटिक रबर, टैल्कम पाउडर और लकड़ी का रंग शामिल थे। जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर को 1925 से 1927 के बीच तीन पेटेंट (एक सौंदर्य प्रसाधनों के लिए और दो पेंट और रंग के लिए) जारी किए गए थे; हालांकि, अंततः वे व्यावसायिक रूप से सफल नहीं हुए। इन पेटेंटों और कुछ खाद्य व्यंजनों के अलावा, उन्होंने अपने उत्पादों को बनाने के लिए कोई सूत्र या प्रक्रिया नहीं छोड़ी। उन्होंने कोई प्रयोगशाला नोटबुक भी नहीं रखी।

298

कार्वर की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ मूंगफली से प्राप्त औद्योगिक उत्पादों के अलावा अन्य क्षेत्रों में थीं, जिनमें कृषि विस्तार शिक्षा, नस्लीय संबंधों में सुधार, बच्चों का मार्गदर्शन, कविता, चित्रकला, धर्म, सतत कृषि की वकालत और पौधों एवं प्रकृति के प्रति सम्मान शामिल हैं। वे अफ्रीकी-अमेरिकियों के लिए एक आदर्श व्यक्ति और कड़ी मेहनत, सकारात्मक दृष्टिकोण और अच्छी शिक्षा के महत्व का उदाहरण थे। उनकी विनम्रता, मानवतावाद, सौम्य स्वभाव, मितव्ययिता और आर्थिक भौतिकवाद से दूर रहने की प्रवृत्ति की भी व्यापक रूप से प्रशंसा की गई है।
उनकी सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक यह थी कि उनकी उपलब्धियों और बहुमुखी प्रतिभाओं की प्रसिद्धि ने उस समय की व्यापक रूढ़िवादिता को गलत साबित कर दिया कि अश्वेत जाति बौद्धिक रूप से श्वेत जाति से हीन होती है। 1941 में, "टाइम" पत्रिका ने उन्हें "ब्लैक लियोनार्डो" का नाम दिया।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
214
"...जोनास साल्क..."
जोनास एडवर्ड साल्क (28 अक्टूबर, 1914 - 23 जून, 1995) एक अमेरिकी जीवविज्ञानी और चिकित्सक थे, जो पहले प्रभावी पोलियो वैक्सीन के अनुसंधान और विकास के लिए सबसे अच्छी तरह से जाने जाते हैं।
1955 में एडवर्ड आर. मुरो द्वारा "सी इट नाउ" कार्यक्रम में साक्षात्कार के दौरान, साल्क से पूछा गया: "इस टीके का पेटेंट किसके पास है?" अपने आविष्कार के लिए लाभ-प्रेरणा की आवश्यकता की अपेक्षा से आश्चर्यचकित होकर, उन्होंने उत्तर दिया: "कोई पेटेंट नहीं है। क्या आप सूर्य का पेटेंट करा सकते हैं?"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
215
"...रिचर्ड ट्रेविथिक..."

रिचर्ड ट्रेविथिक (जन्म 13 अप्रैल, 1771 कॉर्नवाल में - मृत्यु 22 अप्रैल, 1833 केंट में) एक अंग्रेज आविष्कारक, खनन इंजीनियर और पहले कार्यरत रेलवे स्टीम लोकोमोटिव के निर्माता थे।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

216

"... पुनर्जागरण..."

पुनर्जागरण (फ्रेंच शब्द Renaissance से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पुनर्जन्म"; इतालवी: Rinascimento, re- "पुनः" और nascere "जन्म लेना" से मिलकर बना है) एक सांस्कृतिक आंदोलन था जो लगभग 14 वीं से 17 वीं शताब्दी तक चला। इसकी शुरुआत मध्य युग के उत्तरार्ध में इटली में हुई और बाद में यह पश्चिमी यूरोप के बाकी हिस्सों में फैल गया। इसमें शास्त्रीय स्रोतों पर आधारित ज्ञान का पुनरुद्धार, चित्रकला में रेखीय परिप्रेक्ष्य का विकास और शैक्षिक सुधार शामिल थे। पुनर्जागरण में अधिकांश बौद्धिक क्षेत्रों में विकास हुआ, लेकिन यह शायद अपने कलात्मक पहलू और लियोनार्डो दा विंची और माइकल एंजेलो जैसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तियों के योगदान के लिए सबसे अधिक जाना जाता है, जिन्होंने "पुनर्जागरण पुरुष" शब्द को प्रेरित किया है।

हालाँकि, उन्नीसवीं शताब्दी तक फ्रांसीसी शब्द पुनर्जागरण ने उस सांस्कृतिक आंदोलन का वर्णन करने में लोकप्रियता हासिल नहीं की थी जो 13 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध (1200 ईस्वी - 1300 ईस्वी) में शुरू हुआ था।

इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इतालवी कलाकार और आलोचक जियोर्जियो वासारी (1511-1574) ने अपनी पुस्तक 'कलाकारों का जीवन' (1550 में प्रकाशित) में किया था। पुस्तक में वासारी गोथिक कला की बर्बरता से एक अलगाव को परिभाषित करने का प्रयास कर रहे थे: कलाएँ

299

रोमन साम्राज्य के पतन के साथ ही इतालवी कला का पतन हो गया था और केवल सिमाबू (1240-1301) और गियोटो (1267-1337) जैसे टस्कन कलाकारों ने ही इस गिरावट को पलटना शुरू किया। वासारी के अनुसार, प्राचीन कला इतालवी कला के पुनर्जन्म में केंद्रीय भूमिका निभाती थी।

12 वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में पारंपरिक उत्पादन साधनों के प्रबंधन और आर्थिक विकास के तरीकों में नए आविष्कारों और नवाचारों की गति में आमूलचूल परिवर्तन आया। एक शताब्दी से भी कम समय में, विश्व भर में मानव इतिहास के पिछले हज़ार वर्षों की तुलना में कहीं अधिक आविष्कार विकसित और उपयोगी रूप से लागू किए गए। इस कालखंड में मुद्रण, बारूद, चश्मे, बेहतर घड़ी, एस्ट्रोलैब और उन्नत जहाजों सहित कई महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति हुई। इन दोनों अंतिम प्रगति ने अन्वेषण युग के आरंभ को संभव बनाया। अल्फ्रेड क्रॉस्बी ने अपनी पुस्तक "द मेजर ऑफ रियलिटी: क्वांटिफिकेशन इन वेस्टर्न यूरोप, 1250-1600" में इस तकनीकी क्रांति के कुछ पहलुओं का वर्णन किया है और प्रौद्योगिकी के अन्य प्रमुख इतिहासकारों ने भी इसका उल्लेख किया है।

• • • •

• • •

•

पवनचक्की का सबसे पुराना लिखित रिकॉर्ड इंग्लैंड के यॉर्कशायर से मिलता है, जो 1185 का है। कागज का निर्माण इटली में लगभग 1270 में शुरू हुआ था।

चरखा 13 वीं शताब्दी में यूरोप (संभवतः भारत से) लाया गया था। चुंबकीय कंपास ने दिशा-निर्देश में सहायता की, जो पहली बार 12 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यूरोप पहुंचा था।

चश्मे का आविष्कार 1280 के दशक के उत्तरार्ध में इटली में हुआ था।

एस्ट्रोलैब इस्लामी स्पेन के रास्ते यूरोप लौटा।

1202 में लियोनार्डो ऑफ पीसा ने अपनी पुस्तक लिबर अबासी के माध्यम से यूरोप में हिंदू-अरबी अंकों का परिचय कराया।

पश्चिमी क्षेत्र में पतवार के पिछले हिस्से पर लगे होने का सबसे पुराना ज्ञात चित्रण लगभग 1180 ईस्वी के चर्चों पर उकेरी गई मूर्तियों में पाया जा सकता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
217
"...पिछले दो वर्षों में पृथ्वी पर परीक्षण और उपयोग किए गए विस्फोटों में सभी प्रकार के जीवन को नष्ट करने की क्षमता है..."
"प्रलयकारी यंत्र एक काल्पनिक संरचना है - आमतौर पर एक हथियार - जो पृथ्वी पर सभी जीवन को नष्ट कर सकता है, या स्वयं पृथ्वी को नष्ट कर सकता है (जिससे "प्रलय" आ जाएगा, जो पृथ्वी ग्रह के अंत के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है)।
प्रलयकारी यंत्रों का वर्णन साहित्य और कला में विशेष रूप से 20 वीं शताब्दी में देखने को मिलता है, जब विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुई प्रगति ने मनुष्यों को दुनिया या उस पर मौजूद सभी जीवन (या कम से कम मानव जीवन) को नष्ट करने का एक निश्चित और तर्कसंगत तरीका सोचने की अनुमति दी। विज्ञान कथा शैली की कई उत्कृष्ट कृतियाँ इस विषय को उठाती हैं, विशेष रूप से एम. पी. शील की 'द पर्पल क्लाउड' (1901), जिसमें एक गैस के आकस्मिक रिसाव से ग्रह पर सभी लोग मारे जाते हैं।
परमाणु हथियारों, विशेषकर हाइड्रोजन बमों के आगमन के बाद से, वे आमतौर पर काल्पनिक प्रलयकारी उपकरणों के प्रमुख घटक रहे हैं। 1950 के दशक में रैंड के रणनीतिकार हरमन कान ने एक "प्रलयकारी मशीन" का प्रस्ताव रखा था, जिसमें हाइड्रोजन बमों के भंडार से जुड़ा एक कंप्यूटर होगा, जिसे किसी अन्य राष्ट्र द्वारा आसन्न परमाणु हमले के संकेत पर सभी बमों को विस्फोटित करने और पृथ्वी को परमाणु विकिरण से नहलाने के लिए प्रोग्राम किया जाएगा। ऐसी योजना, भले ही काल्पनिक थी, कई लोगों के लिए पारस्परिक रूप से सुनिश्चित विनाश की रणनीति के पीछे आत्मघाती तर्क की चरम सीमा का प्रतीक थी, और स्टेनली टीवी शो में इसका प्रसिद्ध रूप से उपहास किया गया था।
300

1964 में बनी कुब्रिक की फिल्म, डॉ. स्ट्रेंजेलोव या: हाउ आई लर्न्ड टू स्टॉप वरीइंग एंड लव द बॉम्ब। यह फिल्म 'बिनीथ द प्लैनेट ऑफ द एप्स' का भी एक मुख्य विषय है, जो प्रजाति विनाश के विषय के समानांतर चलता है। ऐसे अधिकांश मॉडल या तो इस तथ्य पर आधारित होते हैं कि हाइड्रोजन बम मनमाने ढंग से बड़े बनाए जा सकते हैं (टेलर-उलम डिजाइन देखें) या फिर उनमें ऐसे पदार्थ मिलाए जा सकते हैं जो लंबे समय तक चलने वाले और खतरनाक विकिरण उत्पन्न करते हैं (उदाहरण के लिए, कोबाल्ट बम)।
सोवियत संघ के एक प्रलयकारी उपकरण के बारे में कई अपुष्ट, किस्से-कहानियों वाली रिपोर्टें हैं, जिसमें 200 मेगाटन हाइड्रोजन बम शामिल है, जो एक अत्यधिक रेडियोधर्मी पदार्थ, जिसे आमतौर पर कोबाल्ट कहा जाता है, से ढका हुआ है (या वैकल्पिक रूप से, उसमें मिलाया गया है), जिसकी मात्रा इतनी पर्याप्त है कि यदि उपकरण में विस्फोट होता है तो पृथ्वी का वायुमंडल घातक विकिरण से भर जाएगा। इस उपकरण के बारे में विवरण स्रोत के अनुसार भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन दर्जनों अलग-अलग कहानियों में पर्याप्त समानताएं मौजूद हैं जो कम से कम कुछ हद तक सत्यता का संकेत देती हैं। विभिन्न स्रोतों के अनुसार, 1967 और 1985 के बीच किसी समय, उपकरण को डिजाइन किया गया था लेकिन कभी बनाया नहीं गया; बनाया गया था लेकिन कभी सक्रिय नहीं किया गया; बनाया और सक्रिय किया गया, लेकिन शीत युद्ध की समाप्ति पर नष्ट कर दिया गया; या इस तरह से डिजाइन और निर्मित किया गया कि इसे कभी निष्क्रिय नहीं किया जा सकता है, और यह आज भी मौजूद है। इसके स्थान और संचालन के तरीकों के बारे में कहानियां भी उतनी ही विविध हैं: यह मॉस्को के पश्चिम में एक भूमिगत बंकर में था, साइबेरिया, यूक्रेन, आदि; इसे एक विशेष रॉकेट बूस्टर पर स्थापित किया गया था जो सक्रिय होने पर इसे ऊपरी वायुमंडल में पहुंचा देगा; दरअसल, ये सोवियत संघ की पश्चिमी सीमा पर कुछ-कुछ अंतरालों पर रखे गए बमों की एक श्रृंखला थी; इन्हें क्रेमलिन के आदेश पर, एक विशेष कंप्यूटर द्वारा स्वचालित रूप से, भूकंपीय ट्रिगर द्वारा, या आने वाली मिसाइलों का पता चलने पर विस्फोटित किया जाना था। इसके कई और संस्करण भी मौजूद हैं, जैसे कि एक संस्करण जिसमें उपकरण को

उत्तरी सागर में बंदरगाहों के बीच बेतरतीब ढंग से यात्रा करने वाले एक अज्ञात मालवाहक जहाज के गोदाम में स्थायी रूप से स्थापित।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

218

"... आदर्श..."

विज्ञान के इतिहासकार थॉमस कुह्न ने इस शब्द को इसका समकालीन अर्थ दिया जब उन्होंने इसे किसी विशेष समयावधि के दौरान एक वैज्ञानिक अनुशासन को परिभाषित करने वाली प्रथाओं के समूह को संदर्भित करने के लिए अपनाया। कुह्न स्वयं आदर्श और सामान्य विज्ञान जैसे शब्दों को प्राथमिकता देते थे, जिनके अधिक सटीक दार्शनिक अर्थ हैं। हालाँकि, अपनी पुस्तक 'वैज्ञानिक क्रांतियों की संरचना' में कुह्न एक वैज्ञानिक प्रतिमान को इस प्रकार परिभाषित करते हैं:

• •

• •

किस बात का अवलोकन और गहन जांच-पड़ताल की जानी है

इस विषय से संबंधित जिन प्रकार के प्रश्न पूछे जाने चाहिए और जिनके उत्तरों की खोज की जानी चाहिए, वे इस विषय से संबंधित हैं।

इन प्रश्नों की संरचना कैसी होनी चाहिए?

वैज्ञानिक जांचों के परिणामों की व्याख्या कैसे की जानी चाहिए

इसके अलावा, ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में पैराडाइम को "एक पैटर्न या मॉडल, एक उदाहरण" के रूप में परिभाषित किया गया है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

219

"...निकोला टेस्ला..."

निकोला टेस्ला (10 जुलाई 1856 – 7 जनवरी 1943) एक आविष्कारक, भौतिक विज्ञानी, यांत्रिक अभियंता और विद्युत अभियंता थे। उनका जन्म क्रोएशियाई क्राजिना के सैन्य सीमावर्ती क्षेत्र स्मिलजान में हुआ था। वे ऑस्ट्रियाई साम्राज्य के एक सर्ब नागरिक थे और बाद

में अमेरिकी नागरिक बन गए। टेस्ला को 19 वीं सदी के उत्तरार्ध और 20 वीं सदी के आरंभिक वर्षों में विद्युत और चुंबकत्व के क्षेत्र में उनके कई क्रांतिकारी योगदानों के लिए जाना जाता है। टेस्ला के पेटेंट और सैद्धांतिक कार्य

उन्होंने आधुनिक प्रत्यावर्ती धारा (एसी) प्रणालियों की नींव रखी, जिनमें बहुचरण विद्युत वितरण प्रणाली और एसी मोटर शामिल हैं, जिनके द्वारा उन्होंने द्वितीय औद्योगिक क्रांति की शुरुआत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टेस्ला के समकालीन जीवनीकारों ने उन्हें "बीसवीं सदी का आविष्कारक" और "आधुनिक विद्युत का संरक्षक संत" कहा है। 1893 में वायरलेस संचार (रेडियो) के प्रदर्शन और "करंट युद्ध" में विजय प्राप्त करने के बाद, उन्हें अमेरिका के सबसे महान विद्युत अभियंता के रूप में व्यापक रूप से सम्मानित किया गया। उनके प्रारंभिक कार्यों ने आधुनिक विद्युत अभियांत्रिकी में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनकी कई खोजें अभूतपूर्व महत्व की थीं। इस दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका में, टेस्ला की प्रसिद्धि इतिहास या लोकप्रिय संस्कृति में किसी भी अन्य आविष्कारक या वैज्ञानिक के बराबर थी, लेकिन उनके विलक्षण व्यक्तित्व और वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के बारे में अविश्वसनीय और कभी-कभी विचित्र दावों के कारण, उन्हें अंततः बहिष्कृत कर दिया गया और "पागल वैज्ञानिक" माना गया। अपने वित्त पर कभी अधिक ध्यान न देने के कारण, टेस्ला का 86 वर्ष की आयु में गरीबी में निधन हो गया।

विद्युत चुंबकत्व और इंजीनियरिंग पर अपने कार्यों के अलावा, टेस्ला ने रोबोटिक्स, रिमोट कंट्रोल, रडार और कंप्यूटर विज्ञान की स्थापना में और बैलिस्टिक्स, परमाणु भौतिकी और सैद्धांतिक भौतिकी के विस्तार में विभिन्न स्तरों पर योगदान दिया। 1943 में, संयुक्त राज्य अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय ने उन्हें रेडियो का आविष्कारक माना।

उन्होंने रोंटजेन की खोज से पहले कई प्रयोग किए (जिनमें अपने हाथ की हड्डियों की तस्वीरें लेना भी शामिल था; बाद में, उन्होंने ये तस्वीरें रोंटजेन को भेजीं) लेकिन उन्होंने अपने निष्कर्षों को व्यापक रूप से प्रचारित नहीं किया; उनके अधिकांश शोध मार्च 1895 में फिफ्थ एवेन्यू प्रयोगशाला में लगी आग में नष्ट हो गए।

विद्युत चालकता पर आधारित "बिना तारों के विद्युत ऊर्जा संचरण" के लिए एक "विश्व प्रणाली" प्रस्तावित की गई है, जिसमें दो बिंदुओं के बीच प्रवाहित होने वाली धारा के माध्यम से विभिन्न प्राकृतिक माध्यमों में संचरण का उपयोग उपकरणों को शक्ति प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस सिद्धांत का उपयोग करने वाली एक व्यावहारिक वायरलेस ऊर्जा संचरण

प्रणाली में, ट्रांसमीटर-रिसीवर स्टेशनों के ठीक ऊपर हवा में एक ऊर्ध्वाधर आयनित चैनल बनाने के लिए उच्च-शक्ति वाली पराबैंगनी किरण का उपयोग किया जा सकता है। इसी अवधारणा का उपयोग आभासी बिजली की छड़ों, इलेक्ट्रोलेजर इलेक्ट्रोशॉक हथियार में किया जाता है, और वाहनों को निष्क्रिय करने के लिए भी इसका प्रस्ताव दिया गया है।
टेस्ला ने 1891 में ही विद्युत चालकता पर आधारित "तारों के बिना विद्युत ऊर्जा का संचरण" प्रदर्शित किया था। टेस्ला प्रभाव (टेस्ला के सम्मान में नामित) इस प्रकार के विद्युत चालन के अनुप्रयोग के लिए पुरातन शब्द है (अर्थात, अंतरिक्ष और पदार्थ के माध्यम से ऊर्जा का संचलन; न कि केवल एक चालक के पार वोल्टेज का उत्पादन)।
टेस्ला ने अंतरिक्ष में व्याप्त ऊर्जा का दोहन करने पर भी शोध किया। उनका मानना था कि यह केवल समय की बात है जब मनुष्य अपनी मशीनों को प्रकृति के मूल चक्र से जोड़ने में सफल हो जाएगा। उन्होंने कहा, "कुछ पीढ़ियों के बीतने से पहले, हमारी मशीनें ब्रह्मांड के किसी भी बिंदु पर प्राप्त होने वाली शक्ति से संचालित होंगी।" — "उच्च विभव और उच्च आवृत्ति की प्रत्यावर्ती धाराओं के साथ प्रयोग" (फरवरी 1892)
टेस्ला ने विद्युत और चुंबकत्व की अंतरिक्ष और समय को विकृत करने या बदलने की शक्ति और इस शक्ति को नियंत्रित करने की प्रक्रिया के बारे में सिद्धांत देना शुरू किया। अपने जीवन के अंतिम समय में, टेस्ला प्रकाश को कण और तरंग दोनों के रूप में मानने के विचार से मोहित थे, जो क्वांटम भौतिकी में पहले से ही शामिल एक मूलभूत सिद्धांत था। इस शोध ने विद्युत चुम्बकीय तरंगों को एक निश्चित पैटर्न में नियंत्रित करके "प्रकाश की दीवार" बनाने के विचार को जन्म दिया। प्रकाश की यह रहस्यमयी दीवार समय, स्थान, गुरुत्वाकर्षण और पदार्थ को इच्छानुसार बदलने में सक्षम बनाती, और टेस्ला के कई ऐसे प्रस्तावों को जन्म दिया जो विज्ञान कथाओं से सीधे निकले हुए प्रतीत होते हैं, जिनमें गुरुत्वाकर्षण-विरोधी हवाई जहाज, टेलीपोर्टेशन और समय यात्रा शामिल हैं।

टेस्ला द्वारा प्रस्तावित सबसे विचित्र आविष्कार संभवतः "विचार" था।
उन्होंने "फोटोग्राफी मशीन" का आविष्कार किया। उनका तर्क था कि मन में उत्पन्न विचार रेटिना में एक संबंधित छवि बनाता है, और इस तंत्रिका संचरण के विद्युत डेटा को मशीन में पढ़ा और रिकॉर्ड किया जा सकता है। संग्रहित जानकारी को फिर एक कृत्रिम ऑप्टिक तंत्रिका के माध्यम से संसाधित किया जा सकता है और एक व्यूस्क्रीन पर दृश्य पैटर्न के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।
टेस्ला के एक अन्य सैद्धांतिक आविष्कार को आमतौर पर टेस्ला की उड़ने वाली मशीन के रूप में जाना जाता है, जो देखने में आयन-चालित विमान जैसी लगती है। टेस्ला का दावा था कि उनके जीवन के लक्ष्यों में से एक ऐसी उड़ने वाली मशीन बनाना था जो हवाई जहाज के इंजन, पंखों, एइलरों, प्रोपेलरों या ईंधन स्रोत के बिना चल सके। शुरुआत में, टेस्ला ने एक ऐसे विमान के विचार पर चिंतन किया जो जमीन पर स्थित बेस स्टेशनों से संचालित इलेक्ट्रिक मोटर का उपयोग करके उड़ सके। समय बीतने के साथ, टेस्ला ने सुझाव दिया कि शायद ऐसा विमान पूरी तरह से विद्युत-यांत्रिक रूप से संचालित हो सकता है। सैद्धांतिक रूप से इसकी आकृति सिगार या तश्तरी जैसी होगी।
कोलोराडो स्प्रिंग्स की प्रयोगशाला में, टेस्ला ने कुछ असामान्य संकेत देखे, जिन्हें बाद में उन्होंने शुक्र या मंगल ग्रह से आने वाले अलौकिक रेडियो संचार के प्रमाण के रूप में माना। उन्होंने अपने रिसीवर से बार-बार आने वाले संकेतों को देखा, जो तूफानों और पृथ्वी के शोर से प्राप्त संकेतों से काफी अलग थे। विशेष रूप से, उन्होंने बाद में याद किया कि ये संकेत एक, दो, तीन और चार क्लिक के समूहों में एक साथ दिखाई देते थे। टेस्ला ने इस घटना से पहले और इसके बाद कई बार कहा था कि उन्हें लगता है कि उनके आविष्कारों का उपयोग अन्य ग्रहों से संवाद करने के लिए किया जा सकता है। यहां तक कि यह भी दावा किया गया है कि उन्होंने इसी उद्देश्य के लिए एक "टेस्लास्कोप" का आविष्कार किया था।
"मेरा मानना है कि अंतरिक्ष वक्रित नहीं हो सकता, क्योंकि इसका सीधा सा कारण यह है कि इसमें कोई गुण हो ही नहीं सकते। यह कहना भी उतना ही तर्कसंगत है कि ईश्वर में गुण होते हैं। उनमें गुण नहीं होते, बल्कि केवल विशेषताएँ होती हैं और ये हमारी ही रचना हैं। गुणों की

बात हम तभी कर सकते हैं जब अंतरिक्ष में पदार्थ व्याप्त हो। यह कहना कि विशाल पिंडों की उपस्थिति में अंतरिक्ष वक्रित हो जाता है, यह कहने के बराबर है कि कोई चीज किसी चीज पर क्रिया नहीं कर सकती। मैं स्वयं इस विचार से सहमत नहीं हूँ।" -- न्यूयॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यून, 11 सितंबर, 1932

टेस्ला ने आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत के काम की आलोचना करते हुए इसे इस प्रकार बताया:

"...एक शानदार गणितीय आवरण जो लोगों को मोहित करता है, चकाचौंध करता है और अंतर्निहित त्रुटियों के प्रति अंधा बना देता है। यह सिद्धांत बैंगनी वस्त्र पहने एक भिखारी की तरह है जिसे अज्ञानी लोग राजा समझ लेते हैं..., इसके प्रतिपादक प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं लेकिन वे वैज्ञानिक नहीं बल्कि तत्वमीमांसावादी हैं..." -- न्यूयॉर्क टाइम्स, 11 जुलाई, 1935, पृष्ठ 23, अध्याय 8

निकोला टेस्ला ने 20 वीं और 21 वीं सदी का आविष्कार किया। 'नए सिद्धांतों के अन्वेषक' टेस्ला ने ही बहु-चरण प्रत्यावर्ती धारा जनरेटरों का आविष्कार किया था, जो आज दुनिया के हर शहर को रोशन करते हैं। वे रेडियो के मूल आविष्कारक थे, और उन्होंने मार्कोनी से 5 साल पहले अपने विचारों को लिखित रूप में प्रकाशित किया और जनता के सामने प्रदर्शित किया। सदी के अंत तक, उन्होंने टेलीविजन की व्यवहार्यता पर चर्चा की थी; उन्होंने माणिक और हीरे को वाष्पीकृत करने में सक्षम परमाणु संपीडन यंत्र बनाया; उन्होंने वायरलेस नियॉन लैंप बनाए जो आज के पारंपरिक बल्बों से अधिक प्रकाश देते थे; उन्होंने इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप, लेजर और एक्स-रे फोटोग्राफ के पूर्ववर्ती उपकरण बनाए। 1895 में जैसे ही रोन्टजेन ने अपनी प्रसिद्ध तस्वीरें प्रकाशित कीं, उन्होंने अपने शैडोग्राफ एक्स-रे के अन्वेषक को भेज दिए। टेस्ला ने किरलियन-जैसे उपकरण भी बनाए।

ये तस्वीरें मशहूर होने से 75 साल पहले की हैं। यह सब 1900 से पहले हुआ था!

टेस्ला ने, एडिसन ने नहीं, बहु-चरण अल्टरनेटरों का आविष्कार किया जो हमारी आधुनिक सभ्यता को शक्ति प्रदान करते हैं; और टेस्ला को ही अंततः मार्कोनी के वायरलेस पेटेंट से सम्मानित किया गया, टेस्ला और मार्कोनी दोनों की मृत्यु के बहुत बाद। कुल मिलाकर, टेस्ला ने 1200 से अधिक पेटेंटों में योगदान दिया, और हम

वर्तमान में उनमें से केवल लगभग 200 का ही उपयोग किया जा रहा है। टेस्ला कॉइल को तो लगभग सभी लोग याद करते हैं, लेकिन कितने लोगों को याद है कि उन्होंने 1900 से पहले विद्युत शक्ति के वायरलेस संचरण का प्रदर्शन किया था?

जब टेस्ला को उनके विद्युत आविष्कारों के लिए एडिसन के साथ नोबेल पुरस्कार साझा करने का प्रस्ताव दिया गया, तो उन्होंने इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को ठुकरा दिया! एडिसन को कभी नोबेल पुरस्कार नहीं मिला।

टेस्ला के हवाले से कहा गया है:

'अंधेरे में मेरी इंद्रियां चमगादड़ जैसी थीं, और मैं माथे पर एक अजीब सी सिहरन भरी सनसनी से 12 फीट की दूरी पर किसी वस्तु की उपस्थिति का पता लगा सकता था...'

बुडापेस्ट में, मेरे और घड़ी के बीच तीन कमरों की दूरी होने के बावजूद, मैं घड़ी की टिक-टिक सुन सकता था। कमरे में किसी मेज पर मक्खी के बैठने से मेरे कान में हल्की सी आवाज़ आती थी। कुछ मील दूर से गुजरती हुई गाड़ी से मेरा पूरा शरीर कांप उठता था। 20 या 30 मील दूर से आती हुई ट्रेन की सीटी से जिस बेंच या कुर्सी पर मैं बैठा होता था, वह इतनी ज़ोर से कांपती थी कि दर्द असहनीय हो जाता था। मेरे पैरों के नीचे की ज़मीन भी कांपती थी। लगातार...'

टेस्ला ने 1892 के एक व्याख्यान में कहा था:

कुछ पीढ़ियों के बीतने से पहले, हमारी मशीनें ब्रह्मांड के किसी भी बिंदु पर प्राप्त होने वाली शक्ति से संचालित होंगी। पूरे अंतरिक्ष में ऊर्जा व्याप्त है। क्या यह ऊर्जा स्थिर है या गतिज? यदि स्थिर है, तो हमारी आशाएँ व्यर्थ हैं; यदि गतिज है - और यह हम निश्चित रूप से जानते हैं - तो यह केवल समय की बात है जब मनुष्य अपनी मशीनों को प्रकृति के चक्र से जोड़ने में सफल हो जाएगा।

संदर्भ: http://www.world-mysteries.com/dougy.htm



"...तकनीक की 'रिवर्स इंजीनियरिंग' करने में सक्षम होंगे..."

1942 में सेना में शामिल होने के बाद, फिलिप कोर्सो ने यूरोप में सेना खुफिया विभाग में सेवा की। 1945 में, कोर्सो ने द्वितीय विश्व युद्ध के 10,000 यहूदी शरणार्थियों को रोम से फिलिस्तीन तक सुरक्षित पहुंचाने की व्यवस्था की। कोरियाई युद्ध (1950-1953) के दौरान, कोर्सो ने जनरल डगलस मैकआर्थर के अधीन खुफिया विभाग, सुदूर पूर्व कमान की विशेष परियोजना शाखा के प्रमुख के रूप में खुफिया कर्तव्यों का निर्वहन किया। उनके प्राथमिक कर्तव्यों में से एक उत्तर कोरिया में दुश्मन के युद्धबंदियों (पीओडब्ल्यू) शिविरों पर नज़र रखना था। कोर्सो प्रत्येक शिविर में रखे गए अमेरिकी और अन्य संयुक्त राष्ट्र के युद्धबंदियों की अनुमानित संख्या और उनके साथ किए गए व्यवहार की जांच करने के प्रभारी थे। बाद में आयोजित पीओडब्ल्यू/लापता मामलों पर सीनेट की चयन समिति की कांग्रेस सुनवाई में, फिलिप कोर्सो ने गवाही दी कि सैकड़ों अमेरिकी युद्धबंदियों को इन शिविरों में छोड़ दिया गया था।
कॉर्सो ने राष्ट्रपति आइजनहावर की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में चार साल (1953-1957) तक सेवा की। 1961 में, वे लेफ्टिनेंट जनरल आर्थर ट्रूडो के अधीन, सेना अनुसंधान और विकास विभाग में पेंटागन के विदेशी प्रौद्योगिकी डेस्क के प्रमुख बने। 1963 में सैन्य खुफिया विभाग छोड़ने के बाद, कॉर्सो सीनेटर स्ट्रोम थुरमंड के प्रमुख सहायक बन गए। 1964 में, कॉर्सो को वारेन आयोग के सदस्य सीनेटर रिचर्ड रसेल जूनियर के साथ जॉन एफ. कैनेडी की हत्या की जांच के लिए नियुक्त किया गया।
फिलिप कोर्सो ने अपनी पुस्तक 'द डे आफ्टर रोसवेल' (सह-लेखक विलियम जे. बिर्नेस) में बताया है कि कैसे उन्होंने 1947 में न्यू मैक्सिको के रोसवेल में हुए एक विमान दुर्घटना से बरामद अलौकिक कलाकृतियों की देखरेख की।

कोर्सो के अनुसार, इन कलाकृतियों की रिवर्स इंजीनियरिंग ने अप्रत्यक्ष रूप से त्वरित कण बीम उपकरणों, फाइबर ऑप्टिक्स, लेजर, एकीकृत सर्किट चिप्स और केवलर सामग्री के विकास को जन्म दिया।
1947 में, कोर्सो के अनुसार, केंद्रीय खुफिया विभाग के पहले निदेशक, एडमिरल रोस्को एच. के नेतृत्व में एक गुप्त सरकारी समूह (देखें मैजेस्टिक 12) का गठन किया गया था।
हिलेंकोएटर द्वारा निर्देशित इस पहल का एक उद्देश्य अलौकिक अंतरिक्ष यानों से संबंधित सभी जानकारी एकत्र करना था। कोर्सो कहते हैं कि अमेरिकी प्रशासन ने जनता की नज़र में उड़न तश्तरियों के अस्तित्व को ही नकार दिया। कोर्सो आगे बताते हैं कि सामरिक रक्षा पहल (एसडीआई), जिसे स्टार वार्स भी कहा जाता है, का लक्ष्य दुश्मन के आने वाले युद्धक हथियारों के इलेक्ट्रॉनिक मार्गदर्शन प्रणालियों को नष्ट करने और दुश्मन के अंतरिक्ष यानों को निष्क्रिय करने की क्षमता हासिल करना था, जिनमें हिलेंकोएटर द्वारा निर्देशित अंतरिक्ष यान भी शामिल थे।
बाह्य अंतरिक्ष से उत्पत्ति।"
--- संदर्भ: Wikipedia.org
221
"...यान के 'न्यूरल नेटवर्क' के अनुरूप।"
परंपरागत रूप से, न्यूरल नेटवर्क शब्द का प्रयोग जैविक न्यूरॉन्स के नेटवर्क या सर्किट को संदर्भित करने के लिए किया जाता था। इस शब्द का आधुनिक उपयोग अक्सर कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क को संदर्भित करता है, जो कृत्रिम न्यूरॉन्स या नोड्स से बने होते हैं। इस प्रकार 'न्यूरल नेटवर्क' शब्द के दो अलग-अलग उपयोग हैं:
1) जैविक तंत्रिका नेटवर्क वास्तविक जैविक न्यूरॉन्स से बने होते हैं जो परिधीय तंत्रिका तंत्र या केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में आपस में जुड़े होते हैं या कार्यात्मक रूप से संबंधित होते हैं। तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में, प्रयोगशाला विश्लेषण में इन्हें अक्सर न्यूरॉन्स के उन समूहों के रूप में पहचाना जाता है जो एक विशिष्ट शारीरिक कार्य करते हैं।

2) कृत्रिम तंत्रिका नेटवर्क परस्पर जुड़े कृत्रिम न्यूरॉन्स (जैविक न्यूरॉन्स के गुणों की नकल करने वाले प्रोग्रामिंग संरचनाएं) से बने होते हैं। कृत्रिम तंत्रिका नेटवर्क का उपयोग जैविक तंत्रिका नेटवर्क को समझने के लिए या वास्तविक जैविक प्रणाली का मॉडल बनाए बिना कृत्रिम बुद्धिमत्ता की समस्याओं को हल करने के लिए किया जा सकता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
222
"...सूक्ष्म तार या तंतु..."
ट्रांजिस्टर का आविष्कार 1947 में हुआ था। इसे एक क्रांति माना गया। छोटा, तेज, भरोसेमंद और प्रभावी होने के कारण इसने जल्दी ही वैक्यूम ट्यूब की जगह ले ली। वैक्यूम ट्यूब की सीमाओं से मुक्त होकर, इंजीनियर अंततः अपने सपनों की विद्युत संरचनाओं को साकार करना शुरू कर सके।
ऐसा लगता है कि इंटीग्रेटेड सर्किट का आविष्कार होना तय था। दो अलग-अलग आविष्कारकों ने, जो एक-दूसरे की गतिविधियों से अनभिज्ञ थे, लगभग एक ही समय में लगभग एक जैसे इंटीग्रेटेड सर्किट (आईसी) का आविष्कार किया।
सिरेमिक आधारित सिल्क स्क्रीन सर्किट बोर्ड और ट्रांजिस्टर आधारित श्रवण यंत्रों में विशेषज्ञता रखने वाले इंजीनियर जैक किल्बी ने 1958 में टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स में काम करना शुरू किया। एक साल पहले, शोध इंजीनियर रॉबर्ट नोयस ने फेयरचाइल्ड सेमीकंडक्टर कॉर्पोरेशन की सह-स्थापना की थी। 1958 से 1959 तक, दोनों विद्युत इंजीनियर एक ही समस्या का हल खोजने में लगे थे: कम संसाधनों से अधिक उत्पादन कैसे किया जाए।
305

हालांकि पहला इंटीग्रेटेड सर्किट काफी अपरिष्कृत था और उसमें कुछ कमियां थीं, फिर भी इसका विचार क्रांतिकारी था। सभी भागों को एक ही धातु के ब्लॉक से बनाकर और उन्हें जोड़ने के लिए आवश्यक धातु को उसके ऊपर एक परत के रूप में जोड़कर, अलग-अलग घटकों की आवश्यकता समाप्त हो गई। अब तारों और घटकों को हाथ से जोड़ने की जरूरत नहीं रही। सर्किट को छोटा बनाया जा सकता था और निर्माण प्रक्रिया को स्वचालित किया जा सकता था।

जैक किल्बी (टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स) संभवतः एकीकृत परिपथ के आविष्कार के लिए सबसे प्रसिद्ध हैं, जिसके लिए उन्हें वर्ष 2000 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला था। एकीकृत परिपथ में अपनी सफलता के बाद किल्बी टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स के साथ ही रहे और अन्य चीजों के अलावा, उन्होंने उस टीम का नेतृत्व किया जिसने हाथ से पकड़े जाने वाले कैलकुलेटर का आविष्कार किया।

जैक किल्बी के नाम साठ से अधिक आविष्कारों के पेटेंट हैं और उन्हें पोर्टेबल कैलकुलेटर (1967) के आविष्कारक के रूप में भी जाना जाता है। 1970 में उन्हें राष्ट्रीय विज्ञान पदक से सम्मानित किया गया। रॉबर्ट नॉइस के नाम सोलह पेटेंट हैं और उन्होंने 1968 में इंटेल की स्थापना की, जिसने माइक्रोप्रोसेसर का आविष्कार किया। लेकिन दोनों ही व्यक्तियों के लिए एकीकृत परिपथ का आविष्कार मानव जाति के सबसे महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक है। लगभग सभी आधुनिक उत्पाद चिप तकनीक का उपयोग करते हैं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

223

"...इस वायरिंग का उपयोग प्रकाश, उप-प्रकाश और अति-प्रकाश स्पेक्ट्रम का पता लगाने और दृष्टि के लिए किया जाता है।"

ऑप्टिकल फाइबर कांच या प्लास्टिक से बना एक फाइबर होता है जिसे प्रकाश को उसकी लंबाई के साथ प्रवाहित करने के लिए डिज़ाइन किया जाता है। फाइबर ऑप्टिक्स अनुप्रयुक्त विज्ञान और इंजीनियरिंग का वह क्षेत्र है जो ऑप्टिकल फाइबर के डिज़ाइन और अनुप्रयोग से संबंधित है। ऑप्टिकल फाइबर का व्यापक रूप से फाइबर-ऑप्टिक संचार में उपयोग किया

जाता है, जो संचार के अन्य रूपों की तुलना में अधिक दूरी और उच्च डेटा दर पर संचरण की अनुमति देता है। धातु के तारों के स्थान पर फाइबर का उपयोग किया जाता है क्योंकि इनमें सिग्नल कम हानि के साथ प्रवाहित होते हैं और ये विद्युत चुम्बकीय हस्तक्षेप से अप्रभावित रहते हैं। ऑप्टिकल फाइबर का उपयोग सेंसर बनाने और कई अन्य अनुप्रयोगों में भी किया जाता है।
1952 में, भौतिक विज्ञानी नरिंदर सिंह कपानी ने ऐसे प्रयोग किए जिनसे टिंडल के पूर्व के अध्ययनों के आधार पर ऑप्टिकल फाइबर का आविष्कार हुआ; आधुनिक ऑप्टिकल फाइबर, जिसमें कांच के फाइबर को अधिक उपयुक्त अपवर्तक सूचकांक प्रदान करने के लिए एक पारदर्शी आवरण से लेपित किया जाता है, दशक के बाद में सामने आए।

1991 में, फोटोनिक क्रिस्टल के उभरते क्षेत्र ने फोटोनिक क्रिस्टल फाइबर (साइंस (2003), खंड 299, पृष्ठ 358) के विकास को जन्म दिया, जो पूर्ण आंतरिक परावर्तन के बजाय आवधिक संरचना से विवर्तन के माध्यम से प्रकाश को निर्देशित करता है। पहले फोटोनिक क्रिस्टल फाइबर 1996 में व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हुए। फोटोनिक क्रिस्टल फाइबर को पारंपरिक फाइबर की तुलना में अधिक शक्ति वहन करने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है, और विशिष्ट अनुप्रयोगों में उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए उनके तरंगदैर्ध्य-निर्भर गुणों में हेरफेर किया जा सकता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
224
"... शिल्प के आंतरिक भाग के कपड़े..."
"तकनीकी वस्त्र उन वस्त्र उत्पादों को कहा जाता है जिनका निर्माण सौंदर्य संबंधी उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता, बल्कि जहां कार्यक्षमता को प्राथमिक मानदंड माना जाता है। यह एक बड़ा और तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है और कई अन्य उद्योगों को सहयोग प्रदान करता है।"
ऐसी खबरें आ रही हैं कि जल्द ही वस्त्र उद्योग को इलेक्ट्रॉनिक्स के साथ सभी क्षेत्रों में एकीकृत किया जाएगा। भविष्य में पहनने योग्य कंप्यूटर लॉन्च किए जाएंगे, ये उन्नत कलाई घड़ियों आदि की तरह नहीं होंगे।

कपड़े में आईसी (इंटरैक्टिव इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस) लगाकर फैब्रिक कीबोर्ड और अन्य पहनने योग्य कंप्यूटर उपकरण विकसित किए जाएंगे। इस प्रकार के उत्पादों को इंटरेक्टिव इलेक्ट्रॉनिक टेक्सटाइल्स (आईईटी) के नाम से जाना जाता है। आईईटी के विकास में सहयोग हेतु कई विश्वविद्यालयों में शोध कार्य चल रहा है। मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में उपभोक्ताओं की बढ़ती रुचि से आईईटी उत्पादों की मांग में वृद्धि होगी।
तकनीकी वस्त्रों में ऑटोमोटिव अनुप्रयोगों के लिए वस्त्र संरचनाएं, चिकित्सा वस्त्र (जैसे प्रत्यारोपण), भू-वस्त्र (बांधों का सुदृढ़ीकरण), कृषि वस्त्र (फसल संरक्षण के लिए वस्त्र), सुरक्षात्मक वस्त्र (जैसे अग्निशामकों के लिए गर्मी और विकिरण से सुरक्षा, वेल्डरों के लिए पिघली धातुओं से सुरक्षा, चाकू से बचाव और बुलेटप्रूफ जैकेट), अंतरिक्ष सूट (अंतरिक्ष यात्रियों के लिए) शामिल हैं।
बायोटेक्सटाइल्स, कपड़ा रेशों से बनी संरचनाएं हैं जिन्हें विशिष्ट जैविक वातावरण में उपयोग के लिए डिज़ाइन किया गया है, जहां इनका प्रदर्शन कोशिकाओं और जैविक तरल पदार्थों के साथ जैव अनुकूलता और जैव स्थिरता पर निर्भर करता है। बायोटेक्सटाइल्स में प्रत्यारोपण योग्य उपकरण शामिल हैं जैसे कि शल्य चिकित्सा टांके, हर्निया की मरम्मत के लिए इस्तेमाल होने वाले कपड़े, धमनी ग्राफ्ट, कृत्रिम त्वचा और कृत्रिम हृदय के भाग। इनका सर्वप्रथम निर्माण 30 वर्ष पूर्व (1978) उत्तरी कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी के वस्त्र महाविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. मार्टिन डब्ल्यू. किंग द्वारा किया गया था।
चिकित्सा वस्त्रों का व्यापक समूह है जिसमें पट्टियाँ, घाव की ड्रेसिंग, अस्पताल के लिनेन, सुरक्षात्मक वस्त्र आदि शामिल हैं। एंटीसेप्टिक बायोटेक्सटाइल वे वस्त्र हैं जिनका उपयोग त्वचा पर जीवाणुओं के प्रसार को रोकने के लिए किया जाता है। ज़ियोलाइट और ट्राइक्लोसन वर्तमान में सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले अणु हैं। यह विशिष्ट गुण मधुमेह से प्रभावित पैरों में दुर्गंध या जीवाणुओं के प्रसार को रोकने में सहायक होता है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org

"... प्रकाश कणों या तरंगों को ऊर्जा के रूप में उत्पन्न करने, बढ़ाने और प्रवाहित करने के लिए तंत्र।"
1947 में, विलिस ई. लैम्ब और आर. सी. रेथरफोर्ड ने हाइड्रोजन स्पेक्ट्रा में स्पष्ट उत्तेजित उत्सर्जन की खोज की और उत्तेजित उत्सर्जन का पहला प्रदर्शन किया। 1950 में, अल्फ्रेड कैसलर (भौतिकी के लिए 1966 का नोबेल पुरस्कार) ने ऑप्टिकल पंपिंग की विधि प्रस्तावित की।
हालाँकि, शॉलो और टाउन्स के काम का पता 1940 और 50 के दशक के शुरुआती दौर* में लगाया जा सकता है और माइक्रोवेव स्पेक्ट्रोस्कोपी के क्षेत्र में उनकी रुचि थी, जो विभिन्न प्रकार के अणुओं की विशेषताओं को समझने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरी थी।
लेजर का आविष्कार, जिसका पूरा नाम 'प्रकाश प्रवर्धन द्वारा विकिरण का उत्तेजित उत्सर्जन' है, सन् 1958 में हुआ था। उस समय बेल लैब्स के शोधकर्ता आर्थर एल. शॉलो और बेल लैब्स के सलाहकार चार्ल्स एच. टाउन्स ने 'इन्फ्रारेड एंड ऑप्टिकल मेसर्स' नामक वैज्ञानिक शोधपत्र प्रकाशित किया था। अमेरिकन फिजिकल सोसाइटी की पत्रिका 'फिजिकल रिव्यू' में प्रकाशित इस शोधपत्र ने एक नए वैज्ञानिक क्षेत्र की शुरुआत की और अरबों डॉलर के उद्योग के द्वार खोल दिए।
कई अलग-अलग पदार्थों का उपयोग लेजर के रूप में किया जा सकता है। कुछ पदार्थ, जैसे रूबी लेजर, लेजर प्रकाश की छोटी-छोटी तरंगें उत्सर्जित करते हैं। वहीं, हीलियम-नियॉन गैस लेजर या तरल डाई लेजर जैसे अन्य पदार्थ प्रकाश की निरंतर किरण उत्सर्जित करते हैं।
*नोट: "द डे आफ्टर रोसवेल" नामक पुस्तक के अनुसार, रोसवेल "फ्लाइंग डिस्क" तकनीक से माइक्रोवेव और प्रकाश प्रक्षेपित करने वाले घटकों के बारे में रिपोर्ट पेंटागन के माध्यम से बेल लेबोरेटरीज को "लीक" की गई थीं।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

226

"जितने भी अस्तित्व और धारणाएं हैं, उतने ही ब्रह्मांड मौजूद हैं, जो अपने ही निरंतरता के भीतर समवर्ती रूप से विद्यमान हैं।"

बहुब्रह्मांड (या मेटा-ब्रह्मांड) अनेक संभावित ब्रह्मांडों (हमारे ब्रह्मांड सहित) का एक काल्पनिक समूह है जो मिलकर संपूर्ण वास्तविकता का निर्माण करते हैं। बहुब्रह्मांड के भीतर स्थित विभिन्न ब्रह्मांडों को कभी-कभी समानांतर ब्रह्मांड भी कहा जाता है। बहुब्रह्मांड की संरचना, इसके भीतर स्थित प्रत्येक ब्रह्मांड की प्रकृति और विभिन्न घटक ब्रह्मांडों के बीच संबंध, विचाराधीन विशिष्ट बहुब्रह्मांड परिकल्पना पर निर्भर करते हैं।

ब्रह्मांड विज्ञान, भौतिकी, खगोल विज्ञान, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र और कथा साहित्य, विशेष रूप से विज्ञान कथा और काल्पनिक साहित्य में बहुब्रह्मांडों की परिकल्पना की गई है।

विलियम जेम्स द्वारा गढ़ा गया विशिष्ट शब्द "मल्टीवर्स" विज्ञान कथा लेखक माइकल मूरकॉक द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था। इन संदर्भों में, समानांतर ब्रह्मांडों को "वैकल्पिक ब्रह्मांड", "क्वांटम ब्रह्मांड", "समानांतर दुनिया", "वैकल्पिक वास्तविकताएं", "वैकल्पिक समयरेखाएं" आदि भी कहा जाता है।

स्ट्रिंग थ्योरी के 11-आयामी विस्तार, जिसे एम-थ्योरी के नाम से जाना जाता है, के भीतर एक भिन्न प्रकार के मल्टीवर्स की कल्पना की गई है। एम-थ्योरी में हमारा ब्रह्मांड और अन्य ब्रह्मांड 11-आयामी अंतरिक्ष में झिल्लियों के बीच टकराव से निर्मित होते हैं। यह "क्वांटम मल्टीवर्स" में मौजूद ब्रह्मांडों से भिन्न है।

स्ट्रिंग लैंडस्केप सिद्धांत यह दावा करता है कि समाधानों के बहुत बड़े समूह में से प्रत्येक के लिए एक अलग ब्रह्मांड मौजूद है, जो तब उत्पन्न होता है जब दस आयामी स्ट्रिंग सिद्धांत को चार आयामी निम्न-ऊर्जा जगत में परिवर्तित किया जाता है जिसे हम देखते हैं।

चारों बहुब्रह्मांड स्तरों की एक सामान्य विशेषता यह है कि सबसे सरल और संभवतः सबसे सुरुचिपूर्ण सिद्धांत में स्वतः ही समानांतर ब्रह्मांड शामिल होते हैं। उन ब्रह्मांडों के अस्तित्व को नकारने के लिए, प्रयोगात्मक रूप से असमर्थित प्रक्रियाओं और तदर्थ मान्यताओं को जोड़कर

सिद्धांत को जटिल बनाना पड़ता है: परिमित स्थान, तरंग फलन का पतन और सत्तामीमांसा संबंधी विषमता। इसलिए हमारा निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि हमें कौन सा सिद्धांत अधिक निरर्थक और भद्दा लगता है: अनेक संसार या अनेक शब्द।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
227
"...राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक औचित्य के आधार पर।"
राजनीति, धर्म और अर्थशास्त्र का साझा सिद्धांत यह है कि ये सभी निहित स्वार्थों पर आधारित हैं। -- संपादक
"निहित स्वार्थ" की परिभाषा देखें:
"1) एक अस्तित्व या गैर-अस्तित्व योजना या एजेंडा जिसे इस तरह से "ढक दिया गया" है कि वह वास्तव में जो है उससे कुछ अलग लगे।
2) कोई भी व्यक्ति, समूह या संस्था जो अपने स्वयं के उद्देश्यों (योजनाओं या एजेंडा) की पूर्ति के लिए संचार को रोकता या नियंत्रित करता है।
-- संदर्भ: अंग्रेजी भाषा का शब्दकोश

308

"...पर्ल हार्बर पर जापानी हमले से ठीक पहले..."
"पर्ल हार्बर पर हमला 7 दिसंबर, 1941 को रविवार की सुबह 8 बजे जापानी नौसेना द्वारा हवाई के पर्ल हार्बर स्थित अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर किया गया एक अचानक हमला था, जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल हो गया। राष्ट्रपति रूजवेल्ट सहित कई पर्यवेक्षकों को अमेरिका और जापान के बीच शत्रुता की आशंका थी, जिन्होंने 1 दिसंबर, 1941 को एक गूढ़ जापानी संदेश पढ़ा और अपने सहायक हैरी हॉपकिंस से कहा, "इसका मतलब युद्ध है।"
हवाईयन समयानुसार 03:42 बजे, कमांडर एडमिरल चुइची नागुमो द्वारा हमलावर विमानों को लॉन्च करने से कुछ घंटे पहले, माइनस्वीपर यूएसएस कोंडोर ने बंदरगाह के प्रवेश द्वार के बाहर एक छोटी पनडुब्बी देखी और विध्वंसक पोत यूएसएस वार्ड को सतर्क किया। वार्ड शुरू में लक्ष्य का पता लगाने में असफल रहा। घंटों बाद, वार्ड ने द्वितीय विश्व युद्ध के प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका की पहली गोलीबारी की, जब उसने 06:37 बजे एक छोटी पनडुब्बी पर हमला किया और उसे डुबो दिया, संभवतः वही पनडुब्बी थी।
हमले के ठीक पहले, हमलावर विमानों का पता लगाया गया और उन पर नज़र रखी गई। यह काम सेना के एक रडार स्टेशन द्वारा किया जा रहा था, जिसे उस सुबह लगभग अनौपचारिक प्रशिक्षण अभ्यास के रूप में संचालित किया जा रहा था। ओपाना प्वाइंट रडार स्टेशन, जिसे दो सैनिकों (प्राइवेट लॉकार्ड और इलियट) द्वारा संचालित किया जा रहा था, ने आने वाले विमानों का पता लगाया और उनकी राहत टीम ने विमानवाहक पोतों पर लौट रहे विमानों का पता लगाया। पर्ल हार्बर में लगभग निष्क्रिय रूप से कार्यरत चेतावनी सूचना केंद्र के प्रभारी, कम प्रशिक्षित कनिष्ठ अधिकारी (लेफ्टिनेंट केर्मिट ए. टायलर) ने शुरुआती रडार संकेतों को मुख्य भूमि से आने वाले अमेरिकी बमवर्षक विमानों का एक दल समझा। वास्तव में, वे बमवर्षक विमान हमले के बीच में, कुछ अलग दिशा से, आ ही गए।
इसके अलावा, हमले शुरू होने से कुछ घंटे पहले बंदरगाह के प्रवेश द्वार के बाहर जापानी पनडुब्बियों को देखा गया और उन पर हमला किया गया (यूएसएस वार्ड द्वारा), और कम से

कम एक पनडुब्बी को डुबो दिया गया - यह सब विमानों के रडार रेंज में आने से पहले ही हो गया था। इससे विमानों को तितर-बितर करने और टोही उड़ान भरने के लिए पर्याप्त समय मिल सकता था, लेकिन एक बार फिर, ड्यूटी पर तैनात अधिकारियों की प्रतिक्रिया में देरी हुई। यह तर्क दिया गया है कि रक्षा बलों की दिशाओं का अनुसरण न करने से यूएसएस एंटरप्राइज बच गई। यदि उसे सही दिशा दी गई होती, तो वह छह विमानवाहक पोतों वाली जापानी हमलावर सेना से टकरा सकती थी।
हमले के बाद, हमलावर सेना की तलाश पर्ल हार्बर के दक्षिण में केंद्रित कर दी गई, जिससे अमेरिकी प्रतिक्रिया में भ्रम और अप्रभावीता बनी रही।
इस बहस में एक और मुद्दा यह है कि न तो एडमिरल किमेल और न ही जनरल शॉर्ट को कभी कोर्ट मार्शल का सामना करना पड़ा। आरोप है कि ऐसा इसलिए किया गया ताकि साजिशकर्ताओं द्वारा सार्वजनिक न की जाने वाली जानकारी का खुलासा न हो। पूछे जाने पर, किमेल ने जवाब दिया, "क्या इतिहासकारों को बाद में और अधिक जानकारी मिलेगी?" इस पर किमेल का जवाब था: '...मैं आपको बताता हूँ कि मैं क्या मानता हूँ। मुझे लगता है कि अधिकांश दोषी ठहराने वाले सबूत...
रिकॉर्ड नष्ट कर दिए गए हैं। ... मुझे संदेह है कि सच्चाई कभी सामने आएगी। ..." यह भी उतना ही, बल्कि शायद उससे भी अधिक, संभव है कि युद्ध के दौरान जापानी कोड पढ़े जाने के तथ्य को उजागर होने से बचाने के लिए ऐसा किया गया हो।"
संदर्भ: http://en.wikipedia.org/wiki/Pearl_Harbor_advance-knowledge_debate
229
"...जनरल सिमिंगटन,"...
उनके पहले पद अधिशेष संपत्ति बोर्ड के अध्यक्ष (1945), संपत्ति प्रशासन के प्रशासक (1945-1946) और वायु सेना के सहायक युद्ध सचिव (1946-1947) थे। 18 सितंबर, 1947 को वायु सेना सचिव कार्यालय की स्थापना की गई और
309

सिमिंगटन पहले सचिव बने। सिमिंगटन ने एक बार भूमिगत महामानवों के संभावित अस्तित्व के संबंध में सैन्य सूत्रों से औपचारिक रूप से एक रिपोर्ट का अनुरोध किया था।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

230

"...जनरल नाथन ट्विनिंग, ..."

उन्हें वायु सामग्री कमान का कमांडर नियुक्त किया गया और 1947 में उन्होंने अलास्का वायु कमान का कार्यभार संभाला। 1947 में, ट्विनिंग को यूएफओ रिपोर्टों का अध्ययन करने के लिए कहा गया; उन्होंने इस घटना का औपचारिक अध्ययन करने की सिफारिश की; प्रोजेक्ट साइन इसी का परिणाम था। जब होयट वैंडेनबर्ग 1953 के मध्य में सेवानिवृत्त हुए, तो ट्विनिंग को प्रमुख के रूप में चुना गया; उनके कार्यकाल के दौरान, हवाई शक्ति पर आधारित व्यापक जवाबी कार्रवाई राष्ट्रीय रणनीति बन गई। 1957 में, राष्ट्रपति आइजनहावर ने ट्विनिंग को संयुक्त प्रमुखों का अध्यक्ष नियुक्त किया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

231

"...जनरल जिम्मी डूलिटिल, ..."

पर्ल हार्बर पर हमले और द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका के प्रवेश के तुरंत बाद, 2 जनवरी, 1942 को डूलिटिल को लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पदोन्नत किया गया और वे जापानी धरती पर पहले हवाई हमले की योजना बनाने के लिए सेना वायु सेना मुख्यालय गए। उन्होंने स्वेच्छा से भाग लिया और जनरल एच.एच. अर्नोल्ड की स्वीकृति प्राप्त करके विमानवाहक पोत यूएसएस हॉर्नेट से 16 बी-25 मध्यम बमवर्षकों के हमले का नेतृत्व किया, जिसका लक्ष्य टोक्यो, कोबे, ओसाका और नागोया थे। यह उनके सैन्य करियर का पहला और एकमात्र युद्ध अभियान था।

डूलिटिल को सफल अभियान की योजना बनाने और उसका नेतृत्व करने के लिए व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट द्वारा मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया। इतिहासकारों द्वारा डूलिटिल रेड को संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण जनसंपर्क

विजय के रूप में देखा जाता है। यद्यपि जापानी युद्ध उद्योग को मामूली नुकसान हुआ, लेकिन इस हमले ने जापानियों को दिखा दिया कि उनका देश अजेय नहीं है।
1944 में आई फिल्म 'थर्टी सेकंड्स ओवर टोक्यो' में स्पेंसर ट्रेसी ने और 2001 में आई फिल्म 'पर्ल हार्बर' में एलेक बाल्डविन ने डूलिटिल का किरदार निभाया था, जिसमें डूलिटिल के हमले को दर्शाया गया था।
10 मई, 1946 को डूलिटिल को निष्क्रिय आरक्षित सेवा में वापस भेज दिया गया और वे शेल ऑयल में उपाध्यक्ष और बाद में निदेशक के रूप में लौट आए। वे द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिकी सेना में सेवा देने वाले सर्वोच्च रैंक के आरक्षित अधिकारी थे।
संपादक --
मार्च 1951 में, उन्हें वायु सेना के चीफ ऑफ स्टाफ के विशेष सहायक के रूप में नियुक्त किया गया, जहाँ उन्होंने नागरिक के रूप में वैज्ञानिक मामलों में कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप वायु सेना के बैलिस्टिक मिसाइल और अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू हुए। (?!)
"उन्होंने 28 फरवरी, 1959 को वायु सेना से सेवानिवृत्ति ले ली, लेकिन अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी प्रयोगशालाओं के बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में अपने देश की सेवा करना जारी रखा।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
232
"...जनरल वैंडेनबर्ग..."
310

लेफ्टिनेंट जनरल वैंडेनबर्ग को 1 अक्टूबर, 1947 को वायु सेना का वाइस चीफ ऑफ स्टाफ नियुक्त किया गया और उन्हें जनरल के पद पर पदोन्नत किया गया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

233

"...जनरल नॉरस्टैड..."

"1 अक्टूबर, 1947 को, युद्ध विभाग को सेना और वायु सेना विभागों में विभाजित करने के बाद, जनरल नॉरस्टैड को वायु सेना के संचालन के लिए उप चीफ ऑफ स्टाफ नियुक्त किया गया था।"

-- संदर्भ: Wikipedia.org

234

"...चार्ल्स लिंडबर्ग भी कार्यालय में मौजूद थे..."

चार्ल्स लिंडबर्ग ने अटलांटिक महासागर के पार अकेले उड़ान भरने वाले पहले पायलट के रूप में अचानक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। उन्होंने 20-21 मई 1927 को न्यूयॉर्क के गार्डन सिटी स्थित रूजवेल्ट हवाई अड्डे से पेरिस (ले बॉर्गेट हवाई अड्डे) तक 33.5 घंटे में उड़ान भरी। उनका विमान एकल-इंजन वाला विमान, 'द स्पिरिट ऑफ सेंट लुइस' था। लिंडबर्ग की इस उपलब्धि के लिए उन्हें ऑर्टिग पुरस्कार मिला; पुरस्कार राशि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उनकी साहसिक उड़ान के कारण मिली प्रशंसा थी। 13 जून 1927 को न्यूयॉर्क शहर के फिफ्थ एवेन्यू में उनके सम्मान में एक भव्य परेड आयोजित की गई।

इस उड़ान के बाद उनकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि वे विमानन गतिविधियों के लिए एक महत्वपूर्ण आवाज़ बन गए, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रीय विमानन सलाहकार समिति की केंद्रीय समिति भी शामिल थी। उनके और उनकी उड़ान के इर्द-गिर्द हुए व्यापक प्रचार ने विमान उद्योग को बढ़ावा दिया और संशयवादी जनता को हवाई यात्रा को गंभीरता से लेने के लिए प्रेरित किया। लिंडबर्ग को विमानन जगत में ध्रुवीय हवाई मार्गों का प्रदर्शन और मानचित्रण करने, उच्च ऊंचाई पर उड़ान भरने की तकनीकों को विकसित करने और ईंधन

की खपत को कम करके विमान की उड़ान सीमा बढ़ाने के लिए जाना जाता है। ये नवाचार आधुनिक अंतरमहाद्वीपीय हवाई यात्रा का आधार हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1944 में प्रशांत क्षेत्र में बिताए अपने छह महीनों में, लिंडबर्ग ने जापानी ठिकानों पर लड़ाकू बमवर्षक हमलों में भाग लिया और लगभग 50 लड़ाकू मिशनों को अंजाम दिया (एक नागरिक के रूप में)। लिंडबर्ग के साथ सेवा करने वाले अमेरिकी मरीन और आर्मी एयर फोर्स के पायलट उनकी प्रशंसा और सम्मान करते थे, उनकी बहादुरी की सराहना करते थे और उनकी देशभक्ति का बचाव करते थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, वे कनेक्टिकट में अमेरिकी वायु सेना के चीफ ऑफ स्टाफ और पैन अमेरिकन वर्ल्ड एयरवेज दोनों के सलाहकार के रूप में शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करते रहे। उनकी 1953 में प्रकाशित पुस्तक "द स्पिरिट ऑफ सेंट लुइस", जिसमें उन्होंने अपनी बिना रुके अटलांटिक पार की उड़ान का वर्णन किया है, ने 1954 में पुलित्जर पुरस्कार जीता। ड्वाइट डी. आइजनहावर ने 1954 में लिंडबर्ग को आर्मी एयर कॉर्प्स में उनके पद पर बहाल किया और उन्हें ब्रिगेडियर जनरल बनाया। उसी वर्ष, उन्होंने संयुक्त राज्य वायु सेना अकादमी के स्थल की स्थापना के लिए गठित कांग्रेसी सलाहकार पैनल में अपनी सेवाएं दीं। दिसंबर 1968 में, उन्होंने पृथ्वी की कक्षा छोड़ने वाली पहली मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान की पूर्व संध्या पर अपोलो 8 के दल से मुलाकात की।

1960 के दशक से ही लिंडबर्ग प्राकृतिक जगत के संरक्षण के प्रबल समर्थक बन गए। उन्होंने हंपबैक और ब्लू व्हेल जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए अभियान चलाया, तसाडे नामक "आदिम" फिलिपिनो समूह और अफ्रीकी जनजातियों के लिए संरक्षण स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और एक राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना का समर्थन किया। मूल निवासियों का अध्ययन करते हुए,

फिलीपींस के वनस्पतियों और जीवों के अध्ययन के अलावा, वे फिलीपीन ईगल के संरक्षण के प्रयास में भी शामिल हो गए।
अपने अंतिम वर्षों में, लिंडबर्ग इस बात से चिंतित थे कि दुनिया अपने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ असंतुलित हो गई है; उन्होंने उस संतुलन को पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया और सुपरसोनिक विमानवाहक जहाजों के परिचय के खिलाफ आवाज उठाई।
लिंडबर्ग के जीवन के उत्तरार्ध में दिए गए भाषणों और लेखों में प्रौद्योगिकी और प्रकृति दोनों के प्रति उनके प्रेम और इस आजीवन विश्वास पर जोर दिया गया कि "मानव जाति की सभी उपलब्धियों का मूल्य केवल इस हद तक है कि वे जीवन की गुणवत्ता को संरक्षित और बेहतर बनाती हैं।"
1967 में लाइफ पत्रिका में प्रकाशित एक लेख में उन्होंने कहा था, "मानव भविष्य विज्ञान के ज्ञान को प्रकृति की बुद्धिमत्ता के साथ संयोजित करने की हमारी क्षमता पर निर्भर करता है।"
-- संदर्भ: Wikipedia.org
235
"...डॉ. विलकॉक्स..."
पॉल एच. विलकॉक्स, एम.डी., ट्रैवर्स सिटी स्टेट हॉस्पिटल, ट्रैवर्स सिटी, मिशिगन।
क्या निम्नलिखित लेख के लेखक वही व्यक्ति हैं, जो अगस्त 1947 में अमेरिकन जर्नल ऑफ साइकियाट्री में प्रकाशित हुआ था?
एकदिशीय धाराओं का उपयोग करके किए गए 23,000 से अधिक उपचारों की समीक्षा
1. गंभीर रूप से बीमार 40 प्रतिशत रोगियों के वार्ड व्यवहार में उचित प्रकार की इलेक्ट्रोशॉक थेरेपी से पर्याप्त और बार-बार उपचार करने पर महत्वपूर्ण सुधार देखा गया। महीनों और वर्षों में जब भी रोग का पुनरावर्तन हो, उसका उपचार किया जाना चाहिए।
2. शुरुआती मामलों में से कम से कम 60%, जिनकी उम्र 60 वर्ष या उससे कम थी, पर्याप्त उपचार मिलने पर 1 वर्ष के भीतर पुनर्वासित हो गए और उपचार शुरू होने के बाद दूसरे वर्ष के अंत तक 65% पुनर्वासित हो गए।

3. पर्याप्त उपचार का अर्थ है अपेक्षित सुधार होने तक गहन उपचार और पुनरावृत्ति होने पर उसका गहन उपचार। कोई भी रोगी, जो अन्यथा उपयुक्त हो लेकिन 1 वर्ष के बाद भी ठीक न हुआ हो, उसे 20 से कम उपचारों में पर्याप्त उपचार नहीं मिला है।
4. एक आदर्श चिकित्सा वह है जो मस्तिष्क को संचयी क्षति पहुंचाए बिना लाभकारी परिणाम प्राप्त करती है, जिससे आवश्यकता पड़ने पर वर्षों तक इसका बार-बार उपयोग किया जा सकता है।
5. इस आदर्श स्थिति के करीब पहुंचने के लिए, इस शोध पत्र में समीक्षा किए गए रोगियों के उपचार में अपेक्षाकृत कम तीव्रता वाली 60-चक्र स्पंदित प्रत्यक्ष धारा का उपयोग किया गया है। इस तकनीक के साथ कंकाल संबंधी जटिलताओं का प्रतिशत भी असाधारण रूप से कम रहा है।
-- संदर्भ: अमेरिकन जर्नल ऑफ साइकियाट्री 104:100-112, अगस्त 1947, doi: 10.1176/appi.ajp.104.2.100 © 1947 अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन
236
"...इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफ..."
312

इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफी (ईईजी) मस्तिष्क द्वारा उत्पन्न विद्युत गतिविधि का मापन है, जिसे खोपड़ी पर लगाए गए इलेक्ट्रोड के माध्यम से रिकॉर्ड किया जाता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

237

"...उन्होंने अपना परिचय श्री जॉन रीड के रूप में दिया..."

अमेरिकी अपराधविज्ञानी जॉन एडवर्ड रीड ने 1945 में पॉलीग्राफ विकसित किया, जो एक वैज्ञानिक रिकॉर्डिंग उपकरण है जिसे पूछताछ के दौरान व्यक्ति की शारीरिक प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसे आमतौर पर झूठ पकड़ने वाली मशीन के रूप में जाना जाता है, पॉलीग्राफ का उपयोग मुख्य रूप से आपराधिक जांच में किया जाता है, हालांकि इसका उपयोग रोजगार और सुरक्षा जांच प्रक्रियाओं में भी होता है। चूंकि कोई भी मशीन अचूक रूप से यह नहीं पहचान सकती कि कोई व्यक्ति झूठ बोल रहा है या नहीं, इसलिए पॉलीग्राफ के परिणामों का उपयोग अन्य साक्ष्यों, अवलोकनों और सूचनाओं के साथ किया जाता है। उदाहरण के लिए, इस परीक्षण द्वारा दर्शाया गया भावनात्मक तनाव झूठ बोलने के कारण ही नहीं होता है। दूसरी ओर, कोई व्यक्ति जन्मजात झूठा हो सकता है और इसलिए गलत उत्तर देते समय कोई मापने योग्य शारीरिक प्रतिक्रिया नहीं दिखा सकता है। सामान्य घबराहट, व्यक्तिगत शारीरिक या मानसिक असामान्यताएं, बेचैनी, परीक्षण से पहले अत्यधिक पूछताछ, या किसी प्रश्न के प्रति उदासीनता भी परीक्षण की सटीकता को प्रभावित करती है। हालांकि, पॉलीग्राफ इस बात का मूल्यांकन करने का आधार प्रदान कर सकता है कि व्यक्ति के उत्तर सत्य हैं या नहीं। यह परीक्षण अपराधों के आरोपी निर्दोष व्यक्तियों को बरी करने में भी सहायक रहा है।

पॉलीग्राफ वास्तव में कई उपकरणों का संयोजन है जो रक्तचाप, नाड़ी और श्वसन में होने वाले परिवर्तनों को एक साथ रिकॉर्ड करता है। त्वचा की सतह की विद्युत चालकता को भी मापा जा सकता है - पसीने की ग्रंथियों की बढ़ी हुई गतिविधि त्वचा की विद्युत धारा प्रवाहित करने की क्षमता को कम कर देती है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

238

"...झूठ पकड़ने वाली मशीन की जांच..."

डॉ. विलियम मौल्टन मार्स्टन (9 मई, 1893 - 2 मई, 1947) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, नारीवादी सिद्धांतकार, आविष्कारक और कॉमिक बुक लेखक थे, जिन्होंने वंडर वुमन चरित्र का निर्माण किया। उनकी पत्नी एलिजाबेथ होलोवे मार्स्टन और ओलिव बायरन (जो उनके साथ बहुविवाह संबंध में रहती थीं) जैसी दो सशक्त महिलाओं ने इस चरित्र के लिए आदर्श के रूप में काम किया और इसके निर्माण को बहुत प्रभावित किया।

डॉ. विलियम मौल्टन मार्स्टन को सिस्टोलिक रक्तचाप परीक्षण का आविष्कारक माना जाता है, जिसका उपयोग धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए किया जाता था और जो आधुनिक पॉलीग्राफ का एक घटक बन गया। उनके बेटे के अनुसार, मार्स्टन की पत्नी एलिजाबेथ हॉलोवे मार्स्टन भी सिस्टोलिक रक्तचाप परीक्षण के विकास में शामिल थीं: "मार्स्टन के बेटे के अनुसार, उनकी मां एलिजाबेथ, मार्स्टन की पत्नी, ने ही उन्हें सुझाव दिया था कि 'जब वह क्रोधित या उत्तेजित होती थीं, तो उनका रक्तचाप बढ़ जाता था'। यही वंडर वुमन के सत्य के लासो का आधार बना।"

एफबीआई विलियम मौल्टन मार्स्टन को, जिन्होंने झूठ पकड़ने वाली मशीन का आविष्कार किया और चार्ल्स मौल्टन के छद्म नाम से कॉमिक बुक चरित्र वंडर वुमन को बनाया, एक 'धोखेबाज' और 'सनकी' मानती थी। उन पर आरोप है कि उन्होंने 1938 में जिलेट रेजर कंपनी के लिए किए गए एक अध्ययन के परिणाम को गलत तरीके से प्रस्तुत किया था, जिसके लिए उन्हें कथित तौर पर लगभग 30,000 डॉलर मिले थे, जो उस समय एक बड़ी रकम थी। इन आशंकाओं के बावजूद, एफबीआई आज भी मार्स्टन के आविष्कार (पॉलीग्राफ, न कि सत्य की रस्सी) का उपयोग जांच में मार्गदर्शन करने के साथ-साथ आवेदकों और कर्मचारियों की स्क्रीनिंग के लिए करती है।

313

-- संदर्भ: Wikipedia.org

239

"...सत्य सीरम..."

सोडियम थायोपेंटल, जिसे सोडियम पेंटोथल के नाम से बेहतर जाना जाता है (एबॉट का एक ट्रेडमार्क)

सोडियम थायोपेंटल (प्रयोगशालाओं में निर्मित), थायोपेंटल, थायोपेंटोन सोडियम, या ट्रैपेनल, एक तीव्र-प्रभावी अल्पकालिक बार्बिट्यूरेट सामान्य एनेस्थेटिक है। यह अंतःशिरा द्वारा दिया जाने वाला अति-अल्पकालिक बार्बिट्यूरेट है। सोडियम थायोपेंटल एक अवसादक है और कभी-कभी पूछताछ के दौरान इसका उपयोग किया जाता है - दर्द पैदा करने के लिए नहीं (वास्तव में, इसका विपरीत प्रभाव हो सकता है), बल्कि विषय के संकल्प को कमजोर करने और उसे दबाव के प्रति अधिक आज्ञाकारी बनाने के लिए।

कुछ जगहों पर थियोपेंटल का इस्तेमाल आज भी ट्रुथ सीरम के रूप में किया जाता है। बार्बिट्यूरेट नामक दवाएँ मस्तिष्क के उच्च कोटि के कार्यों को कम करती हैं। मनोचिकित्सकों का मानना है कि झूठ बोलना सच बोलने से कहीं अधिक जटिल होता है, इसलिए उच्च कोटि के कार्यों को दबाने से "सच" का खुलासा हो सकता है। हालांकि, थियोपेंटल के प्रभाव में लिए गए इकबालिया बयानों की विश्वसनीयता संदिग्ध है; यह दवा व्यक्तियों को बातूनी और पूछताछकर्ताओं के साथ सहयोग करने वाला बना देती है, लेकिन एक अनुभवी झूठा या वह व्यक्ति जिसने पहले से ही कोई झूठी कहानी पक्की कर रखी हो, दवा के प्रभाव में भी आसानी से झूठ बोल सकता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

240

"...गवाह संरक्षण कार्यक्रम..."

(जिसे गवाह सुरक्षा कार्यक्रम, या विटसेक के नाम से भी जाना जाता है) की स्थापना 1970 के संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम के शीर्षक V के तहत की गई थी, जो बदले में उस तरीके को निर्धारित करता है जिसके द्वारा अमेरिकी अटॉर्नी जनरल संघीय सरकार के किसी गवाह

या संभावित गवाह, या संगठित अपराध या अन्य गंभीर अपराधों से संबंधित आधिकारिक कार्यवाही में किसी राज्य सरकार के गवाह या संभावित गवाह के स्थानांतरण और संरक्षण का प्रावधान कर सकता है। देखें 18 यू.एस.सी.ए. 3521 आदि।
संघीय सरकार राज्यों को भी अनुदान देती है ताकि वे इसी तरह की सेवाएं प्रदान कर सकें। इस संघीय कार्यक्रम को WITSEC (संघीय गवाह संरक्षण कार्यक्रम) कहा जाता है और इसकी स्थापना 1960 के दशक के उत्तरार्ध में जेराल्ड शूर ने की थी, जब वे अमेरिकी न्याय विभाग के संगठित अपराध और रैकेटिंग अनुभाग में कार्यरत थे। अधिकांश गवाहों को अमेरिकी मार्शल सेवा द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाती है, जबकि जेल में बंद गवाहों की सुरक्षा संघीय कारागार ब्यूरो का कर्तव्य है।
सामान्यतः, गवाह को नया नाम और पता दिया जाता है। गवाहों को सलाह दी जाती है कि वे अपना पहला नाम बनाए रखें और अंतिम नाम के पहले अक्षर से शुरू होने वाले नाम चुनें। अमेरिकी मार्शल सेवा नए दस्तावेज़ उपलब्ध कराती है, आवास और रोज़गार खोजने में सहायता करती है और गवाह के आत्मनिर्भर होने तक वजीफा प्रदान करती है, लेकिन यह वजीफा कम भी हो सकता है।
यदि अमेरिकी मार्शल सेवा को लगता है कि गवाह नौकरी खोजने के लिए सक्रिय प्रयास नहीं कर रहा है, तो यह प्रक्रिया बंद कर दी जाएगी। गवाहों को अपने गृहनगर वापस नहीं जाना चाहिए और न ही संपर्क करना चाहिए।
असुरक्षित परिवार के सदस्य या पूर्व सहयोगी। अपराध करने वाले संरक्षित गवाहों में से लगभग 17 प्रतिशत फिर से अपराध करते हैं, जबकि पैरोल पर रिहा हुए लोगों में से लगभग 40 प्रतिशत अपराध की ओर लौट जाते हैं। इसी कारण कांग्रेस समितियों ने WITSEC और अन्य गवाह संरक्षण कार्यक्रमों को गवाहों को स्थानांतरित करने से पहले स्थानीय अधिकारियों को सूचित करने के लिए बाध्य किया है।
कैलिफोर्निया, इलिनोइस और न्यूयॉर्क सहित कई राज्यों में ऐसे अपराधों के लिए अपने स्वयं के गवाह संरक्षण कार्यक्रम हैं जो संघीय कार्यक्रम के अंतर्गत नहीं आते हैं। राज्य द्वारा संचालित कार्यक्रम संघीय कार्यक्रम की तुलना में कम व्यापक सुरक्षा प्रदान करते हैं।
-- संदर्भ: Wikipedia.org

241

"...सुलेमान द मैग्निफिसेंट..."

सुलेमान प्रथम (ओटोमन तुर्की: सुलेमान, तुर्की: सुलेमान; तुर्की में लगभग हमेशा कानूनी रूप से सुल्तान सुलेमान) (6 नवंबर, 1494 - 5/6 सितंबर, 1566) ओटोमन साम्राज्य के दसवें और सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले सुल्तान थे, जिन्होंने 1520 से 1566 में अपनी मृत्यु तक शासन किया। पश्चिम में उन्हें सुलेमान द मैग्निफिसेंट और पूर्व में, ओटोमन कानूनी प्रणाली के पूर्ण पुनर्निर्माण के लिए विधिकार (तुर्की में कानूनी; अरबी में: अल-कानूनी) के रूप में जाना जाता है। सुलेमान 16 वीं शताब्दी के यूरोप के सर्वोपरि सम्राट बने, जिन्होंने ओटोमन साम्राज्य की सैन्य, राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के शिखर पर शासन किया। सुलेमान ने व्यक्तिगत रूप से ओटोमन सेनाओं का नेतृत्व करते हुए बेलग्रेड, रोड्स और हंगरी के अधिकांश ईसाई गढ़ों पर विजय प्राप्त की, इससे पहले कि 1529 में वियना की घेराबंदी में उनकी विजय पर रोक लग गई। उन्होंने अधिकांश फारसियों के साथ संघर्ष में उन्होंने मध्य पूर्व और अल्जीरिया तक फैले उत्तरी अफ्रीका के बड़े भूभाग पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। उनके शासनकाल में, ओटोमन नौसेना ने भूमध्य सागर से लेकर हिंद महासागर तक के समुद्रों पर अपना वर्चस्व कायम किया।

एक विस्तारित साम्राज्य के शासक के रूप में, सुलेमान ने स्वयं समाज, शिक्षा, कराधान और आपराधिक कानून से संबंधित विधायी परिवर्तन लागू किए। उनके द्वारा रचित कानून (या कानून) ने उनकी मृत्यु के बाद कई शताब्दियों तक साम्राज्य के स्वरूप को निर्धारित किया। सुलेमान न केवल स्वयं एक प्रख्यात कवि और सुनार थे, बल्कि वे संस्कृति के महान संरक्षक भी बने, जिन्होंने ओटोमन साम्राज्य के कलात्मक, साहित्यिक और स्थापत्य विकास के स्वर्ण युग की देखरेख की।

ओटोमन परंपरा से हटकर, सुलेमान ने हरम की एक लड़की से शादी की, जो बाद में हुर्रेम सुल्तान बनीं, जिनके दरबार में षड्यंत्र और सुल्तान पर उनकी शक्ति सुलेमान की तरह ही प्रसिद्ध हो गई।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

"...उसकी सहायक एक हरम की लड़की थी जो गुलामी से उठकर उसकी पत्नी बनी..."
सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सत्रहवीं शताब्दी के आरंभिक स्रोतों, जैसे कि पोलिश कवि सैमुअल ट्वाडोस्की के अनुसार, उनका जन्म उस शहर में हुआ था जो उस समय पोलैंड साम्राज्य का हिस्सा था। क्रीमियाई टाटारों द्वारा इस क्षेत्र में किए जाने वाले उनके लगातार छापों में से एक के दौरान उन्हें पकड़ लिया गया और गुलाम बना लिया गया, संभवतः पहले क्रीमिया के शहर कफ्फा ले जाया गया, जो दास व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था, फिर इस्तांबुल ले जाया गया, और सुलेमान के हरम के लिए चुना गया।
सुलेमान, रूथेन मूल की हरम की युवती हुर्रेम सुल्तान पर मोहित था। पश्चिम में, विदेशी राजनयिकों ने उसके बारे में महल में फैली अफवाहों पर ध्यान देते हुए, उसे "रस्सेलाज़ी" या "रोक्सोलाना" कहकर पुकारा, जो उसके स्लाव मूल का संकेत था। एक रूढ़िवादी यूक्रेनी पादरी की पुत्री, हुर्रेम सुल्तान को बंदी बना लिया गया और वह हरम में ऊंचे ओहदे पर पहुँचकर सुलेमान की प्रिय बन गई। दो शताब्दियों की ओटोमन परंपरा को तोड़ते हुए, एक पूर्व रखैल सुल्तान की कानूनी पत्नी बन गई, जिससे महल और शहर के पर्यवेक्षक आश्चर्यचकित रह गए। उसने हुर्रेम सुल्तान को अपने साथ जीवन भर दरबार में रहने की अनुमति दी, जिससे एक और परंपरा टूट गई - कि जब शाही उत्तराधिकारी वयस्क हो जाते थे, तो उन्हें उनकी जन्मदाता रखैल के साथ साम्राज्य के दूरस्थ प्रांतों पर शासन करने के लिए भेज दिया जाता था, और वे तब तक वापस नहीं लौटते थे जब तक कि उनकी संतान सिंहासन पर न बैठ जाए।
मुहिब्बी उपनाम से सुलेमान ने रोक्सोलाना के लिए यह कविता रची:
"मेरी एकांत जगह का सिंहासन, मेरा धन, मेरा प्यार, मेरी चांदनी।"
मेरे सबसे सच्चे मित्र, मेरे विश्वासपात्र, मेरा अस्तित्व, मेरे सुल्तान, मेरा एकमात्र प्रेम।

सुंदरियों में भी सबसे सुंदर...
मेरी बसंत ऋतु, मेरा प्रसन्नमिजाज प्रेम, मेरा दिन, मेरी प्रेमिका, हंसती हुई पत्ती... मेरे पौधे, मेरी प्रियतमा, मेरा गुलाब, इस संसार में एकमात्र जो मुझे कभी दुखी नहीं करता... मेरा इस्तांबुल, मेरा कारामन, मेरी अनातोलिया की धरती
मेरा बदख्शान, मेरा बगदाद और मेरा खोरासान
मेरी प्यारी स्त्री, मेरी प्रिय तिरछी भौंहों वाली, मेरी प्रिय शरारती आँखों वाली...
मैं हमेशा आपकी प्रशंसा करूंगा
मैं, पीड़ाग्रस्त हृदय का प्रेमी, आँसुओं से भरी आँखों का मुहिब्बी, मैं प्रसन्न हूँ।
रोक्सेलाना, जिन्हें यूरोप में इसी नाम से जाना जाता है, आधुनिक तुर्की और पश्चिम दोनों में प्रसिद्ध हैं और कई कलात्मक कृतियों का विषय रही हैं। उन्होंने चित्रों, संगीत रचनाओं (जोसेफ हेडन की सिम्फनी नंबर 63 सहित), डेनिस सिचिन्स्की के एक ओपेरा, एक बैले, नाटकों और कई उपन्यासों को प्रेरित किया है।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
243
"... महारानी एलिजाबेथ..."
एलिजाबेथ प्रथम (7 सितंबर 1533 – 24 मार्च 1603) 17 नवंबर 1558 से अपनी मृत्यु तक इंग्लैंड और आयरलैंड की रानी रहीं। उन्हें कभी-कभी कुंवारी रानी, ग्लोरियाना, परी रानी या अच्छी रानी बेस भी कहा जाता था। एलिजाबेथ ट्यूडर वंश की पाँचवीं और अंतिम शासक थीं। हेनरी अष्टम की पुत्री, वह एक राजकुमारी के रूप में पैदा हुईं, लेकिन उनकी माँ, ऐनी बोलिन को उनके जन्म के तीन साल बाद फाँसी दे दी गई और एलिजाबेथ को नाजायज घोषित कर दिया गया। शायद इसी कारण से, उनके भाई, एडवर्ड षष्ठम ने उन्हें उत्तराधिकार से वंचित कर दिया। हालाँकि, उनकी वसीयत को रद्द कर दिया गया, क्योंकि यह 1543 के तीसरे उत्तराधिकार अधिनियम का उल्लंघन करती थी, जिसमें एलिजाबेथ को उत्तराधिकारी के रूप में नामित किया गया था, बशर्ते कि एलिजाबेथ की सौतेली बहन, इंग्लैंड की मैरी प्रथम, निःसंतान मर जाए। 1558 में, एलिजाबेथ ने अपनी सौतेली बहन का स्थान लिया, जिनके

शासनकाल के दौरान उन्हें प्रोटेस्टेंट विद्रोहियों का समर्थन करने के संदेह में लगभग एक वर्ष तक कारावास में रखा गया था।
एलिज़ाबेथ ने अच्छे परामर्श से शासन करने का निश्चय किया। उनके पहले कदमों में से एक था एक अंग्रेजी प्रोटेस्टेंट चर्च की स्थापना का समर्थन करना, जिसकी वे सर्वोच्च गवर्नर बनीं। यह एलिज़ाबेथन धार्मिक समझौता उनके पूरे शासनकाल में दृढ़ रहा और बाद में आज के चर्च ऑफ़ इंग्लैंड में विकसित हुआ। यह उम्मीद की जा रही थी कि एलिज़ाबेथ शादी करेंगी, लेकिन संसद की कई याचिकाओं के बावजूद उन्होंने कभी शादी नहीं की। इस निर्णय के कारण अज्ञात हैं और उन पर बहुत बहस हुई है। जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई, एलिज़ाबेथ अपनी कौमार्यता के लिए प्रसिद्ध होती गईं और उनके चारों ओर एक पंथ विकसित हुआ, जिसका उस समय के चित्रों, समारोहों और साहित्य में बखान किया गया।
उनका एक आदर्श वाक्य था वीडियो एट टैसियो: "मैं देखती हूं, और कुछ नहीं कहती"।

उनके सलाहकारों द्वारा अधीरता से देखी जाने वाली इस रणनीति ने अक्सर उन्हें राजनीतिक और वैवाहिक गलत गठबंधनों से बचाया। हालांकि एलिजाबेथ विदेश मामलों में सतर्क थीं और उन्होंने नीदरलैंड, फ्रांस और आयरलैंड में कई अप्रभावी, अपर्याप्त संसाधनों वाले सैन्य अभियानों का केवल आधे मन से समर्थन किया, फिर भी 1588 में स्पेनिश आर्मडा की पराजय ने उनके नाम को ब्रिटिश इतिहास की सबसे बड़ी विजयों में से एक के रूप में हमेशा के लिए जोड़ दिया। उनकी मृत्यु के बीस वर्षों के भीतर, उन्हें स्वर्ण युग की शासक के रूप में मनाया जाने लगा, एक ऐसी छवि जो अंग्रेजी जनता पर अपना प्रभाव बनाए रखती है।
एलिजाबेथ के शासनकाल को एलिजाबेथन युग के रूप में जाना जाता है, जो मुख्य रूप से विलियम शेक्सपियर और क्रिस्टोफर मार्लो जैसे नाटककारों के नेतृत्व में अंग्रेजी नाटक के उत्कर्ष के लिए प्रसिद्ध है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

244

"...उन्होंने सेसिल रोड्स के रूप में अवतार लिया था।"

सेसिल जॉन रोड्स (5 जुलाई, 1853 - 26 मार्च, 1902) ब्रिटिश मूल के दक्षिण अफ्रीकी व्यवसायी, खनन उद्योगपति और राजनीतिज्ञ थे। वे हीरा कंपनी डी बीयर्स के संस्थापक थे, जो आज दुनिया के 60% कच्चे हीरों का विपणन करती है और एक समय में 90% का विपणन करती थी। वे उपनिवेशवाद के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने रोडेशिया राज्य की स्थापना की, जिसका नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया था।

रोड्स ने दक्षिणी अफ्रीका के प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण करके भारी मुनाफा कमाया, जिसकी आय से उनकी मृत्यु के बाद रोड्स छात्रवृत्ति की स्थापना की गई। रोड्स ने कभी शादी नहीं की, यह कहते हुए कि "मेरे पास पहले से ही बहुत काम है" और यह भी कहा कि वह एक कर्तव्यनिष्ठ पति नहीं बन पाएंगे। कहा जाता है कि महारानी विक्टोरिया ने उनसे पूछा था कि क्या वह स्त्री-द्वेषी हैं, जिसे रोड्स ने यह कहते हुए नकार दिया कि "मैं उस लिंग को कैसे नापसंद कर सकता हूँ जिससे आपकी महारानी संबंधित हैं?"

रोड्स ने प्रसिद्ध रूप से घोषणा की:

रात में आसमान में दिखने वाले उन तारों के बारे में सोचो, उन विशाल दुनियाओं के बारे में जहाँ हम कभी नहीं पहुँच सकते। अगर मैं कर सकता तो मैं उन ग्रहों पर कब्ज़ा कर लेता; मैं अक्सर इसके बारे में सोचता हूँ। उन्हें इतना स्पष्ट और फिर भी इतना दूर देखकर मुझे दुख होता है।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

245

"...वह एक पोलिश राजकुमारी थी..."

राजकुमारी कैथरीन राडज़िविल (30 मार्च, 1858 - 12 मई, 1941) एक प्रसिद्ध पोलिश-लिथुआनियाई कुलीन परिवार, राडज़िविल परिवार से थीं। उनका जन्म काउंटेस एकातेरिना एडमोवना रज़ेवुस्का के रूप में हुआ था। उन्होंने 15 वर्ष की आयु में राजकुमार विल्हेम

राडज़िविल से विवाह किया और उनके परिवार के साथ रहने के लिए बर्लिन चली गईं। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने 1884 में पॉल वासिली के छद्म नाम से जर्मन सम्राट विलियम द्वितीय और बर्लिन समाज के बारे में गपशप करने वाली एक पुस्तक लिखी थी।
उसने इंग्लैंड में जन्मे दक्षिण अफ़्रीकी राजनेता सेसिल रोड्स का पीछा किया और उनसे शादी करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। उसने रोड्स की जीवनी लिखी जिसका नाम था "सेसिल रोड्स: मैन एंड एम्पायर मेकर"।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
246
"...उनमें से एक का नाम केली था..."
विलियम केली (22 अगस्त, 1811 - 11 फरवरी, 1888), जिनका जन्म पिट्सबर्ग, पेनसिल्वेनिया में हुआ था, एक अमेरिकी आविष्कारक थे। केली ने पेनसिल्वेनिया के वेस्टर्न यूनिवर्सिटी में धातु विज्ञान का अध्ययन किया। केली ने 1847 में अपनी "वायु-उबलने की प्रक्रिया" पर प्रयोग करना शुरू किया, जिसमें पिघले हुए लोहे में कार्बन की मात्रा कम करने के लिए हवा प्रवाहित की जाती थी। उनका प्रारंभिक लक्ष्य लोहे और इस्पात निर्माण के लिए आवश्यक ईंधन की मात्रा को कम करना था, क्योंकि कोयला बनाने के लिए भारी मात्रा में लकड़ी की आवश्यकता होती थी। उन्होंने पाया कि, उनके लोहा श्रमिकों की अपेक्षाओं के विपरीत, प्रवाहित हवा पिघले हुए लोहे को ठंडा नहीं करती थी, बल्कि कार्बन के साथ मिलकर लोहे को उबालती और तेजी से जलाती थी, जिससे कार्बन की मात्रा काफी कम हो जाती थी और लोहे की गुणवत्ता में सुधार होता था या वह इस्पात में परिवर्तित हो जाता था। उनके प्रयोग 1847 में शुरू हुए थे। इसी प्रक्रिया का बाद में हेनरी बेसेमर द्वारा स्वतंत्र रूप से आविष्कार किया गया और पेटेंट कराया गया।
317

-- संदर्भ: Wikipedia.org

247

"...दूसरा बेसेमर था..."

सर हेनरी बेसेमर (19 जनवरी, 1813 - 15 मार्च, 1898), अंग्रेज इंजीनियर और आविष्कारक थे। बेसेमर का नाम मुख्य रूप से इस्पात निर्माण की बेसेमर प्रक्रिया के लिए जाना जाता है। इतने महत्वपूर्ण पेटेंट आलोचनाओं से अछूते नहीं रहे और विभिन्न आधारों पर उनकी वैधता पर सवाल उठाए गए। लेकिन बेसेमर सौभाग्यशाली रहे और बिना किसी मुकदमे के अपने पेटेंट को बरकरार रख सके, हालांकि उन्होंने एक पेटेंटधारक के अधिकार खरीदना उचित समझा, जबकि दूसरे मामले में 1859 में शुल्क का भुगतान न करने के कारण पेटेंट रद्द हो जाने से उन्हें चिंता से मुक्ति मिल गई।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

248

"इस काम को अंजाम देने वाला एक और आईएस-बीई सदस्य अलेक्जेंडर बेल था..."

"जैसा कि वैज्ञानिक खोजों में कभी-कभी आम होता है, एक साथ कई विकास हो सकते हैं, जैसा कि टेलीफोन पर काम कर रहे कई आविष्कारकों से स्पष्ट होता है।"

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल (3 मार्च 1847 – 2 अगस्त 1922) एक प्रख्यात वैज्ञानिक, आविष्कारक और नवप्रवर्तक थे, जिन्हें टेलीफोन के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है। उनके पिता, दादा और भाई सभी वाक्पटुता और भाषण पर काम करने से जुड़े थे, और उनकी माता और पत्नी दोनों बधिर थीं, जिसने बेल के जीवन के कार्यों को गहराई से प्रभावित किया। श्रवण और वाक् पर उनके शोध ने उन्हें श्रवण उपकरणों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः 1876 में बेल को टेलीफोन के आविष्कार के लिए पहला अमेरिकी पेटेंट प्राप्त हुआ।

बाद में, बेल ने अपने सबसे प्रसिद्ध आविष्कार को एक वैज्ञानिक के रूप में अपने वास्तविक काम में बाधा माना और अपने अध्ययन कक्ष में टेलीफोन रखने से इनकार कर दिया।

-- संदर्भ: Wikipedia.org

249
...इसका आविष्कार एलीशा ग्रे सहित कई अन्य लोगों ने किया था।"
एलीशा ग्रे (2 अगस्त, 1835 - 21 जनवरी, 1901) एक अमेरिकी विद्युत अभियंता थे और उन्हें मुख्य रूप से 1876 में अमेरिका के इलिनोइस के हाइलैंड पार्क में टेलीफोन के प्रोटोटाइप के विकास के लिए जाना जाता है। शिकागो के श्री एलीशा ग्रे ने लगभग उसी समय एक टोन टेलीग्राफ भी विकसित किया था जब श्री ला कौर ने इसे विकसित किया था। इस उपकरण में एक कंपन करने वाली स्टील की रीड करंट को बाधित करती थी, जो लाइन के दूसरे छोर पर एक इलेक्ट्रोमैग्नेट से होकर गुजरती थी और उसके ध्रुवों के पास एक समान स्टील की रीड को कंपन कराती थी। कंपन करने वाली रीड वाले ग्रे के 'हार्मोनिक टेलीग्राफ' का उपयोग वेस्टर्न यूनियन टेलीग्राफ कंपनी द्वारा किया जाता था। चूंकि एक ही तार पर एक साथ कंपन के एक से अधिक सेट - यानी एक से अधिक नोट - भेजे जा सकते हैं, इसलिए हार्मोनिक टेलीग्राफ का उपयोग 'मल्टीप्लेक्स' या बहु-स्तरीय टेलीग्राफ के रूप में किया जा सकता है, जो एक ही तार के माध्यम से एक साथ कई संदेश भेजता है; और इन्हें या तो ऑपरेटर द्वारा ध्वनि के माध्यम से पढ़ा जा सकता है, या एक स्थायी रिकॉर्ड बनाया जा सकता है। यह एक मोर्स रिकॉर्डर द्वारा चलती हुई कागज की पट्टी पर खींचे गए चिह्नों द्वारा बनाया जाता है। बेल की 10 मार्च, 1876 की प्रयोगशाला नोटबुक प्रविष्टि जिसमें टेलीफोन के साथ उनके पहले सफल प्रयोग का वर्णन है।
बेल ने टेलीफोन के लिए अपना पेटेंट आवेदन 14 फरवरी, 1876 को अमेरिकी पेटेंट कार्यालय में दायर किया था। प्रचलित कहानी के अनुसार, बेल अपने प्रतिद्वंद्वी एलीशा ग्रे से एक या दो घंटे पहले पेटेंट कार्यालय पहुंच गए थे, और परिणामस्वरूप ग्रे ने टेलीफोन पर अपने अधिकार खो दिए थे।
318

ग्रे के बयान के अनुसार, उनका पेटेंट संबंधी आपत्ति पत्र बेल के आवेदन से कुछ घंटे पहले, पेटेंट कार्यालय खुलने के तुरंत बाद अमेरिकी पेटेंट कार्यालय में जमा किया गया था और दोपहर तक आवेदन प्रक्रिया के दौरान लंबित रहा। बेल का आवेदन 14 फरवरी को दोपहर से कुछ समय पहले बेल के वकील द्वारा दाखिल किया गया था, जिन्होंने अनुरोध किया था कि दाखिल शुल्क तुरंत नकद रसीदों के रिकॉर्ड में दर्ज किया जाए और बेल के आवेदन को परीक्षक के पास भेजा जाए।
तुरंत। उसी दोपहर बाद, ग्रे की आपत्ति दर्ज की गई और आपत्ति अगले दिन तक परीक्षक के पास नहीं ले जाई गई। बेल की फाइलिंग फीस ग्रे की फीस से पहले दर्ज होने के कारण यह कहानी फैली कि बेल पेटेंट कार्यालय पहले पहुँच गए थे। बेल 14 फरवरी को बोस्टन में थे और उन्हें 26 फरवरी को वाशिंगटन पहुँचने तक इस बात की जानकारी नहीं थी। बेल का आवेदन ग्रे की आपत्ति से पहले या बाद में दायर किया गया था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि ग्रे ने अपनी आपत्ति वापस ले ली थी, जिससे बेल को 7 मार्च 1876 को टेलीफोन के लिए अमेरिकी पेटेंट 174,465 प्राप्त होने का रास्ता खुल गया।
-- संदर्भ: Wikipedia.org
फुटनोट समाप्त
319

sjeet